हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसन्नपूर्ण...

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

19

मुहूर्त विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६१, शक संवत् १९२६
सन् २००४-२००५, जय हिन्द संवत् ५७-५८

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा सूर्य

मंत्री मंगल

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशकः रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य ५२.००

ता. 14 अग. '03ई. को स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व सन्ध्या पर
डॉ. शक्तिधर शर्मा Ph.D. (Nuclear Physics, U.S.A.), M.A. (Sanskrit),
F.R.A.S. (London), सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस) को ''मानव संसाधन विकास'' मन्त्री
डॉ. मुरलीमनोहर जोशी द्वारा 'संस्कृत मित्रम्' अलंकरण से सम्मानित किया गया।

डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, मन्त्री– 'मानव संसाधन विकास मन्त्रालय',
डॉ. शक्तिधर शर्मा को उत्तरीय भेंट करते हुए,
दाईं ओर 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान' के कुलपति
श्री वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री।

ज्ञानं विज्ञान–सहितम्

शरीर से दुबले–पतले .. क्या पहना है, कैसे पहना है,– कोई सुध–बुध नहीं। देखने वाला कोई भी इन्हें सहसा एक सामान्य व्यक्ति समझने की भारी गलती कर सकता है। ऐसे भ्रामक व्यक्तित्व के धनी डॉ. शक्तिधर शर्मा की बहुमुखी प्रखर प्रतिभा में पौरस्त्य एवं पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान का नितान्त रोचक, आश्चर्यकर तथा प्रभावक एक ऐसा मिश्रण है, जो प्रयासपूर्वक ढूंढने पर भी अन्यत्र शायद ही कहीं मिल पाए। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के भौतिकी विभाग से प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त डॉ. शर्मा के बीसों भौतिकशास्त्रीय प्रौढ़ शोधनिबन्ध अन्तर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। Theoretical Nuclear Physics; Theoretical Indian Astronomy; Jain Astronomy; Buddhist Astronomy; Jain Atomism (परमाणु पुद्गलवाद); Study of comets and asteroids; Common origin, Cometary distribution; Planets beyond Neptune, Pluto and Explanet; Astronomy B Stars; Indian Mathematics advancements and applications; Quantum Mechanics; Ayurveda- जैसे सर्वथा परस्पर विसम्वादी दिशाओं की प्राचीन– अर्वाचीन ज्ञानशाखाओं में अनेक छात्रों ने इनके सशक्त निर्देशन में शोध उपाधियां प्राप्त की हैं। अनेक प्राचीन भारतीय मूल के गणितप्रकारों को स्वयं विकसित कर, उनसे विज्ञान की अनेक जटिल समस्याओं को सरल बना डालने वाले विधिसूत्रों की स्थापना डॉ. शर्मा की एक विशेष ऐतिहासिक उपलब्धि है। इन्हीं विधिसूत्रों का विशद विवेचन आपने ' भौतिकी गणितम् ' नामक अपनी संस्कृत पुस्तक में किया है, जो आपके संस्कृत पर पूर्ण प्रभुत्व एवं इस देवभाषा के प्रति परम अनुराग, निष्ठा को अभिव्यक्त करता है।

पूर्व एवं पश्चिम का यह अचिन्त्य विरल संगम सचमुच चमत्कृत करने वाला है।

श्रीचक्रधर भट्ट शास्त्री,
म. नं. 1240, मोहल्ला कैथ माजरी,
अम्बाला शहर (हरियाणा)।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्त्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु।।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

मुहूर्त्त विशेषांक

विक्रम संवत् २०६१, शक संवत् १९२६
सन् २००४-२००५, जय हिन्द संवत् ५७-५८

देवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

मूल्य
५३.००

प्रमुख वितरक : ... डिपो
460, खारी बावली ... 6116,

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.-	अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।	भा. -	भाद्रपद।
अं.-	अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।	मा. -	मार्गी।
आव.-	आवश्यकता में।	मि. -	मिनट, मिथुन।
उ.-	उपरान्त, उदित, उत्तर।	मृ. -	मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
उ. गो. -	उत्तर गोल।	या. -	यावत् (=तक)।
क. -	करण, कर्क, कला।	रा. -	रात्रि, राशि।
कृ. -	कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)	रो. -	रोग (बाण), रोहिणी।
क्रां. सा. -	क्रान्तिसाम्य (महापात)	ल. -	लग्न।
गोधू. -	गोधूलि (लग्न)	व. -	वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
घ. -	घड़ी।	वा. -	वार
घं. -	घण्टा।	वि. -	विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
चो. -	चोर (बाण)	वि. मु. -	विवाहमुहूर्त।
ति. -	तिथि।	वै. -	वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग) वैशाख।
द. -	दक्षिण।	व्र. स. -	व्रत सबके लिए।
द. गो.	दक्षिण गोल।	शु. -	शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
दा. -	दान, पूजन।	श. -	भारत सरकार द्वारा संचालित शक संवत्, तारीख-मास।
दि. -	दिन।	स. -	समाप्त।
दि. मा. -	दिनमान।	सं. -	संक्रान्ति, संवत्।
दि. ल. -	दिन का ल.न।	सां. का. -	साम्पातिक काल।
न. -	नक्षत्र।	सा. -	सायन।
निं. -	निम्बार्कों के लिए।	स्मा. -	स्मार्तों के लिए।
ने. -	नेष्यून।	ल. -	लग्न
नृ. -	नृप (बाण)।		
प. -	पल, परिघ (योग), पश्चिम।		
प्र. -	प्राविष्टा (पंजाबी तारीख)।		
प्रा. -	प्रारम्भ।		
भ. -	भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।		

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकासित *Computer Program* से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा. स्टैं. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (. . . . .) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा. स्टैं. टा. ८२°/३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती है।

(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भाग नहीं।

संक्षिप्त विषय सूची (सं . २०६१ वि .)

इस वर्ष की विशेष सामग्री

मुहूर्त्त निर्णय (विशेष स्तम्भ)*

*मुहूर्त्त निर्णय (विशेष स्तम्भ) की विस्तृत विषयसूची के लिए पृष्ठ 62–63 देखिए।

अनन्त श्रीविभूषित
श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति,
जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का
शुभाशीर्वाद
(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे– महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म – श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र – दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष– गणितादि–विषयेषु महत्त्वापत्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः " इति विरुदेन पूर्वमेव समाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड– पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् · नारायणस्मृतिः

'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. २०६२ वि.) का विशेष स्तम्भ:- चली आ रही विशेषांक परम्परा के अनुसार 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' अगले वर्ष (सं. 2062 वि.) में पाठकों को राजधानी (दिल्ली) विशेषांक समर्पित करेगा, जिसमें दिल्ली की सभी बस्तियों की सूक्ष्मतम लग्नसारणियां, दैनिक लग्नोदयकाल, सूर्योदयास्तादि दिए जाएंगे। (विस्तृत विज्ञापन के लिए पृष्ठ 63 देखिए।)

प्रमुख-प्रमुख व्रतपर्व (1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल , सन् 2005 ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार
(सन् 2004 ई.)			वैशाख स्नान प्रारम्भ	5 अप्रै.	च.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त-गृहस्थियों के लिए)	6 सितं.	चं.	नवरात्र समाप्त	22 अक्तू.	शु.
इंग्लिश नववर्ष (2004 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	गु.	अर्द्ध कुम्भ (हरिद्वार)	13 अप्रै.	मं.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव-सन्यासियों के लिए)	7 सितं.	मं.	विजयादशमी (दशहरा)	22 अक्तू.	शु.
माघ स्नान प्रारम्भ	7 जन.	बु.	श्रीपरशुराम जयन्ती	22 अप्रै.	गु.	श्रीगुग्गा नवमी	8 सितं.	बु.	भरत मिलाप	23 अक्तू.	श.
संकष्ट चतुर्थी	11 जन.	र.	अक्षय तृतीया	22 अप्रै.	गु.	कुशोत्पाटिनी अमावस,	14 सितं.	मं.	शरत्पूर्णिमा, कोजागर व्रत	27 अक्तू.	बु.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	मं.	श्रीगंगा जन्म	26 अप्रै.	चं.	पिठोरी अमावस	14 सितं.	मं.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	28 अक्तू.	गु.
मकर-संक्रान्ति	14 जन.	बु.	श्रीजानकी जयन्ती	28 अप्रै.	बु.	सामउपाकर्म	16 सितं.	गु.	कार्तिकस्नान प्रारम्भ	28 अक्तू.	गु.
मौनी अमावस	21 जन.	बु.	कुम्भमहापुर्व (उज्जैन)	4 मई	मं.	हरितालिका , गौरी तृतीया	17 सितं.	शु.	करक चतुर्थी (करवा चौथ)	31 अक्तू.	र.
गौरी तृतीया (गोत्तरी)	24 जन.	श.	श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	4 मई	मं.	कलंक चतुर्थी	17 सितं.	शु.	अहोई अष्टमी (पं.)	5 नवं.	शु.
तिल-वरद-कुन्द-चतुर्थी	25 जन.	र.	वैशाख स्नान समाप्त	4 मई	मं.	सिद्धिविनायक व्रत	18 सितं.	श.	गोवत्स द्वादशी	9 नवं.	मं.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	26 जन.	चं.	खग्रास चन्द्रग्रहण	4 मई	मं.	हरितालिका चतुर्थी	18 सितं.	श.	धन त्रयोदशी,	10 नवं.	बु.
रथ-सप्तमी, आरोग्य-सप्तमी	28 जन.	बु.	भद्रकाली एकादशी (पं.)	14 मई	शु.	ऋषि पंचमी	19 सितं.	र.	नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान् जयन्ती	11 नवं.	गु.
भीष्माष्टमी	29 जन.	गु.	वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	19 मई	बु.	सूर्य षष्ठी व्रत	20 सितं.	चं.	दीपावली	12 नवं.	शु.
भीष्म द्वादशी	2 फर.	चं.	भावुका अमावस	19 मई	बु.	राधाष्टमी,	21 सितं.	मं.	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	13 नवं.	श.
माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	6 फर.	शु.	रम्भा तृतीया	21 मई	शु.	श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	21 सितं.	मं.	यमद्वितीया, भाई दूज	14 नवं.	र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर.	बु.	श्रीगंगा दशहरा	29 मई	श.	श्रीचन्दनवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	22 सितं.	बु.	विश्वकर्मा पूजा,	14 नवं.	र.
होलाष्टक प्रारम्भ	28 फर.	श.	निर्जला एकादशी व्रत	30 मई	र.	श्रीवामन जयन्ती	25 सितं.	श.	सूर्यषष्ठी	17 नवं.	बु.
गोविन्द द्वादशी	3 मार्च	बु.	वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	2 जून	बु.	अनन्त चतुर्दशी	27 सितं.	चं.	गोपाष्टमी	19 नवं.	शु.
होलिका दहन,	6 मार्च	श.	रथयात्रा (पुरी)	19 जून	श.	प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध	28 सितं.	मं.	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी	20 नवं.	श.
होलाष्टक समाप्त	6 मार्च	श.	कुमार षष्ठी	23 जून	बु.	महालय श्राद्ध-प्रारम्भ	29 सितं.	बु.	भीष्म पंचक प्रारम्भ	22 नवं.	चं.
वसन्तोत्सव	7 मार्च	र.	विवस्वत् सप्तमी	24 जून	गु.	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	6 अक्तू.	बु.	तुलसी विवाह	23 नवं.	मं.
महाविषुव दिन	20 मार्च	श.	गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	2 जुला.	शु.	गजछाया पर्व	13 अक्तू.	बु.	वैकुण्ठ चतुर्दशी	25 नवं.	गु.
चान्द्र-संवत् 2060 वि. पूर्ण	20 मार्च	श.	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ	2 जुला.	शु.	महालय श्राद्ध समाप्त	14 अक्तू.	गु.	कार्तिक पूर्णिमा,	26 नवं.	शु.
वि. संवत् 2061 प्रारम्भ,	21 मार्च	र.	हरियाली अमावस	17 जुला.	श.	शारद नवरात्र प्रारम्भ	14 अक्तू.	गु.	श्री गुरुनानक जयन्ती	26 नवं.	शु.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	21 मार्च	र.	मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज	19 अग.	गु.	उपांगललिता व्रत	18 अक्तू.	चं.	कार्तिकस्नान समाप्त	26 नवं.	शु.
गौरी तृतीया(गणगौर)	23 मार्च	मं.	नागपंचमी	20 अग.	शु.	सरस्वती आवाह्न	19 अक्तू.	मं.	भीष्म पंचक समाप्त,	26 नवं.	शु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	26 मार्च	शु.	श्रीदुर्गाष्टमी	23 अग.	चं.	सरस्वती पूजन, बलिदान,	20 अक्तू.	बु.	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	26 नवं.	शु.
नाग पंचमी,	26 मार्च	शु.	दुर्वाष्टमी	23 अग.	चं.	सरस्वती विसर्जन,	21 अक्तू.	गु.	श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	5 दिसं.	र.
स्कन्द षष्ठी	27 मार्च	श.	ऋक उपाकर्म	28 अग.	श.	श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी,	21 अक्तू.	गु.	स्कन्द-- गुह-षष्ठी	16 दिसं.	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	29 मार्च	चं.	शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म	29 अग.	र.	महानवमी (पूजा के लिए)	21 अक्तू.	गु.	चम्पा षष्ठी,	17 दिसं.	शु.
श्रीराम नवमी (पुनर्वसु योग)	30 मार्च	मं.	अथर्व उपाकर्म	30 अग.	चं.	महानवमी (बलिदान के लिए)	22 अक्तू.	शु.	मित्र सप्तमी	17 दिसं.	शु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	30 मार्च	मं.	रक्षाबन्धन (राखी)	30 अग.	चं.				श्रीगीता जयन्ती	22 दिसं.	बु.
अनंग त्रयोदशी	3 अप्रै.	श.	बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	2 सितं.	गु.				श्रीदत्त जयन्ती	26 दिसं.	र.

प्रमुख–प्रमुख व्रतपर्व

व्रतपर्व (सन् 2005 ई.)	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष (2005 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	श.
लोहड़ी (पं.)	12 जन.	बु.
मकर–संक्रान्ति	13 जन.	गु.
माघ स्नान प्रारम्भ	25 जन.	मं.
संकष्ट चतुर्थी	29 जन.	श.
मौनी अमावस	8 फर.	मं.
महोदय योग	8 फर.	मं.
गौरी तृतीया (गौंत्तरी)	11 फर.	शु.
तिल–वरद–कुन्द–चतुर्थी	11 फर.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	13 फर.	र.
रथ–सप्तमी, आरोग्य–सप्तमी	15 फर.	मं.
भीष्माष्टमी	16 फर.	बु.
भीष्म द्वादशी	20 फर.	र.
माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	24 फर.	गु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	8 मार्च	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	18 मार्च	शु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	22 मार्च	मं.
होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त	25 मार्च	शु.
वसन्तोत्सव	26 मार्च	श.
वारुणी पर्व	6 अप्रै.	बु.
चान्द्र–संवत् 2061 वि. पूर्ण	8 अप्रै.	शु.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल , सन् 2005 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2004 ई.)	
पौष शुक्ल	3 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	2 फर.
फाल्गुन कृष्ण	16 फर.
फाल्गुन शुक्ल	2 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	16 मार्च
चैत्र शुक्ल	1 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	15 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	1 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	14 मई.
ज्येष्ठ शुक्ल	30 मई
आषाढ़ कृष्ण	13 जून
आषाढ़ शुक्ल (स्मा.)	28 जून
प्र.श्रावण कृष्ण	13 जुला.
प्र.(अ.)श्रावण शुक्ल	28 जुला.
द्वि.(अ.)श्रावण कृष्ण	11 अग.
द्वि.(शु.)श्रावण शुक्ल	26 अग.

(सन् 2004 ई.)	
भाद्रपद कृष्ण	10 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	24 सितं.
आश्विन कृष्ण	10 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	24 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	8 नवं.
कार्तिक शुक्ल	22 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	8 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	22 दिसं.

(सन् 2005 ई.)	
पौष कृष्ण	7 जन.
पौष शुक्ल	20 जन.
माघ कृष्ण	5 फर.
माघ शुक्ल	19 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	6 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	21 मार्च
चैत्र कृष्ण	5 अप्रै.

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत) —— वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है वह व्रत तिथि स्मार्त्त और वैष्णव दोनो के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2004 ई.)	
माघ कृष्ण	8 जन.
माघ शुक्ल	22 जन
फाल्गुन कृष्ण	7 फर.
फाल्गुन शुक्ल	21 फर.
चैत्र कृष्ण	7 मार्च
चैत्र शुक्ल	21 मार्च
वैशाख कृष्ण	6 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	20 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	5 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	20 मई
आषाढ़ कृष्ण	4 जून
आषाढ़ शुक्ल	18 जून
प्र.श्रावण कृष्ण	3 जुला.
प्र.(अ.) श्रावण शुक्ल	18 जुला.
द्वि.(अ.) श्रावण कृष्ण	1 अग.
द्वि.(शु.) श्रावण शुक्ल	17 अग.

(सन् 2004 ई.)	
भाद्रपद कृष्ण	30 अग.
भाद्रपद शुक्ल	15 सितं.
आश्विन कृष्ण	29 सितं.
आश्विन शुक्ल	15 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	29 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	13 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	27 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	12 दिसं.
पौष कृष्ण	27 दिसं.

(सन् 2005 ई.)	
पौष शुक्ल	11 जन.
माघ कृष्ण	26 जन.
माघ शुक्ल	9 फर.
फाल्गुन कृष्ण	25 फर.
फाल्गुन शुक्ल	11 मार्च
चैत्र कृष्ण	26 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

प्रदोष व्रत [सोम. = सोम प्रदोष व्रत, भौम = भौम प्रदोष व्रत, शनि = शनि प्रदोष व्रत]

(सन् 2004 ई.)	
पौष शुक्ल	4 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	19 जन.
माघ शुक्ल (भौम)	3 फर.
फाल्गुन कृष्ण	18 फर.
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च
चैत्र शुक्ल (शनि)	3 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	16 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	2 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	16 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (सोम)	31 मई
आषाढ़ कृष्ण (सोम)	14 जून
आषाढ़ शुक्ल	30 जून
प्र.श्रावण कृष्ण	14 जुला.
प्र.(अ.)श्रावण शुक्ल	29 जुला.
द्वि.(अ.)श्रावण कृष्ण	13 अग.
द्वि.(शु.)श्रावण शुक्ल	27 अग.
भाद्रपद कृष्ण (शनि)	11 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	26 सितं.
आश्विन कृष्ण (सोम)	11 अक्तू.
आश्विन शुक्ल (सोम)	25 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	10 नवं.
कार्तिक शुक्ल	24 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	9 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	23 दिसं.

(सन् 2005 ई.)	
पौष कृष्ण (शनि)	8 जन.
पौष शुक्ल (शनि)	22 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	6 फर.
माघ शुक्ल (सोम)	21 फर.
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	8 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	23 मार्च
चैत्र कृष्ण	6 अप्रै.

अरुणाय त्रयोदशी (सन् 2004–05 ई.)

[श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व]
(उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

माघ (सन् 2004 ई.)	20 जन.	भाद्रपद	12 सितं.
फाल्गुन	18 फर.	आश्विन	12 अक्तू.
चैत्र	18 मार्च	कार्तिक	10 नवं.
वैशाख	17 अप्रै.	मार्गशीर्ष	10 दिसं.
ज्येष्ठ	16 मई	पौष (सन् 2005 ई.)	8 जन.
आषाढ़	15 जून	माघ	7 फर.
प्र. श्रावण	15 जुला.	फाल्गुन	8 मार्च
द्वि. (अधि.) श्रावण	13 अग.	चैत्र	6 अप्रै.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल , सन् 2005 ई. तक)

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् 2004 ई.)	ता.
पौष	7 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	4 अप्रै.
वैशाख	4 मई
ज्येष्ठ	2 जून
आषाढ़	1 जुला.
प्र. (अधि.) श्रावण	31 जुला.
द्वि. (शुद्ध) श्रावण	29 अग.
भाद्रपद	27 सितं.
आश्विन	27 अक्तू.
कार्तिक	26 नवं.
मार्गशीर्ष	26 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
पौष	24 जन.
माघ	23 फर.
फाल्गुन	25 मार्च

पूर्णिमा व्रत (स्नान–दानार्थ ,उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

(सन् 2004 ई.)	ता.
पौष	7 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.
वैशाख	4 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ़	2 जुला.
प्र. (अधि.) श्रावण	31 जुला.
द्वि. (शुद्ध) श्रावण	30 अग.
भाद्रपद	28 सितं.
आश्विन	28 अक्तू.
कार्तिक	26 नवं.
मार्गशीर्ष	26 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
पौष	25 जन.
माघ	24 फर.
फाल्गुन	25 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ)

(सन् 2004 ई.)	ता.
माघ	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र (शनैश्चरी)	20 मार्च
वैशाख (सोम)	19 अप्रै.
ज्येष्ठ	19 मई
आषाढ़	17 जून
प्र. श्रावण (शनैश्चरी)	17 जुला.
द्वि.(अधि.) श्रावण (सो.)	16 अग.
भाद्रपद (भौम)	14 सितं.
आश्विन	14 अक्तू.
कार्तिक	12 नवं.
मार्गशीर्ष (शनैश्चरी)	11 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
पौष (सोम)	10 जन.
माघ (भौम)	8 फर.
फाल्गुन	10 मार्च
चैत्र	8 अप्रै.

संक्रान्तियां

(सन् 2004 ई.)	ता.
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	16 अक्तू.
मार्गशीर्ष	15 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् 2004 ई.)	ता.
माघ	11 जन.
फाल्गुन	9 फर.
चैत्र	10 मार्च
वैशाख	8 अप्रै.
ज्येष्ठ	7 मई
आषाढ़	6 जून
प्र. श्रावण	5 जुला.
द्वि. (अधि.) श्रावण	3 अग.
भाद्रपद	2 सितं.
आश्विन	1 अक्तू.
कार्तिक	31 अक्तू.
मार्गशीर्ष	30 नवं.
पौष	30 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
माघ	29 जन.
फाल्गुन	27 फर.
चैत्र	29 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2004 ई.)	ता.
श्रीमत्स्य जयन्ती	23 मार्च
श्रीरामनवमी	30 मार्च
श्रीपरशुराम जयन्ती	22 अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	3 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	4 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	4 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	21 अग.
⊗श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	6 सितं.
श्रीवराह जयन्ती	17 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	25 सिं.

⊗ अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं ।

मासिक कालाष्टमी व्रत ('04 ई.)

मास	ता.
माघ	15 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	13 मार्च
वैशाख	12 अप्रै.
ज्येष्ठ	11 मई
आषाढ़	10 जून
श्रावण (प्र.)	9 जुला.
श्रावण (द्वि.)	8 अग.
भाद्रपद	6 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्तिक	5 नवं.
मार्गशीर्ष	5 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
पौष	3 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	3 मार्च
चैत्र	2 अप्रै.

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध (सन् 2004 ई.) (महालय श्राद्ध)

तिथि	ता.	तिथि	ता.	तिथि	ता.
पूर्णिमा	28 सितं.	षष्ठी	4 अक्तू.	द्वादशी	10 अक्तू.
प्रतिपदा	29 सितं.	सप्तमी	5 अक्तू.	त्रयोदशी	11 अक्तू.
द्वितीया	30 सितं.	अष्टमी	6 अक्तू.	चतुर्दशी ✵	12 अक्तू.
तृतीया	1 अक्तू.	नवमी	7 अक्तू.	अमावस	13 अक्तू.
चतुर्थी	2 अक्तू.	दशमी	8 अक्तू.	सर्वपितृश्राद्ध	13 अक्तू.
पंचमी	3 अक्तू.	एकादशी	9 अक्तू.		

✵ शस्त्र–विष आदि से मृतो (अर्थात् अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2004 ई.)

मास	ता.	मास	ता.
माघ	20 जन.	आश्विन	12 अक्तू.
फाल्गुन	18 फर.	कार्तिक	11 नवं.
चैत्र	19 मार्च	मार्गशीर्ष	10 दिसं.
वैशाख	17 अप्रै.	**(सन् 2005 ई.)**	
ज्येष्ठ	17 मई	पौष	9 जन.
आषाढ़	15 जून	माघ	7 फर.
श्रावण (प्र.)	15 जुला.	फाल्गुन	8 मार्च
श्रावण (द्वि.)	14 अग.	चैत्र	7 अप्रै.
भाद्रपद	12 सितं.		

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल , सन् 2005 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2004 ई.)	ता.
श्रीमेरुत्रयोदशी	20 जन.
मर्यादा महोत्सव	28 जन
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	30 मार्च
श्रीजैन महावीर जयन्ती	3 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	30 अप्रै.
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	24 जून
तेरापन्थ स्थापना दिवस	2 जुला.
चातुर्मास्य प्रारम्भ	2 जुला.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	11 सितं.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	11 सितं.
संवत्सरी महापर्व	18 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	20 सितं.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	22 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	26 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	12 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	14 नवं.
ज्ञानपंचमी	16 नवं.
चातुर्मास्य समाप्त	26 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	7 दिसं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	31 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	6 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	7 फर.
मर्यादा महोत्सव	15 फर.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2004 ई.)

नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	9 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	11 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2004 ई.)	ता.	(सन् 2004 ई.)	ता.	(सन् 2004 ई.)	ता.
स्वामी विवेकानन्द	14 जन.	श्रीरामानुजाचार्य	26 अप्रै.	श्रीवीर वैरागी	24 नवं.
श्रीरामानन्दाचार्य	14 जन.	श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई	**(सन् 2005 ई.)**	
श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.	श्रीमहाराणाप्रताप	22 मई	श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
योगीराज बा. श्रीलालदयाल जी	23 जन.	लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.	लाला लाजपतराय	28 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.	गोस्वामी तुलसीदास जी	22 अग.	योगिराज बा. श्रीलालदयाल जी	10 फर.
श्री गुरु रविदास जी	6 फर.	स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.	स्वामी विवेकानन्द	15 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	18 फर.	श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	श्रीरामानन्दाचार्य	15 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	22 फर.	श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.	श्री गुरु रविदास जी	24 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	6 मार्च	महाराज अग्रसेन जयन्ती	15 अक्तू.	महार्षिदयानन्द सरस्वती	8 मार्च
डा. अम्बेडकर	14 अप्रै.	स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.	श्रीरामकृष्ण परमहंस	12 मार्च
श्रीवल्लभाचार्य	15 ः.प्रै.	श्रीमाध्वाचार्य	23 अक्तू.	श्रीचैतन्य महाप्रभु	25 मार्च
श्रीछत्रपति शिवाजी जयन्ती	21 अप्रै.	श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.		
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	24 अप्रै.	भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.		

आगामी वर्ष (विक्रमी संवत् 2062) के प्रमुख–प्रमुख व्रतपर्व

सन् 2005 ई.

वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	9 अप्रै.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	27 अग.
मेष संक्रान्ति (वैसाखी)	13 अप्रै.	श्राद्ध प्रारम्भ	18 सितं.
श्रीदुर्गाष्टमी	17 अप्रै.	शारद नवरात्र प्रारम्भ	4 अक्तू.
श्री रानवमी व्रत	17 अप्रै.	श्री दुर्गाष्टमी	11 अक्तू.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	22 अप्रै.	दशहरा (विजयादशमी)	12 अक्तू.
श्री परशुराम जयन्ती	10 मई	शरत् पूर्णिमा	17 अक्तू.
श्री बुद्ध जयन्ती	23 मई	श्री बाल्मीकि जयन्ती	17 अक्तू.
श्री गंगा दशहरा	17 जून	करक चतुर्थी (करवा चौथ)	20 अक्तू.
गुरु पूर्णिमा	21 जुला.	दीपावली	1 नवं.
रक्षाबन्धन	19 अग.	भाई दूज	3 नवं.
संकष्ट चतुर्थी	22 अग.	श्री गुरु नानक जयन्ती	15 नवं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा)	26 अग.	श्री भैरवाष्टमी	23 नवं.

सन् 2006 ई.

मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	2 फर.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	13 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	26 फर.
होलिका दहन	14 मार्च

ये व्रतपर्व प्रो.प्रियव्रत शर्मा रचित " गणक–मार्तण्ड" से उद्धृत हैं। 'गणक मार्तण्ड' में आगामी लगभग 50 वर्ष (सन् 2001,ई. से सन् 2050 ई. तक) के व्रतपर्वों की तारीखें दी गई हैं।

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2004 ई.)	ता.
इदुलज्जुहा	2 फर.
मुहर्रम (ताज़िया)	2 मार्च
चेहलम	10 अप्रै.
आखिरी चहार शम्बा	14 अप्रै.
शहादत–ए–इमाम हसन	19 अप्रै.
ईद–ए–मिलाद	2 मई
ईद–ए–मौलाद	8 मई
फतिहायज़दहुम	31 मई
जन्म श्री हज़रत अली	30 अग.
शब–ए–मिराज	13 सितं.
शब–ए–बरात	1 अक्तू.
रमज़ान का पहला दिन	16 अक्तू.
शहादत–ए–हज़रत अली	5 नवं.
शब–ए–कद्र	11 नवं.
जमतुल विदा	12 नवं.
ईद–उल–फित्र	15 नवं.
(सन् 2005 ई.)	
इदुलज्जुहा	21 जन.
मुहर्रम (ताज़िया)	20 फर..

सचना

सभी मुस्लिम–त्योहार चन्द्र–दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे–पीछे हो जाने पर, इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2004 ई. से 8 अप्रै., सन् 2005 ई. तक)

नाम मेला/पर्व	ता.
(सन् 2004 ई.)	
माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	7 जन.
लोहड़ी (दाऊं, बिंदरख) रोपड़ (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
वसन्त पंचमी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी मस्तुआणां साहिब (पं.)	1 फर.
ज. दि. गु. हरिराय साहिब जी, सिंहपुरा (कुराली)	4 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	18 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी, गढ़वाल)	18 फर.
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	7 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	9 मार्च
श्रीगुरु रामराय (देहरादून)	11 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	11 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी (नानकसर चीमा)	15 से 17 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	19 मार्च
ज. दि. सं. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
नाईसर खाना (पं.)	27 मार्च
श्रीमनसादेवी (हरि.)	29 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	29 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	29 मार्च
माता कांसादेवी (कांसल, रोपड़) प्रारम्भ	3 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	4 अप्रै.
अर्द्ध कुम्भ (हरिद्वार)	13 अप्रै.
कशाघा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	19 अप्रै.

नाम मेला/पर्व	ता.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
समागम (8 दिन) हरिहरघाट मणिकर्ण, (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व(उज्जैन)	4 मई
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
डूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज. दि. सं. बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर, पावंटा साहिब	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	27 मई
श्रीगंगा दशहरा	29 मई
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	29 मई
निमाणी एकादशी, नौवें गुरु बरहे (बठि.), पं.	30 मई
पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	30 मई
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	3 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन,	14 जून
मुन्तर (कुल्लू) प्रा.	14 जून
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	27 जून
याद. दिवस बी. शरण कौर जी, गु. अमर गढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	28 जून
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली)	2 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी, नानकसर, चीमा प्रा	9 जुला.
ब.सं.बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी, (झाड़साहिब वाले) चमकौर प्रा.	5 अग.
ब. सन्त बाबा हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्रीनैना देवी (हि. प्र.)	23 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	23 अग.

नाम मेला/पर्व	ता.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	30 अग.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	12 सितं.
श्रीगुसाईआणा, कुराली (पंजाब)	16 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्ड़ी) हि.प्र. प्रारम्भ	18 सितं.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	19 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला,पटियाला)	25 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	27 सितं.
छपार (पं.)	27 सितं.
मेला पीरमीखनशाह (घड़ाम) पटियाला–प्रा.	27 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब, (अमृतसर), पं.	28 सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	13 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.)	21 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर), पं.	21 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	22 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	27 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	27 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	12 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	22 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	22 नवं.
जन्मदिन श्रीवीर वैरागी (नकोदर–पं.)	24 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर पं.)	26 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	26 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	26 नवं.
ब. बा. वैशाखा सिंह, दुदेहर सा. (अमृतसर)	4 दिसं.
पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)	11 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ साहिब	23 दिसं.
जोड़मेला फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रा.	26 दिसं.

नाम मेला/पर्व	ता.
संगीत मेला बाबा हरबल्लभ (जालन्धर), प्रा.	27 दिसं.
माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	27 दिसं.
(सन् 2005 ई.)	
लोहड़ी (दांऊ,बिदरख) रोपड़, पंजाब	13 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	13 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	25 जन.
ब.स. बाबा अतर सिंह जी मस्तुआणां (पं.)	31 जन.
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा– कुराली	4 फर.
वसन्त पंचमी	13 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	8 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	8 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी (नानकसर चीमा)	17 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	26 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	29 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	30 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	31 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	7 अप्रै.

यदि आप चाहते हैं कि आपके नगर/ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस सूची में प्रविष्ट किया जाए, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो–पूर्ण विवरण सहित लिख भेजें– धन्यवाद– सम्पादक

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल , सन् 2005 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

						(सन् 2005 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2004 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2005 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	15 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	21 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
पोंगल	15 जन.	ईद–ए–मिलाद	2 मई	दशहरा	22 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	4 मई	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	28 अक्तू.	अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	16 जन.
इदुलज्जुहा	2 फर.	रथयात्रा (पुरी)	20 जून	दीपावली	12 नवं.	इदुलज्जुहा	21 जन.
जन्म श्री गुरु रविदास जी	6 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	जमतुलविदा	12 नवं.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर.	ओणम (केरल)	28 अग.	भाई दूज	14 नवं.	मुहर्रम	20 फर.
मुहर्रम	2 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	30 अग.	इदुलफित्र	15 नवं.	जन्म श्री गुरु रविदास जी	24 फर.
गुड़ी पड़वा	21 मार्च	जन्म श्रीहजरत अली	30 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	26 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	8 मार्च
श्रीराम नवमी	30 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	6 सितं.	बलि. दिवस श्री गुरु तेग़बहादुर जी	16 दिसं.		
श्रीमहावीर जयन्ती	3 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	18 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
गुड फ्राई डे	9 अप्रै.						

सिक्ख पर्व

नाम गुरु साहिब	पुरातन परम्परा अनुसार (2004–05 ई.)			नानकशाही कैलैण्डर के अनुसार (शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा प्रसारित)		
	प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोती जोत समाए	प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोती जोत समाए
श्री गुरु नानकदेव जी	28 नवंबर	अवतार दिन से	9 अक्तूबर	26,नवंबर	अवतार दिन से	22 सितम्बर
श्री गुरु अंगददेव जी	20 अप्रैल	3 अक्तूबर	25 मार्च	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	3 मई	21 मार्च	28 सितम्बर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर
श्री गुरु रामदास जी	30 अक्तूबर	28 सितम्बर	17 सितम्बर	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर
श्री गुरु अर्जनदेव जी	11 अप्रैल	10 सितम्बर	23 मई	2 मई	16 सितम्बर	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	4 जून	11 मई	26 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	4 फरवरी	18 मार्च	6 नवंबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
श्री गुरु हरकिशन जी	10 जुलाई	6 नवंबर	4 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	9 अप्रैल	4 अप्रैल	16 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	16 जन.(2005 ई.)	14 दिसंबर(2004 ई.)	16 नवंबर (2004 ई.)	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक 13 अप्रैल, 2004 ई.			1 वैशाख / 14 अप्रैल, 2004 ई.		
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्रशुक्ल 1, मुताबिक 15 सितम्बर, 2004ई.			17 भाद्रपद / 1 सितंबर		
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक 14 नवंबर, 2004 ई.			6 कार्तिक / 20 अक्तूबर		

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल, सन् 2005 ई. तक)

सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004–05 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2005 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2005 ई.	समाप्त घं. मि.
– – –	– – –	2 जन.	1 09	6 मई	19 34	8 मई	14 34	11 सितं.	13 26	13 सितं.	16 27	8 जन.	2 39	9 जन.	21 06
9 जन.	19 27	11 जन.	21 35	15 मई	11 42	17 मई	15 46	20 सितं.	14 08	22 सितं.	11 21	16 जन.	5 47	18 जन.	7 26
18 जन.	16 15	20 जन.	11 39	25 मई	11 38	27 मई	15 07	29 सितं.	3 21	1 अक्तू.	4 32	26 जन.	2 10	28 जन.	7 17
27 जन.	4 29	29 जन.	8 43	3 जून	6 08	5 जून	0 10	8 अक्तू.	21 53	11 अक्तू.	1 14	4 फर.	11 56	6 फर.	7 47
6 फर.	2 26	8 फर.	3 47	11 जून	17 21	13 जून	21 30	17 अक्तू.	20 11	19 अक्तू.	16 46	12 फर.	15 05	14 फर.	15 15
14 फर.	23 02	16 फर.	19 52	21 जून	17 38	23 जून	21 38	26 अक्तू.	11 09	28 अक्तू.	12 50	22 फर.	8 42	24 फर.	13 30
23 फर.	13 51	25 फर.	17 14	30 जून	16 48	2 जुला.	10 56	5 नवं.	6 17	7 नवं.	10 29	3 मार्च	18 32	5 मार्च	15 52
4 मार्च	10 55	6 मार्च	11 52	9 जुला.	0 08	11 जुला	3 37	14 नवं.	4 39	15 नवं.	23 49	12 सार्च	1 34	14 मार्च	0 43
13 मार्च	4 23	15 मार्च	1 42	18 जुला.	23 23	21 जुला.	3 11	22 नवं.	17 13	24 नवं.	19 40	21 मार्च	16 07	23 मार्च	20 54
21 मार्च	22 39	24 मार्च	1 48	28 जुला.	1 54	29 जुला.	21 06	2 दिसं.	13 44	4 दिसं.	18 47	30 मार्च	23 56	1 अप्रै.	21 40
31 मार्च	20 01	2 अर्पे.	21 24	5 अग.	8 35	7 अग.	10 57	11 दिसं.	15 27	13 दिसं.	9 38	8 अप्रै.	11 13	10 अप्रै.	10 23
9 अप्रै.	10 47	11 अप्रै.	7 14	15 अग.	5 49	17 अग.	9 07	19 दिसं.	22 46	22 दिसं.	1 23				
18 अप्रै.	5 52	20 अप्रै.	9 24	24 अग.	8 43	26 अग.	5 18	29 दिसं.	20 07	1 जन.	1 29				
28 अप्रै.	4 30	29 अप्रै.	6 04	1 सितं	18 05	3 सितं.	19 31								

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल, सन् 2005 ई. तक)

सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2005 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2005 ई.	समाप्त घं. मि.
23 जन.	16 33	28 जन.	6 16	11 मई	21 34	16 मई	13 32	29 अग.	9 57	2 सितं.	18 25	12 जन.	22 31	17 जन.	6 13
20 फर.	2 27	24 फर.	15 12	8 जून	4 38	12 जून	19 10	25 सितं.	18 05	30 सितं.	3 38	9 फर.	9 47	13 फर.	14 45
18 मार्च	10 13	22 मार्च	23 56	5 जुला.	13 45	10 जुला.	1 32	23 अक्तू.	0 10	27 अक्तू.	11 46	8 मार्च	20 11	13 मार्च	0 47
14 अप्रै.	16 01	19 अप्रै.	7 24	2 अग.	0 03	6 अग.	9 22	19 नवं.	5 37	23 नवं.	18 14	5 अप्रै.	4 06	9 अप्रै.	10 33
								16 दिसं.	12 42	20 दिसं.	23 47				

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल, सन् 2005 ई. तक)

2004 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	4	11	18	25	–
फरवरी	1	8	15	22	29
मार्च	7	14	21	28	–
अप्रैल	4	11	18	25	–

2004 ई.	रविवार की तारीखें				
मई	2	9	16	23	30
जून	6	13	20	27	–
जुलाई	4	11	18	25	–
अगस्त	1	8	15	22	29

2004 ई.	रविवार की तारीखें				
सितंबर	5	12	19	26	–
अक्तूबर	3	10	17	24	31
नवंबर	7	14	21	28	–
दिसंबर	5	12	19	26	–

2005 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	2	9	16	23	30
फरवरी	6	13	20	27	–
मार्च	6	13	20	27	–
अप्रैल	3	10	17	24	–

अर्धकुम्भ हरिद्वार एवम् कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन, (सं. 2061 वि.)

वैशाख कृष्ण नवमी, मंगलवार (13 अप्रैल, 2004 ई.) एवम् वैशाख पूर्णिमा, मंगलवार (4 मई, 2004 ई.),

लेखक –प्रियव्रत शर्मा,

हिन्दुओं के सभी प्राचीन उत्सव धार्मिक आधार लिए हुए हैं। वे मनोरंजन के साथ–साथ मानव के चरित्र को आवश्यक विधियों की ओर प्रवृत्त और निषेधों से निवृत्त कर एक ऐसे अनुशासन में निबद्ध करते हैं, जिससे मानव ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस प्राप्त करता है। वे शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मिक शुद्धि पर समान रूपेण बल देते हैं। इन उत्सवों में चार कुम्भपर्वो का स्थान विशालता और अलौकिक माहात्म्य की दृष्टि से वस्तुतः मूर्धन्य है। ये धार्मिक पर्व अपने अद्वितीय माहात्म्य के कारण प्रत्येक द्वादशाब्दी में एक–एक बार हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक में अपार जनसमूह को आकृष्ट करने के लिए भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में विख्यात हैं । यदि हम इन्हें विश्व के सबसे बडे 'जनसंगम' कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्य सभी हिन्दु पर्वोत्सवों की भांति ये कुम्भपर्व भी ग्रहों की राशि–नक्षत्रों में विशेष स्थितियों से सम्बद्ध हैं। इन कुम्भपर्वो की तिथियों का निर्धारण सूर्य, गुरु और चन्द्र की विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है।

कुम्भपर्व क्यों मनाए जाते हैं ?

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक (त्र्यम्बक)में छुपाया गया। इसलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक एक बार कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की एवम् चन्द्रमा ने भी राक्षसों को इससे वंचित रखने के लिए पूरा प्रयास किया । यही कारण है, कि– इन तीनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि– दैत्य–देवों की छीना–झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि इन चार तीर्थस्थलों में गिर गई थीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। इस गाथा के अतिरिक्त एक और भी गाथा है। कश्यप ऋषि की दो पत्नियां कद्रु एवं विनता थीं। इन दोनों में आपसी द्वेष बहुत था। एक बार इन दोनों में शर्त लगी। कद्रु का कहना था, कि सूर्य के घोड़े काले हैं और वनिता का कहना था, सफेद हैं। कद्रु का पुत्र नागराज था और विनता का पुत्र गरुड़। नागराज ने अपनी माता को जिताने के लिए सूर्यलोक में जाकर घोड़ों को अपने काले शरीर से ढक लिया। इस प्रकार उसने अपनी माता को विजयी बना दिया। विनता को शर्त के अनुसार कद्रु की दासी बनना पड़ा। गरुड़ अपनी मां के दासीभाव से बहुत क्षुब्ध रहते थे। उन्होंने अपनी माता के दासीभाव से मुक्ति के लिए नागलोक में जाकर अमृतकुम्भ लाने का प्रयत्न किया । रास्ते मे हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) में अमृतकुम्भ को रखकर, उन्हें वहां इन्द्र के साथ युद्ध करना पड़ा। 12 दिव्य दिनों (12 सौर वर्षों) तक युद्ध चलता रहा। इस युद्ध के दौरान इन स्थानों पर अमृत गिरने से इनका धार्मिक महत्त्व बना। इसी कारण इन चारों स्थानों पर कुम्भपर्व प्रारम्भ हुए। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं। परन्तु सभी में अमृत का पात्र इन्हीं चार स्थानों पर रखने अथवा अमृत के बूंद इन्हीं स्थानों पर गिरने आदि का आख्यान एक सा है, भले ही किसी ने किसी के साथ लड़ने के लिए पात्र वहां रखा अथवा अमृत का पात्र वहां छिपा दिया। धर्मशास्त्र भी एक से वाक्यों से कुम्भपर्व के स्थानों का महत्त्व बखानते हैं, कि वहां स्नान करने से अमृतत्व की प्राप्ति होती है, इत्यादि। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं, जिनका सम्बन्ध कुम्भपर्वो से है।

इन चार महाकुम्भ पर्वो के अलावा हरिद्वार एवं प्रयागराज में अर्धकुम्भ भी मनाए जाते हैं; जो स्थानीय कुम्भमहापर्व से लगभग 6 वर्ष बाद घटित हुआ करते हैं। इन अर्धकुम्भों का भी स्नान–दान–जपादि के लिए बहुत माहात्म्य माना गया है।

ध्यान रहे– उज्जैन और नासिक में अर्धकुम्भ मनाने की परम्परा नहीं है।

इस वर्ष (सं. 2061 वि.) में वैशाख कृष्णनवमी, मंगलवार के दिन 13 अप्रैल, सन् 2004 ई. को सिंहस्थ गुरु के समय सूर्य के मेष संक्रमण काल में हरिद्वार में अर्धकुम्भ पर्व एवं इसी वर्ष वैशाख पूर्णिमा, मंगलवार के दिन 4 मई, सन् 2004 ई. को मेषस्थ सूर्य एवं सिंहस्थ गुरु के काल में उज्जैन का कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व घटित हो रहा है। इनकी स्नानादि तिथियों का विस्तृत विवरण आगे दिया जा रहा है।

–: अर्धकुम्भ हरिद्वार की स्नानतिथियां :–

प्रथम स्नान – चैत्र अमावस, शनिवार, (सं. 2060 वि.) (20 मार्च सन् 2004 ई.)। शनैश्चरी अमावस के कारण इस स्नान का विशेष महत्त्व है।

द्वितीय स्नान– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, रविवार (सं. 2061 वि.) (21 मार्च, सन् 2004 ई.)। नवरात्र प्रारम्भ तिथि।

तृतीय स्नान– चैत्र शुक्ल एकादशी, गुरुवार (सं. 2061 वि.) (1 अप्रै., सन् 2004 ई.)।

चतुर्थ स्नान–चैत्र पूर्णिमा, चन्द्रवार (सं. 2061 वि.) (5 अप्रै., 2004 ई.)।

पंचम (प्रमुख) स्नानः– वैशाख कृष्ण नवमी मंगलवार (सं. 2061 वि.) (13 अप्रै., 2004 ई.)। मेष संक्रान्ति के कारण यह तिथि इस अर्द्धकुम्भ की प्रमुख स्नानतिथि है।

षष्ठ स्नान– वैशाख कृष्ण एकादशी, गुरुवार (सं. 2061 वि.) (15 अप्रै., 2004 ई.)।

सप्तम स्नान– वैशाखी अमा, चन्द्रवार, (सं. 2061 वि.)(19 अप्रै., 2004 ई.)। सोमवती अमा के कारण इस स्नान का विशेष माहात्म्य होगा।

अष्टम स्नान– वैशाख शुक्ल तृतीया, गुरुवार (सं. 2061 वि.) (22 अप्रै. 2004 ई.)। इस दिन अक्षयतृतीया है। गंगातट पर पितृतर्पण व श्राद्ध करने का इसदिन विशेष फल है।

नवम स्नान– वैशाख शुक्ल षष्ठी, चन्द्रवार (सं. 2061 वि.) (26 अप्रै., 2004 ई.)। यह श्रीगंगा अवतरण तिथि है।

–:"कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व" उज्जैन की स्नानतिथियां:–

प्रथम स्नान– चैत्र शुक्ल एकादशी, गुरुवार, (सं. 2061 वि.) (1 अप्रै., 2004 ई.)।

द्वितीय स्नान– चैत्री पूर्णिमा, चन्द्रवार (सं. 2061 वि.) (5 अप्रै., 2004 ई.)।

तृतीय स्नान– वैशाख कृष्ण एकादशी, गुरुवार (सं. 2061 वि.) (15 अप्रै., 2004 ई.)।

चतुर्थ स्नान– वैशाखी अमा, चन्द्रवार, (सं. 2061 वि.) (19 अप्रै. 2004 ई.)। सोमवती अमा के कारण इस स्नान का विशेष माहात्म्य होगा।

पंचम स्नान– वैशाख शुक्ल तृतीया, गुरुवार (सं. 2061 वि.) (22 अप्रै., 2004 ई.)। अक्षय तृतीया होने से यह स्नानतिथि विशेष फलदा है।

षष्ठ स्नान– वैशाख शुक्ल पंचमी, शनिवार, (सं. 2061 वि.) (24 अप्रै., 2004 ई.)। यह तिथि आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जी की अवतारतिथि है।

सप्तम स्नान– वैशाख शुक्ल एकादशी, शनिवार, (सं. 2061 वि.) (1 मई, 2004 ई.)।

अष्टम (प्रमुख = शाही) स्नान– वैशाखी पूर्णिमा, मंगलवार (सं. 2061 वि.) (4 मई, 2004 ई.)। यह प्रमुख स्नानतिथि है। इस दिन महात्माओं की शाही यात्रा भी निकलेगी। इसी दिन रात्रि में चन्द्रग्रहणं भी होगा; जिससे इस पर्व का माहात्म्य और भी बढ़ जाता है।

नवम स्नानः– ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, शुक्रवार (सं. 2061 वि.)(14 मई, 2004 ई.)। यह अन्तिम स्नानतिथि है। इस दिन वृष संक्रान्ति भी है, अतः इस दिन स्नानदान आदि का विशेष फल होगा।

स्नान का काल

स्नान का मुख्यकाल 'अरुणोदय' है। सूर्योदयानन्तर किए गए स्नान का माहात्म्य सामान्य है। लेकिन यह नियम सामान्य–तिथिस्नान के लिए है। कुम्भ एवं अर्धकुम्भ आदि की स्नान–तिथियों में स्नान सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त कभी भी किया जा सकता है, जिसका माहात्म्य (पुण्य) पूर्ण माना गया है । अतः कुम्भपर्व की स्नान–तिथियों के दिन अरुणोदय काल में ही गंगा या शिप्रा में ही स्नान करना है, ऐसा आग्रह नहीं होना चाहिए ।

जो लोग हरिद्वार आदि न जा सके

जो श्रद्धालु सज्जन अस्वास्थ्य या अन्य किसी अपरिहार्य कारण से हरिद्वार आदि में न जा सकें, उन्हें अर्धकुम्भ एवं कुम्भ महापर्व की केवल प्रमुख स्नान–तिथियों में (13 अप्रै. सन् 2004 ई. तथा 4 मई, 2004 ई. के दिन) समीपस्थ किसी समुद्र, महानदी, नदी, तालाब, बावड़ी अथवा अपने स्नानागार में ही हरिद्वार, उज्जैन तथा गंगा–शिप्रा का ध्यान करते हुए स्नान करना चाहिए– ऐसा शास्त्र कथन है। इससे भी पर्वस्नान का पूर्णफल प्राप्त होता है।

आगामी हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन के कुम्भ महापर्व

हरिद्वार कुम्भपर्व	14 अप्रैल,	2010 ई.
प्रयाग कुम्भपर्व	10 फरवरी,	2013 ई.
नासिक कुम्भपर्व	13 सितम्बर,	2015 ई.
उज्जैन कुम्भपर्व	21 मई,	2016 ई.

('गणकमार्त्तण्ड' से उद्धृत)

मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

अप्रतिमप्रतिमाविशेषसमुल्लसिताः, स्वे स्वे कर्मण्यभिरताः सन्तः भारतराष्ट्रस्य सर्वतोमुखाभिवृद्धये बद्धपरिकराः, निरन्तरसत्कृतव्यवसायशीलत॥ स्वावाप्तदृढभूमयः, नैकासु आधुनिकविद्यासु समवाप्तसिद्धयः, अनवरतस्वसुकर्मानुष्ठाननिष्ठागरिष्ठाः, मूलतः *भौतिकविज्ञानक्षेत्रे* च लब्धप्रतिष्ठाः सन्तोऽपि भारतवर्षस्य एकताम् अखण्डताञ्च भाषामाध्यमेन घटयन्त्याः, भारतस्य ज्ञान–विज्ञान–संस्कृति–सम्प्रदाय–जनजीवनमूल्यानाम् एकमात्रमूलाधारभूतायाः, अपौरुषेय-नित्यसत्य–शब्दसमुदायात्मकानां वेदानामाविष्कार–माध्यमभूतायाः, श्रीरामादि–सर्वोत्कृष्ट–मानवादर्शानां विश्वस्मिन् जगति सर्वप्रथमोपस्थापयित्र्याः, भारतस्य आत्मभूतायाः संस्कृतभाषायाः सर्वाङ्गविकासाय प्रचुरतर–प्रचार–प्रसार–प्रबोधनोद्बोधनादि–विविधसेवाकर्मसु स्वात्मसमर्पणपूर्वकं दीक्षिताः तत्रभवन्तो विराजन्ते।

तदेवं संस्कृतभाषासम्प्रतिष्ठायाः समभिवृद्धये विविधैः उपायैः तत्रभवद्भिः कृतां क्रियमाणां करिष्यमाणां च श्रद्धा–समर्पणभाव–पूर्विकां महीयसीं सेवामुपलक्ष्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयः मानितविश्वविद्यालयत्वेन सम्मानितं भारतशासनाधीनं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानं च महनीयान्

डा. शक्तिधर शर्मा महोदयान्

संस्कृतमित्रम्

इति पुरस्कारप्रदानेन सभाजयति।

डा. मुरली मनोहर जोशी मन्त्री, मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयः अध्यक्षः, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्	युगाब्दः 5105 भाद्रपदकृष्णद्वितीया 14-08-2003	वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री कुलपतिः राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

डॉ. शक्तिधर शर्मा को अर्पित प्रशस्तिपत्र का हिन्दी अनुवाद,
'मानव संसाधन विकास मन्त्रालय',
'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान' (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली

अद्वितीय विशिष्ट प्रतिभा से भ्राजमान आप अनेक वैयक्तिक कार्यों में संलग्न रहते हुए भारतराष्ट्र की सर्वतोमुखी अभिवृद्धि के लिए कटिबद्ध हैं। निरन्तर सुकृताचरण की प्रकृति से प्राप्त दृढ आधार के कारण अनेक आधुनिक विद्याओं में आपने दक्षता प्राप्त की है और अश्रान्तरूपेण स्वकीय सत्कर्म–सम्पादन के प्रति निष्ठा ने आपको विशेष गरिमासम्पन्न बनाया है। प्राधान्येन, **भौतिकविज्ञान** के क्षेत्र में लब्धप्रतिष्ठ होत हुए भी भारतवर्ष की एकता, अखण्डता को भाषामाध्यम से स्थापित करने वाली, भारत के ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, सम्प्रदाय एवं जनजीवन के मूल्यों की एकमात्र आधारभूत तथा अपौरुषेय शाश्वत सत्य पदोच्चयात्मक वेदों के आविर्भाव की माध्यम किञ्च श्रीराम आदि के सर्वोत्कृष्ट मानवीय आदर्शों को समस्त विश्व में सर्वप्रथम उपस्थापित करने वाली भारत की आत्मस्वरूप इस संस्कृत भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए प्रचुरतर प्रचार, प्रसार, प्रबोधन, उद्बोधन आदि विविध सेवाकार्यों में आत्मार्पणपूर्वक दीक्षित होकर आप प्रभामण्डित हैं।

इसप्रकार संस्कृत भाषा की सम्प्रतिष्ठा के सर्वतोभावेन संवर्धन के लिए विविध उपायों से की गई, की जा रही और की जाने वाली श्रद्धा तथा आत्मार्पणभाव पुरस्सर आपकी गुरुतर सेवा के उपलक्ष्य में 'मानव संसाधन विकास मन्त्रालय' एवं मानित विश्वविद्यालयरूप में सम्मानित भारत शासनाधीन यह **"राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान"**– दोनों सम्माननीय आप–

डॉ. शक्तिधर शर्मा महोदय का
'संस्कृत मित्रम्'
पुरस्कार अर्पित करते हुए अभिनन्दन करते हैं।

डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, मन्त्री– 'मानव संसाधन विकास मन्त्रालय,' अध्यक्ष, 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान.'	युगाब्द 5105 भाद्र कृ. द्वितीया 14–8–2003	श्री वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति– 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान'

अनुवादक–प्रियव्रत शर्मा।

ग्रहण विवरण (सं. २०६१ वि.)

प्रियव्रत शर्मा, संयमी शर्मा

इसवर्ष (सं. २०६१ वि. में) भूगोल पर ये पांच ग्रहण होंगे :-

(१)	खण्डग्रास सूर्यग्रहण	(वैशा. कृ ३० चं.; १६ अप्रै., २००४ ई.),
(२)	खग्रास चन्द्रग्रहण	(वैशा. शु. १५ मं.; ४/५ मई, २००४ ई.),
(३)	खण्डग्रास सूर्यग्रहण	(आश्वि. कृ. ३० गु.; १४ अक्तू., २००४ ई.),
(४)	खग्रास चन्द्रग्रहण	(आश्वि. शु. १५ गु.; २८ अक्तू., २००४ ई.),
(५)	कंकण सूर्यग्रहण	(चैत्र कृ. ३० शु.; ८/९ अप्रै., २००५ ई.),

इन ग्रहणों में से केवल चन्द्रमा के दो ग्रहण ही भारत में दिखाई देंगे। शेष तीनों सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं पड़ेंगे।

-: भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण :-

(i) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (वैशा. कृ ३० चन्द्रवार; १६ अप्रै., २००४ ई.)** – यह ग्रहण भा.स्टैं.टा. के अनुसार १६ अप्रै., २००४ ई को १७ घं. ०० मि. से २१ घं. १६ मि. तक अफ्रीका के दक्षिणी भाग, ऐन्टार्क्टिका व एटलांटिक महासागर में खण्डग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा।

(ii) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (आश्वि. कृ. ३० गुरुवार; १४ अक्तू., २००४ ई.)** – यह ग्रहण भा. स्टैं. टा. के अनुसार १४ अक्तू., २००४ ई. को ६ घं. ३५ मि. से १० घं. ३४ मि. तक पूर्वोत्तर एशिया, कोरिया, जापान तथा प्रशान्त महासागर में खण्डग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा।

(iii) **कंकण सूर्यग्रहण (चैत्र कृ. ३० शुक्रवार; ८/९ अप्रै., २००५ ई.)** – यह ग्रहण भा. स्टैं. टा. के अनुसार ८ अप्रै. को २३ घं. २१ मि. पर शुरू हो कर ९ अप्रै. के दिन ४ घं. ५० मि. पर समाप्त हो जाएगा। इसे उत्तर एवम् दक्षिण अमेरिका, न्यूज़ीलैंड तथा प्रशान्त महासागर में देखा जा सकेगा।

-: भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण :-

(i) **खग्रास चन्द्रग्रहण (वैशा. शु. १५ मंगलवार; ४/५ मई, २००४ ई.)** :- यह ग्रहण ४-५ मई की मध्यगत रात्रि में भारत, एशिया, यूरोप, अफ्रीका, द. अमेरिका एवम् आस्ट्रेलिया आदि में देखा जा सकेगा। इस ग्रहण के प्रारम्भ आदि का समय (भा. स्टैं. टा.) नीचे दिया जा रहा है-

ग्रहण प्रारम्भ	० घं. १८ मि.	(४ और ५ मई की मध्यगत रात्रि का समय) (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	१ घं. २२ मि.	
ग्रहण मध्य	२ घं. ० मि.	
खग्रास समाप्त	२ घं. ३८ मि.	
ग्रहण समाप्त	३ घं. ४२ मि.	
पर्वकाल	३ घं. २४ मि.	

२०-२० मिनट के अन्तराल पर इस ग्रहण के ग्रास की आकृतियां तथा इसके स्पर्श-मोक्ष आदि की दिशाएं नीचे चित्र में दी गई हैं।

ग्रहण का सूतक (वेध)- इस ग्रहण का सूतक ४ मई को १५ बजकर १८ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर शुरु हो जाएगा। ग्रहण के सूतक के काल में बाल, वृद्ध और आतुरों को छोड़कर अन्य किसी को भी कुछ खाना-पीना न चाहिए।

ग्रहण का राशिफल - यह ग्रहण स्वाती और विशाखा नक्षत्रों तथा तुला राशि में होगा। इसलिए इन नक्षत्रों एवम् राशि वालों के लिए यह विशेष कष्टप्रद होगा। विभिन्न राशि वालों के लिए इसका अलग-अलग फल नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है-

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	स्त्री/पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धन-लाभ	हानि	महान् कष्ट	हानि	लाभ	सुख	अपमान	दुर्घटना

ग्रहण का अन्य फल - यह ग्रहण स्वाती- विशाखा नक्षत्रों में घटित होगा। अतः ग्रहण से तीसरे, छठे एवम् नवम मास में अन्न के व्यापार से लाभ तथा छठे मास में कुल्थी के व्यापार से लाभ होगा। घी, तेल, तिलहन, मूंग, कपास की फसलों को हानि पहुंचे। सूत, कपास, सण तेज रहेंगे। राजस्थान, उड़ीसा, समुद्रतटवर्ती कुछ प्रान्तों व देशों में प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (आश्वि. शु. १५ गुरुवार; २८ अक्तू., २००४ ई.)- यह ग्रहण साउदी अरब, यमन, टर्की, इराक, ईरान, अमेरिका, यूरोप एवम् अफ्रीका आदि में खग्रास के रूप में दिखाई देगा। भारत के पश्चिमोत्तर में स्थित केवल गुजरात, प.राजस्थान एवम् काश्मीर के पश्चिमोत्तरी कुछ भागों में ही यह कुछ ही मिनटों के लिए स्पर्श के समय ग्रस्तास्त दिखाई देगा। इसके प्रारम्भ आदि का काल (भा. स्टैं. टा.) नीचे दिया जा रहा है-

ग्रहण प्रारम्भ	**६ घं. ४४ मि.**	२८ अक्तू., २००४ ई. (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	**७ घं. ५७ मि.**	
ग्रहण मध्य	**८ घं. ३५ मि.**	
खग्रास समाप्त	**९ घं. १३ मि.**	
ग्रहण समाप्त	**१० घं. २४ मि.**	

भारत के गुजरात, राजस्थान और काश्मीर के जिन भागों में यह ग्रहण चन्द्रास्त के समय थोड़ी देर (अधिक से अधिक १४ मिनट) के लिए अत्यल्प ग्रास के साथ दिखाई देगा, उनका निर्देश यहां दाईं ओर दिए गए चित्र में किया गया है। इस चित्र में दी गई **'क - ख'** रेखा से बाईं ओर स्थित इन प्रदेशों के नगरों में ही यह ग्रहण चन्द्रास्त के समय देखा जा सकेगा। इस रेखा से दाईं ओर वाले किसी भी स्थान पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, क्योंकि यहां सर्वत्र चन्द्रमा ग्रहण प्रारम्भ होने से पहले ही अस्त हो चुका होगा।

खग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तू. 2004 ई.)

यह ग्रहण भारत मे 'क–ख' रेखा से बाईं ओर स्थित स्थलों पर ही चन्द्रास्त के समय कुछेक मिनटों के लिए थोडा सा नजर आएगा।

परिलेख– प्रियव्रत शर्मा

शुक्र का सूर्यातिक्रमण

(122 वर्ष बाद 8 जून, 2004 ई. को दिखाई पड़ने वाला अद्‌भुत आकाशीय दृश्य, जिसमें शुक्र सूर्यविम्ब पर से गुजरता नजर आएगा।)

लेखक :– प्रियव्रत शर्मा,

सूर्य के चारों ओर क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो के भ्रमणवृत्त हैं, जिनमें ये ग्रह सूर्य की अहर्निश परिक्रमा कर रहे हैं। बुध–शुक्र के भ्रमणवृत्त पृथ्वी के भ्रमणवृत्त(जिसे क्रान्तिवृत्त कहा जाता है) के भीतर पड़ते हैं । इन दोनों (बुध, शुक्र) ग्रहों को अवरग्रह (InferiorPlanets) कहा जाता है। शेष (मंगल आदि) सभी ग्रहों के भ्रमणवृत्त पृथ्वी के भ्रमणवृत्त से बाहर पड़ते हैं। इन ग्रहों को प्रवर ग्रह (Superior Planets) की संज्ञा दी गई है। सभी (अवर एवम् प्रवर) ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हुए अपने प्रत्येक भ्रमण में (अर्थात् सूर्य की प्रत्येक परिक्रमा में) दो बार क्रान्तिवृत्त के धरातलमें से अवश्य गुजरते हैं। क्रान्तिवृत्त के धरातल में अथवा क्रान्तिवृत्त के धरातल के पर्याप्त समीप स्थित कोई अवरग्रह (बुध या शुक्र) यदि सूर्य और पृथ्वी के बिल्कुल या लगभग बीच स्थित हो तो उसका बिम्ब हमें (पृथ्वीवासियों को)सूर्यबिम्ब पर से गुजरता हुआ नजर आता है। खगोलशास्त्र में इस घटना को **बुधया शुक्र का सूर्यातिक्रमण** कहा जाता है। बुध– सूर्य भेदयुति, शुक्र–सूर्यभेद युति अथवा बुधसूर्यान्तर्युति या शुक्रसूर्यान्तर्युति भी इसे कहते हैं। इंग्लिश में इसे Transit of Mercury / Venus कहा गया है।

बुध का अतिक्रमण (सूर्यातिक्रमण) तो एक शताब्दी में लगभग 8–9 बार घटित हो जाता है, लेकिन शुक्र का अतिक्रमण लगभग 130 वर्षों में केवल दो बार ही देखने को मिल पाता है। शुक्र के एक अतिक्रमण के बाद इसका दूसरा अतिक्रमण 122 वर्ष, फिर 8 वर्ष, फिर 105 वर्ष, फिर 8 वर्ष, फिर 122 वर्ष और फिर 8 वर्ष बाद क्रमशः इसी क्रम में बार बार घटित हुआ करता है। शुक्र का विगत अतिक्रमण 1874 ई. में और तदनन्तर 1882 ई. में घटित हुआ था। इसके बाद यह अब 122 वर्ष के अनन्तर सन् 2004 ई. में 8 जून को घटित होने जा रहा है। स्पष्ट है, इस युग में बहुत ही कम ऐसे लोग होंगे, जिनकी जीवनावधि में शुक्र का अतिक्रमणघटित हुआ हो। 121 वर्ष से अधिक आयु के भी जो इने–गिने लोग अब जीवित हैं, उन्होंने भी अपनी प्रबुद्ध अवस्था में तो शुक्र का अतिक्रमण कदापि नहीं देखा होगा। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि, सन् 2004 ई. में घटित होने जा रहा, यह शुक्र का अतिक्रमण विश्व के सभी लोगों के लिए एक सर्वथा नया अद्‌भुत रोचक खगोलीय दृश्य होगा।

8 जून 2004 ई. को घटित होने वाले इस शुक्र–सूर्यातिक्रमण का एक चित्र पृष्ठ 18 पर दिया गया है। **इसे देखिए**–सूर्यबिम्ब के पूर्व–दक्षिणी प्रान्त से शुक्र सूर्यबिम्ब में भा. स्टैं. टा. के अनुसार 10 घं. 37 मि. पर प्रवेश और17 घं. 07 मि. पर सूर्यबिम्ब के पश्चिम–दक्षिणी भाग से निर्गम (बहिर्गमन) करेगा। अलग– अलग समय में शुक्र सूर्यबिम्ब के किस भाग पर स्थित होगा, यह भी इस चित्र में दर्शाया गया है। **ध्यान रहे** – इस समय शुक्र वक्री (पूर्व से पश्चिम की ओर गतिशील) होगा।

गतवर्ष 7 मई 2003 ई. को बुध का सूर्यातिक्रमण घटित हुआ था। उस समय दृष्टि को पूरी तरह केन्द्रित कर सावधानी से देखने पर ही यह लोगों को कठिनाई से नज़र आ सका। लेकिन शुक्र के इस अतिक्रमण को देखना कठिन नहीं होगा। क्योंकि इस समय शुक्र का बिम्ब बुध के उस बिम्ब से 6 गुणा बड़ा होगा। बुध का बिम्ब उस समय केवल 10 विकला ही था, जबकि शुक्र का बिम्ब अब 60 विकला होगा।

सूर्य के परम दीप्तिमान् बिम्ब में शुक्र के छोटे से बिम्ब को देख पाना

थोड़ा सा कठिन होगा। लेकिन इसे देखने के लिए सूर्यबिम्ब में उसी जगह दृष्टि केन्द्रित कीजिए, जहां चित्र में उस समय शुक्र को स्थित दिखाया गया है। एकाग्रता से देखने पर विशाल सूर्यबिम्ब में शुक्र का यह बिम्ब इस भान्ति लगेगा, जैसे चांदी के स्वच्छ थाल में टेबल-टैनिस की गेंद पड़ी हो। वैल्डिंग में प्रयुक्त होने वाले काले शीशे या गहरी काली फोटो-फिल्म अथवा दीपक/मोमबत्ती के धुएं से अच्छी तरह काले किए गए कांच में से इस घटना को देखना चाहिए। साधारण दूरबीन की सहायता से भी इसे आसानी से देखा जा सकता है। **लेकिन ध्यान रहे – बिना फिल्टर की दूरबीन से सूर्य को देखने पर आप तुरन्त अन्धे हो सकते हैं।**

ध्यान रहे– यहां बतलाए गए इस शुक्रसूर्यातिक्रमण के प्रवेश –निर्गम कालों में कुछ मिनटों की स्थूलता है, क्योंकि शुक्र के बिम्बमान और लम्बन की यहां मैने उपेक्षा की है।

शुक्र के सूर्यातिक्रमण का फल बृहत्संहिता में इस प्रकार लिखा है –

'' भेदे वृष्टिविनाशो भेदः सुहृदां महाकुलानां च।''

अर्थात् भेदयुति होने पर वर्षा का अभाव, मित्रों में मतभेद और मित्र-राष्ट्रों में वैमनस्य पैदा होता है।

–: शुक्र का यह सूर्यातिक्रमण किन–किन देशों में दिखाई पड़ेगा :–

यह शुक्र–सूर्यातिक्रमण भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, बंगलादेश, लंका, यूरोप, U.A.E., अफ्रीका, चीन और रूस में प्रवेश से निर्गम (प्रारम्भ से अन्त) तक देखा जा सकेगा। आस्ट्रेलिया, जापान, कोरिया, सिंगापुर, न्यूजीलैंड में इसका निर्गम (अन्त) नहीं दिखाई देगा। U.S.A. और कनाडा के पूर्वीभाग में इसका केवल निर्गम देखा जा सकेगा।

शुक्र का आगामी सूर्यातिक्रमण 8 वर्ष बाद सन् 2012 में देखा जा सकेगा ।

–: बुध–शुक्र के सूर्यातिक्रमण का जातकजीवन पर प्रभाव :–

जातक संहिताकारों के अनुसार सूर्यातिक्रमण के समय बुध–शुक्र का चेष्टाबल (फलित शास्त्रीय षड्बलों में से, जो एक विशेष प्रकार का बल है) शत–प्रतिशत होता है। फलित–शास्त्रियों का मन्तव्य है कि–चेष्टाबल वाले ग्रह में जातक के जीवन पर प्रभाव डालने की विशेष क्षमता होती है, क्योंकि इस स्थिति में ग्रह पृथ्वी के समीपतम होता है और उसका बिम्ब भी इस समय परमाधिक होता है।

यहां यह बात विशेषरूप से विचारणीय है, कि– सूर्यातिक्रमण के समय दोनों अवरग्रह (बुध और शुक्र) परमअस्त की स्थिति में भी हुआ करते हैं। क्या उनका यह अस्तभाव उनके चेष्टाबलजन्य प्रभाव को शून्य नहीं करता ? क्योंकि फलित सिद्धान्तानुसार अस्त ग्रह सर्वथा बलहीन माना गया है।

शुक्र का सूर्यातिक्रमण (8 जून, 2004 ई.)

(सूर्यबिम्ब पर शुक्र की भिन्न भिन्न कालों में स्थिति)

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

वक्रगति से चलता हुआ शुक्र सूर्यबिम्ब में पूर्व–दक्षिण की ओर से **'क'** बिन्दु पर भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः 10 घं. 37 मि. पर प्रविष्ट होकर सायं 17घं. 07 मि. भा. स्टैं. टा. पर उसके दक्षिण–पश्चिमी भाग के **'ख'** बिन्दु से बाहर निकल जाएगा। 6घं. 30 मि. तक यह शुक्र सूर्यबिम्ब के भिन्न–भिन्न भागों में दिखाई पड़ेगा। किस समय यह सूर्यबिम्ब के किस भाग में स्थित होगा– यह ऊपर दिए गए इस चित्र में शुक्रमार्ग रेखा पर अंकित घं. मि. (भा. स्टैं. टा) से जाना जा सकता है। ध्यान रहे– विश्व के विभिन्न देशों में इस शुक्र–सूर्यातिक्रमण के प्रवेश–निर्गम कालों में शुक्र के अत्यल्प लम्बन के कारण कुछ–कुछ मिनटों का ही अन्तर होगा। यहां दिए गए शुक्र के प्रवेश–निर्गम के भा. स्टैं. टा. में अभीष्टदेशीय स्टैं. टा. और भा. स्टैं. टा. के अन्तर को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर इस शुक्र–सूर्यातिक्रमण के प्रवेश–निर्गम का अभीष्टदेशीय लगभग स्टैं. टा.प्राप्त हो जाएगा।

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर

ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ' मालिक, कंवल फोटोस्टेट,

चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274

ज्ञानी श्री करतार सिंह जी विगत 12 वर्षों से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपिलेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं, जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक **'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'** (हिन्दी) की ही संस्कार--समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अत एव ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवन् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी** की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख, स्तम्भों से 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आपको समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' आज सभी तिथपत्रिकाओं को पीछे छोड़ गई है– इसका श्रेय आप ही को हम देते हैं। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जेसै–तैसे समय निकालकर हिन्दी के 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी हैं। आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशनकार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

कुराली के वरिष्ठ शिक्षक **श्री श्रुतिकान्त गुप्ता** के सुपुत्र **चि. मनीष गुप्ता** हमारी कम्प्यूटर सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए सदा सहर्ष उद्यत रहते हैं–जिसके लिए वे हमारे हार्दिक आशीर्वाद के अधिकारी हैं।

– संपादक मण्डल

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2061 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैया, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। शान्त्यर्थ–सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त में बना हुआ **शनियंत्र धारण करना विशेष शांतिप्रद है।**

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। **वृष** को पहिले अढाई वर्ष, **मिथुन** को अंत के अढाई वर्ष, **कर्क** को बीच के अढाई वर्ष, **सिंह** को पहिले 5 वर्ष उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। **कन्या** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **तुला** को आखिर के अढाई वर्ष, **वृश्चिक** को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **धनु** को प्रारंभ के अढाई वर्ष, **मकर** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुंभ** को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। **मीन** को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

गत संवत् 2060 वि. में 7 अप्रैल, सन् 2003 ई., मृगशिरा नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्र के समय शनि 20 घं. 07 मि. पर मिथुन राशि में प्रविष्ट हुआ है, जो संवत् 2061 वि. में भी 6 सितंबर, 2004 ई. को, प्रातः 4 बजकर 28 मिनट तक मिथुन राशि में ही रहेगा।

मिथुनराशिस्थ शनि की साढेसाती और ढैया का फल, नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

मिथुन–राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया

(7 अप्रैल 2003 ई., से 6 सितं. '04 ई. तक)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग से परेशानी, वृथा व्यय, धनहानि हो,
मिथुन	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधन हानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग से परेशानी, वृथा व्यय, धनहानि हो,
वृश्चिक	ढैया	ताम्र	– –	– –	सुख–सम्पत्ति लाभ, व्यापार बढ़े, शारीरिक सुख, संतानपक्ष से सुख।
मीन	ढैया	ताम्र	– –	– –	सुख–सम्पत्ति लाभ, व्यापार बढ़े, शारीरिक सुख, संतानपक्ष से सुख।

सं. 2061 वि. में 6 सितम्बर 2004 ई. को रोहिणी नक्षत्र और वृषस्थ चन्द्र के समय शनि 4 घं. 29 मि. पर कर्क राशि में प्रवेश करेगा, जो कि 13 जनवरी 2005 ई. को 15 घं. 7 मि. तक कर्क में ही रहेगा।

कर्क–राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया

(6 सितम्बर 2004 से 13 जन. 2005 ई. तक)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधनहानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	हृदय	– –	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग भय, वृथा व्यय, धनहानि।
सिंह	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	सुख–सम्पत्ति, व्यापार अच्छा, शारीरिक एवं सन्तत्ति पक्ष से सुख।
धनु	ढैया	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग से परेशानी, वृथा व्यय, धनहानि।
मेष	ढैया	रजत	– –	– –	व्यापार बढ़े, धन धान्य सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, मान सम्मान मिले, मांगलिक कृत्य हों।

शुक्र का सूर्यातिक्रमण (8 जून, 2004 ई.)

(सूर्यबिम्ब पर शुक्र की भिन्न भिन्न कालों में स्थिति)

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

वक्रगति से चलता हुआ शुक्र सूर्यबिम्ब में पूर्व–दक्षिण की ओर से 'क' बिन्दु पर भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः 10 घं. 37 मि. पर प्रविष्ट होकर सायं 17घं. 07 मि. भा. स्टैं. टा. पर उसके दक्षिण–पश्चिमी भाग के 'ख' बिन्दु से बाहर निकल जाएगा। 6घं. 30 मि. तक यह शुक्र सूर्यबिम्ब के भिन्न–भिन्न भागों में दिखाई पड़ेगा। किस समय यह सूर्यबिम्ब के किस भाग में स्थित होगा– यह ऊपर दिए गए इस चित्र में शुक्रमार्ग रेखा पर अंकित घं. मि. (भा. स्टैं. टा.) से जाना जा सकता है। ध्यान रहे– विश्व के विभिन्न देशों में इस शुक्र–सूर्यातिक्रमण के प्रवेश–निर्गम कालों में शुक्र के अत्यल्प लम्बन के कारण कुछ–कुछ मिनटों का ही अन्तर होगा। यहां दिए गए शुक्र के प्रवेश–निर्गम के भा. स्टैं. टा. में अभीष्टदेशीय स्टैं. टा. और भा. स्टैं. टा. के अन्तर को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर इस शुक्र–सूर्यातिक्रमण के प्रवेश–निर्गम का अभीष्टदेशीय लगभग स्टैं. टा.प्राप्त हो जाएगा।

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर

ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ' मालिक, कंवल फोटोस्टेट,

चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274

ज्ञानी श्री करतार सिंह जी विगत 12 वर्षों से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपिलेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक **'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'** (हिन्दी) की ही संस्कार--समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अत एव ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवन् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी** की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख, स्तम्भों से 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आपको समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' आज सभी तिथपत्रिकाओं को पीछे छोड़ गई है– इसका श्रेय आप ही को हम देते हैं। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी हैं। आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशनकार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

कुराली के वरिष्ठ शिक्षक श्री **श्रुतिकान्त गुप्ता** के सुपुत्र **चि. मनीष गुप्ता** हमारी कम्प्यूटर सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए सदा सहर्ष उद्यत रहते हैं–जिसके लिए वे हमारे हार्दिक आशीर्वाद के अधिकारी हैं।

– संपादक मण्डल

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल
(सं. 2061 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैया, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। **शान्त्यर्थ**–सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त्त में बना हुआ **शनियंत्र धारण करना विशेष शांतिप्रद है।**

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। **वृष** को पहिले अढाई वर्ष, **मिथुन** को अंत के अढाई वर्ष, **कर्क** को बीच के अढाई वर्ष, **सिंह** को पहिले 5 वर्ष उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। **कन्या** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **तुला** को आखिर के अढाई वर्ष, **वृश्चिक** को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **धनु** को प्रारंभ के अढाई वर्ष, **मकर** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुंभ** को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। **मीन** को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

गत संवत् 2060 वि. में 7 अप्रैल, सन् 2003 ई., मृगशिरा नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्र के समय शनि 20 घं. 07 मि. पर मिथुन राशि में प्रविष्ट हुआ है, जो संवत् 2061 वि. में भी 6 सितंबर, 2004 ई. को, प्रातः 4 बजकर 28 मिनट तक मिथुन राशि में ही रहेगा।

मिथुनराशिस्थ शनि की साढेसाती और ढैया का फल, नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

सं. 2061 वि. में 6 सितम्बर 2004 ई. को रोहिणी नक्षत्र और वृषस्थ चन्द्र के समय शनि 4 घं. 29 मि. पर कर्क राशि में प्रवेश करेगा, जो कि 13 जनवरी 2005 ई. को 15 घं. 7 मि. तक कर्क में ही रहेगा।

मिथुन–राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया
(7 अप्रैल 2003 ई. से 6 सितं. '04 ई. तक)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग से परेशानी, वृथा व्यय, धनहानि हो,
मिथुन	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधन हानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग से परेशानी, वृथा व्यय, धनहानि हो,
वृश्चिक	ढैया	ताम्र	– –	– –	सुख–सम्पत्ति लाभ, व्यापार बढ़े, शारीरिक सुख, संतानपक्ष से सुख।
मीन	ढैया	ताम्र	– –	– –	सुख–सम्पत्ति लाभ, व्यापार बढ़े, शारीरिक सुख, संतानपक्ष से सुख।

कर्क–राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया
(6 सितम्बर 2004 से 13 जन. 2005 ई. तक)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधनहानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	हृदय	– –	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग भय, वृथा व्यय, धनहानि।
सिंह	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	सुख–सम्पत्ति, व्यापार अच्छा, शारीरिक एवं सन्तत्ति पक्ष से सुख।
धनु	ढैया	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृह क्लेश, रोग से परेशानी, वृथा व्यय, धनहानि।
मेष	ढैया	रजत	– –	– –	व्यापार बढ़े, धन धान्य सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, मान सम्मान मिले, मांगलिक कृत्य हों।

सं. 2061 वि. में 13 जनवरी सन् 2005 ई. को 15 घं. 8 मि. पर शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय शनि (वक्रस्थिति में) पुनः मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा, जो कि सं. 2061 वि. के अन्त तक मिथुन राशि में ही रहेगा।

मिथुन राशिस्थ (वक्री) शनि की साढेसाती, ढैया का फल

(13 जनवरी '05 ई. से वि. सं. 2061 के अन्त तक)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती किस अंग पर	साढेसाती चढ़ती या उतरती	फल
वृष	साढेसाती	ताम्र	पाद	उतरती	धनलाभ, कार्य में तरक्की,स्त्री–पुत्रसुख, सम्पत्ति लाभ एवं शरीरिक–सुख।
मिथुन	साढेसाती	रजत	हृदय	– –	व्यापार वृद्धि, धनधान्य सम्पत्ति लाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, मानसम्मान प्राप्ति, मांगलिक कार्य हों।
कर्क	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	निजीजन एवं कुटुम्ब में विरोध, क्लेश–रोगभय, धनहानि हो।
वृश्चिक	ढैया	लौह	– –	– –	निजीजन एवं कुटुम्ब में विरोध, क्लेश–रोगभय, धनहानि हो।
मीन	ढैया	लौह	– –	– –	निजीजन एवं कुटुम्ब में विरोध, क्लेश–रोगभय, धनहानि हो।

नोटः—कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश नहीं है; उन राशि वाले व्यक्तियों के लिए मिथुन/कर्क राशिस्थ शनि की कालावधि में साढेसाती–ढैया नहीं है ;– यह समझ लें।

गुरु के संचार का फल

विगत संवत् 2060 वि. में 30 जुलाई '03 ई. को आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव 11 घं 51 मि. पर सिंह राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2061 वि. में 27 अगस्त, 2004 ई. को 23 घं 35 मि. तक सिंह राशि में ही रहेंगे।

सिंह–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(30 जुलाई '03 ई. से 27 अगस्त सन् 2004 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग

सं. 2061 वि. में 27 अगस्त सन् 2004 ई. को उ.षा. नक्षत्र एवं मकर राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव 23 घं. 36 मि. पर कन्या राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2061 वि. के अन्त तक कन्या राशि में ही रहेंगे।

कन्या–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(27 अगस्त सन् 2004 ई. से संवत् 2061 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान

राहु के संचार का फल

गत संवत् 2060 वि. में 5 सितम्बर की मध्यरात्रि के उपरान्त 6 सितम्बर को पू. षा. नक्षत्र एवं धनुस्थ चन्द्र के समय राहु 3 घं. 38 मि. पर मेष राशि में आया था, जोकि संवत् 2061 वि. में 25 मार्च सन् 2005 ई. को 5 घं. 42 मि. तक मेष राशि में ही रहेगा।

मेषराशि के राहु का शुभाशुभ फल

(6 सितम्बर ' 03 ई. से 25 मार्च सन् 2005 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह

सं. 2061 वि. में 25 मार्च 2005 ई. को उ.फा. नक्षत्र एवं कन्या राशिस्थ चन्द्र के समय राहु 5 घं. 43 मि. पर मीन राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2061 वि. के अन्त तक मीन राशि में ही रहेगा।

मीन–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(25 मार्च सन् 2005 ई. से संवत् 2061 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2061 वि.)

संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के आधार पर सर्वेक्षण

➢ संवत् 2061 का स्वामी सूर्य एवं मन्त्री मंगल होने से विश्व के प्रमुख राष्ट्रनायकों के समक्ष विशेष समस्याएं उपस्थित होंगी; उग्रवाद एक व्यापक–समस्या के रूप में प्रश्नचिन्ह बनकर उभरेगा।

➢ 13 अप्रैल से 13 जून (2004 ई.) तक शनि–मंगल की गतिविधि नेपाल, श्रीलंका, इजराइल, सीरिया एवं विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्रों में अघटित घटनाचक्र का संकेत देती है। परिणाम दूरगामी होंगे। इस समयावधि में (विशेषतः 17 मई के लगभग) कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर जनधन हानि से संकष्टापन्न स्थिति भी बनेगी।

➢ लगभग 4 जून से 2 जुलाई तक बुध का अतिचार कहीं दुर्भिक्ष किंवा विरोधी देशों की सीमाओं पर अशान्त वातावरण बनाए। विशेषतः 14 जून के लगभग यान दुर्घटना या भूकम्पादि से हानि या प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन हो।

➢ 27 अगस्त से कन्याराशि का गुरु भारत की प्रभावराशि को प्रभावित करेगा। 5 सितम्बर के लगभग से कर्क का शनि भी भारत की प्रभावराशि मकर को देखेगा। देश में शक्तिपरीक्षण की सज्जा अनुभव होगी। विभिन्न राजनीतिक दल अपने आकर्षक घोषणापत्रों एवं नीति–निर्णायक सिद्धान्तों से जनता को प्रलोभित करें– परिणाम क्या होगा ?

➢ 16 सितम्बर से नवम्बर तक राष्ट्रविशेष में सत्ता–परिवर्तन, मुस्लिमराष्ट्र में कहीं आन्तरिक अशान्ति जोर पकड़ेगी।

➢ 14 जनवरी (2005 ई.) से (विशेषतः 28 जनवरी से) 12 फरवरी 2005 ई. तक एवं संवत् 2061 के अन्त तक की समयावधि विश्व के राष्ट्राध्यक्षों के लिए अग्नि परीक्षा की घड़ी है। इस समय भयंकर तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा एवं उग्रवादजन्य दुर्घटनाओं से भारी जनधनहानि के समाचार मिलेंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति की हत्या व निधन से शोक व्याप्त होगा। कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी।

"यद्भासा भासते सर्वं भू-नीर-गगनस्थितम्।
शिवाय सिद्धरूपाय तस्मै ज्योतिष्मते नमः।।"

समस्त–ब्रह्माण्ड के रहस्यों की स्पष्ट एवं उन अगम्य गूढ़ रहस्यों का विशकलन कर देने वाली एकमात्र मनुष्य की बुद्धि ही है– "एकमेव मतिर्बीजमनल्पा कल्पना ह्यतः।" भास्कराचार्य के कथनानुसार एवं प्रागैतिहासिक चिन्तन से यह बात स्पष्टतः सामने आती है, कि –प्राणीमात्र, विषेशतः मनुष्य की प्राकृतिक वस्तुओं के अन्वेषण, चिन्तन एवं उत्कण्ठाजन्य प्रवृत्ति से ही ग्रह–नक्षत्र आदि अनन्त रहस्यमय पिण्डों के बारे में रहस्योद्घाटन की जिज्ञासा पैदा हुई और परिणामतः 'ज्योतिषशास्त्र' का उद्‌गम हुआ है।

मनुष्य की सर्वप्रथम दृष्टि सूर्य एवं चन्द्र पर ही पड़ी। जिससे प्रभावित होकर इन्हें देवत्व प्रदान कर दिया गया । ज्योतिषशास्त्र में कालात्मा सूर्य सभी ग्रहों का प्रधान माना गया है। क्योंकि विश्व में स्थावर एवं जंगम सभी सूर्य से ही भासमान एवं जीवन्त हैं। ग्रह, पृथ्वी, जलवायु, आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद सूर्य को ही ज्ञात है। ऋग्वेद की निम्नांकित ऋचा भी इसी रहस्य का उद्घाटन करती हैः–

" चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य–आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।"

अतः यह बात भी नितांत सत्य है, कि सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है, कि– आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

यथार्थ बात तो यह है कि-ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित विषय भी। उपेक्षित इसलिए कि-फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षा भाव लिए हैं। मनुष्यजाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकी है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था जबकि, ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धांत पर' ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

ऋग्वेद में पचानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु–शिष्य परम्परया चिंतन व संशोधन–संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति–स्थिति में अंतर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगणितजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्डपंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का 77वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2061 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्–प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 76 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 77वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित–ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग–गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

भारत–पाक विभाजन, बंगलादेश का अस्तित्व में आना, श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना, भारत–पाक युद्ध, भारत–चीन युद्ध, विदेश में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र, समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना एवं ऐतिहासिक भूकम्प आदि की अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. 2061 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। लेकिन गत तीन–चार वर्षों की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) गुजराल सरकार के गिर जाने की भविष्यवाणी –

"संयुक्त मोर्चा की कुण्डली के अनुसार इस वर्ष सत्तारूढदल (संयुक्त मोर्चा) में संवत् के पूर्वार्ध में ही विशेष परिवर्तन आने के योग हैं। नवम्बर '97 से संयुक्त मोर्चा पर अन्य प्रभावी दलों के प्रहार प्रारम्भ होंगे। घटकदलों में एकता कमजोर होगी और कांग्रेस द्वारा समर्थन छलावा सिद्ध होगा। संवत् 2055 वि. के प्रारम्भिक मास गुजराल सरकार के लिए ऐतिहासिक घटना वाले सिद्ध होंगे।"

"श्री गुजराल जी की शपथ ग्रहणकालीन कुण्डली में शनि–मंगल का षडष्टकयोग एवं कर्मेश गुरु की नीच राशि में स्थिति 7 जनवरी 1998 ई. से पूर्व इनके लिए विषम परिस्थितियों को जन्म देने वाली है। इस अवधि में संयुक्त मोर्चा सरकार की गतिविधि पर विशेष आक्षेप होंगे। कुछ पार्टियां अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए स्वंतत्र सिद्धांतों के कारण विमुख होने लगेंगी। कांग्रेस अपनी कई शर्तें समक्ष रखेगी और इस प्रकार संवत् के पूर्वार्ध से भी पहिले ही गुजराल सरकार संकट को पार करने में असमर्थ अनुभव करेगी। कदाचित् शनि के मीन में आने पर (7 जनवरी के बाद) यह सरकार चलती है तो 4 अप्रैल से 14 मई तक तथा 16 नवम्बर से संवत् के अंत तक का समय सत्तारूढ़ पार्टी के लिए तथा प्रधाननेताओं के लिए विशेष घटनापूर्ण किंवा सत्ता से विलग होने वाला सिद्ध होगा।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर हमें देश–विदेश से अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं और आज फलितज्योतिष पर आस्था न रखने वाले व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र की प्रामाणिकता को स्वीकार करने लगे हैं। यह 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' के लिए गौरव की ही बात है।

(2) 17 अगस्त 1999 को तुर्की में भूकम्प से 17 हजार व्यक्ति मरे एवं 40 हजार मरने की आशंका व्यक्त की गई –

सं. 2056 वि., पृ. 26 पर "आर्षमान विचार" में कॉलम 2 पर स्पष्ट लिखा था, कि–

"टर्की, लंका, जापान, अमेरिका व किसी मुस्लिमराष्ट्र में तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट किंवा कहीं भयंकर प्राकृतिक विनाशलीला का दृश्य उपस्थित होगा।"

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार 2 मई को अमेरिका में भयंकर तूफान से भारी जनधनहानि हुई। 8 मई को इरान में भयंकर भूकम्प से विनाश एवं 17 अगस्त को तुर्की में प्रलयंकारी भूकम्प ने जो विनाशलीला उपस्थित की है, वह ऐतिहासिक है।

संवत् 2056 वि. के पंचांग में पृ. 30 पर, कॉलम 2 की अंतिम पंक्तियों में लिखा था –

"संवत् के आरम्भ से 22 अगस्त तक कहीं अकाल की स्थिति बने। कहीं युद्धाग्नि से अशान्ति....कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी होगी।"

पाठक जानते हैं, इस वर्ष अनेक प्रान्तों में वर्षा की कमी से किसान चिन्तित रहे। काश्मीर क्षेत्र कारगिल में भयंकर युद्धाग्नि से अशांति रही एवं अमेरिका, इरान एवं तुर्की में तूफान, भयंकर भूकम्पों से अत्यधिक जनधनहानि हुई है, जो कि उल्लिखित भविष्यवाणी की सफलता का निदर्शन है।

(3) 16 अप्रैल सन् 1999 ई. को **भाजपा सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव** पारित,– भारत में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन की भविष्यवाणी, पढ़ें – सं. 2056 वि. में पृ. 31, कॉलम 1, पंक्ति 2 के बाद –

भविष्यवाणी :– ***"गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के आरम्भ में ही संवत् का रक्षामंत्री (क्रूरग्रह मंगल) वक्र हो रहा है और गुरु (शुभग्रह) संवत् के शुरु में ही अस्तिमी हो रहा है [illegible] संवत् के आरम्भ से ही शनि–मंगल का समसप्तकयोग 22 अगस्त तक***

संवत् के पूर्वार्ध में ही विशेष परिवर्तन आने के योग हैं। रक्षामंत्री (क्रूरग्रह मंगल) वक्र हो रहा है और गुरु (शुभग्रह) संवत् के शुरु में ही ... शनि-मंगल का समसप्तकयोग 22 अगस्त तक

चलेगा,– यह समय केन्द्रीय शासनसत्ता के सामने विशेष समस्याओं को लाकर खड़ा कर देगा और सरकार को 16 अप्रैल 1999 ई. तक इन समस्याओं को सुलझाना कठिन हो जाएगा, भारत की राजनीति में अचिन्तित घटनाचक्र चलेगा। राजनीतिक पार्टियों में नए समीकरण बनेंगे। तोड़–फोड़–जोड़ की नीती प्रबल होगी और सत्तारूढ़दल के घटक (सहायक) दल छिटकने लगेंगे, कोई आश्चर्य नहीं यदि इस अवधि में कोई विशेष राजनीतिक परिवर्तन हो जाए।"

भारत की जनता 16/17 अप्रैल को भाजपा सरकार के गिर जाने से आवाक् रह गई। इस प्रकार भारत में एक विशेष राजनैतिक परिवर्तन आया। इस भविष्यवाणी की सफलता पर देश–विदेश से जिन महानुभावों एवं राजनीतिज्ञों ने प्रशंसापत्र भेजे हैं, हम उनके आभारी हैं।

(8) 12–10–99 ई. को नवाज़शरीफ का तख्ता पलट–

भविष्यवाणी :–" पाकिस्तान में नवाज़शरीफ जी के खिलाफ बगावत होकर संवत् 2057 वि. के प्रारम्भ से पूर्व ही सत्ता से च्युत हो जाने का योग है। आगे सिन्धप्रान्त में स्थिति विकट होती जायेगी, जो कि– आन्तरिक क्रान्ति का रूप आगामी वर्षों में धारण करके पृथक् तंत्र की मांग करेगी। लोकतंत्र खतरे में पड़ेगा, सेना का अधिक दबदबा संभव है।"

(पढ़ें– श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. 2057 वि., पृ. 24 कॉलम 2)।

(10) गतवर्ष अक्तूबर में लोकसभा निर्वाचन में राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा को सरकार बनाने का अवसर मिला।

भविष्यवाणीः– "निर्वाचनकालीन गोचरग्रहस्थिति के अनुसार 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा' सरकार बनाने की स्थिति में आ सकेगी।" (सं. 2057 वि., पृ. 28, कॉलम 1)।

(11) सं. 2057 वि. के पंचांग में की गई भविष्यवाणियों के आकलन करने पर 28 जनवरी 2001 ई. को गुजरात में आने वाले भूकम्प का उल्लेख आश्चर्य चकित कर देने वाला था;–

भविष्यवाणी :– "13 दिसम्बर को मंगल तुला में आकर 2 फरवरी सन् 2001 ई. तक शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। उसके बाद 3 फरवरी से संवत् के अंत तक शनि–मंगल का समसप्तकयोग बना रहता है। यह ग्रहस्थिति विश्व में अघटित घटनाचक्र का आभास कराती है। किसी राष्ट्रविशेष में भूकम्प, जलप्लाव आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि होगी। " (देखें– श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. 2057 वि., पृ. 24, कालम 1)।

भुज, अहमदाबाद आदि गुजरात के गांवों में भूकम्प से बहुमंजली बिल्डिंगें धराशायी हो गईं, लाखों लोग बेघर हुए, लाखों कालकवलित हो गए। रुक–रुक कर फरवरी 2001 ई. तक भूकम्प के झटके आते रहे।

(17) " आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा अमेरिका पर 'विश्व का सबसे बड़ा हवाई हमला –विश्व स्तब्ध'

भविष्यवाणी :– "वर्षेश चन्द्र का शुक्र के साथ समभाव है, लेकिन वर्ष के मंत्री शुक्र का वर्षेश चन्द्र के साथ शत्रुभाव होने से संकेत मिलता है, विश्व के राष्ट्रसमुदाय में से किसी देश का कोई राजनीतिज्ञ अपनी हठधर्मिता एवं अविमृश्यकरिता से विश्व के किसी देश–विशेष की शान्ति को भंग करेगा, जिससे विश्व का घटनाचक्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। इस वर्ष मुस्लिम– समुदाय का कोई राष्ट्र अपनी कुनीति के कारण .... देशों में युद्ध का सूत्रपात करेगा; अपने उग्रवादी–समुदाय द्वारा मुस्लिमराष्ट्र प्रच्छन्नरूप से कुछ राष्ट्रों में वातावरण को अशांत करेंगे।"– (श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. 2058 वि. पृ., 24, कॉलम 1, लाईन 12 से 18 तक); साथ ही श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. 2058 वि. के पृ. 24 पर और भी स्पष्ट किया गया था :–

"इस वर्ष गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के कुछ मुस्लिमराष्ट्रों में आन्तरिक क्रान्ति, अशांति एवं युद्ध की संभावना भी बनती है। जगत् लग्न कुण्डली में केन्द्र में क्रूरग्रह होने से मेष, वृष, मिथुन, कन्या, कुम्भ, मीन प्रभावराशि वाले देशविशेष प्राकृतिक प्रकोप एवं राजनैतिक घटनाक्रम किंवा हत्याकाण्ड, विस्फोट, ज्वालामुखी विस्फोट आदि की घटनाओं के लिए विशेष चर्चित रहेंगे। पाक, जापान, चीन, रूस, अफगानिस्तान, अमेरिका, कम्बोडिया, ईराक, इरान, साइप्रस, पोलैण्ड, आयरलैण्ड, नॉर्वे आदि राष्ट्रों में विशेष घटनाएं घटित होंगी।"

ठीक, उपरोक्त भविष्यवाणी के अनुसार अफगानिस्तानी लाडेन आदि उग्रवादियों के संकेत पर आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा विमानों से अमेरिका के दो टावर (वर्ल्ड ट्रेड सेंटर) एवं पैंटागन (सैनिक– मुख्यालय) पर हमला कर देने से अरबों रुपए की सम्पत्ति का नाश एवं लगभग 25 हजार से भी अधिक व्यक्ति कालकवलित हो गए।

(18) 'मुस्लिम–देश' – शीर्षक में पाकिस्तान आदि मुस्लिमराष्ट्रों की जो स्थिति ग्रहस्थिति के अनुसार लिखी थी, तदनुसार ही घटनाचक्र चल रहा है;–(पढ़ें– श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. 2058 वि., पृ. 26, कॉलम 2 पर) ।

भविष्यवाणीः– "26 अगस्त से 17 अक्तूबर तक मंगल–शनि का षडष्टकयोग एवं 4 अप्रैल 2002 ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति मुस्लिमराष्ट्रों के लिए विशेष भयावह प्रतीत होती है। ग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान में उदारवादी लोकतंत्र की स्थापना शीघ्र संभव नहीं है। पाकिस्तान सर्वाधिक असहिष्णु कट्टर–पन्थी, धर्मान्धदेश के रूप में जाना जाएगा। कट्टरपन्थी– मुल्लाओं से वर्तमान शासक स्वतः तंग आ जाएंगे, इसका दुष्परिणाम पाकिस्तान की आम जनता को भी भोगना होगा।। पाक की आर्थिक स्थिति बहुत ही चिन्तनीय हो जाएगी, जनता का आक्रोश सेना प्रमुख वर्तमान शासक के लिए गंभीर समस्या बन जाएगा। पाक स्वयं आतंकवाद की आग से झुलसने लगेगा। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान को 13 दिसम्बर 2001 ई. से 23 जून 2002 ई. तक भारी दुर्घटनाओं, राजनीतिक उलझनों एवं प्रशासनिक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। इसके बाद यहां प्रशासनिक परिवर्तन होंगे। अफगानिस्तान ...... में आतंकवाद पनपेगा एवं पड़ौसी देशों के लिए भी संकट पैदा होगा।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पाठक स्वयं अनुभव कर रहे हैं, आगे भी उल्लिखित भविष्यवाणी के अनुसार ठीक इसी प्रकार घटित होता अनुभव हो रहा है।

संवत् 2059 वि. के पंचांग में की गई अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की संक्षिप्त चर्चा नीचे की गई हैः–

(1) '27 मई को भारत–पाक में जंगी वातावरण बना, पाक की भारी तबाही 230 सैनिक हताहत'। – (पंजाब केसरी– 28 मई)

(2) 'फियादीन का कहर 34 मरे 57 घायल' – (पंजाब केसरी– 15 मई)

(3) 'अहमदाबाद में 4 बसों में विस्फोट'– – (पंजाब केसरी–30 मई)

उल्लिखित तीनों घटनाओं की सूचक 'श्रीमार्तण्डपंचांग' की निम्नांकित पंक्तियां सं. 2059 वि., पृष्ठ 42, कॉलम 1, अन्तिम पंक्ति में पढ़ें–

" 4 मई 2002 को मंगल–बुध–शुक्र एवं शनि एक नक्षत्र में ही हैं। इस समय से एक मास के अन्दर भूकम्प, अग्निकाण्ड, वम्ब विस्फोट या युद्धमय वातावरण में भयंकर शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं:– सर्वज्ञ तो भगवान् ही हैं।"

(5) 'उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त जी का आकस्मिक निधन'।

भविष्यवाणी–" श्राव. कृष्ण. 9 को शनिवार होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन व पदत्याग से राजनैतिक उथल–पुथल हो।"–

(पाक्षिक फलादेश– सं. 2059 वि.–पृ. 140)

इस भविष्यवाणी के अनुसार श्रावणकृष्ण पक्ष में ही 27 जुलाई को महामहिम श्री कृष्णकान्त जी के निधन से राष्ट्र में शोक व्याप्त हो गया।

(6) ' जम्मू की श्रमिक बस्ती पर उग्रवादी कहर, 30 मरे 20 घायल, सेना ने मोर्चा संभाला। – (पंजाब केसरी – 15 जुलाई)

भविष्यवाणी :– " अगस्त–सितम्बर 2002 ई. एवं 7 जनवरी '03 ई. से संवत् के अन्त तक का समय इस प्रान्त (जम्मू–काश्मीर) के लिए विशेष भयावह है।" –

(सं. 2059 वि., कालम 2, 'जम्मू–काश्मीर' शीर्षक, पृष्ठ 48)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार अगस्त से सितम्बर के मध्य जम्मू–काश्मीर में निर्वाचनों के मध्य भयंकर हत्याकाण्डों का सिलसला जारी रहा।

(7) 'बिहार मे भयंकर बाढ़ की स्थिति' एवं भारत के कुछ प्रान्त सूखा ग्रस्त रहे।

भविष्यवाणी:– " 29 जून से 22 जुलाई तक कहीं भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि होगी। इस वर्ष कहीं भारी सूखा पड़ने से भीषण अकाल की स्थिति भी बनेगी। 23 जुलाई को शनि मिथुनराशि में आकर...कृषकों के लिए कठिन परिस्थिति पैदा करेगा।"– (सं. 2059 वि; कालम 1, पृ. 49)

जनता जानती है, अनेकत्र बाढ़ से जनधन–फसल की हानि हुई। किसानवर्ग परेशान रहा।

(8) 'राजधानी ऐक्सप्रैस दुर्घटना ग्रस्त'– ' वर्ष की भीषणतम दुर्घटना'– (पंजाब केसरी– 10 सितं.)

भविष्यवाणी:–" शनि–शुक्र दोनों 10/11 अक्तूबर से 20 नवम्बर तक एक साथ वक्री चलते रहते हैं। जुलाई से 14 नवम्बर तक समी ग्रह राहु–केतु के मध्य ही संचरण कर रहे हैं। इस प्रकार चल रहा 'कालसर्पयोग' राजनीतिज्ञों में वैमनस्य, पश्चिम भूभाग पर अशान्ति, यानदुर्घटना में भारी जनधनहानि के योग बनाएगा। "

ठीक, 9 सितं. की रात्रि में हावड़ा से दिल्ली जा रही राजधानी एक्सप्रैस दुर्घटना ग्रस्त हो गई; 125 मरे और 200 से अधिक घायल हुए। इन दिनों अमेरिका–इराक में संघर्ष से पश्चिमी भूभाग अशान्त भी रहा।

संवत् 2059 एवं 2060 वि. के पंचांग से कुछ आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां उद्धृत की जारही हैं, जिससे 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' की लोकप्रियता को चार चांद लगे हैं।

(1) 1 फरवरी, सन् 2003 ई. को अमेरिका का "कोलम्बिया अन्तरिक्ष शटल यान" दुर्घटना का शिकार। भारतीय मूल की श्रीमती कल्पना चावला सहित सभी सातों अन्तरिक्ष यात्री मारे गए।"

भविष्यवाणी :– देखें 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2059 वि.– पृ. 43, कालम 1, पर पंक्ति 9 पर लिखी पंक्तियां– " जनवरी 2003 से फरवरी के मध्य कहीं.......यान दुर्घटना में ... भारी विनाश के साथ कहीं वरिष्ठ व्यक्तियों की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।" इस बात की पुष्टि पृष्ठ 46 पर, कालम 2 में दूसरे संदर्भ की अन्तिम पंक्तियों में पढ़ें;–" माघी अमा 1 फरवरी (2003) शनिवारी होने से किसी प्रतिष्ठि गण्यमान्य व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा।" – श्रीमती कल्पना चावला के निधन से भारत एवं सम्पूर्ण विश्व शोकग्रस्त हो गया – इस भविष्यवाणी को पढ़ कर अमेरिका के पाठक भी स्तब्ध रह गए।

(2) भविष्यवाणी :– (श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2059 वि. पृष्ठ 43 कालम 2, सदर्भ 3) " 23 फरवरी 2003 से शनि मंगल का षडष्टकयोग 3 जून, 03 तक चलेगा। इस समय चीन, अमेरिका, इराक, भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं कुछ अन्य राष्ट्रों में सीमाप्रान्तों पर सैनिक हलचल एवं राजनैतिक परिवर्तन व राजनीतिक हत्याकाण्डों से वातावरण अशान्त रहेगा। कहीं सत्ता हस्तान्तरण किंवा यान दुर्घटना में जनधनहानि के समाचार मिलेंगे।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता के प्रमाण निम्नांकित हैं :–

(अ) 14 मार्च को सर्विया के प्रधानमन्त्री की बेलग्रेड में गोली मारकर हत्या। (राजनीतिक हत्याकाण्ड)

(ब) 30 मार्च को अमेरिका और मित्रदेशों द्वारा इराक पर आक्रमण तथा युद्ध प्रारम्भ। – (विशेष ऐतिहासिक घटना)

(स) 31 मार्च को इराक पर अमेरिका द्वारा भीषण बमबारी जारी। – (जनधन की भारी हानि)

(द) 8 अप्रैल को इराक पर अमेरिका द्वारा पहाड बम्ब गिराए– (जनधनहानि)

(प) 9 अप्रैल को इराक में 24 वर्षों से चला आ रहा सद्दाम हुसैन का शासन खत्म हुआ। राजनीतिक परिवर्तन एवं सत्ता–हस्तान्तरण से स्पष्टतः अमेरिका के हाथ में बागडोर चली गई। यह उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता के स्पष्ट उदाहरण हैं।

(3) इराक–अमेरिका के युद्ध की सटीक भविष्यवाणीपढ़ें; श्रीमार्त्तण्ड पंञ्चांग सं. 2060 वि. पृष्ठ 27, कालम 2, दूसरे स्टैंजा की अन्तिम 4 पंक्तियां–"

"सूर्य, जो कि, इस वर्ष सेना का मालिक है, जब मिथुनराशि में संचार करेगा या जब शनि–सूर्य का समसप्तक या दृष्टिसम्बन्ध बनेगा उस समय विश्व की राजनीति में विशेष हलचल होगी। बमविस्फोट, राजनीतिक–हत्याकाण्ड एवं कहीं घोर युद्ध का बिगुल बज जाएगा। विमान–दुर्घटना या भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी होगी। इस अवधि में

इराक, ईरान, अफगानिस्तान, कुवैत एवं पाकिस्तान, अमेरिका आदि विशेष रूप से प्रभावित होंगे।"

(4) भविष्यवाणी :– श्री मार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2060 वि.) पृष्ठ 28, कालम 1, स्टैंज़ा 4 में पढ़ें–

"मई–मध्य में (16 मई के लगभग) कहीं भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप व दुर्घटना में जानी–माली नुक्सान किंवा चान्द्रमास ज्येष्ठ में पांच शनिवार होने से कहीं अग्निकाण्ड, बमविस्फोट, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, पूर्वोत्तर के मध्यवर्ती देशों में कहीं भारी हानि के योग हैं।"

(अ) 13 मई को सऊदी अरब की राजधानी रियाद (रियाद्ध) में भीषण आत्मघाती हमलों में 7 अमरीकी नागरिकों सहित 90 लोग मरे, 194 घायल हुए। – यह घटना भी उल्लिखित भविष्यवाणी को सत्यापित करती है।

(ब) 15 मई 2003 ई. को जालन्धर व लाडोवाल गांव (पंजाब) के पास फ्रंटियर मेल ट्रेन में आग से 38 यात्री मरे, 50 घायल हुए – यह अग्निकाण्ड भी उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता का ज्वलंत उदाहरण है।

(स) 22 मई, 2003 ई. को साइबेरिया में भूकम्प से 11 हजार व्यक्ति मरे; यह दुःखद घटना, उल्लिखित भविष्यवाणी में लिखित भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि, जानी–माली नुक्सान को सत्यापित कर रही है।

(5) "भारत को आतंकवाद से स्वयं ही सुलटना होगा, किसी वरिष्ठ–देश–विशेष की मदद की उम्मीद न रखें;"– प्रधानमन्त्री किंवा उपप्रधानमन्त्री अब इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं। इस बारे में पढ़ें 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग' संवत् 2060 वि. के पृष्ठ 30, कालम 2 की अन्तिम 4 लाइनें–

"आगामी वर्षों में भारत को आंतकवाद के दलनार्थ स्वयं निपटना होगा। दोहरी नीति सम्पन्न अमेरिका आदि देश भारत के सीमाप्रान्तीय सैन्यसंघर्ष, काश्मीर आदि में प्रचारित आतंकवाद को समाप्त करने में विशेष सक्रिय भूमिका न निभायेंगें। आगामी 5/7 वर्षों में भारत महान् राष्ट्र के रूप में उदित होगा।"

(6) अमेरिका के पूर्वी हिस्से में भीषण चक्रवाती तूफान से भारी तबाही की भविष्यवाणी पढ़ें–सं. 2060 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' के पृ. 32, स्टैंजा 5 में– " सितम्बर मास में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का योग बनेगा।"

इस प्रकार प्रतिवर्ष अनेकों आश्चर्यचकित कर देने वाली अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय 76 वर्षों से आपके इस लोकप्रिय पंचांग को प्राप्त होता आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों का उल्लेख/चर्चा स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं।

पाठको ! श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2061 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

" संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता । एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि–ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।"

ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रियाकलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह,नक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते– यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धांत है। ग्रहों की प्रभाव–परिधि में ही विश्व का घटनाचक्र अहर्निश चलता रहता है –

"अवश्यभव्येष्वनवग्रह–ग्रहा यया दिशा धावति वेधसःस्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते जनस्य चित्तेन भृशावशात्मनः।।" – *(नैषधचरित)*

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित **आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं,** उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के अनुसार वि. सं. 2061 के घटनाचक्र के बारे में कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं ।

इस वर्ष (सं. 2061 वि.) की ग्रहपरिषद् में 4 पद (अधिकार) अशुभ ग्रहों को एवं 6 पद (अधिकार) शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। संवत के राजा सूर्य को प्रमुख सलाहकार मन्त्री मंगल ग्रह मिला है, जो कि सूर्य का मित्र है। अतः राष्ट्रों के तालमेल ठीक बने रहें। साथ ही विशेष बात यह है, कि– गुरुदेव को इस वर्ष कोशाधिकारपतित्व एवं सोना–चांदी आदि धातुओं के व्यापार का स्वामित्व भी प्राप्त है। ध्यान दें ;– गुरु ग्रह सूर्य एवं चन्द्र का मित्र ग्रह है। गुरु सौम्य ग्रह होने पर भी राजा सूर्य एवं मन्त्री मंगल के साथ अनुकूल वातावरण बनाकर चलेगा। तात्पर्य यह है, कि– मंगलग्रह कम्युनिस्ट एवं माओवादी संगठन का प्रतिनिधि है। विदेशों में एवं भारत में प. बंगाल, बिहार, आन्ध्रप्रदेश, तामिलनाडु, नागालैण्ड, पूर्वी उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, मिजोरम, त्रिपुरा आदि में कुछ देशद्रोही, नक्सली आन्दोलन को तीव्रता मिलेगी, लेकिन सूर्य (प्रधान शासक) एवं बृहस्पति (बुद्धिजीविवर्ग का मालिक) अपनी कुशल नीति से इन आन्दोलनों को कुचलने हेतु विशेष–रणनीति बनाएंगे; जिससे सीमाप्रान्तों पर उग्रवाद–दमनार्थ विशेष योजनाएं बनें। अधिक खर्च देश गौरवार्थ ही होगा।

(2) 'फियादीन का कहर 34 मरे 57 घायल' – (पंजाब केसरी– 15 मई)

(3) 'अहमदाबाद में 4 बसों में विस्फोट'– – (पंजाब केसरी–30 मई)

उल्लिखित तीनों घटनाओं की सूचक 'श्रीमार्तण्डपंचांग' की निम्नांकित पंक्तियां सं. 2059 वि., पृष्ठ 42, कॉलम 1, अन्तिम पक्ति में पढ़ें–

" 4 मई 2002 को मंगल–बुध–शुक्र एवं शनि एक नक्षत्र में ही हैं। इस समय से एक मास के अन्दर भूकम्प, अग्निकाण्ड, वम्ब विस्फोट या युद्धमय वातावरण में भयंकर शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं:– सर्वज्ञ तो भगवान् ही हैं।"

(5) 'उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त जी का आकस्मिक निधन'।

भविष्यवाणी–" श्राव. कृष्ण. 9 को शनिवार होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन व पदत्याग से राजनैतिक उथल–पुथल हो।"–

(पाक्षिक फलादेश– सं. 2059 वि.–पृ. 140)

इस भविष्यवाणी के अनुसार श्रावणकृष्ण पक्ष में ही 27 जुलाई को महामहिम श्री कृष्णकान्त जी के निधन से राष्ट्र में शोक व्याप्त हो गया।

(6) ' जम्मू की श्रमिक बस्ती पर उग्रवादी कहर, 30 मरे 20 घायल, सेना ने मोर्चा संभाला। – (पंजाब केसरी – 15 जुलाई)

भविष्यवाणी :– " अगस्त–सितम्बर 2002 ई. एवं 7 जनवरी '03 ई. से संवत् के अन्त तक का समय इस प्रान्त (जम्मू–काश्मीर) के लिए विशेष भयावह है।" –

(सं. 2059 वि., कालम 2, 'जम्मू–काश्मीर' शीर्षक, पृष्ठ 48)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार अगस्त से सितम्बर के मध्य जम्मू–काश्मीर में निर्वाचनों के मध्य भयंकर हत्याकाण्डों का सिलसला जारी रहा।

(7) 'बिहार मे भयंकर बाढ़ की स्थिति' एवं भारत के कुछ प्रान्त सूखा ग्रस्त रहे।

भविष्यवाणी:– " 29 जून से 22 जुलाई तक कहीं भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि होगी। इस वर्ष कहीं भारी सूखा पड़ने से भीषण अकाल की स्थिति भी बनेगी। 23 जुलाई को शनि मिथुनराशि में आकर...कृषकों के लिए कठिन परिस्थिति पैदा करेगा।"– (सं. 2059 वि; कालम 1, पृ. 49)

जनता जानती है, अनेकत्र बाढ़ से जनधन–फसल की हानि हुई। किसानवर्ग परेशान रहा।

(8) 'राजधानी ऐक्सप्रैस दुर्घटना ग्रस्त'– ' वर्ष की भीषणतम दुर्घटना'– (पंजाब केसरी– 10 सितं.)

भविष्यवाणी:–" शनि–शुक्र दोनों 10/11 अक्तूबर से 20 नवम्बर तक एक साथ वक्री चलते रहते हैं। जुलाई से 14 नवम्बर तक सभी ग्रह राहु–केतु के मध्य ही संचरण कर रहे हैं। इस प्रकार चल रहा 'कालसर्पयोग' राजनीतिज्ञों में वैमनस्य, पश्चिम भूभाग पर अशान्ति, यानदुर्घटना में भारी जनधनहानि के योग बनाएगा। "

ठीक, 9 सितं. की रात्रि में हावड़ा से दिल्ली जा रही राजधानी एक्सप्रैस दुर्घटना ग्रस्त हो गई; 125 मरे और 200 से अधिक घायल हुए। इन दिनों अमेरिका–इराक में संघर्ष से पश्चिमी भूभाग अशान्त भी रहा।

संवत् 2059 एवं 2060 वि. के पंचांग से कुछ आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां उद्धृत की जारही हैं, जिससे 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' की लोकप्रियता को चार चांद लगे हैं।

(1) 1 फरवरी, सन् 2003 ई. को अमेरिका का "कोलम्बिया अन्तरिक्ष शटल यान" दुर्घटना का शिकार। भारतीय मूल की श्रीमती कल्पना चावला सहित सभी सातों अन्तरिक्ष यात्री मारे गए।"

भविष्यवाणी :– देखें 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2059 वि.– पृ. 43, कालम 1, पर पंक्ति 9 पर लिखी पंक्तियां– " जनवरी 2003 से फरवरी के मध्य कहीं.......यान दुर्घटना में ... भारी विनाश के साथ कहीं वरिष्ठ व्यक्तियों की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।" इस बात की पुष्टि पृष्ठ 46 पर, कालम 2 में दूसरे संदर्भ की अन्तिम पंक्तियों में पढ़ें,–" माघी अमा 1 फरवरी (2003) शनिवारी होने से किसी प्रतिष्ठि गण्यमान्य व्यक्ति की मुत्यु से शोक व्याप्त होगा।" – श्रीमती कल्पना चावला के निधन से भारत एवं सम्पूर्ण विश्व शोकग्रस्त हो गया – इस भविष्यवाणी को पढ कर अमेरिका के पाठक भी स्तब्ध रह गए।

(2) भविष्यवाणी :– (श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2059 वि. पृष्ठ 43 कालम 2, सदर्भ 3) " 23 फरवरी 2003 से शनि मंगल का षडष्टकयोग 3 जून, 03 तक चलेगा। इस समय चीन, अमेरिका, इराक, भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं कुछ अन्य राष्ट्रों में सीमाप्रान्तों पर सैनिक हलचल एवं राजनैतिक परिवर्तन व राजनीतिक हत्याकाण्डों से वातावरण अशान्त रहेगा। कहीं सत्ता हस्तान्तरण किंवा यान दुर्घटना में जनधनहानि के समाचार मिलेंगे।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता के प्रमाण निम्नांकित हैं :–

(अ) 14 मार्च को सर्विया के प्रधानमन्त्री की बेलग्रेड में गोली मारकर हत्या। (राजनीतिक हत्याकाण्ड)

(ब) 30 मार्च को अमेरिका और मित्रदेशों द्वारा इराक पर आक्रमण तथा युद्ध प्रारम्भ। – (विशेष ऐतिहासिक घटना)

(स) 31 मार्च को इराक पर अमेरिका द्वारा भीषण बमबारी जारी। – (जनधन की भारी हानि)

(द) 8 अप्रैल को इराक पर अमेरिका द्वारा पहाड बम्ब गिराए– (जनधनहानि)

(प) 9 अप्रैल को इराक में 24 वर्षों से चला आ रहा सद्दाम हुसैन का शासन खत्म हुआ। राजनीतिक परिवर्तन एवं सत्ता–हस्तान्तरण से स्पष्टतः अमेरिका के हाथ में बागडोर चली गई। यह उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता के स्पष्ट उदाहरण हैं।

(3) इराक–अमेरिका के युद्ध की सटीक भविष्यवाणीपढ़ें; श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग सं. 2060 वि. पृष्ठ 27, कालम 2, दूसरे स्टैंज़ा की अन्तिम 4 पंक्तियां–"

"सूर्य, जो कि, इस वर्ष सेना का मालिक है, जब मिथुनराशि में संचार करेगा या जब शनि–सूर्य का समसप्तक या दृष्टिसम्बन्ध बनेगा उस समय विश्व की राजनीति में विशेष हलचल होगी। बमविस्फोट, राजनीतिक–हत्याकाण्ड एवं कहीं घोर युद्ध का बिगुल बज जाएगा। विमान–दुर्घटना या भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी होगी। इस अवधि में

इराक, ईरान, अफगानिस्तान, कुवैत एवं पाकिस्तान, अमेरिका आदि विशेष रूप से प्रभावित होंगे।"

(4) भविष्यवाणी :– श्री मार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2060 वि.) पृष्ठ 28, कालम 1, स्टैंज़ा 4 में पढ़ें–

"मई–मध्य में (16 मई के लगभग) कहीं भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप व दुर्घटना में जानी–माली नुक्सान किंवा चान्द्रमास ज्येष्ठ में पांच शनिवार होने से कहीं अग्निकाण्ड, बमविस्फोट, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, पूर्वोत्तर के मध्यवर्ती देशों में कहीं भारी हानि के योग हैं।"

(अ) 13 मई को सऊदी अरब की राजधानी रियाद (रियाद्ध) में भीषण आत्मघाती हमलों में 7 अमरीकी नागरिकों सहित 90 लोग मरे, 194 घायल हुए। – यह घटना भी उल्लिखित भविष्यवाणी को सत्यापित करती है।

(ब) 15 मई 2003 ई. को जालन्धर व लाडोवाल गांव (पंजाब) के पास फंटियर मेल ट्रेन में आग से 38 यात्री मरे, 50 घायल हुए – यह अग्निकाण्ड भी उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता का ज्वलंत उदाहरण है।

(स) 22 मई, 2003 ई. को साइबेरिया में भूकम्प से 11 हजार व्यक्ति मरे; यह दुःखद घटना, उल्लिखित भविष्यवाणी में लिखित भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि, जानी–माली नुक्सान को सत्यापित कर रही है।

(5) "भारत को आतंकवाद से स्वयं ही सुलटना होगा, किसी वरिष्ठ–देश–विशेष की मदद की उम्मीद न रखें;"– प्रधानमन्त्री किंवा उपप्रधानमन्त्री अब इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं। इस बारे में पढ़ें 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग' संवत् 2060 वि. के पृष्ठ 30, कालम 2 की अन्तिम 4 लाइनें–

"आगामी वर्षों में भारत को आंतकवाद के दलनार्थ स्वयं निपटना होगा। दोहरी नीति सम्पन्न अमेरिका आदि देश भारत के सीमाप्रान्तीय सैन्यसंघर्ष, काश्मीर आदि में प्रचारित आतंकवाद को समाप्त करने में विशेष सक्रिय भूमिका न निभायेंगें। आगामी 5/7 वर्षों में भारत महान् राष्ट्र के रूप में उदित होगा।"

(6) अमेरिका के पूर्वी हिस्से में भीषण चक्रवाती तूफान से भारी तबाही की भविष्यवाणी पढ़ें–सं. 2060 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' के पृ. 32, स्टैंजा 5 में– **" सितम्बर मास में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का योग बनेगा।"**

इस प्रकार प्रतिवर्ष अनेकों आश्चर्यचकित कर देने वाली अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय 76 वर्षों से आपके इस लोकप्रिय पंचांग को प्राप्त होता **आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों का उल्लेख/चर्चा स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं।**

पाठको ! श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गईं या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2061 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

" संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता । एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि–ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।"

ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रियाकलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह,नक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते– यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धांत है। ग्रहों की प्रभाव–परिधि में ही विश्व का घटनाचक्र अहर्निश चलता रहता है –

"अवश्यभव्येष्वनवग्रह–ग्रहा यया दिशा धावति वेधसःस्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते जनस्य चित्तेन भृशावशात्मनः।। ' ' – *(नैषधचरित)*

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों पर पडता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित **आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं,** उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के अनुसार वि. सं. 2061 के घटनाचक्र के बारे में कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं ।

इस वर्ष (सं. 2061 वि.) की ग्रहपरिषद् में 4 पद (अधिकार) **अशुभ** ग्रहों को एवं **6 पद** (अधिकार) शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। संवत के राजा सूर्य को प्रमुख सलाहकार मन्त्री मंगल ग्रह मिला है, जो कि सूर्य का मित्र है। अतः राष्ट्रों के तालमेल ठीक बने रहें। साथ ही विशेष बात यह है, कि– गुरुदेव को इस वर्ष कोशाधिकारपतित्व एवं सोना–चांदी आदि धातुओं के व्यापार का स्वामित्व भी प्राप्त है। ध्यान दें ;– गुरु ग्रह सूर्य एवं चन्द्र का मित्र ग्रह है। गुरु सौम्य ग्रह होने पर भी राजा सूर्य एवं मन्त्री मंगल के साथ अनुकूल वातावरण बनाकर चलेगा। तात्पर्य यह है, कि– मंगलग्रह कम्युनिस्ट एवं माओवादी संगठन का प्रतिनिधि है। विदेशों में एवं भारत में प. बंगाल, बिहार, आन्ध्रप्रदेश, तामिलनाडु, नागालैण्ड, पूर्वी उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, मिजोरम, त्रिपुरा आदि में कुछ देशद्रोही, नक्सली आन्दोलन को तीव्रता मिलेगी, लेकिन सूर्य (प्रधान शासक) एवं बृहस्पति (बुद्धिजीविवर्ग का मालिक) अपनी कुशल नीति से इन आन्दोलनों को कुचलने हेतु विशेष–रणनीति बनाएंगे; जिससे सीमाप्रान्तों पर उग्रवाद–दमनार्थ विशेष योजनाएं बनें। अधिक खर्च देश गौरवार्थ ही होगा।

ग्रहपरिषद् में शुक्रग्रह, जो कि– रसेश–शनि का तो मित्र है लेकिन वर्षेश– सूर्य एवं मन्त्री मंगल का शत्रु है। संकेत मिलता है,– यौन रोग बढ़ेंगे, कई प्रकार के अन्य रोगों से भी जनता में परेशानी बढ़ेगी! फसलों में कई प्रकार के रोग पैदा होने से फसलों को हानि पहुंचेगी। शनि यथाकथित दलितवर्ग एवं मशीनरी के आधुनीकीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। विश्व में मारक अस्त्र–शस्त्रों का चलन एवं विक्रय प्रमुख देश करेंगे, जिससे शान्तिभंग की आशंका यत्र–तत्र बनी रहेगी।

ग्रहपरिषद् में सस्येश शुक्र एवं रसेश–शनि केवल ये दो ग्रह ही ऐसे हैं, जो वर्षेश सूर्य एवं वर्ष के मन्त्री– मंगल के साथ मैत्री सम्बन्ध नहीं रखते। अतः जब भी वर्ष में शनि–मंगल एवं सूर्य–शनि का मेल या समसप्तक होगा, तभी राष्ट्रों/शासकों में परस्पर विरोध– राजनीतिक हलचल, उग्रवादियों द्वारा विस्फोट–हत्याकाण्डों से वातावरण क्षुब्ध होगा। राजनीतिक–हत्याकाण्ड, अपहरण, विमान दुर्घटनाओं के कारण जन–धनहानि होगी। भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी होगी। इस अवधि में कहीं युद्ध का कारण सामने आए, सीमाप्रान्तों पर हलचल, सैन्यसंघर्ष से शान्ति भंग होगी। कुछ मुस्लिमराष्ट्रों एवं किसी समृद्ध राष्ट्र के शासकों के लिए परीक्षा की घड़ी मालूम देगी।

जगत् लग्न कुण्डली के अनुसार संक्षिप्त घटनाचक्र

वर्षेश कुण्डली में धनस्थान में केतु है। व्ययस्थान में स्थित बृहस्पति शनि–मंगल से दृष्ट है, शनि दशमभाव (केन्द्र) में है; त्रिकोण में मंगल–शुक्र हैं। अर्थात् केन्द्र में कोई शुभ ग्रह नहीं है। लग्नेश बुध, उच्च सूर्य एवं राहु के साथ मृत्युस्थान में है। **ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है, कि अमेरिका आदि देशों की कूटनीति के परिणामस्वरूप उग्रवाद के मुखिया ओसामा–बिन–लादेन एवं सद्दाम हुस्सैन धनलोलुप व्यक्तियों से उनकी गतिविधि जानकर काल कवलित हो जाएंगे। लेकिन ब्रिटेन, अमेरिका, पाकिस्तान एवं कुछ अन्य देशों को उग्रवादी लक्ष्य बनाकर भारी जनधनहानि पहुंचाने की गतिविधि से चूकेंगे नहीं। प्रधान–प्रतिष्ठित एवं गणमान्य देशों के नेताओं को सचेत रहना अनिवार्य होगा; *अन्यथा किसी वरिष्ठ–व्यक्ति की हत्या भी संभव है। यह वर्ष (सं. 2061 वि.) उग्रवाद–बहुल एवं उग्रवाद जन्य कठोर परिणामों वाला मालूम देता है।* शनि–मंगल एवं प्लूटो की स्थिति के मुताबिक *उग्रवाद एक भयंकर अन्तर्राष्ट्रीय समस्या के रूप में विश्व के प्रतिष्ठित देशों को चिन्तित करेगा; समस्या का हल सहज संभव नहीं।* यह उग्रवाद की समस्या संवत् के *अन्तिम 4/5 मासों में विशेष उग्ररूप धारण कर सकती है।***

यह संवत् 'हेमलम्बी' नामक है। देश में खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचेगी। *कहीं टिड्डीदल,* कहीं आकालिक वर्षा– अतिवर्षा, कहीं सूखा आदि प्राकृतिक प्रकोप से फसलों को हानि पहुंचेगी। मंहगाई बढ़ेगी। प्राकृतिक–आपदा (ज्वालामुखी विस्फोट, भूकम्प, समुद्री तूफान) आदि से कहीं भारी जनधनहानि भी होगी। अफगानिस्तान, अमेरिका, चीन, जापान एवं कुछ देशों के पर्वतीय भूभाग प्राकृतिक आपदा, भूचाल आदि से विशेषरूप से प्रभावित होंगे, परिणामस्वरूप जनधन हानि के समाचार भी मिलेंगे, कुछ मित्र देशों (जो एकसाथ मिलकर प्रत्येक क्षेत्र में अग्रेसर रहते थे) में परस्पर वैमत्य/ कटुता बढ़ेगी। किसी क्षेत्र में युद्धाग्नि प्रज्वलित हो।

संक्षेपेण– चैत्र–वैशाख में कहीं किसी देशविशेष में सत्तापरिवर्तन, कार्तिक में किसी वरिष्ठव्यक्ति की मृत्यु से सत्तापरिवर्तन किंवा शोक व्याप्त हो। मार्गशीर्ष–पौष–माघ एवं चैत्र में विशेष परिवर्तन एवं प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय आश्चर्यजनक समाचारों से स्तब्ध रहना पड़ेगा।

सं. 2061 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नजर

संवत् 2061 वि. की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से पहले गत संवत् 2060 के अन्तिम दो–तीन मासों की ग्रहस्थिति की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं। तदनुसार 5 दिसम्बर, 2003 ई को मंगल मीनराशि में आकर 23 जनवरी, सन् 2004 ई. तक शनि के साथ दशम–चतुर्थ सम्बन्ध बनाएगा तथा 24 जनवरी को मंगल मेषराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। कहीं अग्निकाण्ड, कहीं उग्रवादजन्य अशान्ति, बम–विस्फोट, यानदुर्घटना से जनधन–हानि या भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधपहानि होगी। कहीं सत्ता के लिए संघर्ष व राजनितिक हत्याकाण्ड से अशान्ति हो। किसी राष्ट्रविशेष के नेतृत्व में परिवर्तन का योग भी बनता है। इस समय मंगल, राहु पर गुरु की दृष्टि होने से कुछ राष्ट्रों के नायक उग्रवादजन्य विभीषिका से त्रस्त रहें एवं इसका हल ढूंढने के लिए नए विचार विमर्श होंगे। इस प्रकार सं. 2060 वि. का अन्तिम चरण कुछ भयावह परिस्थितियों को सामने छोड़कर जा रहा है।

सं. 2061 वि. का वर्षेश सूर्य एवं मन्त्री मंगल दोनों मित्र हैं एवं एक–दूसरे के कार्य के पूरक भी हैं। सूर्य जीवनदाता है एवं मंगल अन्न, कृषिकर्म का परिपाक एवं भूजन्य समस्याओं को पैदा करता है और समाधान भी करता है। जब सूर्य–मंगल शनि–राहु के साथ मेल करते हैं, तो भयंकर विनाश की स्थिति बनाते हैं, जब शुभग्रह के साथ मेल करते हैं, तो शुभफल देते हैं।

ग्रहस्थिति के अनुसार इस वर्ष इंग्लैण्ड, जर्मनी, जापान, नेपाल, श्रीलंका– ये देश मेषस्थ राहु के प्रभावक्षेत्र में हैं, अमेरिका, तिब्बत, आस्ट्रेलिया भी राहु से सप्तमक्षेत्र में होने से उग्रवादजन्य नेष्ट गतिविधि से प्रभावित रहेंगे। मिथुनप्रभावराशि वाले कुछ देश उत्तरी अमेरिका, इंग्लैण्ड का पश्चिमी भाग एवं अफ्रीका आदि देश शनि के नेष्ट प्रभाव से बच न सकेंगे। यहां पर प्राकृतिक प्रकोप, भयंकर भूकम्प, ज्वालामुखी–विस्फोट, तूफान आदि से भारी जनधनहानि के योग हैं। नेपाल में पनप रहा माओवाद ***पड़ौसी देशों को भी परेशान करेगा। परिणामस्वरूप राजनैतिक हत्याकाण्ड, बम विस्फोट आदि भी कई बार अशान्ति का कारण बनेंगे।***

20/21 मार्च, सन् 2004 ई. को उ.भा. नक्षत्र, शुक्ल योग एवं मीनरथ चन्द्र के समय संवत् 2061 वि. का शुभारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शनि छठे भावस्थ होकर समृद्धतम देशों (अमेरिका, इंग्लैण्ड,) की प्रभुसत्ता पर चोट करता है। आर्थिक एवं प्रशासनिक वर्चस्व को अन्य उदीयमान देशों पर थोपने की प्रवृत्ति को समृद्धदेश अब छोड़ने पर विवश होंगे। विकसित देश दोहरे मापदण्ड को छोड़कर मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए विकासशील देशों की समस्याओं पर विचार करने के लिए बाध्य होंगे। नवमेश–बुध की नवमस्थान पर दृष्टि मुस्लिमराष्ट्रों को ध्रुवीकरण के लिए प्रेरित करेगा। संवत् के प्रारम्भ में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सिंहराशिस्थ बृहस्पति पर वृषस्थ मंगल एवं मिथुनस्थ शनि की विशेष दृष्टि है। मिथुन उत्तरी अमेरिका की प्रभाव राशि है। ईरान, आयरलैण्ड, आस्ट्रेलिया एवं जर्मनी की प्रभावराशि वृष है। स्पष्ट है, कि– किसी विशेष समस्या को लेकर कुछ आपसी मतभेद उभरेंगे। वृषराशि में स्थित–मंगल से प्रभावित इजराइल क्रुद्ध राष्ट्र के रूप में नजर आएगा। फिलस्तीन देश जो कि– मिथुन राशिस्थ शनि से बुरी तरह पीड़ित है, चर्चा का विषय रहेगा। यहां के प्रधान नेता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। परिणाम विश्वस्तर पर प्रभावी एवं चिन्ताजनक होंगे, जिससे एशिया की शान्तिप्रक्रिया पर बुरा असर पड़ेगा।

इस वर्ष के–प्रारम्भ में चान्द्रमास चैत्र में 5 रविवार हैं, अतः वर्षारम्भ में प्रभाव कुछ इस तरह नजर आएगा– विश्व के किसी देशविशेष की शासनसत्ता में परिवर्तन, कहीं आन्तरिक क्रान्ति, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी।

" यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।"

सूर्य पर जो कि– वर्षेश है, शनि की दृष्टि है। इस वर्ष कुछ देश संयुक्तराष्ट्र की कार्यशैली एवं संयुक्तराष्ट्र की असन्तुलित–शक्तिमत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाएंगे। जिससे कुछ अनिवार्य संशोधन–संवर्धन–परिवर्धन की आवश्यक्ता पर बल दिया जाएगा। कुछ देश फिर भी असहमति ही रहेंगे।

अमेरिका, सऊदीअरब एवं कुछ अन्य देशों में स्थिति बिगड़ेगी। शान्ति भंग होने का खतरा ग्रहगति के अनुसार बना रहेगा क्योंकि आतंकवाद विश्वस्तरीय समस्या के रूप में उभरेगा। अमेरिका तकनीकी आदान–प्रदान, सूचनाओं एवं अपने एकमात्र वर्चस्व के कारण इस समस्या का कोई हल नहीं ढूंढ पाएगा। शनि–राहु–मंगल एवं प्लूटो आदि ग्रहों से संकेत मिलता है, कि– प्रत्येक देश अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपने तरीके से ही आतंकवाद से निपटेगा।

वैशाख चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं; संक्रान्ति भी मंगलवारी है। गोचर ग्रह स्थिति के अनुसार मंगल वृषराशि में है। मंगल वृश्चिक एवं धनु प्रभावराशि वाले राष्ट्रों के लिए विकट समस्याओं को लेकर उपस्थित होगा। कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि से जनधनहानि होगी। कहीं यानदुर्घटना में जनहानि व प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। पाकिस्तान आदि में प्रधान नेता के समक्ष चुनौतियां उपस्थित होंगी कहीं नाटकीयं–ढंग से सत्ता–हस्तान्तरण भी सम्भव है। कहीं युद्धमय वातावरण से शान्तिभंग होने के आसार हैं।

3 अप्रैल को सूर्य मेषराशि में आकर राहु के साथ मेल कर रहा है। इन पर गुरु की दृष्टि भी है, अतः 13 अप्रैल से एक सप्ताह में इंग्लैण्ड, नेपाल, श्रीलंका में कुछ अघटित घटनाचक्र चलेगा। कहीं माओवाद से परेशानी, कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति पर उग्रवादियों का प्रहार, कहीं नेतृत्व परिवर्तनजन्य परेशानियों का सामना करना पडे। इस समय अफगानिस्तान एवं बंगलादेश में भी अवांछित घटनाएं घटें।

22 अप्रैल को बुध वक्री पोजीशन में मीनराशि में दाखिल होकर शनि की नजर में आ जाएगा, और 27 अप्रैल को मंगल मिथुन राशि में आकर शनि के साथ राशि–सम्बन्ध बना लेगा। यह शनि–मंगल का सम्बन्ध 13 जून तक चलेगा। इस अवधि में भयंकर अग्निकाण्ड, उग्रवादजन्य उन्माद से किसी देश से भयंकर विनाश का समाचार मिलेगा। कहीं अकालिक वर्षा व तूफान से हानि एवं कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि होगी।

13 जून को शुक्र का सूर्यातिक्रमण भारत पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, बंगलादेश, श्रीलंका, यूरोप, U.A.E., अफ्रीका, चीन एवं रूस में स्पष्टतः दिखाई देगा। कहीं प्राकृतिकप्रकोप, दुर्भिक्ष एवं मित्रराष्ट्रों में वैमनस्यता के रूप में इसका कुफल अनुभव होगा।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर अपने शत्रु (लेकिन पुत्र) ग्रह शनि के साथ मेल करेगा। यह ग्रहस्थिति राष्ट्रों में कहीं भारी अशान्ति बनेगी। प्रधान नेता के खिलाफ जनान्दोलन से सत्ता–हस्तान्तरण भी संभव है। कहीं प्रधान व्यक्ति (नेता) की हत्या से नाटकीय परिवर्तन के योग हैं।

प्रथम श्रावण (चान्द्रमास) में पांच शनिवार एवं श्रावण नवमी को शनिवार होने से एवं प्रथम (अधिक) श्रावणशुक्ल पक्ष में चतुर्दशी का क्षय होने से जुलाई में किसी आकस्मिक घटना से भयंकर हानि हो। विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

31 जुलाई के लगभग अस्त मंगल सिंहराशि में आकर शनि की नजर में आजाएगा। विश्वशान्ति के लिए विघातक जैविक शस्त्रास्त्रों के आदान प्रदान से भय व्याप्त हो। अफगानिस्तान, इराक एवं पाकिस्तान में तालिबानी किंवा अन्य उग्रवादी संगठन विधातक योजनाओं से शान्ति भंग कर सकते हैं। इस समय किसी देश में विशेष दुर्घटना घटित होगी। जिसमें जनधनहानि के योग हैं। प्रधान नेताओं पर विशेष प्रभाव दिखाई देगा। शनि की मंगल पर नजर 5 सितम्बर तक बनी रहेगी।

31 जुलाई से लगभग 27 अगस्त तक किसी देश में जनता एवं शासकवर्ग में टकराव की स्थिति से आन्तरिक हालात खराब तथा राजनीतिक हत्याकाण्ड होंगे। अचानक सत्तापरिवर्तन होने के भी योग हैं।

इसी बीच 27 अगस्त को गुरु कन्याराशि में आकर शनि की नजर से ओझल हो जाएगा। कन्या पाकिस्तान की प्रभावराशि है। इस समय यहां की जनता सवा साल में शान्ति की आवाज उठाएगी एवं कोई आश्चर्य न होगा यदिवहां दिखावटी लोकतन्त्र की समाप्ति होकर सुव्यवस्थित दिशा की तरफ देश अग्रेसर होने लगे।

5 सितम्बर को शनि मिथुनराशि से निकल कर कर्कराशि में प्रवेश करेगा। लेकिन सूर्य एवं मंगल 16 सितम्बर को कन्याराशि में आकर फिर से शनि की नजर में आ जाते हैं। लेकिन-- ये इस समय गुरुग्रह के साथ हैं। अतः शान्ति स्थापनार्थ विशेष वार्ताएं होंगी, लेकिन उग्रवादजन्य नेष्ट गतिविधियों से वातावरण फिर क्षुब्ध हो सकता है।

2 अक्तूबर से 7 नवंबर तक विश्व में कुछ शान्तिप्रिय राष्ट्र सामूहिक संगठन द्वारा उग्रवाद के दलन के लिए विशेष योजनाएं बनाएंगे। शान्ति वार्ताएं होंगी। लेकिन 23 अक्तूबर को शुक्र-गुरु के एकत्र होने से एवं 8 नवम्बर को शनि के वक्री होने पर कुछ मुस्लिम राष्ट्र गुप्तरूप से उग्रवाद को प्रोत्साहन देकर सीमाप्रान्तों पर शान्ति भंग करेंगे। परिणामस्वरूप विस्फोट आदि से फिर कुछ देशों में जनधनहानि होगी, राजनीतिक हत्याकाण्ड पुनः शुरु हो जाएंगे।

13 जनवरी (2005 ई.) को शनि वक्रगति से पुनः मिथुनराशि में आकर शुक्र के साथ 27 जनवरी तक समसप्तकयोग बनाएगा। 29 जनवरी को मंगल धनुराशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा।

एक और विशेष बात यह भी है, कि- **मेदिनी ग्रह प्लूटो 21 वर्ष बाद** धनुराशि में आएगा। यह ग्रहस्थिति बहुत चिन्तनीय परिस्थिति को जन्म देगी। कहीं भयंकर युद्ध का वातावरण बनेगा। विश्व के कुछ राष्ट्रों मे उग्रवादजन्य अशान्ति युद्धप्रक्रिया को तीव्र कर सकती है- भगवान सद्बुद्धि दें,- यही प्रार्थना है।

14 जनवरी से 11 मार्च, 2005 ई. तक शनि एवं मंगल प्लूटो का समसप्तक बना रहेगा। उसके बाद 12 मार्च को मंगल मकर में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। कहने का तात्पर्य यह है, कि- इस संवत् के अन्तिम 3/4 मास विश्व के देशों में अघटित घटनाचक्र को जन्म देंगे। कहीं सीमाप्रान्तों पर युद्ध का वातावरण बने, कहीं आन्तरिक अशान्ति से शासक सत्ता से अलग होने को विवश हों, कहीं राजनीतिक हत्याकाण्ड एवं यानदुर्घटनाओं से जनधन-हानि भी हो।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) में शनि-मंगल का दशम -चतुर्थ सम्बन्ध

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)

31 दिसम्बर (2003 ई.)
मध्यरात्रि 24 घं. 0 मि.

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)

31 दिसम्बर (2004 ई.)
मध्यरात्रि 24 घं. 0 मि.

यूरोपीय देशों के सामने घोर संकटमय वातावरण को प्रस्तुत करता मालूम देता है। कुछ बड़े राष्ट्रों में आपसी वैमत्य आश्चर्यजनक रूप से उभरकर सामने आएगा। बडे राष्ट्रों की कुछ मुस्लिमराष्ट्रों के प्रति कठोर नीति समृद्ध यूरोपीय देशों के लिए मंहगी पड सकती है। इस वर्ष यूरोपीय देशों की इस आक्रामक नीति का कुपरिणाम सन् 2005 से सितम्बर 2007 ई. तक भयावह परिस्थितियों को जन्म देगा, जो कि- भावी किसी महायुद्ध का रूप धारण कर ले तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। इस वर्ष ईराक किंवा अन्य कुछ मुस्लिमराष्ट्रों के प्रति नीति-निर्धारण एक समस्या बनेगी। अन्ततः राहु-चन्द्र पर गुरु की दृष्टि किसी विशिष्ट किंवा अधिकृत संस्था के प्रातिनिध्य से समस्या-समाधान होकर शान्ति हो। इस वर्ष की ग्रहगति के अनुसार जटिल युद्धात्मक समस्याओं के उपस्थित होने पर मुस्लिम लाबी एवं यूरोप के राष्ट्रविपरीत विचारधारा वाले रहेंगे। इस प्रकार कुछ महाशक्तियों की विपरीत विचारधारा से एक अन्य ध्रुवीकरण बने, जिसके कुपरिणाम सन् 2005 के बाद सामने आएंगे। ब्रिटेन, स्कॉटलैण्ड, जापान, रूस आदि में भारी परिवर्तन संभावित हैं। कहीं सीमाओं में परिवर्तन-संवर्धन भी संभव हैं। यूरोप में किसी विशिष्ट प्रशासक किंवा विशिष्ट गण्यमान्य व्यक्तिविशेष की मृत्यु व हत्या से शोक व्याप्त होने का योग है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

22 अप्रैल से लगभग 13 जून तक एवं 23 अक्तूबर से दिसम्बर 2004 ई. तक यूरोप में किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि होने के योग भी बन रहे हैं। इस समयावधि में कुछ ऐतिहासिक घटनाऐं भी घटित होंगी।

यूरोपीय कुण्डली नं. (2) के अनुसार मंगल-प्लूटो दोनों युद्धाग्नि को प्रज्वलित करने वाले ग्रह होने से प. जर्मनी, हालैण्ड, फ्रांस, डैन्मार्क आदि में कहीं शान्ति भंग होगी। कहीं अन्दरूनी बगावत, कहीं राजनीतिक हत्याकाण्ड, कहीं भयंकर ज्वालामुखी विस्फोट किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानिके योग बनते हैं।

13 जनवरी, 2005 ई. से 11 मार्च, 2005 ई. तक शनि एवं मंगल-प्लूटो का समसप्तकयोग यूरोपीय देशों के लिए भयावह घटनाओं को जन्म देगा। कहीं यूरोप में युद्धज्वाला धधकेगी, कहीं वरिष्ठ नेता विश्वशान्ति के लिए चिन्तित होंगे। यानदुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप व उग्रवादजन्य अशान्ति से हालात बिगड़ सकते हैं। भगवान युद्धोन्मत्त देशों को सदबुद्धि दें।

मुस्लिम राष्ट्र

1 मुहर्रम से एक दिन पूर्व चन्द्रदर्शन वाले दिन 21 फरवरी (सन् 2004 ई.) शनिवार को सूर्यास्त के समय 18 घं. 11 मि. पर सिंह लग्न में मुस्लिम नववर्ष का उदय होता है। 22 फरवरी (सन् 2004 ई.) को यकम मुहर्रम होने से मुस्लिम नववर्ष (सन् 1425 हिजरी) का राजा सूर्य ही है।

मुस्लिम देशों की नववर्ष कुण्डली

यावन राष्ट्रों की वर्षलग्न कुण्डली में लग्नेश-सूर्य सप्तमभाव में शत्रुक्षेत्र में यूरेनस के साथ है। अप्रैल, 2004 से सितम्बर तक मुस्लिमराष्ट्रों के साथ अमेरिका एवं कुछ अन्य

राष्ट्र आतंकवाद को मुद्दा बनाकर उलझने की नीति अपनाएंगे। सीरिया, ईरान, सऊदी अरब एवं कुछ अन्यआवनराष्ट्रों के साथ अमेरिका की नीति कठोर रहेगी। एतदर्थ, अमेरिका को सामरिक दृष्टि से बहुत सोच–समझकर पग उठाने होगे, अन्यथा यावनराष्ट्रों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति सम्पूर्ण विश्वशान्ति के लिए खतरा बन सकती है। पश्चिमी देशों एवं पश्चिमी एशिया के मुस्लिमदेशों में इस वर्ष संघर्ष की स्थिति को नकारा नहीं जा सकता। 13 जनवरी, 2005 ई. से लगभग अप्रैल तक की ग्रहस्थिति मुस्लिमराष्ट्रों के लिए विशेष भयावह है।

इस वर्ष इजराइल–फिलस्तीन संघर्ष भी विश्व में एक बड़े संकट का इशारा कर रहा है। संवत् में शनि–मंगल की युति एवं शनि–प्लूटो मंगल की पोजीशन के अनुसार कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी एवं कहीं राष्ट्राध्यक्ष के रूप में तानाशाही शासन का अन्त भी होगा– राष्ट्राध्यक्ष को बरबस हकूमत छोड़नी पड़े या षडयन्त्र से मृत्यु का शिकार होना पड़ेगा।

इस वर्ष मिथुन राशि में शनि–मंगल के आने पर एवं शनि–मंगल के षडष्टक योग में तथा मंगल–प्लूटो के साथ शनि का समसप्तक योग बनने पर पाकिस्तान में सत्ता–परिवर्तन अवश्यंभावी है। यहां आन्तरिक अशान्ति के साथ वहां के राष्ट्रपति जनरल परवेज़ मुशर्रफ को अपदस्थ होना पड़ सकता है। कहीं किसी षड़यंत्र में राजनीतिक हत्याकाण्ड की भी सम्भावना है।

अफग़ानिस्तान में अमेरिका के खलाफ कुछ क्षेत्रों में बग़ावत होगी। इराक में उलझे रहने के कारण पश्चिमी एशिया में शान्ति स्थापित करना अमेरिका के राष्ट्रपति के लिए संभव नहीं होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इजराइली–फिलस्तीन संघर्ष एक संकटपूर्ण स्थिति का संकेत दे रहा है।

ईरान की जन्मकुण्डली
1 अप्रैल 1979, 2. 20 P.M.

रा. 5 श.
3
6
4 गु.
2 चं.
7
1
मं.
8
10
12 सू. बु.
9
शु. 11 के.

ईरान के जन्माङ्ग के अनुसार बुध की महादशा में केतु का अन्तर आने वाला है। बुध व्यय स्थान का मालिक है; केतु अष्टमभाव में शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहा है;– यह ग्रहस्थिति भयावह परिस्थितियों को जन्म देगी। इससें आगे शुक्र, जो कि– केतु के साथ अष्टमस्थ होकर शनि–राहु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा, यह और भी कठिन परिस्थितियों को जन्म देगा। अमेरिका आदि के साथ युद्धमय वातावरण से अशान्ति बनेगी। इस समय ईरान में भयंकर जनधनहानि एवं अकस्मात् राजनीतिक हत्याकाण्डों से सत्ता–परिवर्तन हो सकता है।

सं. 2061 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का सर्वेक्षण

गत संवत् 2060 वि. के अन्तिम कुछ मासों पर विहंगम दृष्टि डालने से ज्ञात होता है, कि– मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी, 2004 ई.) एवं अमावस वाले दिन (21 जनवरी, 2004 ई.) को बुधवार होने से खप्परयोग बन रहा है। यह खप्परयोग अयोध्या में रामजन्म भूमि किंवा पुरानी किसी अन्य समस्या को पुनःउजागर करता मालूम देता है। सत्तारूढ़ दल विशेष परिस्थिति में उलझ जाएगा। प्रधान नेतृत्व एवं केन्द्रीय–सरकार के घटक दलों में तालमेल न होने से सत्ता–घटकदल छिटकते प्रतीत होंगे। राजनीतिक दृष्टि से सत्ता संघर्ष की पुनः परीक्षा का समय नजदीक आता मालूम देगा। 13 फरवरी (2004 ई.) को पुनः खप्पर–योग बन रहा है, साथ ही मार्च के प्रथम सप्ताह में शनि वक्री होगा एवं बुध अतिचारी चलेगा– यह ग्रहस्थिति राजनैतिक–दलों में परस्पर वैमत्य से नए सिरे से पार्टियों का ध्रुवीकरण कराएगी। सत्तारूढ़ गठबन्धन कमजोर एवं छिन्न–भिन्न होता नजर आएगा। परिणामस्वरूप, आगामी लोकसभा के गठबन्धन भिन्न होकर परिणाम आश्चर्यजनक होंगे। लोकसभा चुनाव समय पर न होकर राजनैतिक दृष्ट्या आगे–पीछे कराने पर राजनीतिक दलों की मजबूरी बन जाएगी। इन दिनोंकिसी विशिष्ट–व्यक्ति के निधन व हत्या से शोक व्याप्त होगा। यान–दुर्घटना एवं प्राकृतिकप्रकोप से भयंकर हानि के भी योग बनते हैं।

सं. 2061 वि. की नव वर्ष प्रवेश–कालीन ग्रहस्थिति के अनुसार नए वर्ष का प्रारम्भ मकर लग्न में हो रहा है– उत्तर की तरफ एवं उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल में प्राकृतिकप्रकोप, भूकम्प, भूस्खलन आदि से भारी क्षति होगी। इन प्रान्तों के प्रधान नेतृत्व में परिवर्तन भी संभव है। आकालिक वर्षा एवं कुछ भागों के में अकाल की स्थिति बने।

नववर्ष प्रवेश–कालीन ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शनिं छठे भाव में राजनैतिक दृष्टि से विरोधी पक्ष एवं शत्रुदेशों की कुचाल को निष्क्रिय करता है। नववर्ष कुडली में बुध नीच होने से राजनैतिक दलों में वैमत्य पैदा करके दलगत नीति में परिवर्तन एवं नए ध्रुवीकरणों को जन्म देगा। देश की राजनीतिक पार्टियां सत्ता संघर्ष की ओर बढ़ेंगी। शक्तिपरीक्षण के मुद्दे बनेंगे, सत्ता की होड़ लग जाएगी। आषाढ़ में प्रमुख नेताओं की प्रतिष्ठा दाव पर लगेगी। राजनैतिक हत्याकाण्ड हों व सीमाप्रान्त असुरक्षित रहें। कहीं भयंकर प्राकृ–तिक आपदा से सत्तादल चिन्तित रहें।

संवत् 2061 वि. की ग्रहपरिषद् में संवत् का राजा सूर्य है।

" चौराग्निबाधानिधनं नृपाणाम्" –प्रमाणानुसार यह वर्ष अनैतिक कार्यो से जनता के लिए परेशानी देने वाला है। कहीं अग्निकाण्ड, भूकम्प, भूस्खलन, समुद्री तूफान आदि से भी जनधनहानि का संकेत देता है। वरिष्ठ व्यक्तियों को अपनी सुरक्षा पंक्ति को दृढ़ रखना जरुरी है, अन्यथा आतंकवादजन्य परेशानी से, राजनीतिक हत्याकाण्ड कष्टप्रद सिद्ध होंगे।

इस वर्ष का मन्त्री युद्धप्रियग्रह मंगल है। –" दस्यु–गदादिज–वेदना" अर्थात् सीमाप्रान्तों पर अतिक्रमण किंवा रोगों से परेशानी एवं अनेकविध कष्टों से जनता को परेशानी में ही रखे। इस वर्ष में **मेघेश फलेश एवं दुर्गेश** तीन पदों का प्रतिनिधि चन्द्र होने से स्पष्ट

संकेत मिलता है, कि – सं. 2061 में देश के संचालन एवं महत्वपूर्ण पदों पर स्त्रीवर्ग की प्रधानता रहेगी।

इस वर्ष श्रावण अधिकमास है। इसका फल इस प्रकार लिखा है– **"दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः।"** स्पष्ट है, कि– इस वर्ष भयंकर भूकम्प, तूफान, भूस्खलन आदि प्राकृतिक उत्पात से भारी जनधनहानि होगी। उत्तर एवं दक्षिणी भूभाग पर दुर्भिक्ष से कहीं जनता को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़े।

स्वतन्त्र भारत की जन्मकुण्डली
15 अग. 1947 (मध्यरात्रि 0/0)

3 मं. | 1 | रा. 2 | 12 | सू.बु.श. शु.चं.4 | 5 | 11 | 6 | 8 के. | 10 | 7 गु. | 9

स्वतन्त्र भारत के जन्माङ्ग के अनुसार एवं बृहस्पति–शनि तथा मेदिनी ग्रहों की स्थिति के अनुसार सन् 2007 ई. से भारत गणमान्य प्रतिष्ठत देशों की कोटि में आ खडा होने लगेगा। ऐसा हम गत वर्ष में भी लिख चुके हैं। लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मेष का राहु विरोधी देशों की गतिविधियों को निरस्त कर देगा। मिथुन का शनि शत्रुदेश के कुचक्र से सीमाप्रान्तों पर शान्तिभंग का कारण बनेगा, आगे 13 जनवरी, 2005 ई. के बाद शनि का मंगल एवं प्लूटो के साथ समसप्तकयोग सीमा सुरक्षा के प्रति सजग रहने का संकेत देता है; समय प्रधान शासकों के लिए अग्निपरीक्षा का है। उग्रवादियों की गतिविधियों से प्रधान नेताओं की सुरक्षा की दृष्टि से यह समय विशेष सावधानी का है। घात भय है, शत्रुदेश सीमाप्रान्तों (काश्मीर आदि) में विनाशक योजनाओं से युद्धपरक नीति अपनाकर परेशानी पैदा करेगा;–शासक सावधान रहें।

स्वतन्त्र भारत के 57वें वर्ष के अनुसार छठे भाव में स्थित, यूरेनस–मंगल पर गुरु–बुध की दृष्टि है; शत्रुजन्य नेष्ट गतिविधि निष्क्रिय हो जाएगी। पराक्रम (तृतीय भाव) स्थान में केतु–प्लूटो सैन्यदक्षता एवं प्रहारक्षमता में वृद्धि की सूचना देते हैं। सं. 2061 वि. के अन्तिम 8 मास भारत की शासन–सत्ता के लिए काफी कठिन प्रतीत होते हैं। इस अवधि में सत्तासंघर्ष होगा और आश्चर्यजनक परिणामों से सत्तापरिवर्तन के भी योग हैं।

स्वतन्त्र भारत के 58वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार मुंथेश–शनि जन्माङ्ग से अष्टम भाव में शुक्र के साथ है। नवमेश चन्द्र का दशमेश सूर्य के साथ नवम भाव में एकत्र होना बहुत उत्तम है,– " निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः। राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत्।।" लघुपाराशरी के इस सिद्धान्तानुसार 58वें वर्ष की ग्रहस्थिति भारत के भावी वर्षों में गौरव की गाथा का निर्माण करने वाली है। दशमभाव में मंगल–गुरु भी भारत को आत्मनिर्भर, सशक्त–वैभवशाली, निर्माणकार्यों की तरफ प्रवृत्त करेंगे। राष्ट्र के अभ्युदय हेतु नए ध्रुवीकरण एवं नए सशक्त राजनीतिकदलों का एकीकरण होकर एक सफल नेतृत्व देश को मिलने का संकेत मिलता है। जो कि, नई विदेश नीति, नई सकारात्मक योजनाओं से देश को प्रगतिपथ पर ले जाएगा। 58वें वर्ष की कुण्डली में दशम भावस्थ मंगल–गुरु होने पर परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में देश नए आयाम प्रस्तुत करेगा। परमाणु–भट्टी जैसी रचना से भारत आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ेगा एवं ऊर्जा के विकास की दिशा में देश अद्भुत उपलब्धि की तरफ अग्रेसर होगा। ग्रहस्थिति प्रगतिप्रद होने पर भी प्रशासकीय गतिविधि एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से यह संवत् राजनीतिक दलों एवं बड़े नेताओं के लिए काफी उलझनपूर्ण अवश्य प्रतीत होता है।

भारत का 55वां गणतन्त्र

26/ 27 जनवरी, 2004 ई. को 6 घं. 35 मि. पर भारत गणतन्त्र 55वें वर्ष में प्रवेश करेगा। शत्रुक्षेत्री सूर्य अष्टमेश होकर लग्न में है। सूर्य इस संवत् का वर्षेश भी है। संकेत मिलता है, कि– भारत के सर्वोच्चनेता कठिन परिस्थितियों में भी देश की गरिमा एवं अस्मिता को आंच न आने देंगे। भारत विज्ञान तकनीकि क्षेत्र में बहुमुखी प्रगति की तरफ बढ़ेगा। हिन्दु–मुस्लिम समस्या को कुछ पार्टियों की ओर से छद्मरूप से उभारकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश में गणतन्त्र को चोट पहुंचाने का प्रयास विफल रहेगा। चतुर्थभाव (केन्द्र) में केन्द्रेश मंगल के साथ राहु का एकत्रहोना विशेष योगकारक कहा है;–

"यदिकेन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमो ग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ।।"

उक्त ग्रहस्थिति में भारतीय गणतन्त्र सभी समस्याओं को पार करके विश्व में प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा,– इस में सन्देह नहीं।

महामहिम श्रीअब्दुलकलाम महाभाग

भारतीय गणतन्त्र के प्रधान, महामहिम राष्ट्रपति श्री अब्दुलकलाम महाभाग की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार राष्ट्रपति जी को 27 अगस्त के बाद संवत् के अन्त तक कई प्रकार की कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। एतदर्थ, भारत के वरिष्ठ विधिवेत्ताओं से परामर्श भी करना पड़ेगा। लेकिन, गोचर में कन्याराशि का बृहस्पति महामहिम की गरिमा को उज्ज्वल रखेगा। भारत गणतन्त्र की महिमा अक्षुण्ण रहेगी। आगामी लोकसभा निर्वाचनों के लिए महामहिम की भूमिका महत्वपूर्ण एवं सक्रिय रहेगी। 27 अप्रैल, 2004 ई. से 13 जून तक, 16 सितम्बर से 31 अक्तूबर, (2004 ई.) तक एवं 16 दिसम्बर (2004 ई.) से 13 मार्च (2005 ई.) तक की समयावधि राष्ट्र के लिए समस्यापूर्ण रहेगी, जिसके हल के लिए राष्ट्र के महामहिम की भूमिका सराहनीय रहेगी एवं एक स्थायी कुशल नेतृत्व देश को प्रदान करने के लिए इन्हें यशोलाभ होगा।

उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत

श्री भैरों सिंह शेखावत की जन्माङ्गगतग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सितम्बर, 2005 ई. से आगे अढ़ाई वर्ष की ग्रहस्थिति इनके जीवन में महत्वपूर्ण गरिमामय पदाप्ति का कारण बनेगी। विशेषतः कन्या एवं तुलाराशि के शनि एवं गुरु में केन्द्रान्तर सर्वोच्च पदाप्ति का संकेत देते हैं। लग्नेश शुक्र का नीच सूर्य के साथ एवं उच्च शनि के साथ सम्बन्ध शारीरिक स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक है। सूर्य–शनि का दान एवं मन्त्रजाप कल्याणप्रद रहेगा। ग्रहस्थिति स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक अवश्य है। विशेष ध्यान रखने की आवश्यक्ता है।

संवत् 2061 की गोचर ग्रह-स्थिति का भारत पर प्रभाव

भारतवर्ष की प्रभावराशि मकर है। प्रभावराशि का स्वामी शनि मिथुन राशि में है। संवत् का स्वामी सूर्य संवत् के प्रारम्भ में मीनस्थ है एवं मीन राशि का स्वामी गुरु ग्रह धनुराशि को विशेष दृष्टि से देख रहा है। वर्षेश सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। स्पष्ट संकेत मिलता है, कि– **संवत् की प्रारम्भिक गोचर ग्रहस्थिति उलझी हुई प्राचीन धार्मिक एवं साम्प्रदायिक समस्याओं के समाधानार्थ सतत प्रयत्नशील मालूम देती है।** गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सिंहस्थ बृहस्पति में ही एवं सूर्य के कुम्भ या मेष राशि में आने पर 13 मई, 2004 ई. तक श्रीराम जन्मभूमि का विवाद निपट जाएगा। सुप्रीम कोर्ट महत्वपूर्ण निर्णय इतिहास के इस विवादस्पद मसले का समापन कर देने में सक्षम रहेगा। लेकिन संवत् के लगभग आरम्भ में ही शनि की सूर्य पर विशेष दृष्टि होने से ही अयोध्या में विवादसमाप्ति की घोषणा के बाद साम्प्रदायिक हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। इस समय सीमा–पार से उग्रवादजन्य घटनाएं विशेषरूप से घटित हो सकती हैं। संवत् के प्रारम्भिक मास प्रधान नेताओं के लिए भारी हैं। शत्रुकृत् प्रहार से भारी कष्ट के योग हैं। शासनतन्त्र को बहुत सतर्क रहना होगा। कदाचित् इस विवाद का निर्णय कोर्ट अभी नहीं कर पाता तो तुला के सूर्य से (16 अक्तूबर, 2004 ई. के बाद 6 मास के मध्य) रक्तपात एवं भारी अशान्ति का कारण बनेगा,– ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। भगवान् शुभंकर रहें,– यही प्रार्थना है।

वैशाख चान्द्रमास में 5 मंगलवार हैं, वैशाख की संक्रान्ति भी मंगलवारी है। 6 अप्रैल को राहु के साथ बैठा बुध वक्री हो रहा है, बृहस्पति पहिले ही वक्री है। सिंहस्थ–गुरु पर शनि एवं मंगल की विशेष दृष्टि है। सत्तारूढ दल को विशेष समस्याओं के हल के लिए विशेषरूप से सक्रिय रहना होगा। उत्तरप्रदेश में किसी धार्मिक समागम में जनधनहानि के योग हैं। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होने का भी योग है। 12 अप्रैल को बुध मेष राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। 13 अप्रैल को बुध–राहु एवं सूर्य एकराशि में आकर केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में विशेष उद्‌बोधन कराता है– नई–नई प्रगतिप्रद योजनाएं कार्यान्वित होंगी।

13 अप्रैल को मंगलवारी मेष संक्रान्ति एवं राहु–बुध के साथ सूर्य का मेल होने से एक मास में कहीं उग्रवादजन्य–भीषण कष्ट आने का संकेत मिलता है।

27 अप्रैल से 13 जून तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध (इसी बीच शनि–मंगल का 18 से 28 मई तक आर्द्रा नक्षत्र में एक साथ चलना एवं 6 मई से 27 मई तक शुक्र, मंगल, शनि की एक साथ मिथुन राशि में स्थिति) देश की शासनसत्ता को घोर चक्रव्यूह में फंसा सकती है। कहीं सत्तापरिवर्तन एवं घोर आन्तरिक, साम्प्रदायिक अशान्ति से परेशानियों का सामना सत्तारूढ दल को करना पड़ेगा। काश्मीर, आसाम, त्रिपुरा एवं अन्य संवेदनशील सीमाप्रान्तों पर भी इस समय सतर्कता रखनी आवश्यक है। शनि–मंगल के एकराशि में रहते–''युद्धदौ शनि–माहेयौ''– प्रमाणानुसार सीमावर्ती प्रान्तों/क्षेत्रों पर शत्रुकृत कार्यवाही घातक सिद्ध हो सकती है। इस समय वायुयान एवं रेलदुर्घटना में जनधनहानि, किसी तीर्थ पर बमविस्फोट एवं उग्रवादजन्य अशान्ति से सरकार चिन्तित रहेगी। इस समयावधि (27 अप्रैल से 13 जून तक) में कहीं भीषण भूकम्प, भूस्खलन, समुद्री तूफान व ज्वालामुखी विस्फोट आदि से जनधनहानि के भी योग हैं।

शनि–मंगल के मिथुनराशि में रहते ही 25 अप्रैल को वक्री बुध का पूर्व में उदय होगा। वैशाख में बुध का उदय अनावृष्टि, तूफान व कहीं आगे दुर्भिक्ष का संकेत दे रहा है।

8 जून को वृषराशि में स्थित अस्त शुक्र का सूर्यातिक्रमण भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, बंगलादेश, लंका, यूरोप, अरबराष्ट्र, अफ्रीका, चीन, रूस, आस्ट्रेलिया, जापान, कोरिया, U.S.A., कनेडा आदि को प्रभावित करेगा। कहीं भीषण भूकम्प, कहीं अकाल से परेशानी एवं मित्र राष्ट्रों में परस्पर मतभेद के रूप में इस सूर्यातिक्रमण का फल दृष्टिगोचर होगा– **" भेदे वृष्टि–विनाशौ भेदः सुहृदां महाकुलानां च।"**

14 जून को मंगल कर्क में आएगा और 30 जुलाई तक कर्क में रहेगा। कर्कराशि का नीच मंगल राजनीति में कुछ उथल–पुथल करता है। मंहगाई जोर पकड़ेगी। नए राजनीतिक ध्रुवीकरण बनते नजर आएंगे।जिसका परिणाम अगस्त/सितम्बर में विशेष राजनीतिक परिवर्तन के रूप में सामने आएगा।

14 जून से 15 जुलाई तक शनि–सूर्य का एक राशि में रहना, कहीं किसी प्रदेश में शासनतन्त्र में विशेष परिवर्तन का संकेत देता है। 16 जून को सूर्य कर्क में आकर नीच मंगल के साथ मेल करेगा। ध्यान दें– कि, इस संवत् का राजा सूर्य एवं मन्त्री मंगल है। यहां दोनों एकराशिस्थ हो गए हैं। राजनीतिक दलों में आनतरिक मतभेद उजागर होंगे। नए

ध्रुवीकरण बनने से बड़े दल चिन्तित रहेंगे। राजनीतिज्ञ सत्तापरीक्षण के लिए कटिबद्ध नजर आएंगे। जुलाई में बन रहा कालसर्प योग सत्तारूढ़ दल के लिए नेष्ट फलप्रद एवं विनाशजनक रह सकता है। 4 जून से 2 जुलाई तक बुध अतिचारी रहेगा एवं जुलाई के प्रथम सप्ताह से लगभग 20 जुलाई तक शनि भी अतिचारी पोजीशन में चलेगा। यह योग भारतीय सत्तारूढ़ दल के लिए विशेष चनौती पूर्णरहेगा। प्रधान नेता परीक्षा की घड़ी अनुभव करेंगे। इस समय साम्प्रदायिक प्रश्न एवं बड़े दल आक्रामक–नीति अपनाकर लुभाऊ प्रतिज्ञाएं करके निर्वाचन क्षेत्र में उतरेंगे। परिणाम सितम्बर तक आश्चर्यजनक रहेंगे।

प्रथम श्रावण कृष्णपक्ष से प्रथम (अधिक) श्रावण शुक्लपक्ष में (3 से 31 जुलाई तक) पांच शनिवार हैं। कहीं नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। चीन, जापान, अमेरिका, अफगानिस्तान एवं भारत के पर्वतीय भूभाग पर भयंकर भूकम्प से भारी जनधनहानि के योग हैं। कहीं अग्निकाण्ड व बमविस्फोट आदि से हानि के भी योग बन रहे हैं। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में अप्रत्याशित तेजी से सर्वसाधारण में असन्तोष रहे;– " शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।"

31 जुलाई को मंगल सिंहराशि में आकर वृहस्पति के साथ राशि–सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन शुक्र मिथुनरशि में शनि के साथ मेल करेगा। यह राशि–सम्बन्ध 31 अगस्त तक चलेगा। इस समय शनि की मंगल–गुरु पर विशेष दृष्टि रहेगी। इस समय सामयिक वर्षा का अभाव रहेगा। अनेक क्षेत्र अकालग्रस्त होते मालूम देंगे। इसके अतिरिक्त राजनैतिक अस्थिरता का भय राजनीतिज्ञों में पनपेगा–

" एकराशिं गतावेतौ धरापुत्रांगिरःसुतौ।
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः।।"

लेकिन पूर्व में एवं दक्षिण में कहीं बाढ़ सूखा से भारी हानि के श्रावण शुक्ल पक्ष में तिथिक्षय होने से कार्तिक मास में कहीं शासनसत्ता में नाटकीय परिवर्तन होगा।

"श्रावणे शुक्ल-पक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

16 अगस्त को सूर्य सिंहराशि में प्रवेश करके वक्री बुध एवं मंगल–गुरु के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के संगठन सांझा व्यापार की ओर अग्रेसर होंगे। चीन, जापान, दक्षिणी कोरिया एवं पूर्वी एशियाई क्षेत्र मुक्त समझौते पर सहमत हो जाएंगे। सरकार और विशेषरूप से ध्यान दे कि– 3 जून से 11 सितम्बर 2004 ई. तक येन–केन प्रकारोण गोचर ग्रहस्थिति कालसर्प योग बना रही है। अर्थात् सारे ग्रह राहु–केतु के मध्य ही चलते हैं। यह ग्रहस्थिति समीपस्थ–विरोधी राष्ट्रों के कुचक्र से शान्ति भंग करेगी। देश की शान्ति एवं शासनसत्ता में परिवर्तन करने किंवा अस्थिर करने की शत्रु की गतिविधि पर विशेष ध्यान देना होगा। इस समयावधि में कुछ कट्टरपन्थी संगठन, जो कि– भारत के इस्लामीकरण का स्वप्न देख रहे हैं, अपनी गतिविधियां तेज कर सकते हैं। नागालैण्ड, त्रिपुरा में शत्रुकृत गतिविधि के परिणाम सत्तारूढ़ दल के लिए सिरदर्द बनेंगे। उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, पश्चिमी बंगाल, असम, केरल आदि राज्यों में इस्लामी कट्टरता बढ़ने के योग हैं, जिसके परिणाम आगे भारी चिन्ताजनक रहेंगे। बंगलादेश से सटे सीमाप्रान्तों पर भी विरोधी देश के कुचक्र को समझना पड़ेगा।

27 अगस्त को बृहस्पति के कन्याराशि में आने पर राहु बृहस्पति की विशेष दृष्टि से ओझल हो जाएगा। इस प्रकार कालसर्पयोग अधिक प्रभावी हो जाएगा। भारत सरकार को चीन की कुचाल से विशेषतः सावधान रहना होगा। क्योंकि– हिन्द महासागर से भारत के वर्चस्व को समाप्त करने के लिए उसके प्रयास घातक हो सकते हैं। भारत को अरब–इजराइल सम्बन्धों के बारे में तटस्थ रहना होगा। तेलअबीब इस वर्ष सैन्यबल का प्रयोग विरोधी राष्ट्र से करेगा; इस समय तटस्थ नीति से ही श्रेय रहेगा। चीन की अरुणाचल प्रदेश पर नजर रहेगी, भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करने की नीति से अशान्त वातावरण बन सकता है।

5 सितम्बर को शनि कर्कराशि में प्रवेश करके शुक्र के साथ मेल करेगा। यह शनि–शुक्र राशि सम्बन्ध 27 सितम्बर तक चलेगा। कालसर्प योग भी चल रहा है। 16 सितम्बर को मंगल कन्याराशि में आकर शनि की दृष्टि में आजाता है। इस समय कन्या राशिस्थ गुरु–मंगल–बुध एवं सूर्य– ये ग्रह एक राशि में हैं;–

"एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।"

यह चतुर्ग्रही योग 11 अक्तूबर तक चलता है। कहीं भारी वर्षा से, कहीं सीमाप्रान्तों पर युद्धाग्नि से जनधनहानि हो। सितम्बर/अक्तुबर में यानदुर्घटना से हानि एवं उग्रवादियों की कुचाल व बमविस्फोट से भी हानि के समाचार मिलेंगे।

आश्विन शुक्ल तृतीया (16 अक्तूबर) को शनिवार होने से कहीं अग्निकाण्ड से भारी जनधनहानि होगी। खाद्य किंवा दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं में मंहगाई से जनता में असन्तोष बढ़ेगा–

" आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम–शनैश्चरौ।
तदाग्निः प्रबलो भूम्यामन्नादीनां महर्घता।।"

1 नवम्बर को सूर्य–मंगल का राहु के साथ समसप्तकयोग विशेष व्यक्तियों के लिए परेशानी का कारण बनेगा। 1 नवम्बर को ही गुरु–शुक्र स्वतन्त्ररूप से एक राशि में होने से एवं शनि के साथ मंगल का दशम चतुर्थ सम्बन्ध विशेष राजनैतिक परिवर्तन का संकेत देता है। सत्तारूढ़ दल के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां बनेंगी। कहीं जातिवाद, किंवा साम्प्रदायिक झगड़े–झंझट भी सरकार के समक्ष उपस्थित होंगे। कहीं आकालिक वर्षा किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो–

" गुरु–शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टि जगत्यां नात्र संशयः।।"

चान्द्रमास कार्तिक में पांच शुक्रवार होने से देश में सुभिक्ष एवं सुखशान्ति का वातावरण बनेगा। तुलाराशि का शुक्र किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कराए।

मार्गशीर्ष चान्द्रमास में 5 शनिवार हैं। शनि वक्री गति से चल रहा है।

"शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभंगश्च वहिनदाहो महर्घता।।"

27 नवम्बर से 26 दिसम्बर तक की अवधि में अमेरिका, चीन, जापान, किसी मुस्लिमदेश एवं भारत के दक्षिण या उत्तरी भूभाग में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक-प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं। कहीं बम विस्फोट, यानदुर्घटना एवं अग्निकाण्ड आदि से हानि के समाचार भी मिलेंगे।

8 नवम्बर को कर्कराशिस्थ शनि वक्री हो जाता है। कहीं दुर्भिक्ष एवं उपभोग्य वस्तुओं की कमी अनुभव होगी। शासकों के प्रति जनाक्रोश नजर आएगा। 14 दिसम्बर तक शनि, मंगल का दशम-चतुर्थ सम्बन्ध बनेगा। शीतजन्य रोगों से जनता में परेशानी हो। 16 दिसम्बर को वक्री बुध के उदित होने पर कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि का समाचार मिलेगा– " नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो ब्रजत्युदयम्।"

पौष चान्द्रमास में (27 दिसम्बर से 25 जन. 2005 ई. तक) 5 सोमवार एवं 5 मंगलवार होने से मुस्लिमराष्ट्र में कहीं सत्ता–परिवर्तन हो। अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि में कुछ विशेष ऐतिहासिक घटना घटे। कहीं आन्तरिक अशान्ति से सैन्यबल का प्रयोग करना पड़े। लेकिन भारत के लिए यह समय अनुकूल परिस्थितियों वाला है।

13 जनवरी (2005 ई.) को शनि वक्रगति से चलता हुआ फिर से मिथुन राशि में प्रवेष करेगा। इस प्रकार मकर राशिस्थ सूर्य के साथ शनि का षडष्टक योग 11 फरवरी तक बना रहेगा। 28 जनवरी तक शनि–मंगल का भी परस्पर षडष्टकयोग चल रहा है– इस समय भारत को अपनी प्रभुसत्ता को कायम रखने के लिए एवं सीमाप्रान्तों पर, काश्मीर, त्रिपुरा, बिहार, बंगाल, मिजोरम में विशेष सावधान रहना होगा, अन्यथा स्थिति गंभीर रूप धारण कर सकती है। इस समय किसी विशिष्ट–व्यक्ति के निधन व हत्या से शोक व्याप्त होने का योग भी है।

26 जनवरी को बुध एवं 28 जनवरी को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बनाएंगे। इस मास में सब से महत्वपूर्ण यह है, कि–प्लूटो 21 वर्ष बाद राशि बदलकर धनु राशि में दाखिल होगा। धनुराशि में युद्धप्रिय मंगल पहले ही है। प्लूटो भी मंगल की प्रकृति का ही ग्रह है। 11 मार्च तक ये एकसाथ एकराशि में चलेंगे। 12 मार्च (2005 ई.) को मंगल मकर राशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा, जो कि– संवत् के अन्त व कुछ आगे तक चलेगा। 24 मार्च (2005 ई.) को राहु मीन में प्रवेश करके शुक्र–सूर्य–बुध के साथ मेल करेगा। यह सारी ग्रहस्थिति संवत् के अन्तिम मासों में अघटित–घटनाओं को जन्म देगी। कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त होंगे। भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प आदि से भारी कष्ट, जनधनहानि का संकेत मिलता है। सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को सतर्क रखना होगा। उग्रवादी इस अवधि में भारी विनाशकारक योजनाओं से जनमानस को त्रस्त कर सकते हैं।

भारत की जलवायु एवं वर्षा

इस वर्ष मेघेश चन्द्र होने से वर्षा पर्याप्त होगी:–"फलवती धन धान्यवती मही"। इस वर्ष जलस्तम्भ 24 प्रतिशत होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी अनुभव होगी। चतुर्मेघों में **'आवर्तक'** नामक मेघ एवं नवमेघों में **'तम'** नामक मेघ होने से **' आवर्ते विनिवृष्टिः** स्यात्' तथा च 'तमोवर्षा विनाशनम्' प्रमाणानुसार इस वर्ष वर्षा की कमी रहेगी। किसान वर्ग के लिए यह वर्ष परेशानी वाला ही है। द्वादश नागों में **'अश्वतर'** नामक नाग भी –" **न वर्षति** जलं वज्री तदा सस्यं विनश्यति," प्रमाणानुसार वर्षा की कमी का ही संकेत मिलता है। राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, उ.प्रदेश एवं म.प्रदेश के कुछ भागों में वर्षा की कमी से कृषकवर्ग परेशान रहेगा।

सप्तवायु विचार से इस वर्ष **'प्रवह'** नामक वायु है। उत्तर–पश्चिम एवं दक्षिणी प्रान्तों में भारी आंधी–तूफान से वृक्षों को एवं खड़ी फसल को हानि पहुंचेगी।

लेकिन इस वर्ष **रोहिणी का वास**, तट पर एवं **समय का वास** धोबी के घर होने से आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र एवं उत्तरी भारत में अच्छी वर्षा के संकेत मिलते हैं। अष्टनागों के विचार से **'वासुकी'** नामक नाग "बहुवृष्टिकरःशुभः" प्रमाणानुसार अनाजों की फसल अच्छी होने एवं पर्याप्त वर्षा का संकेत मिलता है।

अब हम गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षा–विचार लिख रहे हैं; जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों मे वर्षा यत्र–तत्र होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्म विचार की आवश्यकता होती है, जो कि– समयाभाव के कारण यहां अभी संभव नहीं है। वर्षा–विचार के लिए आर्द्राप्रवेश लग्न पर विचार करना जरूरी है–

सूर्य रात्रि में 9 बजकर 6 मिनट पर आर्द्रा में प्रविष्ट हुआ है–" **रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके**।"– प्रमाणानुसार आर्द्राप्रवेश सम्पूर्ण व्यक्तियों के लिए सुखप्रद है। सूर्य मिथुनराशि में बुध–शनि के साथ है एवं चन्द्र अपनी राशि में नीच मंगल के साथ है। आर्द्राप्रवेश कुण्डली में कालसर्पयोग बना है। उत्तरी भारत एवं दक्षिण में भारी वर्षा की कमी या वर्षा से भारी तबाही के संकेत मिलते हैं।

मई के अन्तिम चरण में महाराष्ट्र बम्बई में वर्षा प्रारम्भ होगी। 27 अप्रैल से 13 जून तक शनि–मंगल का एकराशि सम्बन्ध अनेकत्र वर्षा में रुकावट पैदा करेगा। आर्द्रा नक्षत्र के शनि–मंगल 8 से 28 मई तक कहीं भारी वर्षा–बाढ़ या तूफान से हानि करें। मई 5, 6, 8, 10, 14, 18, 20, 22, 24, 28, 29, 31 एवं 2 जून को मुम्बई, भूटान, उड़ीसा, आसाम, बिहार में वर्षा के योग हैं। जून के प्रथम सप्ताह में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं राजस्थान में वर्षा के योग बनेंगे।

जून 13, 14, 15, 17, 19 से 21, 26, 29, 30 को पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, उत्तरप्रदेश, शिलांग एवं आसाम में वर्षा हो। जून 20, 29, 30 को जोरदार वर्षा चले।

जुलाई 3 से 5, 10, 11, 16, 18 से 21, 24 से 31 तक हि.प्र., उ.प्र., पंजाब, दिल्ली, चण्डीगढ़ एवं सम्पूर्ण उत्तरी भारत में बादल–वर्षा के योग हैं। राजस्थान, उड़ीसा, आसाम में कहीं सूखा व कहीं भारी वर्षा से हानि भी होगी।

अगस्त 2, 4, 6, 8, 11, 16, 17, 21, 22, 27, 30 एवं 31 अगस्त को हि.प्र., पंजाब, दिल्ली, चण्डीगढ़ एवं जम्मू काश्मीर के अधिकांश भागों में भारी वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से हानि भी हो।

सितम्बर 1, 2, 4, 5, 6, 8, 14, 16, 20, 23, 25, 26, 28 को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान व काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा संभव है। उ. भारत में गर्मी का प्रभाव क्षीण होगा एवं मौसम में बदलाव आएगा।

अक्तूबर 1, 4, 5, 8, 9, 10, 12, 13, 15, 16, 22, 23, 25, 26, 31 को एवं 12 नवम्बर को जम्मू–काश्मीर, हि.प्र. एवं उ. भारत में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो। नवंबर 15 से 20, 23, 24, 30 को जम्मू–काश्मीर, हि.प्र. में जोरदार हिमपात हो। दिसम्बर 1 से 11, 16, 18, 20 को उ. भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। हि. प्र. एवं जम्मू–काश्मीर के उन्नतश्रृंगों पर भारी हिमपात के समाचार मिलेंगे।

नोट– इस संवत् के जुलाई मास से आगामी कई मास कालसर्पयोग की चपेट में होने से वर्षा विचार में कुछ अन्तर संभव है।

आगामी लोकसभा निर्वाचन एवं प्रमुख राजनैतिक दल

आगामी लोकसभा चुनाव यदि समय से पूर्व सन् 2004 ई. के पूर्वार्ध में हो जाते हैं तो ग्रहगोचर के अनुसार स्थिति कुछ और नजर आती है। यदि अक्तूबर 2004 के लगभग निर्वाचन होंगे तो स्थिति बिलकुल भिन्न रहेगी; ऐसा ग्रहगति से ज्ञात होता है। अक्तूबर में निर्वाचन होने पर भाजपा के जन्माङ्ग पर विचार करना होगा। गोचर में शनि 5 सितम्बर को कर्क राशि में आएगा। इस समय भाजपा कुण्डली से भाग्येश–शनि की दृष्टि हट जाती है। लेकिन कर्मेश गुरु भाजपा कुण्डली में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 27 सितम्बर को कन्या में आकर भाजपा की स्थिति को सुदृढ़ बनाएगा। परिणामस्वरूप भाजपा अपने वर्चस्व को यथावत् बनाए रखने में सक्षम मालूम नहीं देती। भाजपा एक बड़ी पार्टी के रूप में तो स्थिर रहेगी लेकिन भाजपा जन्माङ्ग के तृतीयभाव में शनि–राहु–मंगल इस महाक्रूरत्रयी पर 5 सितम्बर, 2004 ई. से पहिले गोचरस्थ शनि की विशेष दृष्टि होने से धार्मिक समस्याओं के समाधान की दृष्टि से गठबन्धन के दल अपना स्टैण्ड बदल लेंगे; परिणाम स्वरूप भाजपा एक विशेष उलझन में नजर आएगी।

भाजपा गठबन्धन सरकार की शपथकालीन कुण्डली के अनुसार गठबन्धन निर्वाचन से पूर्व ही छिटक जाएंगे और नए गठबन्धन ध्रुवीकरण से सत्तारूढ़ दल प्रभावित हुए बिना न रहेंगे।

कांग्रेस पार्टी

कांग्रेस कुण्डली में भाग्येश, कर्मेश सूर्य, बुध व्ययस्थान में हैं। योजना स्थान में नीच शनि एवं योजना भावेश मंगल शनि के क्षेत्र में उच्च है एवं योजना स्थान (पंचम भाव को) मंगल देख रहा है। योजना भाव पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है। कहने का तात्पर्य है– नई योजनाओं से कांग्रेस को लाभ होगा। 27 अगस्त को गुरु के कन्याराशि (कांग्रेस के कर्मक्षेत्र) में आने पर निर्वाचन में इसे गत निर्वाचन की अपेक्षा यत्किंचित् सीटों का लाभ तो अवश्य होगा, परन्तु पूर्ण बहुमत प्राप्त न होगा। हां, 27 अगस्त से पहले ही श्रीमती प्रियंका बडेरा सक्रिय राजनीति में यदि पदार्पण करती हैं तो कांग्रेस कुछ सीटें अधिक पा सकेगी। लेकिन स्वतन्त्ररूप से सरकार बनाने का दावा फिर भी नहीं बन पाएगा। प्रान्तीय किंवा छोटे दलों का सहयोग लोकसभा निर्वाचन में निर्णायक सिद्ध होगा। अगली लोकसभा के परिणाम (त्रिशंकु संसद) के रूप में ही सामने आएंगे। लोकसभा चुनावों में आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, कर्णाटक एवं राजस्थान में कांग्रेस सीटें गत निर्वाचनों की अपेक्षा अधिक प्राप्त कर सकेगी।

कुण्डली कांग्रेस पार्टी

10 मं. | बु.ने.सू. 8 | 11 रा. | 9 | 7 शु. गु. | 12 | 6 ह. प्लू. | 1 चं. श. | 3 | 5 के. | 2 | 4

ग्रहगोचर के अनुसार एक तीसरा राजनीतिक दलीय ध्रुवीकरण सामने आएगा; उसका सहयोग ही कांग्रेस या भाजपा को सत्ता में ला सकेगा। कांग्रेस अन्य क्षेत्रीय–पार्टियों से तालमेल करके सत्ता हथियाने में सफल हो सकती है। लेकिन– भाजपा एक पार्टी के रूप में कांग्रेस से कुछ सीटें ज्यादा ले जा सकती है। सत्ता में आना केवल पार्टियों के गठबन्धन पर ही निर्भर करता है। यह भाजपा एवं इनके सहयोगी दल ही निर्णय करेंगे।

सम्मान्य प्रधानमन्त्री

श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी की ग्रहस्थिति के अनुसार स्वास्थ्य के लिए समय विशेष अनुकूल नहीं है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा का नेतृत्व अटल जी ही करेंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार ही आगामी वर्ष में भाजपा को आशानुरूप सफलता प्राप्त होती मालूम नहीं देती। शनि–राहु–प्लूटो–मंगल की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार समय पार्टी एवं पार्टी के नेताओं के लिए विशेष अनुकूल नहीं। भाजपा के सर्वोच्च नेता होने से यदि श्री अटल जी पार्टी में पनप रहे सत्तासंघर्ष से पार्टी के जनाधार को सम्भाल लें तो भाजपा विभिन्न धड़ों में न बंटेगी। अन्यथा, जनता का एवं राजग के घटकतत्वों का पार्टी से मोहभंग गंभीर परिणामों वाला सिद्ध होगा, अन्यथा, आपके सहयोगी दल ही भाजपा का विरोध करके

धर्मनिरपेक्ष नए किसी मोर्चे का निर्माण हो जाएगा, जो कि– सत्ता का भागीदारी न होने देगा। पुनरपि, श्री अटल जी की प्रतिष्ठा, प्रयास एवं राष्ट्र के प्रति निष्ठा सराहनीय एवं सम्मान्य रहेगी। निर्वाचन आने पर पार्टियों से विवेकपूर्ण सफल तालमेल होने पर पुनः नेतृत्व की ओर बढ़ सकते है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

श्रीमती सोनिया गांधी की ग्रहस्थिति के अनुसार 27 अगस्त को कन्याराशि का गुरु भाग्येश होकर भाग्यस्थान को देखेगा, जो कि, सत्ता में आ जाने के लिए प्रेरित करता है। सितम्बर/ अक्तूबर में गुरु–मंगल गोचर में इकट्ठे हैं एवं योगकारक सिद्ध हो सकते हैं।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब– पंजाब की प्रभावराशि मीन है। 27 अप्रैल से 13 जून तक शनि मंगल मीनराशि से चतुर्थ भाव में चलेंगे। यह ग्रहस्थिति पंजाब में लूट–खसूट, चोरी, हत्याकाण्ड, अपहरण आदि की घटनाओं से प्रधान नेतृत्व की छवि को खराब करेगी। कानून व्यवस्था में गिरावट से जनजीवन प्रभावित होगा। गुरु ग्रह के कन्याराशि में आने पर 27 अगस्त से यहां के शासनतन्त्र में कुछ विशेष संशोधन होंगे और व्यवस्था कन्ट्रोल में आएगी। 2 नवम्बर से 24 मार्च 2005 ई. तक का समय इस प्रान्त की राजनैतिक एवं दलगत राजनीति की दृष्टि से विशेष चिन्ता जनक रहेगी। तकनीकि शिक्षा, ग्रामीण विकास, कृषि, मत्स्य पालन एवं अन्य शिक्षाक्षेत्र में विशेष प्रागति होगी। लेकिन, सामान्य जनता अपनी समस्याओं के समाधान न होने से शासनतन्त्र से कुछ विमुख नजर आएगी।

हरियाणा– प्रभावराशि मीन एवं नाम रामिथुन है। 4 सितम्बर तक मिथुनराशि पर शनि का प्रभाव पूर्ण रहेगा। यहां के प्रधान नेता श्री ओमप्रकाश चौटाला जी का प्रभावक्षेत्र प्रखर बना रहेगा। लेकिन 5 सितम्बर को शनि कर्कराशि में आकर एवं 27 अगस्त को गुरु कन्याराशि में आकर विरोधी पक्ष को प्रबल बनाता है। 8 अक्तुबर के बाद 29 जनवरी, 2005 ई. तक एवं 8 फरवरी, 2005 ई. से लेकर संवत् के अन्त तक शनि प्लूटो एवं राहु की ग्रहस्थिति विशेष कष्टप्रद मालूम देती है। इस समय शारीरिक एवं राजनैतिक दृष्टि से परेशानियां सामने अनिवार्यतः आएंगी ही। यह समय सावधानी का है। यहां का कुशल नेतृत्व आर्थिक एवं राजनैतिक अवरोधों के बावजूद लघु एवं अन्य बड़े औद्योगिक क्षेत्रों के विकास हेतु योजनाएं कार्यान्वित होंगी। कृषि–शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्रों में विकास हेतु नए आयाम स्थापित होंगे। विद्युत, पेयजल आपूर्ति, बेराजगारी आदि समस्याओं से विरोधी पार्टियां लाभ लेने की ताक में रहेंगी।

हिमाचल प्रदेश– प्रभावराशि मीन है। गोचर में गुरु ग्रह सिंहस्थ होने से शासनकार्य सुव्यवस्थित चलता रहेगा। 27 अप्रैल से 13 जून तक का समय सम्मान्य प्रधान नेता श्री वीरभद्र जी के लिए कुछ उलझनपूर्ण एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से कष्टप्रद मालूम देता है। 27 अगस्त (2004 ई.) को गुरु कन्या राशि में आकर हि.प्र. की प्रभावराशि मीन को पूर्ण दृष्टि से देखने लगेगा। इस समय प्रधान नेता का मनोबल, यश एवं कार्यप्रणाली विशेषरूप से सराहनीय हो जाएगी। विरोधी ग्रुप हतप्रभ हो जाएंगे।

5 सितम्बर को शनि कर्कराशि में आकर हि.प्र. के धनस्थान को नीच दृष्टि से देखेगा। आर्थिक संकट से परेशानी किंवा भूस्खलन, यानंदुर्घटना एवं अन्य प्रकार की परेशानियां सामने आएंगी। कृषि, बागवानी, पर्यटन, पंचायती राज, ग्रामीण विकास आदि में प्रगति हेतु विशेष व्यय होगा। संवत् के अन्तिम मास 13 जनवरी, 2005 ई. से मार्च अन्त तक वक्री शनि के फिर से मिथुन में आने पर एवं 24 मार्च को राहु के मीन में आने पर, यहां की जनता एवं शासकों के लिए कुछ कष्टप्रद मालूम देता है।

जम्मू-काश्मीर :– प्रभावराशि तुला है। शनि–मंगल के एकत्र होने पर (27 अप्रैल से 13 जून तक) एवं शनि के कर्क में आने पर 5 सितम्बर के लगभग एवं मंगल–राहु के षडष्टकयोग में (16 सितम्बर से 31 अक्तूबर तक) एवं 8 नवम्बर से संवत् के अन्त तक यहां भारी जनधनहानि के योग हैं। नवम्बर से संवत् के अन्त तक शनि, मंगल, प्लूटो की पोजीशन सीमा–पार से आतंकवाद समाप्ति हेतु बहुत कठोर पग उठाने पड़ेंगे। सैन्यसंघर्ष सीमाप्रान्तों पर अवश्यंभावी मालूम देता है। सीमापार के उग्रवाद से इस वर्ष भारी जनधनहानि होने से केन्द्रीय नेतृत्व को अमरजैंसी या सैन्यसंघर्ष जैसे कठोर पग उठाने के लिए विवश होना पड़ेगा।

पाठको ! आतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि, ज्योतिष विज्ञानदृष्ट्या एवं श्रीप्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय, जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्पविषया मति में प्रस्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी हैं। आगे 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम्' समर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्यलेखन में प्रवृत्ति बाल–चापल ही तो है:–

"तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

(लेख पूर्ण होने की तिथि–
19 सितम्बर, सन् 2003 ई.)
ऋषिपंचमी

शुभचिन्तक–
इन्दुशेखर शर्मा,
श्री मार्त्तण्ड भवन,
मु.पो. कुराली, रोपड़,(पंजाब)।
Phone- 0160- 2641277

व्यापार-विमर्श

(संवत् २०६१ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेजी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :- इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं, ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तु में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटा–बढ़ी होती है, जिसे हम ' तेजी–मंदी ' कहते हैं। व्यापारी 'तेजी–मन्दी' इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है, तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है– " चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः "। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें, विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं।

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह निःसन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं " *यदस्मदीयं नहि तत्परेशाम्* " अर्थात् जो मेरा है, वह मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता । अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से संबंधित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे।

हाजर एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक–जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार–विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी–मन्दी का मशवरा देते हैं, व्यापारियो ! निराश न हों । हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2061 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल व्यापार जगत् में विशेष लम्बे तेजी एवं मन्दे के रिऐक्शन आएंगे । इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवं रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा। कहने का तात्पर्य है कि, इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर, टेलीफोन के जरिये समय–समय पर, ताजा परामर्श प्राप्त करके, उतम लाभ प्राप्त करें। व्यापार–विमर्श लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहे । 'व्यापार–विमर्श ' लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाजारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं ।

सं. 2046 वि. में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं । सरसों, तेल, तिलहन में तेजी से सं. 2048 वि. में तो, जो व्यापारी हमारे संपर्क में रहे, लाखों का लाभ उठा गए। हमने तेल, सरसों, बिनौला, अलसी, सूरजमुखी, मूंगफली एवं रुई में अपने व्यापारियों को भयंकर तेजी बताई थी, उस साल व्यापारियों को हमारे परामर्श से छः गुणित लाभ प्राप्त हुआ। सं. 2049 वि. में तेल, घी, एवं शेयरों के बाजार में जो उथल–पुथल हुई,– उसका खुलासा हम निजी व्यापारियों को देते रहे हैं । सं. 2052–53 वि. में रुई एवं दालवाना के व्यापारी हमारे साथ मशवरा करके लाखों रुपये का लाभ प्राप्त कर चुके हैं ।

सं. 2054 वि. में सरसों के व्यापारी हमारे ताजा मशवरे से भारी हानि से बचे एवं गुड़ के व्यापारी लाखों कमा गए। सं. 2055 वि. में तेल के व्यापारी 24 अगस्त तक 5450/– तेल के भाव में सौदा सैटल करके पूरा लाभ ले गए।

सं. 2056–57 वि. में तेल, गुड़, सरसों, सोना–चांदी एवं अनाजों के व्यापारी हमारे मशवरे से विशेष लाभ प्राप्त कर चुके हैं । संवत् 2060 में वायदा

व्यापारी एवं हाजर का काम करने वाले व्यापारी दालवाना, सरसों एवं ग्वार में पहले—भयंकर तेजी से और बाद में आश्चर्यजनक लगातार मन्दे से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। आगे भी व्यापारियों से अनुरोध है कि व्यक्तिगतरूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे। दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या एक मास की फीस एक जिन्स के लिए 500 रु. भेजकर टेलीफोन से ही तेजी–मन्दी जान सकेंगे।

इस वर्ष हम अपने व्यापारियों (जिन्होंने 500रु. प्रति मास प्रति जिन्स के हिसाब से फीस जमा करवाई है) को टेलीफोन पर सं. 2061 वि. में ग्रहों के वक्रमार्ग, युति, गति के अनुसार तेजी–मन्दी की विशेष लाइनों का संकेत देंगे, साथ ही सामयिक तेजी–मंदी का विवेचन भी करेंगे ।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखकर, अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

नोटः– वायदा व्यापार या हाजर सौदे के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर नुकसान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताजा मशवरा हासिल करें। फिर भी किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते । अर्थात्– **व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।**

वायदा व्यापारियों के लिए हिदायतें

(1) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने का सामर्थ्य हो। (2) सदैव याद रखो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांधकर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुक्सान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (3) व्यापार करते समय ध्यान रहे– कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ–साथ ग्रह–गति के आधार पर निर्णय कर लें कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांधकर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (4) यदि योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दे के मोटे कारण भी दिखाई देने लगें एवम् व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो, तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बढ़ाव करते रहिए, थोड़ा सौदा काटकर नफा से सुलटते रहिए। (5) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की, यह जानने के लिए खास वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु में हर तीसरे–चौथे–आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए–नए भाव आते चले जाएं, जैसे–तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लें, कि उस वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उछाल में बेच दें। (6) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए–नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (7) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मान लो, आपनें तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही मन्दे की लहर चल रही है, तो किसी भी समय तेजी का उछाल आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुक्सान से बच जाओगे।

हमेशा ग्रहयोग को आधार मानकर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

इस वर्ष की मासिक तेजी–मन्दी का विचार करने से पूर्व सं. 2061 वि. के ''हेमलम्बी'' नामक संवत् के शुभाशुभफल विचार के साथ वर्षेश–वर्षमन्त्री, धान्येश–सस्येश एवं रसेश का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा; यह संक्षिप्तरूप से जान लेना आवश्यक है। संवत् का नाम ''हेमलम्बी'' है। इसका फल इस प्रकार होगाः–

''हेमलम्बे त्वीति भीतिर्मध्य सस्यार्घ वृष्टयः।
भाति भूर्भूपति क्षोभः खड्ग विद्युल्लतादिभिः।।''

अर्थात् – 2061 वि. में कहीं टिड्डीदल, कहीं अवर्षण– अतिवर्षणादि प्राकृतिक प्रकोप से कृषक वर्ग को परेशानी का सामना करना होगा। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, परिणाम स्वरूप मंहगाई बढ़ेगी। राजनैतिक अस्थिरता के वातावरण से व्यापार जगत् प्रभावित होगा। आकाशी बिजली गिरने से भी अनेकत्र हानि हो।

सं. 2061 वि. का राजा सूर्य होने से वर्षा की कमी से बहुजल–प्रधान अन्न चावलादि की फसलें प्रभावित होंगी। दूध की कमी से मिठाई आदि मंहगे होंगे। अनाज एवं फल–फूल की कमी रहे। आगज़नी से कहीं फसलों को हानि पहुंचे। इस वर्ष का **मन्त्री क्रूरग्रह** मंगल है। अराजकता जैसे वातावरण से व्यापार जगत् प्रभावित होगा। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, मंहगाई बढ़ेगी। **वर्ष का धान्येश गुरु** होने से औद्योगिक क्षेत्र लाभान्वित होंगे। देश की आर्थिक–स्थिति में

प्रगति होगी। भारतीय मुद्रा की कीमत बढ़ेगी। इस वर्ष चौमासी फसलों के स्वामी **सस्येश शुक्र** होने से गेहूं, चावल, गुड़, शक्कर, चीनी के व्यापारी लाभ लेंगे। **शीतकालीन फसलों के स्वामी** इस वर्ष बालग्रह बुध होने से वर्षा पर्याप्त होगी। **मेघेश चन्द्र होने से** चौपाए पशु–धन की वृद्धि होगी। धन–धान्य समृद्धि रहेगी। इस वर्ष गुड़–रसकस, चीनी, घी, दूध की भारी कमी से मंहगाई हो, क्योंकि इस वर्ष का **रसेश शनि है।** हल्दी एवं पीले रंग की चीजों में भी अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा, क्योंकि **नीरसेश गुरु पीली** चीजों की मांग में बढ़ोतरी लाता है। सेब, नाशपाती, पलम आदि रसदार फल सस्ते होंगे; क्योंकि इस वर्ष का **फलेश चन्द्र** है। इस वर्ष की आर्थिक स्थिति का संकेत देने वाला ग्रह गुरु है। अतः व्यापारी वर्ग नानाविध व्यापार में खूब धनोपार्जन करेगा। व्यापार में धन लगाने की क्षमता बढ़ेगी। फल–फूल के व्यापारी लाभान्वित होंगे।

सं. 2061 वि. में **शरत्सस्य जातक कुण्डली** के अनुसार मिथुन–राशिस्थ शनि–मंगल की दृष्टि चतुर्थभाव (खेती) पर है। अनाजों की फसलें अच्छी होने पर भी प्राकृतिक आपदा से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। किसानों की परेशानी पर सरकार विशेष ध्यान देगी। खाद्य पदार्थों में तेजी से जनता परेशान होगी। **'ग्रीष्म सस्य जातक'** कुण्डली के अनुसार जौ, चना, गेहूं, दालवाना एवं ग्वार आदि की फसल आशानुरूप लाभप्रद नहीं रहेगी।

सं. 2061 के नव मेघ एवं चर्तुमेघ विचार से दालवाना, जीरी एवं तिलहन की फसलों को हानि पहुंचेगी। परिणामस्वरूप तेजी का ही वातावरण रहेगा।

*ग्रहों के वक्रमार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना दालवाना, रुई, नरमा, ग्वार, मैंथा, मैंथा आयल, सोना–चान्दी एवं तेल, तिलहन में तेजी–मन्दी के भयंकर रिऐक्शन आएंगे। हमारा व्यापारियों से अनुरोध है, कि– **टेलीफोन नं. (01888) 641277** पर समय निश्चित करके प्रत्यक्ष मिलें या पांच सौ रु. (Rs-500/-) **प्रतिमास एक जिन्स** के हिसाब से फीस जमा करवाकर टेलीफोन से तेजी–मन्दी के बारे में चांस प्राप्त करें।*

सं. 2061 वि. की तेजी–मन्दी का विवरण देने से पूर्व गत संवत 2060 वि. के अन्तिम मासों (मार्च 2004 ई. के अंत तक) पर विहंगम दृष्टि डालना उचित समझते हैं।

23 दिसम्बर से 13 जनवरी 2004 ई. तक और 24 जनवरी से 2 फरवरी तक हाजर एवं वायदा बाजारों में तेजी का वातावरण बनेगा। राजनीतिक गतिविधि में जोश नजर आएगा। नए शक्तिपरीक्षण की रणनीति जोर पकड़ेगी एवं वायदा बाजार गर्म होंगे। उसके बाद संवत् के अन्त तक बाजार डावांडोल रहेंगे। चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार 22 मार्च सोमवार एवं मेष राशि के चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। सरसों, अलसी, रुई, सूत में तेजी बने। सोना–चांदी में घटाबढ़ी से मन्दा रहे। 24 मार्च को जौ, चावल, तेल, तिलहन, रुई, सूत, चांदी, सोना मन्दे रहें।

25 मार्च बुध मेष राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। सोना, चांदी, गेहूं, चना, जौ आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में जोरदार मन्दा एवं कुछ तेजी के रिऐक्शन आएंगे। सुपारी, मेथी, हींग, लौंग, इलायची में तेजी चले। रुई में मन्दे के बाद तेजी हो।

27 मार्च को शेयर तेज रहें। रुई, कपास, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च आदि में भी तेजी रहे। 28 मार्च को शुक्र वृष राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। सोना–चान्दी में घटा–बढ़ी के बाद तेजी बने। रुई कपास में अच्छा मन्दा रहे; अनाजों में भी मन्दे का रुख रहे।

30 मार्च को रेवती नक्षत्र का सूर्य अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, लाख, मोती, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल में तेजी का वातावरण बनाएगा।

अप्रैल

1 अप्रैल गुरुवार को वक्री बृहस्पति पू.फा. नक्षत्र के प्रथम चरण में आएगा। **इस समय सिंह–राशिस्थ गुरु पर मंगल एवं शनि की विशेष दृष्टि है।** गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी तथा गेहूं आदि अनाजों में मन्दे का वातावरण होने पर भी अचानक जोरदार तेजी का माहौल बनेगा। इस समय व्यापारी जोरदार मन्दा या तेजी का ख्याल रखकर ही काम करें, लाभ ले सकेंगे। [**यद्यपि पू.फा. नक्षत्र का गुरु मन्दा करता है, फिर भी वक्री होने के कारण एवं शनि–मंगल की दृष्टि यहां तेजी का ही संकेत देती है।**] यह तेजी–मन्दी 5 अप्रैल तक प्रभावी रहेगी।

6 अप्रैल को मेष राशि का बुध वक्री हो जाता है और स्वभावतः वक्री राहु के साथ मेल कर रहा है। इस समय 15/20 रुपये की तेजी आकर बाद में अच्छा मन्दा जल्दी ही आता है। [**नोट– इस समय रुई एवं शेयर के व्यापारी मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचें। यदि बाजार पहले तेज हों तो बाद में जल्दी ही मन्दे से लाभ लें, यदि पहले मन्दा हो तो जल्दी ही तेजी से लाभ लें।**]

7 अप्रैल को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आएगा। मंगल के साथ वृष राशि का शुक्र प्रबल है। मंगल के साथ शुक्र रुई, चांदी एवं सोने के व्यापार में विशेष जोश लाता है। व्यापारियों की खरीदने की प्रवृत्ति बलवान् हो जाती है। कपड़ा–सूत के व्यापार में विशेष उठाव आएगा। फोरेन एक्सपोर्ट में विशेष कोटे का ऐलान भी संभव है। रुई पर अच्छी तेजी का प्रभाव नजर आएगा। हमारे विचार से घी, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास,पाट, वारदाना, तिलहन एवं चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी या जोरदार तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा रहे। **अच्छे लाभ का चांस है– ताजा मशवरा हासिल करें।**

8 अप्रैल को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। 12 अप्रैल तक बुध मेष राशि में राहु के साथ एवं 13 अप्रैल को बुध–राहु– सूर्य ये तीनों ग्रह एक साथ चलने लगेंगे। रुई में (15–20 टका की) जोरदार मन्दी आकर, बाद में तेजी रहे। चान्दी में झटके की तेजी से लाभ मिलेगा। पाट–हैसियन एवं शेयर बाजार मन्दे रहें।

9 अप्रैल को शनि आर्द्रा नक्षत्र में आकर व्यापारियों को स्टॉक करने का मौका देगा। क्योंकि आर्द्रा नक्षत्र के शनि में मोटे अनाजों, दालवाना, अलसी, सरसों, तिल, तेल व रुई में अच्छा मन्दा आता है। इस समय स्टॉक करने से दूसरे या तीसरे मास में अच्छा लाभ ले सकेंगे। **(मन्दे का यह दौर 12 अप्रैल तक उत्तम–मध्यम रूप से चलेगा।)**

13 अप्रैल को मंगलवारी मेष संक्रान्ति बाजारों में तेजी का संकेत देती है। **मेषस्थ सूर्य का वक्री–बुध एवं राहु के साथ मेल होगा, लेकिन इन पर गुरु की विशेष दृष्टि होने से बड़ी लम्बी तेजी की लाईन नहीं बनेगी।** फिर भी कपास, सूत, घी, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं चान्दी–सोना में तेजी बनेगी। अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, लालचन्दन, हींग, सूत, कपड़ा, मेथी, लौंग, इलायची और अनाज भी तेज रहेंगे। रुई में पहले मन्दी होकर तेजी हो।

17 अप्रैल को मृगशिर नक्षत्र में मंगल दाखिल होगा। साथ ही वक्री बुध अश्विनी नक्षत्र में आएगा। तिल और चान्दी में तेजी रहे। रुई में पहले मन्दी होकर फिर तेजी बनेगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं का रुख प्राय मन्दे की ओर रहे। 17 अप्रैल को ही वक्री बुध अश्विनी में आकर गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी में तेजी एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल में मन्दा करे।इस समय चान्दी में झटके के साथ मन्दा बनने का योग है। **(वायदा व्यापारी नोट करें कि– 17 तारीख वाली ग्रहस्थिति में वक्री बुध (अश्विनी) की Position का फल विशेष है, सावधानी से काम करें।)**

19 अप्रैल को सोमवती अमावस एवं सायन (वृष) संक्रान्ति एक-तरफा लाईन का संकेत देते हैं। प्रायः बाजार का रुख मन्दे की तरफ ही रहे। 21 अप्रैल बुधवार को चन्द्रदर्शन होगा। चावल, गेहूं, जौ, चना, मूंग, उड़द, मोठ आदि अनाज एवं तिल, सरसों, घी में तेजी बने। चांदी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, सण, वारदाना, जूट, गुड़, शक्कर एवं खाण्ड में कुछ मन्दे का रुख रहे।

22 अप्रैल को बुध वक्री पोजीशन में रेवती नक्षत्र एवं मीन राशि में प्रवेश करेगा। **मीनस्थ बुध पर शनि की विशेष दृष्टि है, लेकिन वायदा बाजार में विशेष घटाबढ़ी करने की ताकत बुध में अवश्य है।** जब यह क्रूरग्रह के साथ मेल करता है तो इसका क्रूर युति फल तेजीकारक हो जाता है; जब यह शुभग्रह के साथ मेल करता है तो यह मन्दी कारक हो जाता है। मीनराशि का बुध नीच माना गया है। इस समय बुध वक्री एवं शनिदृष्ट भी है। मीन राशि में बुध बाजारों को तेज करता है। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, सरसों में साधारण मन्दा एवं केसर, मजीठ, कुसुम्भ, गेरु, लालचन्दन, लालमिर्च एवं अन्य लालरंग की चीजों में तेजी रहेगी।सोना–चान्दी में घटा–बढ़ी के बाद पहले तेजी, बाद में उतना ही मन्दा आए। **(नोट–यद्यपि मीनराशि में बुध मन्दी–प्रधान है, लेकिन शनि की नजर होने से हमारा विचार विशेष तेजी का ही है,– व्यापारी बाजार के रुख को देख कर काम करें।)**

24 अप्रैल को मृगशिरा नक्षत्र में शुक्र दाखिल होगा। शुक्र वृष राशि में ही है। 12 दिन में गेहूं, चना एवं ज्वार में मन्दा बने एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी।

25 अप्रैल को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा, बुध नीचराशिस्थ है। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में 25 दिन के अन्दर झटके के साथ तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना में भी 40 दिन में तेजी बने। तिल, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च में तेजी ही रहे। **नोट– वैशाख में बुध का उदय अनावृष्टि एवं कहीं फसल की तबाही, दुर्भिक्ष आदि अफवाहों से बाजारों में जोरदार टैम्परेरी (आरज़ी) तेजी करता है, वायदा व्यापारी जल्दी ही लाभ लें, लम्बी लाईन की धारणा न बना लें।**

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र में दाखिल होगा एवं इसी दिन मंगल मिथुन राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। सूर्य राहु के साथ मेष राशि में है एवं शनि अपने शत्रुग्रह मंगल के साथ है। मंगलग्रह जलवायु को प्रभावित करता है। बरसात की मामूली खींच से बाजारों में तूफानी तेजी का संकेत मिलता है। **ध्यान दें;** – शनि–मंगल के योग से बहुत जोरदार घटाबढ़ी बाजारों में आ सकती है। तेलवाना, रुई, कपास, जूट, सोना–चान्दी एवं शेयर बाजारों के बाजार विशेष रूप से प्रभावित होंगें। यह लाईन लम्बी चल सकती है– **ताजा मशवरा हासिल करें।** मिथुन राशि तिलहन, रुई, कपास की लग्नकुण्डली की प्रथम राशि है। बाजारों में इस समय हमें भयंकर तेजी मालूम देती है। तेल, तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड, अलसी, कुसुम्भ, मजीठ, सोना, चान्दी, तांबा, मूंगा, पीतल, बर्तन, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, घी में तेजी का ही बोलबाला रहेगा। लाल चीजों में विशेष तेजी रहेगी।

30 अप्रैल को बुध मार्गी हो रहा है। बुध शनि की नजर में है। बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है;– वायदा व्यापारी सावधान रहें। सामान्यतया मार्गीबुध रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी करे। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों, रेशम, तेल, अलसी, अरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दा बने। रस–कस मन्दे हों, सोने में तेजी का वातावरण रहे।

मई

मई के प्रारम्भ में प्रत्येक वायदा–बाजार में तेजी एवं मन्दे की प्रतिक्रियाएं आती रहेंगी। 4 मई को कुम्भ महापर्व (उज्जैन) एवं 4 मई को खग्रास चन्द्रग्रहण का

प्रभाव मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश एवं उत्तरी भारत में भी तेल, तिलहन एवं अनाजों में तेजी का ही दिखाई देता है। **ध्यान दें;–** 3 जन., 2004 ई. को गुरु वक्री हुआ था और 4 मई तक यह सिंह राशि में वक्री ही चलता आया है। अब 5 मई को गुरु सिंह राशि में ही मार्गी हो रहा है; शनि की सिंह राशि पर विशेष दृष्टि महत्वपूर्ण है। रुई में पहले मन्दी और बाद में तेजी, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूं, जौ, चना, चावल, अनाज तेज हों। गुड़, तम्बाकू में भी तेजी आए। **नोट**–यद्यपि गुरु मन्दा प्रधान ग्रह है, पुनरपि जब यह पू.फा. नक्षत्र में संचार करता है, तो यह तेजीकारक ही समझना चाहिए, बृहस्पति 27 सितम्बर तक पू.फा. नक्षत्र में ही चलता रहेगा। लेकिन बड़ी तेजी या लम्बी तेजी की लाईन वाली धारणा आपको धोखा दे सकती है। तेजी आने पर लाभ लेते रहें। पुनरपि, हमारा विचार सिंहराशि के गुरु में उत्तम–मध्यमरूप से कुछ तेजी का ही है। **पाठक ध्यान दें, कि–गुरु के मार्गी होने पर एक अच्छी झटके की मन्दी आ सकती है। – वायदा व्यापारी लाभ उठावें।**

6 मई को शुक्र मिथुन राशि में दाखिल होकर शनि–मंगल के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। जब शुक्र शनि–मंगल के साथ मेल करता है तो रुई, चान्दी एवं सोने के बाजारों में तेजी का तूफान आ जाता है। गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन में भी इस समय जोरदार तेजी की उम्मीद रखें। **नोट करें;– यद्यपि मिथुन का शुक्र रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दे की सूचना देता है; लेकिन शनि–मंगल की सन्निधि होने से यहां मन्दे की जगह तेजी ही मालूम देती है; फिर भी बाजार का रुख देख कर काम करें।**

8 मई को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में आकर रुई, सूत, कपास, अलसी, अरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेजी बनेगी। चान्दी में मन्दा रहे। **9 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर राहु के साथ मेल करेगा।** यह योग मन्दीकारक मालूम देता है। बुध–राहु पर गुरु की विशेष दृष्टि है।गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ में कुछ तेजी के बाद मन्दा हो। रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में मन्दा आए है। चान्दी में विशेष मन्दे से व्यापारी लाभ उठावें।

10 मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य घी, रुई, सोना, चान्दी, अलसी,एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी का वातावरण बनाए। मेषस्थ सूर्य पर गुरु की दृष्टि होने से बाजारों में तेजी टैम्परेरी रहेगी।

(8 से 13 मई तक बाजारों में मन्दी–तेज़ी की उठापटक रहेगी; तेजी में बेचें, मन्दे में खरीदें,– लाभ होगा।)

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बृहस्पति की दृष्टि से ओझल हो जाता है। सूर्य का प्रभाव प्रत्येक वायदा एवं हाजर व्यापार पर पड़ता है। इसका असर रुई, एरण्ड, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजारों पर भी पड़ता है। चान्दी, सोना, गुड़, एरण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी एवं मटर, अरहर, मूंग, चावल, जौ, चना में कुछ मन्दा आकर तेजी बने। 14 मई को ही राहु भरणी 1 में, केतु स्वाती 3 में प्रवेश करेगा। यह भी अनाजों में मन्दे का ही संकेत देता है। रुई, कपास, तिलहन में जोरदार तेजी एवं गुड़, खाण्ड, घी में सामान्यतः तेजी रहे।

17 मई को शुक्र वक्री होगा। इसी दिन नेप्च्यून भी वक्री हो रहा है। शुक्र, शनि एवं मंगल के साथ मिथुन राशि में है। बाजारों में अच्छी घटाबढ़ी का योग है। इस समय हमारा विचार तेजी का ही है। तिलहन, घी, तेल, गुड., खाण्ड, शक्कर, कपास, बारदाना, गेहूं, जौ, चना एवं चान्दी में तेजी बनेगी; रुई में पहले तेजी होकर बाद में मन्दी आती है।

18 मई को शनि आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। तिलहन, गुड, धान्यादि तेज रहेंगे। अनाजों में यदि मन्दा हो, तो स्टॉक करें, दो मास में ही अच्छा लाभ मिलेगा। यदि बाजार तेज हों तो आगे मन्दे का वायदा करने से लाभ मिलेगा। लेकिन हमारा विचार इस समय हर--एक बाजार में तेजी का ही है।

20 मई को गुरुवार रोहिणी नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, ऊनी व रेशमी वस्त्र, सरसों, घी, तेल, मूंग, उड़द, मोठ, तिल में तेजी बनेगी। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड मन्दे होंगे। नशीले द्रव्य अफीम आदि में कुछ तेजी चले। **22 मई को भरणी नक्षत्र का बुध** चावल, गेहूं आदि अनाजों में 8 दिन में तेजी करता है। **24 मई को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य** तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी, मिर्च एवं राई में तेजी बनाए। चान्दी में मन्दा बने।

28 मई को शुक्र वक्री पोजीशन में मृगशिरा के दूसरे चरण और फिर से वृष राशि में दाखिल होगा। सूर्य पहले ही वृषराशि में है। इस समय सोना–चान्दी में विशेष घटाबढ़ी होगी। सूर्य के साथ शुक्र होने से मन्दे का रुख होने पर भी तेजी का भान हो रहा है। क्योंकि शुक्र जब सूर्य के साथ मेल करता है तो यह तेजी कारक हो जाता है। रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, इतर, सिल्क, मैंथा तेल– इन सब में अच्छी घटाबढ़ी होकर तेजी रहेगी। मोटे अनाजों में कुछ मन्दा एवं दालवाना में तेजी रहे।

29 मई को मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में आकर 17 दिन में रुई, चान्दी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल एवं सरसों में तेजी बनाए। 31 मई को कृत्तिका नक्षत्र का बुध 8 दिन में चान्दी तथा अफीम आदि मादक पदार्थों में खास घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनाए। रुई तेज रहे; अनाजों में पहले तेजी तथा बाद में मन्दा बने।

9 जून को वक्री शुक्र रोहिणी 4 में दाखिल होगा एवं 10 जुन को यूरेनस

जून

2 जून को बुध वृष राशि में आकर वक्री–शुक्र एवं सूर्य के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। यद्यपि शुक्र की राशि में बुध मन्दीकारक माना गया है, मन्दी के झटके मन्दे की अफवाहें फैलाकर वृषराशिस्थ अकेला बुध बाजारों में मन्दे का धमाका करता है। परन्तु 2 जून को बुध सूर्य एवं वक्री शुक्र के साथ होने से तेजी की तरफ बाजारों को धकेलता है। **व्यापारी नोट करें–** बुध अतिचार की तरफ बढ़ रहा है। लगभग 4 जून से लगभग 2 जुलाई तक बुध अतिचारी ही रहेगा। बुध इस समय विशेष बलवान् हो जाता है। तिलहन बाजारों पर अतिचारी बुध का जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। तेल, तिलहन में जोरदार तेजी का ख्याल रखकर व्यापार बढावें। रुई, कपास में कुछ मन्दे के बाद तेजी बने। गेहूं, जौ, चना चावल, उड़द, मटर, कपास, सूत, अफीम में तेजी से लाभ मिले। 3 जून को वक्री शुक्र मृगशिर में आकर 12 दिन में गेहूं, जौ, चना, ज्वार में मन्दा बनाए तथा यहां गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी आए।

4 जून को वृषराशिस्थ शुक्र अस्त हो जाता है। **शुक्र के साथ सूर्य का योग तेजी कारक ही रहता है।** व्यापारियों की क्रयशक्ति बढ़ेगी; सोना–चान्दी के बाजारों में विशेष तेजी–मन्दी बनेगी। **इस समय व्यापारियों को बाजार के रुख को देख कर काम करना चाहिए। शुक्रास्त होने पर आम तौर पर बाजारों का रुख बदल सकता है।** सोना, चान्दी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली में जोरदार मन्दी आकर अच्छी तेजी बनेगी। लेकिन यहां बुध एवं सूर्य के साथ शुक्र होने से सोना–चान्दी में विशेष तेजी या विशेष मन्दा संभव है। **व्यापारी पहले अच्छे मन्दे की उम्मीद रखें। यदि मन्दा हो तो स्टॉक करें, 13 जून के बाद बड़ी तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।** रुई के बाजार तेज ही रहेंगे।

7 जून को सूर्य मृगशिर में एवं बुध रोहिणी में आकर रुई, सूत, कपास, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, सरसों, तिल, तेल, चावल,गुड़, खाण्ड, घी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी में तेजी बनाए। राई, तूअर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दा बने। रुई में पहले तेजी होकर बाद में मन्दा हो।

7 जून को बुध भी पूर्व में अस्त हो जाता है। साथ ही गुरु पू.फा. 2 में आ जाता है। स्पष्ट है, कि शुक्र–बुध इस समय दोनों अस्त हैं। रुई में इस समय जोरदार मन्दा आकर 25 दिन में झटके के साथ तूफानी तेजी बनेगी। अनाज, घी आदि मन्दे; राई में घटाबढ़ी चले; पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज हो। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। गुड़, खाण्ड, शक्कर ऊपर–नीचे चलें।

8 जून को शुक्र का सूर्यातिक्रमण होगा। अर्थात् शुक्र सूर्य के ऊपर से गुजरता मालूम देगा। खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। जिस से बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

9 जून को वक्री शुक्र रोहिणी 4 में दाखिल होगा एवं 10 जुन को यूरेनस वक्री होगा। चान्दी, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दी एवं अफीम तेज रहे।

13 जून को शुक्र पूर्व में उदित होगा। शुक्र का उदय एवम् अस्त एक ही (आषाढ़ कृष्ण) पक्ष में घटित हुए हैं। अतः सूत, घी, चान्दी, चावल एवं सोना विशेष रूप से तेज हों। 14 जून को मृगशिर नक्षत्र का बुध रुई में तेजी करे। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनाए। **14 जून को सूर्य मिथुन में आकर शनि से मेल करेगा एवम् मंगल कर्क में आकर बाजारों में तूफानी तेजी का संचार करेगा। नोट करें – 14 जून को यदि वायदा व्यापारी तेजी का काम करें तो उत्तम लाभ मिलेगा।** पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज तेज रहेंगे। सोना –चान्दी में भी तेजी का रुख रहेगा। रुई में जोरदार मन्दा आने का योग है; तेल, तिलहन में भी मन्दा आएगा। चान्दी में घटाबढ़ी चले। नीच मंगल सभी अनाजों एवं गुड़, शक्कर में तेजी करेगा।

15 जून को पुनर्वसु नक्षत्र में शनि प्रवेश करेगा। रुई एवं अनाजों में तेजी; सरसों, अलसी, तिल, तेल में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी रहेगी, क्योंकि शनि–सूर्य एक साथ मिथुनराशि में हैं।

17 जून को बुध भी मिथुनराशि में आकर शनि–सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। इस समय बुध अतिचारी है। तिलहन बाजारों में घटाबढ़ी के साथ जोरदार तेजी आएगी। क्योंकि तिलहन बाजारों का जन्मलग्न मिथुन है और मिथुन राशि में ही बुध का अतिचार घटित हो रहा है। सोना, चान्दी, सरसों एवं तारामीरा में घटाबढ़ी के साथ अच्छी मन्दी या अच्छी तेजी बनेगी, समझ से काम करें।

19 जून शनिवार को चन्द्रदर्शन होगा एवं इसी दिन मंगल पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। पुष्य नक्षत्र का मंगल मन्दे का संकेत देता है, एवं शनिवारी चन्द्रदर्शन तेजी का इशारा करता है। चान्दी व रुई में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। सोने में झटके के साथ बड़ी तेजी बनेगी। सूत, वस्त्र, सरसों, तेल एवम् मूंग आदि अनाजों में अच्छी तेजी बनेगी।

20 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आएगा एवं शनि इसी दिन सायं में पर अस्त हो रहा है। बाजारों का रुख बदल सकता है, ध्यान से काम करें। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग एवं मोठ में पहले मन्दा एवं दूसरे दिन तेजी बने। वस्त्र, रुई, शेयर एवं सोने में एकदम मन्दा बनने के योग हैं। **लेकिन ज़ब मन्दा आए तो सौदा पकड़ें, दूसरे दिन तुरन्त तेजी खाकर लाभ लें। क्योंकि 21 जून को आर्द्रा नक्षत्र का सूर्य रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना एवं चान्दी में तेजी करेगा।** सोने में घटाबढ़ी चले।

26 जून को बुध पुनर्वसु में आकर 8 दिन में चान्दी, रुई, कपास, सूत, **सण में खास मन्दे का योग बनाता है।** 17 मई से वक्री चल रहा शुक्र 29 जून को मार्गी हो रहा है। 18 जून से शुक्र अकेला ही वृष राशि में है। अकेला शुक्र कभी–कभी जोरदार मन्दी बनाता है। शुक्र की यह विशेषता है, कि शुक्र मन्दी में जोरदार मन्दे का धमाका कर देता है और तेजी का ट्रेण्ड चल रहा हो तो असाधारण रूप से तेजं, को सपोर्ट देता है। शुक्र विशेष रूप से गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना,तिलहन, चान्दी आदि में अच्छी घटाबढ़ी लाता है। शुक्र मार्गी हो रहा है। चार दिन बाद रुई मन्दी; चान्दी, मोती, सोना तेज हो। इस समय धान, गुड़, एवं घी के स्टॉक से अच्छा लाभ मिलेगा।

30 जून को बुध पश्चिम में उदय होगा। बाजारों का रुख मन्दे की तरफ रहे। रुई, शेयर मन्दे। बुध का मिथुन राशि में शनि एवं सूर्य के साथ मेल होने से बाजार कदाचित् तेज भी रह सकते है, समझ से काम करें।

जुलाई

1 जुलाई को बुध कर्क राशि में दाखिल होगा। कर्क (नीच) राशि में मंगल पहले ही स्थित है। मंगल अस्त भी है। रुई में झटके की मन्दी आएगी। चान्दी में घटाबढ़ी से अचानक तेजी का रिऐक्शन आए। गुड़, मूंगफली, सरसों, तेल एवं सोना में पहले कुछ तेजी आकर बाद में मन्दी बने। बुध ग्रह कभी–कभी झूठी–सच्ची अफवाहें फैलाकर जोरदार तेजी–मन्दी बनाता है। सट्टे के व्यापारी ध्यान से काम करें। क्योंकि कर्क राशि में बुध तेजी कारक माना गया है, अतः बाजारों में इस समय जोरदार तेजी भी आ सकती है। ध्यान से व्यापार करें।

3 जुलाई को बुध पुष्य नक्षत्र में आएगा। मंगल भी पुष्य नक्षत्र में ही चल रहा है। 10 दिन में सोना चान्दी मन्दे हों। रुई में घटाबढ़ी से झटके की मन्दी आए। मणि, मोती आदि जवाहरात और ऊनी कपड़े का भाव तेज रहे।

4 जुलाई गुरु पू.फा. नक्षत्र के तृतीय चरण में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अनाजों में मन्दा आए। रुई में घटाबढ़ी से मन्दे का रुख रहे। **5 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु के तीसरे चरण में दाखिल होगा।** रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर, मजीठ, नील, सौंठ, गुग्गुल एवं करयाणा में तेजी बनेगी।

(मासारम्भ से 4जुलाई तक वायदा व्यापारी मन्दे से लाभ ले सकेंगे। 1 जुलाई को कदाचित् तेजी हो तो जोरदार तेजी से लाभ लें।)

10 जुलाई को बुध एवम् मंगल आश्लेषा नक्षत्र में एक ही दिन आ रहे हैं। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली में अच्छी तेजी का संकेत मिलता है। अनाज तेज रहेंगे। चान्दी में मन्दे का संकेत है। 11 जुलाई को पुनर्वसु के दूसरे चरण में शनि के आने पर रुई, अनाज तेज; सरसों, अलसी, तिल, तेल आदि में मन्दा रहे।

(5 जुलाई से 15 जुलाई तक बाजार का रुख मन्दा रहे। बीच में केवल 10 जुलाई को बाजार तेज रहें।)

16 जुलाई को शुक्रवारी कर्क संक्रन्ति होगी। इसी दिन राहु अश्विनी में एवं केतु स्वाती में दाखिल होगा। इस समय कर्क राशि में मंगल एवम् बुध के साथ सूर्य का मेल होगा। 17 जुलाई को शनैश्चरी अमावस भी है। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना आदि तेज हों। गेहूं, चना, जौ, मटर, उड़द, मूंग, चावल, में मन्दा बने। लाख, कांसा में भी तेजी हो। तेल–तिलहन में भी तेजी का संचार हो।

18 जुलाई रविवार को पुष्य नक्षत्र एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। सोना–चान्दी में तेजी, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दा एवं अनाजों में भी मन्दे का रुख रहे।

19 जुलाई को पुष्य नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश होगा। 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सौंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, मोठ, उड़द, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, माजू, मजीठ, नील आदि में एवं करियाणा में भी तेजी बने।

20 जुलाई को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा। गुरु पहले ही सिंह राशि में है। यद्यपि सिंह राशि का बुध तेजी कारक होता है, परन्तु यहां बृहस्पति के साथ बुध का मेल होने से यह क्रूर या पूर्णरूप से तेजीकारक नहीं रहता। गुरु–बुध का एक राशि में होना तेजी पर कुछ लगाम लगाता है। गेहूं, चना, जौ, रुई, सूत, वस्त्र एवं देवदारु में तेजी का वातावरण रहे। सोना–चान्दी में भी साधरण तेजी बने। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं रस पदार्थ मन्दे हों।

21 जुलाई को मृगशिरा नक्षत्र का शुक्र 12 दिन में गेहूं, चना, ज्वार में मन्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनाए।

24 जुलाई को गुरु पू.फा. 4 में प्रवेश करेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाजों में मन्दा; चान्दी एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद बाजार मन्दे की तरफ चलें।

25 जुलाई को मंगल अस्त हो रहा है। रुई, चान्दी में मन्दा हो। जौ, चना, गुड़, खाण्ड, में तेजी; गेहूं, अलसी में जोरदार तेजी संभव है। मंगल का सम्बन्ध सूर्य के साथ होने से अनाज, दालवाना एवं गुड़ आदि में तेजी से ही लाभ मिलेगा।

26 जुलाई से मंगल आश्लेषा के चतुर्थ चरण में आएगा। इस समय चान्दी में धमाके की मन्दी का इशारा है;यह मन्दा जुलाई के अन्त तक चल

सकेगा। वायदा व्यापारी सोच–समझ कर काम करें। 26 जुलाई को शनि उदित होगा। 8 दिन में रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली में मन्दा आए। लोहा, जस्ता, सीसा, रंग आदि काले पदार्थ एवं लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में भी तेजी का वातावरण रहे।

31 जुलाई को मिथुन राशि में शुक्र दाखिल होकर शनि के साथ मेल करेगा। ठीक, 31 जुलाई को ही मंगल अस्तस्थिति में मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होकर बुध एवं गुरु के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। यह जोरदार घटाबढ़ी का समय है, सावधानी से काम करें।–रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में झटके की मन्दी या तेजी के रिऐक्शन आएंगे। अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी चले। चान्दी, सोना, तांबा, लोहा आदि धातु, चीनी, लालमिर्च, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई व गेहूं, चना आदि अनाजों में कुछ तेजी बने। मासान्त में कालसर्पयोग होने से सरकारी पोलिसी एवं ऐलान जोरदार मन्दा या तेजी करे– सावधान रहें। नोट – गुरु के साथ बुध–मंगल का मेल बाजारों में जोरदार मन्दे या तेजी का इशारा करता है। इसलिए मासान्त में जिन चीजों में तेजी लिखी है, वहां जोरदार तेजी न आकर साधारण तेजी रहे– ऐसा हमारा विचार है। जिसमें मन्दा लिखा है, वहां जोरदार मन्दा आ सकता है।

अगस्त

2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आकर सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च एवं मजीठ में तेजी करेगा। 4 अगस्त को पू.फा. नक्षत्र का बुध गुड़, खाण्ड एवं गेहूं आदि अनाजों में मन्दा करेगा। 7 अगस्त को शनि पुनर्वसु के तीसरे चरण में आकर रुई एवं अनाजों में तेजी करे एवं सरसों, अलसी, तिल, तेल में मन्दे का ही रुख बनाएगा। 8 अगस्त को आर्द्रा नक्षत्र का शुक्र गेहूं, चना, दालवाना आदि अनाजों में मन्दा करेगा।

10 अगस्त को बुध के वक्री होने पर बाजारों में झटके के साथ तेजी बनेगी। हमारा अनुभव है, कि–जब सिंह राशि में बुध वक्री होता है, तो अचानक तेजी लाता है। इस समय बुध सिंह राशि में बृहस्पति एवं अस्त मंगल के साथ है, बृहस्पति तेजी को रोकता है, अतः तेजी टैम्परेरी ही आएगी, जल्दी सौदा सैटल करके लाभ ले लें। रुई में धमाके की तेजी के बाद तुरन्त मन्दा बनेगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बने। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा बने। 11 अगस्त को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गुरु का प्रवेश होगा। रुई में पहले तेजी और बाद में मन्दा आएगा। यदि पहले मन्दा बने तो बाद में तेजी बनेगी– वायदा व्यापारी नोट करें। 11 से 26 अगस्त तक चान्दी में विशेष मन्दा आने का योग है। गुड, खाण्ड, सोना आदि धातु व अनाजों में भी मन्दे का ही संकेत मिलता है।

16 अगस्त का दिन नोट कर लें– इस दिन सूर्य सिंह राशि में दाखिल होकर वक्री बुध एवं मंगल, गुरु के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन वक्री बुध मघा के चतुर्थ चरण में आता है एवं बुध पश्चिम में अस्त भी हो जाता है– यह सारी ग्रहस्थिति व्यापार में काफी उथल–पुथल वाली है। शेयर बाजारों में इस समय काफी मन्दा आएगा– सावधानी से काम करें। चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, दाख एवं मिर्च आदि लालरंग की चीजों में तेजी बनेगी। गेहूं, चना, जौ, सूत में भी तेजी रहे। रुई में झटके से मन्दा आकर तेजी बने। चान्दी में तेजी तथा पाट एवं हैसियन मन्दे रहें।

17 अगस्त मंगलवार को पू.फा. नक्षत्र एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। अनाज एवं वायदा बाजार तेज होंगे। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी; सोना–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। सरसों एवं गेहूं आदि अनाज भी तेज रहेंगे।

21 अगस्त को पू.फा. का मंगल तिल, तेल, सरसों मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड एवं नमक में तेजी करेगा। 22 अगस्त को पुनर्वसु नक्षत्र में शुक्र का प्रवेश धान–बिनौला में तेजी; सोना, चान्दी, रुई, कपास एवं सूत में मन्दा बनाएगा।

27 अगस्त को उ. फा. के दूसरे चरण एवं कन्या राशि में गुरु के दाखिल होने पर बाजारों में मन्दे की लाईन बन सकती है।

जब बृहस्पति कन्या राशि में आता है, तब वह सुभिक्ष, मन्दीकारक एवं शुभफल का सूचक होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तीनों चरण,हस्त एवं चित्रा के दो–दो चरण शुभ–सुभिक्ष एवम् मन्दे का संकेत करते हैं। नोट करें – जब कन्या का गुरु अस्त हो तो तेजीकारक होता है, जब कन्या का गुरु वक्री हो तो बाजारों में मन्दा करता है, इसी तरह जब कन्या का गुरु मार्गी हो तो तेजी कारक होता है,– यह समझ लेना चाहिए।

कन्या के गुरु में कार्तिक से वैशाख तक यदि दालवाना एवं मोटे अनाजों में मन्दा रहे तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा।

अपने राशि भोग में (अर्थात् गुरु के कन्या राशि में रहने पर) रुई में जोरदार घातक मन्दा आता है, लगभग आधे भाव बन सकते है। चान्दी में भी जोरदार मन्दा बनेगा। ज्वार, चावल, गेहूं, उड़द, मूंग, चना, तिल, तेल, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड एवम् चीनी, शक्कर में जोरदार तेजी या मन्दे का संचार हो;– बाजार

के रुख को देखकर काम करें। वैशाख में यदि ठीक समझें तो अन्न का स्टॉक करें, भाद्रपद में स्टॉक निकाल दें, अच्छा लाभ मिलेगा। उ.फा. के प्रथम चरण में गुरु (11 अग. से 26 अगस्त तक) चान्दी में विशेष मन्दा करता है, नोट कर लें।

30 अगस्त को **प्लूटो मार्गी** होगा, इसी दिन सूर्य पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़े एवं रुई, सूत में तेजी बनेगी। चान्दी में घटाबड़ी चले।

31 अगस्त को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। बुध–मंगल एवं सूर्य सिंहस्थ हैं। रुई में पहले मन्दा बने, बाद में 25 दिन में झटके की तेजी बनेगी। गेहूं एवं चना आदि में भी तेजी बने। तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च के बाजार भी तेज रहेंगे।

सितम्बर

1 सितम्बर को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करेगा। **अकेला शुक्र बाजारों में कई बार जोरदार मन्दा बना देता है। शुक्र ख़ास तौर पर चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, इतर, आभूषण, रुई एवं तिलहन के बाजारों को प्रभावित करता है।**

रुई में पहले अच्छी मन्दी एवं बाद में तेजी बनेगी। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बने। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में मन्दा बने। सोना–चान्दी में तेजी के रिऐक्शन आएंगे।

2 सितम्बर को बुध मार्गी होगा। बुध–मंगल–सूर्य एकत्र हैं। बाजारों का रुख बदल सकता है– सावधानी से काम करें। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी; चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना एवं अनाज तेज होंगे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दा हो।

4 सितम्बर को शुक्र पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन व अनाजों में तेजी बनेगी। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड एवम् शक्कर में मन्दा बनेगा।

5 सितम्बर का दिन व्यापारी नोट करें। इस दिन शनि पुनर्वसु के चतुर्थ चरण में आकर कर्क राशि में रविवार को दाखिल होगा। इस समय रोहिणी नक्षत्र, हर्षण योग एवं चन्द्र वृष राशि में है। **5 सितम्बर को कर्क राशि में शुक्र के साथ शनि का मेल महत्वपूर्ण है।** शनि के अधिकार क्षेत्र में खास तौर पर मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास, रुई, सरसों तथा खाने वाले तेल एवं शेयर बाजार आते हैं। शेयर बाजार में भी विशेषतः लोहे के शेयर विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। आशा से कम पैदावार होने से या खड़ी फसलों को हानि पहुंचने से बाजार तेज होने का योग है। रुई, कपास एवम् अनाजों में तेजी रहे। तिलहन के व्यापारी बाजार का रुख देखकर काम करें।

6 सितम्बर को बृहस्पति कन्या राशि में अस्त होगा। इस समय कर्कस्थ शनि की गुरु पर विशेष नजर भी है। गुरु के अस्त होने पर तेजी का माहौल बने। रुई एवम् शेयरों में मन्दा आए। यह मन्दी–तेजी 10 सितम्बर तक स्पष्ट रहेगी।

11 सितम्बर को उ.फा. नक्षत्र का मंगल गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं चौपाए पशुओं में तेजी करे। **12 सितम्बर को उ.फा. के तीसरे चरण में गुरु का प्रवेश होगा।** गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि धातु एवम् अनाजों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी रहेगी। हां, रुई में उथल–पुथल रहे। रुई में यदि पहले तेजी हो तो बाद में मन्दी रहे। यदि पहले मन्दा हो तो बाद में तेजी से लाभ लें।

13 सितम्बर को उ.फा. नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश होगा। मंगल भी इस समय उ.फा. नक्षत्र में ही है। 14 दिन में रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज एवं नील में तेजी बनेगी। 14 सितम्बर को भौमवती अमावस भी तेजी का संकेत देती है।

15 सितम्बर को बुध पू.फा. नक्षत्र में आ रहा है। गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज मन्दे हों। 16 सितम्बर को **चन्द्रदर्शन** होने से सोना, चान्दी, रुई, सूत में तेजी बनेगी। **16 सितम्बर को सूर्य एवम् मंगल कन्या राशि में, एवं इसी दिन शुक्र आश्लेषा में प्रवेश करेगा। कन्याराशि में स्थित सूर्य मंगल पर इनके शत्रुग्रह शनि की विशेष दृष्टि है। यह योग महत्वपूर्ण है।** रुई एवं चान्दी में झटके के साथ जोरदार तेजी बनेगी। सोना, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, सूत, गुड़, खाण्ड, घी, सभी प्रकार की चीजों और अलसी, गेहूं एवं दालवाना में अच्छी तेजी की उम्मीद है। तूअर, चावल, ग्वार में भी बाजार ऊपर–नीचे रहेंगे। शेयर बाजारों में जोरदार उठापठक चलेगी।

17 सितम्बर को अश्विनी के तीसरे चरण में राहु और स्वाती के प्रथम चरण में केतु का संचार होने से कपास एवं तिलहन में तेजी, गुड़, लाख एवं कांसी में भी तेजी रहे! दालवाना में कुछ मन्दा रहे। शेयर बाजार वाले सावधानी से काम करें।

20 सितम्बर को बुध पूर्व में अस्त होगा एवं यूरेनस शतभिषा के पहले चरण में दाखिल होगा। घी, एवं गेहूं, चना आदि अनाजों में जल्दी ही मन्दा बने। रुई में घटाबढ़ी; पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में पुनः तेज हो। सोने में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। 23 सितम्बर को बुध उ.फा. में आकर 7 दिन में उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनाए; रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दा आए। चान्दी के बाजारों में भी मन्दे का रुख रहे।

25 सितम्बर को बुध कन्या राशि में आकर बृहस्पति–मंगल एवम् सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की खास नजर भी है। गुरु अस्त है। अतः यह योग तेजीकारक ही मालूम देता है। रुई एवं चान्दी में इस समय व्यापारी जोरदार तेजी से लाभ ले सकेंगे। सोना, ऊनी व सूती वस्त्र एवं लालरंग की चीजों में, अलसी, गेहूं, दालवाना एवं तिलहनों में भी तेजी का वातावरण बनेगा। गुड़, खाण्ड, घी में भी तेजी की ही उम्मीद है, फिर भी व्यापारियों से अनुरोध है, कि बाजार के रुख को देखकर ही काम करें।

26 सितम्बर को हस्त नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश 15 दिन में गेहूं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी एवं सण में तेजीकारक ही रहेगा।

27 सितम्बर को गुरु उ.फा. 4 में आकर बाजारों में तेजी करे– ऐसा अनुमान है, बाजार के रुख को ध्यान में रखें। सोना–चान्दी एवं अनाजों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी आ सकती है। रुई में मन्दे के बाद तेजी या तेजी के बाद मन्दा बने।

28 सितम्बर को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में संचार करने लगेगा। सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च, लालरंग की चीजें, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी आदि रसादि पदार्थ तेज होंगे। चान्दी एवं रुई में 3/4 दिन मन्दे के बाद तेजी बनेगी।

अक्तूबर

1 अक्तूबर को बुध हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। मंगल, बुध, गुरु, सूर्य– ये सब कन्या राशि में ही चल रहे हैं। गेहूं, चना, सोयाबीन,बाजरा आदि में मन्दे का वातावरण रहे। 2 अक्तूबर को हस्त नक्षत्र में मंगल के आने पर बुध–मंगल एकनक्षत्रगामी हो जाते हैं। 21 दिन में दालें, घी, गुड़, खाण्ड एवं नमक में तेजी बनेगी।

4 अक्तूबर को कन्या राशिस्थ गुरु उदय होगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम में तेजी; चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा बनेगा– सावधानी से काम करें।

8 अक्तूबर को बुध चित्रा में, 9 अक्तूबर को शुक्र पू.फा. में एवं 10 अक्तूबर को सूर्य भी चित्रा में प्रवेश करेगा। इन पर शनि की भी दृष्टि है। रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। सूत, सोना, चान्दी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर एवं लालमिर्च में तेजी बने। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, एवं चना में कुछ मन्दा आकर तेजी बने।

12 अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी; चीनी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में तेजी एवं मन्दे के रिऐक्शन आएं।

13 अक्तूबर को गुरु हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में आएगा। अर्थात् इस समय मंगल एवं गुरु दोनों हस्त नक्षत्र में ही हैं। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चान्दी, मोती, गेहूं, चना एवं हल्दी में मन्दा ही रहेगा। 15 अक्तूबर शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होगा। सोना, चान्दी, रुई, सूत में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना एवं ऊन में कुछ मन्दा रहे।

16 अक्तूबर को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में आता है, इसी दिन बुध स्वाती नक्षत्र में दाखिल होता है। रुई–चान्दी में झटके की मन्दी बनेगी। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा में तेजी रहे। लालचन्दन, मजीठ, श्रीफल एवं सुपारी में भी तेजी रहे।

21 अक्तूबर को उ.फा. का शुक्र गेहूं आदि अनाजों व रुई में तेजी बनाता है।सोना–चान्दी में घटाबढ़ी चले। 22 अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र में मंगल का प्रवेश 12 दिन में गेहूं, चावल, चना, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल में तेजी बनाएगा।

23 अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का सूर्य एवं कन्या राशि का शुक्र बाजारों में विशेष तेजी का योग बनाता है। रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, रुई, हींग, गुग्गुल तेज हों। क्योंकि शुक्र कन्या राशि में आकर मंगल एवं गुरु के साथ मेल करेगा। चान्दी में विशेष घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी। गेहूं, चना, उड़द, मूंग, मोठ आदि अनाजों एवम् गुड़, खाण्ड, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में भी तेजी ही रहे। इस समय चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा।

24 अक्तूबर को बुध विशाखा नक्षत्र में प्रविष्ट एवं नेप्च्यून मार्गी होगा। रुई में खासी मन्दी आएगी– स्टॉक से आगे लाभ मिलेगा। 26 अक्तूबर को बुध पश्चिम में उदित होगा। वस्त्र, रुई एवम् शेयर बाजारों में 15 दिन में मन्दा बने।

27 अक्तूबर को शनि पुष्य 1 में आएगा एवं इस दिन ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण का प्रभाव तिलहन बाजारों पर दिखाई देगा। तिलहनों में भारी तेजी बनेगी; घी, शक्कर, रुई एवं तेलों में भी अच्छी तेजी से लाभ मिले।

29 अक्तूबर को गुरु हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चान्दी, गेहूं, चना एवं हल्दी में कुछ मन्दा करे।

31 अक्तूबर को वृश्चिक राशि में बुध प्लूटो के साथ मेल करेगा। मेदिनी ग्रह प्लूटो बुध को जोरदार तेजी–मन्दी की तरफ ले जाता है। सावधानी से काम करें। क्योंकि प्लूटो वृश्चिक राशि में बलवान् माना गया है। राजनैतिक गतिविधि के

कारण व्यापार प्रभावित होगा। घी, तेल, सरसों आदि तिलहन, रुई और चान्दी में अच्छी तेजी का वातावरण बनेगा। दालवाना, गुड़, शक्कर, चीनी में भी इस समय तेजी से लाभ मिलेगा।

नवम्बर

मासारम्भ में ही शुक्र हस्त में एवं मंगल तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। **इस समय रुई, चावल, अनाज यदि मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे उत्तम लाभ मिलेगा।** लेकिन तुला राशिस्थ मंगल रुई, कपास, तेलवाना, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि सब बाजारों में एवं गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाजों में भी आगे अच्छी तेजी का इशारा करता है, क्योंकि **मंगल जब भी सूर्य के साथ मेल करता है तो हरएक बाजार में तेजी का वातावरण बनाता है।**

2 नवं. को बुध अनुराधा नक्षत्र में आकर सूत, सण, रुई और सोना–चान्दी में मन्दा करेगा।वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। 4 नवं. को मंगल के उदय होने पर पांच दिन में रुई, उड़द, तिल, तेल, अलसी में तेजी आ सकती है। 5 नवं. को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर 14 दिन में जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम में तेजी एवं अलसी और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी करे।

8 नवंबर को कर्क राशि का शनि वक्री हो रहा है। इस समय बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है–सावधानी से काम करें। सिक्का, कली, गेहूं, पीतल, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, तमाखू, सीमेण्ट में तेजी आए। तेलवाना में अच्छी तेजी के आसार बनेंगे। यह तेजी 11 नवंबर तक चल सकती हैं। 12 नवंबर को बुध ज्येष्ठा में और शुक्र चित्रा में प्रवेश करेगा। घी, गुड़, खाण्ड, चावल और सोना, चान्दी में कुछ तेजी का वातावरण रहे। 14 नवंबर इतवार को ज्येष्ठा नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होगा। गुड़, तेल, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी और अनाजों में कुछ मन्दा रहे।

15 नवंबर को सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा और बृहस्पति हस्त नक्षत्र के तीसरे चरण में दाखिल होगा। वृश्चिक राशि में प्लूटो भी चल रहा है, यह तेजीकारक योग बनाता है। सूर्य ग्रह का प्रभाव प्रत्येक वायदा बाजार और हाजर बाजारों पर पड़ता है। लेकिन विशेष रूप से सूर्य ग्रह का प्रभाव रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, चान्दी, शेयर हल्दी तथा कालीमिर्च के बाजार पर देखा गया है। यह अनुभव में आया है कि जब प्लूटो नेप्च्यून आदि मेदिनी ग्रहों के साथ सूय का मेल होता है तो बाजारों में जोरदार तेजी देखी गई है। इस समय अलसी, सरसों, रुई, तांबा, चान्दी और लालरंग की चीजों में अच्छी तेजी और मन्दे के रिऐक्शन बनेंगे।

17 नवं. को शुक्र तुला राशि में आकर मंगल और केतु के साथ मेल करेगा। रुई और चांदी में पहलेअच्छी तेजी आएगी, बाद में मन्दे का वातावरण बने। सोना, चान्दी और गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी के आसार हैं।

19 नवंबर को राहु अश्विनी के दूसरे चरण में और केतु चित्रा के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा और इसी दिन सूर्य भी अनुराधा नक्षत्र में आ रहा है। जौ, चना आदि अनाज, अलसी, मिर्च, रुई, सोना, चान्दी और शेयर बाजार में काफी तेजी–मन्दी के रिऐक्शन बनें।

20 नवंबर को वक्री शनि पुनर्वसु के चौथे चरण में प्रवेश करेगा। रुई, अनाज तेज हों, सरसों, अलसी, तिल, तेल में कुछ मन्दा आ सकता है। 22 नवंबर को स्वाती नक्षत्र का शुक्र 11 दिन में गुड़, खाण्ड में तेजी बनाए और अनाजों के भाव में मन्दे का वातावरण बनाए।

23 नवंबर को बुध मूल नक्षत्र और धनु राशि में आकर रुई, कपास, वस्त्र, सूत और चान्दी में मन्दा करे। अनाजों मे भी मन्दे का वातावरण रहे।

(23 नवं. से 29 नवं. तक बाजार ऊपर–नीचे चलते रहें।)

30 नवंबर को बुध वक्री हो रहा है। इस समय वायदा व्यापारी बहुत सावधानी से काम करें, क्योंकि बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है। इस समय तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड,सोना, चान्दी में तेजी बने। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी आगे तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे हों। रुई में अचानक झटके की तेजी आकर मन्दा बने।

दिसम्बर

1 दिसम्बर को मंगल विशाखा में, 2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में और 3 दिसं. को शुक्र विशाखा में दाखिल होगा। इन दिनों कपास, गेहूं, चना, चावल, जौं, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड और चान्दी में तेजी रहेगी। रुई में कुछ मन्दे के बाद तेजी बने।

4 दिसम्बर को बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बुध वक्री भी है। रुई में जल्दी ही झटके की तेजी और मन्दी के रिऐक्शन बनें। चान्दी तेज होगी; पाट, हैसियन और शेयरों में मन्दा बने। 5 दिसं. को हस्त के चौथे चरण में बृहस्पति आएगा। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चांदी, मोती, गेहूं, चना और हल्दी में मन्दा ही रहे।

7 दिसम्बर को वक्री बुध फिर से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। इस समय प्लूटो भी वृश्चिक राशि में ही चल रहा है। इसके साथ–साथ सूर्य भी वृश्चिक राशि में पहले ही मौजूद है। वायदा व्यापारियों के लिए यह तारीख तेजी से लाभ देने वाली है। घी, गुड़, खाण्ड, चावल, तेल, सरसों, रुई और चान्दी में

अच्छी तेजी बने। यह तेजी उत्तम–मध्यम रूप से 12 दिसं. तक चल सकती है।

11 दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर बुध, सूर्य और प्लूटो के साथ मेल करेगा। यह योग भी अच्छी तेजी का संकेत देता है। रुई, चान्दी में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी बने। गुड़ में घटाबढ़ी चले; गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाज तेज होंगे। अलसी में भी तेजी बने। क्योंकि, इस समय वृश्चिक राशि में बुध–सूर्य भी है, इसलिए तेल, तिलहन में भी तेजी का संकेत मिलता है। इस दिन शनैश्चरी अमावस भी है। इस लिए बाजार तेजी के ही मालूम देते हैं।

13 दिसम्बर सोमवार को धनुस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। रुई, सूत में तेजी; सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा; अनाज भी मन्दे रहें। 14 दिसं. को अनुराधा नक्षत्र में शुक्र प्रवेश करेगा। गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में मन्दे का संकेत है। 15 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर रुई, कपास, तिल, तेल, सोना, चान्दी आदि में तेजी करेगा। कुछ अनाज मन्दे रहें।

16 दिसम्बर को मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा; इस समय प्लूटो भी वृश्चिक राशि में ही चल रहा है। वृश्चिक राशि मंगल की अपनी राशि है। प्लूटो ग्रह में मंगल का स्वभाव और गुण पाए गए हैं; इस लिए प्लूटो को भी वृश्चिक राशि ही दी गई है । इसी दिन बुध पूर्व में उदित होता है। परिणामस्वरूप, यह योग अच्छी तेजी और मन्दी का बोलबाला बनाएगा। गुड़, रुई, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, जौ, बाजरा, तिल, घी, पाट, हैसियन, और लालमिर्च में अच्छी तेजी का योग है। इस समय वायदा व्यापारी तेजी से लाभ ले सकते हैं। हर एक बाजार में इस समय तेजी का माहौल रहेगा। यह तेजी 24 दिसं. तक चल सकती है।

20 दिसम्बर को बुध मार्गी होगा। बुध के मार्गी होने पर जो पदार्थ तेज हैं, उनमें मन्दा बनेगा और जिन चीजों में मन्दा है, उनमें तेजी बनेगी। मंगल, प्लूटो और शुक्र वृश्चिक राशि में ही चल रहे हैं। गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि अनाज, रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित चीजें थोड़ी मन्दी होकर तेज होगी; सोना तेज रहेगा। रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी आएगी।

21 दिसम्बर को मंगल अनुराधा नक्षत्र में दाखिल होगा। 24 दिन में रुई, कपास, गेहूं, लालमिर्च, लालचन्दन एवम् लालरंग की चीजों में तेजी बनेगी। 25 दिसं. को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर 18 दिन में अनाजों में तेजी और सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तिल, तेल और हींग में मन्दा बनाएगा।

28 दिसम्बर को सूर्य पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में और बृहस्पति 31 दिसं. को चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी कपड़े और सण में तेजी बनेगी। चान्दी व अनाजों के भाव मन्दे रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बने।

जनवरी (सन् 2005 ई.)

1 जनवरी को यूरेनस शतभिषा के प्रथम चरण में एवं नेप्च्यून श्रवण नक्षत्र में आएगा। श्रवण नक्षत्र किंवा मकर राशिस्थ नेप्च्यून पर कर्कस्थ शनि की पूर्ण दृष्टि है। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। पैदावार कम होने के समाचार से बाजार तेजी की तरफ बढ़ने लगेंगे। राजनैतिक अन्तर्राष्ट्रीय–सम्बन्धों से व्यापार प्रभावित होगा– समझ से काम करें।

4 जनवरी को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में पदार्पण करेगा। सूर्य पहले ही धनुराशि में चल रहा है। ध्यान दें– कि 5 जनवरी को बुध भी मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में ही आ जाएगा। इस प्रकार शुक्र, सूर्य, बुध– ये तीनों धनु राशि में एकसाथ चलेंगे। बुध–शुक्र जब एकसाथ एक राशि में आते हैं, तो तेजी या मन्दे की मौजूदा लाईन को तरक्की (ताकत) मिलती है। जब ये दोनों सूर्य के साथ होते हैं तो बाजारों में जोरदार तेजी की धारणा बन जाती है। गुड़, खाण्ड, बारदाना, तिलहन में इस समय अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चान्दी, सोना, तांबा आदि धातु, ऊनी वस्त्र एवं शेयर बाजार तेज होंगे। रुई सूत, कपास में मन्दी आते ही सौदा करें, जल्द ही तेजी बनेगी, लाभ मिलेगा।– यह तेजी आगे की ग्रहचाल के अनुसार 14 जनवरी तक चल सकती है।

9 जनवरी को ज्येष्ठा नक्षत्र का मंगल और 10 जनवरी को उ.षा. नक्षत्र का सूर्य चान्दी एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी करेगा। उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लालशक्कर, कपास, पिपलामूल, चमड़ा, सरसों, मूंज एवं बारदाना तेज हों। 10 जनवरी को सोमवती अमावस होने से कुछ बाजारों में मन्दे का माहौल बने तो ठहरेगा नहीं, तेजी की धारणा से ही लाभ मिलेगा।

12 जनवरी को कुम्भस्थ चन्द्र के समय बुधवार को चन्द्रदर्शन होगा। राजमाह, मूंग, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मसूर आदि दालवाना, मोटे अनाजों एवं घी में तेजी रहे। सोना, चान्दी, रुई, सूत, वस्त्र, सण, बारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दे का रिऐक्शन आ सकता है।

13 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर नेप्च्यून के साथ राशि सम्बन्ध बना लेगा। उस समय इन पर गुरु की दृष्टि भी होगी। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड और रुई में तेजी बनेगी। गेहूं आदि अनाज एवं बारदाना का रुख मन्दे की तरफ रहेगा। नोट– नेप्च्यून एवं बृहस्पति दोनों मीन राशि के स्वामी हैं–

ये मन्दीप्रधान ग्रह हैं, लेकिन सूर्य के साथ कुछ चीजों में तेजी एवं कुछ में मन्दी करेंगे।

14 जनवरी को वक्री शनि पुनर्वसु के तीसरे चरण में आकर दुबारा मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। शनि ग्रह, तिलहन एवं शेयर बाजार पर विशेष प्रभुत्व रखता है। अलसी, कपास, मूंगफली, एरण्ड, सरसों तथा खाने के तेलों में विशेष तेजी एवं मन्दे की प्रतिक्रिया (Reaction) से लाभ मिलेगा। बाजार के रुख को देख कर काम करें, लाभ होगा। इस समय हमारे विचार से रुई में तेजी पर लगाम पड़ जाएगी। चान्दी में विशेष मन्दा बने; सोना भी कुछ मन्दा ही रहे। घी व अनाजों के भाव में पहले तेजी, कुछ दिन बाद मन्दी बने। सण एवं सूत में तेजी रहेगी।

15 जनवरी को बुध एवं शुक्र दोनों पू.षा. नक्षत्र में आएंगे। बिनौला तेज रहे। अनाज मन्दे एवं सोना–चान्दी में अच्छी मन्दी आती है। 13 दिन में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों व नमक मन्दे हों।

20 जनवरी को अश्विनी 1 में राहु एवं चित्रा 3 में केतु आता है। गुड, लाख, कांसी, पीतल, तिल, तेल, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत व गेहूं में तेजी बने। रुई व शेयर मन्दे होंगे, गुड़, खाण्ड व अनाज तेज रहेंगे।

24 जनवरी को बुध उ.षा. में एवं 25 जनवरी को बुध पूर्व में अस्त होगा। इस समय बुध शुक्र के साथ है एवं वक्री मिथुनस्थ शनि की बुध–शुक्र पर पूरी नजर है। चना, जौ, बाजरा, ज्वार, गेहूं एवं घी में मन्दा आकर जल्दी ही तेजी बनेगी। रुई में घटाबढ़ी चले; पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में पुनः तेजी आए। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

26 जनवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य एवं नेप्च्यून के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र उ.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई, सोना, चान्दी में सहसा अस्थाई तेजी आएगी। जल्दी ही गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी एवं एरण्ड में मन्दी आएगी। अनाजों में तेजी, रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

28 जनवरी को शुक्र भी मकर राशि में आकर बुध–सूर्य एवं नेप्च्यून के साथ राशि सम्बन्ध बना लेगा। इन पर गुरु की दृष्टि मन्दीकारक रहेगी एवं मकर राशि में शुक्र–बुध–सूर्य–नेप्च्यून तेजी कारक हैं। अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सब अनाज तेज रहेंगे। इस समय शेयर बाजारों में भी तेजी बनेगी। रुई और चान्दी में पहले धटाबढ़ी होकर बाद में तेजी ही रहे। **28 जनवरी को ही मंगल धनु में आकर वक्री शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। यद्यपि धनु राशि का मंगल बाजारों में मन्दे का संकेत देता है, परन्तु क्रूर शनि की दृष्टि से यह अचानक तेजी कारक रहेगा।** रुई, कपास, जूट, सोना, चान्दी एवं शेयर बाजारों में तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, घी एवं तेल–तिलहन में भी अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। चावल, चना, जौ, मुंग में भी तेजी बने।

फरवरी

1 फरवरी को श्रवण नक्षत्र में बुध का प्रवेश गुड़, खाण्ड, अलसी, चना एवं चावल में तेजी करेगा। **2 फरवरी को गुरु वक्री होगा। गुरु वक्र होकर बाजारों में प्रायः मन्दा किया करता है। लेकिन यदि बाजार पहले ही मन्दे हों तो कई बार तेजी भी कर देता है;– बाजार के रुख को देखकर काम करें।** लेकिन हमारा विचार बाजारों में मन्दे का ही है। वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, अलसी व घी में मन्दे का काम करके लाभ लें। सोना, चान्दी आदि धातु व ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे।

5 फरवरी को सूर्य धनु राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा, इन पर शनि की पूरी नजर भी रहेगी। 5 फरवरी को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा। रुई, कपास, सूत, तिल, तेल,सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, मोठ, उड़द एवं मोटे अनाजों में भी मन्दे के बाद जोरदार तेजी बनेगी।

8 फरवरी को मूल नक्षत्र के पहले चरण एवं धनुराशि में प्लूटो प्रवेश करेगा। इस दिन भोमवती अमावस भी है। इस समय प्लूटो धनुराशि में मंगल के साथ मेल करेगा एवं शनि के साथ प्लूटो–मंगल का समसप्तक योग बन रहा है;– यह योग राष्ट्र एवं सामाजिक दृष्टि से विशेष घटनापूर्ण हो सकता है, जिससे व्यापार एवं शेयर बाजार प्रभावित होंगे। रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना, तेल, तिलहन एवं शेयर बाजारों में इस समय अच्छी तेजी से लाभ लें।

9 फरवरी को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आकर चावल, स्वांक में तेजी एवं सोना–चान्दी में मन्दा बनाए। रुई में घटाबढ़ी चले। 10 फरवरी गुरुवार को चन्द्रदर्शन होगा। दालवाना में तेजी; रुई, सूत, रेशमी वस्त्र, सरसों, तेल, घी तेज होंगे। सोना–चान्दी, गुड़, खाण्ड में मन्दे का रुख बने।

12 फरवरी को सूर्य एवं 13 फरवरी को बुध, दोनों कुम्भ राशि में दाखिल होंगे। यूरेनस कुम्भराशि में ही चल रहा है। स्पष्ट है, कि **बुध–सूर्य एवं यूरेनस का एक राशि में मेल हुआ है– यह योग जोरदार तेजी का संकेत देता है, लेकिन 12 फरवरी को शुक्र के पूर्व में अस्त होने पर मन्दे का संकेत मिलता है। गहराई से विचार करने पर शुक्र के अंश गति तेजी का संकेत देते हैं। शुक्र इस समय वर्गोत्तम हो गया है।** बुध भी वर्गोत्तम के लगभग है। स्पष्ट है; कि इस समय तारामीरा, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, सरसों, सोयाबीन, घी, तिल, खाद्य तेल, रुई एवं नमक, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी बनेगी। ध्यान रहे,–कि गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, चान्दी में इस समय कुछ मन्दा भी बन सकता है लेकिने जल्द ही बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे– अतः मन्दे में तुरन्त खरीद कर और तेजी में बेचकर तुरन्त लाभ लें।

16 फरवरी को बुध शतभिषा में, शुक्र धनिष्ठा में एवं मंगल पू.षा. में प्रवेश करेगा। इस समय बुध सूर्य के साथ कुम्भराशि में है एवं मंगल शनिदृष्ट है। चान्दी सोना में कुछ मन्दे के बाद तेजी बने। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, रुई, कपास, घी, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी बनेगी।

19 फरवरी को शतभिषा नक्षत्र का सूर्य सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सौंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ में तेजी का ही माहौल बनाएगा।

21 फरवरी को शुक्र कुम्भ में आकर सूर्य-बुध एवं यूरेनस के साथ एकराशिस्थ हो जाता है। रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, घी, चीनी आदि सफेद चीजों में मन्दा बनेगा।– **यहां मन्दी आते ही वायदा व्यापारी मन्दे से निकल जाएं, क्योंकि जल्दी ही तेजी बनेगी। नोट– यहां जिन चीजों में मन्दा लिखा है, उनमें यदि तेजी ही रहे तो फिर आगे तुरन्त मन्दा नहीं आएगा– सावधानी से काम करें।**

24 फरवरी को पू.भा. नक्षत्र का बुध सोना, चान्दी, तांबा, लोहा और अनाजों में मन्दा करे। रुई में घटाबढ़ी चले।

27 फरवरी को शुक्र शतभिषा में प्रवेश करेगा। गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चान्दी में तेजी बनेगी

मार्च

1 मार्च को बुध बृहस्पति की राशि मीन में आकर बृहस्पति की नजर में आ जाता है। इस समय बुध पर शनि एवं मंगल की भी दृष्टि है। शुभग्रह (गुरु) की दृष्टि से बुध मन्दीकारक एवं क्रूरग्रह (शनि–मंगल) की दृष्टि से तेजीकारक माना गया है। बुध का उदय भी 1 मार्च को ही हो रहा है। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं शेयर बाजार में अच्छे मन्दे या तेजी के योग है,– बाजार का रुख देख कर काम करें। सोना, चान्दी में जोरदार घटाबढ़ी के बाद पहले तेजी बाद में उतनी ही मन्दी बनेगी। बिनौला तेज रहे।

3 मार्च को उ.भा.में बुध एवं 4 मार्च को पू.भा. में सूर्य आ रहा है। चान्दी में घटाबढ़ी चले। रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, चना, उड़द, ज्वार, बाजरा, घी सरसों, तिल, तेल एवं गुग्गुल में तेजी का वातावरण रहे।

6 मार्च को यूरेनस शतभिषा में एवं गुरु हस्त के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। ध्यान दें;– यहां गुरु वक्री होकर हस्त के चतुर्थ चरण में दाखिल हो रहा है। अतः तेल एवं तिलहन में विशेष तेजी का योग है; लाभ लें। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, सोना, चान्दी में मन्दा आए तो माल पकड़ें, आगे तेजी से लाभ मिलेगा।

7 मार्च को मंगल उ.षा. में और वक्री शनि पुनर्वसु के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। रुई में विशेष तेजी का योग बनता है। धान्य, घी, सरसों, तेल एवं उड़द में भी कुछ तेजी बने। 9 मार्च को पू.भा. नक्षत्र का शुक्र भी रुई में तेजी का ही संकेत देता है। अनाजों में घटाबड़ी चले।

11 मार्च शुक्रवार को मीनस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, रुई, चान्दी, सोना में घटाबड़ी के बाद तेजी बने।

12 मार्च को मंगल मकर राशि में आकर यूरेनस के साथ मेल करेगा। एवं इन पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि भी चल रही है। 12 मार्च को ही बुध रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। रुई, सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिल, सरसों, अलसी एवं ऊन में मन्दा रहे। केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालमिर्च, लालचन्दन एवं लालवस्तुओं में तेजी बने।

(6 से 13 मार्च तक बाजारों में मन्दे–तेजी के रिऐक्शन आएंगे, मन्दे में खरीदें एवं तेजी में बेचें– इस विधि से लाभ लें।)

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर बुध के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर गुरु की पूर्ण दृष्टि एवं शनि की विशेष दृष्टि भी है। तिल, तेल, अल्सी सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई एवं सोना तेज होंगे। हर एक किस्म (हर प्रकार) के अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दा बने। चान्दी में कुछ मन्दे का रुख रहे।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में प्रवेश करेगा। 15 दिन में चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं एवं तेल तेज हों। **17 मार्च को ही शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य और बुध के साथ मेल करेगा। इन पर इस समय शनि की विशेष दृष्टि एवं गुरु की पूर्णदृष्टि है।** चान्दी, सोना, दालवाना, चना, गेहूं, सरसों, तेल, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन में अच्छी मन्दी या अच्छी तेजी आएगी– बाजार के रुख के अनुसार काम करें। क्योंकि– मीनस्थ अकेला बुध मन्दा लाता है, गुरु की दृष्टि भी मन्दीकारक ही है। लेकिन गुरु वक्री है, शनि की दृष्टि विशेष प्रभावी रहेगी। अतः हमारा विचार इस समय तेजी का ही है, फिर भी समझ से काम करें। ताजा मशवरा हासिल करें। **कदाचित् इस समय बाजार मन्दे हों तो वायदा व्यापारी जल्दी ही तेजी से लाभ ले सकेंगे।**

19 मार्च को बुध वक्री हो रहा है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे। रुई में झटके की तेजी आकर मन्दा बने। अनाजों के व्यापारी सावधानी से काम करें, अचानक बाजारों में मन्दा भी बन सकता है।

20 मार्च को शुक्र उ.भा. में प्रविष्ट एवं 21 मार्च को बुध पश्चिम में अस्त होगा। चावल, मोती, कपूर, नमक, खाण्ड, कपास में मन्दा हो। रुई में झटके के साथ जल्दी अच्छा मन्दा बनेगा, चान्दी में कुछ तेजी रहे। पाट, हैसियन एवं शेयर बाजारों

में मन्दा ही रहेगा। 22 मार्च को शनि मार्गी होगा। रुई में मन्दी होकर फिर तेजी बने।तिल, तेल, सरसों, हींग एवं मिर्च में भी तेजी के बाजार बनेंगे। 24 मार्च को **रेवती के चतुर्थ चरण एवं मीन राशि में राहु प्रवेश करेगा।** मीन राशि में सूर्य–शुक्र एवं बुध एक साथ पहले ही चल रहे हैं। इन पर शनि–गुरु की दृष्टि भी है। मीन राशि का राहु तिलहन में विशेष मन्दा करता है, नमक, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। **तेल–तिलहन के व्यापारी इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें।**

26 मार्च को मंगल श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा। 20 दिन में गेहूं में भारी तेजी; जौ, चना, तिल, अफीम, सोना, चान्दी आदि धातुओं में भी तेजी रहे। रुई में घटाबढी चले। 27 मार्च को वक्री बुध उ.भा. 4 में प्रवेश करेगा एवं इसी दिन धनुराशि में स्थित प्लूटो वक्री हो रहा है। राजनैतिक गतिविधि से शेयर बाजार प्रभावित होंगे। चान्दी में घटाबढ़ी, रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों में झुकाव सामान्यतः तेजी की तरफ रहे।

31 मार्च को सूर्य एवं शुक्र दोनों रेंवती नक्षत्र में दाखिल होंगे। 14 दिन में अलसी,सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, गेहूं, जौ एवं चने में तेजी रहे। चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में सामान्यतः मन्दे का प्रभाव रहे।

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी–मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है, तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे हमारी प्रभु से प्रार्थना है, कि आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी सन् 2004 ई. से 8 अप्रैल, सन् 2005 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगल कृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है–" *पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।*" यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2004 ई. से 8 अप्रैल, सन् 2005 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रो के निर्माण से एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व, वारुणीपर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय आदि योग कभी–कभी आते हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2004 ई.)			
20 जन.	17 12	21 जन.	5 12
19 फर.	7 20	19 फर.	19 20
20 मार्च	6 19	20 मार्च	18 19
20 अप्रै.	17 20	21 अप्रै.	5 20
20 मई	16 29	21 मई	4 29
21 जून	0 27	21 जून	12 27
22 जुला.	11 20	22 जुला.	23 20
22 अग.	18 23	23 अग.	6 23
22 सितं.	16 00	23 सितं.	4 00
23 अक्तू.	1 19	23 अक्तू.	13 19
21 नवं.	22 52	22 नवं.	10 52
21 दिसं.	12 12	22 दिसं.	0 12
सन 2005 ई.			
19 जन.	22 51	20 जन.	10 51
18 फर.	13 02	19 फर.	1 02
20 मार्च	12 03	21 मार्च	0 03

निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल, इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2004 ई.)			
4 जन	7 55	4 जन.	16 04
17 जन.	17 53	17 जन.	23 26
30 जन.	6 36	30 जन.	12 19
12 फर.	14 09	12 फर.	18 29
24 फर.	20 58	25 फर.	1 24
9 मार्च	6 29	9 मार्च	10 17
4 अप्रै.	1 48	4 अप्रै.	5 39
16 अप्रै.	3 02	16 अप्रै.	7 17
29 अप्रै.	21 48	30 अप्रै.	2 27
11 मई	20 30	12 मई	1 28
25 मई	18 27	26 मई	0 53
7 जून	1 38	7 जून	7 58
30 जून	4 00	30 जून	10 25
12 जुला.	21 07	13 जुला.	4 06
26 जुला.	15 13	26 जुला.	20 15
7 अग.	18 59	8 अग.	0 05
21 अग.	11 33	21 अग.	15 44
2 सितं.	13 12	2 सितं.	17 18
16 सितं.	4 03	16 सितं.	8 04
11 अक्तू.	22 14	12 अक्तू.	2 16
24 अक्तू.	1 47	24 अक्तू.	5 53
6 नवं.	16 13	6 नवं.	21 11

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2004 ई.)			
18 नवं.	20 48	19 नवं.	1 46
2 दिसं.	13 07	2 दिसं.	19 57
15 दिसं.	6 27	15 दिसं.	12 44
24 दिसं.	0 06	24 दिसं.	7 56
(सन् 2005 ई.)			
7 जन.	4 33	7 जन.	10 24
19 जन.	9 19	19 जन.	15 14
2 फर.	7 50	2 फर.	12 31
14 फर.	4 24	14 फर.	8 46
27 फर.	23 25	28 फर.	3 30
12 मार्च	0 38	12 मार्च	4 17
25 मार्च	14 11	25 मार्च	18 10
6 अप्रै.	21 43	7 अप्रै.	1 23

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ – समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2004 ई.)			
10 जन.	19 26	11 जन.	7 26
5 अप्रै.	8 33	5 अप्रै.	20 33
3 जुला.	12 26	4 जुला.	0 26
30 सितं.	17 44	1 अक्तू.	5 44
(सन् 2005 ई.)			
10 जन.	1 35	10 जन.	13 35
चन्द्र ग्रहण (सन् 2004 ई.)			
5 मई	0 18	5 मई	3 42
महोदय पर्व (सन् 2005 ई.)			
8 फर.	7 38	8 फर.	19 02
वारुणी पर्व (सन् 2005 ई.)			
6 अप्रै.	7 42	6 अप्रै.	13 41

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभमुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन-संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़ निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके, सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे-** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्वपूर्ण रात्रियों में किंवा उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के वल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,-**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्तशब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र में शून्य-महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होता है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रछन्नशक्ति होती है।

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिकप्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्ति-सम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव वाले हैं;- **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः-** मन्त्र का पुरश्चरण करते समय गुप्त रखें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है;- **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(१) सर्वेष्टसिद्धयर्थ नृसिंह मन्त्र

निम्नांकित श्लोकरूप मन्त्र के जाप से व्यक्ति सर्वविध कष्टों से मुक्ति पा सकता है। **'शारदातिलक'** मन्त्रशास्त्र में इस मन्त्र को मनोरथ-सिद्धयर्थ एवं महामारी से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष फलप्रद कहा है।

**मन्त्र -"ऊँ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम्।। "**

विधि- इस श्लोकात्मक मन्त्र की सूर्याभिमुख होकर प्रातः तीन माला प्रतिदिन करने से मनोवांछित फल मिलता है, घर में रोगकष्ट नहीं होता।

(२) स्वप्न में कार्यसिद्धि किंवा कार्यहानि ज्ञानार्थ मन्त्र

रात्रि में स्नान करके शुद्ध आसन पर बैठकर, कम से कम तीन माला निम्नांकित मन्त्र का जाप करके, भगवती दुर्गा का ध्यान करके शयन करें। रात्रि में स्वप्न में आपको मनोभिलषित- कार्यसिद्धि किंवा असिद्धि का ज्ञान हो जाएगा, अनुभव करें ।

**मन्त्र -" ऊँ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ह्रीं ऊँ।।"**

(३) भूत-पिशाच बाधा से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्रप्रयोग

**मन्त्र - " ऊँ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ऊँ।।**

विधि :- (क) उल्लिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में ११ हजार बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन [illegible] भी अनिवार्य है।

यदि घर में नित्यकलह, अकारण भय, बाधा बनी रहे, धनहानि हो दरिद्रता-आतंक रहे, भूत-प्रेत-पिशाच की छाया हो, किसी ने घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया हो, तो इस चामत्कारिक मन्त्र को शुभवेला में, शुद्ध कागज पर अनार की कलम से लिखकर, मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप-दीप करने के बाद दाईं भुजा में बांधने पर या लाल कपड़े में बांधकर, घर में शुद्धस्थान पर रखने से सर्वविध शान्तिलाभ होता है।

(ख) यदि सारे घर के सदस्य भूत-प्रेत बाधा से परेशान हों तो घर में ही इस मन्त्र का जाप करावें। मन्त्रजाप पूरा होने पर दशांश हवन कराएं। हवन पूर्ण होने पर खैर की लकड़ी, ८ लोहे की कीलें, ८ पीली कौड़ी, ८ हल्दी की गांठें, डोडी वाले ८ लौंग लेकर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, मन्त्रोच्चारण करते हुए आग्नेय कोण से शुरु करके आठों दिशाओं में एक-एक हाथ का गड्ढा खोदकर, इन चीजों को कौड़ी चित्त करके गाड़ें। ऐसा करने से भूत-प्रेत बाधा से घर पूर्णतया सुरक्षित रहेगा। यह प्रयोग अनेकत्र अनुभूत है। उल्लिखित मन्त्र से उपद्रवग्रस्त स्थान भी सुखद होता देखा गया है।

(४) सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए अनुभूत मन्त्र

मन्त्र- " ॐ क्लीं पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् क्लीं ॐ।।"

इस मन्त्र का जाप शुभवेला में नियमपूर्वक प्रारम्भ करें। प्रतिदिन ३ माला प्रातः, सायं या रात्रि (एक सुनिश्चित समय) में लगातार इकतालीस- इकतालीस (४१-४१) दिन के तीन अनुष्ठान करें। इकतालीस दिन का अनुष्ठान पूरा होने पर छोटे-छोटे लड़कों एवं कन्याओं को मीठा भोजन करावें। फल एवं दक्षिणा दें। इस प्रकार तीन अनुष्ठानों के अन्दर ही किंवा तीसरा अनुष्ठान पूरा होते ही पत्नी सुख प्राप्ति का योग बनेगा।

(५) अचानक आया संकट तुरन्त दूर हो

आजकल विश्व में अशान्त वातावरण से आत्मरक्षा के लिए किंवा समयानुसार सर्वविध संकटों से मुक्ति पाने के लिए आप निम्नांकित मन्त्र जाप करें-

"ॐ ह्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ह्रीं ॐ।।"

ऐसी स्थिति में, जबकि घर का कोई सदस्य भारी संकट में हो, राजभय किंवा आतंक का साया सिर पर हो तो अपने विश्वस्त विद्वान् -पण्डित से उक्त जाप कराएं अथवा स्वयं जप करें। समय कम होने की अवस्था में उल्लिखित मन्त्र का यथाशक्ति जाप करें एवं एक पान पर शाकल्य, १ कमलगट्टा, १ सुपारी, दो लौंग, एक इलायची, गुग्गुल की आहुति दें, मन्त्रजाप करते रहें, तुरन्त आपत्ति का निवारण होगा।

मनोकामना पूर्ति यंत्रः- सफेद कागज पर केशर, चन्दन, कपूर, गंगाजल व खस की रोशनाई बनाकर अनार की कलम से शुक्लपक्ष की दूज से प्रारम्भ करके प्रतिदिन २४ बार लिखकर, आटे की २४-२४ गोलियां, २४ दिन तक बनाएं । यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिखें; अन्तिम रोज ५७६ गोलियां लेकर एक-एक करके नदी में बहा देने से जिस उद्देश्य से यंत्र लिखा होगा, ईश्वर की कृपा से पूर्ण होगा । यह सब कार्यों का सिद्धिदायक यंत्र है। जैसे नौकरी मिलना, परीक्षा में सफलता; मुकद्दमे में विजय, निवारण आदि।

१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	६	१६	३
१५	४	५	१०
अपना मनोरथ लिखें			

परीक्षा में सफलता का यंत्रः- जिस विद्यार्थी को परीक्षा में सफलता प्राप्त करनी हो; वह इस यंत्र को परीक्षा के १५ दिन पूर्व केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदन १०१ यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करे। सोलहवें दिन एक यंत्र को पूजा करके तावीज में मढ़वाकर, अपनी दाहिनी भुजा या गले में धारण कर ले। इस मन्त्र प्रयोग से पढ़ाई में मन लगेगा एवं परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

२	६	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

-: श्री बगलामुखी मन्त्र विधान :-

"ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।"

इस मन्त्र का सवालाख जप करने से पुरश्चरण पूर्ण होता है। जप की समाप्ति पर दशांश हवन करना चाहिए। यहां हवन यदि **'चम्पा'** के फूलों से किया जाए तो विशेष फल की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार दशांश तर्पण, दशांश मार्जन एवं दशांश विप्रभोजन करना चाहिए।

ध्यान दें- प्राणी द्वारा किया गया जपादि, उसके शुभ कर्मों की खेती होती है और उस खेती की चारदीवारी पूजा हुआ करती है, जिसके मध्य खेती सुरक्षित रहती है। पूजा पंचोपचार, दशोपचार, द्वादशोपचार, षोडशोपचार, अष्टादशोपचार के भेद से बहुरूप है, लेकिन भावनया पूजा के किसी एक रूप को सविधान जपादि से पहले अवश्य पूर्ण करना ही चाहिए। श्री बगलामुखी के पूजन एवं जपादि में पीत वस्तुओं को विशेषतः ग्राह्य लिखा है।

प्रत्येक कार्य का शुभारम्भ प्रातःकाल व प्रातःकृत्यों के साथ हुआ करता है, क्योंकि रात्रिविश्राम के पश्चात् मन एवं मस्तिष्क हमेशा शान्त होते हैं। भगवती का स्मरण हृदयेन करने का शास्त्रनिर्देश है और हृदय सम्बन्धी समग्र कार्य शान्त चित्त किंवा मस्तिष्क से ही करने चाहिएं। अतः प्रातःकाल उठकर, शौचादि नित्यकर्म से

निवृत्त हो, जो स्वर चल रहा हो, उसी स्वर से मुखादि का मार्जन करें। तदनन्तर शान्त मनसा भगवती आद्याशक्ति श्री बगला का मन से ध्यान करें। इष्टदेव का स्मरण कर दोनों हाथों को फैलाकर **'करतल'** में समग्र तीर्थों किंवा पितृ व देवतीर्थ को नमस्कार करें। तदनन्तर भगवती का ध्यान करते हुए यथालब्ध सामग्री से अथवा प्रयत्नतः पीले रंग की विशिष्ट वस्तुओं से भगवती को नमन करते हुए पूजाक्रम को सम्पन्न करें। पूजक को पीलेवस्त्र, पीतमाला, गोमुखी आदि पीतवर्ण के ही ग्रहण करने चाहिएं। पीताम्बरा भगवती बगला का यथाशक्ति पूजन संपन्न हो जाने पर आगे दिए गए स्तोत्र का पाठ श्रद्धया करें। स्तोत्रपाठ के बाद ऊपर दिए गए मन्त्र का पाठ पूर्णतः संयमपूर्वक करने से शत्रु स्तम्भन, विघ्नादि का शमन, अभियोग विजय, राजसिक लाभ व दारिद्र्यनाश होता है।

जो केवल स्तोत्र का भी त्रिसन्ध्या में पाठ करता है, उसके विपक्षी मूक होकर, उसे देखते मात्र रह जाते हैं। पाठक के सौभाग्य का उदय होता है। क्रोधित व्यक्ति शान्त हो जाता है। गर्वी का गर्व खण्डित हो चूर-चूर हो जाता है और मां भगवती की कृपा सतत बनी रहती है। यह स्तोत्र मैनें प्राचीन दुर्लभ तन्त्र ग्रन्थ **'रुद्रयामल तन्त्र'** की टीका से उद्धृत किया है।

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

अथ विनियोग :

ॐ अस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य नारदः ऋषिः,
श्री बगलामुखी देवता मम सन्निहितानां विरोधिनां
वाङ्मुख-पद-बुद्धीनां स्तम्भनार्थे पाठे विनियोगः।

अथ षडंगन्यासाः

अथ करन्यासाः :-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम्।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अथ हृदयादिन्यासाः

ॐ ह्रां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

ॐ मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेदि-सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीतम्बराभरण-माल्य-विभूषितांगीं देवीं भजामि धृतमुद्गर-वैरिजिह्वाम्।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीम् वामेन शत्रून्परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजाम्भजामि।।

अथ स्तोत्रम्

चलत्-कनककुण्डलोल्लासित-चारु-गण्डस्थलीम्,
लसत्-कनकचम्पक-द्युतिमदिन्दु - बिम्बाननाम्।
गदा-हत-विपक्षकां कलित-लोल-जिह्वाञ्चलाम्,
स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ्-मनःस्तम्भिनीम्।।१।।

पीयूषोदधि- मध्य- चारु- विलसद्- रत्नोज्ज्वले मण्डपे,
तत् सिंहासन- मूल- पातित- रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।
स्वर्णाभ्यां कर-पीड़ितारि-रसनां भ्राम्यद् गदां बिभ्रतीम्,
यस्त्वां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः।।२।।

देवि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीत-पुष्पाञ्जलिम्,
भक्त्या वाम-करे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्।
पीठ-ध्यान-परोऽथ कुम्भक-वशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवम्,
तस्यामित्र-मुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात्।।३।।

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीर्नित्ये, बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।४।।

मन्त्रस्तावदलं विपक्ष - दलने स्तोत्रं पवित्रं च ते,
यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते।
मातः! श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे,
त्वन्नाम-स्मरणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद् वादिनाम्।।५।।

दुष्ट- स्तम्भनमुग्र-विघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणम्,
भूभृत्-संदमनं चलन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।
सौभाग्यैक-निकेतनं समदृशः कारुण्य-पूर्णेक्षणम्,
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः।।६।।

मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय,
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य-देव-धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।
शत्रूंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि पीताम्बरे,
विघ्नौघं बगले! हर प्रणमतां कारुण्य-पूर्णेक्षणे।।७।।

मातर्भैरवि! भद्रकालि-विजये! वाराहि! विश्वाश्रये,
श्रीविद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! वामे! रमे!
मातङ्गि ! त्रिपुरे! परात्पर-तरे ! स्वर्गापवर्ग-प्रदे!
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहि माम्।।८।।

त्वं विद्या परमा त्रिलोक-जननी विघ्नौघ-संच्छेदिनी,
योषाकर्षणकारिणी त्रि-जगतामानन्द-सम्वर्द्धिनी।
दुष्टोच्चाटन-कारिणी पशु-मनः-सम्मोह-सन्दायिनी,
जिह्वा-कीलन-भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्र-विद्या परा।।९।।

विद्या लक्ष्मीर्नित्य-सौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्यसिद्धिः।
मानं भोगो वश्यमारोग्य-सौख्यं, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत्-परेण।।१०।।

पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्र- कोमलाम्।
शिला-मुद्गर-हस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम्।।११।।

पीत- वस्त्र- लसितामरि-देह-प्रेत-वासन-निवेशित-देहाम्,
फुल्ल-पुष्प-रवि-लोचन-रम्यां दैत्यजाल-दहनोज्ज्वलभूषां।
पर्यङ्कोपरिलसद्द्विभुजां कम्बु-जम्बु-नद-कुण्डल-लोलाम्,
वैरि-निर्दलन-कारण-रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे।।१२।।

गेहं नाकति, गर्वितः प्रणमति, स्त्री-सङ्गमो मोक्षति,
द्वेषी मित्रति, पातकं सुकृतति, क्ष्मावल्लभो दासति।
मृत्युर्वैद्यति, दूषणं सुगणति, त्वत्-पाद-संसेवनाद्,
वन्दे त्वां भव-भीति-भञ्जनकरीं गौरीं गिरीश-प्रियाम्।।१३।।

आराध्या जगदम्ब! दिव्य- कविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि-
र्माल्यैश्चन्दन- कुंकुमैः परिमलैरभ्यर्चिता सादरात्।
सम्यङ्न्यासि- समस्त- निवहे, सौभाग्य- शोभाप्रदे!
श्रीमुग्धे बगले! प्रसीद विमले दुःखापहे पाहि माम्।।१४।।

यत्-कृतं जप - सन्नाहं गदितं परमेश्वरि !
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते।।१५।।

सिद्धिं साध्येऽवगन्तुं गुरु-वर-वचनेष्वार्ह-विश्वास-भाजाम्,
स्वान्तः पद्मासनस्थां वर-रुचि-बगलां ध्यायतां तार-तारम्।
गायत्री- पूत- वाचां हरि- हर- नमने तत्पराणां नराणाम्,
प्रातर्मध्याह्नकाले स्तव-पठनमिदं कार्य-सिद्धिप्रदं स्यात्।।१६।।

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्यसिद्धिः।
मानं भोगो वश्यमारोग्यसौख्यम् प्राप्तं सर्वं भूतले त्वत्परेण।।१७।।

यत्कृतं जप - संध्यानं, चिन्तनं परमेश्वरि !
शत्रूणां स्तम्भनार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते।।१८।।

फल-श्रवणम्

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादरात्,
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।
राजानोऽप्यरयो मदान्ध-करिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकाः,
ते वै यान्ति विमोहिताः रिपु-गणाः लक्ष्मीः स्थिरा सर्वदा।।१९।।

संरम्भे चौरसङ्घे प्रहरणसमये बन्धने व्याधिमध्ये,
विद्यावादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्यकाले निशायाम्।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु-वधसमये निर्जने वा वने वा,
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः।।२०।।

अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रिकालम्,
पठति स भुवनेऽसौ पूज्यते देववर्गैः।
सकलममल-कृत्यं तत्त्वद्रष्टा च लोके,
भवति परमसिद्धो लोकमातः परास्बे।।२१।।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।

।। सम्पूर्णमिदं स्तोत्रम् भगवत्यर्पणमस्तु ।।

अभीष्टफल प्राप्त्यर्थ अद्‌भुत मन्त्रप्रयोग

निम्नलिखित मन्त्र को नवरात्रों में जपने से अभीप्सित फल की प्राप्ति होती है। सपादलक्ष संख्या में जपकर दशमी के दिन क्षीरहवन करना चाहिए। भगवती जगदम्बा को मन्त्रपाठ करते हुए सर्वदा अपने अन्तस्तल में विराजमान रखें। आप अवश्य अपने अभीष्ट कार्य में सफलता की ओर अग्रेसर होंगे।

मन्त्रः- "ॐ नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते शंकरप्रिये ॐ।।"

पुत्र-पौत्र-आयु-आरोग्य एवं सर्वैश्वर्य प्राप्ति के लिए

मन्त्रः- "ॐ विश्वेश्वरि विश्वपूज्ये पुत्र-पौत्र-प्रदायिनि।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सुखं शान्तिं च देहि मेॐ।।"

इस मन्त्र को नियम-संयमपूर्वक नवरात्र पक्ष में जपने से लाभ होता है। प्रतिदिन कम से कम सहस्रावर्तन (१,०००) होना अवश्यक है। हर रोज जप के साथ -साथ ही जपार्पण से पूर्व किए गए जप का दशांश हवन आदि भी करें। पूर्णिमाकाल में मन्त्रजाप के समापन से चन्द्र के समान निर्मलकान्ति तुल्य फल की प्राप्ति होती है- अनुभव कीजिए।

श्री गणपत्यथर्वशीर्ष विधानम्

कलियुग में चण्डी-विनायक की उपासना शीघ्र फलदा मानी गई है- **"कलौ चण्डी-विनायकौ"**। विशेष विधि के साथ-साथ एक अन्य विशिष्ट बात यह है कि, इनकी उपासना सश्रद्ध एवं शान्त मनोमस्तिष्क से एकाग्रतापूर्वक करनी चाहिए। यहां हम लोकोपकारार्थ **'श्री गणपत्यथर्वशीर्ष'** प्रस्तुत कर रहे हैं; जिसके प्रतिदिन नियमित पाठ से जीवन में सर्व-समृद्धि एवं अभीप्सित की प्राप्ति होती है। इसके पाठ से पाठक सर्वविध पाप से निर्मुक्त हो जाता है। श्रीगणेश चतुर्थी के दिन व्रत-नियमपूर्वक जो श्री गणपति जी के अभिषेकसहित **'गणपत्यथर्वशीर्ष'** का पाठ करता है, वह विद्यावान् होकर सम्पूर्ण वाक्-कलाओं से परिपूर्ण हो जाता है। यहां तक कि उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई भी कमी नहीं होती- अनुभूत है।

दूर्वांकुरों से यजन करने वाला **'वैश्रवण'** तुल्य हो जाता है। लाजाओं (धान की खिलों) से यजन करने वाला यशोभागी होता है; उसे विलक्षण मेधाशक्ति प्राप्त होती है। पाठ के साथ जो व्यक्ति सहस्रमोदक (एक हजार लड्डुओं) से यजन करता है, वह वांछित फल को पाता है। जो साज्य-समिधाओं से हवन करता है, वह सर्वसम्पद् लाभ का पात्र है।

अष्ट ब्राह्मणों के सानिध्य से सूर्य के समान तेज वाला होता है। सूर्य-ग्रहणकाल में महानदी के अन्तराल भाग में श्रीगणेश जी की प्रतिमा के प्रत्यक्ष इसका संयमन पूर्वक जाप करने से मन्त्रसिद्धि प्राप्त होती है। इस प्रकार **'गणपत्यथर्वशीर्ष'** में दिए गए मन्त्रों से गणेश जी का स्तवन करने वाला बड़े-बड़े विघ्नों से निवृत्त हो,महादोषों (पातकों) से मुक्त हो मोक्षगति का अधिकारी हो जाता है;- क्योंकि वह सर्वविद् हो जाता है,- यह वेदवाक्य है।

-: अथ गणपत्यथर्वशीर्षम् :-

ओं नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि त्वं साक्षादात्मासि नित्यं स्वाहा।।१।।

ऋतं वच्मि सत्यं वच्मि स्वाहा।।२।।

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम् अवाऽनूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अवोत्तरात्। अव दक्षिणात्तात् अव चोर्ध्वत्तात्। सर्वतो मां पाहि, पाहि समन्तात् स्वाहा।।३।।

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयस्त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयस्त्वं सच्चिदानन्दो द्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि स्वाहा।।४।।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। सर्वं त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः त्वं चत्वारि वाक्पदानि स्वाहा।।५।।

त्वं गुणत्रयातीतः त्वमवस्थात्रयातीतः त्वं देहत्रयातीतः त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमग्निस्त्वं सूर्यस्त्वं वायुस्त्वं चन्द्रमा त्वं ब्रह्म त्वं भूर्भुवः स्वरोम् स्वाहा।।६।।

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेणरुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। मकारःपूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादःसन्धानम्। सँहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणकः ऋषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिः देवता गं गणपतये नमः स्वाहा।।७।।

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् स्वाहा।।८।।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्। रदं च वरदं हस्ते बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात् परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः स्वाहा।।९।।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय एकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः स्वाहा।।१०।।

फलश्रुतिः

सुखमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं-प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थं काममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद् दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद् यं-यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् स्वाहा।।११।।

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदाचनेति स्वाहा।।१२।।

यो दूर्वांकुरैः यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैः यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्य-समिद्भिः यजति स सर्वं लभते स्वाहा।।१३।।

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति य एवं वेद स्वाहा।।१४।।

।। श्री गणपत्यर्पणमस्तु।।

शिशुरक्षार्थ एक अद्भुत प्रयोग

खिचड़ी, जल से परिपूर्ण कलश, उसी कलश में यथाशक्ति सुवर्ण, तिल, कूट ध्वजा, सुगन्ध द्रव्य, फूल, धूप और दीप-इन सभी वस्तुओं को एक मिट्टी के सकोरे में रखकर निम्नलिखित मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करें। पात्र (सकोरे) को बच्चे के सिर से स्पर्श कर बच्चों के क्रीड़ास्थल (खेलने के स्थान) पर रख आवें।

मन्त्रः- " नीलाम्बरधरे देवि पूतने विकृतानने।
शिशोर्विकारान्मुञ्चस्व प्रगृह्णीष्व बलिं त्विमाम्।।"

यह बलिप्रयोग पूतनाग्रह से ग्रसित बच्चे की अरिष्टशान्ति के लिए है- अनुभव करें।

भूतपीड़ा से शान्ति के लिए

कई बार लोगों को भूतग्रसित होने से अपने-आप की सूझ-बूझ ही नहीं रहती। ऐसी स्थिति में कई लोग वृथालाप करते हुए उन्मत्त की भान्ति इधर-उधर भटकते देखे जाते हैं। ऐसे लोगों के व्यथा निवारणार्थ यहां एक मन्त्र प्रयोग दे रहे हैं।

मन्त्रः- " ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रः ह्रः फट् स्वाहा।"

सफेद सरसों को इस मन्त्र से सात बार पढ़कर भूतग्रसित व्यक्ति पर छींटा देने या झाड़ देने से शान्ति मिलती है- अनुभव करें।

सर्वग्रह शान्त्यर्थ एक अद्भुत मन्त्र

मन्त्रः- "ॐ मुक मुक एक एक हुष हुष जय जय आगच्छ आगच्छ ठः ठः स्वाहा।"

लौंग, लौहवान (लोवान), गुग्गुल- तीनों को इकट्ठा कूट-पीसकर मिला लें। उपरोक्त मन्त्र से पीड़ित व्यक्ति की अरिष्टशान्ति की इच्छा से अष्टोत्तर संख्या में आहुतियां डालें। ऐसा करने से ग्रहजन्य पीड़ा से शान्ति मिलती है। उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित किए हुए लौंग आदि को धूप रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

❖❖❖❖❖

ग्रहों का द्वादशभाव फल

जीर्ण-शीर्ण तीन पन्नों पर लिखा यह 'ग्रहों का द्वादशभाव फल' हमारे पुस्तकालय के पाण्डुलिपिसंग्रह में न जाने कब से अदृष्टिग्राह्य होकर पड़ा था। पीछे दीवाली पर धूप दिखाने के उद्देश्य से अलमारियों से पुस्तकें बाहिर निकालते समय यह त्रिपर्ण मेरी दृष्टि में पड़ा; जो कि मुझे रुचिकर लगा। इसे संशोधित कर 'मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग' के पाठकों के लिए हिन्दी अनुवाद सहित यहां दिया जा रहा है।

"सूर्यादि नवग्रहों का द्वादशभावों में स्थिति से उत्पन्न फल क्या होगा और वह जातक की आयु के किस वर्ष में घटित होगा"- यह सब इस अज्ञात दैवज्ञ कवि ने केवल १२ स्रग्धरा पद्यों में दक्षता से गुम्फित कर डाला है। मुझे विश्वास है - हमारे पाठकों को यह 'द्वादशी जातक' ग्रहभाव-फल के विषय में कुछ नया अवश्य देगा-

अनुवादक- संयमी शर्मा M.A. (Sanskrit),

(१) तिथ्यब्देऽर्कोऽङ्गपीड़ां जनयति भमिते रोगमिन्दुस्तनुस्थः
क्ष्माजोऽरिष्टं शराब्दे शनि-तम-शिखिजा दुःखदा बाणवर्षे।
सौम्यः कान्तिं दशाब्दे तनुगत-विबुधेज्योऽष्टमेब्दे सुबुद्धिम्
शुक्रः सप्तेन्दु-वर्षे तनुभवनगते नान्यभार्यानुगामी।।

अनुवाद- लग्नस्थ सूर्य पन्द्रहवें वर्ष में शारीरिक पीड़ाकारक एवं कष्टप्रद होता है। लग्नस्थ चन्द्र २७वें वर्ष में (मानसिक किंवा शारीरिक) रोगों को जन्म देता है। लग्नस्थ मंगल पांचवें वर्ष (बाल्यकाल) में अरिष्ट कारक है। इसी प्रकार पांचवें वर्ष में शनि-राहु-केतु भी दुःख कारक हैं। लग्नस्थ बुध (सौम्य) दसवें वर्ष में बच्चे को स्वास्थ्य प्रदान करता है। बृहस्पति यदि लग्नस्थ हो तो आठवें वर्ष में बच्चे को प्रबुद्ध बनाता है। शुक्र के लग्न में होने पर १७वें वर्ष में वह जातक को प्राज्ञ किंवा आगे परस्त्री से सम्पर्क न रखने वाला अर्थात् चरित्रवान् बनाता है।

(२) केत्वारागुर्वर्कपुत्रा नयनशशिमिते द्रव्यनाशं धनस्थाः
कुर्वन्तीनोऽर्थहानिं धनसदनगतोऽद्रीन्दुवर्षे करोति।
द्रव्याप्तिं धनस्थो नग-नयनमिते भेश्वरोऽगाक्षिवर्षे
ज्ञोऽपायं लाभमीज्यः ख-गुण-शरदि लाभं षडब्दे तु शुक्रः।।

अनुवादः- केतु-राहु-मंगल शनि यदि धनस्थान (द्वितीय) भाव में हों तो १२वें वर्ष में द्रव्यहानि करते हैं एवं सूर्य १७वें वर्ष में धनहानि करता है। धनस्थानस्थ चन्द्र २७वें वर्ष में लाभ प्राप्त कराता है। २७वें वर्ष में बुध हानिकारक है। द्वितीय भावस्थ गुरु ३०वें वर्ष में लाभ देता है और शुक्र छठे वर्ष में लाभकारक है।

(३) सूर्योऽर्थाप्तिं नखाब्देऽनुज-सदनगतः पंचमे वाग्निवर्षे
चन्द्रो लाभं करोति, क्षितिसुत-तम-केत्वर्कजास्त्रीन्दुवर्षे।
वादित्ये भ्रातृसौख्यं स्व-सुत-सुखहरो ज्ञो भवर्षे नखे वा
जीवो राज्येष्ट-सौख्यं दिशति खकुमिते तीर्थयात्रां च शुक्रः।।

अनुवादः- यदि तृतीय भाव में सूर्य हो तो बीसवें वर्ष में धनलाभ कराता है। पांचवें या तीसरे वर्ष में तृतीय भावगत चन्द्र लाभप्रद रहता है। तृतीय भावस्थ मंगल -राहु- केतु एवम् शनि तेरहवें वर्ष में लाभप्रद कहे हैं। यही ग्रह बारहवें वर्ष में जातक को भ्रातृ सुख देने वाले हैं। तृतीयस्थ बुध २७वें या २०वें वर्ष में जातक को पुत्र के सुख से वंचित कर सकता है। तृतीयभावस्थ गुरु राजकीय वैभव देने वाला है। भ्रातृभाव में स्थित शुक्र दसवें वर्ष में तीर्थ यात्रा कराता है।

(४) तुर्यस्थाः बन्धुहानिं भुजग-परिमिते केतु-भौमागु-मंदाः
द्वाविंशे ज्ञः सुताप्तिं धनलयमथवा पुत्रदोऽब्जोऽक्षि-नेत्रे।
मन्वब्देऽर्को विरोधं नयन-विधुमिते खाक्षिमाने सुखस्थौ
द्रव्यस्याप्तिं बन्धुसौख्यं जनुषि गुरु-कवी रत्नलाभं विधत्तः।।

अनुवाद- केतु-मंगल-राहु एवम् शनि यदि चतुर्थ भाव में स्थित हों तो जातक को आठवें साल में बन्धुवियोग देते हैं। यदि चतुर्थ भाव में बुध हो तो २२वें वर्ष में पुत्रप्राप्ति का योग बनाता है, अथवा इसी वर्ष में यह धनहानि भी कर सकता है। यदि चतुर्थ भाव में चन्द्र हो तो २२वें वर्ष में पुत्रप्राप्ति होती है। चतुर्थ भाव में सूर्य होने से चौदहवें वर्ष में बन्धुवर्ग के साथ अनबन व विरोध का वातावरण बने।

जन्माङ्ग के चतुर्थ भाव में गुरु-शुक्र हों, तो बारहवें अथवा २०वें वर्ष में द्रव्यलाभ, बन्धुसुख किंवा नानाविध रत्नादि का लाभ कराते हैं।

(५) नन्दे कष्टं पतंगः सुतभवनगतो तातदेहे प्रकुर्यात्
षष्ठाब्देऽब्जोऽग्निभीतिं रस-नयनमिते मातृपीडां सुते ज्ञः।
वेदे वा बाणवर्षे भृगुरतिधनदः केतु-भौमागु-सौराः
बाणाब्दे बन्धुहानिं सुतभवनगतोऽद्रौ गुरुर्मातुरार्तिम्।।

अनुवाद- यदि सूर्य पंचम भाव में हो तो नौवें वर्ष या नवम दिन में पिता के शरीर में कष्ट का कोई कारण बनाता है। चन्द्र यदि पंचमभावस्थ हो तो छटे वर्ष में आग या बिजली से कष्ट (हानि) भय का संकेत मिलता है। पंचम भाव में बुध हो तो २६वें वर्ष में माता को कष्ट हो। शुक्र यदि पंचम भावस्थ हो तो चौथे या पांचवें वर्ष में अत्यधिक धनलाभ (आकस्मिक धनलाभ) होता है। पंचम भाव में यदि केतु, मंगल, शनि एवम् राहु हों तो पांचवें वर्ष में वे बन्धु हानि करते हैं। बृहस्पति पंचमस्थ हो तो ७वें वर्ष में माता के लिए जातक कष्टप्रद होता है।

(६) रामेन्दौ वाऽग्निनेत्रे रविरथ धनदो निर्जरे वा षडब्दे
चन्द्रो मृत्युं रिपुस्थो युग-नयनमिते पुत्रलाभं ददाति।
शिख्यारगुर्वर्कपुत्राः कलह-रिपुभयं ज्ञोऽद्रिरामे कुनेत्रे
खाब्धौ जीवोऽरिभीतिं भृगुरपि भयदो भूयुगे वा कुपक्षे।।

अनुवाद- यदि छठे भाव में सूर्य हो तो १३वें या २३वें वर्ष में धनलाभ होता है। चन्द्र रिपुभावस्थ हो तो ३३वें या छठे वर्ष में मृत्युकारक कहा है। लेकिन छठे भावस्थ यही चन्द्र २४वें वर्ष में पुत्र-योग बनाता है। राहु-केतु-मंगल-शनि यदि छठे भाव में हों तो वे विवाद और शत्रुभय पैदा करते हैं। षष्ठस्थ बुध ३७वें किंवा २१वें वर्ष में कलह तथा शत्रुओं से खतरा पैदा करता है। छठे भाव में गुरु हो तो शत्रुओं से ४०वें वर्ष में भय का कारण बनता है और छठे भाव का शुक्र भी ४१वें या २१वें वर्ष में किसी प्रकार का भय उत्पन्न करता है।

(७) ज्ञः कामस्थोऽङ्गनाप्तिं कुधर-शशिमिते द्वादशे वाऽक्षिपक्षे
स्त्र्याप्तिं जीवःप्रदत्ते भृगुरपि मदगः स्त्री-सुखं वेदचन्द्रे।
तिथ्यब्देऽब्जोऽतिदुःखं युगशशिमितेऽर्कोऽब्धि-लोकेऽङ्गनाहृत्
सप्तत्र्यब्देऽङ्गनाहा रुधिर-शनि-तमाद्या जनौ द्यूनगाःस्युः।।

अनुवाद- सप्तम भावस्थ बुध १७, १२ या २२वें वर्ष में स्त्रीसुख/पतिसुख देने वाला होता है। गुरु-शुक्र सप्तमस्थ हों तो १४वें वर्ष में स्त्रीसुख/ पतिसुख देते हैं। चन्द्र सप्तमस्थ हों तो १५वें वर्ष में अतिदुःखप्रद होता है। सप्तमस्थ सूर्य १४वें वर्ष में स्त्री को कष्ट किंवा ३४ वर्ष की आयु में स्त्री की मृत्यु का संकेत देता है। मंगल-शनि-राहु-केतु यदि जन्माङ्ग में सप्तम-भावस्थ हों तो वे ३७वें वर्ष में स्त्री के लिए कष्ट किंवा मृत्युकारक कहे हैं।

(८) इन्द्रे वाब्ध्यग्निवर्षे निधन-गृहगतोऽर्कोऽगनाहृत् षडब्दे
नागे वाऽरिष्टमिन्दुःशरनयनमिते केतु-भौमागुमन्दाः।
मृत्युं कुर्वन्ति कोषं हरति मनुमिते चन्द्रजो भ्वग्निवर्षे
जीवो रोगप्रदःस्यात् ख-शशिधरमिते दुःख-सौख्यं तु शुक्रः।।

अनुवाद- मृत्युस्थान (अष्टमभाव) में यदि सूर्य हो तो विवाह से छठे, १४वें या ३४वें वर्ष में स्त्री मृत्युकारक हैं। अष्टमस्थ चन्द्र आठवें वर्ष में अरिष्टकारक है। केतु-मंगल राहु एवम् शनि अष्टमस्थ हों तो २५वें वर्ष में मृत्युकारक होते हैं। चन्द्रपुत्र बुध १४वें वर्ष में धनहानिकारक सिद्ध होता है। ३१वें वर्ष में सप्तमस्थ गुरु रोगकारक कहा है। अष्टमस्थ शुक्र दसवें वर्ष में समय-समय पर सुख एवम् दुःख दोनों प्रकार का मिश्रित फल देता है।

(९) धर्मेऽर्कस्तीर्थयात्रां नवम-दशमिते शून्यनेत्रे सुधांशुः
शक्रे तातस्य चार्तिं वितरति कुभवो, नन्दनेत्रेऽङ्कभूमौ।
वाङ्गाक्ष्यब्दे बुधो वा निधनमिषुविधौ तातनाशं सुरेज्यः
शुक्रो लाभं प्रकुर्याद्विशिख-विधुमिते भौमतुल्याश्च शेषाः।।

अनुवाद- नवमभावस्थ सूर्य नौवें-दसवें वर्ष (बचपन) में ही तीर्थयात्रा कराता है। नवमभावस्थ चन्द्र बीसवें वर्ष में तीर्थयात्रा या भाग्योदय कारक होता है। १४ वें, १९ वें या २९वें वर्ष में नवमस्थ मंगल पितृकष्ट देता है । नवमस्थ बुध २६वें वर्ष में किंवा नवमभावस्थ गुरु १५वें वर्ष में पितृहानि का संकेत देते हैं। नवमभावस्थ शुक्र आर्थिक दृष्टि से १५वें वर्ष में लाभप्रद कहा है। शेष ग्रह (राहु, केतु, शनि) नवमभावस्थ होकर मंगल जैसा फल (पितृकष्ट) देते हैं।

(१०) नन्दाब्जे कर्मगोऽर्कः वियुतिमनलवेदे सुधांशुर्भवर्षे
स्वं भौमः शस्त्रभीतिं जलधिशर-मितेऽब्दीन्दु-वर्षे च सौम्यः।
स्वाप्तिं खस्थो नृपे वा नयन-विधुमितेऽङ्काख्यके द्रव्यमीज्यः
वेदे वा बाणचन्द्रेऽर्थसुखमिह सितो भौमवर्च्चाकजाद्याः।।

अनुवाद- दशम भावस्थ सूर्य १९वें वर्ष में किसी प्रिय व्यक्ति से वियोग देता है। दशमस्थ चन्द्र ४३वें और २७वें वर्ष में धन देता है। दशमस्थ मंगल ५४वें साल में शस्त्रास्त्रों से भयप्रद है। दशमस्थ बुध १७वें वर्ष में अच्छी धनप्राप्ति कराता है। दशमस्थ गुरु १२, १६ एवम् ९वें वर्ष में धनलाभ कराता है। चौथे, पन्द्रहवें वर्ष में शुक्र धनसुखप्रद है। दशम भाव में अन्य ग्रह (राहु-केतु-शनि) मंगलवत् फलप्रद (शस्त्रास्त्रभयकारक) हैं।

(११) लाभे सूर्यो नखे वा कमलधिनयने पुत्रलाभं हिमांशुः।
भौमो ह्युद्यानसौख्यं नभनयनमिते पञ्चवेदे जिनाब्दे।।
केत्वाराग्वर्क-पुत्रा धनसुखमतुलं बाणवेदे बुधोऽर्थम्।
सूर्येऽब्दे षोडशे वा कमलनिधिमिते जीव-शुक्रौ धनाप्तिम्।।

अनुवाद- लाभस्थान में सूर्य हो तो २०वें, चन्द्र हो तो २४वें वर्ष में पुत्रलाभ देता है। लाभस्थान में मंगल हो तो बगीचा किंवा कृषिकर्म से २०वें, ४५वें या २४वें वर्ष में लाभ देता है किंवा मंगल-केतु-राहु-शनि आयस्थान में अतुल धनलाभ देते हैं। बुध लाभस्थ हो तो ४५वें वर्ष में अर्थलाभ देता है। ४थे, १२वें या १६वें साल में आयस्थ शुक्र-गुरु भी धनलाभ देते हैं।

(१२) पंचाब्दे हानिमीज्योऽर्थसुखमथ सितः पंचमेऽब्दे प्रदद्यात्
अष्टाग्न्यब्देऽर्थहानिं रविरथ कुरुते हानिपीडां त्रिवर्षे।
चन्द्रो भौमार्कजाद्या व्ययमिषु-जलधौ ज्ञोऽङ्गनार्तिं व्ययस्थः
होरादादाय शास्त्राद्रचितमिह मया ज्यौतिषं तत्त्वमेतत्।।

अनुवाद- द्वादशभाव में स्थित गुरु पांचवें वर्ष में हानिकारक है। शुक्र द्वादशस्थ हो तो पांचवें साल में सुखदायक है। व्ययस्थानस्थ सूर्य ३८वें वर्ष में व्यापार में हानि किंवा अकस्मात् वृथा व्यय कराता है। द्वादशस्थ सूर्य तीसरे वर्ष में शारीरिक पीड़ा का भी संकेत देता है। चन्द्र-मंगल-शनि-राहु-केतु द्वादशस्थ हों तो ४५वें वर्ष में वृथा-व्यय या रोगादि पर व्यय कराते हैं। बुध यदि व्ययस्थान में हो तो वह ४५वें वर्ष में स्त्री को कष्ट देता है।

बारह श्लोकों में ग्रहों का यह भावफल होराग्रन्थों के आधार पर ज्योतिष के तत्त्वरूप में मैंने (अज्ञातनामा ने) बनाया है।

*****

मुहूर्त्त निर्णय

(इस वर्ष का विशेष स्तम्भ)

मुहूर्त्तों के निर्णायक सिद्धान्तों का सरलतम शैली में आमूलचूड़ विवेचन

लेखक–प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला– 134 109

श्रीमार्त्तण्डपंचांग के इस मुहूर्त विशेषांक में मुहूर्त्तों के बारे ऐसा सरल, सुबोध विवेचन दिया जा रहा है, जिसे पढ़कर ज्योतिष का सामान्य ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति गर्भाधान आदि षोडश संस्कारों तथा अन्य सभी गृहारम्भ आदि महत्त्वपूर्ण दैनिक जीवनचर्योपयोगी मुहूर्त्तों के शुद्धकाल (लग्न आदि) का निर्णय बिना किसी कठिनाई के स्वयं कर सकता है। वाशिष्ठ आदि संहिताओं, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तसम्बन्धी प्रामाणिक ग्रन्थों तथा मार्त्तण्डवल्लभा, पीयूषधारा जैसी महत्त्वपूर्ण विवृतियों (टीकाओं) का सार लेकर यह मुहूर्त्तनिबन्ध मैने एक ऐसी नई, सुबोध व्यवस्था से लिखा है, जो पूर्ववर्त्ती मुहूर्त्तग्रन्थों की उलझी व्यवस्था से सर्वथा भिन्न है। पाठक अनुभव करेंगे– बिल्कुल नए ढंग से व्यवस्थापित यह विषय अपेक्षाकृत कहीं अधिक सुगम बन गया है, अनेक एतद्विषयक सभी जटिल सिद्धान्त, नियम करधृतामलकवत् सर्वतोभावेन सुस्पष्ट हो गए हैं।

(इस स्तम्भ से सम्बद्ध किसी भी शङ्का के समाधान के लिए मुझे उपरोक्त पते पर पत्र दीजिए–

– प्रियव्रत शर्मा)

मुहूर्त निर्णय

संक्षिप्त विषयसूची

तिथि, वार, नक्षत्रसंयोगोत्पन्न कुयोग | (iii) दंतन–कण्ठन आदि कृत्यारम्भ मुहूर्त „

अगले वर्ष (सं 2062 वि.) का

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'

" राजधानी (दिल्ली) विशेषांक"

होगा।

लगभग 40 पृष्ठ के इस विशेषांक भाग में पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली की सभी बस्तियों (Colonies) तथा दिल्लीप्रान्त के सभी उपनगरों एवं उनके अन्तर्गत सभी हॉस्पिटल्स, शैक्षणिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं, मन्दिरों के स्थलीय अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर के अलावा सूक्ष्मतम लग्नसारणियां, दैनिक सूर्योदय–सूर्यास्त–काल दिए जाएंगे; जिससे दिल्ली नगर/प्रान्त के दैवज्ञ लोग पीतमपुरा, पहाड़गंज, दरियागंज, चान्दनीचौक, वसन्तकुंज, सैनिकविहार आदि किसी भी बस्ती में उत्पन्न जातक का जन्मकालीन लग्न, सूर्योदयास्त आदि नितान्त सूक्ष्मता–पूर्वक अत्यन्त सरलता से जान सकेंगे।

सं. 2062 वि. के **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** की अपनी प्रति अपने पुस्तक विक्रेता से कहकर सुरक्षित करवा लें।

—सम्पादक,

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'

मुहूर्त्त निर्णय

इस *'महूर्त्तनिर्णय'* निबन्ध में गर्भाधान आदि षोडश संस्कार तथा अन्य यात्रा, गृहारम्भादि लगभग सभी अपेक्षित मुहूर्त्तों का हम विशद विवेचन एवं निर्णय करेंगे। सबसे पहले यहां नीचे *"सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ / दोष "* शीर्षक के अन्तर्गत उन सभी दोषों का निर्देश किया जा रहा है; जो लगभग सभी मुहूर्त्तों में त्याज्य या अशुभ माने गए हैं। जिन दोषों के शास्त्रीय परिहार उपलब्ध हैं, उनका निर्देश भी यहां साथ-साथ कर दिया गया है। इनमें से यदि कोई दोष किसी मुहूर्त्तविशेष में वर्जित नहीं है तो उसका भी यहां निर्देश किया गया है। किसी मुहूर्त्तविशेष में इनके अतिरिक्त यदि कोई और भी वर्ज्य दोष है तो उसका निर्देश भी उस मुहूर्त्तविशेष के निर्णय के प्रसंग में आगे चलकर हमने किया है। विभिन्न मुहूर्त्तों के लिए शुभ/ग्राह्य पदार्थों (मास, तिथि, वार, नक्षत्रादि) का निर्देश भी उन मुहूर्त्तों के प्रसंग में वहां किया गया है। विभिन्न मुहूर्त्तों से सम्बद्ध आवश्यक निर्देश/ज्ञातव्य पदार्थ भी उन मुहूर्त्तों के विवेचन के साथ पर्याप्त विस्तार से वहां लिखे गए हैं।

सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ / दोष

(वे सभी दोष जो लगभग सभी मुहूर्त्तों में वर्जित किए जाते हैं।)

(1) दक्षिणायन।

सूर्य का सायन मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन में स्थितिकाल दक्षिणायन और शेष सायन राशियों में स्थितिकाल उत्तरायण कहलाता है। यद्यपि लगभग सभी शुभकृत्य उत्तरायण में ही किए जाते हैं, दक्षिणायन में नहीं, फिर भी स्थानीय परम्पराओं के अनुसार पंजाबादि अनेक प्रदेशों में विवाहादि कुछेक मंगलकृत्य दक्षिणायन में भी किए जाते हैं। इस परम्परा का समर्थन शास्त्र भी करते हैं। उनके अनुसार केन्द्र-त्रिकोणगत गुरु, शुक्र या बुध अयन (दक्षिणायन) दोष को समाप्त कर देता है-

अब्दायनर्तु-तिथि-मास -भ-पक्ष-दग्ध-
तिथ्यन्धकाण-वधिरांगमुखाश्च दोषाः।
नश्यन्ति विद्गुरुसितेष्विह केन्द्रकोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्त-नवांशदोषः।। (*मुहूर्त चिन्तामणि*)

पीयूषधारा कार ने इसकी व्याख्या में लिखा है- **'अयनदोषः= दक्षिणायनादिः'**।

स्मरण रहे- भैरवादि तामस देवप्रतिष्ठा तो दक्षिणायन में भी की जाती है।

(2) अधिक मास (सूर्यसंक्रान्ति-रहित शुक्लादि चान्द्रमास)।

(3) क्षय मास। (दो सूर्यसंक्रान्तियों वाला शुक्लादि चान्द्रमास)।

(4) धनुःस्थ सूर्य।

(5) मीनस्थ सूर्य।

(6) ज्येष्ठ मास।

प्रथम गर्भ से उत्पन्न जातक का कोई भी मंगलकृत्य ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। कुछ आचार्य इस दोष को सामान्य मानते हैं।

यहां पर 'ज्येष्ठ मास' शब्द चान्द्रमास का द्योतक है।

(7) गुरु का अस्त एवम् वार्धक्य-बाल्यकाल।

यद्यपि गुरु के वार्धक्य और बाल्यकाल के बारे में अनेक मत उपलब्ध हैं; लेकिन परम्परया गुरु अस्त से तीन दिन पहले उसका वार्धक्य-

काल और उदय के तीन दिन बाद तक बाल्यकाल माना गया है; अनेक शास्त्रीय मतों से यह समर्थित भी है।

(8) शुक्र का अस्त एवम् वार्धक्य–बाल्यकाल।

यहां भी पूर्वोक्तानुसार शुक्र के वार्धक्य एवम् बाल्य के तीन–तीन दिन ही माने जाते हैं।

(9) प्रोष्ठपदी श्राद्ध पूर्णिमा।

भाद्र. पूर्णिमा प्रोष्ठपदी पूर्णिमा कहलाती है। इस तिथि में पूर्णिमा का महालय श्राद्ध होता है, अतः इस दिन मंगलकृत्य वर्जित होते हैं।

(10) श्राद्ध (आश्विन कृष्ण) पक्ष।

(11) त्रयोदशदिन पक्ष।

जिस पक्ष में दो तिथियों का क्षय हो, वह **'त्रयोदशदिन पक्ष'** कहलाता है। शास्त्रों में इसे अत्यनिष्टप्रद कहा गया है।

कुछेक आचार्य मुहूर्तलग्न के समय केन्द्र या त्रिकोण में स्थित किसी शुभग्रह (गुरु, शुक्र या बुध) के होने पर त्रयोदशदिनात्मक पक्ष का परिहार मानते हैं। इस बारे में वे **'कश्यप'** का यह वाक्य उद्धृत करते हैं–

अब्दायनर्त्तु–मासोत्त्थाः पक्ष–तिथ्यृक्ष–सम्भवाः।
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।

इस परिहार के पक्ष में **'मुहूर्त्त चिन्तामणि'** का यह श्लोक भी कई बार उद्धृत किया जाता है–

अब्दायनर्तु- तिथि - मास - भ - पक्ष -दग्ध-
तिथ्यन्ध-काण-वधिरांगमुखाश्च दोषाः।
नश्यन्ति विद्गुरुसितेष्विह केन्द्रकोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्त–नवांशदोषः।।

इस पद्य की व्याख्या में **'पीयूषधाराकार'** ने लिखा है–, "**पक्षदोषः = त्रयोदशदिनात्मकादिः**"।

इन परिहारों के होते हुए भी अनेक मुहूर्त्तशास्त्री परम्परया त्रयोदश दिनात्मक पक्ष को शुभ मानने के पक्ष में नहीं हैं, क्योंकि इस पक्ष को शास्त्रों में बहुत ही अनिष्टप्रद कहा गया है।

(12) सिंहस्थ गुरु।

सामान्यतः सिंहस्थ गुरु के पूर्णकाल को शुभकार्यों में वर्जित लिखा है। लेकिन इसके सिंहांशकस्थ (पू.फा. प्रथमचरणस्थ) काल को ही वर्जित करने के पक्ष में अनेक शास्त्रवाक्य मिलते हैं, जिनका अनुसरण सभी पंचांगकार/दैवज्ञ लोग परम्परया करते चले आ रहे हैं। अतएव दैवज्ञों में यह वचन सुप्रचलित है– **"सिंहे सिहांशको वर्ज्यः"**। सिंह–सिंहांशक में स्थित गुरु के समय यदि सूर्य मेषस्थ हो तो सिंह–सिंहांशकस्थ गुरु का भी दोष नहीं माना जाता। (सिंहस्थ गुरु के बारे में विशेष स्पष्टीकरण के लिए देखें – "श्री मार्त्तण्ड पंचांग 2060 वि." पृष्ठ 54 पर छपा मेरा लेख –" ***सिंहस्थ गुरु के काल में मंगलकृत्य***")

(13) मकरस्थ (नीचस्थ) गुरु।

सामान्यतः मकरस्थ (नीचस्थ) गुरु के पूरे काल को शुभकृत्यों के लिए वर्जित कहा गया है। लेकिन इसके (मकरस्थ गुरु के) केवल उसी काल को शास्त्रों के विशेष वाक्य अग्राह्य लिखते हैं, जहां गुरु नीचांशक (मकर–मकरांशक)में स्थित हो। एतदर्थ यह वाक्य प्रचलित है–" **नीचे नीचांशकस्त्याज्यः**"।

(14) लुप्त संवत्सर।

यद्यपि लुप्त संवत्सर को पूर्णतः मंगलकृत्य में वर्ज्य लिखा है, लेकिन सुदीर्घ दैवज्ञपरम्परा इसे स्वीकार नहीं करती। इसके अनेक परिहारों में ऊपर उद्धृत " **मुहूर्त्तचिन्तामणि** " का " **अब्दायनर्तु- तिथि -मास - भ - पक्ष -दग्ध----**" यह परिहारवाक्य बतलाता है कि, मुहूर्त्त–लग्नकालिक केन्द्र–त्रिकोणगत किसी एक भी शुभग्रह से **'लुप्त संवत्सर'** का कुप्रभाव विनष्ट हो जाता है। **' पीयूषधाराकार'**' ने भी इस पद्य की

व्याख्या में लिखा है – "अब्ददोषः =लुप्ताब्दादिः"।

किञ्च–बलवान् लग्न अथवा मात्र लग्नशुद्धि तथा गोचरबल द्वारा ही ऐस दोषों का परिहार मुहूर्त्तविदों द्वारा समर्थित है।

(15) वक्र एवम् अतिचारी गुरु।

गुरु की वक्र एवम् अतिचार स्थिति में मंगलकृत्यों को वर्जित करने का निर्देश शास्त्रों में अवश्य है, लेकिन दैवज्ञ/पंचांगकारों की परम्परा से स्पष्ट है कि वक्री/अतिचारी गुरु के काल में किसी भी प्रदेश में कभी भी मंगलकृत्य वर्जित नहीं किए जाते। चन्द्रबल, गुरुबल एवं लग्नशुद्धि न होने पर ही ऐसे दोषों का कुप्रभाव लग्न (विवाहलग्न) आदि में माना गया है, अन्यथा नहीं। **लल्ल** का यह वाक्य, जो 'पीयूषधारा' में उद्धृत है, इसी बात की पुष्टि करता है,–

प्रतिषिद्धो नोदवाहो वक्रिणि जीवे तथातिचारगे।
गोचरबलं प्रधानं लग्ने च पराशरः प्राह।।

'मुहूर्त्त चिन्तामणिकार' का भी कहना है कि, "गुरु के अस्त एवं सिंह–मकर में स्थिति के काल में जिस प्रकार शुभकृत्य वर्जित हैं, उसी प्रकार गुरु के वक्र और अतिचार में भी वे वर्जित होने चाहिएं, यह कुछ ही लोगों का मत है– **"अस्ते वर्ज्यं सिंह–नक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे।"**

(16) होलाष्टक।

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक का काल (होलाष्टक) विवाहादि मंगलकार्यों के लिए विपाशा, इरावती और शतद्रु नदियों के किनारे तथा त्रिपुष्करप्रदेश (पंजाब, हरियाणा, उ.प्र. हि.प्र. और राजस्थान आदि) में त्याज्य माना गया है। शेष प्रदेशों में यह वर्जित नहीं है।

(17) तिथि, वार एवम् नक्षत्रों की विषघटियां।

सभी शुभकृत्यों में तिथि आदि की विषघटियां कुफलप्रद मानी गई हैं। विषघटी के दोष का परिहार भी लग्नशुद्धि एवं गोचरशुद्धि से हो जाता है। ऊपर उद्धृत **"अब्दायनर्तु–तिथि–मास..."** वाक्य में तिथि और नक्षत्र वार के भी उपलक्षण हैं, अतः इस प्रमाण के अनुसार केन्द्र/त्रिकोणगत शुभग्रह द्वारा विषघटी का परिहार स्पष्ट है। **किञ्च,** –लग्नरहित केन्द्र एवं त्रिकोण अथवा शुभग्रह की राशि में स्थित चन्द्रमा एवं अपने वर्ग किंवा केन्द्र में स्थित लग्नेश **'विषघटी दोष'** को समाप्त कर देते हैं–

चन्द्रो विषघटी दोषं हन्ति केन्द्र–त्रिकोणगः।
लग्नं बिना शुभैः दृष्टः केन्द्रे वा लग्नपस्तथा।।
विषनाड्युत्थितं दोषं हन्ति सौम्यर्क्षगः शशी।
मित्रदृष्टोऽथवा स्वीयवर्गस्थो लग्नपो भवेत्।।

(विषघटी के स्पष्टीकरण के लिए देखें "तिथि-वार-नक्षत्र विषघटी कोष्ठक–पृष्ठ 107)।

(18) शून्यतिथि, नक्षत्र एवम् राशियां।

शून्यतिथि एवं शून्यराशि मध्यदेश में ही वर्जित हैं–(**तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यानि च। मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु।।**), अपिच केन्द्र, त्रिकोणगत अथवा उपचयस्थ बली शुभग्रह से शून्य तिथि और नक्षत्र का दोष सर्वत्र समाप्त माना गया है–

केन्द्रे चैव त्रिकोणे च शुभो ह्युपचयेऽपि वा।
एकोऽपि बलवांश्चापि शून्यतिथ्युडुनाशकः।।

(*जगन्मोहन*)

ऊपर उद्धृत **" अब्दायनर्तु- तिथि -मास - म - पक्ष -दग्ध ----"** वाक्य भी केन्द्र/ त्रिकोणस्थ शुभग्रह से तिथि, नक्षत्र के दोषों को सर्वत्र समाप्त कहता है। **मुहूर्त्त चिन्तामणि** का ही यह वाक्य शून्यराशि(शून्य लग्न)के दोष को गौड़ और मालवदेश में ही वर्जित बतलाता है, अन्यत्र नहीं–

पंगवन्ध–काण–लग्नानि मासशून्याश्च राशयः।
गौड़–मालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः।।

(शून्यतिथि, नक्षत्र एवं राशियों के बारे में कोष्ठक, देखें 107 पृष्ठ पर।)

(19) पक्षरन्ध्र तिथियां।

दोनों (शुक्ल एवं कृष्ण) पक्षों की 4, 6, 8, 9, 12, 14 तिथियां पक्षरन्ध्र तिथियां कहलाती हैं। इन तिथियों के प्रारम्भ की क्रमशः 8, 9, 14,

25, 10 और 5 घड़ियां शुभकार्यों में वर्जित मानी गई हैं। **कश्यप** तो इन सभी तिथियों के प्रारम्भ की 10–10 घटियां ही वर्जित बतलाता है।

परम्परया दैवज्ञ लोग पक्षरन्ध्र तिथिदोष का विचार नहीं करते। वैसे, उपरोक्त वाक्य " **अब्दायनर्तु-तिथि-मास-भ-पक्ष-दग्ध ...**" के अनुसार केन्द्र–त्रिकोणगत गुरु, शुक्र या बुध द्वारा यह तिथिदोष समाप्त हो जाता है।

(20) भद्रा (विष्टि करण)।

सभी शुभकृत्यों में भद्रा का बहुत अशुभ फल लिखा है। यद्यपि भद्रा का परिहार अनेक प्रकार से मुहूर्त्तग्रन्थों में मिलता है, लेकिन उसका प्रयोग अत्यन्त विवशता की स्थिति में ही करना चाहिए– ऐसा मुहूर्त्तशास्त्रियों का अभिमत है। (भद्रादोष के परिहार के स्पष्टीकरण हेतु संवत् 2054 वि. के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में छपा मेरा लेख ***' भद्रा दोष का परिहार '*** पढ़िए।)

(21) दग्धा तिथि।

मेषादि 12 राशियों में सूर्य की स्थिति के समय क्रमशः 6, 4, 8, 6, 10, 8, 12, 10, 2, 12, 4 और 2 तिथियां (दोनों पक्षों की तिथियां) दग्धा कहलाती हैं। इन तिथियों में मंगलकृत्य करने का निषेध है। लेकिन केन्द्र/त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध की स्थिति इस दोष को दूर कर देती है। प्रमाण वाक्य " **अब्दायनर्तु- तिथि -मास - भ - पक्ष -दग्ध...**" ऊपर उद्धृत कर चुके हैं, जिसमें गुरु, शुक्र या बुध की केन्द्र/त्रिकोण–स्थिति को सभी तिथिदोषों का परिहारक बताया गया है।

(22) रिक्तातिथि।

दोनों (शुक्ल एवं कृष्ण) पक्षों की 4, 9, 14 तिथियां रिक्ता मानी गई हैं। मंगलकृत्यों के लिए इन्हें त्याज्य कहा गया है। लेकिन विवाहादि कुछ मंगलकृत्यों में इन्हें परम्परानुसार अनेकत्र ग्राह्य माना जाता है। केन्द्र/त्रिकोणगत गुरु, शुक्र या बुध की स्थिति से यह तिथिदोष भी परिहृत हो जाता है। प्रमाण वचन "**अब्दायनर्तु- तिथि -मास - भ - पक्ष -दग्ध .....**" ऊपर उद्धृत कर चुके हैं।

(23) अमावस्या।

प्रत्येक मास की अमा को चन्द्र के अदर्शन (परम क्षीणता) के कारण सभी शुभकृत्य वर्जित होते हैं।

(वैसे तो आगे दिए जा रहे 'कृष्णानंग चतुर्दिन' दोष में अमा का भी समावेश है, फिर भी विशेष वर्ज्य होने के कारण हमने इस दोष का पृथक् निर्देश यहां किया है।)

(24) माता–पिता का श्राद्धदिन।

(25) जन्म मास, तिथि, नक्षत्र।

प्रथम गर्भ से उत्पन्न जातक से सम्बद्ध कोई भी मुहूर्त्त (मंगलकृत्य), उसके (जातक के) जन्म मास, तिथि या नक्षत्र में शुभ नहीं माना जाता।

यहां पर 'मास' शब्द से चान्द्रमास ही ग्रहण करना चाहिए।

(26) क्षीणतिथि (तिथिक्षय)।

किसी भी सूर्योदय का स्पर्श न करने वाली तिथि क्षीण कहलाती है। यह भी शुभकार्यों में निषिद्ध है। लेकिन गुरु, शुक्र या बुध की केन्द्र/त्रिकोण में स्थिति से इस दोष का परिहार माना गया है। " **अब्दायनर्तु - तिथि -मास - भ - पक्ष -दग्ध ....**" वचन यहां प्रमाण है।

(27) वृद्धतिथि (तिथिवृद्धि)।

दो सूर्योदयों का स्पर्श करने वाली तिथि वृद्धतिथि कहलाती है। मंगलकृत्यों के लिए अमान्य होने पर भी गुरु, शुक्र, बुध की केन्द्र/त्रिकोण स्थिति में, इसे ग्राह्य मान लिया गया है। यहां उपरोक्त परिहार वचन " **अब्दायनर्तु- तिथि -मास - भ - पक्ष -दग्ध.....**" प्रमाणार्थ उपलब्ध ही है।

(28) क्रूर वार।

सामान्यतः क्रूर (सू. मं. श.) वारों में शुभकृत्य न करने का धर्मशास्त्र में निर्देश है। लेकिन परम्परया विवाहादि मुहूर्त्तों में क्रूरवारों का

उन्मुक्त रूप से दैवज्ञ लोग प्रयोग करते चले आ रहे हैं। उनका मानना है कि लग्नशुद्धि होने पर इस प्रकार के दोष निष्प्रभाव हो जाते हैं, क्योंकि लग्न वार से कहीं अधिक प्रबल है। इसकी पुष्टि में ' *राजमार्त्तण्ड* ' कार का यह वाक्य पुष्ट प्रमाण है–

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता वारश्चैव चतुर्दश।
ऋक्षं षोडशमित्याहुः योगश्चापि शताधिकः।।

लग्नं कोटिगुणं विद्याद् ग्रहवीर्य–समन्वितम्।
तस्मात्सर्वेषु कार्येषु लग्नवीर्यं विलोकयेत्।।

कई मुहूर्त्तों में तो क्रूरवारों को विशेषरूप से ग्राह्य भी माना है।

(29) पंगु–अंध–काण (वधिर) लग्न।

दिन में तुला, वृश्चिक और रात्रि में धनु, मकर काण **(वधिर)** लग्न माने गए हैं। दिन में मेष, वृष, सिंह और रात्रि में मिथुन, कर्क, कन्या **अन्ध** लग्न कहलाते हैं। दिन में कुम्भ और रात्रि में मीन **पंगु** लग्न माने गए हैं। इन पंगु–अन्ध एवं वधिर लग्नों को शुभ कार्य के लिए वर्जित कहा गया है। लेकिन दैवज्ञपरम्परा ने इन्हें दोषपूर्ण नहीं माना है। इन पंगु, अन्ध एवं वधिर लग्नों में उन्मुक्त रूप से शुभकृत्य किए जाते हैं। यदि इन्हें दोषपूर्ण माना जाए तब तो विवाहादि मुहूर्त्त अत्यन्त संकुचित होकर रह जाएंगे। अतः परम्परा का अनुसरण करते हुए इस दोष की उपेक्षा ही करनी चाहिए। वैसे भी इनका विशेष दोष गौड़– मालवप्रदेश में ही माना गया है, अन्यत्र नहीं–

पंगवन्ध–काण–लग्नानि मास शून्याश्च राशयः।
गौड़–मालवयोस्त्याज्या अन्य देशे न गर्हिताः।।

(मुहूर्त्त चिन्तामणि)

लग्नशुद्धि या केन्द्रस्थ शुभ ग्रह से भी इन दोषों का परिहार हो जाता है।

(30) नक्षत्रान्त।

सभी नक्षत्रों के अन्त की तीन–तीन घड़ियां शुभकृत्यों में वर्जित मानी जाती हैं। लग्नशुद्धि से यद्यपि इस दोष का परिहार तर्कसंगत है, पुनरपि– कई दैवज्ञ इसकी उपेक्षा करते हैं।

(31) तिथ्यन्त।

सभी तिथियों के अन्त की दो–दो घड़ियां मंगलकृत्यों में शुभ नहीं मानी जातीं। लग्नशुद्धि से ही इस दोष का परिहार हो जाता है।

(32) गण्डान्त।

गण्डान्त तीन प्रकार का है– (1) तिथि गण्डान्त, (2) नक्षत्र गण्डान्त और (3) लग्न गण्डान्त।

(i) **तिथि गण्डान्त–** पूर्णा (5, 10, 15, 30) तिथियों के अन्त की और नन्दा (1, 6, 11) तिथियों के प्रारम्भ की एक–एक घटी ' तिथिगण्डान्त ' है।

(ii) **नक्षत्र गण्डान्त–** आश्ले., ज्ये., रेवती के अन्त की और मघा, मूल तथा अश्वि. के प्रारम्भ की 2–2 घड़ियां **'नक्षत्रगण्डान्त'** कहलाती हैं।

(iii) **लग्न गण्डान्त–** कर्क, वृश्चिक, मीन लग्नों के अन्त की और सिंह, धनु, मेष लग्नों के आदिभाग की आधी–आधी घड़ी **'लग्नगण्डान्त '** मानी जाती है।

ये तीनों गण्डान्त शुभकार्यों में वर्जित माने गए हैं।

चन्द्रमा के बलवान् होने पर तिथिगण्डान्त और गुरु के बलवान् होने पर लग्नगण्डान्त दोष नहीं रहता। शाकल्यसंहिता का वचन है–

तथैव तिथिगण्डान्तं नास्तीन्दौ बलशालिनि।
तथैव लग्नगण्डान्तं नास्ति जीवे बलान्विते।।

एकादश में स्थित चन्द्रमा और केन्द्रगत शुभग्रह तिथि आदि सभी गण्डान्तों को दूर कर देते हैं–

तिथ्यादीनां सन्धिदोषं तथा गण्डान्तसंज्ञितम्।
हन्ति लाभगतश्चन्द्रः केन्द्रगो वा शुभग्रहः।।

(ज्यातिर्निबन्ध)

ध्यान रहे– नक्षत्रगण्डान्त में जातक का जन्म शुभ नहीं माना जाता। नक्षत्रगण्डान्त में शिशु का जन्म होने पर तो दैवज्ञपरम्परा हर स्थिति में गण्डान्तशान्ति का ही परामर्श देती है।

(33) दग्ध लग्न।

दोनों (शुक्ल–कृष्ण) पक्षों की प्रतिपदा में तुला–मकर; तृतीया में सिंह–मकर; पंचमी में मिथुन–कन्या; सप्तमी में धनु-कर्क; नवमी में कर्क–सिंह; एकादशी में धनु–मीन और त्रयोदशी में वृष–मीन लग्न **दग्ध** कहलाते हैं। शुभकार्यों में इन्हें वर्जित लिखा है। परम्परया दैवज्ञ लोग इस दोष को कम ही मान्यता देते हैं। वैसे भी, **'कश्यप'** के अनुसार केन्द्र / त्रिकोणस्थ शुभग्रहों द्वारा इसका दोष दूर हो जाता है–

काणान्ध–वधिरोद्भूताः दग्धलग्नतिथिर्भवाः।
ते दोषाः नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।

लग्नशुद्धि से भी इस दोष का परिहार तर्कसंगत है।

(34) दिन–रात्रि सन्धि।

दिनमध्य एवं रात्रिमध्य के 10–10 पल (4–4 मिनट) अमंगलकारी माने गए हैं। बलवान् लग्न एवं केन्द्र–त्रिकोणगत शुभग्रहों से यह दोष भी शून्य हो जाता है।

(35) क्रान्तिसाम्य।

महापात गणित से प्राप्त सूर्य–चन्द्र की क्रान्तिसाम्य की अवधि को मंगलकृत्य में अत्यन्त भयावह माना गया है।

(36) क्षीण चन्द्रमा (कृष्णानंग चतुर्दिन)।

कृष्णपक्ष की किस तिथि से चन्द्रमा को क्षीण माना जाए, इस बारे में काफी मतभेद है। लेकिन अधिकतर आचार्यों का मत है कि इसे (चन्द्रमा को) कृष्ण त्रयोदशी से शुक्ल प्रतिपदान्त (चार दिन) तक के लिए क्षीण माना जाए। इसे ही **'कृष्णानंग चतुर्दिन'** भी कहा गया है। **'कृष्णानंग चतुर्दिन'** को मंगलकृत्यों के लिए शुभ नहीं माना जाता।

(37) सूर्यसंक्रान्ति।

सूर्य संक्रान्ति वाले दिन शुभकृत्य नहीं होते। कुछ आचार्यों का मत है कि संक्रान्ति से पूर्वापरवर्ती 16–16 घड़ियां ही अशुभ मानी जाएं–

त्याज्याः सूर्यस्य संक्रान्तेः पूर्वतः परतस्तथा।
विवाहादिषु कार्येषु नाड्यः षोडश षोडश।।

(नारद पुराण)

(38) मासान्त।

सूर्यसंक्रान्ति से पूर्ववर्ती दिन मासान्त कहलाता है। इसे भी शुभकार्यों में अग्राह्य माना गया है। कुछ आचार्य, जो संक्रान्ति के पूर्वापरवर्ती 16–16 घड़ियों को ही त्याज्य कहते हैं, मासान्तदिन को शुभकृत्यों वे वर्ज्य नहीं मानते।

(39) ग्रहणशूल।

जिस दिन सूर्य / चन्द्रग्रहण घटित हो, वह दिन सर्वसम्मति से शुभकार्यों में अशुभ माना जाता है। ग्रहणदिन से पूर्वापरवर्ती कितने–कितने दिन दूषित माने जाएं,– इस बारे में तो भारी मतभेद है। **'तत्त्वविवेक'** कार का यह मत है कि ग्रहण से पूर्व 1 दिन और परवर्ती 3 दिन ही दूषित माने जाएं; भले ही ग्रहण खग्रास क्यों न हो–

प्रागेकाहस्त्र्यहं पश्चात्तद्दिनं ग्रहणस्य च।
त्यजेद् गत्यन्तराभावे सर्वग्रासेऽपि कर्मणाम्।।

इसी मत को मध्यमार्ग के रूप में परम्परया अधिकतर दैवज्ञ लोग अपनाते भी हैं।

(40) ग्रहणदूषित नक्षत्र।

जिस नक्षत्र में सूर्य / चन्द्रग्रहण घटित हो, उस नक्षत्र को ग्रहणग्रास की मात्रा के अनुसार निम्नांकित मासों के लिए शुभकृत्यों में वर्जित किया जाता है,–

100 प्रतिशत ग्रास होने पर 6 मास के लिए ग्रहणनक्षत्र वर्जित
83 प्रतिशत ग्रास होने पर 5 मास के लिए ग्रहणनक्षत्र वर्जित
66 प्रतिशत ग्रास होने पर 4 मास के लिए ग्रहणनक्षत्र वर्जित
50 प्रतिशत ग्रास होने पर 3 मास के लिए ग्रहणनक्षत्र वर्जित
33 प्रतिशत ग्रास होने पर 2 मास के लिए ग्रहणनक्षत्र वर्जित
16 प्रतिशत ग्रास होने पर 1 मास के लिए ग्रहणनक्षत्र वर्जित

ध्यातव्य है– यदि ग्रहण दो नक्षत्रों में घटित होता है; तो वह उन दोनों नक्षत्रों को दूषित करता है। अतः उन दोनों नक्षत्रों को ग्रास की मात्रा के अनुसार उपरोक्त महीनों के लिए शुभकार्यों में वर्जित किया जाए।

(41) दोषपूर्ण (विष्कम्भादि) योग।

विष्कम्भ और **वज्र** की प्रारम्भ की तीन–तीन; **अतिगण्ड** और **गण्ड** की 6–6; **शूल** की 5 और **व्याघात** 9 घटियां शुभकृत्यों में अशुभ मानी गई हैं। **किञ्च– परिघ** का पूर्वार्ध और **व्यतिपात** एवं **वैधृति** दोनों का पूरा काल भी मंगलकृत्यों में शुभ नहीं माना जाता।

(42) जन्मराशि / जन्मलग्न से अष्टम लग्नराशि / लग्ननवांश।

मंगलाभिलाषी (जिसके लिए मांगलिक कृत्य किया जा रहा है, उस जातक) की जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम राशि का लग्न एवं अष्टम राशि का लग्ननवांश शुभ नहीं माना जाता।

यहां यदि लग्नेश या नवांशेश से जन्मराशीश या जन्मलग्नेश की मित्रता अथवा दोनों राशियों का ऐकाधिपत्य हो तो यह दोष दूर हो जाता है। देखिए–

जन्मेशाष्टम-लग्नेशौ मिथो मित्रे व्यवस्थितौ।
जन्मराश्यष्टमर्क्षोत्त्थ–दोषो नश्यति भावतः।।

(43) पापयुक्त लग्न एवं लग्ननवांश।

लग्न व लग्न के नवांश में पापी (क्रूर) ग्रह पड़ा हो तो मंगलकृत्य करने का निषेध है। पापयुत लग्न का तो कोई परिहार नहीं; लेकिन पापयुक्त लग्न–नवांश का दोष केन्द्र/कोणगत शुभग्रहों (गुरु, शुक्र या बुध) से दूर हो जाता है। प्रमाणार्थ ऊपर अनेकदा उद्धृत " **अब्दायनर्तु - तिथि-मास-भ-पक्ष-दग्ध .....**" वचन देखिए।

(44) चन्द्रयुक्त लग्न।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति मंगलकृत्य में सर्वथा वर्जित है, भले ही वह चन्द्रमा स्वराशिस्थ, मित्रराशिस्थ, स्वोच्चस्थ अथवा पूर्ण ही क्यों न हो।

(45) लग्नगत कुनवांश।

लग्न में क्रूरग्रह का नवांश मंगलकृत्य में ग्राह्य नहीं है। लेकिन यदि केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध हो तो यह दोष समाप्त हो जाता है। उपरोक्त " **अब्दायनर्तु- तिथि -मास - भ - पक्ष -दग्ध....**" वाक्य यहां पुष्ट प्रमाण है।

एकादश में सूर्य या चन्द्रमा अथवा केन्द्र / कोणगत गुरु से भी यह दोष दूर हो जाता है। केन्द्र एवं एकादशगत लग्नेश तथा लग्ननवांशेश भी इस दोष के परिहारक हैं। लग्न एवं चन्द्र की वर्गोत्तमस्थिति भी इस दोष का निवारण करती है। देखिए–

केन्द्रे-कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषाः नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद् दुर्मुहूर्तांशदोषः।।

और भी कहा गया है–

लग्नेट् लग्नांशनाथो वा चायगः केन्द्रगतोऽपि वा।
राशिं निहन्ति दोषाणामिन्धनानीव पावकः।।

(46) लग्नगत अन्तिम नवांश।

लग्न में किसी भी राशि का अन्तिम नवांश शुभकृत्यों में शुभ नहीं माना जाता, बशर्ते कि वह वर्गोत्तम न हो।

(47) लग्न एवम् चन्द्र कर्त्तरी।

लग्न या चन्द्रमा से द्वितीय भाव में वक्री क्रूरग्रह और इनके द्वादश भाव में मार्गी क्रूरग्रह हो तो **'कर्त्तरी दोष'** माना जाता है। इस दोष में भी मंगलकृत्य करने का निषेध है।

यदि द्वितीय भाव में शुभग्रह अथवा द्वादशभाव में गुरु हो तो **'कर्त्तरी दोष'** नहीं रहता। यदि बु., गु., शु. में से कोई भी ग्रह केन्द्र/ त्रिकोण में बैठा हो तो भी **'कर्त्तरी दोष'** समाप्त हो जाता है। **किञ्च–** कर्त्तरी बनाने वाले पापीग्रह शत्रु या नीचराशिगत अथवा अस्तंगत हों तो भी यह दोष शून्य हो जाता है। गर्ग का कथन है–

क्रूरकर्त्तरिसंयुक्तं लग्नं चन्द्रञ्च न त्यजेत्।
केन्द्र–त्रिकोण–संस्थेषु गुरु–भार्गव–वित्सु च।।

और भी–

शुभैः धनस्थैरथवा ऽन्त्यगे गुरौ।
न कर्त्तरी स्यादिह भार्गवाः विदुः।।

रामदैवज्ञ का कथन है–

पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचेऽस्तगौ कर्त्तरी।
दोषो नैव – – – – – – – – – – – – ।।

ध्यान रहे– द्वितीय एवं द्वादशभाव में स्थित दोनों मार्गी या दोनों वक्री पापग्रहों से भी कर्त्तरी योग बनता है, जो कि सामान्य माना गया है।

इस सामान्य कर्त्तरी योग के परिहार भी उपरोक्त ही हैं।

(48) क्रूरयुत नक्षत्र।

यदि मुहूर्त्त का नक्षत्र क्रूरग्रह से युत हो तो वह अशुभ माना जाता है। यदि चन्द्रमा वर्गोत्तमगत अथवा अपनी राशि, उच्च या मित्रराशि में स्थित हो तो यह दोष समाप्त हो जाता है। **कश्यप** का वचन है–

तुंग-मित्र-स्वराशिस्थः शुभयुक्तः शुभप्रदः।
एवं विधः क्रूरयुतः सम्पूर्णफलदः शशी।।

इस बारे **'नारद'** का भी वचन है–

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चे वा मित्रराशिगः।
युतिदोषश्च न भवेद् दम्पत्योः श्रेयसे तदा।।

ध्यान रहे– कुछ आचार्यों का मत है – क्रूरग्रह द्वारा भुक्त नक्षत्र तब तक मंगलकृत्य के लिए ग्राह्य नहीं माना जाता, जब तक कि चन्द्रमा उसका एक बार उपभोग न कर ले और कुछेक का यह भी मत है कि क्रूरग्रह द्वारा भोग्य नक्षत्र (आगामी नक्षत्र) भी मांगलिक कर्म में वर्ज्य माना जाए। लेकिन इन मतों को अधिकतर दैवज्ञों की परम्परा नहीं स्वीकारती।

(49) विद्ध नक्षत्र।

वेध दो प्रकार का है– सप्तशलाका वेध और पंचशलाका वेध। पंचशलाका वेध का विचार केवल विवाह में और सप्तशलाका वेध का विचार शेष अन्य मंगलकृत्यों में किया जाता है।

(इन दोनों पद्धतियों से नक्षत्रवेध जानने के लिए **' सप्तशलाका वेध कोष्ठक'** और **'पंचशलाका वेध कोष्ठक'** पृष्ठ. 110 .पर देखें।)

क्रूरग्रह से विद्धनक्षत्र में कोई भी शुभकार्य नहीं होता। क्रूरग्रह का वेध विद्धनक्षत्र के सम्पूर्णकाल को दूषित करता है, जबकि शुभग्रह का वेध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध (दूषित) करता है। यदि वेधक शुभग्रह नक्षत्र के प्रथम पाद में हो तो वह वेध्यनक्षत्र के चतुर्थ चरण को और यदि द्वितीय चरण में हो तो वह तृतीय चरण को वेधता है। इसी प्रकार यदि वेधक शुभग्रह नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के प्रथम चरण को और तृतीय में हो तो द्वितीय चरण को विद्ध करता है। इस प्रकार क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र का सम्पूर्णकाल और शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक (विद्ध) चरण का काल ही शुभकृत्यों में वर्जित किया जाता है। **'ज्योतिर्निबन्ध'** कार ने यही बात इस प्रकार लिखी है–

धिष्ण्यं सौम्यग्रहैर्विद्धं पादमात्रं परित्यजेत्।
क्रूरैस्तु सकलं त्याज्यमिति वेधविनिश्चयः।।

पादवेध का प्रकार **'स्वरोदय'** में इस प्रकार लिखा है–

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्।
द्वितीयेन तृतीयन्तु तृतीयेन द्वितीयकम्।।

(50) कुलिक, कालवेला, यमघण्ट, कण्टक।

ये चारों कुयोग, जिन्हें मुहूर्तकारों ने **'मुहूर्त्त'** भी कहा है, दिनमान के षोडशांशों से बनते हैं और भिन्न–भिन्न वारों में इनका काल भिन्न–भिन्न होता है। (स्पष्टीकरण के लिए देखें– पृष्ठ.. 111..पर "कुलिकादि कोष्ठक"।)

इन कुलिक आदि चारों कुयोगों को शुभकृत्यों में वर्जित लिखा है। **'गर्ग'** के अनुसार केवल विन्ध्य और हिमाचल के मध्य कण्टक तथा मत्स्य, अंग, मगध और आन्ध्र में यमघण्ट एवं काश्मीर में कुलिक वर्जित है–

विन्ध्यस्योत्तर–पूर्वे तु यावदातुहिनाचलम्।
यमकण्टक-दोषोऽस्ति नान्यदेशेषु विद्यते।।
मत्स्यांग-मगधान्ध्रेषु यमघण्टस्तु दोषकृत्।
काश्मीरे कुलिकं दुष्टमर्धयामस्तु सर्वतः।।

(51) अर्द्धयाम।

रविवार को चतुर्थ, चन्द्रवार को सप्तम, मंगलवार को द्वितीय, बुधवार को पंचम, गुरुवार को अष्टम, शुक्रवार को तृतीय और शनिवार को षष्ठ (छठा) अर्द्धयाम (यामार्द्ध) मंगलकृत्यों में ग्राह्य नहीं माने जाते। **ध्यान रहे**– यहां अर्द्धयाम दिनमान का आठवां भाग है।

लग्नशुद्धि अर्द्धयाम दोष को दूर करती है।

(52) दुष्ट मुहूर्त्त।

दिन और रात्रि को 15–15 मुहूर्त्तों में विभक्त किया गया है। इन मुहूर्त्तों के स्पष्टीकरण के लिए कोष्ठक पृष्ठ .. 111 पर देखिए।

इन मुहूर्त्तों में से अर्यमा रविवार को; ब्रह्मा और राक्षस चन्द्रवार को; पितृ और अग्नि मंगलवार को; अभिजित् बुधवार को; राक्षस और जल गुरुवार को; पितृ और ब्रह्मा शुक्रवार को तथा शिव और सर्प शनिवार को मंगलकृत्यों में अशुभ माने गए हैं।

गुरु केन्द्र/कोण और रवि–चन्द्र एकादश में हों अथवा लग्न या चन्द्र वर्गोत्तमगत हों तो दुर्मुहूर्त्त दोष दूर हो जाता है– प्रमाण ऊपर **"केन्द्रे-कोणे जीव आये – – – –दुर्मुहूर्तांशदोषः।।"** दे चुके हैं।

लग्नशुद्धि भी इन मुहूर्त्तों के दोष को समाप्त करती है।

(53) तिथि–वार–नक्षत्र–संयोगोत्पन्न कुयोग।

वार एवं नक्षत्रों के योग से उत्पन्न कालदण्ड, धूम्र, ध्वांक्ष, उत्पात, मृत्यु, काण, राक्षस आदि कुयोग एवं तिथिवारों के योग से उत्पन्न क्रकच, संवर्त, दग्ध, विष आदि कुयोग तथा द्वादशी–आश्लेषा; प्रतिपदा–उ.षा.; द्वितीया–अनु. आदि तिथि–नक्षत्र के योग से उत्पन्न कुयोग मंगलकृत्यों के लिए शुभ नहीं माने गए हैं। तिथि, वार, नक्षत्रों के संयोग से उत्पन्न ये सभी कुयोग हूण, बंग और खश प्रदेशों में ही त्याज्य हैं। **'मुहूर्त्त चिन्तामणि'** का यह वचन देखिए–

कुयोगाः तिथि-वारोत्थाः तिथि-भोत्थाः भवारजाः।
हूण–बंग–खशेष्वेव वर्ज्याः त्रितयजास्तथा।।

नारद भी कहते हैं–

हूण–बंग–खशेभ्योऽन्य देशेष्वेते शुभप्रदाः।

आचार्य गर्ग आदि तो इन कुयोगों को केवल यात्रा में ही वर्ज्य लिखते हैं, विवाहादि में नहीं। **लल्ल** का वचन है–

वारर्क्ष–तिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेद्।
विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः।।

इनके बारे में यह भी कहा गया है कि, ये कुयोग चन्द्रबल होने पर निष्प्रभाव हो जाते हैं–

मृत्यु–क्रकच–दग्धादीन् इन्दौ शस्ते शुभान् जगुः।
(*मुहूर्त्त चिन्तामणि*)

लग्नशुद्धि होने पर भी इनका दोष प्रभावहीन हो जाता है–

यत्र लग्नं विना कर्म क्रियते शुभसंज्ञकम्।
तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम्।।
(*दीपिका*)

वशिष्ठ का कथन है कि, ये योग दिन में ही कुफल कारक हैं, रात्रि में नहीं–

दिवा मृत्युप्रदाः पापाः दोषास्त्वेते न रात्रिषु।

अपि च–रवियोग, सिद्धि आदि तिथि–भ–वारज सुयोगों से भी इन कुयोगों का कुफल विनष्ट हो जाता है।

(तिथि, वार और नक्षत्रों के संयोग से उत्पन्न इन कुयोगों तथा सुयोगों के ज्ञानार्थ पृष्ठ **108 से 110** पर दिए गए इनके कोष्ठक देखिए।)

(54) गोचर चन्द्रबलाभाव

जन्मराशि, जन्मराशि ज्ञात न हो तो नामराशि से 4, 8, 12 स्थानों में गोचर चन्द्र होने पर शुभकृत्य सुफलप्रद नहीं होते। गोचर चन्द्र यदि स्वराशि, स्वोच्च या मित्रराशि अथवा पूर्ण (पूर्णिमा का) हो तो वह 4, 8, 12 स्थानों में स्थित होने पर भी दोषकारक नहीं माना जाता–

स्वर्क्षे स्वोच्चेऽथ मित्रर्क्षे पूर्णो वा रजनीपतिः।
गोचरे शुभमाधत्ते निन्द्योप्यावश्यके विधौ।।

अभिषेक, गर्भाधान, उपनयन, विवाह एवं यात्रा में तो द्वादशस्थ गोचर चन्द्र दोषकारक नहीं होता–

गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौंजिबन्धने।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगःशुभः।।
(दैवज्ञ कल्पद्रुम)

(55) दिव्य,भौम एवं आन्तरिक्ष उत्पात।

धूमकेतुदर्शन, उल्कापात आदि दिव्य उत्पात, गंधर्वनगर आदि आन्तरिक्ष उत्पात और भूकम्पादि भौम उत्पात विवाहादि मंगलकृत्यों के लिए अशुभ माने गए हैं। इन उत्पातों के घटित होने पर मंगलकृत्य कितने समय के लिए वर्जित होने चाहिएं– इस बारे में मुहूर्त्तशास्त्रियों में भारी मतभेद है। यदि ऐसे अप्रत्याशित उत्पातों के कारण शुभकृत्य वर्जित करने की बात स्वीकार भी कर ली जाए, तो निर्धारित शुभकृत्यों को अकस्मात् रोके जाने की बहुत बड़ी समस्या उपस्थित हो जाती है, क्योंकि, ये लगभग सभी उत्पात किसी भी समय घटित हो सकते हैं। ऐसे में विधीयमान मंगलकृत्य को रोक पाना असम्भव है।

धूमकेतुदर्शन आदि उत्पातों का पूर्वज्ञान करा देने वाली कोई पद्धति भी तो स्पष्टतः ज्ञात नहीं है। परम्परया मुहूर्त्तशास्त्री/दैवज्ञलोग भी इन उत्पातों को मांगलिक कृत्यों में कभी नहीं विचारते। **अपि च**–पंचांगशुद्धि, लग्नशुद्धि एवं चन्द्रादि का बल भी इन उत्पातों से उत्पन्न दोष को स्वतः समाप्त कर ही देता है।

(56) जननाशौच

नान्दीश्राद्धानन्तर मंगलाभिलाषी के सगोत्र कुटुम्ब (परिवार) में यदि जननाशौच आ पड़े, तो चौल, उपनयन एवं विवाह संस्कार आशौच की निवृत्ति के बाद ही किए जाएं। यदि उपयुक्त लग्न पार्श्ववर्त्तीकाल में अनुपलब्ध हो तो अत्यावश्यक्ता में ही **'श्रीपूजन'** आदि विधान के बाद ये संस्कार सम्पन्न किए जा सकते हैं।

अत्यावश्यक है कि, इस स्थिति में जननाशौच किंवा मृताशौच में खाद्य तथा पेय पदार्थों का पाचन एवं वितरण आदि असगोत्र (स्वगोत्र से अतिरिक्त गोत्र के) व्यक्तियों को ही करना चाहिए।

(57) प्रतिकूलता दोष।

मंगलाभिलाषी के परिवार में किसी निकटतम सगोत्र सम्बन्धी की मृत्यु से उत्पन्न मृताशौच (प्रतिकूलता दोष) में शुभकृत्य न करने का धर्मशास्त्र आदेश देते हैं।

शुभकृत्य में नान्दीश्राद्ध के पश्चात् यदि मृताशौच (प्रतिकूलता दोष) आ पड़े तो शुद्धि के अनन्तर ही मंगलकृत्य करना चाहिए। यदि आपातस्थितिवश ऐसा करना सम्भव न हो तो श्रीपूजा, विनायकशान्ति करके मंगलकृत्य सम्पन्न किया जा सकता है।

दादा, दादी, माता, पिता, पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू, पौत्र, पौत्रवधू, अविवाहित पुत्री, अविवाहित पौत्री, भ्राता, भ्रातृपत्नी, भतीजा, अविवाहित भतीजी, अविवाहित बहन, चाचा, चाची, ताया, ताई, चाचा और ताया का पुत्र एवं उनकी अविवाहित पुत्री, चाचा–ताया की पुत्रवधू, अविवाहित भुआ– ये सगोत्र सम्बन्धी हैं, जिनकी मृत्यु पर प्रतिकूलतादोष (मृताशौच) माना जाता है। ध्यान रहे– यहां भ्राता, चाचा आदि सभी सगे लिए गए हैं।

❖❖❖❖❖

गर्भाधानादि मुहूर्त्त एवम् उनका निर्णयप्रकार

पीछे पृष्ठ ..**64 से 73**.......तक **'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ / दोष "** शीर्षक के अन्तर्गत 57 दोषों का विस्तार से विवेचन हम कर चुके हैं। ये 57 दोष ऐसे हैं,– जिनका विचार सभी मुहूर्त्तों के निर्णय में दैवज्ञ को अनिवार्यतः करना चाहिए। अब हम आगे विभिन्न मुहूर्त्तों का निर्णय करेंगे। इन मुहूर्त्तों में जो जो वर्ज्य विशेष दोष हैं (जिनकी चर्चा उपरोक्त इन 57 दोषों में नहीं है) उनका निर्देश भी इन मुहूर्त्तों के साथ–साथ किया जा रहा है। **ध्यान दें**– उपरोक्त इन 57 दोषों में से अनेक दोष ऐसे भी हैं, जिन्हें किसी मुहूर्त्तविशेष में निश्चित (सीमित) काल या अन्य किसी कारण से विचारना सम्भव नहीं है। वहां, ऐसे इन दोषों की उपेक्षा करनी चाहिए– ऐसा शास्त्रनिर्देश है। **उदाहरणार्थः– 'गर्भाधान'** संस्कार सीमित ऋतुकाल से सम्बद्ध है। अतः वहां गुरु–शुक्रास्त, अधिमास आदि दोषों को विचारना सम्भव नहीं है। **यहां एक और उदाहरण *'पुंसवन'* संस्कार का लेते हैं।** यह संस्कार गर्भ के तीसरे मास में किया जाता है। यदि तीसरे मास में गुरु–शुक्रास्त आदि हो तब इस संस्कार को छोड़ा नहीं जा सकता। इस संस्कार के सीमित काल के कारण हमें यहां गुरु–शुक्रास्त आदि की उपेक्षा करनी पड़ेगी। यहां एक विशेष बात और दैवज्ञों को जान लेनी चाहिए कि ऐसे सीमित काल वाले संस्कार के काल का कुछ भाग यदि दोषरहित उपलब्ध हो सके तो उसका प्रयोग दैवज्ञ को सम्बद्ध मुहूर्त्त के निर्णय के लिए करना चाहिए। **जैसे– 'पुंसवन'** संस्कार गर्भाधान से तृतीय मास में किया जाता है। यदि यहां तीसरे मास का कुछ भाग निर्दोष (गुरु–शुक्रास्तादि दोष से रहित) हो तो 'पुंसवन' संस्कार उसी निर्दोष भाग में किया जाए। संस्कार के (गुरु–शुक्रास्तादि) दोषयुक्त सीमित काल में भी यथाशक्य भद्रा, परिघादि अल्पकालिक दोषों को तो विचारना ही चाहिए। **जैसे**– पुंसवन संस्कार के लिए निर्धारित तृतीय मास पूरा गुरु–शुक्रास्तादि दोष से दूषित हो , तब भी इस मास के उस भाग को यथाशक्य छोड़कर पुंसवन करना चाहिए, जिस भाग में भद्रा, परिघार्ध, व्यतीपात, क्षीणचन्द्र आदि दोष विद्यमान हैं।

आगे दिए जा रहे विभिन्न मुहूर्त्तों में ग्राह्य मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का विवरण दिया गया है। इसके साथ ही इन मुहूर्त्तों से सम्बद्ध ज्ञातव्य आवश्यक निर्देश भी हम यहां साथ साथ दे रहे हैं।

–:गर्भाधान मुहूर्त्तः–

ऋतुकाल की प्रथम चार रात्रियों को छोड़कर यह संस्कार किया जाता है। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं–

ग्राह्य तिथि :– *4, 6, 8, 9, 14, 15* और 30 के अतिरिक्त शेष तिथियां।

ग्राह्य वार :– रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– ज्ये., मूल, मघा और रेवती को छोड़कर शेष सभी नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :–केन्द्र / कोण में शुभग्रह और 3, 6, 11 में *पापग्रह हों। लग्न पर पुरुषग्रहों (सू. मं. गु.) की नज़र हो। चन्द्रमा विषमराशि के नवांश में स्थित हो।*

ज्ञातव्य निर्देश :–रजोदर्शन के उपरान्त 16 दिन तक ऋतुकाल माना जाता है। ऋतुकाल के पहले चार दिन एवं 11वां और 13वां दिन गर्भाधान के लिए वर्जित हैं। शेष 10 दिन ही गर्भाधान के लिए विहित हैं। पुत्रकामना हो तो ऋतुकाल के सम (6–8 आदि) दिनों में और पुत्री की कामना हो तो विषम (5–7 आदि) दिनों में गर्भाधान करना चाहिए। गर्भाधान के लिए दिन का काल वर्जित है। स्पष्ट है, रात्रि में ही गर्भाधान करना चाहिए। सूर्यास्त के बाद एवं सूर्योदय से पहले 3–3 घड़ियां, कुछ आचार्यों के मतानुसार 1–1 प्रहर गर्भाधान में निषिद्ध हैं। ऋतुकालिक स्त्रीसंग के तुरन्त बाद पुरुष को स्नान करना चाहिए– यह धर्मशास्त्र का आदेश है।

यहां ऋतुकाल के प्रथम दिन का निर्णय इस प्रकार करें–

दिन में रजोदर्शन हो तो ऋतुकाल का वही प्रथम दिन माना जाएगा,जिस दिन रजोदर्शन हुआ है। रात्रि में अर्द्धरात्रि से पहले रजोदर्शन

जाएगा,जिस दिन रजोदर्शन हुआ है। रात्रि में अर्द्धरात्रि से पहले रजोदर्शन

होने पर प्रथम दिन को और अर्द्धरात्रि के बाद रजोदर्शन की स्थिति में अग्रिम दिन को ऋतुकाल का प्रथम दिन मानना चाहिए।

ध्यान रहे– गर्भाधान में गुरु–शुक्र के अस्त तथा अधिकमासादि के काल व श्राद्धपक्ष आदि का विचार नहीं किया जाता। इसके अतिरिक्त आगे बतलाए जा रहे पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण और अन्नप्राशन– इन सभी संस्कारों में भी गुरु–शुक्र के अस्तादि का विचार नहीं करना चाहिए।

–:पुंसवन मुहूर्त:–

गर्भ के तीसरे मास में पुंसवन संस्कार करना चाहिए।

ग्राह्य तिथि :– 4, 6, 8, 9, 12, 14 और 30 तिथियों को छोड़कर शेष तिथियां।

ग्राह्य वार :– रवि, मंगल और गुरुवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– पुरुषनक्षत्र (पुन., पुष्य, हस्त, मृग. और श्रवण नक्षत्र)।

लग्नशुद्धि :– पुरुषग्रह का लग्न हो और शुभग्रह केन्द्र–त्रिकोण किंवा पापग्रह 3, 6, 11 में स्थित हों।

गर्भमासेश जिस समय बली हो, उस समय में पुंसवन संस्कार करना चाहिए। गर्भमासेशों का निर्देश यहां आगे ' सीमन्तोन्नयन संस्कार ' में दिया गया है– वहां देखें।

इस संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल भी देखना चाहिए।

–:सीमन्तोन्नयन मुहूर्त:–

गर्भाधान के अनन्तर निम्नलिखित मास, तिथ्यादि में यह संस्कार किया जाता है।

ग्राह्य मास :– गर्भधान से छठा या आठवां मास।

ग्राह्य तिथि :– 4, 6, 8, 9, 12, 14 और 30 को छोड़कर शेष तिथियां।

ग्राह्य वार :– रवि, मंगल और गुरुवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– पुन. पुष्य, हस्त, मृग. और श्रवण नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– शुभग्रह केन्द्र/ कोण में और पापग्रह 3–6–11 (त्रिषडाय) में हों और पुरुषग्रह का लग्न भी हो।

गर्भमासेश जिस समय बली हो, उस समय यह संस्कार करना ज्यादा शुभ है। **गर्भमासेश ये हैं** :–

गर्भ के प्रथम मास का स्वामी शुक्र, दूसरे का भौम, तीसरे का गुरु, चौथे का रवि, पांचवें का चन्द्र, छठे का शनि, सातवें का बुध, आठवें का लग्नेश, नौवें का चन्द्र और दसवें का स्वामी सूर्य है।

'सीमन्तोन्नयन' में भी स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए।

ध्यान रहे– सीमन्तोन्नयन संस्कार प्रथम गर्भ में ही करना चाहिए। क्योंकि परवर्त्ती गर्भ इसीसे संस्कृत हो जाते हैं– ऐसा शास्त्रकारों का मानना है।

कुछ लोग सीमन्तोन्नयन और पुंसवन– दोनों संस्कारों को एक साथ ही कर लेते हैं।

–: जातकर्म मुहूर्त :–

यह संस्कार जातक के जन्म के तुरन्त बाद किया जाता है। जातक के जन्मोपरान्त नालच्छेदन से पूर्व ही पिता बच्चे का मुख देखकर उत्तराभिमुख होकर शीतल जल से सचैल स्नान करे। अशक्यस्थिति में अग्नि के सान्निध्य में स्वर्णयुक्त शीतल जल से स्नानकृत्य सम्पन्न करे। तदनन्तर नालच्छेदन से पूर्व ही वह (पिता) शिशु का जातकर्म संस्कार करे। **ध्यान दें**– यदि बच्चा गण्डान्त में पैदा हुआ हो तो, बिना मुख देखे ही स्नान करना चाहिए। यदि इस समय में 'जातकर्म' सम्पन्न न हो सके, तब जातक के जन्म से 11वें या 12वें दिन इस संस्कार को करने की परम्परा है। यदि इन दिनों में भी यह संस्कार किसी कारणवश करना सम्भव न हो तब इसे आगे किसी शुभ तिथि, वार, नक्षत्रादि में करना चाहिए। तब इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि ये हैं–

ग्राह्य तिथि :– 4, 8, 9, 14 15 और 30 तिथियों का छोड़कर शेष तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– मृदु (मृग., चित्रा, अनु., रेव.); ध्रुव (रोहि., उ.फा., उ.षा., उ.भा.,); क्षिप्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.) और चर (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) नक्षत्र।

ज्ञातव्य निर्देश :– नक्षत्रगण्डान्त, कृष्णचतुर्दशी, अमा, ग्रहण दिन, क्षीणतिथि, भद्रा, वैधृति, शूल, व्यतिपात, परिघ, व्याघात, गंड, अतिगण्ड योग तथा संक्रान्तिदिन में जन्म, त्रिकप्रसव (तीन कन्याओं के बाद पुत्र या तीन पुत्रों के बाद कन्या का जन्म), यमलजन्म ,विकृतांग जन्म, अंगहीन जन्म, अधिकांगजन्म, सदन्त जन्म, माता/पिता/भ्राता के जन्म नक्षत्र में जन्म– ये जन्मदोष कहलाते हैं। शास्त्रों में इनका अशुभफल लिखा है। अतः ऐसे जन्म वालों की शान्ति करवाना आवश्यक है। इसी प्रकार शिशु के दान्तों की 2, 3, 4, 5 वें मासों में उत्पत्ति भी अशुभ मानी गई है। पहिले ऊपर के दान्तों का जन्म भी शुभ नहीं है। अतः इनकी भी शान्ति करवानी चाहिए। शान्तिप्रक्रिया के लिए **मुहूर्त्त चिन्तामणि** की **पीयूषधारा** टीका और **धर्मसिन्धु** देखना चाहिए।

–ः नामकरण मुहूर्त्त :–

यह संस्कार जन्मोपरान्त जातकर्म संस्कार के तुरन्त बाद किया जाता है। यदि उस समय न हो सके तो 11वें या 12वें दिन पूर्वाह्ण में उपरोक्त जातकर्म संस्कार में निर्दिष्ट तिथि, वार आदि पदार्थों में ही इस संस्कार को करने का शास्त्रनिर्देश है। यहां ग्राह्य लग्न 2, 5, 8 माने गए हैं। नामकरण पिता अथवा कुलवृद्ध व्यक्ति द्वारा किया जाता है।

–ः प्रसूता स्नान मुहूर्त्तः–

जातक की माता को प्रसव के सात दिन बाद स्नान करना चाहिए। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं–

ग्राह्य तिथि :– *दोनों (शुक्ल/कृष्ण) पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की त्रयोदशी एवं पूर्णिमा।*

ग्राह्य वार :– *सूर्य, मंगल और गुरुवार।*

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि. मृग., उ.फा., हस्त, स्वा., अनु., उ.षा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

–ः जलपूजन मुहूर्त्त :–

प्रसव के एक मासोपरान्त (मास पूरा होने पर) शिशु की माता, कुआं, बावड़ी, नदी या समुद्र पर जाकर जलपूजन करे। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि निम्नप्रकार से हैं–

ग्राह्य तिथि :– कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, शुक्लपक्ष की 13 और 15 तथा दोनों (शुक्ल/कृष्ण) पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10 एवं 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध और गुरुवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल और श्रवण नक्षत्र।

ध्यातव्यः– चैत्र एवं पौषमास तथा अधिकमास और गुरु–शुक्रास्तादि के समय जलपूजन निषिद्ध है।

–ः निष्क्रमण मुहूर्त्त :–

शिशु के जन्म से तीसरे या चौथे महीने में 'निष्क्रमण संस्कार' सम्पन्न किया जाता है। कुछ आचार्यों ने 12वें दिन में भी 'निष्क्रमण' माना है। प्रथम निष्क्रमण के समय कुलदेवालय में शिशु को ले जाएं व अपने प्रिय सम्बन्धियों दादा, नाना, मामा, मासी आदि के घर जाकर उनसे उसके लिए आशीर्वाद प्राप्त करें। इस मुहूर्त्त के लिए ग्राह्य तिथ्यादि ये हैं–

ग्राह्य तिथि :– दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 ; कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की 13 एवं 15 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., श्रव. और धनिष्ठा नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10 या 11 राशि लग्न में हो। सौम्यग्रह केन्द्र/कोण तथा क्रूरग्रह 3, 6, 11 में स्थित हों।

तीसरे मास में शिशु को सूर्य का और चौथे मास में चन्द्र एवं अग्नि का दर्शन भी करवाना चाहिए।

-: भूम्युपवेशन मुहूर्त :-

जातक के जन्म से 5 वें मास में भूम्युपवेशन संस्कार किया जाना चाहिए। यहां सर्वप्रथम बच्चे को भूमि पर बैठाना चाहिए। इस काल में मंगलग्रह बलवान् (स्वोच्च,स्वराशि, मित्रराशि आदि गत) हो तो शुभ माना जाता है। इस संस्कार के लिए ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं–

ग्राह्य तिथि :– दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10 और 11 एवं कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की 13 तथा 15 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उ. फा., हस्त, अनु., ज्ये., उ.षा., अभि. और उ.भा.नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– चर लग्न शुभ माना गया है।

ज्ञातव्य निर्देश :– शिशु को पृथ्वी पर बैठाने से पूर्व पृथ्वी और वराह भगवान् की पूजा करनी चाहिए और उसके कटिभाग में कटिसूत्र बांधना चाहिए।

मुहूर्त्तशास्त्र के अनेक ग्रन्थों में लिखा है कि, इस समय बच्चे के सामने पुस्तक, लेखनी, शस्त्र, वस्त्र, स्वर्ण एवं रजत आदि पदार्थ रखने चाहिएं। बच्चा, जिस पदार्थ को पहिले छूए या उठाए, उस पदार्थ से सम्बद्ध आजीविका में वह निपुण होगा– ऐसा जानना चाहिए।

-: कर्णवेध मुहूर्त:-

शिशु के जन्म से 12 या 16वें दिन एवं 6, 7 या 8 वें मास में अथवा किसी भी विषम वर्ष में **'कर्णवेध'** करना चाहिए।

चैत्र और पौष मास तथा हरिशयन (आषा. शुक्ल एकादशी से कार्त्ति. शुक्ल एकादशी पर्यन्त) में 'कर्णवेध' निषिद्ध है। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि ये हैं–

ग्राह्य तिथि :– शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 6, 7, 10, 12 और 13 तिथियां।

('कर्णवेध शुक्ल पक्ष में ही किया जाता है।)

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु., अभि., श्रव., धनि. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– 2, 3, 4, 6, 7, 9, या 12 राशि लग्न में हो। लग्न में गुरु, शुक्र; 4, 5, 7, 9, 10 में शुभग्रह और 3, 6, 11 में क्रूरग्रह हों। 8वां भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

('कर्णवेध' पूर्वाह्ण में ही किया जाता है।)

ज्ञातव्य निर्देश :– कर्णवेधकाल में शिशु को पूर्वाभिमुख बैठाकर मिष्टान्न दें। लड़के का पहले दायां और बाद में बायां और लड़की का पहले बायां और बाद में दायां कर्ण बींधना चाहिए। कर्णवेध में स्वर्ण या रजत शलाका (सुई) का प्रयोग करें। वैसे, सुई के बारे में विशेष निर्देश है कि, वह क्षत्रिय के लिए सोने की; ब्राहमण और वैश्य के लिए चांदी की और शूद्र के लिए लोहे की हो। कर्णच्छेद (कान में छिद्र) इतना हो कि, उसमें सूर्यरश्मि प्रविष्ट हो सके– यह आवश्यक है।

-: अन्नप्राशन मुहूर्त :-

पुरुष जातक को 6, 8 या 10वें मास में एवं स्त्रीजातक को 5, 7 या 9वें मास में पहली बार अन्नप्राशन कराया जाए। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि निम्न हैं–

ग्राह्य तिथि :– शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 13 और 15 तिथियां।

(अन्नप्राशन हमेशा शुक्ल पक्ष में ही होता है।)

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा. अनु., उ.षा., श्रव., धनि., शत., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

[यहां (अन्नप्राशन में) जन्मनक्षत्र वर्जित नहीं होता।]

लग्नशुद्धि :– 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10 या 11 राशि लग्न में हो। केन्द्र/कोण में सौम्य और 3, 6, 11 में क्रूरग्रह हों। 1, 6, 8 में चन्द्रमा की स्थिति वर्जित है।

अन्नप्राशन में शिशु का चन्द्रबल अवश्य देखना चाहिए। यह संस्कार पूर्वाह्ण में ही होना चाहिए।

ज्ञातव्य निर्देशः– अन्नप्राशन में बच्चे को अन्न के साथ मधु, घृत और दधि भी खिलाना चाहिए।

ध्यान दें– ऊपर अभी तक बतलाए गए गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के इन संस्कारों के मुहूर्त्तों में गुरु–शुक्रास्त, अधिकमास, सिंहस्थ गुरु आदि का विचार कर सकना सम्भव नहीं है। क्योंकि इनका समय नियत है। अतः इन मुहूर्त्तों में ये दोष उपेक्षा करने योग्य हैं।

शास्त्रकारों का कहना है कि इन मुहूर्त्तों में जहां इन दोषों में से किसी दोष या किन्हीं दोषों को वर्जित करना संभव हो, तो दैवज्ञ को उन्हें वर्जित कर ही देना चाहिए।

–ः मुण्डन (चौल) मुहूर्त्त ः–

यह संस्कार जातक के गर्भ अथवा जन्म से तृतीयादि विषम वर्षों में किया जाता है। इसके लिए चैत्रमास रहित उत्तरायणकाल प्रशस्त है। इसमें ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं–

ग्राह्य तिथि :– 1, 4, 6, 8, 9, 12, 14, 15 और 30 तिथियों को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ हैं। विशेषतः रवि ब्राह्मणों को, मंगल क्षत्रियों को, शनि वैश्य/शूद्रों को मुण्डन के लिए शुभ है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ है।

ग्राह्य नक्षत्र :– अनुराधा रहित मृदु (मृग., चित्रा, रेव.); चर (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) और लघु (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.) तथा ज्येष्ठा नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– 2, 3, 4, 6, 7, 9, या 12 राशि का लग्न और शुभग्रह केन्द्र/त्रिकोण में व पापग्रह 3, 6, 11 में हों।

ज्ञातव्य निर्देश :– *5 मास से अधिक माता का गर्भ हो तो शिशु का चौलकर्म नहीं किया जाता। 5 वर्ष से अधिक जातक की आयु हो तो गर्भिणी माता का शिशु के चौलकर्म में कभी दोष नहीं होता। यदि उपनयन के साथ ही मुण्डन किया जाए तो भी किसी भी स्थिति में गर्भिणी माता का दोष नहीं होता। नान्दीश्राद्ध के बाद यदि मां रजस्वला हो तो उसकी शुद्धयनन्तर ही बच्चे का मुण्डन करे। यदि यह संभव न हो तो* **'श्रीपूजन'** *द्वारा शान्तिविधान करके 'मुण्डन' करने की शास्त्राज्ञा है।*

प्रथम गर्भ से ज्येष्ठ में उत्पन्न शिशु का ज्येष्ठ मास में, मुण्डन नहीं होता।

किञ्च– मुण्डन वाले शिशु के सगोत्रपरिवार में यदि गत छः मासों के भीतर किसी का उपनयन या विवाह सम्पन्न हुआ हो तो उसका मुण्डन नहीं हो सकता। हां, यदि वह उपनयन या विवाह भिन्न संवत्सर में हुआ हो तब तो मुण्डन सम्भव है। (पृष्ठ **85** पर " चौल–उपनयन मुहूर्त्तों के लिए विशेष ज्ञातव्य" भी देखें।)

ध्यान दें– जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, कर्णवेध, अन्नप्राशन और मुण्डन संस्कार लड़के के समन्त्रक और लड़की के अमन्त्रक होने चाहिएं। विवाह तो दोनों का समन्त्रक ही होना चाहिए– यह शास्त्र का आदेश है।

–ः अक्षरारम्भ मुहूर्त्त ः–

शिशु की आयु के पांचवें वर्ष में लिपिज्ञान के उद्‌देश्य से **'अक्षरारम्भ'** संस्कार किया जाता है। यह कुम्भस्थ सूर्य को छोड़ कर, शेष उत्तरायण काल में करना चाहिए। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि ये है–

ग्राह्य तिथि :– 2, 3, 5, 6, 10, 11 तथा 12 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि. आर्द्रा, पुन., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्ये., श्रव. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– स्थिर एवं द्विस्वभाव लग्न शुभ माने गए हैं।

ज्ञातव्य निर्देश :– सरस्वती, श्रीगणेश, लक्ष्मी, नारायण और अपने वेद, गुरु, धात्री, माता की पूजाकर इनसबकी तीन परिक्रमा करे। तदनन्तर अक्षरलेखन करना चाहिए। बच्चे से सबसे पहले ' ॐ ' लिखवाएं।

यह संस्कार 'उपनयन' संस्कार से पहले होता है।

–ः विद्यारम्भ मुहूर्त्त ः–

यह संस्कार **'उपनयन'** संस्कार के बाद होता है; जिसके अनन्तर वटु वेद, अर्थशास्त्र आदि का अध्ययन करता है। यह संस्कार भी उत्तरायण में ही किया जाता है, इसमें कुम्भस्थ सूर्य वर्जित है। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि निम्नप्रकार से हैं–

ग्राह्य तिथि :– 2, 3, 5, 6, 10, 11 तथा 12 तिथियां।

ग्राह्य वार :– रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– केन्द्र/कोणगत शुभ और 3, 6, 11 में पापग्रह हों।

–: उपनयन मुहूर्त्त :–

ब्राह्मणों का पंचम या अष्टम, क्षत्रियों का छठे या 11वें और वैश्यों का 8वें या 12वें वर्ष की आयु में **उपनयन संस्कार** होता है। यहां आयु के वर्ष गर्भाधान या जन्म से लेने चाहिएं। यदि इन वर्षों में संस्कार न हो सके तो ब्राह्मणों के लिए 16वां, क्षत्रियों के लिए 22वां और वैश्यों के लिए 24वां वर्ष उपनयन के लिए गौणकाल माना गया है। इससे अधिक आयु होने पर वे व्रात्य (पतित) कहलाते हैं। व्रात्यों का संस्कार धर्मशास्त्रोक्त विशेष प्रायश्चित्त के बाद ही किया जा सकता है। सामान्यतः सभी वर्णों का उपनयन दक्षिणायन में निषिद्ध है। वैसे, ब्राह्मणों के लिए वसन्त, क्षत्रियों के लिए ग्रीष्म और वैश्यों के लिए शरदृतु इस संस्कार के लिए बतलाई गई है। शास्त्रकारों का कहना है कि माघादि 6 मासों में भी सभी वर्णों का उपनयन किया जा सकता है। यहां सर्वत्र हरिशयनकाल वर्जित करना चाहिए। यह संस्कार पूर्वाह्ण में ही सम्पन्न किया जाता है। यहां दिन के तीन भाग कर देने पर प्रथम भाग पूर्वाह्ण माना गया है। उपनयन के लिए ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं–

ग्राह्य तिथि :– शुक्लपक्ष की 2, 3, 5, 10, 11, 12 और कृष्णपक्ष की 1, 2, 3, 4, 5, तिथियां ग्राह्य हैं। मन्वादि तिथियां और सोपपदा तिथियां (आषा. शु. 10; पौष शु. 11; माघ शु. 4, 12) त्याज्य हैं।

ग्राह्य वार :– रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्रः– अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., अभि., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– त्रिक (6, 8, 12) भावों के अतिरिक्त अन्य भावों में शुभग्रह और 3, 6, 11 में पापग्रह तथा पूर्ण चन्द्र वृष और कर्कराशिगत होकर लग्न में हो। चं. गु. शु. और लग्नेश 6 या 8 भाव में अशुभ माने गए हैं। चं., शु. 12वें भाव में और पापीग्रह 1, 5, 8 भावों में अशुभ कहे गए हैं।

आद्यगर्भोत्पन्न ब्राह्मण का उपनयन संस्कार उसके जन्मनक्षत्र, मास, तिथि और लग्न में भी शुभ माना गया है। अन्य वर्ण के आद्यगर्भोत्पन्न ब्रह्मचारियों के लिए यह निषिद्ध है।

यहां ब्रह्मचारी का गुरुबल अवश्य देखना चाहिए। जन्मराशि से 4, 8, 12 भावों में स्थित गुरु ग्राह्य नहीं हैं। यदि वह (गुरु) अपनी उच्चराशि, स्वनवांश, मित्रराशि या वर्गोत्तम नवांश में हो तो वह दोषकारक नहीं है। नीचरथ एवं शत्रुराशिगत गुरु उपनयन में शुभ नहीं माना जाता।

रोगबाण :– उपनयन में **'रोग वाण'** (प्रत्येक राशि के 9, 18 और 27वें अंश में स्थित सूर्य का काल) वर्जित है।

प्रदोषदिनः– उपनयन संस्कार में **'प्रदोषदिन'** वर्जित होता है। **ध्यान रहे–** यहां 'प्रदोष' शब्द एक विशिष्ट अर्थ का वाचक है– जिस दिन पूर्वार्द्ध रात्रि में द्वादशी की समाप्ति और त्रयोदशी का प्रारम्भ हो रहा हो, जिस दिन रात्रि के प्रथम 1½ प्रहर के भीतर षष्ठी समाप्त और सप्तमी शुरू हो रही हो एवं जिस दिन रात्रि के पहले प्रहर के भीतर तृतीया की समाप्ति तथा चतुर्थी का प्रारम्भ हो रहा हो– ऐसे ये तीनों दिन 'प्रदोषदिन' कहलाते हैं। इन तीनों प्रदोषदिनों को शास्त्रकारों नें 'उपनयन' में अग्राह्य लिखा है।

ब्रह्मचारी का वर्णेश या शाखेश बलवान् हो तो उपनयन संस्कार उत्तमफलद होता है। सू. चं. एवं गुरु का बल सभी वर्णों के लिए उत्तमफलदायक माना गया है।

विप्र वर्ण के स्वामी गुरु, शुक्र; क्षत्रिय वर्ण के सूर्य, मंगल और वैश्य वर्ण का चन्द्रमा है। इसी प्रकार ऋग्वेद (ऋक् शाखा) का स्वामी गुरु; यजुर्वेद का शुक्र; सामवेद का मंगल और अथर्ववेद का स्वामी बुध है।

ज्ञातव्य निर्देश :– नान्दीश्राद्ध के बाद यदि ब्रह्मचारी की माता रजस्वला हो जाए तो उसकी शुद्धि के बाद ही उपनयन होना चाहिए। ऐसा करना सम्भव न हो तो श्रीपूजन के बाद ही 'उपनयन' करना चाहिए।

(पृष्ठ **85** पर " चौल, उपनयन, विवाहमुहूर्त्तों के लिए विशेष ज्ञातव्य" देखें।)

-: केशान्त (गोदान) मुहूर्त :-

ब्राह्मण जातक के 16वें, क्षत्रिय के 22वें और वैश्य के 24वें वर्ष में **'केशान्त'** संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के लिए वर्ज्य दोष एवं ग्राह्य तिथ्यादि वही हैं, जो 'मुण्डन' संस्कार के हैं। अतः इस संस्कार के लिए पीछे दिया गया 'मुण्डन' संस्कार देखना चाहिए।

-: समावर्तन मुहूर्त :-

यह संस्कार 'केशान्त' संस्कार के बाद तब किया जाता है, जब कि वेदाध्ययन सम्पन्न कर ब्रह्मचारी गुरु की आज्ञा से अपने घर लौटता है। इसके अनन्तर वह विवाह संस्कार का अधिकारी बनता है। इस समावर्तन संस्कार के लिए वर्ज्य दोष एवं ग्राह्य तिथ्यादि ठीक वही हैं, जो 'उपनयन' संस्कार के लिए हैं। अतः इस संस्कार के सम्पादनार्थ पीछे दिया गया 'उपनयन ' संस्कार देखिए।

-: विवाहांगकृत्य मुहूर्त :-

ब्रह्मचर्य आदि आश्रमचतुष्टय के अन्तर्गत 'गृहस्थ आश्रम' को इतर आश्रमों के उपजीवक आश्रम के रूप में हमारे धर्माचार्यों ने माना है; जिससे षोडश संस्कारों में इस संस्कार का वैशिष्ट्य स्वयमेव स्पष्ट है। पीछे हमने अन्य लगभग सभी षोडशसंस्कारान्तर्गत (गर्भाधान से समावर्त्तन पर्यन्त) संस्कारों के मुहूर्तों का निर्णय प्रकार दे दिया है। अब हम यहां इस महत्त्वपूर्ण आश्रम के आधारभूत विवाह संस्कार का, जिसे षोडश संस्कारों में अन्तिम माना जाता है, निर्णयप्रकार सप्रपञ्च देंगे।

विवाहांगकृत्य मुख्यतः तीन हैं–

(i) वरवरण मुहूर्त, (ii) कन्यावरण मुहूर्त, (iii) दलन–कण्डन आदि कृत्यारम्भ मुहूर्त।

(i) -: वरवरण मुहूर्त :-

मेलापकपद्धति द्वारा कन्या के लिए निर्धारित वर के घर जाकर कन्या के सहोदर भ्राता आदि वर को कन्यादान का वचन (वाग्दान) विधिपूर्वक दें। वाग्दान के लिए शास्त्रोक्त ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं :–

ग्राह्य तिथि :– दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, शुक्ल पक्ष की 13 और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– कृत्ति., रोहि., पू.फा., उ.फा. पू.षा., उ.षा., पू.भा. और उ.भा. नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– केन्द्र/कोण में शुभग्रह और 3, 6, 11 में क्रूर ग्रह हों। लग्न में शुक्र और उपचय (3, 6, 10, 11) भाव में गुरु हो।

(ii) -: कन्यावरण मुहूर्त :-

वर-वरणानन्तर वरपक्ष के लोग (वर की बहिन आदि) कन्या के वरणार्थ कन्या के घर जा कर कन्यावरण करें। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि ये हैं :–

ग्राह्य तिथि :– कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, शुक्ल पक्ष की 13 और दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11, एवं 12 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– विवाहमुहूर्त्तोक्त नक्षत्र अथवा कृत्ति., पू.फा., स्वा., अनु. पू.षा., उ.षा., श्रव. धनि. और पू.भा. नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– केन्द्र/कोण में शुभग्रह और 3, 6, 11 में पापग्रह और लग्न में शुक्र एवं गुरु उपचयभाव में हो।

(iii)-: दलन–कण्डन आदि कृत्यारम्भ मुहूर्त :-

इस मुहूर्त के अन्तर्गत दलन, कण्डन, गृहालंकरण आदि कृत्य एवं मण्डप आरोपण तथा वर–कन्या के तैल–लापन समाविष्ट हैं। इन कृत्यों के प्रारम्भ से पहले नान्दीश्राद्ध कर लेना चाहिए। तदनन्तर वर के घर में वर का और कन्या के घर में कन्या का चन्द्रबल देखकर विवाहदिन से पूर्ववर्त्ती तीसरे, छठे या नौवें दिन में दलन, कण्डन (धान्य शोधनादि) तथा गृहालंकार आदि मंगलकृत्य स्त्रियों को गीत–नृत्यादि के साथ शुरू करने चाहिएं। इन्हीं दिनों में मण्डपवेदी का निर्माण किया जाए। वर्गाकार वेदी की चारों भुजाएं चार–चार हस्त परिमाण की हों। यह वेदी कन्यागृह में गृह के

बाईं ओर हो। अर्थात् गृह की तरफ मूंह कर खड़े व्यक्ति के दाईं ओर स्थित हो। यहां हस्त परिमाण कन्या का लेना चाहिए। इस मण्डप के पास एक स्तम्भ भी रोपित किया जाए। यह स्तम्भ सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में मण्डप के ईशानकोण में वृश्चिक, धनु, मकर के सूर्य में वायव्य में मेष, कुम्भ, मीनस्थ सूर्य में नैर्ऋत्यकोण में और वृष, मिथुन, कर्कस्थ सूर्य होने पर आग्नेय कोण में गाड़ा जाए। ध्यान रहे-- मण्डप भूमि से एक हाथ ऊंचा होना चाहिए।

इस मण्डप का उद्वासन (विसर्जन) विवाहदिन के बाद 5वें या 7वें दिन किया जाता है। अथवा यह कृत्य विवाहदिन के बाद किसी सम दिन में (छठे दिन को छोड़कर) भी किया जा सकता है।

स्मरण रहे-- नान्दीश्राद्ध के बाद मण्डपोद्वासन तक कुल के सभी सगोत्र सम्बन्धियों को चाहिए कि वे क्षयश्राद्ध, दर्शश्राद्ध, नित्यश्राद्ध, वेदाध्ययन, शीतल जल से स्नान, ग्राम/नगर की सीमा का उल्लंघन एवं नदीपार गमन न करें। इन दिनों उन्हें यज्ञोपवीत (जनेऊ) अपसव्य (दक्षिण कन्धे पर) नहीं करना चाहिए।

इन्हीं दिनों में वर एवं कन्या का तैललापन (तैलाभ्यंग= उबटन) करना चाहिए। वर एवं कन्या की राशि के अनुसार तैललापन की संख्या नीचे कोष्ठक में दी जा रही है--

विभिन्न राशि वाले वर/कन्या के लिए तैललापन संख्या ज्ञापक कोष्ठक

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तैल संख्या	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

-: विवाह मुहूर्त्त :-

पीछे **'सर्वत्रवर्ज्य पदार्थ/दोष'** शीर्षक के अन्तर्गत हमने 57 ऐसे दोषों की चर्चा की है, जो सभी मुहूर्त्तों में सामान्यरूप से वर्ज्य हैं। स्पष्ट है-- यहां ऊपर दिए गए विवाहांगकृत्यों तथा विवाहमुहूर्त्तों में भी ये यथावत् वर्ज्य हैं। कुछ ऐसे विशेष दोष भी हैं, जो विवाहमुहूर्त्त निर्णय में विशेषतः वर्ज्य हैं-- उनका पृथक् विवरण हम यहां दे रहे हैं--

लत्ता दोष :-- सूर्य अपने नक्षत्र से 12वें, पूर्ण चन्द्रमा (विगत पूर्णिमान्तकालिक चन्द्र) 22वें, मंगल 3रे, बुध 7वें, गुरु 6ठे, शुक्र 5वें, शनि 8वें और राहु स्वनक्षत्र से 9वें नक्षत्र पर **'लत्ता दोष'** कारक है। 'लत्ता दोष' से दूषित नक्षत्र में विवाह नहीं होता।

ध्यान रहे-- केवल सौराष्ट्र, शाल्व, मालव प्रदेशों में ही **'लत्ता दोष'** वर्जित किया जाता है; अन्यत्र नहीं।

कुछ आचार्यों के मत में यह दोष केवल मालव (उज्जैन) प्रदेश में ही वर्जित हैं।

पात दोष :-- शूल, गण्ड, हर्षण, व्यतीपात, साध्य और वैधृति नामक योगों के अन्त में विद्यमान नक्षत्र **' पातदूषित'** माना जाता है। यह नक्षत्र भी विवाह में वर्जित है।

शूल योग के अन्त में वर्त्तमान चन्द्रनक्षत्र में **'भुजंगपात'** नामक **'पात'** माना जाता है। ' भुजंगपात' से दूषित नक्षत्र विवाह में विशेष रूप से वर्जित होता है।

कुरुक्षेत्र, जांगल, (फिरोज़पुर, बठिण्डा आदि) में ही पातदोष वर्जित है। कुछ आचार्य तो कलिंग (उड़ीसा), बंग (बंगाल) में ही इस दोष को निषिद्ध कहते है। लेकिन, **ध्यान रहे--** भुजंगपात सर्वत्र वर्जित है-- **' सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः'**।

एकार्गल (खार्जूर) दोष :-- विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति-- इन अशुभ योगों के समय सूर्य के नक्षत्र से विषम नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो **'एकार्गल दोष'** होता है। यह दोष विवाह में अशुभ माना गया है। यहां नक्षत्रगणना साभिजित् करनी चाहिए।

स्मरण रहे-- यह दोष 'काश्मीर' में ही वर्ज्य है।

उपग्रह दोष :-- सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र 5, 7, 8, 10, 14, 15, 18, 19, 21, 22, 23, 24 या 25वां हो तो **'उपग्रह दोष'** माना जाता है। यह दोष भी विवाहार्थ वर्जित होता है।

उपग्रह दोष कुरुक्षेत्र एवं वाह्लिक प्रदेश में ही वर्जित है, अन्यत्र नहीं।

यामित्र दोषः-- लग्न या चन्द्रमा से 7वीं राशि में यदि कोई ग्रह स्थित हो तो **' यामित्र दोष'** होता है अथवा लग्ननवांश किंवा चन्द्रनवांश से

55वें नवांश में कोई ग्रह हो, तो भी यह दोष विशेष माना जाता है। विवाह में इसे भी वर्ज्य कहा गया है।

यह दोष यमुनाप्रदेश (मथुरा आदि) में ही विशेषतः वर्जित है।

ध्यान दें– **यदि विवाहलग्न के समय सूर्य और चन्द्र बलवान् (स्वराशि, मित्रराशि, स्वोच्चादि में) हो तो उपरोक्त लत्ता, पात, एकार्गल, उपग्रह और यामित्र दोष समाप्त हो जाते हैं– ऐसा मुहूर्त्तशास्त्रियों का मत है।**

पञ्चवाण दोष :–सूर्य किसी भी राशि के 9, 18, 27वें अंश में हो तो **रोग**; 3, 12, 21, 30वें अंश में हो तो **अग्नि**; 5, 14, 23वें अंश में **नृप**; 7, 16, 25वें अंश में **चौर** तथा 2, 11, 20, 29वें अंश में हो तो **मृत्युवाण** होता है। विवाह में केवल 'मृत्युवाण' ही वर्जित होता है।

ध्यातव्य है– सूर्यराशि के वर्त्तमान अंशों पर आधारित यह पंचवाण–निर्धारणपद्धति उत्तरभारतीय है। दक्षिणभारतीय पद्धति तो इससे सर्वथा भिन्न है। इस पद्धति में **'पञ्चवाण दोष'** का निर्णय मुहूर्त्तकालिक लग्न एवं तिथि से किया जाता है।

'मृत्युवाण' बुधवार में पूर्णतः वर्जित है। अन्य शेष वारों में इसका दोष केवल प्रातः और सायं सन्ध्या वेला में ही माना जाता है। लेकिन अधिकतर दैवज्ञ इसे (मृत्युवाण को) सभी वारों में सभी समय वर्ज्य मानते हैं।

लत्ता, पात, एकार्गल, उपग्रह, यामित्र और पञ्चवाण दोषों को सरलता पूर्वक समझने के लिए इनसे सम्बद्ध कोष्ठक पृष्ठ..113..पर देखें।

पिछले पृष्ठों पर **"सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष"** शीर्षक के अन्तर्गत निर्दिष्ट 57 दोषों एवं उपरोक्त लत्ता आदि दोषों किञ्च उनके परिहार वचनों को दृष्टि में रखकर *'विवाह संस्कार' के लिए सामान्यरूपेण शुद्धकाल निर्धारित करना चाहिए। विवाह संस्कार के लिए पूर्णतः शुद्धकाल के निर्णयार्थ दैवज्ञ निर्धारित (ग्राह्य) तिथि, नक्षत्र एवं लग्नादि का निर्धारण विचारपूर्वक करें। यहां 'विवाहमुहूर्त्त' निर्णय में ग्राह्य तिथ्यादि निम्न हैं–*

ग्राह्य तिथि :– शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा और कृष्णपक्ष की 13, 14 और 30 तिथियों को छोड़कर शेष तिथियां।

ग्राह्य वार :– सभी वार ग्राह्य हैं।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु. मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :–पहले दिए गए दोषों से रहित एवं यहां ऊपर दिए गए विवाहनक्षत्रों के शुद्धकाल में ही विवाह हो सकता है। विवाह के लिए इसी शुद्धकाल में विवाहलग्न देखा जाता है। इसके लिए विवाहकालिक कुण्डली बनाई जाती है और उसके भिन्न–भिन्न भावों में स्थित ग्रहों के आधार पर 'लग्नशुद्धि' का विचार किया जाता है। जो लग्न शुद्ध (निर्दोष) हो उसी लग्न में विवाह संस्कार किया जाता है। विवाह के समय लग्न की शुद्धि ज्ञात करने के लिए लग्नकालिक ग्रहों की भिन्न–भिन्न भावों में स्थिति की निर्दोषता या सदोषता का विचार इस प्रकार किया जाता है–

1. विवाहलग्न में चन्द्र और पाप ग्रह वर्जित हैं।
2. द्वितीय भाव में कोई भी ग्रहवर्जित नहीं है।
3. तृतीय भाव में शुक्र की स्थिति सामान्य दोषकारक मानी गई है। अगर वह इस भाव में स्थित हो तो उसका दोष पूजा एवं दान से समाप्त हो जाता है।

(जिस विवाहलग्न में किसी सामान्य दोष वाले ग्रह की दान–पूजा की जाती है, उस विवाहलग्न को 'पूजा वाला लग्न' कहा जाता है।)

4. चौथे भाव में राहु की स्थिति भी सामान्य दोषकारक है। इस दोष की निवृत्ति भी राहु की दान–पूजा से समाप्त हो जाती है।
5. पंचम भाव में काई भी ग्रह वर्जित नहीं है।
6. छठे भाव में चन्द्रमा, शुक्र और लग्नेश वर्जित हैं। चन्द्रमा यदि नीचराशि या नीचांश में हो तो इसका यहां दोष नहीं माना जाता। इसी प्रकार नीचस्थ और शत्रुराशिस्थ शुक्र का भी यहां दोष समाप्त हो जाता है। **ध्यान रहे,** यदि चन्द्रमा एवं शुक्र लग्नेश हों तो छठे भाव में इनकी स्थिति के दोष का कोई परिहार नहीं है।
7. सप्तम भाव में गुरु और चन्द्र को छोड़कर शेष सभी ग्रह चर्जित

हैं। यहां चन्द्र और गुरु की स्थिति का दोष सामान्य माना गया है, जो कि इनकी दान–पूजा से शून्य हो जाता है।

8. अष्टम भाव में चन्द्र, मंगल, लग्नेश और सभी शुभ ग्रह वर्जित हैं। नीचस्थ या नीचांशस्थ चन्द्रमा, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ शुक्र और नीचस्थ, शत्रुराशिस्थ या अस्तंगत भौम का इस भाव में स्थितिदोष समाप्त हो जाता है। यदि ये लग्नेश हों तो इनका दोष किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं होता।

9. नवम भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है।

10. दशम भाव में मंगल का दोष सामान्य माना जाता है, जो कि उसकी दान–पूजा से समाप्त हो जाता है।

11. ग्यारहवें भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है।

12. बारहवें भाव में शनि का दोष सामान्य है, जो कि उसकी दान–पूजा से दूर हो जाता है।

13. विवाहलग्न से द्वितीय भाव में कोई क्रूर वक्री ग्रह और द्वादश भाव में कोई क्रूर मार्गी ग्रह हो तो उसे क्रूर कर्त्तरी दोष कहा जाता है। क्रूर कर्त्तरी होने पर विवाहलग्न दूषित हो जाता है।

यदि सप्तमरहित केन्द्र एवं त्रिकोण में बुध, गुरु, शुक्र में से कोई एक भी ग्रह पड़ा हो तब 'क्रूर कर्त्तरी' दोष समाप्त हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले क्रूरग्रह यदि शत्रुराशिस्थ, नीचस्थ या अस्त हों तब भी कर्त्तरी दोष नहीं रहता। द्वितीय या द्वादश भाव में गुरु बैठा हो तब भी कर्त्तरी दोष समाप्त हो जाता है।

14. यदि विवाहलग्न के समय चन्द्र से द्वितीय भाव में कोई क्रूर वक्री ग्रह और द्वादश भाव में क्रूर मार्गी ग्रह बैठा हो तब भी 'क्रूर कर्त्तरी' दोष माना जाता है। इस कर्त्तरी दोष का परिहार भी चन्द्रराशि को विवाहलग्न मानकर पूर्ववत् जानना चाहिए।

ऊपर प्रदर्शित ग्रहस्थिति से लग्न यद्यपि पर्याप्त शुद्ध माना जाता है– फिर भी यहां विशेष ध्यातव्य है– यदि विवाहलग्न के समय सप्तमरहित केन्द्र/त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो, तो लग्न बलवान् हो जाता है और इससे लग्नगत अनेक दोष शून्य हो जाते हैं– यह बात हम पहले भी "सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष" शीर्षक के अन्तर्गत प्रमाण ("अब्दायनर्तु-तिथि-मास-भ-पक्ष-दग्ध....") सहित अनेकदा उद्धृत कर चुके हैं।⊠

गोधूलि लग्न :–सूर्यास्त के समय (सूर्यास्त से लगभग आधा घड़ी पहले और आधा घड़ी बाद तक के समय) को **'गोधूलिकाल'** कहा जाता है। लेकिन गुरुवार को सूर्यास्त के बाद की और शनिवार को सूर्यास्त से पहले की ही आधी घड़ी को गोधूलिकाल माना गया है। यदि किसी कारणवश उपरोक्त प्रकार से बनाया गया विवाहलग्न अनुकूल न बैठे या 'लग्नशद्धि' में प्रदर्शित उपरोक्त प्रक्रिया से शुद्ध लग्न न मिल पाए तो इस गोधूलि के लग्न में भी विवाह किया जा सकता है। गोधूलिलग्न में सूर्यास्त के समय का लग्न लिया जाता है। सूर्यास्तकालिक लग्न (यानी गोधूलिलग्न) का शोधन करते समय केवल यह ध्यान रखना पड़ता है कि गोधूलिलग्न (सूर्यास्तकालिक लग्न) में तथा गोधूलिलग्न से छठे और अष्टम भाव में चन्द्रमा न हो। कुछ आचार्य गोधूलि में लग्न, सप्तम या अष्टम में मंगल को भी वर्ज्य बतलाते हैं। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलिलग्न में नहीं किया जाता। यह जरूरी है कि गोधूलिलग्न के समय विवाहनक्षत्र विद्यमान हो और पहले निर्दिष्ट सभी दोषों से यह मुक्त भी हो।

इस प्रकार विवाह के समय लग्नशुद्धि देखकर शुद्धलग्न में विवाह किया जाता है। यदि लग्न कुण्डली में कोई ऐसा ग्रह पड़ा हो जो वर्जित है और उसका कोई परिहार नहीं है, तब वह लग्न विवाह के लिए ग्राह्य नहीं होता।

बलवान् विवाहलग्न :– विगत पृष्ठ पर शुद्ध विवाहलग्न की ग्रहस्थिति को हमने स्पष्ट किया है। उससे विवाहलग्न पर्याप्त शुद्ध किंवा ग्राह्य होगा। अब यहां कुछ और ग्रहस्थितियों का विवरण हम दे रहे है, जिनसे विवाहलग्न पूर्णतः बलवान् होगा।

⊠ *ध्यानरहे–"अब्दायनर्तु-तिथि-मास-भ-पक्ष-दग्ध...."प्रमाण- वाक्यानुसार मुहूर्त–लग्नकालिक, कुलिक, यामार्धादि दोषों तथा तिथि, वार, पक्षादिगत अन्य अनेक दोषों की समाप्ति के लिए केन्द्र/ कोण में शुभग्रह (गुरु, शुक्र, बुध) की स्थिति अपेक्षित है। लेकिन केवल विवाहमुहूर्त्तकालिक लग्न के समय इन दोषों के निवृत्त्यर्थ केन्द्र हमेशा सप्तम हीन ही लिया जाता है। अन्य सभी मुहूर्तों में तो केन्द्र के चारों भावों में इन शुभग्रहों की स्थिति ही दोषनिवृत्त्यर्थ ग्राह्य है– अर्थात् वहां (विवाहमुहूर्तेतर मुहूर्तों में) सप्तम भाव त्याज्य नहीं है। यह विशेष बात दैवज्ञ को ध्यान में रखनी चाहिए।*

विवाहलग्न यदि बलवान् हो तो मिलान में अष्टकूटों के गुण कुछ कम होने या वर–कन्या की कुण्डलियों के मिलान में कुछ कमी रह जाने की स्थिति में भी दाम्पत्यजीवन सुखमय हो सकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि विवाहकालिक लग्न के समय ग्रह आदि की उन स्थितियों को, जो विवाहलग्न को बलवान् बनाती हैं, स्वीकार किया जाए। विवाहलग्न को बलवान् बनाने वाली विवाहलग्नकालिक ग्रहस्थितियां एवं अन्य पदार्थ ये हैं–

1. गुरु, शुक्र, बुध में से अधिकाधिक ग्रह सप्तमहीन केन्द्र या त्रिकोण में हों।

2. सूर्य ग्यारहवें भाव में हो।

3. चन्द्र ग्यारहवें भाव, वर्गोत्तम या अपने नवांश में हो।

4. लग्नेश या लग्ननवांशेश ग्यारहवें या सप्तमहीन केन्द्र में सबल स्थिति में हो।

5. लग्न वर्गोत्तमगत हो।

उपरोक्त पदार्थों में से जितने अधिक पदार्थ विवाहलग्न के समय स्वीकार किए जाएंगे, विवाहलग्न उतना ही अधिक बलवान् होगा। यहां गुरु एवं शुक्र की सप्तमहीन केन्द्र तथा त्रिकोण में स्थिति को प्राथमिकता देनी चाहिए। गुरु की लग्न में स्थिति को मुहूर्त्तशास्त्रियों ने सर्वाधिक महत्त्व दिया है। प्रमाणार्थ ये वाक्य उद्धृत किए जा रहे हैं–

केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा, लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषाः नाशमायान्ति चन्द्रे, लाभे तदवद् दुर्मुहूर्त्तांशदोषाः।।
त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकम्
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः।
भवेदाये केन्द्रेऽगप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति।।

(मुहूर्त्त चिन्तामणि)

तिथि–नक्षत्र–वारों के योग से उत्पन्न क्रकच, हुताशन, यमघण्ट, दग्ध, विष, मृत्यु आदि कुयोग रात्रि में निष्प्रभाव हो जाते हैं– इस दृष्टि से रात्रि में विवाह करना अधिक शुभकर है।

बलवान् विवाहलग्न चाहने वालों को गोधूलि एवं 'पूजा वाले लग्न' की उपेक्षा करनी चाहिए और उन्हें ''त्रिबलशुद्धि'' (गोचर में सूर्य, चन्द्र, गुरुबल) द्वारा सर्वथा शुद्धकाल में विवाह करना भी जरूरी है। अब हम वर/कन्या के त्रिबलशुद्धि के बारे में नीचे विवेचन दे रहे हैं।

त्रिबलशुद्धि :– विगत पृष्ठों पर **'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष'** शीर्षक के अन्तर्गत दिए गए तथा उपरोक्त लत्ता आदि दोषों से रहित किंवा लग्न की दृष्टि से विवाह के लिए सर्वथा निर्दोष मुहूर्त्त प्रतिवर्ष पंचांगों में दिए रहते हैं, जिन्हें उस वर्ष के **'शुद्ध विवाह मुहूर्त्त'** कहा जाता है। ये शुद्ध मुहूर्त्त बतलाते हैं कि– यदि इस वर्ष किसी का विवाह हो सकता है, तो वह इन्हीं मुहूर्त्तों में निर्धारित समय के अन्तर्गत ही होना संभव है। लेकिन ''कौन से शुद्ध विवाहमुहूर्त्त में किस लड़के/लड़की का विवाह किया जाए''–यह निर्णय तो वर/कन्या की जन्मराशियों और विवाहमुहूर्त्तकालिक सूर्य, चन्द्र, गुरु की शुभ गोचर स्थिति पर ही निर्भर करता है। इन तीनों (सू.चं.गु.) के गोचरबल को ही यहां **'त्रिबल'** की संज्ञा दी गई है।

ध्यान दें– कन्या की जन्मराशि से गोचर चन्द्र एवं गुरु का बल और वर की जन्मराशि से गोचर सूर्य एवं चन्द्र का बल देखा जाता है। इन बलों के अभाव में विवाहसंस्कार सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

गोचर बल देखने का प्रकार यह है–

(i) यदि वर की राशि से विवाहमुहूर्त्तकालीन गोचर सूर्य 3, 6, 10, 11वें हो तो वह (गोचर सूर्य) शुभ; 1, 2, 5, 7, 9वें हो तो पूज्य (थोड़ा अशुभ) एवं यदि 4, 8, 12वें हो तो अशुभ होता है।

इसी प्रकार यदि वरराशि से विवाहमुहूर्त्तकालिक गोचर चन्द्र 1, 3, 6, 7, 10, 11वें हो तो वह (गोचर चन्द्र) शुभ; 2, 5, 9, 12वें हो तो पूज्य (थोड़ा अशुभ) और 4, 8वें हो तो अशुभ होता है।

(ii) कन्या की राशि से ठीक इसी तरह गोचर चन्द्र की उपरोक्त (वर के लिए बतलाई गई) स्थितियों के अनुसार ही वह (गोचर चन्द्र) कन्या के लिए शुभ, पूज्य और अशुभ होता है।

इसी भान्ति कन्या की राशि से विवाहमुहूर्त्तकालीन गोचर गुरु यदि 2, 5, 7, 9, 11वें हो तो वह (गोचर गुरु) शुभ; 1, 3, 6, 10वें हो तो पूज्य तथा 4, 8, 12वें हो तो वह अशुभ माना जाता है।

वर/कन्या के गोचर सूर्य, चन्द्र और गुरु की शुभाशुभ आदि स्थिति का यह सामान्य निर्णय है। इसका विशेष निर्णय नीचे दिया जा रहा है। लीजिए–

उपरोक्त सामान्य निर्णयानुसार वर/कन्या के लिए शुभ गोचर सूर्य, चन्द्र, गुरु यदि स्वराशि, स्वोच्च, स्वमित्र, वर्गोत्तमनवांश में स्थित एवं शुभग्रह से दृष्ट हो तो वह परम शुभ, यदि नीचस्थ, शत्रुस्थ, अस्त एवं क्रूर/शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो सामान्य माना जाएगा। इसी तरह सामान्य निर्णयानुसार वर/कन्या के ये पूज्य ग्रह उच्च, मित्रराशि आदि में या मित्र, शुभग्रह से दृष्ट हों तो वे सामान्य एवं नीच/शत्रुराशि आदि में या शत्रु/क्रूर से दृष्ट हों तो अशुभ माने जाएंगे।

ठीक, इसी प्रकार वर/कन्या के लिए सामान्य निर्णयानुसार अशुभ– ये तीनों ग्रह यदि स्वोच्चादि में स्थित या शुभ किंवा मित्रग्रहों से दृष्ट हों तो सामान्य एवं नीचादि गत हों अथवा शत्रु/पापग्रहों की नज़र में हों तो परम अशुभ माने जाएंगे।

इस प्रकार विशेष निर्णय द्वारा वर/कन्या के लिए यदि गोचर सू., चं. या गुरु शुभ/परमशुभ हैं तो समझें कि, उस ग्रह का वर/कन्या को पूर्णबल प्राप्त है। यदि वह (सू., चं., गु. में से कोई भी) सामान्य है तो जानना चाहिए कि उस ग्रह का वर/कन्या को सामान्य (मध्यन) बल प्राप्त है। यदि वह गोचरग्रह अशुभ या परम अशुभ है तो उसे (वर/कन्या को) उस गोचरग्रह का शून्यबल मिलेगा।

यदि गोचरग्रह पूर्ण बली हो तो विवाह परम शुभ होगा। गोचर में सामान्य बलीग्रह की पूजा–अर्चना के बाद ही वर/कन्या का विवाह करना चाहिए। लेकिन, यदि सूर्य, चन्द्र या गुरु में से किसी एक का भी बल शून्य है तो उस समय विवाहार्थ शास्त्र अनुमति नहीं देते। हां, अत्यावश्यकता होने पर ऐसी स्थिति में शून्यबल वाले गोचरग्रह की 'त्रिगुण पूजा–अर्चना' करके ही विवाह किया जा सकता है।

ध्यातव्य है– विवाह से पूर्व ही(पितृगृह में) रजस्वला कन्या के लिए कुछ आचार्य शून्यबल वाले गुरु के दोष को उपेक्ष्य कहते है। लेकिन इसके लिए भी लगभग सभी आचार्यों ने गुरु के 'त्रिगुणार्चन' का अनुमोदन किया है।

कुछ दैवज्ञ लोग वर/कन्या की जन्मराशि से 12वें चन्द्रमा भी अशुभ मानते हैं। लेकिन विवाह में 12वें गोचर चन्द्र अनेक शास्त्रकारों द्वारा ग्राह्य बतलाया गया है। देखिए–

गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

(दैवज्ञ कल्पद्रुम)

इस प्रकार कन्या का चन्द्र और गुरुबल एवं वर का चन्द्र और सूर्यबल प्राप्त होने पर निर्धारित शुद्ध लग्न में विवाह किया जाता है।

'त्रिबलशुद्धि' के विस्तृत स्पष्टीकरण के लिए मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन'** देखिए।

विवाह से सम्बद्ध कुछेक आवश्यक निर्देश, जो **"चौल–उपनयन–विवाह मुहूर्तों के लिए विशेष ज्ञातव्य"** शीर्षक के अन्तर्गत हम यहां नीचे दे रहे हैं, दैवज्ञ को अवश्य ज्ञात होने चाहिएं।

–चौल,उपनयन,विवाह मुहूर्तके लिए विशेष ज्ञातव्य–

(1) पुत्रविवाहोपरान्त छः मास के भीतर पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिए। यदि छः महीने के भीतर वर्ष (संवत्सर) बदल जाए तो पुत्री का विवाह भिन्न संवत्सर में छः माह के भीतर ही किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ– पुत्र का विवाह फाल्गुन मास में हुआ हो, तो पुत्री का विवाह तदनन्तर ही पार्श्ववर्ती चैत्र, वैशाखादि में किया जा सकता है, क्योंकि वहां संवत्सर बदल जाएगा।

(2) दो सहोदर भाइयों, सहोदर भाई–बहनों या सहोदर बहनों का समान मांगलिक कृत्य (चौल, उपनयन या विवाहादि) एक ही वर्ष के भीतर नहीं करना चाहिए। यदि 12 मास के भीतर ही संवत्सर परिवर्त्तन हो जाए, तो उन दो भिन्न–भिन्न संवत्सरों में उनका समान मांगलिक कृत्य किया जा सकता है। **ध्यान रहे–** भिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न भाई–बहनों के लिए यह नियम नहीं है।

(3) उपनयन एवं विवाह संस्कार के बाद मंगलाभिलाषी के परिवार में कोई भी छः माह के भीतर मुण्डन संस्कार न करवाए। छः महीने के भीतर यदि संवत्सर परिवर्तित हो जाए, तो भिन्न संवत्सर में यह (मुण्डन) कर्म किया जा सकता है।

(4) एक ही गृह और एक ही वेदिका, मण्डप में एक ही परिवार के एक ही दिन/मुहूर्त में दो विवाह करना शास्त्रविरुद्ध हैं। आवश्यकता की स्थिति में दो भिन्न–भिन्न घरों में, नदी के अलग–अलग तटों पर

अथवा पर्वतश्रेणी केदो भिन्न–भिन्न पार्श्वभागों में एक ही दिन/मुहूर्त्त में एक ही परिवार के दो विवाह सम्पन्न किए जा सकते हैं; बशर्ते कि,–वहां विवाहकृत्य सम्पन्न कराने वाले कर्मकाण्डी (आचार्य=उपाध्याय) दो हों।

(5) यमल (जुड़वां सहोदरों) का एक ही दिन एक ही मण्डप में विवाह हो सकता है। लेकिन याद रहे कि यहां यमल भाइयों में ज्येष्ठ भाई का विवाह पहले और कनिष्ठ भाई का बाद में हो। इसी तरह यमल बहनों में ज्येष्ठ बहन का विवाह पहले और कनिष्ठ बहन का बाद में किया जाए। यह भी ध्यान रहे कि यदि दो यमल भाई–बहनों का विवाह हो रहा हो तो बहन का पहले और भाई का बाद में किया जाए।

(6) ज्येष्ठ वर और ज्येष्ठ कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में वर्जित है। इसे **'त्रिज्येष्ठ दोष'** कहा जाता है। वर और कन्या में से यदि एक ही ज्येष्ठ हो, तब उनका विवाह भी ज्येष्ठ में करना ज्यादा शुभ नहीं माना जाता है। इसे **'द्विज्येष्ठ'** दोष कहते हैं। **ध्यान रहे–** कृत्तिकास्थ सूर्य के काल को छोड़कर ज्येष्ठ वर/कन्या का विवाह ज्येष्ठ में भी किया जा सकता है।

(7) दो सहोदर बहनों का विवाह दो सहोदर भाइयों से नहीं करना चाहिए।

(8) एक ही वर से दो सहोदर बहनों के विवाह की अनुमति भी धर्मशास्त्र नहीं देते। एक के मर जाने पर दूसरी कन्या (बहन) का विवाह वहां उसी वर (उसकी बहन के पति) से किया जा सकता है।

(9) नववधूप्रवेश के बाद बेटी का द्विरागमन छः मास के पश्चात् किया जाए। यदि छः मास के भीतर ही संवत्सर–परिवर्तन हो जाए तो भिन्न संवत्सर में बेटी का द्विरागमन छः मास के भीतर भी किया जा सकता है।

(10) दो भिन्न–भिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न बेटों/बेटियों के विवाह का अन्तर कम से कम चार दिन अवश्य हो।

(11) प्रत्युद्वाह धर्मशास्त्र विरुद्ध है। " मेरे बेटे को अपनी पुत्री दे दें, मैं आपके बेटे को अपनी पुत्री देता हूँ।" "बहन दे दो, मैं तुम्हें अपनी बहन देता हूँ"– इत्यादि प्रतिबन्धात्मक विवाह को प्रत्युद्वाह कहते है। विदशता की स्थिति में प्रत्युद्वाह करने की शास्त्रानुमति है।

(12) विवाह के पश्चात् विवाहित व्यक्ति को एक वर्ष तक तिल तर्पण तथा सपिण्डश्राद्ध नहीं करना चाहिए। महालय (आश्विन कृष्ण पक्ष) श्राद्ध, गयाश्राद्ध तथा माता/पिता के क्षयाह श्राद्ध के लिए यह निषेध नहीं है।

(13) कन्या के विवाह के दिन माता, पिता (दाता) आदि को उपवास करना चाहिए। कन्यादान के अनन्तर ही वे पारणा करें।

(14) भोजन से तृप्त वर को ही कन्यादान करना चाहिए।

(15) उपनयन संस्कार में भूखे बटुक (ब्रह्मचारी) को गायत्री मन्त्र से कभी दीक्षित न करें। दीक्षा से पूर्व उसे भोजन से तृप्त होना चाहिए।

–: नववधू प्रवेश मुहूर्त्तः–

विवाहदिन से 16 दिन के भीतर सम दिनों में अथवा 5, 7 या 9 वें दिन नववधू का भर्तागृह में प्रवेश शुभ माना जाता है। विवाह वाले दिन में भी नववधूप्रवेश की शास्त्रों द्वारा अनुमति है। 16 दिनों के बाद एक मास तक विषम दिनों में; एक मास के बाद एक वर्ष तक विषम मास में और वर्षानन्तर 5 वर्ष पर्यन्त विषम वर्ष में एवं 5 वर्ष के बाद यथेच्छ किसी भी दिन शुभमुहूर्त्त में वधू अपने भर्ता के गृह में प्रविष्ट हो सकती है। **ध्यान रहे–** विवाहानन्तर 16 दिनों के भीतर वधूप्रवेश के लिए चन्द्रबल, गुरु–शुक्रास्तादि दोष, सम्मुख–दक्षिणस्थ शुक्रदोष आदि का विचार नहीं किया जाता। हां, प्रवेश के समय अल्पकालिक भद्रा आदि दोषों का तो प्रयत्नपूर्वक त्याग करना ही चाहिए। 16 दिनों के बाद तो वधूप्रवेश के लिए गुरु–शुक्रास्त, सम्मुख–दक्षिण शुक्र आदि सभी दोष विचारने ही होंगे। सम्मुख–दक्षिणस्थ आदि शुक्र की जानकारी के लिए यहां आगे 'द्विरागमन–मुहूर्त्त' निर्णय के अन्त में दिया गया 'कोष्ठक' देखें।

16 दिन के पश्चात् वधूगृहप्रवेशार्थ ग्राह्य तिथ्यादि ये है :–

ग्राह्य तिथि :– रिक्ता (4, 9, 14) और अमा को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार।

(कुछ आचार्य वधूप्रवेश में बुधवार को शुभ नहीं मानते।)

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– रात्रि के समय स्थिर लग्न किंवा स्थिरनवांश में वधूप्रवेश शुभ माना जाता है।

प्रथम वर्ष में नववधू का ससुराल/पितृगृह में निवास

नववधू का विवाहानन्तर प्रथम ज्येष्ठ में पतिगृह में रहना ज्येष्ठ (पति के बड़े भाई) के लिए; प्रथम अधिक मास में अपने पति; प्रथम आषाढ़ में सास; प्रथम पौष में श्वसुर और प्रथम क्षयमास में उसके (वधू के) अपने लिए ही अशुभ माना गया है। ठीक, इसी भान्ति विवाह के बाद यदि वह प्रथम चैत्र में पितृगृह में वास करे तो वह पिता के लिए अनिष्टप्रद है।

नववधू के लिए कपाट/कण्टक दिशाएं

नववधू को विवाह के बाद एक वर्ष तक ससुराल/पितृगृह से निम्नांकित कपाट/कंटक दिशाओं में स्थित अन्य ग्राम आदि में नहीं जाना चाहिए। कपाट/कंटक दिशाओं का विवरण इस प्रकार है :–

विभिन्न मासों में कपाट दिशाएं

भाद्र., आश्वि., कार्त्ति.	–	पूर्व/आग्नेय कपाट।
मार्ग., पौष, माघ	–	दक्षि/नैर्ऋत्य कपाट।
फाल्गु., चैत्र, वैशा.	–	पश्चिम/वायव्य कपाट।
ज्ये., आषा., श्राव.,	–	उत्तर/ऐशान कपाट।

विभिन्न मासों में कण्टक दिशाएं

चैत्र, वैशाख	–	पूर्व कण्टक
ज्येष्ठ	–	आग्नेय कण्टक
आषाढ़, श्रावण	–	दक्षिण कण्टक
भादपद्र	–	नैर्ऋत्य कण्टक
आश्वि., कात्तिक	–	पश्चिम कण्टक
मार्गशीर्ष	–	वायव्य कण्टक
पौष, माघ	–	उत्तर कण्टक
फाल्गुन	–	ऐशान कण्टक

स्पष्टीकरणार्थः– भाद्र., आश्वि., कार्त्ति. में पूर्व/आग्नेय दिशाओं में कपाट रहता है, अतः नववधू को इन मासों में पूर्व/आग्नेय दिशाओं में स्थित ग्रामादि में नहीं जाना चाहिए। इसी प्रकार चैत्र, वैशाख में पूर्वदिशा में कण्टक होता है, अतः नववधू को इन मासों में पूर्वदिशा में स्थित ग्राम आदि में गमन नहीं करना चाहिए।

–ः द्विरागमन मुहूर्त्त :–

नववधू–प्रवेशानन्तर पितृगृह में गमन के पश्चात् कुछ दिन/मास/वर्षों के बाद जब वह (वधू) भर्तृगृह में वापिस आती है, उसे **'द्विरागमन'** की संज्ञा मुहूर्त्तशास्त्रियों ने दी है

यदि द्विरागमन विवाहदिन से 16 दिन के भीतर ग्याहरवें दिन या सम दिनों में किया जाए, तो चन्दबल, गुरु, शुक्रास्तादि तथा सम्मुख–दक्षिणस्थ शुक्र आदि दोषों का विचार नहीं किया जाता। यदि कन्या पितृगृह में रजस्वला हो जाए तब भी सम्मुख दक्षिणस्थ शुक्र आदि किसी दोष का विचार किए बिना ही वह पंचांगशुद्धि रहित काल में भी भर्तृगृह में प्रवेश कर सकती है।

नववधूप्रवेश दिन के अनन्तर विषम वर्ष में मेष, वृश्चिक या कुम्भस्थ सूर्य के समय, वर का सूर्यबल और कन्या का गुरुबल देखकर द्विरागमन करना चाहिए।

एतदर्थ ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं–

ग्राह्य तिथि :– रिक्ता और अमा को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– :– अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., अभि., श्रव., धनि., शत., उ.भा., और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– वृष, मिथुन, कन्या, तुला और मीन लग्न ग्राह्य हैं। मुहूर्तकालिकलग्न पर शुभ ग्रहों की नज़र हो।

शुक्र के सम्मुख–दक्षिणस्थ आदि के ज्ञानार्थ (स्पष्टीकरणार्थ) यहां अगले पृष्ठ पर एक कोष्ठक दे रहे हैं–

सम्मुखस्थ आदि शुक्र बोधक कोष्ठक				
यात्रा दिशा	पूर्व / आग्नेय	दक्षिण / नैर्ऋत्य	पश्चिम / वायव्य	उत्तर / ऐशान
पूर्वोदित शुक्र	सम्मुख (वर्ज्य)	वाम (ग्राह्य)	पृष्ठ (ग्राह्य)	दक्षिण (वर्ज्य)
पश्चिमोदित शुक्र	पृष्ठ (ग्राह्य)	दक्षिण (वर्ज्य)	सम्मुख (वर्ज्य)	वाम (ग्राह्य)

स्पष्टीकरण :– शुक्र के पूर्वोदयकाल में पूर्व की ओर यात्रा वर्ज्य है; क्योंकि, तब शुक्र 'सम्मुख' होगा। इसी प्रकार शुक्र के पश्चिमोदयकाल में पूर्व की ओर यात्रा शुभ होगी, क्योंकि तब शुक्र पृष्ठस्थ होगा। **ध्यान रहे**– आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य,और ऐशानकोण मुहूर्तशास्त्र में क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशाओं के ही अंग माने गए हैं।

–ः पुनर्विवाहमुहूर्त्त ः–

पुनर्विवाह को हम यहां तीन भागों में बांटेंगेः- (i) दम्पती पुनर्विवाह, (ii) पुरुष पुनर्विवाह, और (iii) स्त्री पुनर्विवाह।

(1) दम्पती पुनर्विवाह :– यदि किसी दम्पती का विवाह त्रुटिवश वर्जित (पंचांग शुद्ध्यादिरहित) काल में हो गया हो तो उनका विवाह पुनः शुद्ध (विहित) काल में कर लेना चाहिए– ऐसा मुहूर्त्तशास्त्रकार कहते हैं।

(2) पुरुष पुनर्विवाह :– यदि पुरुष अपने दो विवाहों के बाद किसी कारणवश (पत्नी मृत्यु या सन्तान अभावादि के कारण) तीसरा विवाह करना चाहता है तो धर्मशास्त्रकारों का निर्देश है कि वह तीसरा विवाह मानुषी (कन्या) से न करवाए। क्योंकि इसे शास्त्रों में अत्यन्त अशुभप्रद (दोनों में से एक की मृत्युप्रद) माना है। अतः इस कुफल से बचने के लिए उसे तीसरा विवाह अर्क (आक के पौधे) से करवाकर पुनः चतुर्थविवाह मानुषी (कन्या) से करवाना चाहिए। अर्कविवाह की पद्धति **'धर्मसिन्धु'** आदि में देखिए।

ध्यान रहे :– पूर्व पत्नी की मृत्यु के दिन से विषम 3–5 आदि वर्षों में ही पुनर्विवाह करना चाहिए– ऐसी धर्पशास्त्राज्ञा है। पुरुष पुनर्विवाह में द्वितीय विवाह के लिए कोई विशेष नियम नहीं है– यह प्रथम विवाहवत् किया जा सकता है।

(3) स्त्री पुनर्विवाह :– यदि विधवा या परित्यक्ता स्त्री पुनर्विवाह करना चाहती हो तो उसके भावी पति से उसका गुण (नाड़ी दोष) आदि का मिलान किंवा ग्रहमिलान (कुज दोष आदि का विचार) न करें। शास्त्रादेश है कि. इस पुनर्विवाह में केवल विवाह [illegible]

किया जाए। गुरु–शुक्रास्त आदि भी यहां उपेक्ष्य हैं। इस विवाह में ब्रह्मपट्ट तथा रुद्रपट्ट द्वारा विवाहनक्षत्र की शुद्ध्यशुद्धि (शुभाशुभता) का निम्नांकित प्रकार से निर्णय अवश्य कर लेना चाहिए–

ब्रह्मपट्ट / रुद्रपट्ट से नक्षत्रशुद्धि का प्रकार

सूर्य के नक्षत्र से गणना करते हुए 3–3 नक्षत्रों के 9 वर्ग (Groups) बनाएं। इनके प्रथम, द्वितीय आदि वर्ग वाले विवाहनक्षत्रों में स्त्री का पुनर्विवाह करने पर क्रमशः मृत्यु, धनलाभ, मृत्यु, मृत्यु, पुत्रलाभ, मृत्यु, दौर्भाग्य, लक्ष्मी और प्रगति– ये फल लिखे हैं।

यह बह्मपट्ट नक्षत्रशुद्धि का प्रकार है। सूर्यनक्षत्र से साभिजित् गणना करने पर 4था, 11वां, 18वां और 25वां विवाहनक्षत्र मृत्युदायक होता है। शेष नक्षत्र स्त्री के पुनर्विवाह हेतु शुभ हैं। यह 'रुद्रपट्ट' द्वारा नक्षत्र. शुद्धि है।

इस प्रकार ब्रह्म / रुद्रपट्टों द्वारा विवाहनक्षत्र की शुद्धि जानकर उस शुद्ध विवाहनक्षत्र में स्त्री का पुनर्विवाह करना चाहिए।

एक से अधिक वार विवाह करने वाली स्त्री को 'पुनर्भू' कहते हैं।

–ः यात्रा मुहूर्त्त ः –

यात्रामुहूर्त्त के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाला 'यात्रा' मूलतः राजा / महाराजाओं की विजययात्रा से ही विशेषरूपेण सम्बन्ध रखता है– यह मुहूर्तग्रन्थों के यात्राप्रकरण स्पष्ट कहते हैं। वैसे, तीर्थगमन, तथा व्यवसाय आदि के लिए की जाने वाली देश–विदेश की यात्रा आदि के लिए भी ये मुहूर्त्त समान रूप से समान न्यायेन सर्वथा यथावत् उपयोगी हैं। अतः मुहूर्त्तकारों का दृढ़ आग्रह है कि– इस प्रकार की सभी यात्राओं के लिए इस फलितशाखा का उपयोग सामान्यजन को भी अनिवार्यतः अवश्य करना चाहिए। वैसे, अब तो प्राजातान्त्रिक प्रणाली में राजा / महाराजाओं के विलय के बाद यात्रामुहूर्त्त की उपयोगता केवल साधारणजन के लिए ही बन कर रह गई है।

मुहूर्त्तविदों का अभिमत है कि संशोधित शुभकाल में प्रारम्भ की गई यात्रा प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल फलप्रद होती है। उनकी यह चेतावनी है कि, यदि यात्रार्थ संशोधित काल के प्रतिकूल कोई यात्रा करता है तो [illegible]

के निर्णयार्थ, जितना व्यापक और सूक्ष्म विचार दैवज्ञों ने किया है, उतना किसी अन्य मुहूर्त्त के लिए नहीं किया गया, शायद विवाहमुहूर्त्त के लिए भी नहीं। इस मुहूर्त्त के काल को सूक्ष्मता से निर्धारित करने के लिए फलितशास्त्रीय सिद्धान्तों और नियमों के अलावा अनेक अन्यशास्त्रीय नियमों को भी अपनाया गया है। यात्राकाल को सर्वथा दोषमुक्त रूप में उपस्थापित करने के लिए विभिन्न मौहूर्तिक विचारधाराओं का अद्भुत जमघट इस फलितशास्त्र में देखने को मिलता है। क्योंकि इन सभी निर्दिष्ट नियमों का शुभ यात्राकाल के निर्णयार्थ पालन कर पाना सर्वथा असंभव है, अतः हम यहां 'यात्रा मुहूर्त्त' से सम्बद्ध अनुपेक्ष्य (मुख्य) नियमों से ही अपने पाठकों को अवगत कराएंगे। इस विषय के अधिकतर नियम, जिनकी हम ने यहां उपेक्षा की है,– परवर्त्ती काल में स्थानीय परम्पराओं के आधार पर ज्योतिष की इस शाखा में प्रविष्ट हुए हैं।

लीजिए,– अब हम अपने पाठकों को 'यात्रा मुहूर्त्त' से सम्बद्ध अनुपेक्ष्य महत्त्वपूर्ण मूलभूत पदार्थों से अवगत कराते हैं। मुहूर्त्तकारों ने यात्रामुहूर्त्त–निर्णय के लिए जिन वर्ज्यावर्ज्य पदार्थों पर विशेष बल दिया है, वे पदार्थ ये हैं–

(i) जातक की वर्त्तमान दशा–अन्तर्दशा।
(ii) अयन (उत्तरायण और दक्षिणायन)।
(iii) गुरु–शुक्रास्तादि।
(iv) चन्द्रसामुख्यादि।
(v) घातमास, घातचन्द्र।
(vi) ग्राह्य तिथि।
(vii) ग्राह्य वार।
(viii) ग्राह्य नक्षत्र।
(ix) ग्राह्य लग्न।
(x) शुभाशुभ शकुन।

इन पदार्थों का सप्रपञ्च विवेचन नीचे क्रमशः दिया जा रहा है–

(i) जातक की वर्तमान दशा–अन्तर्दशा :- मुहूर्त्तविदों का मत है कि यात्राकारी जातक की वर्तमान दशा अन्तर्दशा या प्रत्यंतर्दशा अशुभ ग्रह की हो या दशेश मारक हो तो उसे यात्रा में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए। अशुभ दशादि में यात्रा करने पर वह दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है, एवं यात्रा के उद्देश्य में वह सफल नहीं हो सकता। उसे भारी आर्थिक हानि भी हो सकती है। अतः आवश्यक है कि शुभ ग्रह किंवा कारक ग्रह की दशान्तर्दशा आदि में ही वह यात्रा प्रारम्भ करे। यदि अशुभ ग्रह की दशा दीर्घगामी हो और यात्रा के लिए कालक्षेप संभव न हो, तब ऐसी आवश्यकता की स्थिति में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा–प्रत्यंन्तर्दशा अथवा सूक्ष्मदशा में भी यात्रा प्रारम्भ की जा सकती है। ऐसी स्थिति में अशुभ महादशा के स्वामी ग्रह की पूजा–अर्चना करना आवश्यक है।

(ii) अयन (उत्तरायण और दक्षिणायन) :- मुहूर्तशास्त्रियों ने सूर्य/चन्द्र के अयनों के आधार पर भी यात्रा की शुभाशुभता का निर्णय किया है। जो इस प्रकार है–

सूर्य और चन्द्र दोनों उत्तरायण में हों तो किसी भी समय उत्तर/पूर्व में यात्रा की जा सकती है। इसी भान्ति यदि वे दोनों दक्षिणायन में सञ्चरण कर रहे हों तो कभी भी दक्षिण/पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। यदि दोनों के अयन भिन्न–भिन्न हों, तब चन्द्रमा के अयन की दिशा में रात्रि के समय और सूर्य के अयन की दिशा में दिन के समय यात्रा शुरु करना शुभ माना जाता है। **ध्यान रहे–** यात्रा के समय अयन के आधार पर यदि उत्तर दिशा शुभ है, तो पूर्व दिशा भी यात्रार्थ शुभ माननी पड़ेगी। इसी तरह दक्षिण दिशा के शुभ होने पर पश्चिम दिशा भी यात्रा के लिए शुभ मानी जाए।

सूर्य के उत्तरायण–दक्षिणायन की ही भान्ति चन्द्रमा के उत्तरायण–दक्षिणायन भी क्रमशः उसके सायन मकर एवं सायन कर्क राशि में प्रवेश से प्रारम्भ होते हैं।

(iii) गुरु–शुक्रास्त आदि :- गुरु और शुक्र का अस्त एवं बाल्य/वार्धक्यकाल यात्रारम्भ के लिए शुभ नहीं माना जाता। यदि आपात स्थितिवश इनके अस्तादि काल में यात्रा करना अपरिहार्य हो तो अस्तंगत ग्रह (गुरु–शुक्र) की पूजार्चना करने के बाद ही यात्रा में प्रवृत्त होना चाहिए। **ध्यातव्य है–** अपूर्व तीर्थयात्रा भी गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

यात्रा में शुक्रग्रह का महत्त्व अपेक्षाकृत अधिक माना जाता है। सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र होने पर यात्रा कदापि न की जाए– ऐसा मुहूर्त्तविदों का आदेश है। ऐसी दिशा में ही वे यात्रारम्भ का निर्देश देते हैं, जिस दिशा की ओर जाते हुए शुक्र यात्री को पृष्ठस्थ या वामस्थ हो।

(शुक्र की सम्मुख, दक्षिण, वाम एवं पृष्ठस्थ स्थिति के ज्ञान के लिए 'द्विरागमन मुहूर्त्त' के अन्त में, पृष्ठ.. 88 पर दिया गया एतत्सम्बद्ध 'कोष्ठक' देखिए।)

शुक्र के सम्मुखस्थितिआदि दोष के बारे में निम्नांकित कुछेक आवश्यक निर्देश दैवज्ञों को ध्यान में अवश्य रखने चाहिएः–

(a) रेव., अश्वि., भर. और कृत्तिका (प्रथम चरण) में चन्द्रमा की स्थिति के समय सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र का दोष नहीं होता, क्योंकि, तब शुक्र को 'अन्धा' माना जाता है।

(b) विवाहकाल एवं तीर्थयात्रा में सम्मुख–दक्षिणस्थ शुक्र का दोष नहीं माना जाता।

(c) विवाह के 16 दिन के भीतर नववधू प्रवेश एवं द्विरागमन होने पर भी शुक्र के सम्मुख–दक्षिणस्थ दोष को नहीं विचारा जाता।

ध्यान दें– आपातस्थिति में यदि शुक्र के सम्मुख/दक्षिणस्थकाल में यात्रा करना आवश्यक हो, तो शुक्र की पूजा–अर्चना, दानादि के बाद ही यात्रा करनी चाहिए– ऐसा मुहूर्तकारों का निर्देश है। कुछ मुहूर्ताचार्यों का मत है कि सम्मुख/दक्षिणस्थ बुध वाली दिशा में भी नहीं जाना चाहिए। जिस दिशा में बुध पृष्ठस्थ/वामस्थ हो, उस दिशा की यात्रा को वे शुभ कहते हैं। बुध की सम्मुखदक्षिणस्थ आदि स्थितियां पृष्ठ 88 पर दिए गए **'सम्मुखस्थ आदि शुक्र दोष बोधक कोष्ठक'** में शुक्र के स्थान पर केवल बुध स्थापित कर देने पर जानी जा सकती हैं।

(iv) चन्द्रसामुख्यादि :– सम्मुख/दक्षिणस्थ शुक्र तो यात्रारम्भ के लिए वर्जित और पृष्ठ/वामस्थ ग्राह्य है, लेकिन उसके बिलकुल विपरीत सम्मुख/दक्षिणस्थ चन्द्रमा ग्राहय और पृष्ठ/वामस्थ वर्जित माना गया है। विभिन्न राशियों में स्थित चन्द्रमा किन–किन दिशाओं में स्थित माना जाता है– यह निम्न प्रकार से जानिए–

मेष–सिंह–धनुस्थ चन्द्र – पूर्व में।
वृष–कन्या–मकरस्थ चन्द्र – दक्षिण में।
मिथुन–तुला–कुम्भस्थ चन्द्र – पश्चिम में।
कर्क–वृश्चिक–मीनस्थ चन्द्र – उत्तर में।

स्पष्टीकरणार्थ :– जब चन्द्रमा मेषरस्थ होगा, तब वह पूर्व में स्थित माना जाएगा। अर्थात् तब पूर्व की ओर प्रयाण करना शुभ है, क्योंकि उस समय चन्द्र सम्मुखस्थ होगा। और अधिक स्पष्टता के लिए नीचे कोष्ठक दिया जा रहा है। देखिए –

प्रयाण में सम्मुखस्थ आदि चन्द्रबोधक कोष्ठक

चन्द्रराशि→ दिशा →		मेष, सिंह, धनु (पूर्व)	वृष,कन्या,मकर (दक्षिण)	मिथु.,तुला,कुंम्भ (पश्चिम)	कर्क,वृश्चि.,मीन (उत्तर)
प्रयाण दिशा	पूर्व	सम्मुख(ग्राह्य)	दक्षिण(ग्राह्य)	पृष्ठ (वर्ज्य)	वाम (वर्ज्य)
	दक्षिण	वाम (वर्ज्य)	सम्मुख(ग्राह्य)	दक्षिण(ग्राह्य)	पृष्ठ (वर्ज्य)
	पश्चिम	पृष्ठ (वर्ज्य)	वाम (वर्ज्य)	सम्मुख(ग्राह्य)	दक्षिण(ग्राह्य)
	उत्तर	दक्षिण(ग्राह्य)	पृष्ठ (वर्ज्य)	वाम (वर्ज्य)	सम्मुख(ग्राह्य)

यहां यह विशेष है कि कुम्भ एवं मीनस्थ चन्द्र में दक्षिण की यात्रा वर्जित है।

(v) घातमास, घातचन्द्र :– यात्रा में घातमास और घातचन्द्र का विचार करना भी आवश्यक है।

मेष आदि 12 राशि वालों के लिए क्रमशः कार्त्ति., मार्ग., पौष, माघ, फाल्गु., चैत्र, वैशा.,ज्ये., आषा., श्राव., भाद्र. और आश्विन **'घातमास'** हैं। अतः मेषादि राशि वालों के लिए इन मासों में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

अपि च– मेषादि राशि वाले पुरुष जातकों को क्रमशः मेष, कन्या, कुम्भ, सिंह, मकर, मिथुन, धनु, वृष, मीन, सिंह, धनु और कुम्भ राशिस्थ चन्द्र 'घातचन्द्र' होता है। अतः मेषादि राशि वाले पुरुष जातकों को 'घातचन्द्र' वाली राशि में चन्द्रमा की स्थिति के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। ठीक, इसी भान्ति मेषादि राशि वाले स्त्री जातकों को क्रमशः मेष, धनु, धनु, मीन, वृश्चि., वृश्चि., मीन, धनु, कन्या, वृश्चि., मिथुन और कुम्भ राशिगत चन्द्र 'घातचन्द्र' होता है। इस लिए मेषादि राशि वाले स्त्री जातकों को भी घातचन्द्र वाली राशि में चन्द्रस्थिति के समय कभी भी यात्रा नहीं करनी चाहिए– ऐसा धर्मशास्त्र निर्देश है।

(घातमास, घातचन्द्र के लिए पृष्ठ117 पर **'घातमासादि बोधक कोष्ठक'** देखें।)

(vi) ग्राह्य तिथि :– रिक्ता, अमा, पूर्णिमा, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी और शुक्ल प्रतिपदा को छोड़कर शेष सभी तिथियां यात्रार्थ शुभ मानी जाती हैं।

ध्यान रहे– घात तिथियों में यात्रा वर्जित है। विभिन्न राशि वालों के लिए घाततिथियां निम्नलिखित हैं :–

मेष राशि वालों के लिए घात तिथियां – 1, 6, 11,
वृष राशि वालों के लिए घात तिथियां – 5, 10, 15,
मिथुन राशि वालों के लिए घात तिथियां – 2, 7, 12,
कर्क राशि वालों के लिए घात तिथियां – 2, 7, 12,
सिंह राशि वालों के लिए घात तिथियां – 3, 8, 13,
कन्या राशि वालों के लिए घात तिथियां – 5, 10, 15,
तुला राशि वालों के लिए घात तिथियां – 4, 9, 14,
वृश्चिक राशि वालों के लिए घात तिथियां – 1, 6, 11,
धनु राशि वालों के लिए घात तिथियां – 3, 8, 13,
मकर राशि वालों के लिए घात तिथियां – 4, 9, 14,
कुम्भ राशि वालों के लिए घात तिथियां – 3, 8, 13,
मीन राशि वालों के लिए घात तिथियां – 5, 10, 15,

मेषादि राशि वालों को अपनी राशि की 'घाततिथि' में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

योगिनी वास– यात्रा के लिए तिथियों में **'योगिनी वास'** का विचार करना भी आवश्यक है।यात्रा में सम्मुख एवं वामस्थ योगिनी शुभ नहीं मानी जाती। दक्षिण एवं पृष्ठस्थ योगिनी को यात्रार्थ शुभ लिखा है–

'जयदा पृष्ठ-दक्षस्था भंगदा वाम-सम्मुखी।'- *(स्वरोदय)*

भिन्न–भिन्न तिथियों में योगिनी वास दिशाएं इस प्रकार हैं–

प्रतिपदा, नवमी में योगिनी वास – पूर्व में।
तृतीया, एकादशी में योगिनी वास – आग्नेय में।
पंचमी, त्रयोदशी में योगिनी वास – दक्षिण में।
चतुर्थी, द्वादशी में योगिनी वास – नैर्ऋत्य में।
षष्ठी, चतुर्दशी में योगिनी वास – पश्चिम में।
सप्तमी, पूर्णिमा में योगिनी वास – वायव्य में।
द्वितीया, दशमी में योगिनी वास – उत्तर में।
अष्टमी, अमा में योगिनी वास – ऐशान में।

स्पष्टीकरणार्थ :– नवमी तिथि में 'योगिनीवास' पूर्व में होता है, अतः इस तिथि को 'पूर्व' में गमन करना अशुभ कारक रहेगा; क्योंकि वहां योगिनी 'सम्मुखस्थ' है। इसी भान्ति इसी तिथि में पश्चिम दिशा प्रयाण करना सर्वथा शुभप्रद होगा, क्योंकि वहां योगिनी 'पृष्ठस्थ' है।

और अधिक स्पष्टीकरण के लिए नीचे दिया गया कोष्ठक देखिए–

सम्मुखस्थ आदि योगिनी बोधक कोष्ठक

तिथि→		1, 9	3, 11	5, 13	4, 12	6, 14	7, 15	2, 10	8, 30
योगिनीवास-दिशा→		पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ऐशान
←प्रयाण दिशाएं→	पूर्व	सम्मुख	दक्षिण	दक्षिण	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ	वाम	वाम
	आग्नेय	वाम	सम्मुख	दक्षिण	दक्षिण	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ	वाम
	दक्षिण	वाम	वाम	सम्मुख	दक्षिण	दक्षिण	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ
	नैर्ऋत्य	पृष्ठ	वाम	वाम	सम्मुख	दक्षिण	दक्षिण	पृष्ठ	पृष्ठ
	पश्चिम	पृष्ठ	पृष्ठ	वाम	वाम	सम्मुख	दक्षिण	दक्षिण	पृष्ठ
	वायव्य	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ	वाम	वाम	सम्मुख	दक्षिण	दक्षिण
	उत्तर	दक्षिण	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ	वाम	वाम	सम्मुख	दक्षिण
	ऐशान	दक्षिण	दक्षिण	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ	वाम	वाम	सम्मुख

ध्यान रहे :– कुछ मुहूर्त्तकार वामस्थ एवं दक्षिणस्थ योगिनी को शुभ और कुछ अशुभ मानते हैं। लेकिन पृष्ठस्थ योगिनी को सभी शुभ और सम्मुख को अशुभ मानते हैं।

तिथि दोहद :– प्रयाण में तिथिगत कोई भी दोष रह सकता है। अतः यात्रारम्भ करने से पूर्व **'तिथि दोहद'** का प्रयोग अवश्य करें।

भिन्न–भिन्न सभी तिथियों के 'दोहद' इस प्रकार हैं –

तिथियां	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
दोहद	अर्क पत्र	चावल का माण्ड	घृत	इमली	मूंग	स्वर्ण युक्त जल	पूड़ा	बिजौरा नींबू	शुद्ध जल	गोमूत्र	जौ	खीर	गुड़	खून	मूंग

यहां कोष्ठक में दी गई तिथियां शुक्ल, कृष्ण दोनों पक्षों की हैं।

यात्रा पर जाने से पूर्व उस तिथि से सम्बद्ध 'दोहद' खाना पीना चाहिए। जिस 'दोहद' का खाना/पीना शक्य न हो, उसका चिन्तन/दर्शन ही पर्याप्त है। इससे, दैवज्ञ द्वारा मुहूर्त्तशोधन में दृष्टिदोष आदि से बचा कोई भी तिथिगत दोष दूर हो जाता है– ऐसा शास्त्रकारों का अभिमत है।

(vii) ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार यात्रा के लिए शुभ हैं। गोचर में शुभफलप्रद ग्रह का वार भी यात्रार्थ शुभ माना गया है। यात्रा करने वाले को अपनी राशि के 'घातवार' में यात्रा नही करनी चाहिए। 'घातवार' ज्ञानार्थ नीचे दिए जा रहे 'कोष्ठक' को देखिए–

जन्मराशि घातवार बोधक कोष्ठक

जन्म राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातवार→	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र

वारशूल :– जिस वार को जिस दिशा का शूल हो, उस वार को उस दिशा में कभी यात्रा न करें। 'वारशूल' ज्ञानार्थ नीचे कोष्ठक दे रहे हैं–

वारशूल बोधक कोष्ठक

यात्रावार→	चं. श.	चं. गु.	गुरु	र. शु.	र. शु.	मं.	मं. बु.	बु. श.
शूल दिशा→	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ऐशान

वार दोहद :– वार सम्बन्धी दिशाशूल आदि दोष के समय यदि यात्रा करना अनिवार्य हो तो 'वार दोहद' का प्रयोग करके यात्रा करना शुभ माना गया है। वैसे, सामान्य स्थिति में भी 'वार दोहद' का प्रयोग करना हितकर है। 'वार दोहद' ज्ञानार्थ नीचे कोष्ठक दे रहे हैं–

विभिन्न वारों में 'वार दोहद' बोधक कोष्ठक

यात्रावार→	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वार दोहद→	घृत	दूध	गुड़	तिल	दधि	जौ	उड़द

विशेष :– दिक्शूल वाले दिन ऐसे किसी भी ग्रह की 'होरा' में यात्रा प्रारम्भ की जा सकती है, जिस ग्रह के वार में दिक्शूल का अभाव हो। **जैसे**– शनिवार को पूर्व में जाना है; लेकिन इस दिन पूर्व में दिक्शूल है। अतः इस दिन (शनिवार को) शनि और चन्द्र– दोनों की होराओं को छोड़कर अन्य किसी भी ग्रह की होरा में यात्रा शुरु कर सकते हैं।

ध्यान दें– यहां शनि के साथ चन्द्र की होरा को भी इस लिए छोड़ा है, क्योंकि शनि–चन्द्र दानों दिन पूर्व में दिक्शूल होता है–'कोष्ठक' देखें–

(प्रत्येक वार में किसी भी ग्रह की होरा के स्पष्टीकरण के लिए, पृष्ठ..111. पर दिया गया **'होरेश बोधक कोष्ठक'**–देखें।)

(viii) ग्राह्य नक्षत्र :– प्रयाण में अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., श्रव., धनि. और रेवती नक्षत्र ग्राह्य हैं।

रोहि., पू.फा., उ.फा., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., शत., और उ.भा. नक्षत्र यात्रा के लिए मध्यम माने गए हैं।

ध्यान रहे– यात्रा में जन्मनक्षत्र को अग्राह्य माना गया है। अतः इसमें यात्रा कभी भी प्रारम्भ न करें।

घातनक्षत्रों में यात्रा करने का सभी शास्त्रकार एकमत होकर निषेध लिखते है। अतः अपनी राशि के 'घातनक्षत्र' में यात्रारम्भ कभी मत करें। घातनक्षत्रों की जानकारी के लिए नीचे कोष्ठक दिया जा रहा है–

जन्मराशि से घातनक्षत्र बोधक कोष्ठक

जन्म राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातनक्षत्र→	मघा	हस्त	स्वा.	अनु.	मूल	श्रव.	शत.	रेव.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.

नक्षत्रशूल :– जिस नक्षत्र का जिस दिशा में शूल हो, उस नक्षत्र में उस दिशा की ओर प्रयाण नहीं करना चाहिए। 'नक्षत्रशूल' के ज्ञानार्थ नीचे कोष्ठक दे रहे हैं–

नक्षत्रशूल बोधक कोष्ठक

यात्रा नक्षत्र	ज्येष्ठा	धनि. (उत्तरार्द्ध), शत., पू.भा.,उ.भा.,रेव.	रोहि.	उ. फा.
शूलदिशा	पूर्व/आग्ने.	दक्षिण/ नैर्ऋत्य	पश्चि./ वायव्य	उत्तर/ ऐशान

परिघदण्ड :– यात्रा में 'परिघदण्ड' का उल्लंघन अति अमंगलकारी माना गया है। 'परिघदण्ड' के स्पष्टीकरण हेतु अगले पृष्ठ पर दिया गया चित्र/विवरण देखिए–

चित्र–परिघदण्ड
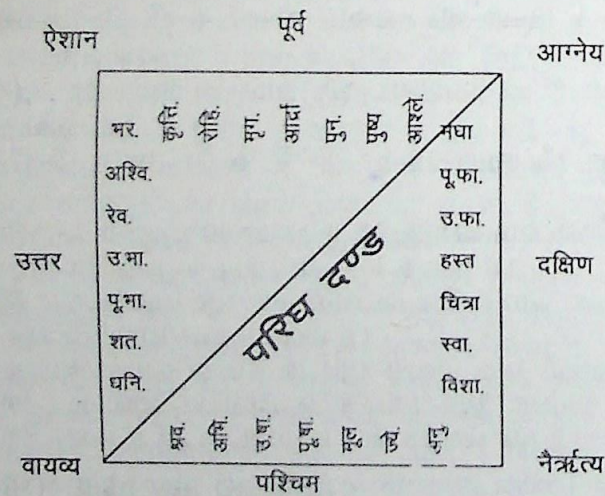
इस चित्र में दिए गए क्षेत्र की चारों भुजाओं पर साभिजित् गणनानुसार 7–7 नक्षत्र अंकित हैं। पूर्व में कृत्तिका से आश्ले., दक्षिण में मघा से विशा., पश्चिम में अनु. से श्रव. और उत्तर में धनि. से भरणी पर्यन्त सात–सात नक्षत्रों को स्थापित किया गया है। (आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य और ऐशान कोणों पर किसी भी नक्षत्र का व्यवस्थापन यहां नहीं है।) क्षेत्र के मध्य आग्नेय से वायव्यान्त सीधी रेखा **'परिघ दण्ड'** है। यह रेखा इस क्षेत्र को दो भागों में बांट रही है।

देखिए – इस क्षेत्र की पूर्व भुजा पर अंकित कृत्ति. से आश्ले. पर्यन्त सभी (सातों) नक्षत्रों में पूर्व की यात्रा यदि की जाए, तो वह परम शुभकारी मानी जाएगी। इन्हीं (पूर्व भुजा पर अंकित) नक्षत्रों में उत्तर की यात्रा भी की जा सकती है;– लेकिन यह यात्रा साधारण (लाभ–हानि रहित) मानी जाएगी। ठीक, इसी भान्ति उत्तर भुजा पर अंकित धनि. से भर. पर्यन्त नक्षत्रों में उत्तर एवं पूर्व दोनों दिशाओं की यात्रा क्रमशः परम शुभ व साधारण मानी जाएगी। ठीक, यही बात दक्षिण, पश्चिम भुजाओं पर अंकित नक्षत्रों के लिए भी है। दक्षिण भुजा पर दिए गए मघा से विशा. पर्यन्त सातों नक्षत्रों में दक्षिण एवं पश्चिम दोनों दिशाओं की यात्रा की जा सकती है; अन्तर केवल इतना है, कि इन नक्षत्रों में दक्षिण की यात्रा परमशुभ और पश्चिम की साधारण मानी जाएगी। बिल्कुल इसी प्रकार पश्चिम भुजा पर अंकित अनु. से श्रव. पर्यन्त सातों नक्षत्रों में पश्चिम एवं दक्षिण की ओर दोनों दिशाओं में की जाने वाली यात्रा क्रमशः परम शुभ व साधारण फल वाली होगी–ऐसा समझना चाहिए।

ध्यातव्य है– पूर्व एवं उत्तर के नक्षत्रों में पश्चिम एवं दक्षिण दिशाओं की और दक्षिण तथा पश्चिम के नक्षत्रों में पूर्व एवं उत्तर दिशाओं की यात्रा कभी मत करें; क्योंकि, ऐसा करने से वहां 'परिघदण्ड' का उल्लंघन होता है, जिसका फल शास्त्रकारों ने अशुभ लिखा है।

विशेष ध्यातव्य :– अश्वि., पुष्य, हस्त, अनु. नक्षत्रों में 'परिघदण्ड' का उल्लंघन अशुभ नहीं माना जाता। इन नक्षत्रों में किसी भी दिशा की यात्रा की जा सकती है। किञ्च– वारशूल और नक्षत्रशूल के अभाव में लग्नशुद्धि मिल जाने पर भी 'परिघदण्ड' के उल्लंघन में कोई दोष नहीं– ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

ऊपर दिए गए चित्र में अंकित पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशा के नक्षत्रों में क्रमशः आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य, और ऐशान कोणों की भी यात्रा की जा सकती है।

दिन-रात्रि-त्रिभाग नक्षत्र :– दिन और रात्रि के भिन्न–भिन्न तृतीयांशों में कुछ नक्षत्र यात्रार्थ वर्जित बतलाए गए हैं; जिनका निर्देश नीचे किया जा रहा है–

दिन के प्रथम तृतीयांश में – मिश्र (कृत्ति., विशा.) और ध्रुव (रोहि., उ.फा.,उ.षा., उ.भा.) नक्षत्र।

दिन के द्वितीय तृतीयांश में – तीक्ष्ण (आर्द्रा, आश्ले., ज्ये. और मूल) नक्षत्र।

दिन के तृतीय तृतीयांश में – क्षिप्र (अश्वि., पुष्य, हस्त और अभिजित्) नक्षत्र

रात्रि के प्रथम तृतीयांश में – मृदु (मृग., चित्रा, अनु. और रेवती) नक्षत्र।

रात्रि के द्वितीय तृतीयांश में – उग्र (भर., मघा, पू.फा.,पू.षा. और पू. भा.) नक्षत्र।

रात्रि के तृतीय तृतीयांश में – चर (पुन., स्वा., श्रव., धनि. और शत.) नक्षत्र।

नक्षत्रदोहद :— यात्रामुहूर्त्त में नक्षत्रसम्बन्धी अज्ञात दोष के निवृत्त्यर्थ यात्राकालीन 'नक्षत्रदोहद' का सेवन अवश्य करना चाहिए। भिन्न भिन्न नक्षत्रों के 'दोहद' ये हैं–

'नक्षत्रदोहद' बोधक कोष्ठक

यात्रानक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृति.	रोहि.	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
नक्षत्रदोहद ↳	कुल्माष	तिल चावल	उड़द	गो दधि	गोघृत	गोदुग्ध	मृग मांस	मृग रक्त	क्षीर	पपीहा मांस	मृग मांस	शशक मांस	साठी चावल	माल कंगनी
यात्रानक्षत्र	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
नक्षत्रदोहद ↳	पूड़ा	चित्राण्डज	फल	कछुआ मांस	सारिक मांस	गोह मांस	साही मांस	मूंग	खिचड़ी	मूंगभात	यवपिष्टी	मत्स्यान्न	खिचड़ी	दधि भात

(प्रयाणकर्त्ता को यदि कोई 'दोहद' अभक्ष्य लगे अथवा वह दोहद उपलब्ध न हो तो वह उसका चिन्तन/दर्शन करके भी यात्रार्थ प्रवृत्त हो सकता है।)

(ix) ग्राह्य लग्न (लग्नशुद्धि) :–

(a) लग्न में चर एवं द्विस्वभाव राशि प्रयाणार्थ शुभ है।

(b) जन्मराशि, जन्मराशि से अनुपचय राशि, अस्तंगत ग्रह की राशि, वक्रग्रहराशि, जातक के शत्रु की राशि से छठी राशि, पृष्ठोदय राशि, कुम्भराशि और कुम्भनवांश लग्न में वर्जित हैं।

(c) जन्मराशीश और जन्मलग्नेश का शत्रु, क्रूरग्रह, जन्मकालिक निर्बल ग्रह और प्रयाणकालिक निर्बल ग्रह लग्न में वर्ज्य है।

(d) यात्रा की दिशा का स्वामी ग्रह केन्द्रस्थ होने पर शुभ माना गया है।

(सू., शु., मं., रा., श., चं., बु., गु.– ये ग्रह क्रमशः पूर्व, आग्नेयादि दिशाओं के स्वामी माने गए हैं।)

(e) प्रयाणदिशा का स्वामी यदि **'ललाटगत'** हो तो उस दिशा की यात्रा कदापि न करें।

(लग्नस्थ सूर्य पूर्व में; एकादश–द्वादशस्थ शुक्र आग्नेय में; दशमगत मंगल दक्षिण में; अष्टम–नवमस्थ राहु नैर्ऋत्य में; सप्तमस्थ शनि पश्चिम में; पंचम–षष्ठस्थ चन्द्र वायव्य में; चतुर्थस्थ बुध उत्तर में; और द्वितीय–तृतीयगत गुरु ऐशान में **'ललाटगत'** होता है।)

(f) केन्द्र में वक्रग्रह और वक्रग्रह का वर्ग यात्रा में शुभ नहीं माना जाता।

(g) जिस ग्रह का जन्मनक्षत्र त्रिविध (दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम) उत्पातों में से किसी एक द्वारा भी पीड़त हो तो यात्रालग्न में उसकी स्थिति शुभ नहीं मानी जाती।

(सूर्य का जन्मनक्षत्र विशा.; चन्द्र का कृति.; मंगल का पू.षा.; बुध का श्रव.; गुरु का पू.फा.; शुक्र का पुष्य,शनि का रेव.; राहु का भर. और केतु का आश्ले. है।)

(h) जन्मकालिक सूर्य की राशि से द्वितीयराशि (वेशि) यदि यात्रालग्न में शुभग्रहयुत हो तो अच्छी मानी जाती है।

(i) जन्मकालीन शुभग्रह से युत राशि एवं जन्मलग्न/चन्द्र से उपचय (3, 6, 10, 11) स्थानगत ग्रह भी यात्रालग्न में शुभ माने गए हैं।

(j) जन्म के समय स्वराशि–मित्रराशि एवं उच्च में स्थित पापग्रह भी यात्रालग्न में शुभप्रद हैं।

(k) जन्मराशीश/जन्मलग्नेश यात्रा के समय केन्द्रगत होने पर शुभ माने जाते हैं।

(l) यात्रा के समय पापग्रह 3, 6, 11वें स्थानों से भिन्न स्थानों में, चन्द्रमा 1, 6, 8, 12वें भावों में, क्षीण चन्द्र 4, 5, 7, 10 वें भावों में, शुक्र 7वें भाव में, गुरु 8वें भाव में, अस्त बुध 12वें भाव में– ये ग्रह यात्रा में महाविघ्न देने वाले हैं। इन उपरोक्त भावों के अलावा अन्य किन्हीं भी भावों में स्थित ये ग्रह विजय, सुख एवं लाभप्रद माने गए हैं।

(m) यात्रा के समय 'बृहज्जातक' आदि ग्रन्थोक्त 'राजयोग' विद्यमान हो तो यात्रा अन्त्यन्त शुभ एवं विजयप्रद होती है।

(n) लग्न में वर्गोतम नवांशगत चन्द्रमा यात्रा को शुभ बनाता है।

विशेष :– यात्रारम्भ के लिए अपराह्ण–व्यापिनी आश्वि. शुक्ल दशमी (विजयादशमी) अत्यन्त शुभ मानी गई है। इसमें किसी भी प्रकार का यात्रामुहूर्त्त देखने की जरूरत नहीं– ऐसा शास्त्रकारों का अभिमत है।

जैसा कि, पहले कह चुके हैं–यमघण्ट, हुताशन, क्रकच आदि तिथि–नक्षत्र–वार संयोग से उत्पन्न कुयोगों को हूण, बंग, खश आदि प्रदेशों के लोगों के लिए विचार्य लिखा है। ध्यान रहे – यात्रा में [illegible]

त्यागने का आदेश शास्त्रकारों ने दिया है। लेकिन रवि, सिद्धि आदि सुयोगों में ये दोष प्रभावरहित माने जाएं– ऐसा भी उनका निर्देश है। (यमघण्ट आदि कुयोगों एवं रवि आदि सुयोगों के कोष्ठकों के लिए देखें 109..पृष्ठ।)

आपातकाल में यात्रालग्न न मिलने पर **'चतुर्घटिका मुहूर्त्त'** एवं **'गोरखनाथोक्त यात्रामुहूर्त्त'** का आश्रय लिया जा सकता है। **'चतुर्घटिका मुहूर्त्त'** कोष्ठक एवं **'गोरखनाथोक्त यात्रामुहूर्त्त'** कोष्ठक पृष्ठ..117 .पर देखें।

(x) शुभाशुभ शकुन :– पूर्वोक्त शोधित यात्राकाल में यात्रा आरम्भ करनी चाहिए। यात्रारम्भ के समय शुभ शकुनों से साक्षात्कार यात्रा को सुखद और सर्वथा बाधामुक्त बनाता है। लेकिन यात्रारम्भ के समय में अशुभ शकुन यदि दिखाई पड़े तो यात्रा में विघ्न, बाधाएं आएंगी– यह शास्त्रकारों का मानना है। अतः उसी समय यात्री को लौटकर घर आ जाना चाहिए। गृहागमनानन्तर हाथ–पैर धोकर प्राणायाम करके स्वकुलेष्टदेव का स्मरण कर पुनः यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए। यदि पुनः अपशकुन से साक्षात्कार हो, फिर घर लौटकर उसी प्रक्रिया को दोहराकर यात्रा के लिए प्रस्थान किया जाए। यदि तीसरी बार भी अपशकुन दीखे, तब लौटकर वही (प्राणायामादि) प्रक्रिया करने के बाद स्वर्णादि दान करके यात्रार्थ प्रस्थान करना शुभ माना जाता है। चौथी बार अपशकुन होने पर यात्रा सर्वथा छोड़ दी जाए। कुछ शास्त्रकार तो तीसरी बार अपशकुन साक्षात्कार की स्थिति में ही यात्रा को वर्जित करने का परामर्श देते हैं। शुभाशुभ शकुनों के ज्ञानार्थ **'मुहूर्त्त गणपति'** का यात्राप्रकरण तथा **'धर्मसिन्धु'** का मुहूर्त्तप्रकरण देखिए।

ज्ञातव्य निर्देश :– यदि निर्धारित यात्रामुहूर्त्त के दिन/काल में यात्रा के लिए प्रस्थान किसी कारणवश संभव न हो सके तो यात्रादिशा में स्थित गृह/मंदिर आदि में निर्धारित यात्रादिन/काल में ब्राह्मण को यज्ञोपवीत, क्षत्रिय को शस्त्र, वैश्य को मधु और शूद्र को आंवला/नारियल अथवा इन चारों को अपनी कोई भी प्रिय वस्तु (शास्त्रकारों द्वारा जिसे **'प्रस्थानक'** संज्ञा दी गई है) रख देनी चाहिए। प्रस्थान के समय उसे उठाकर यात्रा में साथ ले जाएं, इससे यात्राकाल के उल्लंघन का दोष समाप्त हो जाता है।

यात्रादिन से पूर्व एवं यात्रादिन में यात्री क्रोध, परिश्रम, मांस, गुड़, अश्रुपात, द्यूत, मदिरा, तैल, कालावस्त्र, वमन, मिर्च आदि कटु वस्तुओं को वर्जित करे। प्रस्थानकन्यास के दिन भी इन्हें वर्जित किया जाए। यात्रा से तीन दिन पहले दूध, पांच दिन पूर्व क्षौर और सात दिन पूर्व मैथुन छोड़ दे। असामर्थ्य की स्थिति में केवल एक दिन पूर्व तो इन्हें छोड़ ही देना चाहिए।

पत्नी या अन्य स्त्री से लड़कर एवं ब्राह्मण (विद्वान्) का अपमान कर यात्रारम्भ कभी मत करें। पीला, लाल वस्त्र भी यात्रारम्भ में पहनना निषिद्ध है।

प्रथम यात्रानिवृत्ति से नवम दिन, तिथि, नक्षत्र में पुनः प्रयाण करना एवं यात्रारम्भ के दिन, तिथि, नक्षत्र से नौवें दिन, तिथि, नक्षत्र में यात्रा से प्रत्यावर्तन (लौटना) शास्त्र–निषिद्ध है।

–: गृहारम्भ मुहूर्त्त :–

गृहनिर्माण के लिए शल्यशोधन एवं नींव के निमित्त भूमिखनन किस दिशा से प्रारम्भ किया जाए– इसके निर्णय के लिए हमें राहु के मुख, उदर एवं पुच्छ की भूखण्ड में स्थिति मालूम होनी चाहिए। सर्पाकार राहु प्रत्येक भूखण्ड में अपने शरीर को फैलाए लेटा रहता है। इसकी भूखण्ड में स्थिति सूर्य की राशि के अनुसार बदलती रहती है। वास्तुशास्त्र हमें चेतावनी देता है कि भूखनन प्रारम्भ करते समय राहु के किसी भी अवयव पर प्रहार होने पर गृहस्वामी का परम अनिष्ट होता है। इसलिए भूखनन का प्रारम्भ वहीं से किया जाए जहां उसका कोई अवयव स्थित न हो– यह अत्यन्त आवश्यक है।

राहु का मुख (फण) वृष–मिथुन–कर्करस्थ सूर्य के समय गृहभूमि के आग्नेय कोण में; सिंह–कन्या–तुलास्थ सूर्य के समय ऐशान कोण में; वृश्चिक–धनु–मकरस्थ सूर्य के समय वायव्य कोण में और कुम्भ–मीन–मेषस्थ सूर्य के समय नैर्ऋत्यकोण में होता है। [अर्थात् यह (राहुमुख) आग्नेय से ऐशान आदि कोणों में उल्टा चलता है।] जिस कोणदिशा में इसका मुख होता है, उससे पिछले दो कोणों में इसका क्रमशः उदर और पूंछ होती है। जैसे वृष–मिथुन–कर्करस्थ सूर्य के समय राहु का मुख गृहभूमि के आग्नेय कोण में होता है, अतः उस समय उसका उदर भूमि के ऐशान में एवं पूंछ वायव्य कोण में होगी। इसी प्रकार ऐशानादि में राहुमुख होने पर उसके उदर एवं पूंछ की स्थिति जान लेनी चाहिए। गृहभूमि की खुदाई का प्रारम्भ पूर्वादि दिशाओं से नहीं, अपितु आग्नेय आदि कोणों (उपदिशाओं) से किया जाता है। गृहभूमि की खुदाई प्रारम्भ करते समय यह ध्यान रखें कि वह खुदाई राहु के मुख, उदर और पूंछ वाली कोणदिशा वाले स्थल से न

की जाए, अर्थात् जिस कोण में राहु का कोई अवयव स्थित नहीं है वहीं से खुदाई शुरू की जाए। इसका सारांश यह है–

यदि सूर्य वृष, मिथुन, कर्कस्थ हो तो खुदाई का प्रारम्भ नैर्ऋत्य कोण से,
यदि सूर्य सिंह, कन्या, तुलास्थ हो तो खुदाई का प्रारम्भ आग्नेय कोण से,
यदि सूर्य वृश्चिक, धनु, मकरस्थ हो तो खुदाई का प्रारम्भ ऐशान कोण से,
यदि सूर्य कुम्भ, मीन, मेषस्थ हो तो खुदाई का प्रारम्भ वायव्य कोण से,

ध्यान रहे :– भूखण्ड में की जाने वाली खुदाई चाहे शल्यशोधन के लिए हो या नींव बनाने के लिए, वहां राहु के मुख आदि की स्थिति का विचार हर हालत में करना आवश्यक है। खुदाई के लिए पूर्वोक्त **'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष'** में निर्दिष्ट गुरु–शुक्रास्तादि एवं भद्रादि दोषरहित–काल ही स्वीकार करना चाहिए।

नींव की खुदाई के बाद गृहारम्भ (शिलान्यास) के लिए भी पूर्वोक्त **'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष'** का विचार करना आवश्एक है–यह स्पष्ट ही है।

गृहारम्भ में ग्राह्य (शुभ) मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि तथा अग्राह्य पदार्थों का विवरण इस प्रकार है :–

ग्राह्य मासः– वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मास ही शिलान्यास के लिए शुभ माने जाते हैं।

वैशाखे फाल्गुने पौषे, श्रावणे मार्गशीर्षके।
सूत्रारम्भःशिलान्यासः स्तम्भारम्भःप्रशस्यते।।– *(वादरायणि)*

पौष-फाल्गुन-वैशाख-माघ-श्रावण-कार्तिकाः।
मासाःस्युः गृहनिर्माणे पुत्रारोग्य–धनप्रदाः।।– *(नारद)*

मार्गशीर्षे तथा पौषे वैशाखे श्रावणे तथा।
फाल्गुने च कृतं वेश्म सर्वसम्पत्प्रदं भवेत्।।– *(वास्तुशास्त्र)*

गृहारम्भ के ये सभी मास कृष्णादि चान्द्रमास हैं। **'मुहूर्त्तचिन्तामणि'** कार के अनुसार मेषस्थ रवि में चैत्र; वृषस्थ रवि में ज्येष्ठ; कर्कस्थ रवि में आषाढ़; सिंहस्थ रवि में भाद्रपद और तुलास्थ रवि में आश्वि. कृष्णादि चान्द्रमास भी गृहारम्भ के लिए शुभ माने जाते हैं।

ग्राह्य नक्षत्रः– रोहि., मृग., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु. उ.षा., धनि., शत., उ.भा., रेव. नक्षत्र।

गृह के प्रमुख द्वार की दिशा के अनुसार भी गृहारम्भकालीन शुभ नक्षत्रों का निर्णय **"दिग्द्वारभ चक्र"** द्वारा करने का प्रकार मुहूर्त्तग्रन्थों में मिलता है, जिसका विवरण नीचे दिया जा रहा है, देखिए–

दिग्द्वारभ चक्र

पूर्व

कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
भर.						मघा
अश्वि.						पू.फा.
रेव.						उ.फा.
उ.भा.						हस्त
पू.भा.						चित्रा
शत.						स्वा.
धनि.						विशा.
श्रव.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	मू.	ज्ये.	अनु.

उत्तर (बाएँ) — दक्षिण (दाएँ)

पश्चिम

पूर्वोक्त गृहारम्भकालीन ग्राह्यनक्षत्र सभी मुहूर्त्तशास्त्रियों द्वारा समर्थित हैं, (अर्थात् गृहारम्भ इन्हीं नक्षत्रों में किया जाता है) लेकिन ऊपर दिए गए 'द्विग्द्वारभ चक्र' के अनुसार इन ग्राह्य नक्षत्रों में से कई नक्षत्र किसी गृह के आरम्भ के समय अशुभ भी बन जाते हैं। इसका विवरण इस प्रकार है–

जिस दिशा में गृहद्वार (गृह का मुख्य प्रवेशद्वार) रखना है, उस दिशा वाले या उस दिशा से विपरीत दिशा वाले " द्विग्द्वारभ चक्र ' गत नक्षत्रों में गृहारम्भ अशुभ माना गया है। जैसे– पूर्व या पश्चिम दिशा में द्वार वाले गृह के आरम्भ के समय पूर्व और पश्चिम दिशा वाले चक्रोक्त नक्षत्रों (कृत्तिकादि सात और अनुराधादि सात नक्षत्रों) में चन्द्रमा नहीं होना चाहिए। इनके इलावा अन्य नक्षत्रों में चन्द्र होने पर पूर्व, पश्चिम दिशा द्वार वाले गृह का आरम्भ (शिलान्यास) किया जा सकता है।

अपि च– चन्द्रनक्षत्र और गृहनक्षत्र–दोनों यदि चक्रोक्त एक ही दिशा वाले या परस्पर विरुद्ध दिशा वाले नक्षत्रों में हों तो गृहारम्भ नहीं किया जा सकता। जैसे–कृत्तिकादि सात और अनुराधादि सात (इन चौदह) नक्षत्रों में से कोई एक अथवा कोई दो भिन्न–भिन्न नक्षत्र चन्द्रनक्षत्र और गृहनक्षत्र हों तो पूर्वद्वार या पश्चिमद्वार वाले गृह का आरम्भ नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार मघादि सात और धनिष्ठादि सात (इन चौदह) नक्षत्रों में से कोई एक अथवा कोई दो भिन्न–भिन्न नक्षत्र चन्द्रनक्षत्र और गृहनक्षत्र हों तो दक्षिणद्वार या उत्तरद्वार वाले गृह का आरम्भ नहीं किया जा सकता। (गृहनक्षत्र के ज्ञानार्थ **'श्री मार्तण्ड पंचांग' वास्तुशास्त्र विशेषांक, सं. 2057 वि.** देखिए।)

ग्राह्य वार :– सूर्य और मंगलवार को छोड़कर शेष सभी वार।

ग्राह्य तिथि :– प्रतिपदा, रिक्ता, अमा और अष्टमी को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

पूर्णिमा से कृष्णाष्टमी तक पूर्वमुख; कृष्ण नवमी से कृष्ण चतुर्दशी तक उत्तरमुख; अमावस्या से शुक्लाष्टमी तक पश्चिममुख और शुक्ल नवमी से शुक्ल चतुर्दशी तक दक्षिणमुख द्वार वाले गृह का निर्माण प्रारम्भ नहीं करना चाहिए– ऐसा भी मुहूर्त्तशास्त्रियों का मत है।

लग्नशुद्धि :– स्थिर या द्विस्वभाव लग्न में गृहारम्भ करना शुभ है। मुहूर्त्त मार्त्तण्डकार ने तो द्विस्वभाव लग्न को वर्जित किया है। चर नवांश वर्जित हैं। शुभ ग्रह 8वें और 12वें न हों (अर्थात् वे 1, 2, 4, 5, 7, 9, 10वें हों।) किंच पापग्रह 3, 6, 11 भावों में हों तो गृहारम्भ करना चाहिए। लग्न को सौम्यग्रह देख रहे हों या वे (सौम्यग्रह) लग्न में ही स्थित हों तो गृहारम्भ शुभ माना जाता है। यहां यह विशेष है– पूर्वद्वार और पश्चिमद्वार वाले गृह के निर्माणारम्भ में लग्न और सप्तम में चन्द्रमा वर्जित है और दक्षिणद्वार और उत्तरद्वार वाले गृहारम्भ के समय दशम और चतुर्थ में चन्द्रमा शुभ नहीं माना जाता।

अग्निबाणः– गृहारम्भ के समय अग्निबाण वर्जित है। कुछ आचार्यों का मत है कि घर की छत डालते समय ही अग्निबाण का विचार करना चाहिए। यदि छत लकड़ी की न हो (वह सीमेन्ट आदि, अग्नि से अप्रभावित होने वाले सामान से बनाई जा रही हो) तब तो वहां भी अग्निबाण का विचार करने की आवश्यकता नहीं, ऐसा कुछ लोगों का विचार है।

भूशयनः– भूशयन के काल में गृहारम्भ नहीं किया जाता। सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र 5, 7, 9, 12, 19 और 26 वां हो तो भूशयन माना जाता है। भूशयन का काल जानने के लिए पृष्ठ **115** पर **'भूशयन कोष्ठक'** दिया गया है। इस कोष्ठक की मदद से भूशयन का समय जानना बहुत आसान है।

वृषवास्तुचक्र :– "वृषवास्तुचक्र" से शुद्ध नक्षत्रों में ही गृहारम्भ किया जाता है। गृहारम्भ के समय सूर्यनक्षत्र से लेकर 7 नक्षत्र अशुभ, तदनन्तर 8वें नक्षत्र से 18 नक्षत्र तक शुभ और उसके बाद 19वें नक्षत्र से 28वें नक्षत्र तक अशुभ होते है (यहां साभिजित् गणना होती है)। इसे ही वृषवास्तुचक्र कहा जाता है। इसके अनुसार अशुभ नक्षत्रों में चन्द्रमा होने पर गृहारम्भ नहीं किया जा सकता। पृष्ठ **115** पर "वृषवास्तुचक्र" दिया गया है। इसकी सहायता से वृषवास्तुचक्र के अनुसार शुभ चन्द्रनक्षत्र सरलता से जाना जा सकता है।

शिलान्यास का प्रकारः– गृहारम्भ से पूर्वोक्त शुभमुहूर्त्त में शिलान्यास करना चाहिए। पहले खोदी गई गृहभूमि की नींव में आग्नेय कोण में प्रथम शिलान्यास किया जाता है। प्रथम शिलान्यास के बाद प्रदक्षिण क्रम से दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ऐशान और पूर्व दिशा में शिलाओं का न्यास करना चाहिए। इसी क्रम से स्तम्भ भी गाड़ने चाहिएं–

दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत् प्रथमाम्।
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तम्भाश्चैवं समुत्थाप्याः।।–*(वराह)*

ध्यान रहे– शिलान्यास से पहले वास्तुपूजा आवश्यक है।

–: गृहप्रवेश मुहूर्त्त :–

गृहनिर्माण पूरी तरह सम्पन्न हो जाने पर मांगलिक कार्यों में वर्जित **"सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ / दोष"** प्रकरणोक्त दोषों से रहित शुभवेला में उत्तरायण के दिनों में नए घर में प्रवेश करें।

ग्राह्य मास– वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, और फाल्गुन।

ग्राह्य वार– चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार।

ग्राह्य तिथि– रिक्ता और अमा को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य नक्षत्र– रोहि., मृग., उ.फा., चित्रा, अनु., उ.षा., उ.भा., और रेवती (पूर्वद्वार गृह के लिए रोहि., मृग.; दक्षिणद्वार के लिए उ.फा., चित्रा; पश्चिमद्वार के लिए अनु., उ.षा. और उत्तरद्वार के लिए उ.भा.,

रेव.) नक्षत्र हैं।

पूर्वद्वार गृह में प्रवेश के समय पूर्णा, दक्षिणद्वार में नन्दा, पश्चिमद्वार में भद्रा और उत्तरद्वार में प्रवेश के समय जया तिथि शुभ मानी गई है।

कलशचक्रशुद्धि– कलशचक्र से शुद्ध नक्षत्रों में ही गृहप्रवेश करना चाहिए। सूर्यनक्षत्र से पाँच नक्षत्र अशुभ, तदनन्तर आठ नक्षत्र शुभ; तदनन्तर आठ नक्षत्र अशुभ और तदनन्तर छः नक्षत्र कलशचक्र में शुभ माने गए हैं। कलशचक्र द्वारा अशुद्ध (अशुभ) नक्षत्रों में चन्द्रमा की स्थिति के समय गृहप्रवेश वर्जित है। पृष्ठ 116 पर 'कलशचक्रशुद्धि कोष्ठक' दिया गया है। इससे कलशचक्रशुद्ध नक्षत्रों का तुरन्त ज्ञान हो जाता है।

लग्नशुद्धिः– जन्मराशि या जन्मलग्न से 3, 6, 10 या 11वें, स्थिर लग्न में गृहप्रवेश करना चाहिए। प्रवेश के समय 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9, 10 एवं 11वें भाव में शुभग्रह; 3, 6, 11वें भाव में पापग्रह हों और चतुर्थ तथा अष्टम भाव शुद्ध (ग्रह-रहित होने) चाहिएं।

गृहप्रवेश के समय वाम सूर्यः– प्रवेशकालिक लग्न से सूर्य यदि 8, 9, 10, 11, 12 स्थानों में हो तो पूर्वद्वार वाले घर में; 5, 6, 7, 8, 9 स्थानों में हो तो दक्षिणद्वार वाले घर में; 2, 3, 4, 5, 6 स्थानों में हो तो पश्चिमद्वार वाले घर में और 11, 12, 1, 2, 3 स्थानों में हो तो उत्तरद्वार वाले घर में प्रवेश के समय सूर्य वामस्थ होता है। वामस्थ सूर्य के समय गृहप्रवेश शुभ माना जाता है।

पूर्व आदि द्वार वाले गृहों में प्रवेश के समय वामस्थ रवि को स्पष्टता से बतलाने वाला कोष्ठक नीचे दिया गया है–

गृहप्रवेशकालिक वामस्थ रवि

पूर्वद्वार गृह में प्रवेश के समय लग्न से सूर्य की स्थिति	दक्षिणद्वार गृह में प्रवेश के समय लग्न से सूर्य की स्थिति	पश्चिमद्वार गृह में प्रवेश के समय लग्न से सूर्य की स्थिति	उत्तरद्वार गृह में प्रवेश के समय लग्न से सूर्य की स्थिति
8 वें	5 वें	2 रे	11 वें
9 वें	6 ठे	3 रे	12 वें
10 वें	7 वें	4 थे	1 ले
11 वें	8 वें	5 वें	2 रे
12 वें	9 वें	6 ठे	3 रे

क्योंकि गृहप्रवेश स्थिर (2, 5, 8 और 11 राशियों के) लग्नों में ही किया जाता है, अतः नीचे दिए कोष्ठक से इन स्थिर लग्नों में पूर्वमुख आदि द्वार वाले गृहों में प्रवेश के समय वामस्थ सूर्य की राशि तुरन्त जानी जा सकती है–

गृहप्रवेशकालिक वामस्थ सूर्य की राशि

गृहप्रवेश का लग्न	पूर्वमुख द्वार में वाम सूर्य की राशियां	दक्षिणमुख द्वार में वाम सूर्य की राशियां	पश्चिममुख द्वार में वाम सूर्य की राशियां	उत्तरमुख द्वार में वाम सूर्य की राशियां
2	9 10 11 12 1	6 7 8 9 10	3 4 5 6 7	12 1 2 3 4
5	12 1 2 3 4	9 10 11 12 1	6 7 8 9 10	3 4 5 6 7
8	3 4 5 6 7	12 1 2 3 4	9 10 11 12 1	6 7 8 9 10
11	6 7 8 9 10	3 4 5 6 7	12 1 2 3 4	9 10 11 12 1

जैसे– पूर्वमुखद्वार वाले गृह का प्रवेश यदि वृष लग्न में हो तो मेष, धनु, मकर, कुम्भ एवं मीनस्थ सूर्य वामस्थ होगा।

गृहप्रवेश से पूर्व मृदु, ध्रुव, क्षिप्र एवं चल नक्षत्र या मूल नक्षत्र में वास्तुपूजा एवं भूतबलि करना आवश्यक है।

जिस गृह में कपाट न लगे हों या छत न पड़ी हो उस गृह में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

–: जीर्णगृहप्रवेश मुहूर्त्त :–

उपरोक्त गृहप्रवेश का विवरण केवल नूतन गृहप्रवेश के लिए है। अग्निभय, बहुवृष्टि एवं राजकोपादि के कारण जब किसी पुराने घर में भी प्रवेश करना हो तो श्रावण, कार्त्तिक और मार्गशीर्ष मास भी प्रवेश के लिए विहित हैं। इस आपातस्थिति में पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र भी प्रवेश के लिए शुभ माने गए हैं। इस स्थिति में गुरु–शुक्रास्त, अधिक–क्षयमास तथा सिंह–मकरस्थ गुरु आदि का विचार नहीं किया जाता। 'कलशशुद्धि चक्र' की भी यहां उपेक्षा की जा सकती है। पंचांगशुद्धि का विचार तो यहां करना ही चाहिए–

जीर्णे गृहेऽग्न्यादि भयान्नवेऽपि मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सन् स्यात्।
वेशोऽम्बुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणाऽत्र।।

(मुहूर्त्त चिन्तामणि)

-: देवप्रतिष्ठा मुहूर्त :-

देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तरायण (हरिशयनवर्जित काल) में की जाती है। **ध्यान रहे**—चण्डी, काली, भैरव, नृसिंह, त्रिविक्रम आदि तामस देवों की प्रतिष्ठा तो हरिशयनवर्जित दक्षिणायनकाल में भी की जा सकती है। देवप्रतिष्ठा हमेशा पूर्वाह्ण में होती है। एतदर्थ ग्राह्य तिथ्यादि इस प्रकार हैं—

ग्राह्य तिथिः— शुक्ल प्रतिपदा, रिक्ता और अमा को छोड़कर शेष तिथियां ग्राह्य हैं। जिस देव की प्रतिष्ठा की जा रही हो, उस देव की तिथि भी ग्राह्य है। **जैसे**—तृतीया तिथि की देवता गौरी है, अतः तृतीया में गौरीप्रतिष्ठा कर सकते हैं।

किञ्च— श्रीरामनवमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, श्रीगणेशचतुर्थी, शिवरात्रि, दुर्गाष्टमी, कालाष्टमी आदि तिथियों में इनसे सम्बद्ध देवताओं श्रीराम आदि की प्रतिष्ठा की जा सकती है।

ग्राह्य वारः— मंगलवार को छोड़कर शेष सभी वार।

ग्राह्य नक्षत्रः— मृदु (मृग., चित्रा, अनु., रेव.); क्षिप्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), चर (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) और ध्रुव (रोहि., उ.फा., उ.षा., उ.भा.) नक्षत्र।

जिस देव की प्रतिष्ठा की जा रही हो, उस देव वाला नक्षत्र भी प्रतिष्ठार्थ ग्राह्य है। जैसे— आर्द्रा नक्षत्र का देवता रुद्र (शिव) है, अतः शिवप्रतिष्ठा आर्द्रा नक्षत्र में भी की जा सकती है।

सूर्य की हस्त ; चन्द्र आदि शेष ग्रहों की पुष्य; गणेश, यक्ष, सर्प और भूतों की रेवती; बुध की श्रवण; दुर्गादि की मूल; कुबेर एवं स्कन्द की अनुराधा नक्षत्र में प्रतिष्ठा करने का धर्मशास्त्रों में विशेष निर्देश है।

लग्नशुद्धिः— चन्द्र और पापग्रह 3, 6, 11वें भावों में स्थित हों, शुभग्रह 8, 12वें भावों को छोड़कर अन्य भावों में शुभ कहे गए हैं।

सूर्य की सिंह; ब्रह्मा की कुम्भ; विष्णु की कन्या; शिव की मिथुन; दुर्गा की द्विस्वभाव और क्षुद्र (यक्ष, गन्धर्व आदि) देवों की चर लग्न में प्रतिष्ठा करने का विधान है। वैसे, सभी देवों की प्रतिष्ठा स्थिर लग्न में शास्त्रनिर्दिष्ट है।

-: राज्याभिषेक मुहूर्त :-

पुरातनकाल में राजाओं का अभिषेक (सिंहासनारोहण) पूर्वोक्त **'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष'** शीर्षकान्तर्गत दोषों से रहित काल में किया जाता था। आजकल की प्राजातान्त्रिक प्रणाली में इसे विधायक/मन्त्री आदि की Oath taking Ceremony कहा जा सकता है। यह कृत्य उत्तरायण में किया जाना चाहिए— ऐसा शास्त्रादेश है। इस समय मंगलाभिलाषी के मंगल, सूर्य, लग्नेश, दशेश और जन्मराशीश बलवान् होने चाहिएं। **ध्यान रहे**— चैत्रमास राज्याभिषेक के लिए वर्जित है। इसके लिए ग्राह्य तिथ्यादि निम्न हैं—

ग्राह्य तिथि :— शुक्ल प्रतिपदा एवं रिक्ता, अमा को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :— मंगलवार को छोड़कर शेष सभी वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, अनु., ज्ये., उ.षा., श्रव., अभि., उ.भा., और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9, 10, 11 भावों में शुभग्रह हों। जन्मलग्न/राशि से उपचय (3, 6, 10, 11) भाव में अथवा शीर्षोदय राशि में लग्न हो, पापग्रह 3, 6, 11 में और लग्न शुभयुत किंवा शुभदृष्ट हो। रात्रि में राज्याभिषेक वर्जित है।

-:दत्तक ग्रहण(पुत्र गोद लेने का)मुहूर्त:-

ग्राह्य तिथि :— रिक्ता, अमा को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :— रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., धनि. और शत. नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— 2, 5, 8, 11 राशियां लग्न में हों।

-: विपणि मुहूर्त :-
(दुकान खोलने का मुहूर्त)

ग्राह्य तिथि :— रिक्ता, अमा को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :– मंगलवार को छोड़कर शेष सभी वार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, अनु., उ.षा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– कुम्भ लग्न वर्जित है। शु. चं. लग्न में; क्रूरग्रह 8, 12वें भावों में और शुभग्रह 2, 10, 11 वें भावों में स्थित हों।

–:कूप, वापी (बावड़ी) तड़ागखनन मुहूर्त:–

ग्राह्य तिथि :– रिक्ता, शुक्ल प्रतिपदा, कृष्ण त्रयोदशी और 8, 14, 15, 30 तिथियों को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– रोहि., मृग., पुष्य, मघा, उ.फा., हस्त, अनु., पू.षा; उ.षा., धनि., शत., उ.भा., और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– लग्न में बुध और गुरु एवं शुक्र दशम में शुभ है और जलचर राशि में चन्द्रमा हो, पापग्रह निर्बल हों।

कूपखनन आदि में भूशयन का भी विचार अवश्य करना चाहिए। (भूशयन कोष्ठक देखें पृ. 115 पर)।

–: क्षौरकर्म मुहूर्त :–

इसके लिए सभी ग्राह्य तिथ्यादि पीछे दिए गए मुण्डन (चौल) मुहूर्त वाले हैं, वहां देखिए। ध्यातव्य है कि प्रथम क्षौरदिन से नवम दिन में क्षौर करना सर्वथा निषिद्ध है।

–: मन्त्रदीक्षा(ग्रहण) मुहूर्त :–

ग्राह्य तिथि :– कृष्ण प्रतिपदा एवं दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– रोहि., उ.फा., उ.षा., उ.भा. एवं उपनयन संस्कार में विहित सभी नक्षत्र।

सूर्यग्रहणकाल को मन्त्रदीक्षा–ग्रहणार्थ विशेष शुभ लिखा है।

ध्यान दें– जातकर्म से लेकर मन्त्रदीक्षाग्रहण पर्यन्त उपरोक्त सभी मुहूर्तों के निर्णयार्थ उन दोषों के अतिरिक्त, जो कि इन मुहूर्तों के लिए विशेष रूप से बतलाए गए है; पूर्वोक्त (पृष्ठ 64 से 73 तक) 'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ/दोष शीर्षकान्तर्गत दिए गए सभी दोषों का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है। इनकी उपेक्षा कदापि न की जाए। अब आगे जो सामान्य मुहूर्त हम देने जा रहे हैं, उनमें पञ्चांगशुद्धिमात्र विचारना पर्याप्त होगा। यदि कोई दैवज्ञ पूर्वोक्त दोषों में से किसी/किन्हीं दोषों का विचार करना उचित समझता है, तो वह कर सकता है।

–: राजदर्शन मुहूर्त :–

(महान् व्यक्तित्त्व से साक्षात्कार)

ग्राह्य तिथि :–कृष्ण प्रतिपदा एवं दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :– सभी वार।

ग्राह्य नक्षत्र :– श्रव., धनि., शत. तथा ध्रुव एवं मृदु नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– 1, 2, 4, 7, 10, 11 वें भावों में शुभग्रह हों।

–: यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र साधन मुहूर्त :–

यन्त्रादि साधनार्थ निम्नांकित काल महत्त्वपूर्ण है :–

(a) सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल।
(b) सायन एवं निरयण संक्रान्तिकाल से पूर्वापरवर्त्ती 6–6 घण्टाकाल।
(c) षडशीतिमुख संक्रान्तियों से पूर्वापरवर्त्ती 6–6 घण्टाकाल।
(d) क्रान्तिसाम्यकाल।
(e) वारुणी/ महावारुणी/महामहावारुणी पर्वकाल।
(f) अर्द्धोदय/महोदय योग।
(g) प्रत्येक मास की अमा।
(h) दीपावली की रात्रि।

–: सामान्य–विक्रय मुहूर्त :–

ग्राह्य तिथि :– रिक्ता, कृष्ण त्रयोदशी, शुक्ल प्रतिपदा और 8,

15, 30 तिथियों के अतिरिक्त, शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :— सभी शुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— भर., कृत्ति., आश्ले., पू. फा., विशा., पू. षा. और पू. भा. नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— शुभग्रह केन्द्र/कोण में व पापग्रह 3, 6, 11वें हों। लग्न में कुम्भराशि वर्जित है।

—ः सामान्य क्रय मुहूर्त्त :—

ग्राह्य तिथि :— रिक्ता, कृष्ण त्रयोदशी, शुक्ल प्रतिपदा और 8, 15, 30 तिथियों को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :— सभी शुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., चित्रा, स्वा., श्रव., शत. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— पापग्रह 3, 6, 11वें और शुभग्रह केन्द्र/कोण में हों, तथा लग्न में कुम्भराशि का अभाव हो।

—ः पशुक्रय—विक्रय मुहूर्त्त :—

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत. और रेवती नक्षत्र।

—ः भूमिक्रय—विक्रय मुहूर्त्त :—

ग्राह्य तिथि :— नन्दा और पूर्णा तिथियां।

ग्राह्य वार :— गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— मृग., पुन., आश्ले., मघा, पू.फा., विशा., अनु., मूल, पू.षा., पूभा. और रेवती नक्षत्र।

—ः पक्षीपालन मुहूर्त्त :—

ग्राह्य वार :— रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., रोहि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, उ.फा., हस्त, स्वा., अनु., ज्ये., उ.षा., श्रव., धनि., शत., और उ.भा. नक्षत्र।

—ःअरत्नजटित आभूषणनिर्माण मुहूर्त्तः—

ग्राह्य नक्षत्र :— चर, क्षिप्र एवं ध्रुव नक्षत्र ग्राह्य हैं।

ध्यान दें— त्रिपुष्करयोग में आभूषणनिर्माण त्रिगुण और द्विपुष्करयोग में द्विगुण लाभप्रद माना गया है। (त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योगों के कोष्ठक देखिए पृष्ठ 112 पर।)

—ः रत्नजटित आभूषण निर्माण मुहूर्त्तः—

ग्राह्य वार :— रवि और मंगलवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्रों के अलावा शेष सभी नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— मेष, सिंह, वृश्चिक लग्न शुभ हैं।

यहां रत्न से अभिप्राय पीत—रक्त आदि विविध वर्णों वाले (Multi-coloured) रत्नों से है।

—ः मुक्ताभूषण निर्माण मुहूर्त्त :—

ग्राह्य वार :— चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :—चर, मृदु, ध्रुव और क्षिप्र नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— शुभलग्न ग्राह्य हैं। वृष, कर्क और तुला लग्न विशेष शुभ माने गए हैं।

—ः स्वर्णाभूषणधारण मुहूर्त्त :—

ग्राह्य तिथि :— रिक्ता, अमा को छोड़कर शेष सभी तिथयां।

ग्राह्य वार :— रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— :— अश्वि., रोहि., पुन., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., उ.षा., धनि., उ.भा., और रेवती नक्षत्र।

विशेष :— रोहि., पुन., पुष्य, उ.फा., उ.षा. और उ.भा. नक्षत्रों में सौभाग्यवती स्त्रियों को नवीन वस्त्र एवं अलंकार धारण नहीं करने चाहिएं।

—ः वस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त :—

ग्राह्य वार :— शनि के अतिरिक्त शेष सभी वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— रोहि., मृग., चित्रा, अनु. और रेवती नक्षत्र।

—ः सूचीकर्म मुहूर्त्त :—

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., पुन., चित्रा, अनु. और धनिष्ठा नक्षत्र।

-: नव वस्त्रधारण मुहूर्त्त :-

नववस्त्रधारण मुहूर्त्तार्थ ग्राह्य तिथ्यादि स्वर्णाभूषणधारण मुहूर्त्त वाले ही हैं,– वहां देखें।

ध्यान रहे– रक्तवस्त्र धारणार्थ यहां भौमवार भी ग्राह्य है।

-: हलप्रवहण मुहूर्त्त :-

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., रोहि., मृग., पुन. पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., शत., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

-: लता - वृक्षरोपण मुहूर्त्त :-

ग्राह्य नक्षत्र :– विशा., मूल, शत., और मृदु, ध्रुव एवं क्षिप्र नक्षत्र।

-: धान्यविक्रय मुहूर्त्त :-

ग्राह्य नक्षत्र :– रोहि., उ.फा., उ.षा., धनि., शत. और उ.भा. नक्षत्र।

-: नववधू द्वारा प्रथम पाक मुहूर्त्त :-

द्विरागमन के बाद नववधू द्वारा प्रथमपाक करवाया जाता है। एतदर्थ ग्राह्य पदार्थ ये हैं–

ग्राह्य तिथि :– कृष्ण प्रतिपदा, शुक्ल त्रयोदशी, पूर्णिमा एवं दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :– चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– :– कृत्ति., रोहि., मृग., पुष्य, उ.फा., विशा., ज्ये., उ.षा., श्रव., धनि., शत., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– 2, 5, 8, 11 राशियां लग्न में शुभ हैं। सप्तमभाव सबल हो, चतुर्थभाव शुभयुत अथवा ग्रहरहित हो। अष्टम भाव भी ग्रहरहित ही अच्छा माना गया है।

-: नवान्नभक्षण मुहूर्त्त :-

ग्राह्य तिथि :– 1, 6, 10 तिथियों के अलावा शेष सभी तिथियां।

(तिथियों की विषघटियां यहां विशेष वर्जित हैं।)

ग्राह्य वार :– रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– चर, क्षिप्र एवं मृदु नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– शुभलग्न में नवान्नभक्षण किया जाता है।

चैत्र और पौष चान्द्रमास इसके लिए वर्जित हैं।

-: नवयुवतिसंगम मुहूर्त्त :-

ग्राह्य तिथि :– गर्भाधानोक्त नक्षत्र एवं शुभवार नवांगनासंगम के लिए विहित हैं। रजोदर्शन के पश्चात् चार रात्रि छोड़कर समरात्रियों में नवांगनासंगम करना चाहिए।

सूर्यास्त के बाद एवं सूर्योदय से पहले 3–3 घड़ियों किंवा एक–एक प्रहर में यह कृत्य निषिद्ध है।

सम्भव हो तो यहां पति–पत्नी दोनों का चन्द्रबल भी विचार लेना चाहिए।

-: औषधनिर्माण एवं औषधसेवनारम्भ मुहूर्त्त :-

ग्राह्य तिथि :– कृष्ण प्रतिपदा एवं दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :– रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– अश्वि., मृग., पुन. पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. और रेवती नक्षत्र।

जन्मनक्षत्र इन दोनों के लिए वर्जित है।

लग्नशुद्धि :– द्विस्वभाव एवं शुभलग्न हो। 7, 8, 12वां भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

-: रोगमुक्ति अनन्तर स्नान मुहूर्त्त :-

ग्राह्य तिथि :– रिक्ता तिथियां ग्राह्य हैं।

ग्राह्य वार :– रवि, मंगल, बुध, गुरु और शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र :– पुन., आश्ले., मघा, स्वा., रेव. तथा ध्रुव नक्षत्रों के अतिरिक्त, शेष सभी नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :– चर लग्न शुभ है। पापी (क्रूर) ग्रह 1, 4, 5, 7, 9, 10, 11वें भावों में हों। चन्द्र निर्बल होना चाहिए।

-: रसोत्पादन मुहूर्त :-

ग्राह्य वार :— सभी शुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., कृत्ति., मृग., आर्द्रा, हस्त, विशा., ज्ये., मूल और धनि. नक्षत्र।

-: तैल यन्त्र मुहूर्त :-

ग्राह्य तिथि :— कृष्ण प्रतिपदा, शुक्ल त्रयोदशी तथा दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :— सभी शुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., पुन. पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु., ज्ये., धनि. और रेवती नक्षत्र।

-: मद्यनिर्माण मुहूर्त :-

ग्राह्य वार :— सभी अशुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— शत. एवं तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र।

-: शिल्पविद्यारम्भ मुहूर्त :-

ग्राह्य वार :— सभी शुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.षा., श्रव., धनि., शत., उ.भा., और रेवती नक्षत्र।

-: नटकृत्य (अभिनय) आरम्भ मुहूर्त :-

ग्राह्य वार :— रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— रोहि., आर्द्रा, पुष्य, उ.फा., चित्रा, उ.षा., श्रव., धनि., शत. और उ.भा. नक्षत्र।

-: गीत-नृत्यारम्भ मुहूर्त :-

ग्राह्य वार :— चन्द्र एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— रोहि., मृग., पुष्य, उ.फा., हस्त, अनु., उ.षा., धनि., शत., उ.भा., और रेवती नक्षत्र।

-: गृहसेवक द्वारा सेवारम्भ मुहूर्त :-

ग्राह्य तिथि :— रिक्ता तथा 8, 12, 15 और 30 तिथियों को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :— रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु., अभि. और रेवती नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— शुभग्रह लग्न में और सूर्य, मंगल 10, 11 में हों, तब भृत्य को सेवा में प्रवृत्त किया जाए।

स्वामी और सेवक की योनिमैत्री तथा इन दोनों के राशीशों की मैत्री शुभ मानी जाती है।

-: निधिसंग्रह मुहूर्त :-

ग्राह्य तिथि :— शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 11 तिथियां।

ग्राह्य वार :— सभी शुभ वार।

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., मृग., पुन. पुष्य, विशा. अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती नक्षत्र।

-: ऋणदान मुहूर्त :-

ग्राह्य नक्षत्र :— अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा. अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती नक्षत्र।

-: सन्धिकरण मुहूर्त :-

ग्राह्य तिथि :— 8, 12 तिथियां।

ग्राह्य नक्षत्र :— मृग., मघा, पू.फा. एवं अनु. नक्षत्र।

लग्नशुद्धि :— शुक्र द्वारा दृष्ट लग्न शुभ माना गया है।

तैतिल करण में की गई सन्धि शास्त्रकारों ने विशेष फलप्रद मानी है।

-: शान्तिक-पौष्टिक मुहूर्त :-

ग्रहशान्ति, गण्डान्तजन्म-दोषशान्ति आदि कर्म शान्तिक और श्रीपूजा, विनायकशान्ति आदि मंगलकृत्य पौष्टिककर्म कहलाते हैं। एतदर्थ (इन दोनों कृत्यों के लिए) ग्राह्य तिथ्यादि ये हैं—

ग्राह्य तिथि :– रिक्ता 8, 14, 15 और 30 तिथियों को छोड़कर शेष सभी तिथियां।

ग्राह्य वार :– सभी शुभ वार।

वार एवं तिथि की संख्या के योग में एक जोड़कर 4 से भाग देने पर 3 और 0 शेष बचे तो अग्निवास पृथ्वी पर ; 1 बचने पर आकाश में और 2 बचने पर पाताल में माना जाता है। पाताल, आकाश में अग्नि का वास शुभ नहीं माना जाता। पृथ्वी पर ही यह शुभ माना गया है। पृथ्वी पर अग्निवास के अभाव में शान्तिक, पौष्टिक कर्म करना निषिद्ध है (**'होमकालिक अग्निवास बोधक कोष्ठक'** के लिए देखें-पृष्ठ.. **119**)।

ग्राह्य नक्षत्र :– मघा, अनु., रेवती और क्षिप्र, ध्रुव तथा चर नक्षत्र।

सूर्यनक्षत्र से तीन–तीन नक्षत्र क्रमशः सू., बु, शु., श., चं., मं., गु., राहु और केतु के माने जाते हैं। यदि इस गणानानुसार उक्त ग्राह्य नक्षत्र क्रूरग्रह का हो तो उस नक्षत्र में शान्तिक एवं पौष्टिक-कृत्य (होम) निषिद्ध है, क्योंकि होम में डाली गई आहुति पापी ग्रहमुख में गिरती है, जिसका फल अच्छा नहीं माना जाता।

'होमाहुतिग्राही ग्रह बोधक कोष्ठक' पृष्ठ 118 पर देखें।

आधुनिक व्यवसायों के लिए मुहूर्त्तकाल निकालिए

नई सभ्यता–संस्कृति एवं वैज्ञानिक विकास ने हमें अनेक नए व्यवसाय दिए हैं, जिनको प्रारम्भ करने के लिए शुभ (मुहूर्त्त) काल जानने के उद्देश्य से व्यवसायी लोग दैवज्ञ के पास पहुंचते है। यद्यपि ये नवीन व्यवसाय कुण्डली के देह, द्रव्य आदि भावों से ही सम्बद्ध हैं, अतः लग्नकुण्डली के तत्सम्बद्ध भाव एवं भाव के स्वामी के बलाबल को दृष्टि में रखते हुए दैवज्ञ को उस व्यवसाय के मुहूर्त्तकाल का निर्णय करना चाहिए।

उदाहरणार्थ– होटल का व्यंवसारा आवास से सम्बद्ध होने से चतुर्थ भाव से और Publication का व्यवसाय ज्ञानविद्या से सम्बद्ध होने से पञ्चमभाव से सम्बद्ध है। अतः दैवज्ञ को इन दोनों व्यंवसायों के शुभारम्भ के मुहूर्त्तलग्न में क्रमशः चतुर्थ और पञ्चम भाव तथा चतुर्थेश और पञ्चमेश के बल को ध्यान में रखना होगा। इन मुहूर्त्तलग्नों में **'सर्वत्र वर्ज्य पदार्थ / दोष'** प्रकरण के अर्न्तगत दोषों को यथाशक्य वर्जित करने का प्रयास दैवज्ञ को अवश्य करना चाहिए।

अत्यावश्यकता में मुहूर्त्तनिर्णय

कुछ लोग शीघ्रतावश अपनी अभीष्टकालावधि में ही अपने व्यवसाय आदि के शुभारम्भ का मुहूर्त्त निकालने के लिए दैवज्ञ से आग्रह अक्सर किया करते है। ऐसी स्थिति में मुहूर्त्तशास्त्रियों का परामर्श है कि– दैवज्ञ को ऐसा लग्न चुनना चाहिए जहां शुभग्रह केन्द्र / त्रिकोण (1, 4, 7, 10 / 5, 9 भावों) में; क्रूरग्रह 3, 6, 11 भावों में और क्रूर या पापीग्रह 11वें भाव में स्थित हों। ऐसे लग्न में सभी शुभकार्यों का आरम्भ फलप्रद होता है– ऐसा मुहूर्तविदों का मत है। **वसिष्ठ** का मत है कि मुहूर्त्ताभिलाषी की जन्म या लग्नराशि से उपचय(3, 6, 10, 11वें) भाव की राशि मुहूर्त्तलग्न में हो, 8वां और 12वां भाव शुद्ध (ग्रहवर्जित) और चन्द्रमा उपचय स्थान में (3, 6, 10, 11 वें भाव में) हो तो सभी शुभकृत्य सफल होते हैं।

> उपचयभे **लग्नगते व्यय–नैधन शुद्धिसंयुते लग्ने।**
> **उपचयगे शीतकरे मंगलकर्माणि कार्याणि।।** –*(वसिष्ठ)*

मुहूर्त्तनिर्णय के लिए वसिष्ठ के इस निर्देश को भी दैवज्ञ प्रयोग में ला सकता है। ध्यान रहे– इन सभी मुहूर्त्तकालों में क्षीणचन्द्र, भद्रा, व्यतीपात आदि दोषों का विचार तो करना ही चाहिए। मुहूर्त्ताभिलाषी का गोचर में चन्द्रबल भी यहां उपेक्ष्य नहीं है। यहां पर लग्न शुभग्रहों से युत एवं दृष्ट हो तो अधिक शुभकर होगा।

–: प्रकीर्ण :–

(1) **दन्तधावन :–** 1, 6, 30 तिथियों में काष्ठ दन्तधावन करने का निषेध है। रविवार को नवमी होने पर पर भी यह निषिद्ध है।

ध्यान रहे– काष्ठ दन्तधावन (लता, वृक्ष आदि की शाखा से निर्मित दातुन) के लिए ही यह निषेध है। Tooth brush आदि से तो दन्तधावन किया जा सकता है।

(2) **तैलाभ्यंग, मांस, रति, क्षौरकर्म :–** षष्ठी में तैल, अष्टमी में मांस, अमा में मैथुन और चतुर्दशी में क्षौरकर्म निषिद्ध है।

तैल में कोई अन्य मृत्तिका, लौंग आदि पदार्थ डालकर, उसे षष्ठी तिथि में भी अभ्यंग (मालिश) आदि के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

(3) उद्वर्तन (उबटन) :– 2, 10 13 तिथियों में उदवर्तन शुभ नहीं माना जाता।

(4) धात्रीफल स्नान :– 7, 9 और 30 तिथियों में धात्रीफल (आंवला) से स्नान नहीं करना चाहिए।

(5) सामान्यतः वर्जित राहुकाल :– वस्तुतः यह **राहुकाल** दक्षिणभारत की देन है। दक्षिणभारत में 'राहुकाल' में शुभकृत्य करना अच्छा नहीं माना जाता। 'राहुकाल' को शुभकृत्यों में वर्जित करने की परम्परा अब लगभग 50–60 वर्ष से उत्तरभारत में भी आ पहुंची है। 'राहुकाल' प्रतिदिन सूर्यादि वारों में भिन्न–भिन्न समय पर केवल 1½- 1½ घं. के लिए घटित होता है। जिसके ज्ञानार्थ नीचे **'कोष्ठक'** दे रहे हैं–

राहुकाल बोधक कोष्ठक

वार	प्रारम्भ (भा. स्टैं. टा.)	समाप्त (भा. स्टैं. टा.)
रवि	16 घं. 30 मिं.	18 घं. 00 मि.
चन्द्र	7 " 30 "	9 " 00 "
मंगल	15 " 00 "	16 " 30 "
बुध	12 " 00 "	13 " 30 "
गुरु	13 " 30 "	15 " 00 "
शुक्र	10 " 30 "	12 " 00 "
शनि	9 " 30 "	10 " 30 "

समझ लें– राहुकाल रविवार को भा. स्टैं. टा. के अनुसार 16 घं. 30 मि. से 18 घं. 00 मि. तक और गुरुवार को 13 घं. 30 मि. से 15 घं. 00 मि. तक रहता है। इसी प्रकार ऊपर दिए गए कोष्ठक से शेष वारों में भी **'राहुकाल'** समझना चाहिए।

–:अभियोग मुहूर्त्त :–

(मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त)

(अभियोग में जय, पराजय एवं सन्धिकर योग)

अकुल तिथियां :– 1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 15 तिथियां।

अकुल वार :– रवि, चन्द्र, गुरु और शनिवार।

अकुल नक्षत्र :– भर., रोहि., पुन. आश्ले. उ.फा., हस्त, स्वा., अनु., उ.षा., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

ध्यान दें– अकुलसंज्ञक इन तिथि, वार, नक्षत्रों (तीनों) के संयोगकाल में अभियोग करने (मुकदमा दायर करने) वाला (अभियोक्ता= मुद्दई) विजयी होता है।

कुल तिथियां :– 4, 8, 12 और 14 तिथियां।

कुल वार :– मंगल और शुक्रवार।

कुल नक्षत्र :– अश्वि. कृत्ति., मृग., पुष्य, मघा, पू.फा., चित्रा, विशा., ज्ये., पू.षा., श्रव., और पू.भा. नक्षत्र।

कुलसंज्ञक इन तिथि, वार और नक्षत्रों (तीनों) के संयोगकाल में अभियोग करने वाला (मुद्दई) परास्त होता है और अभियुक्त (मुद्दालेह) विजयी होता है।

कुलाकुल तिथियां :– 2, 6 और 10 तिथियां।

कुलाकुल वार :– बुधवार।

कुलाकुल नक्षत्र :– आर्द्रा, मूल, अभि. और शत. नक्षत्र।

कुलाकुल तिथि, वार एवं नक्षत्र –इन तीनों के संयोगकाल में अभियोग करने वाले को अभियुक्त से सन्धि करनी पड़ती है।

विशेष– उपरोक्त ' अभियोग मुहूर्त्त' का उपयोग यात्रार्थ भी किया जाता है। अकुल तिथ्यादि में प्रारम्भ की गई यात्रा सफल, कुल तिथ्यादि में विफल और कुलाकुल तिथ्यादि में सामान्य (लाभ–हानिरहित) मानी जाती है।

-I-I-I-I-*-I-I-I-I-

मुहूर्त्तोपयोगी कोष्ठक

[मुहूर्त्तों से सम्बद्ध उपयोगी लगभग सभी कोष्ठक हम यहां अगले पृष्ठों पर दे रहे हैं। कुछेक कोष्ठक, जिन्हें सम्बद्ध मुहूर्त्तों के साथ उद्धृत करना आवश्यक था, वे सभी पहले ही उन मुहूर्त्तों के साथ दे दिए गए हैं। उन्हें फिर से उद्धृत करना हम यहां आवश्यक नहीं समझते।]

तिथीश बोधक कोष्ठक

तिथियां	तिथीश
1	अग्नि
2	ब्रह्मा
3	गौरी
4	गणेश
5	सर्प
6	स्कन्द
7	सूर्य
8	शिव
9	दुर्गा
10	यम
11	विश्वेदेवा
12	हरि
13	काम
14	शिव
15	चन्द्रमा
30	चन्द्र/पितृ

नन्दा आदि तिथिनाम बोधक कोष्ठक

तिथिनाम	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
तिथियां	1, 6, 11	2, 7, 12	3, 8, 13	4, 9, 14	5, 10, 15, 30

नक्षत्रेश बोधक कोष्ठक

→ नक्षत्र	नक्षत्रेश
अश्वि.	अश्विनी कुमार
भर	यम
कृत्ति.	अग्नि
रोहि.	धाता
मृग.	चन्द्र
आर्द्रा	रुद्र
पुन.	अदिति
पुष्य	बृहस्पति
आश्ले.	सर्प
मघा	पितर
पू.फा.	भग
उ.फा.	अर्यमा
हस्त	रवि
चित्रा	त्वष्टा

→ नक्षत्र	नक्षत्रेश
स्वा.	वायु
विशा.	इन्द्राग्नी
अनु.	मित्र
ज्ये.	इन्द्र
मूल	निर्ऋति
पू.षा.	क्षीर
उ.षा.	विश्वेदेवा
अभि.	विधि
श्रव.	विष्णु
धनि.	वसु
शत.	वरुण
पू.भा.	अजचरण
उ.भा.	अहिर्बुध्न्य
रेव.	पूषा

ध्रुव, चर आदि नक्षत्रसंज्ञा बोधक कोष्ठक

नक्षत्र संज्ञा→	ध्रुव (स्थिर)	चर	उग्र	मिश्र	क्षिप्र (लघु)	मृदु	तीक्ष्ण
नक्षत्र →	रोहि. उ.फा. उ.षा. उ.भा.	पुन. स्वा. श्रव. धनि. शत.	भर. मघा पू.फा. पू.षा. पू.भा.	कृत्ति. विशा.	अश्वि. पुष्य हस्त अभि.	मृग. चित्रा अनु. रेव.	आर्द्रा आश्ले. ज्ये. मूल

तिथि– विषघटी बोधक कोष्ठक

तिथियां→	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15 / 30
विषघटियां (कहां से कहां तक)	15 से 19	5 से 9	8 से 12	7 से 11	7 से 11	5 से 9	4 से 8	8 से 12	7 से 11	10 से 14	3 से 7	13 से 17	14 से 18	7 से 11	8 से 12

(**ध्यान रहे–** तिथियों की विषघटियों के ये प्रारम्भ, समाप्तिकाल मध्यम तिथिभोग (60 घटी) के अनुसार हैं। तिथि के तात्कालिक स्पष्टभोग के अनुसार इन्हें त्रैराशिक द्वारा स्पष्ट कर लेना चाहिए।)

वार-विषघटी बोधक कोष्ठक

वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
विषघटियां (कहां से कहां तक)	20 से 24	2 से 6	12 से 16	10 से 14	7 से 11	5 से 9	25 से 29

(वारों की विषघटियों के ये प्रारम्भ–समाप्तिकाल स्पष्ट ही हैं।)

नक्षत्र–विषघटी बोधक कोष्ठक

नक्षत्र →	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
विषघटियां (कहां से कहां तक)	50 से 54	24 से 28	30 से 34	40 से 44	14 से 18	21 से 25	30 से 34	20 से 24	32 से 36	30 से 34	20 से 24	18 से 22	21 से 25	20 से 24
नक्षत्र →	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
विषघटियां (कहां से कहां तक)	14 से 18	14 से 18	10 से १५	14 से 18	56 से ६०	24 से 28	20 से 24	– –	10 से १४	10 से १४	18 से 22	16 से २०	24 से 28	30 से 34

(ध्यान रहे– नक्षत्र–विषघटियों के ये प्रारम्भ–समाप्तिकाल नक्षत्रों के मध्यम भोग (60 घटी) के अनुसार हैं। नक्षत्र के तात्कालिक स्पष्टभोग के अनुसार इन्हें त्रैराशिक द्वारा स्पष्ट कर लेना जरूरी है।)

चैत्रादि मासों में शून्य तिथि, नक्षत्र, राशियां

चैत्रादि मासों में शून्यतिथि बोधक कोष्ठक

मास	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कात्ति.	मार्ग.	पौष	माघ	फाल्गु.
शून्य तिथि (शुक्ल पक्ष)	8, 9	12	13	7	2, 3	1, 2	10,11	14	7, 8	4, 5	6	4
शून्य तिथि कृष्ण पक्ष)	8, 9	12	14	6	2, 3	1, 2	10,11	5	7, 8	4, 5	5	3

चैत्रादि मासों में शून्यनक्षत्र बोधक कोष्ठक

मास	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कात्ति.	मार्ग.	पौष	माघ	फाल्गु.
शून्य नक्षत्र	अश्वि. रोहि.	चित्रा, स्वा.	पुष्य, उ.षा.	पू.फा., धनि.,	उ.षा., श्रव.	शत., रेव.	पू. भा.,	कृत्ति., मघा	चित्रा, विशा.	अश्वि., आर्द्रा, हस्त	मूल, श्रव.	भर., ज्ये.

जैसे–चैत्रमास में अश्वि. और रोहि. शून्यनक्षत्र हैं, अतः इन्हें इस (चैत्र) मास में शुभकृत्यों में वर्जित करना चाहिए। इसे गौड़ और मालव (उज्जैन) में ही वर्जित किया जाता है।

चैत्रादि मासों में शून्यराशि बोधक कोष्ठक

मास	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कात्ति.	मार्ग.	पौष	माघ	फाल्गु.
शून्य राशि	कुम्भ	मीन	वृष	मिथुन	मेष	कन्या	वृश्चि.	तुला	धनु	कर्क	मकर	सिंह

जैसे–चैत्रमास में कुम्भ शून्यराशि है, अतः इस (चैत्र) मास में कुम्भराशि वाला लग्न शुभकृत्यों में ग्राह्य नहीं होगा। इसे भी गौड़ और मालवप्रदेश में ही वर्जित किया जाता है।

पक्षरन्ध्रतिथि एवं वर्ज्यघटी बोधक कोष्ठक

दोनों पक्षों की रन्ध्रतिथियां →	4	6	8	9	12	14
प्रारम्भिक वर्ज्य–घटियां →	8	9	14	25	10	5

केन्द्र/त्रिकोण में गुरु, शुक्र, बुध की स्थिति से पक्षरन्ध्रतिथि–दोष समाप्त हो जाता है।

(वैसे तो, पक्षरन्ध्रतिथियों का पूर्णकाल ही वर्ज्य माना गया है; लेकिन इस कोष्ठक में दी गई इनकी ये प्रारम्भिक घड़ियां विशेष अशुभ मानी गई हैं।)

तिथि-नक्षत्र-वारोत्पन्न महत्त्वपूर्ण कुछ सुयोग

अग्रिम पृष्ठ पर तिथि-नक्षत्र-वारोत्पन्न सुयोगों एवं कुयोगों का कोष्ठक दे रहे हैं। जैसा कि, हम पहले भी लिख चुके हैं– तिथि–भ–वारज कुयोग हूण, बंग, खश प्रदेशों में ही अपना कुफल दिखलाते हैं। अन्य प्रदेशान्तर्गत लोगों को इन से भयभीत होने की कोई जरूरत नहीं, पुनरपि, लग्नशुद्धि इनके कुप्रभावों को सर्वत्र सर्वथा समाप्त कर देती है। मुहूर्त्तविदों की मान्यता है, कि तिथि–भ–वारज सुयोगों का सुफल तो सर्वत्र अप्रतिहत है। यहां हम ऐसे ही महत्त्वपूर्ण कुछ सुयोगों के बारे में अपने पाठकों को सुविदित करेंगे, जिनका प्रयोग शुद्धमुहूर्त्त की अनुपलब्धि में निःसंकोच किया जा सकता है। वे सुयोग हैं– सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रवियोग एवं सिद्धियोग। इनके बारे में विस्तृत विवेचन नीचे दिया जा रहा है। लीजिए–

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग

वारों का विशेष नक्षत्रों से सम्बन्ध होने पर **'सर्वार्थसिद्धियोग'** बनते हैं। जैसा कि, इनके नाम से ही स्पष्ट है, इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतिपात, वैधृति, गुरु–शुक्रास्त, अधिमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थसिद्धि योग बनता है, उसे **'अमृतसिद्धि योग'** की विशेष संज्ञा दी गई है। अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां वर्जित मानी गई हैं, जिन्हें यहां कोष्ठक में दर्शाया गया है। इन तिथियों के संयोग से यह अमृतसिद्धि योग दूषित हो जाता है। अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। **ध्यान रहे** गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए।

यद्यपि मुहूर्तग्रन्थों में गुरुवार वाले अमृतसिद्धि को छोड़कर शेष सभी सर्वार्थसिद्धि योगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता की स्थिति में ही इस योग में प्रणय, विवाह आदि करना चाहिए– ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्नशुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

रवि योग

रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है– रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है ("कुयोगविध्वंस–कराःशुभेषु")। इस योग में वे सभी शुभकृत्य किए जा सकते हैं जो सर्वार्थसिद्धि योगों में किए जा सकते हैं।

सिद्धियोग

सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि और रवियोगों की भान्ति ही महत्त्वशाली है। सर्वार्थसिद्धियोग और रवियोगों में किए जाने वाले सभी कार्य इन योगों में भी किए जा सकते हैं। शास्त्रों का कहना है कि, सिद्धियोग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

तिथि–वार–नक्षत्रसंयोगोत्पन्न शुभाशुभ योग बोधक कोष्ठक

वार → योग ↓	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राज ❋	2, 3, 7, 12, 15, भर., मृग.,पुष्य, पू.फा., चित्रा, अनु., पू.षा., धनि., उ.भा.	–	2, 3, 7, 12, 15, भर., मृग.,पुष्य, पू.फा., चित्रा, अनु., पू.षा., धनि., उ.भा.	2, 3, 7, 12, 15, भर., मृग.,पुष्य, पू.फा., चित्रा, अनु., पू.षा., धनि., उ.भा.	–	2, 3, 7, 12, 15, भर., मृग.,पुष्य, पू.फा., चित्रा, अनु., पू.षा., धनि., उ.भा.	–
कुमार ❋	–	1, 5, 6, 10, 11, अश्वि., रोहि., पुन., मघा, हस्त, विशा., मूल, श्रव., पू.भा.	1, 5, 6, 10, 11, अश्वि., रोहि., पुन., मघा, हस्त, विशा., मूल, श्रव., पू.भा.	1, 5, 6, 10, 11, अश्वि., रोहि., पुन., मघा, हस्त, विशा., मूल, श्रव., पू.भा.	–	1, 5, 6, 10, 11, अश्वि., रोहि., पुन., मघा, हस्त, विशा., मूल, श्रव., पू.भा.	–
स्थिर ❋	–	–	–	–	4, 8, 9, 13, 14, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., उ.फा., स्वा., ज्ये., उ.षा., शत. रेव.	–	4, 8, 9, 13, 14, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., उ.फा., स्वा., ज्ये., उ.षा., शत. रेव.
अमृतसिद्धि ❋	हस्त (वर्ज्यतिथि 5)	मृग. (वर्ज्यतिथि 6)	अश्वि. (वर्ज्यतिथि 7)	अनु. (वर्ज्यतिथि 8)	पुष्य (वर्ज्यतिथि 9)	रेव. (वर्ज्यतिथि 10)	रोहि. (वर्ज्यतिथि 11)
सर्वार्थसिद्धि ❋	अश्वि., पुष्य, उ.फा. हस्त, मूल, उ.षा., उ.भा.	रोहि., मृग., पुष्य, अनु., श्रव.	अश्वि., कृत्ति., आश्ले., उ.भा.	कृत्ति., रोहि., मृग., हस्त, अनु.	अश्वि., पुन., पुष्य, अनु., रेव.	अश्वि., पुन., पू.फा., श्रव., रेव.	रोहि., स्वा., श्रव.,
सिद्धि ❋	मूल	श्रव.	उ. भा.	कृत्ति.	पुन.	पू. फा.	स्वा.
चर ❋	उ.षा.	आर्द्रा.	विशा.	रोहि.	शत.	मघा	मूल
मृत्यु	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त
यमघण्ट	मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल	कृत्ति.	रोहि.	हस्त
यमदंष्ट्रा	मघा, धनि.	मूल, विशा.	भर., कृत्ति	पुन., रेव.	अश्वि., उ.षा.	रोहि., अनु.	श्रव., शत.
वज्रमुसल (दग्धनक्षत्र)	भर.	चित्रा	उ.षा.	धनि.	उ.फा.	ज्ये.	रेव.
सिद्धिदा तिथि ❋	–	–	3, 8, 13 (जया)	2, 7, 12, (भद्रा)	5, 10, 15, (पूर्णा)	1, 6, 11, (नन्दा)	4, 9, 14, (रिक्ता)
अमृता तिथि ❋	1, 6, 11, (नन्दा)	2, 7, 12, (भद्रा)	1, 6, 11, (नन्दा)	3, 8, 13 (जया)	4, 9, 14, (रिक्ता)	2, 7, 12, (भद्रा)	5, 10, 15, (पूर्णा)
क्रकच	12	11	10	9	8	7	6
हुताशन (अग्नितिथि)	12	6	7	8	9	10	11
दग्धातिथि	12	11	5	3	6	8	9
विषतिथि	4	6	7	2	8	9	7
संवर्त	7	–	–	1	–	–	–

नोटः– ऊपर कोष्ठक में दिए गए 1, 2, 3 आदि अंक प्रतिपदा आदि तिथियों के बोधक हैं। तिथि, वार एवं नक्षत्र के संयोग से उत्पन्न होने वाले ये योग कुयोग एवं सुयोग भेद से दो प्रकार के हैं। स्टार (❋) चिह्न वाले योग सुयोग एवं बिना चिन्ह वाले योग कुयोग हैं। इन कुयोगों को हूण, बंग, खश आदि प्रदेशों में ही वर्जित किया जाता है। जबकि– सुयोग सर्वत्र ग्राह्य माने गए हैं। **ध्यान दें–** आवश्यकता (विवशता) की स्थिति में सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि आदि सुयोगों में सामान्य शुभकृत्य किए जा सकते हैं। ये सभी सुयोग अन्य कुयोगों के कुप्रभाव को नष्ट कर देते हैं– ऐसी मुहूर्त्तकारों की मान्यता है।

आनन्दादि योग बोधक कोष्ठक

वार→	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	फल	वर्ज्य आदि घटियां
योग ↓	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र		
आनन्द	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	सिद्धि	–
कालदण्ड	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	हानि	60
धूम्राक्ष	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	दुःख	1
प्रजापति	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	लाभ	–
सौम्य	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	शुभ	–
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	क्षति	5
ध्वज	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	शुभ	–
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	सुख	–
वज्र	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	क्षति	5
मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	हानि	5
छत्र	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	सम्मान	–
मित्र	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	लाभ	–
मानस	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	शुभ	–
पद्माक्ष	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	धननाश	4
लुंबक	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	क्षय	4
उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	कष्ट	60
मृत्यु	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	मरण	60
काण	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	कष्ट	2
सिद्धि	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	सिद्धि	–
शुभ	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	शुभ	–
अमृत	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	भोग	–
मुसल	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	क्षति	2
गद	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	रोग	7
मातंग	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	वृद्धि	–
राक्षस	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	कष्ट	60
चर	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	लाभ	–
स्थिर	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	सुख	–
प्रवर्द्धमान	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	वृद्धि	–

ध्यान दें–कोष्ठोक्त ये 28 आनन्दादि योग भी वार एवं नक्षत्रों के संयोग से बनते हैं। इनमें से कालदण्डादि अशुभयोग केवल हूण, बंग खश आदि प्रदेशों में ही वर्ज्य माने गए हैं। शेष आनन्द–सौम्यादि शुभयोग सर्वत्र ग्राह्य माने जाएं– ऐसा मुहूर्त्तविदों का मत है।

पञ्चशलाका वेध बोधक कोष्ठक

(केवल विवाहमुहूर्त्त में विचार्य)

वेधक नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
वेध्य नक्षत्र	पू.फा.	अनु.	विशा.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	ज्ये.	धनि.	श्रव.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.
वेधक नक्षत्र	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
वेध्य नक्षत्र	शत.	कृत्ति.	भर.	पुष्य	पुन.	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	मघा	आश्ले.	स्वा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.

यदि शनि अश्वि. में हो तो उससे पू. फा. नक्षत्र विद्ध होगा। अतः तब पू.फा. में विवाह नहीं हो सकता।

सप्तशलाका वेध बोधक कोष्ठक

(विवाहेतर सभी मुहूर्त्तों में विचार्य)

वेधक नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
वेध्य नक्षत्र	पू.फा.	मघा	श्रव.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	ज्ये.	अनु.	भर.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.
वेधक नक्षत्र	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
वेध्य नक्षत्र	शत.	धनि.	आश्ले.	पुष्य	पुन.	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	कृत्ति.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.

यदि कृत्तिका में मंगल हो तो श्रवण नक्षत्र को वह वेधेगा। इस स्थिति में श्रवण नक्षत्र के समय मुण्डन–उपनयन आदि शुभकार्य नहीं किए जा सकते।

पर 7 घं. 24 मि. 8 घं. 24 मि. 9 घं. 24 मि. आदि क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि

कुलिकादि मुहूर्त्तबोधक कोष्ठक

वार / योग	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कुलिक	14	12	10	8	6	4	2
कालवेला	8	6	4	2	14	12	10
यमघण्ट	10	8	6	4	2	14	12
कण्टक	6	4	2	14	12	10	8

कुलिकादि ये सभी मुहूर्त्त दिनमान के षोडशांश से बनते हैं; अतः ऊपर कोष्ठक में कुलिकादि के आगे लिखी गई ये 14, 8, 10 आदि संख्याएं दिनमान का षोडशांश (सोहलवां भाग) है। इसी षोडशांश को यहां मुहूर्त्त कहा गया है। **स्पष्ट है–** रविवार को 14वां षोडशांश कुलिकमुहूर्त्त है। इसी प्रकार शनिवार को 8वां षोडशांश 'कण्टक' नामक मुहूर्त है। ठीक, इसी भान्ति अन्य वारों में भी कोष्ठोक्त प्रकार से कुलिकादि को समझिए।

दिवा–रात्रि मुहूर्त्त निर्देशक कोष्ठक

मुहूर्त्तक्रम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
दिवा–मुहूर्त्त	शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	जल	विश्वेदेवा	अभिजित	ब्रह्मा	इन्द्र	इन्द्राग्नी	राक्षस	वरुण	अर्यमा	भग
रात्रि–मुहूर्त्त	शिव	अजपाद	अहिर्बुध्न्य	पूषा	अश्विनी कुमार	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चन्द्र	अदिति	बृहस्पति	विष्णु	सूर्य	विश्वकर्मा	पवन

(दिनमान को 15 से भाग देने पर दिन के और रात्रिमान को 15 से भाग देने पर रात्रि के एक मुहूर्त्त का मान प्राप्त होता है।)

रवि आदि वारों में होराबोधक कोष्ठक

इस कोष्ठक में बाईं ओर वाले 5 कॉलमों के ऊपर सूर्योदय (सू.उ.) के 4, 5, 6, 7, 8 घं. लिखे हैं। आपके अभीष्ट दिन के स्थानीय सूर्योदयकाल का घं., इन कॉलमों मे से जिस कॉलम के ऊपर लिखा है, उस कॉलम के नीचे लिखे सभी घण्टों में स्थानीय सूर्योदयकाल के मिनट कल्पनया (जुबानी) जोड़ लें। बस, इतना करने से ही उस दिन की 24 होराओं के वे प्रारम्भकाल (घं., मि.)बन जाएंगे। इनसे आप अपने अभीष्टकाल में अभीष्ट वार की होरा तुरन्त जान लेंगे। **जैसे-** 1 जन. 2004 ई. (गुरुवार) को 5 घं. 50 मि. सायं (17 घं. 50 मि.) (भा. स्टैं. टा.) पर चण्डीगढ़ (U.T) में होरा जाननी है।इस दिन चण्डीगढ़ में सूर्योदयकाल 7घं 24 मि. (भा. स्टैं. टा.) है। कोष्ठक में सूर्योदय घं. 7 वाले कॉलम के नीचे लिखे सभी 7 आदि घण्टों में इस सूर्योदय के मि. 24 जोड़ देने पर 7 घं. 24 मि., 8 घं. 24 मि., 9 घं. 24 मि. आदि क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि होराओं के प्रारम्भकाल बन गए। इसी अनुसार कोष्ठक से स्पष्ट है, इस दिन (गुरुवार) को 17 घं. 50 मि. (I.S.T.) पर शुक्र की होरा है।

रवि आदि वारों में होरेश बोधक कोष्ठक

सू. उ. 4 घं.	सू. उ. 5 घं.	सू. उ. 6 घं.	सू. उ. 7 घं.	सू. उ. 8 घं.	रवि-वार	चन्द्र-वार	मंगल-वार	बुध -वार	गुरु-वार	शुक्र-वार	शनि-वार
घं.	घं.	घं.	घं.	घं.							
4	5	6	7	8	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
5	6	7	8	9	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
6	7	8	9	10	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
7	8	9	10	11	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
8	9	10	11	12	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
9	10	11	12	13	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
10	11	12	13	14	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
11	12	13	14	15	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
12	13	14	15	16	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
13	14	15	16	17	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
14	15	16	17	18	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
15	16	17	18	19	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
16	17	18	19	20	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
17	18	19	20	21	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
18	19	20	21	22	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
19	20	21	22	23	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
20	21	22	23	24	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
21	22	23	24	25	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
22	23	24	25	26	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
23	24	25	26	27	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
24	25	26	27	28	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
25	26	27	28	29	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
26	27	28	29	30	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
27	28	29	30	31	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल

त्रिपुष्करयोग-बोधक कोष्ठक

वार	तिथियां	नक्षत्र
रवि	2, 7, 12	कृत्ति., पुन., उ.फा., विशा., उ.षा., पू.भा.,
मंगल	2, 7, 12	कृत्ति., पुन., उ.फा., विशा., उ.षा., पू.भा.,
शनि	2, 7, 12	कृत्ति., पुन., उ.फा., विशा., उ.षा., पू.भा.,

'त्रिपुष्करयोग' तिथि, वार, नक्षत्रों के संयोग से बनते हैं। रवि, मंगल और शनि में से कोई एक वार; 2, 7 और 12 तिथियों में से कोई एक तिथि एवं कृत्ति., पुन. आदि नक्षत्रों में से कोई एक नक्षत्र– ये तीनों जिस समय एकत्र (संयुक्त) हों उस समय त्रिपुष्करयोग होता है। इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि आदि) का खरीदना भी त्रिगुणकारी है– ऐसा मुहूर्त्तविदों का कहना है।

द्विपुष्करयोग-बोधक कोष्ठक

वार	तिथियां	नक्षत्र
रवि	2, 7, 12	मृग., चित्रा, धनि.,
मंगल	2, 7, 12	मृग., चित्रा, धनि.,
शनि	2, 7, 12	मृग., चित्रा, धनि.,

द्विपुष्करयोग भी त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति तिथि, वार एवं नक्षत्र संयोगोत्पन्न हैं। शुभाशुभ सभी घटनाओं को ये द्विगुणित करते हैं– यह मौहूर्त्तिकों का कथन है।

रवियोग

सूर्य नक्षत्र↓	←		चन्द्र नक्षत्र		→	
अश्वि.	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.	मघा	हस्त	पू.षा.
भर.	मृग.	पुन.	मघा	पू.फा.	चित्रा	उ.षा.
कृत्ति.	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	स्वा.	श्रव.
रोहि.	पुन.	आश्ले.	उ.फा.	हस्त	विशा.	धनि.
मृग.	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनु.	शत.
आर्द्रा	आश्ले.	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	ज्ये.	पू.भा.
पुन.	मघा	उ.फा.	स्वा.	विशा.	मूल	उ.भा.
पुष्य	पू.फा.	हस्त	विशा.	अनु.	पू.षा.	रेव.
आश्ले.	उ.फा.	चित्रा	अनु.	ज्ये.	उ.षा.	अश्वि.
मघा	हस्त	स्वा.	ज्ये.	मूल	श्रव.	भर.
पू.फा.	चित्रा	विशा.	मूल	पू.षा.	धनि.	कृत्ति.
उ.फा.	स्वा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.	शत.	रोहि.
हस्त	विशा.	ज्ये.	उ.षा.	श्रव.	पू.भा.	मृग.
चित्रा	अनु.	मूल	श्रव.	धनि.	उ.भा.	आर्द्रा
स्वा.	ज्ये.	पू.षा.	धनि.	शत.	रेव.	पुन.
विशा.	मूल	उ.षा.	शत.	पू.भा.	अश्वि.	पुष्य
अनु.	पू.षा.	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	आश्ले.
ज्ये.	उ.षा.	धनि.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	मघा
मूल	श्रव.	शत.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	पू.फा.
पू.षा.	धनि.	पू.भा.	अश्वि.	भर.	मृग.	उ.फा.
उ.षा.	शत.	उ.भा.	भर.	कृत्ति.	आर्द्रा	हस्त
श्रव.	पू.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.	पुन.	चित्रा
धनि.	उ.भा.	अश्वि.	रोहि.	मृग.	पुष्य	स्वा.
शत.	रेव.	भर.	मृग.	आर्द्रा	आश्ले.	विशा.
पू.भा.	अश्वि.	कृत्ति.	आर्द्रा	पुन.	मघा	अनु.
उ.भा.	भर.	रोहि.	पुन.	पुष्य	पू.फा.	ज्ये.
रेव.	कृत्ति.	मृग.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	मूल

ध्यान दें– सूर्य एवं चन्द्रमा के नक्षत्रों के योग से 'रवियोग' बनते हैं। उदाहरणार्थ– सूर्य के अश्विनीस्थ होने पर रोहि., आर्द्रा, आश्ले., मघा, हस्त या पू.षा. नक्षत्र में चन्द्र की स्थिति के समय 'रवियोग' बनेगा। यह योग तिथि-भ-वारज आदि कुयोगों के दोषों को दूर करता है। सामान्यतः शुभकृत्यों में इसका उपयोग अतिशुभद माना गया है।

लत्ता कोष्ठक

(सभी ग्रहों से देखिए)

विवाह नक्षत्र / ग्रह	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु	पू.षा	उ.षा	उ.भा	अश्वि	भर	कृत्ति	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा	उ.फा.	स्वा.	विशा.
चंद्र	श्रव	पू.भा	उ.भा	रोहि	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	पू.फा.	हस्त	स्वा	विशा.	अनु	पू.फा.	उ.षा.
मंगल	उ.भा	भर	कृत्ति	पुष्य	मघा	पू.फा	उ.फा.	हस्त	स्वा	अनु	मूल	पू.षा	उ.षा	शत	पू.भा.
बुध	पुन	मघा	पू.फा	विशा	ज्ये	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि	पू.भा	रेव.	अश्वि	भर	मृग.	आर्द्रा
गुरु	धनि	उ.भा	रेव	मृग	पुन	पुष्य	आश्ले	मघा	उ.फा	चित्रा	विशा	अनु	ज्ये	उ.षा.	श्रव.
शुक्र	मृग	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा	अनु	ज्ये	मूल	उ.षा.	धनि	पू.भा.	उ.भा	रेव.	कृत्ति	रोहि.
शनि	उ.षा	शत	पू.भा.	कृत्ति.	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा	विशा	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा	धनि	शत	भर	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुन.	आश्ले	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा	ज्ये	मूल

ध्यान दीजिए– विवाहनक्षत्र अश्वि. होने पर सूर्य यदि अनु में हो तो सूर्य की एवं गुरु धनि. में हो तो गुरु की लत्ता मानी जाएगी। लत्तादोष के विचारार्थ विगत पूर्णिमान्तकालिक चन्द्रनक्षत्र लेना चाहिए।

पात कोष्ठक

(केवल सूर्य से देखिए) भु. पा.= भुजङ्गपात

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	रेव.	आर्द्रा भु.पा.	मृग भु.पा	अश्वि	कृत्ति.	भर.	रोहि.	कृत्ति	अश्वि.	रोहि.	भर.	अश्वि	रेव	भर	अश्वि.
	आश्ले. भु.पा.	पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग	आश्ले.	पुष्य	आर्द्रा	आश्ले.	पुन.	आर्द्रा	मृग	पू.फा. भु.पा.	मघा भु.पा
	मघा	पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्ये. भु.पा.	विशा भु.पा.	स्वा. भु.पा.	चित्रा भु.पा	उ.फा.	पू.फा
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा	स्वा	धनि. भु.पा	श्रव भु.पा	पू.षा भु.पा	मूल	अनु	विशा	स्वा.	विशा	स्वा
	अनु	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा भु.पा	शत भु.पा	शत	धनि	उ.षा	धनि	उ.षा.	पू.षा	मूल	मूल	ज्ये
	श्रव.	शत	धनि.	रेव भु.पा.	उ.भा भु.पा.	पू.भा	अश्वि.	रेव.	पू.भा	उ.भा	शत	धनि	श्रव	शत	धनि

ध्यातव्य है– पातदोष का विचार हमेशा सूर्यनक्षत्र से किया जाता है। **जैसे**– विवाहनक्षत्र यदि मृग. हो तो मृग., आर्द्रा, मघा, हस्त, ज्ये. या धनि. में सूर्य होने पर यह (पात) दोष होगा। **'भुजंग'** नामक एक विशेष पात विवाह में सर्वथा वर्जित माना गया है। जहां कहीं भी यह दोष है, वहां इस कोष्ठक में भु.पा. (भुजंगपात) लिख दिया गया है। **जैसे**– मृग. विवाहनक्षत्र हो और सूर्य यदि मृग. में हो तो 'भुजंगपात' नाम का दोष होगा।

यामित्र कोष्ठक

(सभी ग्रहों से देखिए)

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
ग्रह नक्षत्र	चित्रा	अनु	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि	कृत्ति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त

यह दोष सभी ग्रहों से देखा जाता है। जैसे– यदि विवाहनक्षत्र चित्रा हो तो कोई भी ग्रह रेव. में होने पर उस ग्रह का **यामित्रदोष** माना जाएगा।

बाण पञ्चक कोष्ठक

(सूर्य के वर्तमान अंशों से देखिए)

सूर्य के वर्तमान अंश	2	3	5	7	9	11	12	14	16	18	20	21	23	25	27	29	0
बाण	मृत्यु	अग्नि	नृप	चौर	रोग	मृत्यु	अग्नि	नृप	चौर	रोग	मृत्यु	अग्नि	नृप	चौर	रोग	मृत्यु	अग्नि

किसी भी राशि के 2, 3, 5 आदि अंशों में सूर्य की स्थिति के समय क्रमशः मृत्यु, अग्नि, नृप आदि बाणदोष होते हैं।

मृत्युबाण को विवाह, अग्निबाण को गृहाच्छादन, नृपबाण को राजसेवा, चौरबाण को यात्रा और रोगबाण कोव्रतबन्ध में वर्जित किया जाता है। वैसे मृत्यु को बुधवार, दोनों सन्ध्याकालों में; अग्नि को मंगलवार सर्वदा; नृप को शनिवार दिन के समय; चौर को मंगलवार रात्रि में और रोग को रविवार रात्रि में वर्जित लिखा गया है। लेकिन मुहूर्तशोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्जित करने की परम्परा है।

एकार्गल कोष्ठक

एकार्गल दोष तभी होता है जब विवाहनक्षत्र काल में विष्कंभ, व्याघात, वज्र, व्यतीपात., परिघ, शूल, गण्ड, अतिगण्ड या वैधृति योग हो।

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	अश्वि	पू.भा.	शत	पू.षा.	ज्ये.	अनु	विशा.	स्वा.	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	मृग.	रोहि.	कृत्ति	भर.
	कृत्ति	रेव.	उ.भा.	अभि.	पू.षा.	मूल	ज्ये.	अनु.	स्वा.	हस्त	पू.फा.	पुन.	आर्द्रा	मृग.	रोहि.
	मृग.	भर.	अश्वि	धनि.	अभि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु.	स्वा.	हस्त	आश्ले	पुष्य	पुन	आर्द्रा
	पुन	रोहि.	कृत्ति.	पू.भा.	धनि.	श्रव.	अभि.	उ.षा	मूल	अनु.	स्वा.	पू.फा.	मघा	आश्ले.	पुष्य
	आश्ले	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	उ.षा.	मूल	अनु.	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुन.	भर.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव.	उ.षा.	मूल	स्वा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	आश्ले	रोहि.	भर.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	शत.	श्रव.	उ.षा.	अनु.	विशा.	स्वा.	चित्रा
	स्वा.	उ.फा.	पू.फा.	आर्द्रा	रोहि.	कृत्ति	भर.	अश्वि.	उ.भा.	शत.	श्रव.	मूल	ज्ये.	अनु.	विशा.
	अनु	चित्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	कृत्ति	अश्वि	उ.भा.	शत.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	ज्ये.
	मूल	विशा.	स्वा.	मघा	पुष्य	पुन.	आर्द्रा	मृग.	कृत्ति.	अश्वि	उ.भा.	श्रव.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्ये.	अनु	उ.फा.	मघा	आश्ले	पुष्य	पुन.	मृग.	कृत्ति	अश्वि.	शत.	धनि.	श्रव.	अभि.
	श्रव.	पू.षा.	मूल	चित्रा	उ.फा.	पू.फा.	मघा	आश्ले.	पुन.	मृग.	कृत्ति.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	धनि.
	शत.	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	आश्ले.	पुन	मृग.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्ये.	विशा.	स्वा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	कृत्ति.	भर.	अश्वि.	रेव.

यह दोष सूर्यनक्षत्र एवं दुष्ट विष्कम्भादि योगों से देखा जाता है। **जैसे–** विवाहनक्षत्र मघा के समय यदि सूर्य पू.षा., अभि., धनि., पू.भा. आदि में से किसी भी एकनक्षत्र में विद्यमान हो तो **एकार्गलदोष** होगा, बशर्ते कि– विवाहनक्षत्र के समय विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, परिघ, व्यतीपात या वैधृति योगों में से कोई एक योग वहां हो।

लत्ता आदि दोषों का परिहार

लत्ता, पात, यामित्र, एकार्गल तथा उपग्रहदोष का प्रभाव समाप्त हो जाता है, यदि लग्न के समय सूर्य एवं चन्द्र बलवान् (स्वोच्च, स्वनवांश, स्वराशि या मित्रराशि में स्थित या शुभग्रह, मित्रग्रह से दृष्ट) हों। देशभेद से भी इन लत्ता आदि दोषों की वर्ज्यावर्ज्यता का निर्देश मुहूर्त्तशास्त्रों में मिलता है।

उपग्रह कोष्ठक

(केवल सूर्य नक्षत्र से देखिए)

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	शत.	रेव	अश्वि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वा	अनु	ज्ये.	मूल	श्रव	धनि
	श्रव	पू.भा	उ.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	स्वा.	विशा.	अनु	पू.षा.	उ.षा
	उ.षा	शत.	पू.भा	कृत्ति.	मृग.	आर्द्रा	पुन	पुष्य	मघा.	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
	मूल	श्रव	धनि.	अश्वि.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुष्य	मघा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु	ज्ये
	स्वा.	ज्ये.	मूल	शत.	उ.भा	रेव.	अश्वि.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले.	मघा	हस्त	चित्रा
	चित्रा	अनु	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव	अश्वि	कृत्ति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त
	पू.फा.	चित्रा.	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	आश्ले.	मघा
	मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा	श्रव.	धनि	शत	उ.भा.	अश्वि.	कृत्ति.	रोहि	मृग	पुष्य	आश्ले
	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु	मूल	पू.षा	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	आर्द्रा	पुन.
	पुन.	मघा.	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा	धनि.	पू.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
	आर्द्रा	आश्ले.	मघा	स्वा.	अनु	ज्ये.	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
	मृग.	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा.	अनु	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव	कृत्ति.	रोहि.
	रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वा	विशा.	अनु	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृत्ति.

उपग्रहदोष का विचार केवल सूर्य से किया जाता है। **जैसे–** विवाहनक्षत्र यदि उ.फा. हो तो पुष्य, आर्द्रा, मृग. या कृत्ति. आदि किसी भी नक्षत्र में सूर्य स्थित होने पर यह दोष होगा।

दग्धातिथि कोष्ठक

सूर्य राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दग्धा तिथि	6	4	8	6	10	8	12	10	2	12	4	2

जब सूर्य मेष, वृष, मिथुन आदि में स्थित हो तब क्रमशः 6, 4, 8 आदि तिथियां दग्धा संज्ञक होती है।

भूशयन कोष्ठक

सूर्य नक्षत्र	भूशयन वाले चन्द्रनक्षत्र					
अश्वि.	मृ.	पुन.	आश्ले.	उ.फा.	मू.	उ.भा.
भर.	आर्द्रा	पुष्य	म.	ह.	पू.षा.	रे.
कृ.	पुन.	आश्ले.	पू.फा.	चि.	उ.षा.	अश्वि.
रो.	पुष्य	म.	उ.फा.	स्वा.	श्रव.	भ.
मृ.	आश्ले.	पू.फा.	ह.	वि.	ध.	कृ.
आर्द्रा	म.	उ.फा.	चि.	अनु.	श.	रो.
पु.	पू.फा.	ह.	स्वा.	ज्ये.	पू.भा.	मृ.
पुष्य	उ.फा.	चि.	वि.	मू.	उ.भा.	आर्द्रा
आश्ले.	ह.	स्वा.	अनु.	पू.षा.	रे.	पुन.
म.	चि.	वि.	ज्ये.	उ.षा.	अश्वि.	पुष्य
पू.फा.	स्वा.	अनु.	मू.	श्रव.	भ.	आश्ले.
उ.फा.	वि.	ज्ये.	पू.षा.	ध.	कृ.	म.
ह.	अनु.	मू.	उ.षा.	श.	रो.	पू.फा.
चि.	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	पू.भा.	मृ.	उ.फा.
स्वा.	मू.	उ.षा.	ध.	उ.भा.	आर्द्रा	ह.
वि.	पू.षा.	श्रव.	श.	रे.	पुन.	चि.
अनु.	उ.षा.	ध.	पू.भा.	अश्वि.	पुष्य	स्वा.
ज्ये.	श्रव.	श.	उ.भा.	भ.	आश्ले.	वि.
मू.	ध.	पू.भा.	रे.	कृ.	म.	अनु.
पू.षा.	श.	उ.भा.	अश्वि.	रो.	पू.फा.	ज्ये.
उ.षा.	पू.भा.	रे.	भ.	मृ.	उ.फा.	मू.
श्रव.	उ.भा.	अश्वि.	कृ.	आर्द्रा	ह.	पू.षा.
ध.	रे.	भ.	रो.	पुन.	चि.	उ.षा.
श.	अश्वि.	कृ.	मृ.	पुष्य	स्वा.	श्रव.
पू.भा.	भ.	रो.	आर्द्रा	आश्ले.	वि.	ध.
उ.भा.	कृ.	मृ.	पुन.	म.	अनु.	श.
रेव.	रो.	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	ज्ये.	पू.भा.

सूर्यनक्षत्रों के आगे लिखे चन्द्रनक्षत्रों में भूशयन होता है। जैसे-- यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र में हो तो मृ., पुन., आश्ले., उ.फा., मू एवं उ.भा. नक्षत्रों में भूशयन होगा। भूशयन वाले नक्षत्रों में खात (नींव आदि की खुदाई) और शिलान्यास नहीं किया जाता।

वृषवास्तु चक्र

सूर्य नक्षत्र	'वृषवास्तु चक्र' से शुद्ध चन्द्रनक्षत्र										
अश्वि.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.
भर.	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.
कृ.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.
रो.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
मृ.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.
आर्द्रा	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.
पु.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.
पुष्य	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.
आश्ले.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.
म.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.
पू.फा.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.
उ.फा.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.
ह.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.
चि.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.
स्वा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.
वि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.
अनु.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा
ज्ये.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.
मू.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
पू.षा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
उ.षा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.
अभि.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.
श्रव.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.
ध.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.
शत.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
पू.भा.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.
उ.भा.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.
रेव.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.

सूर्यनक्षत्रों के आगे लिखे चन्द्रनक्षत्र ' वृषवास्तुचक्र' द्वारा शुद्ध हैं। जैसे– जब सूर्य अश्विनी में होगा, तब पुष्य से ज्येष्ठा तक के नक्षत्र ही ' वृषवास्तुचक्र ' द्वारा शुद्ध होंगे। ' वृषवास्तुचक्र ' से शुद्ध नक्षत्रों में ही खात (नींव की खुदाई) और शिलान्यास किया जाता है।

कलशचक्र शुद्धि कोष्ठक

सूर्य नक्षत्र	कलशचक्र द्वारा शुद्ध चन्द्रनक्षत्र													
अश्वि. भर. कृ. रो.	आर्द्रा पुन. पुष्य आश्ले.	पुन. पुष्य आश्ले. म.	पुष्य आश्ले. म. पू.फा.	आश्ले. म. पू.फा. उ.फा.	म. पू.फा. उ.फा. ह.	पू.फा. उ.फा. ह. चि.	उ.फा. ह. चि. स्वा.	ह. चि. स्वा. वि.	श्रव. ध. श. पू.भा.	ध. श. पू.भा. उ.भा.	श. पू.भा. उ.भा. रेव.	पू.भा. उ.भा. रेव. अश्वि.	उ.भा. रेव. अश्वि. भर.	रेव. अश्वि. भर. कृ.
मृ. आर्द्रा पु. पुष्य	म. पू.फा. उ.फा. ह.	पू.फा. उ.फा. ह. चि.	उ.फा. ह. चि. स्वा.	ह. चि. स्वा. वि.	चि. स्वा. वि. अनु.	स्वा. वि. अनु. ज्ये.	वि. अनु. ज्ये. मू.	अनु. ज्ये. मू. पू.षा.	उ.भा. रेव. अश्वि. भर.	रेव. अश्वि. भर. कृ.	अश्वि. भर. कृ. रो.	भर. कृ. रो. मृ.	कृ. रो. मृ. आर्द्रा	रो. मृ. आर्द्रा पु.
आश्ले. म. पू.फा. उ.फा.	चि. स्वा. वि. अनु.	स्वा. वि. अनु. ज्ये.	वि. अनु. ज्ये. मू.	अनु. ज्ये. मू. पू.षा.	ज्ये. मू. पू.षा. उ.षा.	मू. पू.षा. उ.षा. श्रव.	पू.षा. उ.षा. श्रव. ध.	उ.षा. श्रव. ध. श.	कृ. रो. मृ. आर्द्रा	रो. मृ. आर्द्रा पु.	मृ. आर्द्रा पु. पुष्य	आर्द्रा पु. पुष्य आश्ले.	पु. पुष्य आश्ले. म.	पुष्य आश्ले. म. पू.फा.
ह. चि. स्वा. वि.	ज्ये. मू. पू.षा. उ.षा.	मू. पू.षा. उ.षा. श्रव.	पू.षा. उ.षा. श्रव. ध.	उ.षा. श्रव. ध. श.	श्रव. ध. श. पू.भा.	ध. श. पू.भा. उ.भा.	श. पू.भा. उ.भा. रेव.	पू.भा. उ.भा. रेव. अश्वि.	पु. पुष्य आश्ले. म.	पुष्य आश्ले. म. पू.फा.	आश्ले. म. पू.फा. उ.फा.	म. पू.फा. उ.फा. ह.	पू.फा. उ.फा. ह. चि.	उ.फा. ह. चि. स्वा.
अनु. ज्ये. मू. पू.षा.	श्रव. ध. श. पू.भा.	ध. श. पू.भा. उ.भा.	श. पू.भा. उ.भा. रेव.	पू.भा. उ.भा. रेव. अश्वि.	उ.भा. रेव. अश्वि. भर.	रेव. अश्वि. भर. कृ.	अश्वि. भर. कृ. रो.	भर. कृ. रो. मृ.	पू.फा. उ.फा. ह. चि.	उ.फा. ह. चि. स्वा.	ह. चि. स्वा. वि.	चि. स्वा. वि. अनु.	स्वा. वि. अनु. ज्ये.	वि. अनु. ज्ये. मू.
उ.षा. श्रव. ध. श.	उ.भा. रेव. अश्वि. भर.	रेव. अश्वि. भर. कृ.	अश्वि. भर. कृ. रो.	भर. कृ. रो. मृ.	कृ. रो. मृ. आर्द्रा	रो. मृ. आर्द्रा पु.	मृ. आर्द्रा पु. पुष्य	आर्द्रा पु. पुष्य आश्ले.	स्वा. वि. अनु. ज्ये.	वि. अनु. ज्ये. मू.	अनु. ज्ये. मू. पू.षा.	ज्ये. मू. पू.षा. उ.षा.	मू. पू.षा. उ.षा. श्रव.	पू.षा. उ.षा. श्रव. ध.
पू.भा. उ.भा. रेव.	कृ. रो. मृ.	रो. मृ. आर्द्रा	मृ. आर्द्रा पुन.	आर्द्रा पुन. पुष्य	पु. पुष्य आश्ले.	पुष्य आश्ले. म.	आश्ले. म. पू.फा.	म. पू.फा. उ.फा.	मू. पू.षा. उ.षा.	पू.षा. उ.षा. श्रव.	उ.षा. श्रव. ध.	श्रव. ध. श.	ध. श. पू.भा.	श. पू.भा. उ.भा.

सूर्यनक्षत्रों के आगे लिखे चन्द्रनक्षत्र कलशचक्र द्वारा शुद्ध हैं। कलशचक्र–शुद्ध नक्षत्र में चन्द्र होने पर ही गृहप्रवेश शुभ माना गया है। जैसे– यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र में हो तो आर्द्रा, पुन., पुष्य आदि नक्षत्रों में चन्द्रमा की स्थिति में गृहप्रवेश शुभ माना जाएगा।

सूर्यनक्षत्र के आगे लिख चन्द्रनक्षत्र कलशचक्र द्वारा शुद्ध है। कलशचक्र—शुद्ध
हो तो आर्द्रा, पुन., पुष्य आदि नक्षत्रों में चन्द्रमा

मेषादि राशियों के लिए घात मासादि बोधक कोष्ठक

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्त्ति	मार्ग.	पौष	माघ	फाल्गु	चैत्र	वैशा.	ज्ये	आषा.	श्राव.	भाद्र	आश्वि
घात तिथि	1, 6, 11	5,10, 15	2, 7, 12	2, 7, 12	3, 8, 13	5, 10, 15	4, 9, 14	1, 6, 11	3, 8, 13	4, 9, 14	3, 8, 13	5, 10, 15
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा	अनु	मूल	श्रव.	शत	रेव.	भर.	रोहि	आर्द्रा	आश्ले
घात लग्न	1	2	4	7	10	12	6	8	9	11	3	5
घात चन्द्र (पुरुष)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
घात चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चि	वृश्चि	मीन	धनु	कन्या	वृश्चि	मिथुन	कुम्भ

दिन चतुर्घटिका बोधक कोष्ठक / रात्रि चतुर्घटिका बोधक कोष्ठक

चतुर्घटिका क्रम	दिन: रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रात्रि: रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	शुभ	चचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
2	चचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	उद्वेग
3	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	चचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
4	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	उद्वेग	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	उद्वेग	अमृत
5	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
6	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
7	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	उद्वेग	अमृत	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
8	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चचल	काल	शुभ	चचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिनमान का 8वां भाग दिन में एक चतुर्घटिका माना गया है। ठीक, इसी प्रकार रात्रिमान का 8वां भाग रात्रि में एक चतुर्घटिका होता है। ध्यान रहे– यहां कथित चतुर्घटिका का मान 4 घटी न होते हुए भी, केवल आसन्नमान से ही इसे चतुर्घटिका संज्ञा दी गई है। इसे यामार्द्ध कहना कहीं अधिक उपयुक्त है। विवशता की स्थिति में यात्रालग्न जहां न मिल रहा हो, वहां इस मुहूर्त्त का प्रयोग करना चाहिए।

गोरखनाथोक्त यात्रामुहूर्त्त बोधक कोष्ठक

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्राव.	भाद्र	आश्वि.	कार्त्ति.	मार्ग.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
1	2	3 13	4 14	5 15	6	7	8	9	10	11	12	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
2	3 13	4 14	5 15	6	7	8	9	10	11	12	1	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	सम
3 13	4 14	5 15	6	7	8	9	10	11	12	1	2	हानि	दुःख	इष्टाप्ति	अर्थलाभ
4 14	5 15	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3 13	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्तलाभ
5 15	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3 13	4 14	लाभ	द्रव्याप्ति	धन	सौख्य
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3 13	4 14	5 15	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
7	8	9	10	11	12	1	2	3 13	4 14	5 15	6	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3 13	4 14	5 15	6	7	कष्ट	सौख्य	क्लेश/लाभ	सुख
9	10	11	12	1	2	3 13	4 14	5 15	6	7	8	सौख्य	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
10	11	12	1	2	3 13	4 14	5 15	6	7	8	9	क्लेश	कष्ट से लाभ	अर्थलाभ	धनलाभ
11	12	1	2	3 13	4 14	5 15	6	7	8	9	10	मृत्यु	लाभ	द्रव्यनाश	शुन्य
12	1	2	3 13	4 14	5 15	6	7	8	9	10	11	शून्य	सौख्य	मृत्यु	अत्यंतकष्ट

आपातस्थिति में यात्रालग्नाभाव में यदि यात्रा करना आवश्यक हो तो इस कोष्ठकोक्त यात्रामुहूर्त्त को प्रयोग में लाना चाहिए। **जैसे**– पौष प्रतिपदा को पूर्वयात्रा सुखप्रद, दक्षिणयात्रा क्लेशप्रद, पश्चिमयात्रा भयदा और उत्तरयात्रा अर्थागमकारी (धनलाभ वाली) होगी। ठीक, इसी भान्ति फाल्गुन की पंचमी या पूर्णिमा के समय पश्चिम की यात्रा इष्टाप्ति (अभीष्ट प्राप्ति) देने वाली है। कोष्ठोक्त सभी तिथियां (पूर्णिमा को छोड़कर) दोनों पक्षों की हैं। **ध्यान दें**– अमा यात्रार्थ सर्वथा वर्जित है।

होमाहुति-ग्राही ग्रह बोधक कोष्ठक

चंद्रनक्षत्र→ सूर्यनक्षत्र↓	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
अश्वि	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के
भर	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के
कृत्ति	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के
रोहि	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा
मृग	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा
आर्द्रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा
पुन	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु
पुष्य	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु
आश्ले	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु
मघा	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म
पू.फा	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म
उ.फा	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म
हस्त	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च
चित्रा	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च
स्वा	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च
विशा	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श
अनु	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श
ज्ये	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श
मूल	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु
पू.षा	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु
उ.षा	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु
श्रव	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु
धनि	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु
शत	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु
पू.भा	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू
उ.भा	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू
रेव	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	च	च	च	म	म	म	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू

ध्यान दें-- शुभग्रहों(चं., बु., गु., शु.)के मुख मे आहुति शुभ एवं अन्य सूर्य आदि क्रूरग्रहों के मुख में अशुभ मानी जाती है। होमकालिक सूर्य एवं चंद्र के नक्षत्रों पर आधारित ऊपर दिया गया कोष्ठक बतला रहा है, कि– यह आहुति किस ग्रह के मुख में जा रही है। जैसे– होमकाल में सूर्य यदि मृग नक्षत्र और चन्द्रमा चित्रानक्षत्र में हो तो कोष्ठक बतलाता है कि– आहुति शनि (क्रूरग्रह) के मुख में जा रही है– अतः यहां होम करना उचित नहीं है। एक और उदाहरण लीजिए– सूर्य यदि रेवती नक्षत्र और चन्द्रमा पुनर्वसु में हो तो आहुति शुक्र (शुभ) ग्रह के मुख में जाएगी, अतः यहां होम करना उचित (शुभप्रद) होगा।

होमकालिक अग्निवास बोधक कोष्ठक

वार→ तिथि↓	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्ल 1	3	0	1	2	3	0	1
2	0	1	2	3	0	1	2
3	1	2	3	0	1	2	3
4	2	3	0	1	2	3	0
5	3	0	1	2	3	0	1
6	0	1	2	3	0	1	2
7	1	2	3	0	1	2	3
8	2	3	0	1	2	3	0
9	3	0	1	2	3	0	1
10	0	1	2	3	0	1	2
11	1	2	3	0	1	2	3
12	2	3	0	1	2	3	0
13	3	0	1	2	3	0	1
14	0	1	2	3	0	1	2
15	1	2	3	0	1	2	3
कृष्ण 1	2	3	0	1	2	3	0
2	3	0	1	2	3	0	1
3	0	1	2	3	0	1	2
4	1	2	3	0	1	2	3
5	2	3	0	1	2	3	0
6	3	0	1	2	3	0	1
7	0	1	2	3	0	1	2
8	1	2	3	0	1	2	3
9	2	3	0	1	2	3	0
10	3	0	1	2	3	0	1
11	0	1	2	3	0	1	2
12	1	2	3	0	1	2	3
13	2	3	0	1	2	3	0
14	3	0	1	2	3	0	1
30	0	1	2	3	0	1	2

ध्यान दीजिए– होमकाल में अग्नि का वास पृथ्वी पर होना चाहिए, आकाश एवं पाताल में नहीं। आकाश एवं पाताल में अग्निवास के समय होम करना शुभ नहीं होता। कोष्ठक में 3, 0 अंक अग्निवास पृथ्वी पर तथा 1 और 2 अंक क्रमशः आकाश और पाताल में बतलाते हैं। होमकालिक तिथि एवं वार के आधार पर अग्नि का वास कहां है– यह इस कोष्ठक से तुरन्त जाना जा सकता है।

देखिए– होम के समय शुक्ल द्वादशी और चन्द्रवार हो तो कोष्ठक देखने पर पता चलता है कि–उससमय अग्निवास पृथ्वी पर है, अतः उस समय होम करना शुभ है।

'होमाहुति-ग्राही ग्रह बोधक' एवं 'होमकालिक अग्निवास बोधक'– ये दोनों कोष्ठक हमें **श्री सुरेशकुमार शर्मा, गांव त्राम्बली, डा. बारी (कुल्लू– हि.प्र.)** से प्राप्त हुए हैं।

ज्वालामुखी योग बोधक कोष्ठक

तिथि	1	5	8	9	10
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्ले.

यह योग तिथि, नक्षत्रों के योग से बनता है। इस योग में कोष्ठोक्त तिथि, नक्षत्रों का संयोग होने पर किया गया कोई भी शुभ कार्य अग्नि में इन्धन की भान्ति भस्म हो जाता है– ऐसा मुहूर्त्तज्ञों का मानना है।

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता।

कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है ।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ– **प्रियव्रत शर्मा।**

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए

समस्या– क्या घातचन्द्र व घातनक्षत्र का विचार विवाह में करना चाहिए ?

पं. सुनील कुमार शर्मा,
पो. बन्धड़ा, तिजारा (अलवर)।

समाधान– *'मुहूर्त्तचिन्तामणि'* में घातचन्द्र, घातनक्षत्र, घाततिथि एवं घातवार का विचार यात्रा प्रकरण में ही किया गया है। वहां रामदैवज्ञ ने स्पष्ट लिखा है, कि– घातचन्द्र का विचार केवल राजसेवा (Govt. service), विवाद (मुकदमा आदि) युद्धप्रयाण तथा यात्रा में ही करना चाहिए, अन्यत्र नहीं–

" भूपं चांक-द्व्यंग-दिग्-वह्नि-सप्तावेदाष्टेशार्काश्च घाताख्यचन्द्रः।
मेषादीनां राजसेवाविवादे यात्रायुद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः।।

यहां **"नान्यत्र वर्ज्यः"** का अर्थ 'पीयूषधाराकार' ने इस प्रकार किया है– **" अन्यत्र =विवाह-अन्नप्राशनादि-मंगलकृत्ये न वर्ज्यः"** [अर्थात् – अन्य विवाह, अन्नप्राशन आदि कृत्यों में यह (घातचन्द्र) वर्ज्य नहीं है]

इस बारे एक यह दूसरा वचन भी **पीयूषधाराकार** ने ही उदधृत किया है, जिसमें स्पष्टतया लिखा है, कि– घातचन्द्र का विचार तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन आदि में नहीं करना चाहिए–

तीर्थयात्रा-विवाहान्नप्राशनोपनयनादिषु।
सर्वमांगल्य-कार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत्।।-

'मुहूर्तचिन्तामणि' कार ने यात्रा प्रकरण में ही घातनक्षत्र को भी अशुभ लिखा है–

मघा-कर-स्वाति-मैत्र-मूल-श्रुत्यंबुपान्त्यभम्।
याम्यब्राह्मेश-सार्पञ्च मेषादेः घातभं न सत्।।

'पीयूषधारा' कार ने इसकी व्याख्या में भी यह स्पष्ट किया है, कि– **" तद् (घातनक्षत्रम्) यात्रायां न सत्"** (अर्थात्- घातनक्षत्र यात्रा में अशुभ है)।

ध्यान रहे– घातचन्द्र, घाततिथि, घातनक्षत्र और घातवार के दोष की चर्चा मुहूर्तकारों ने विवाह, द्विरागमन, मुण्डन, अन्नप्राशन, उपनयन आदि किसी भी मांगल्य मुहूर्त्त के प्रकरण (प्रसंग) में नहीं की है, इसकी चर्चा केवल विवाद, यात्रा आदि मुहूर्तों के प्रसंग में ही की गई है, अतः इन्हें केवल इन्हीं मुहूर्तों में वर्जित करना होगा– यह स्पष्ट है।

समस्या (i)–लग्न और दशम भाव का कम से कम और अधिक से अधिक अन्तर कितना हो सकता है ?

(ii)– प्रश्नकुण्डली में ग्रहदृष्टिविचार जातकोक्तपद्धति से किया जाए या ताज़िकोक्त पद्धति से ?

(iii)– पंचांग की दैनिक लग्नसारणी में दिए गए दो समनन्तरवर्त्ती लग्नों के समाप्तिकालों के मध्य किसी अभीष्ट काल में उन दोनों लग्नों के समाप्तिकालान्तर द्वारा त्रैराशिक से स्पष्ट किया गया लग्नभोगांश, क्या बात है– साम्पातिक काल द्वारा लग्नसारणी से स्पष्ट किए गए लग्नभोगांश से अक्सर अन्तरित रहता है ?

(iv)– कई बार भाव स्पष्ट करने पर देखा गया है, कि– किसी एक ही राशि में एक से अधिक भाव आ जाते हैं, जबकि, कुछ राशियों को कोई भाव नहीं मिलता। इस स्थिति में जन्माङ्गचक्र (राश्यनुसारी जन्मकुण्डली) और भावचक्र में भारी असमानता होती है। क्या तब परम्परानुसार जन्माङ्गचक्र द्वारा किया जाने वाला फलादेश भावचक्र फलादेश से सर्वथा भिन्न नहीं होगा ?

श्री नरेन्द्रप्रताप सिंह गौर,
मोहनलाल गंज, (लखनऊ)-(उ.प्र.)।

समाधान–(i) लग्न और दशम का परमाल्प एवं परमाधिक अन्तर अक्षांश भेद से भिन्न–भिन्न होता है। इन दोनों के अन्तर की परमता और परमाल्पता 66°–34′ अक्षांशीयस्थलों पर ही उपलब्ध होती है। यहां (66°–34′ अक्षांशीय स्थलों पर) इनका परमान्तर 6 राशि तुल्य और परमाल्पान्तर शून्य है। जब इन स्थलों पर कदम्बबिन्दु (क्रान्तिवृत्त का पृष्ठीय केन्द्र) खमध्यस्थ होता है, तब यहां पूरा क्रान्तिवृत्त क्षितिजलग्न होने से लग्न और दशम का अन्तर समाप्त हो जाता है।

(ii) प्रश्न ज्योतिष के उदगम एवं विकास का श्रेय यवनों को है। इस ज्योतिषप्रणाली में उन्होंने जो दृष्टिपद्धति दी है, उसे यावन दृष्टिपद्धति (ताज़िक दृष्टिपद्धति) कहा गया है। जातकपद्धति में प्रयुक्त दृष्टिपद्धति भारतीय कही गई है। यह आश्चर्य की बात है– हिन्दू ज्योतिषी प्रश्न ज्योतिष में भी भारतीय दृष्टिपद्धति का ही प्रयोग करते हैं। हां–कुछेक दैवज्ञ प्रश्न ज्योतिष में

यावनदृष्टि का प्रयोग अवश्य करते हैं; लेकिन इनकी संख्या नगण्य है। कालिदास ने यावन (ताजिकोक्त) दृष्टि को यावनदर्शन की भान्ति सर्वत्र अग्राह्य लिखा है–

विलोकनं व्योमसदाम् ऋतं सदा वदन्त्यदो जातकशास्त्रभाषितम्।
दैवं हि सर्वत्र तु ताजिकोदितं यदासुरं तन्निज–दर्शन–प्रमम्।
(ज्योतिर्विदाभरण)

(iii) दो निकटवर्त्ती लग्नों का उदयकालान्तर आपके अभीष्ट लग्न का स्वोदयकाल है। इस स्वोदयकाल से त्रैराशिक द्वारा ज्ञात उसके भोगांश (राशि–अंशादि) स्थूल होंगे, क्योंकि राशियों के स्वोदयकाल ज्याप्रकृतिक हैं। जिस प्रकार 45 अंश की ज्या को तीन से भाग देकर 15 अंश की ज्या नहीं जानी जा सकती,उसी प्रकार राशिस्वोदयकाल को 3 से भाग देकर आप लग्नराशि के 10 अंशों का यथार्थ उदयकाल नहीं जान सकते, क्योंकि लग्न का एक अंश जितने समय में उदित होता है, उसके दुगुने, तिगुने आदि समय में उसके क्रमशः दो, तीन आदि अंश उदित नहीं होते। उसके लगभग प्रत्येक अंश के उदयकाल में थोड़ा–थोड़ा अन्तर रहता है।

आज से लगभग 50–60 वर्ष पहिले, जबकि साम्पातिक काल के 4–4 या 1–1 मिनटान्तर पर लग्न बतलाने वाली सारणियों का प्रयोग विरल था, तब अनेक दैवज्ञ लोग " **तत्काले सायनार्कस्य भुक्त–भोग्यांश संगुणात् .....**" पद्धति से लग्नों के स्वोदयकालों द्वारा ही अनुपात से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट किया करते थे। *इस प्रकार किया गया स्पष्ट लग्न भी स्थूल ही होता था।*

***स्पष्ट है**, साम्पातिक काल सारणी द्वारा इष्टकालिक साम्पातिक काल से साधित लग्नभोगांश ही सूक्ष्म हैं; क्योंकि ये सारणियां लग्न के प्रत्येक अंश या अंशभाग के वास्तविक (सूक्ष्म) उदयकाल के आधार पर मूल सूत्र से बनाई गई हैं।*

***(iv)** यह समस्या विषमविभागात्मक भावसाधन पद्धति से उत्पन्न है। विषमविभागात्मक भाव भी यावन हैं।* इसकी आचार्य कमलाकर ने भर्त्सनापूर्वक *कड़ी निन्दा की है।* इस पद्धति से तो अधिक अक्षांशीय स्थलों पर एक ही राशि में चार–चार भाव समाविष्ट हो जाते हैं, जिससे बेचारी दूसरी अनेक राशियों को कोई भी भाव नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में अनेकदा कुछ ग्रहों को किसी भी भाव का आधिपत्य भी नहीं मिलता। **स्पष्ट है**– यह विषमविभागात्मक प्रणाली दोषपूर्ण है। समानविभागात्मक भाव (प्रत्येक भाव को 30 अंश का मानने वाली) प्रणाली में यह अराजकता कहीं भी पैदा नहीं होती (विशेष स्पष्टीकरण के लिए मेरी पुस्तक *"विश्वलग्नसारणी"* में **"विषम विभागात्मक भाव– एक समीक्षा"**– निबन्ध पढ़ें)।

समस्या– " सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्ताधिकव्यापिनी श्रावणपूर्णिमा के दिन अपराह्न या प्रदोष में रक्षाबन्धन करना चाहिए। यदि पूर्णिमा त्रिमुहूर्त से कम हो और पहिले दिन प्रदोषकाल भद्रारहित हो तो वहीं रक्षाबन्धन करना चाहिए"– ऐसा धर्मशास्त्र का निर्णय है। जबकि, मध्याह्न के बाद भद्रा, व्यतिपात आदि को शुभ माना गया है,("दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्"), तब रक्षाबन्धन के प्रसंग में अपराह्न एवम् प्रदोष के समय भद्रा को दोषकारक क्यों बताया है ?

श्री अम्बादत्त शर्मा, शास्त्री,
ग्रा. पलाना, P.O. वयार,
(शिमला) (हि.प्र.)।

समाधान– " दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्" –नियम के होते हुए भी **"भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा"**– यह वाक्य मीमांसा नियमानुसार (**"व्यर्थ सत् किंचिज्ज्ञापयति"** के अनुसार) स्पष्ट करता है कि **"दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्"** नियम (वाक्य) श्रावणी (रक्षाबन्धन) और फाल्गुनी (होलिकादहन) के लिए नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता है, कि– भद्रापरिहार वाले अन्य वाक्य भी श्रावणी–फाल्गुनी के लिए नहीं हैं। **स्पष्ट है**–श्रावणी–फाल्गुनी दोनों के लिए यथाशक्य सर्वथा भद्रारहित काल ही अभीष्ट है।

समस्या– (i) कालसर्पयोग किसे कहते हैं। क्या इस कुण्डली में (जिसे मैं इस प्रश्न के साथ भेज रहा हूँ) यह योग बनता है ?

(ii) जन्मांगचक्र और चलितचक्र में अक्सर अन्तर देखा गया है। भावफलार्थ किसका प्रयोग करें ?

(iii) मैंने कहीं पढ़ा है, कि– यदि जातक का जन्म कृष्ण पक्ष में दिन का और शुक्ल पक्ष में रात्रि में हो तो विंशोत्तरीदशा का और यदि शुक्लपक्ष में दिन और कृष्णपक्ष में रात्रि का हो तो अष्टोत्तरीदशा का प्रयोग करना चाहिए– क्या यह मत मान्य है ?

श्री हरीशकुमार चन्दन,
मु. पो. बजरूड़ (रोपड़) (पं.)।

समाधान– (i) राहु और केतु के मध्य (इधर या उधर दोनों ओर) यदि

सभी ग्रह स्थित हो तो 'कालसर्प योग' कहलाता है। इसका फल अच्छा नहीं माना जाता। लेकिन, यहां यह बतला देना आवश्यक है कि– **इस योग की चर्चा किसी भी प्रामाणिक होरा, जातक या संहिताग्रन्थ में नहीं है।** आपने जो जन्मकुण्डली भेजी है, उसमें कालसर्पयोग नहीं है, क्योंकि उसमें चन्द्रमा राहु–केतु के उस मध्यभाग से बाहिर है, जहां शेष ग्रह पड़े हैं।

(ii) ग्रह चलितचक्र में जिस भाव में स्थित है, उसी भाव को वह प्रभावित करता है। जन्मांगचक्र राशिकुण्डली है। इस कुण्डली में ग्रह जिस राशि में स्थित है वह उस राशि का फल देता है। लेकिन–आजकल जन्मांगचक्र को ही भावचक्र के स्थान पर दैवज्ञ लोग प्रयोग में लाने लगे हैं; भावचक्र की उन्होंने उपेक्षा कर दी है।

(iii) विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी दशाओं के प्रयोगक्षेत्रों के बारे में और भी कई मत उपलब्ध हैं। कुछ कहते हैं– विन्ध्याचल से दक्षिण में अष्टोत्तरी और उससे उत्तर में विंशोत्तरी दशा का प्रयोग करना चाहिए। आजकल उपलब्ध **'बृहत्पाराशरहोरा'** का मत है, कि– गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र, पाञ्चाल और सिन्धुगिरि के क्षेत्र में अष्टोत्तरी और शेष क्षेत्रों में विंशोत्तरी दशा फलप्रद होती है। **देखिए–**

> **गुर्जरे कच्छ–सौराष्ट्रे पाञ्चाले सिन्धु–पर्वते।**
> **एतेष्वष्टोत्तरी श्रेष्ठा भिन्ने विंशोत्तरी मता।।**

लेकिन दैवज्ञ परम्परा ने लगभग सर्वत्र जातक के जन्मस्थल, पक्ष, दिन, रात्रि का भेद छोड़कर केवल विंशोत्तरी को ही प्रयुक्त किया है। इस परम्परा का आधार शायद लघुपाराशरी की लोकप्रियता है, जिसमें स्पष्ट रूप से विंशोत्तरी दशा के प्रयोग का ही आदेश दिया है– **"दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या, नाष्टोत्तरी मता"।**

समस्या– क्या कारण है, बिना राजयोग के भी लोग राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री आदि उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हो जाते हैं ?

श्री परविन्दर पीपट,
मकान नं: 691, Phase – 7,
मोहाली (रोपड़)।

समाधान– बृहज्जातक आदि मूल जातकग्रन्थों में तो विरल एवं विशिष्ट ("तीन या तीन से अधिक ग्रहों की उच्च में स्थिति" आदि) ग्रहयोगों को ही राजयोग का प्रवर्त्तक माना गया है। लेकिन परवर्त्ती जातकग्रन्थकारों में तो अधिकाधिक ग्रहयोगों को राजयोगकारक सिद्ध करने की होड़ दीख पड़ती है, जिसे पढ़कर कोई भी पाठक अपने अथवा अपने किसी भी प्रिय बन्धु, मित्र के जन्मकाल में राजयोगकारक कोई न कोई ग्रहयोग आसानी से ढूंढ निकाल सकता है। इन राजयोगों की विविधता इतनी विशाल, व्यापक है, कि इनके दृष्टिगत लगभग सभी जातकमात्र राजयोग वाले हो सकते हैं। वैसे तो बिना उच्चग्रहस्थिति के भी सामान्य ग्रहस्थितियों द्वारा राजकारक ग्रहयोगों की इन परवर्ती **'जातकपारिजात'** आदि जातक ग्रन्थों में भरमार है, तथापि नीचस्थ ग्रह को भी नीचभंग जैसी कल्पनाओं द्वारा इन जातककारों ने जातक को राजयोगवान् सिद्ध करने में भारी जोर लगाया है। मेरा अपना मन्तव्य है, कि– राजपुत्रों को उनकी कुण्डलियों में साधारण जातक जैसी ग्रहस्थितियों के बावजूद मूर्धाभिषिक्त होते देख अथवा साधारण ग्रहस्थिति में उत्पन्न जातक को भी सम्पन्न देख दैवज्ञों ने सामान्य ग्रहयोगों में भी राजयोग ढूंढने के भगीरथ प्रयत्न किए हैं, जिनके फलस्वरूप ही इन जातकग्रन्थों में राजयोग कारक ऐसे ग्रहयोगों की भरमार देखने को मिलती है, जो किसी को भी राजयोग में उत्पन्न बतलाने की क्षमता रखते हैं। जातकग्रन्थों में निर्दिष्ट अधिकतर राजयोग स्पष्टतः कृत्रिम (बलान्निर्मित) दिखाई देते हैं। इन कल्पित राजयोगों के आधार पर किसी भी प्रवीण दैवज्ञ को राष्ट्रपति आदि बनने वाले इन सामान्य जातकों की सामान्य कुण्डलियों में राजयोग ढूंढ निकालने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती।

समस्या– जन्मराशि मीन वाली लड़की को गोचर में मिथुनस्थ गुरु चतुर्थ होने के कारण अशुभ है। यदि यहां गुरु अपने नवांश में हो तो क्या "............*स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। रिःफाष्ट–तुर्यगोऽपीष्टः*........**" के अनुसार शुभ हो जाएगा। लेकिन गुरु यहां शत्रुराशिस्थ भी है; अतः "** ***नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्" – के अनुसार यह स्वनवांशस्थ होने पर भी अशुभ ही रहना चाहिए। क्या मेरा यह चिन्तन ठीक है ?***

पं. श्री महावीर प्रसाद शर्मा
मु. विसरवाड़ी (धुलिया) (महाराष्ट्र)।

समाधान– आपका चिन्तन ठीक है। यहां स्वनवांश में होने पर गुरु शुभ अवश्य हो जाता है, लेकिन शत्रुराशिस्थ होने से वह अपनी उसी पूर्व स्थिति (अशुभता) से बाहिर नहीं हो पाता।

समस्या– एक पंचांग में मैंने पढ़ा, कि– भद्रा मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिकस्थ चन्द्र के काल में स्वर्ग में कन्या, तुला, धनु, मकरस्थ चन्द्र के

समय पाताल में और कर्क, सिंह, कुम्भ, मीनस्थ चन्द्र के समय पृथ्वी पर होती है। लेकिन एक पुस्तक में उसे (भद्रा को) मेष, वृष, कर्क, मकर के चन्द्र में स्वर्ग पर; मिथुन, कन्या, तुला, धनु के चन्द्र में नागलोक में और सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, मीन के चन्द्र में पृथ्वी पर लिखा है। कौन सा पक्ष ठीक है ?

पं. रमेश शर्मा,
जयज्वाला ईश्वरी ज्योतिष कार्यालय,
मु. कईल, P.O. सतलाई (शिमला)(हि.प्र.)

समाधान– पंचांग वाला पक्ष बहुसम्मत है। इस विषय में "ज्योतिर्विदाभरण" आदि में इन दोनों पक्षों से भी एक भिन्न पक्ष मिलता है, जिसमें कन्या, धनु, मीन, कुम्भ के चन्द्र में भद्रा को पातालस्थ; वृष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक के चन्द्र में पृथ्वी पर और शेष राशियों (मेष, कर्क, मकर, तुला) में स्थित चन्द्र के समय उसे स्वर्ग में बतलाया है। **देखिए–**

रसातलस्था तिमि-कार्मुकांगना-घट स्थिते राजनि, भूमिगा भवेत्।
द्विरेफ-गो-द्वन्द्व-नखायुधानुगे विष्टिर्दिवस्था ननु शेषराशिगे।।
(ज्योतिर्विदाभरण)

समस्या– सं. 2059 वि. के आपके पंचांग में 15 जून से 17 जुला. तक सूर्य और गुरु दोनों मिथुन में थे, लेकिन आपने इन दिनों में भी विवाहमुहूर्त्त लिखे थे, जबकि गुर्वादित्य के कारण ये दिन शुभकृत्य के लिए ग्राह्य नहीं थे। ऐसा क्यों ?

श्री मुरारि लाल शर्मा,
सुभाषकुटीर, शाहजहांपुर,
(अलवर) (राजस्थान)।

समाधान– 'गुर्वादित्य' का वास्तविक अर्थ है " *गुरु की राशि में सूर्य तथा सूर्य की राशि में गुरु की स्थिति*"। इस अर्थ का समर्थक आचार्य गुरु का यह वाक्य है–

गुरु–क्षेत्रगतो भानुः भानु-क्षेत्रगतो गुरुः।
गुर्वादित्यः स विज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु।।

इसी आधार पर भारत के सभी पंचांगों में गुरुराशि (धनु, मीन)गत सूर्य के काल को मंगलकृत्यों के लिए वर्जित किया जाता है और सूर्यराशि (सिंह) में स्थित गुरु के काल को भी मांगलिक कार्यों के लिए गर्हित लिखा गया है। **पीयूषधाराकार** ने **'गुर्वादित्य'** का अर्थ **"एकराशिगत गुरु–सूर्य"** मानकर आचार्य गुरु के इस (उपरोक्त) अर्थ के खण्डन का व्यर्थ प्रयास किया है। **पीयूषधाराकार** का यह कहना सर्वथा गलत है कि धनुराशिगत सूर्य का काल तो स्वतः शुभकृत्य के लिए निषिद्ध है, क्योंकि उस समय दक्षिणायन होता है– **(धनुरर्कस्य दक्षिणायनत्वादेवदनिषेधसिद्धेः)**। लेकिन **पीयूषधाराकार** यहां स्पष्टतः भ्रान्त हैं, क्योंकि सायन धनु के सूर्य में दक्षिणायन होता है, निरयणधनु के सूर्य में नहीं। आजकल तो निरयणधनु के सूर्य के लगभग पूरे काल में (लगभग 23 दिनों में) उत्तरायण ही रहता है। इस उत्तरायणकालीन धनु के सूर्य में भी भारत में सर्वत्र शुभकृत्य वर्जित रहते हैं। इसका एकमात्र कारण स्पष्टतः गुरुक्षेत्रगत सूर्य ही है।

इसी प्रकार उत्तरायणकालिक मीनरस्थ सूर्य के काल में भी सर्वत्र विवाहादि मंगलकृत्य स्थगित (ठप्प) रहते हैं। इसका भी स्पष्ट कारण गुरुक्षेत्र (मीन) गत सूर्य ही तो है। इस बारे **पीयूषधाराकार** का यह तर्क, कि– "मीनरस्थ सूर्य–काल की शुभकृत्यों में वर्ज्यता तो इस बात से पहले ही सिद्ध है, क्योंकि उपनयन के अलावा अन्य सभी शुभकृत्य इस अवधि में (मीनार्क काल में) निषिद्ध हैं (**मीनार्कस्य तु यज्ञोपवीत-व्यतिरिक्त-कार्यमात्र-निषेधसिद्धेः**)",– स्पष्टतः अतर्क है।

किञ्च–**पीयूषधाराकार** सिंहस्थ गुरु के काल की अशुभता का कारण भी सूर्यक्षेत्रगत गुरु को मानने के लिए तैयार नहीं है। उनका कहना है कि " सिंहस्थ गुरु का काल शुभकृत्यों के लिए सिंहस्थ गुरु के कारण ही निषिद्ध है, भानुक्षेत्रगत गुरु के कारण नहीं (**भानुक्षेत्रं सिंहस्तत्रगतो गुरुः गुर्वादित्य इति चेन्न, तत्र सिंहस्थत्वादेव निषेधसिद्धेः।**)"। पीयूषधाराकार का यह तर्क ठीक वैसा ही हास्यास्पद है जैसा कि कोई कहे– " देवदत्त अशिक्षा के कारण नहीं, अपितु देवदत्त होने के कारण ही मूर्ख है।"

ध्यान रहे– आचार्य गुरु के अर्थ के विरुद्ध **'गुर्वादित्य'** का अर्थ अनेक मुहूर्त्तशास्त्रियों ने यद्यपि "एकराशिगत गुरु, सूर्य" किया है, लेकिन दैवज्ञपरम्परा ने तो आचार्य गुरु के अर्थ को ही प्रामाणिक माना है। इसी लिए सर्वत्र गुरुक्षेत्र (धनु–मीन) गत सूर्य तथा सूर्यक्षेत्र (सिंह) गत गुरु के काल को शुभकार्यों के लिए निन्दित माना जा रहा है। "एक राशिगत गुरु–सूर्य के काल को कहीं भी शुभकर्मानर्ह नहीं माना जाता।

यह भी जान लेना चाहिए, कि– धनु और मीनरथ सूर्य वाले सौर मासों को **'खर मास'** (उग्रमास) कहा जाता है। जिसका अर्थ है शुभकृत्यों के लिए "भयावह मास"।

सूर्य की राशि में गुरु की और गुरु की राशि में सूर्य की स्थिति, इन दोनों स्थितियों से गुरु निर्बल हो जाता है, इसके पीछे यह सादृश्य निहित है–यदि कोई विद्वान् व्यक्ति तेजस्वी सम्राट् के महल में स्वयं जाए या सम्राट् उसके पास स्वयं पहुंचे; इन दोनों स्थितियों में उस विद्वान् को सम्राट् का दिव्य तेज हतप्रभ अवश्य करता है।

समस्या–(i) पराजित (हारा हुआ) आरोही और अवरोही ग्रह किसे कहते हैं ?

(ii) व्यतीपात, परिवेष और इन्द्रचाप द्वारा जन्म एवं प्रश्न–कुण्डली में क्या क्या विचार किया जाता है ?

(iii) 'फलदीपिका' में लिखा है–" लग्न में बड़ी राशि हो तो जातक का सिर बड़ा होता है।" बड़ी राशि से क्या अभिप्राय है ?

कैप्टन जे. के. शर्मा,
MIG- 574, Phase I,
Urban Estate,PATIALA,Pb.

समाधान–(i) मंगल आदि पांच तारा ग्रहों में से जिन दो ग्रहों के भोगांश (राश्यादि) समान हों,, उन ग्रहों का परस्परयुद्ध युद्ध कहलाता है। इनके षड्बलों की मात्राओं और शरों (Latitudes) से एक विशेष गणित द्वारा इन दोनों ग्रहों का युद्धबल जाना जाता है। इन दोनों में से जो ग्रह उत्तरी ध्रुव के समीपतर होगा वह विजयी और दूसरा पराजित माना जाएगा (स्पष्टता के लिए कोई 'जातक पद्धति' देखें)।

जो ग्रह अपने परमोच्चांश से आगे निकल गया हो, वह अवरोही और जो अपने परमनीचांश से आगे निकल गया हो वह आरोही कहलाता है। आरोही ग्रह सामान्यतः बलवान् और अवरोही निर्बल माना गया है।

(ii) ये अशुभफल कारक अप्रकाश ग्रह हैं। जातकग्रन्थों में इन्हें वंश, आयु और ज्ञान के नाशक लिखा है। स्पष्ट है– ये जिस भाव में होंगे उसे हानि ही पहुंचाएंगे। प्रश्न/जन्मकुण्डली में इनके भावफल दैवज्ञ को इनकी अशुभता को ध्यान में रखकर स्वयं तर्कबुद्ध्या कल्पित करने होंगे।

(iii) 'बृहत्पाराशरहोरा' के राशिभेदाध्याय में मेष आदि राशियों के लक्षणों में इनकी लघु, सम, बृहत् (बड़ी), स्थूल (मोटी) आकृतियों का निर्देश है। मेष, वृष, कर्क, सिंह और मकर राशियां बड़ी हैं।

समस्या–(i) सूर्यक्रान्ति, वेलान्तर और चर की सारणियां मैंने कई पुस्तकों और पंचांगों में देखीं। हर एक में कुछ न कुछ अन्तर पाया। ऐसा क्यों ?

(ii) किसी अन्यनगरीय पंचांग के तिथि, नक्षत्र, योग आदि के घड़ीपलों को अभीष्ट नगरीय बनाने के लिए देशान्तर संस्कार किया जाता है। कुछ लोग पंचांगीय नगर और अभीष्ट नगर के सूर्योदयों के अन्तर का संस्कार करके पंचांगीय तिथ्यादि के घड़ीपलों को अभीष्ट नगरीय बनाने का परामर्श देते हैं। लेकिन इन दोनों पद्धतियों से परिणाम भिन्न–भिन्न आते हैं। दोनों में से किसे ठीक माना जाए ?

श्री ज़की तालगवीं,
ज़की मंज़िल, सोथा स्ट्रीट,
बदायूं (उ.प्र.)।

समाधानः– (i) पंचांगों में स्थायी रूप से दी जाने वाली सूर्यक्रान्ति ववेलान्तर की सारणियां किसी एक वर्ष के लिए अधिकतर प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा. स्टैं. टा.) की होती हैं; जिन्हें प्रत्येक वर्ष के लिए ज्योतिषी लोग प्रयोग में लाया करते हैं। क्योंकि सायन सूर्य एक (लीप वर्ष रहित) वर्ष में (365 दिनों में)पूरे 360 अंश नहीं चलता है। वह एक वर्ष में केवल 359 अंश 46 क. के लगभग चलता है, अतः प्रतिवर्ष (365 दिनों के बाद) प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर इसके भोगांश कुछ–कुछ बदलते रहते हैं। ये लगभग 14 कला प्रतिवर्ष कम होते जाते हैं। 4 वर्ष में ये लगभग 58 कला कम हो जाते हैं। 4 वर्ष बाद लीप इयर (Leap Year) आने पर प्रातः 5 घं. 30 मि. (I.S.T.) पर पुनः ये भोगांश लगभग उतने ही हो जाते हैं, जितने कि वे 4 वर्ष पूर्व थे। पुनः पूर्ववत् प्रतिवर्ष ये लगभग 14–14 कला कम होने लगते हैं और 4 वर्ष बाद Leap Year आने पर पुनः लगभग उसी स्थिति में आ जाते हैं। यह चक्र इसी तरह चलता रहता है। **ध्यान रहे–** प्रत्येक 4 वर्ष बाद (Leap Year आने पर) भी सायन सूर्य के ये भोगांश अपनी चार वर्ष पूर्व वाली स्थिति में पूर्णरूपेण नहीं आते। ये प्रति 4 वर्ष बाद अपने 4 वर्ष पूर्ववर्ती भोगांशों से स्थायी रूप में लगभग 2–2 कला आगे बढ़ते जाते हैं। तदनुसार लगभग 24 वर्ष बाद सूर्य के भोगांश 24 वर्ष पूर्ववर्ती –

अपने भोगांशों से लगभग 12 कला स्थायी रूप से आगे हो जाते हैं। यह सूर्यभोगांशों में स्थायी अन्तर एक शताब्दी में लगभग 45 क. हो जाता है।गत 25–30 वर्षों के 5 घं. 30 मि. (I.S.T.) के सायन सूर्य–भोगांशों को देखने से यह सब स्पष्ट हो जाता है।

क्योंकि सूर्यक्रान्ति व वेलान्तर के मान सूर्य के सायन भोगांशों पर निर्भर करते हैं। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि–सायन सूर्य के भोगांश प्रतिवर्ष प्रातः 5 घं. 30 मि. (I.S.T.) पर एक जैसे नहीं होते। अतः सूर्यक्रान्ति और वेलान्तर भी प्रतिवर्ष 5घं. 30 मि. (I.S.T.) पर एक जैसे (स्थायी) नहीं रह सकते।

क्योंकि सूर्य के सायन भोगांशों में प्रतिवर्ष थोड़ा–थोडा ही अन्तर आता है, और वह भी 4 वर्ष बाद लगभग समाप्त हो जाता है। अतः प्रतिवर्ष सूर्यक्रान्ति, वेलान्तर भी थोड़ा–थोडा बदलते रहते हैं। ठीक, 4 वर्ष बाद ये भी लगभग अपने 4 वर्ष पूर्ववर्त्ती मान प्राप्त कर लेते हैं। अतः क्रान्ति और वेलान्तर के लगभग मान जानने के लिए किसी एक वर्ष के 5 घं. 30 मि. (I.S.T.) (या अन्य समय) की क्रान्ति–वेलान्तर सारणी को सुविधार्थ प्रतिवर्ष प्रयोग में लाया जाता है। यदि कोई इनके (क्रान्ति–वेलान्तर के) सूक्ष्मतम मान जानना चाहता है तो उसे अपने अभीष्ट दिन एवं समय का सायन सूर्यभोगांशस्पष्ट कर, उस समय की सूर्यक्रान्ति और वेलान्तर जानने चाहिएं। सायन सूर्यभोगांशों से सूर्य क्रान्ति और वेलान्तर जानने की सारणी मेरी पुस्तक **'गणक मार्त्तण्ड'** में दी गई है।

चरसारणी के निर्माण के लिए अक्षांश एवं क्रान्ति का प्रयोग होता है, तथा क्रान्ति की सूक्ष्मता उसकी परमता (परमक्रान्ति) पर निर्भर करती है। भिन्न–भिन्न चरसारणियों में अन्तर का एकमात्र कारण 'सूर्य की परमक्रान्ति' है। सूर्य की परमक्रान्ति प्रतिवर्ष धीरे–धीरे कम होती जा रही है। कुछ चरसारणी–निर्माताओं ने बहुत पूर्ववर्त्ती परमक्रान्ति के आधार पर ये चरसारणियां बनाई हैं। लगभग 20–25 वर्ष बाद तात्कालिक सूर्य की परमक्रान्ति को लेकर 'चरसारणी' बनाई जाए तो वह सूक्ष्म होगी।

(ii) किसी अन्य नगरीय पंचांग के तिथ्यादि के घटी–पलों को अभीष्ट नगरीय बनाने के लिए उनमें देशान्तर (रेखान्तर) के अलावा चरान्तर (पंचांगीय नगर और अभीष्ट नगर के अभीष्ट दिन के चरों के अन्तर) का भी संस्कार किया जाता है। इन दोनों संस्कारों के योग को ही वास्तविक 'देशान्तर संस्कार ' कहा जाता है। ध्यान रहे– दोनों नगरों (पंचांगीय नगर और अभीष्ट नगर) के सूर्योदयकालों का अन्तर ही ' वास्तविक देशान्तर' है। अन्य नगरीय पंचांग की तिथ्यादि के घटी–पलों को अभीष्ट नगरीय बनाने की प्रक्रिया **'पंचांग परिवर्त्तन'** कहलाती है। मैने अपनी पुस्तक 'गणक मार्त्तण्ड' में ही पंचांग परिवर्त्तन की दो भिन्न–भिन्न पद्धतियों का विस्तृत सोदाहरण विवेचन दिया है।

समस्या– मैंनें बहुत सी पुस्तकों में चन्द्र स्पष्ट एवं सूर्य स्पष्ट से तिथि, नक्षत्र, योग आदि के निर्णय के बारे में पढ़ा है। परन्तु किसी भी पुस्तक में चन्द्र स्पष्ट एवं सूर्य स्पष्ट से चान्द्र मास के निर्णय का सूत्र नहीं मिला। क्या हम चन्द्र स्पष्ट एवं सूर्य स्पष्ट से सीधे ही मास निर्णय कर सकते हैं ? अगर हां, तो कैसे ?

श्री चेतन मैनी,
1/36, न्यू विद्याधर नगर,
जयपुर– 302023

समाधान– इसे समझने के लिए पहले चान्द्रमासें के बारे में प्रचलित दो पद्धतियों को समझ लेना चाहिए।

चान्द्रमास दो प्रकार का है– (1) 'शुक्लादि पद्धति' वाला और (2) 'कृष्णादि पद्धति' वाला।

शुक्लादि (शुक्लादि पद्धति वाले) चान्द्रमासों में शुक्लपक्ष पहले और कृष्ण पक्ष बाद में तथा कृष्णादि (कृष्णादि पद्धति वाले) चान्द्रमासों में कृष्ण पक्ष पहले एवं शुक्लपक्ष बाद में होता है। शुक्लादि चान्द्रमास महाराष्ट्र तथा तामिल आदि दक्षिण भारत के प्रदेशों में और कृष्णादि चान्द्रमास उ.भा. के सभी प्रान्तों में प्रचलित हैं। इन दोनों पद्धतियों के अनुसार चैत्रादि चान्द्रमासों के पक्षों का क्रम इस प्रकार है:–

शुक्लादि पद्धति		कृष्णादि पद्धति		शुक्लादि पद्धति		कृष्णादि पद्धति	
चैत्र	शुक्ल	चैत्र	शुक्ल	आश्वि.	शुक्ल	आश्वि.	शुक्ल
चैत्र	कृष्ण	वैशा.	कृष्ण	आश्वि.	कृष्ण	कार्त्ति.	कृष्ण
वैशा.	शुक्ल	वैशा.	शुक्ल	कार्त्ति.	शुक्ल	कार्त्ति.	शुक्ल
वैशा.	कृष्ण	ज्येष्ठ	कृष्ण	कार्त्ति.	कृष्ण	मार्ग.	कृष्ण
ज्येष्ठ	शुक्ल	ज्येष्ठ	शुक्ल	मार्ग.	शुक्ल	मार्ग.	शुक्ल
ज्येष्ठ	कृष्ण	आषा.	कृष्ण	मार्ग.	कृष्ण	पौष	कृष्ण
आषा.	शुक्ल	आषा.	शुक्ल	पौष	शुक्ल	पौष	शुक्ल
आषा.	कृष्ण	श्राव.	कृष्ण	पौष	कृष्ण	माघ	कृष्ण
श्राव.	शुक्ल	श्राव.	शुक्ल	माघ	शुक्ल	माघ	शुक्ल
श्राव	कृष्ण	भाद्र.	कृष्ण	माघ	कृष्ण	फाल्गुन	कृष्ण
भाद.	शुक्ल	भाद्र.	शुक्ल	फाल्गुन	शुक्ल	फाल्गुन	शुक्ल
भाद्र.	कृष्ण	आश्वि.	कृष्ण	फाल्गुन	कृष्ण	चैत्र	कृष्ण

इन पद्धतियों के पक्षों के देखने से स्पष्ट है– सभी मासों के शुक्लपक्ष दोनों पद्धतियों में समान हैं, लेकिन कृष्णपक्षों में अन्तर है। स्पष्टता के लिए यूं समझिए– शुक्लादि पद्धति के अनुसार, जो चैत्र शुक्ल, वैशा. शुक्ल, ज्येष्ठ शुक्ल आदि पक्ष हैं, वे कृष्ण पद्धत्यनुसार भी, ठीक वैसे ही क्रमशः चैत्र शुक्ल, वैशा. शुक्ल आदि हैं। लेकिन इस पद्धति (शुक्लादि पद्धति) के अनुसार, जो चैत्र कृष्ण, वैशा. कृष्ण, ज्येष्ठ कृष्ण आदि पक्ष हैं, वे कृष्णादि पद्धति के अनुसार क्रमशः वैशा. कृष्ण, ज्येष्ठ कृष्ण, आषा. कृष्ण आदि पक्ष हैं।

ध्यान दीजिए– शुक्लादि पद्धति वाले मास सिद्धान्ततः मुख्य (वास्तविक) माने गए हैं। यही कारण है, कि अमावस्या को 15 न लिखकर 30 (मास की अन्तिम = 30वीं तिथी) लिखा जाता है। शुक्लादि पद्धत्यनुसार निर्धारित चान्द्रमासों के नाम वास्तविक मासनाम हैं। **स्पष्ट है–** प्रत्येक वास्तविक चान्द्रमास अपने मास की शुक्ल प्रतिपदा के शुरू (प्रारम्भ काल) से प्रारम्भ होकर अमान्त (अमा के समाप्ति काल) पर समाप्त होता है।

इन शुक्लादि चान्द्रमासों के चैत्र, वैशाख आदि नाम इन मासों में घटित होने वाली सूर्यसंक्रान्तियों पर आधारित हैं। जिस शुक्लादि चान्द्रमास में सूर्य की मेष संक्रान्ति हो (अथवा यूं कहिए– जिस शुक्लादि चान्द्रमास में सूर्य मेष में प्रविष्ट होता है) वह चैत्र नाम का शुक्लादि चान्द्रमास होता है। इसी प्रकार सूर्य की शेष वृष, मिथुन आदि संक्रान्तियों वाले शुक्लादि चान्द्रमास क्रमशः वैशाख, ज्येष्ठ आदि नाम वाले होते हैं। प्रकारान्तर से इस प्रकार भी कहा जा सकता है, कि– जिस शुक्लादि चान्द्रमास के अमान्त के समय सूर्य मेष में हो उसे शुक्लादि चैत्र एवं जिस मास के अमान्त में सूर्य क्रमशः वृष, मिथुन आदि राशियों में हो, उन शुक्लादि चान्द्रमासों को क्रमशः वैशाख, ज्येष्ठ आदि मास कहा जाता है। जब कभी किसी शुक्लादि चान्द्रमास के भीतर (शुक्ल प्रतिपदारम्भ से अमान्त तक के काल में) कोई सूर्यसंक्रान्ति घटित न हो उस शुक्लादि चान्द्रमास को अधिकमास (मलमास) कहाजाता है और इस अधिकमास को परवर्त्ती (आगामी) शुक्लादि पद्धति वाले चान्द्रमास के नाम से पुकारा जाता है।इस स्थिति में एक ही नाम वाले दो शुक्लादिचान्द्रमास घटित हो जाते हैं। **उदाहरणार्थ–** इस वर्ष (सं. 2061 वि.)का पंचांग देखिए– इस वर्ष 18 जुलाई से 16 अगस्त, 2004 ई. तक वाले शुक्लादि चान्द्रमास में शुक्ल प्रतिपदारम्भ से अमान्त काल तक कोई भी सूर्यसंक्रान्ति घटित नहीं हुई है। इसलिए इन दोनों अंग्रेजी तारीखों के मध्यवर्त्ती शुक्लादि चान्द्रमास को यहां अधिकमास लिखा गया है और इसे उत्तरवर्त्ती शुक्लादि श्रावण चान्द्रमास की संज्ञा दी गई है।

चान्द्रमासों के नामकरण के इस उपरोक्त नियम को जान लेने पर अभीष्ट दिन के सूर्य, चन्द्र के भोगांश देखकर निम्नांकित प्रकार से आसानी से यह जाना जा सकता है, कि– यह दिन कौन से शुक्लादि चान्द्रमास में पड़ता है। देखिए– अभीष्ट दिन में सूर्य, चन्द्र के भोगांश जानकर अनुमान लगाइए कि, ये दोनों (सू. चं.) लगभग कितने दिन बाद एक–दूसरे से मिल पाएंगे, अर्थात् ये किस दिन समान राशि अंशादि वाले हों जाएंगे। सूर्य प्रतिदिन लगभग एक अंश मार्गी गति से आगे ही चलता है और चन्द्रमा भी सूर्य की ओर प्रतिदिन लगभग 12 अंशकी गति से लगातार आगे बढ़ता जाता है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं, कि सूर्य एवं चन्द्रमा के राशि अंश कब तक समान हो सकेंगे। जिस दिन ये दोनों समान राशि अंश वाले होंगे, उस दिन अमावास्या होगी– यह तो निश्चित ही है। उस अमा के समय सूर्य किस राशि में होगा यह सूर्य के तात्कालिक भोगांश से आप अनुमानतः जान सकते है। जब अमान्त के समय सूर्य की राशि आप को ज्ञात हो जाए, तब आप उक्त नियमानुसार जान जाएंगे कि आपका अभीष्ट दिन किस नाम वाले चान्द्रमास में पड़ता है। **ध्यान दें–** अभीष्ट दिन का चान्द्रमास जानने का यह एक स्थूल प्रकार है। जब सूर्य अमा के आसपास राशि बदलने वाला हो, तब ऊपर कथित इस पद्धति द्वारा अभीष्ट दिन के चान्द्रमास का नाम जानने में गलती होने की सम्भावना होती है।

समस्या–(i) चान्द्र चैत्रमास का पूर्वार्द्ध भाग (कृष्ण पक्ष) पूर्ववर्त्ती वर्ष में और दूसरा आधा भाग (शुक्लपक्ष) परवर्त्ती वर्ष में रहता है– ऐसा क्यों ?

(ii) कृष्णपक्ष चान्द्रमास का पूर्वार्द्ध और शुक्लपक्ष उत्तरार्द्ध होता है। लेकिन कृष्णपक्ष की अन्तिम तिथि (अमा) को 30 और शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि (पूर्णिमा) को 15 लिखा जाता है– ऐसी विपरीत बात क्यों ?

स. इन्द्रजीत सिंह,
मु. मंसूरपुर, तह. खमाणों मण्डी,
(फतेहगढ़ साहिब), पंजाब।

समधान–(i), (ii) – आपकी दोनों समस्याओं के समाधान श्री चेतन मैनी की उपरोक्त समस्या–समाधान से स्पष्ट हैं– वहां देखिए।

प्रसूति-लग्न-विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि मे घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन थे। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष-माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३या ५ ,माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव,मुख ऊपर को , जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था , घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया , दूध कम उतरे ।४।१०।१४।३८।५८ वर्षो में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें । यदि इन वर्षो से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क- माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४ , बालक जन्मते ही छींका , नाल छूटा, भूमि पर जन्म , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , माता के वस्त्र श्वेत व लाल , माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया , बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न , देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश के समय तुलादान ,छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में सिर , मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश होते ही श्री सूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।

कन्या- माता का दक्षिण में सिर , रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन,जन्म समय स्त्री ३या ५, दीपक हाथ में उठाया गया ,बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया,घर के नैर्ऋत्य कोण में सूतिका-स्थान , ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है । यदि इन वर्षो से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला -माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , श्वेत जीर्ण वस्त्र , भुना हुआ अन्न , ठंडा जल , या कोइ मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्म समय स्त्री ३या ६, वहां १कन्या भी हो , दीपक उठाया गया,बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्धशब्द करके रोया , घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान , ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान , हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक-माता का दक्षिण या उत्तर में सिर , रक्त या दग्ध वस्त्र , कष्ट अधिक,अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन , जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई , दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु-माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १या ५,दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान २,१०,१८,३१,३८,४२,६७, इन वर्षो के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप , ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है , यदि इन वर्षो से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर-माता का सिर दक्षिण में ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्म समय स्त्रियाँ २, पीछे से एक आई । दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्ट कारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ-माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया. वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन-माता को सिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।४।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे, अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिले-वहीं बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष ज्ञान- (१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे,(२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो,(३)लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो,(४)भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो -इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान- प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय,तृतीय- ईशान। चतुर्थ-उत्तर। पञ्चम-षष्ठ-वायव्य। सप्तम-पश्चिम। अष्टम, नवम-नैर्ऋत्य। दशम-दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान(पाकगृह)जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है । **ग्रहों की दिशा-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।**

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल को ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कही दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तव वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः:- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिराहना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण,६ में नैर्ऋत्य,७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण,१०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां, स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

दो०-मीन-मिथुन-सिंह-तुला,मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक,शेषे भूमि विशाल।।

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानू तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौवें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुटकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बसै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥"

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई नसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियधर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥"

मूकयोग-"पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।"

दु:खदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश । यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय । वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह,मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध)का सूर्य होवे , शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे- शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार-- जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मृत्यु कहना। अथवा-जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करे, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोगा:-अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:-- दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन से रिष्फ षट मन्द बसे क्लि भानु॥

कुष्ठयोगा:--लग्नप बुध कुज शशि युते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुम:-आगे पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न ब्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवे भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज कूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोर्षा नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि

[illegible]-विषकन्यायोगा:-चौ.- रविवार द्वितीया जो होय श्लेषा ताहि दिन में जोय॥ १ ॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार साते तिथि को करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३ ॥ इन योगन में कन्या होय निश्चय विधवा जाने सोय॥ ४ ॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो ता कन्या को विधवा जानो॥ ६ ॥ अश्लेषा द्वितीया को होय मंदवार युत लीजो जोय॥ ७ ॥ परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८ ॥ रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विसाखा जानो होय॥ ९ ॥ ऐसो योग लखो जो परै तो कन्या को विधवा करै॥ १० ॥ दो0 धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥ ११ ॥

वैधव्य- विषकन्याभंगयोग:-जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोग:- ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे बन्ध्या अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोग:--चौपाई- केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षडवर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा....कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:--पञ्चमें शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्''॥

अशुभ प्रसव भास:-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, बैसाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल:-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चांदी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हो तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर की पक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृ सुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वे में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फल :--वृद्ध गर्ग कहते हैं, कि- यदि भ्राताओं वा पिता - पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना- (१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है, यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना- (१) जन्म लग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावें, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावें, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावें-शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम, इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना- (१) जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे शेष की राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना	वैधव्य	फलम

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१।२।३ च.)	आश्लेषा (२।३।४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४च.)
फलम्	ससुरहानि	सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त-पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक, माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पद	मन्त्री पद	विपुल लाभ	अल्प जीवन	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम.

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है, एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरंभवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥यथा सर्पविषंचैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः ससमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसुतेन जलेन हि॥बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार :- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष, असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू. ज्ये. पिता को भय	मू. ज्ये. माता को भय	रे. अश्वि. शरीर को भय	पशु-हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	अगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी, गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृद् ४	दुखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी, पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पआयु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी.	गुणी	नीचस्व.	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्य	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्य	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृद् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखेश्वर्य, तृतीय में मंत्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्-मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होंगे।

ज्येष्ठापाद फलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजी ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्–रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगा :-(१)पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे,(२) चन्द्रमा से सातवें पायुक्त शुक्र हों, (३)पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हो,(४)तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूय और लग्न में मंगल होवे,(५)चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो - इन पाचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगा - (१) सूर्य मंगल दसवें वा नवम में गये हो(२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो,(३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४)पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो,इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगाः- भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः- गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग- शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः-सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राह सग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगा : -भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार॥

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना:	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	यात्रा	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	अन्नलाभ,	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभे	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौम:	शत्रुभीति,	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभीति	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	धननाश
बुध:	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरु.	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुखं	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश,	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश:	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु:	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक :	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक
केतु:	रोग	वैर	सुख	भय	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभीति

अथग्रहाणामेक भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१ ॥	मा. १	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकार्थभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
भय.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गतव्यराशे:
								प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणय:

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजावर्तः	लाजावर्तः

पूतना-ग्रसित लक्षण एवं शांति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है । तब पूतना की बली निकालने से अच्छा होता है । जब कभी बच्चा बैठे बैठे गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है । यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नाकृदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है । यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा । बच्चे को इतर फुलेन और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है । सिर खुले जूते बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है । संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है । कदाचित् बालक खेलता खेलता गिर जाये अथवा उसे उल्टी हो या हाथ पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है । जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है । फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शांति होती है ।

चेष्टा:- जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम् - दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूडे के पते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा ।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शन निवासश्च तत्र रात्रौ- "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो न: सुतानिव॥" इत्यस्य जप:. ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति: ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्टदृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाये तो- ॐवासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि: । रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ १ ॥ कृष्ण, रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन! प्रात:-सङ्गव मध्याह्न सायाह्नेषु च सन्ध्ययो: ॥ २ ॥ महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन! यद्गोरज: पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ ३ ॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान् । त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥ ४ ॥

इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

अथ बाल पूतना विधान- यहां लिखे बाल कष्टावली चक्रोक हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्नलिखित मंत्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्तों को उबाल कर बालक को मंत्र पाठपूर्वक स्नान कराना । तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराना तदनन्तर '' ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्षं '' इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान स्पर्श पूर्वक यह मंत्र पढ़ें- '' ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रौदय रौदय, स्फोटय स्फोटय स्वाहा। गर्ज २ सः गृहाण गृहाण आमर्दय २ ह्रीम् ह्रीम्, हन हन एवं सिद्धि रुद्रो ज्ञापय स्वाहा ॥ इति रक्षामंत्रः ॥

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५,५दीपक, ५आटे के सतिये,कपूर,लोहबान	श्वेत भात,५पूर्ण पोली(सुहाली) १प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फुल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक,१०झण्डी,पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर, आटे के पूड़े , मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन,रक्त पुष्प,श्वेत ध्वजा, दीपक१०,गेहूं केआटे केसतिए१०	एक सेर लाल भात,आधा सेर पूर्ण पोली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, साप का कांचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थदिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल -चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५,दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात , सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पौली , सांय ,पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,गेंहु के आटे के सतिये	श्वेत भात, ७ पूड़ियाँ , सांयकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे !	ओंभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्रे ठःठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठःठःस्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात,५ मिठाई ,५सुहाली ,७पूड़ियां,१ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तमदिन मास वर्ष में में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात, ७ पूड़ियाँ , सांयकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन, ५रंग की झण्डी ५, दीपक ५,	गेहूं की रोटी,मसूर की दाल,हरा साग, छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प,५दीपक,५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापडी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २हुं फट् स्वाहा	गोश्रृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशमदिन मास वर्ष में में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प २५, झंडी,२५ दीपक,२५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल,गौ घृत, सांय,दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प,२५ दीपक,२५ सफेद झण्डी,२५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७,सांय व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा आटा एक सेर	१३ दीपक,१३झण्डी,१३ सतिये सतिये आटे के ।	सुहाली ,पूड़े ७,पूड़ियां ७ , मत्स्य मांस, पापड़ी , सांयकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय२ मर्दय२ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्रां हुं स्वाहा	

अथ नक्षत्र -कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिन संख्या				रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्र	रोगनिवृत्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमंत्र:	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायत्वेति मंत्र	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदान	३	९	१८	३०	ब्रह्मायर्येति	सर्प को दूध-दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेति मन्त्र:	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र	बकरे के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदान	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्र:	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदान	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गो-अजादिदान	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाब को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राच्छदान	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदान	०	१५	०	३०	भगस्प्रणेति मन्त्र:	ऊंट के मुख में शहद दें
उ. फा.	अन्नदान	७	१४	७	६०	दध्यावर्द्धेति मन्त्र:	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदान	१५	१७	१५	०	उदत्यंजातवेदेति मन्त्र:	भैंसे को कमल के फूल खिलावें
चित्रा	दुग्ध दान	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरिपति मन्त्र:	बाघ के लिए तगर धतूरे के फूल वन में रखें
स्वाती	गौघृत दान	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलावें
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्र:	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दें
अनुराधा	गौघृत दान	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्र:	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दें
ज्येष्ठा	तिलदान	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें
मूल	रौप्यपात्रदान	०	९	१५	६	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाब को दूध पिलावें
पू. षा.	गोमुक्तादान	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्र:	कछुए के मुख में नागर मोथे की बलि दें
उ.षा.	भोजनदान	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य डालें
श्रवण	श्रीफलदान	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्र	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें
धनिष्ठा	अश्वान्नादान	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति मन्त्र	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दें
शतभिषा	भोजनान्नदान	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्र	गौ को चावल खिलावें
पू. भा.	भोजनदान	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	कौए के मुख में फल की बलि दें
उ.भा.	अन्नदान	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	गाय को चावल खिलावें
रेवती	फल दा.कन्यापूजन	१८	१०	९	२०	पूषन्नयेति मन्त्र	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दें

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में रोग नक्षत्र का नाम दिया गया है।

रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'-वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें- ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना - (१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब संतान उत्पन्न होती हैं।

(२) चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में संतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख)होने का समय जानना-(१)जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है॥

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े, उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(४) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना-(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट -

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट व दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान, जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१)रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२)सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३)सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो ।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११)हो ।

(५)बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा(२ ; ७।१२) आश्लेषा हो।

(६)गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३)व मघा, हस्त हो ।

(७)शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता(४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा(५।१०।१५)व भरणी हो।

(९)सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी, कृत्ति, आर्दा, आश्लेषा, पूर्वा ३, विशा, ज्ये, धनि, शत, नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है ।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना । क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है । उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है ।

कालांग चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू.फा	उ.फा.	उ.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ. भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोगत्रिनाडीचक्र में एक ही नाडी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाडीचक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना ।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्युपर्यन्त हालत होती है । रोग पर सर्पादि दर्शन पर,विग्रह - युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्ग विशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्म विकार किंवा वायु-विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगा कर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है । शांति के लिए उस ग्रह की शांति करावें। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित-भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट)शीघ्र निवृत्त हो जाएगा ।

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदिन	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराण्यबलि	धृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रद.न
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगांदान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्न बलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेत वस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाक भो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	अपूपकान्न बलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यंत्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि, सूर्यदान
च.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि,गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाण्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि, शनिदान

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख,नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं । धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा-" इस मंत्र का उच्चारण करें ।

ग्रहगोचरादिर्दशा क्रमादिर्ग्रह कृतानिष्ट-फल-शमनार्थ प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दान समय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग, रक्तगाव	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २ शेष दिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर, शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५ शेष दिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्य उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग, भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौ सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल, घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौ सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लहसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल, बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुख्य	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुख्येशवत्	ॐ मुख्येशमन्त्रः	मुख्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार के उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि-सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे)) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खायें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्पदूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन करावें। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :- लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्रलिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्यान्ह के समय नमक के बिना दही - चावल, घी, खण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावें। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्ध्यर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचारः-सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचारः- लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डूओं का दान करे। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावें। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्य नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार:- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) गुरूवार से आरम्भ करें, तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरूवार व्रत करें, उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरूवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहूति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार:- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल , सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे, व्रत ५१ या ३१ करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९ या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, कंबल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार:- घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करें। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, मुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती हैं।

राहू, केतु शान्ति का सरल उपचार:- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी, लाल फूल, केसर, पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विदारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलैठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शान्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौं, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से मत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरू, वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार- अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्-कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमं व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं लोह शस्त्रभयं सदैव-असुखं कुर्याद्धर्मी सर्वदा॥ १॥ बृहत्कल्याणी फलम् . . . . राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्॥ हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं मौख्यं च साधारणम्, गभाकृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा॥ २॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौं ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७.

अष्टगंध- अगर, कस्तूरी, कुकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टु	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

राशिज्ञाने विशेष :-

नक्षत्र या राशि में श और ष में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगनाक्षरं नाम्नि ग्राह्य नत्राद्यमाक्षरम्)

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह ग, ञ की जगह ट् तथा ण की जगह पृ से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। काकिण्यादिकचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥

अभिजित्-निर्णय-वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण के १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू. ल. अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माट सिंहः, टो प ष ण ठ पो कन्या ॥
रातं तुला तो ना यु वृश्चिक ये भफढध धनुः ॥
भोजा खागी मकरः गुशदः कुम्भः दोथझञचो मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और इसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज' का उच्चारण 'ग्य' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र ज्ञान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2061 वि.)

राशि	वैशाख (13 अप्रै. से 13 मई तक, सन् '04 ई.)	राशि	ज्येष्ठ (14 मई से 13 जून तक सन्, '04 ई.)	राशि	आषाढ़ (14 जून से 15 जुला. तक, सन् '04 ई.)
मेष	सुखद यात्रा, धनलाभ, उत्साह बढ़े, सन्तति सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार। अप्रै. 17, 18, 27, 28; मई 5, 6 अशुभ।	मेष	स्थानान्तरण का विचार, चोटभय, मित्रबन्धुओं से मदद, शत्रु दबें, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। मई 15 , 16, 24, 25, 26; जून 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	मेष	राजभय, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, अपमान भय, स्त्री सुख, मासान्त में विशेष खर्च हो। जून 20, 21, 22, 29, 30; जुला. 1, 8, 9 अशुभ।
वृष	शत्रुपक्ष कमजोर, धनहानि, मित्र बन्धु सुख, सुखद यात्रा, सम्पतिलाभ, स्त्रीसुख। अप्रै. 19, 20, 21, 29, 30; मई 1, 7, 8, 9 अशुभ	वृष	क्रोध बढ़े, दुर्घटना से सावधान, उलझी समस्या सुलझे, सन्तान पक्ष से कष्ट। मई 16, 17, 18, 26, 27, 28; जून 4, 5, 13 अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ, सम्पत्ति विवाद, नई योजना, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जून 23, 24; जुला. 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
मिथुन	राजपक्ष से चिन्ता, शरीरकष्ट, व्यर्थ व्यय, बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर का विचार। अप्रै. 22, 23, मई 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धनलाभ, वृथा विवाद से बचें, कार्यान्तर से हानि, मासान्त में कष्टभय। मई 19, 20, 29, 30; जून 6, 7 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, बन्धुकष्ट, नई योजना, मित्र से मदद, शत्रु बढ़ें, कारोबार में रद्दोबदल। जून 15, 16, 17, 25, 26; जुला. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, निजी लोगों से अनबन, अपमानभय, आय से व्यय अधिक हो। अप्रै. 24, 25, 26; मई 4, 5, 12, 13 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, वृथा कलह, सन्तानपक्ष शुभ, आय से व्यय अधिक, यात्रा में कष्ट, चोट भय। मई 22, 23, 31; जून 1, 8, 9 अशुभ।	कर्क	कारोबार में तरक्की की योजना, खर्च विशेष, निजीजन असहयोग, कुछ मसले उलझें। जून 18, 19, 27, 28; जुला. 5, 6, 7, 15 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, कर्जा बढ़े, घरेलू झंझट, मित्र से मदद मिले, पक्षान्त में विशेष व्यय। अप्रै. 17, 18, 27, 28; मई 5, 6 अशुभ।	सिंह	वायु विकार, अर्थहानि, मित्रों से मदद, स्त्रीसुख, कारोबार कमजोर, कार्यान्तर का विचार। मई 15, 16, 24, 25, 26; जून 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	सिंह	नेत्र व सिर पीड़ा, वृथा व्यय, निजीजन असहयोग, नई योजना बने, सन्तानपक्ष शुभ। जून 20, 21, 22, 29, 30; जुला. 1, 8, 9 अशुभ।
कन्या	उदर विकार, अर्थहानि, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार कमजोर,। अप्रै. 19, 20, 21, 29, 30; मई 1, 7, 8, 9 अशुभ	कन्या	उदर विकार, सन्तान पक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, भाग्य साथ न दे, मासान्त में हानि। मई 16, 17, 18, 26, 27, 28; जून 4, 5, 13 अशुभ।	कन्या	रक्त पित्त विकार, अर्थहानि भय, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु उभरें, स्त्री सुख, अचानक हानि। जून 23, 24; जुला. 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
तुला	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, शुभ समाचार, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। अप्रै. 22, 23, मई 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।	तुला	कफ वायु विकार, नई योजना से लाभ, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। मई 19, 20, 29, 30; जून 6, 7 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, भ्रातृसुख, यात्राकष्ट, नीच व्यक्ति से दूर रहें। जून 15, 16, 17, 25, 26; जुला. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अकस्मात् लाभ, निजी लोगों से अनबन, सम्पतिसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार बेहतर। अप्रै. 24, 25, 26; मई 4, 5, 12, 13 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, मन कुछ अशान्त रहे, असफल योजना, कारोबार ठीक, मासान्त नें खर्च विशेष। मई 22, 23, 31; जून 1, 8, 9 अशुभ।	वृश्चिक	रक्त पित्त विकार, अर्थलाभ, वृथा कलह, सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर का विचार। जून 18, 19, 27, 28; जुला. 5, 6, 7, 15 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, लाभ होकर हानिभय, निजीजनों से लाभ, स्त्रीकष्ट, नई योजना से लाभ। अप्रै. 17, 18, 27, 28; मई 5, 6 अशुभ।	धनु	रक्त-पित्त विकार, सम्पत्ति विवाद, शत्रु बढ़े, यात्रा में कष्ट, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार। मई 15, 16, 24, 25, 26; जून 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, बन्धुकष्ट, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति कष्ट, चोट से बचें। जून 20, 21, 22, 29, 30; जुला. 1, 8, 9 अशुभ।
मकर	उदर व नेत्र पीड़ा, अर्थलाभ, अच्छे लोगों से मेल, सन्ततिसुख, कार्यान्तर का विचार। अप्रै. 19, 20, 21, 29, 30; मई 1, 7, 8, 9 अशुभ	मकर	अर्थलाभ, मित्र-बन्धु कष्ट, असफल योजना, स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त शुभ। मई 16, 17, 18, 26, 27, 28; जून 4, 5, 13 अशुभ।	मकर	कफ विकार, अर्थहानि, बन्धु सुख, वृथा कलह से बचें, यात्रा में कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता। जून 23, 24; जुला. 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
कुम्भ	वायुविकार, कर्जा सिर चढ़े, निजीजनों से अनबन, जायदाद सम्बन्धी विवाद, गुप्त चिन्ता। अप्रै. 22, 23, मई 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक अर्थहानि भय, सम्पत्ति विवाद, कारोबार ठीक, चोटभय, वृथा कलह से बचें। मई 19, 20, 29, 30; जून 6, 7 अशुभ।	कुम्भ	उदर विकार, राजभय, घरेलू झंझट, नई योजना से लाभ, मासान्त में कारोबार में लाभ। जून 15, 16, 17, 25, 26; जुला. 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।
मीन	वायु विकार, धनलाभ, निजी लोगों से मदद, वृथा कलह, कारोबार कमजोर। अप्रै. 24, 25, 26; मई 4, 5, 12, 13 अशुभ।	मीन	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजन कष्ट, सन्तान पक्ष से सुख, चिन्ता रहे। मई 22, 23, 31; जून 1, 8, 9 अशुभ।	मीन	वैभव में मन लगे, फजूलखर्ची, मित्र से मेल, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। जून 18, 19, 27, 28; जुला. 5, 6, 7, 15 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2061 वि.)

राशि	श्रावण (16 जुला. से 15 अग. तक, सन् '04 ई.)	राशि	भाद्रपद (16 अग. से 15 सितं. तक, सन् '04 ई.)	राशि	आश्विन (16 सितं. से 15 अक्तू. तक, सन् '04 ई.)
मेष	मन अशान्त, आय से व्यय अधिक, सम्पत्ति विवाद, असफल योजना, कारोबार में लाभ। जुला. 17, 18, 19, 27, 28; अग. 4, 5, 14, 15 अशुभ।	मेष	राजभय, वृथा व्यय, बन्धु विरोध, नई योजना, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार ठीक, बन्धनभय। अग. 23, 24, 31; सितं. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धनहानि, निजीजन कष्ट, सम्पदा सुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से मदद,व्यय अधिक। सितं. 19, 20, 21, 28, 29; अक्तू. 7, 8, 9 अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, निजी लोगों से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। जुला. 20, 21, 29, 30; अग. 6, 7, 8 अशुभ।	वृष	कर्जा सिर चढ़े, मित्रों से मदद, सन्तान पक्ष से सुख, कारोबार में गड़बड़, आय से व्यय अधिक। अग. 17, 18, 25, 26; सितं. 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	वृष	उदर विकार, अर्थलाभ, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। सितं. 21, 22, 23, 30; अक्तू. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
मिथुन	क्रोध बढ़े, आर्थिक संकट, निजीजन विरोध, कष्ट भय, कारोबार में हानि, नेत्र कष्ट। जुला. 22, 23, 24, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, अकस्मात लाभ, यात्रा में कष्ट, स्त्रीपक्ष से परेशानी, मासान्त कष्टप्रद। अग. 18, 19, 20, 27, 28; सितं. 5, 6, 7, 15 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, सन्तति–सुख, आय से व्यय अधिक, नेत्र कष्ट। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
कर्क	उदर विकार, बन्धु कष्ट, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कारोबार में रुकावट, वृथा विवाद से बचें। जुला. 16, 25, 26; अग. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धु सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट, कष्टभय। अग. 21, 22, 29, 30; सितं. 8, 9 अशुभ।	कर्क	कफ–वायु विकार, अचानक अर्थलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार में लाभ। सितं. 17, 18, 26, 27; अक्तू. 5, 6, 14, 15 अशुभ।
सिंह	रक्त–पित्त विकार, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु कमजोर,स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। जुला. 17, 18, 19, 27, 28; अग. 4, 5, 14, 15 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से सुख, सन्तति कष्ट, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार। अग. 23, 24, 31;सितं. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, दोस्तों से अनबन, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। सितं. 19, 20, 21, 28, 29; अक्तू. 7, 8, 9 अशुभ।
कन्या	मन परेशान रहे, धनलाभ होकर हाथ से निकले, बन्धुओं से मदद, असफल योजना, स्त्रीकष्ट। जुला. 20, 21, 29, 30; अग. 6, 7, 8 अशुभ।	कन्या	सम्पति विवाद, शत्रु बढ़ें, कारोबार में रद्दोबदल, स्त्रीसुख, मासान्त में अच्छा लाभ। अग. 17, 18, 25, 26; सितं. 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, धनलाभ, उत्साह बढ़े, बन्धुकष्ट, गुप्त चिन्ता, यात्रा हो, सांझेदारी में हानि। सितं. 21, 22, 23, 30; अक्तू. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
तुला	धनलाभ, निजीलोगों से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल। जुला. 22, 23, 24, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।	तुला	उलझी समस्या सुलझे, सन्तानपक्ष से खुशी, कारोबार में तरक्की। अग. 18, 19, 20, 27, 28; सितं. 5, 6, 7, 15 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, धनहानि, बन्धुसुख, यात्रा में कष्ट, मासान्त में विशेष हानिभय। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थलाभ, जायदाद बढ़े, शत्रु बढ़ें,स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त में आय से व्यय अधिक। जुला. 16, 25, 26; अग. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थहानि भय, अच्छे लोगों से मेल, विरोधी पक्ष कमजोर, चोट भय। अग. 21, 22, 29, 30; सितं. 8, 9 अशुभ।	वृश्चिक	कष्टभय, निजीलोगों से अनबन, सन्तति कष्ट, शत्रु कमजोर, कारोबार कुछ ठीक। सितं. 17, 18, 26, 27; अक्तू. 5, 6, 14, 15 अशुभ।
धनु	वायुविकार, नेत्रकष्ट भय, निजीलोगों से मदद, सन्तान पक्ष से चिन्ता, यात्रा में कष्ट। जुला. 17, 18, 19, 27, 28; अग. 4, 5, 14, 15 अशुभ।	धनु	उदर विकार, भाई–बन्धु सुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, सांझेदारी से लाभ। अग. 23, 24, 31;सितं. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	धनु	वायु रोग, निजीजन सहयोग, नई योजना, शत्रु हतप्रभ, स्त्रीसुख, कारोबार में लाभ। सितं. 19, 20, 21, 28, 29; अक्तू. 7, 8, 9 अशुभ।
मकर	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, यात्रा में कष्ट, निजीजन असहयोग, नई योजनाओं से लाभ, स्त्रीकष्ट। जुला. 20, 21, 29, 30; अग. 6, 7, 8 अशुभ।	मकर	कफ विकार, धनलाभ, निजीलोगों से मेल, विरोधी कमजोर, आय से व्यय अधिक। अग. 17, 18, 25, 26; सितं. 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	मकर	पित्त–वायु विकार, अर्थहानि, उत्साह बढ़े, अच्छे लोगों से मेल, असफल योजना, स्त्रीपक्ष शुभ। सितं. 21, 22, 23, 30; अक्तू. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, बन्धु कष्ट, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीसुख, मासान्त में आय से व्यय अधिक। जुला. 22, 23, 24, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।	कुम्भ	कष्टभय, निजीजनों से परेशानी, असफल योजना, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार कुछ ठीक। अग. 18, 19, 20, 27, 28; सितं. 5, 6, 7, 15 अशुभ।	कुम्भ	सेहत गड़बड़, अर्थहानि, बन्धु से सुख, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
मीन	मन अशान्त, आर्थिक तंगी, भाई से मदद, राजभय, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर क. विचार। जुला. 16, 25, 26; अग. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	मीन	अर्थलाभ, घरेलू झंझट,सम्पत्ति विवाद, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार से लाभ। अग. 21, 22, 29, 30; सितं. 8, 9 अशुभ।	मीन	सिर व नेत्र कष्ट, धनलाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन कष्ट, सम्पत्ति लाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। सितं. 17, 18, 26, 27; अक्तू. 5, 6, 14, 15 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2061 वि.)

राशि	कार्त्तिक (16 अक्तू. से 14 नवं. तक, सन् '04 ई.)	राशि	मार्गशीर्ष (15 नवं. से 14 दिसं. तक, सन् '04 ई.)	राशि	पौष (15 दिसं., सन् '04 ई. से 12 जन. सन् '05 ई. तक)
मेष	उदर विकार, गुप्त चिन्ता, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री कष्ट, कारोबार में हानि, कर्जा सिर चढ़े। अक्तू. 17, 18, 25, 26, 27; नवं. 4, 5, 13, 14 अशुभ।	मेष	उदर विकार, धनलाभ, भ्रातृ सुख, सन्तान पक्ष शुभ, शत्रु कमजोर, आय से व्यय अधिक। नवं. 21, 22, 23; दिसं. 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	मेष	कफ–वायु विकार, वृथा व्यय, सन्तानपक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु भय, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। दिसं. 18, 19, 20, 28, 29, 30; जन. 7, 8 अशुभ।
वृष	धनलाभ होकर हाथ से निकले, उलझनें बढ़ें, निजी लोगों से अनबन, राजपक्ष से विजय। अक्तू. 18, 19, 20, 27, 28, 29; नवं. 6, 7, 8 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, सफल योजना, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक, राजभय। नवं. 23, 24, 25; दिसं. 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	वृष	नेत्र व सिर पीड़ा, अर्थहानि भय,बन्धु से मदद, यात्रा में कष्ट, सन्तति सुख, स्त्रीकष्ट। दिसं. 21, 22, 31; जन. 1, 9, 10 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धु सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, अपमान भय, मासान्त में राजपक्ष से हानि। अक्तू. 21, 22, 30, 31; नवं. 8, 9, 10 अशुभ।	मिथुन	रक्त–पित्त विकार, भ्रातृ सुख, मित्र से अनबन, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। नवं. 17, 18, 26, 27, 28; दिसं. 6, 7, 14 अशुभ।	मिथुन	सेहत पूर्ववत्, धनलाभ, भ्रातृकष्ट, व्यय अधिक, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार कुछ गड़बड़। दिसं. 23, 24, 25; जन. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन सहयोग, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीकष्ट, मासान्त में कारोबार में हानि भय। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।	कर्क	सेहत गड़बड़,धनलाभ, घरेलू झंझट, वृथा व्यय, यात्रा सुख, स्त्रीचिन्ता, कारोबार कमजोर। नवं. 19, 20, 29, 30; दिसं. 8, 9 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, वृथा व्यय, निजीजन सहयोग, कारोबार में रुकावट, स्त्री सुख मासान्त ठीक। दिसं. 16, 17, 18, 26, 27; जन. 5, 6 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ, उत्साह बढ़े, मित्र से अनबन, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष सुखद, कारोबार में हानि भय। अक्तू. 17, 18, 25, 26, 27; नवं. 4, 5, 13, 14 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, मित्रों से मदद, असफल योजना, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर का विचार, राजभय। नवं. 21, 22, 23; दिसं. 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	सिंह	उदर विकार, अर्थलाभ हो, भ्रातृ सुख, दोस्तों से अनबन, शुभ समाचार, स्त्रीकष्ट। दिसं. 18, 19, 20, 28, 29, 30; जन. 7, 8 अशुभ।
कन्या	कफ–वायु विकार, वृथा व्यय, बन्धु चिन्ता, असफल योजना, स्त्री पक्ष से लाभ, मन अशान्त रहे। अक्तू. 18, 19, 20, 27, 28, 29; नवं. 6, 7, 8 अशुभ।	कन्या	उदर विकार, धनलाभ होकर हानि, स्त्रीकष्ट, मासान्त में कारोबार ठीक, वृथा विवाद में न पड़ें। नवं. 23, 24, 25; दिसं. 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, शुभ समाचार, स्त्री पक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल। दिसं. 21, 22, 31; जन. 1, 9, 10 अशुभ।
तुला	वृथा विवाद से दूर रहें, मन अशान्त, कर्जा बढ़े, संतति सुख, स्त्री से अनबन, अपमान भय। अक्तू. 21, 22, 30, 31; नवं. 8, 9, 10 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, नई योजना, शत्रु कमजोर, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक, गृहक्लेश। नवं. 17, 18, 26, 27, 28; दिसं. 6, 7, 14 अशुभ।	तुला	सेहत कुछ ठीक, अर्थहानि, अच्छे लोगों से मेल, असफल योजना, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। दिसं. 23, 24, 25; जन. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।
वृश्चिक	मन चिन्तित, धनलाभ, बन्धुकष्ट, सफल योजना, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।	वृश्चिक	मन अशान्त, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, यात्रा में कष्ट, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। नवं. 19, 20, 29, 30; दिसं. 8, 9 अशुभ।	वृश्चिक	मन अशान्त, सम्पत्ति विवाद, शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ, राजभय। दिसं. 16, 17, 18, 26, 27; जन. 5, 6 अशुभ।
धनु	कफ–वायु विकार, अर्थहानि भय, निजीजन सहयोग, यात्रा में कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता। अक्तू. 17, 18, 25, 26, 27; नवं. 4, 5, 13, 14 अशुभ।	धनु	कफ–वायु विकार, सम्पत्ति विवाद, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। नवं. 21, 22, 23; दिसं. 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	धनु	वायुविकार, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। दिसं. 18, 19, 20, 28, 29, 30; जन. 7, 8 अशुभ।
मकर	सेहत गड़बड़, निजीलोगों से मदद, मित्र कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़, मासान्त में अचानक कष्ट। अक्तू. 18, 19, 20, 27, 28, 29; नवं. 6, 7, 8 अशुभ।	मकर	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, घरेलू झंझट, निजीलोगों से अनबन, कारोबार में मन न लगे, मासान्त कुछ ठीक। नवं. 23, 24, 25; दिसं. 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, कर्जा बढ़े, बन्धुसुख, असफल योजना, कारोबार कमजोर। दिसं. 21, 22, 31; जन. 1, 9, 10 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थहानि, बन्धुकष्ट, स्त्री पक्ष से लाभ, मासान्त सुखद, आय से व्यय अधिक। अक्तू. 21, 22, 30, 31; नवं. 8, 9, 10 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, आर्थिक संकट, निजीलोग साथ छोड़ें, नई योजना से लाभ हो, स्त्री सुख। नवं. 17, 18, 26, 27, 28; दिसं. 6, 7, 14 अशुभ।	कुम्भ	उदर विकार, कारोबार में हानि, यात्रा में कष्ट, सन्तति चिन्ता, मासान्त में कुछ लाभ। दिसं. 23, 24, 25; जन. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।
मीन	रक्त–पित्त विकार, राजभय, निजीजन विरोध,स्त्री सुख कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।	मीन	क्रोध बढ़े, उदर विकार, धनहानि भय, गुप्त चिन्ता, कारोबार कमजोर, मासान्त शुभ। नवं. 19, 20, 29, 30; दिसं. 8, 9 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, द्रव्यहानि–भय, भ्रातृ कष्ट, शुभ समाचार, शत्रुपक्ष कमजोर, मासान्त में विशेष खर्च। दिसं. 16, 17, 18, 26, 27; जन. 5, 6 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2061 वि.)

राशि	माघ (13 जन. से 11 फर. तक, सन् 2005 ई.)	राशि	फाल्गुन (12 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2005 ई.)	राशि	चैत्र (14 मार्च से 12 अप्रै. तक, सन् 2005 ई.)
मेष	कफ-वायु विकार, धनहानि, बन्धुमेल, कष्टप्रद यात्रा, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर से लाभ। जन. 15, 16, 24, 25, 26; फर. 3, 4, 11 अशुभ।	मेष	उदर विकार, कारोबार अच्छा, भ्रातृकष्ट, मित्रों से मेल, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख। फर. 13, 21, 22; मार्च 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	मेष	कारोबार में प्रगति, सेहत ठीक, शुभकार्य में खर्च, मित्र से अनबन, स्त्री सुख। मार्च 20, 21, 22, 29, 30, 31; अप्रै. 7, 8 अशुभ।
वृष	मन खिन्न, कारोबार में लाभ, बन्धुकष्ट, नई योजना पर खर्च, मासान्त में राजभय। जन. 17, 18, 19, 27, 28, 29; फर. 5, 6 अशुभ।	वृष	मन प्रसन्न रहे, अर्थहानि भय, निजीजनों से अनबन, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीसुख। फर. 13, 14, 15, 23, 24, 25; मार्च 4, 5, 6, 13 अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, उदर विकार, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, निजीजनों से अनबन, मासान्त में विशेष व्यय। मार्च 14, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, क्रय-विक्रय में हानि, घरेलू झंझट, स्त्री सुख कारोबार में रद्दोबदल। जन. 19, 20, 21, 29, 30, 31; फर. 7, 8 अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, कारोबार में लाभ, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता, स्त्रीकष्ट, मासान्त ठीक। फर. 16, 17, 26, 27; मार्च 7, 8 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, अर्थहानि, बन्धुकष्ट, सफल योजना, शत्रु कमजोर, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 15, 16, 17, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 12 अशुभ।
कर्क	उदर विकार, कर्जा चढ़े, मन अशान्त, स्त्री कष्ट, आय से व्यय अधिक। जन. 14, 22, 23, 24; फर. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, शुभ समाचार, सन्तान सुख, आय से व्यय अधिक। फर. 18, 19, 20, 28; मार्च 1, 9, 10 अशुभ।	कर्क	रक्त-पित्त विकार, धन लाभ होकर हानि हो, अच्छे लोगों से मेल, सन्तान पक्ष से चिन्ता। मार्च 18, 19, 27, 28, 29; अप्रै. 5, 6 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, लाभ होकर हाथ से निकले, बन्धुकष्ट, असफल योजना, सन्तानपक्ष शुभ। जन. 15, 16 24 25, 26; फर. 3, 4, 11 अशुभ।	सिंह	कलह से बचें, धन लाभ होकर हानिभय, मित्र-बन्धु सुख, असफल योजना, स्त्रीकष्ट। फर. 13, 21, 22; मार्च 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	सिंह	क्रोध बढ़े, अर्थहानि, बन्धु से मदद, घरेलू झंझट, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर का विचार। मार्च 20, 21, 22, 29, 30, 31; अप्रै. 7, 8 अशुभ।
कन्या	स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर का विचार, सुखद यात्रा, मासान्त में विशेष व्यय, गुप्त शत्रु से सावधान। जन. 17, 18, 19, 27, 28, 29; फर. 5, 6 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, अर्थलाभ, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। फर. 13, 14, 15, 23, 24, 25; मार्च 4, 5, 6, 13 अशुभ।	कन्या	सेहत गड़बड़, कार्यान्तर से लाभ, उत्साह बढ़े, कष्टप्रद योजना, स्त्रीसुख। मार्च 14, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
तुला	मन चिन्तित, बन्धुसुख, सम्पत्ति विवाद, सन्तति पक्ष शुभ, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। जन. 19, 20, 21, 29, 30, 31; फर. 7, 8 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, अपमान भय। फर. 16, 17, 26, 27; मार्च 7, 8 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, यात्रा में कष्ट, लाभप्रद योजना, मानसिक अशान्ति। मार्च 15, 16, 17, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 12 अशुभ।
वृश्चिक	कफ-वायु विकार, अर्थलाभ, बन्धुसुख, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। जन. 14, 22, 23, 24; फर. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, कारोबार में हानि, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। फर. 18, 19, 20, 28; मार्च 1, 9, 10 अशुभ।	वृश्चिक	उदर विकार, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, मित्र से मेल, सन्तान सुख, स्त्रीकष्ट। मार्च 18, 19, 27, 28, 29; अप्रै. 5, 6 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, अर्थहानि, भ्रातृ सुख, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल। जन. 15, 16, 24, 25, 26; फर. 3, 4, 11 अशुभ।	धनु	उदर विकार, धन लाभ होकर हानि, बन्धुकष्ट, मित्र से मदद, कारोबार में रद्दोबदल। फर. 13, 21, 22; मार्च 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीलोगों से अनबन, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु बढ़ें। मार्च 20, 21, 22, 29, 30, 31; अप्रै. 7, 8 अशुभ।
मकर	उदर विकार, धनलाभ, घरेलू झंझट, अशुभ समाचार, स्त्री कष्ट, मासान्त में लाभ। जन. 17, 18, 19, 27, 28, 29; फर. 5, 6 अशुभ।	मकर	वृथा व्यय, भाई से मदद, सन्तति सुख, शत्रु कमजोर, मासान्त में कारोबार ठीक। फर. 13, 14, 15, 23, 24, 25; मार्च 4, 5, 6, 13 अशुभ।	मकर	मन अशान्त, कारोबार में लाभ, नई योजना से हानिभय, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। मार्च 14, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
कुम्भ	क्रोध बढ़े, आमदन अच्छी, निजीलोगों से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री कष्ट। जन. 19, 20, 21, 29, 30, 31; फर. 7, 8 अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढ़े, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री से अनबन। फर. 16, 17, 26, 27; मार्च 7, 8 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धु सुख, सन्तानपक्ष से कष्ट कारोबार ठीक, मासान्त में लाभ। मार्च 15, 16, 17, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 12 अशुभ।
मीन	कफ-वायु विकार, नेत्रकष्ट, निजीजन विरोध, असफल योजना, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक। जन. 14, 22, 23, 24, फर. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, अर्थहानि, बन्धुसुख, घरेलू झंझट, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ। फर. 18, 19, 20, 28; मार्च 1, 9, 10 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, धनहानि भय, क्रोध बढ़े, निजीलोगों से मेल, अपमान बढ़े, मासान्त ठीक। मार्च 18, 19, 27, 28, 29; अप्रै. 5, 6 अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल-विचार (सं.२०६१ वि.)

(सन् २००४-२००५ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१०५, सृष्टिसंवत् १९५५८८५१०५, श्री विक्रम **संवत् २०६१,** शक संवत् १९२६, श्री कृष्णजन्म संवत् ५२४०, कलिसंवत् ५१०५, श्रीजैनमहावीर निर्वाण संवत् २५२९-३०, श्रीबुद्ध संवत् २६२७-२८, हिजरी सन् १४२४-२५, फसली सन् १४११-१४१२, **ईस्वी सन् २००४-०५।**

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का **"हेमलम्बी"** नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है: -

" हेमलम्बे त्वीतिभीतिर्मध्य सस्यार्घवृष्टयः। भाति भूर्भूपतिक्षोभः खड्ग विद्युल्लतादिभिः।।"

देश में कहीं ईति (टिड्डीदल आदि प्राकृतिक प्रकोप) से हानिभय बने, वर्षा मध्यम हो, अनाजों की फसल मध्यम रहे। मंहगाई रहे। शासकों में परस्पर वैमत्य किंवा राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता बढ़े। कहीं युद्धभय व कहीं आकाशीय व स्थलीय बिजली से हानि भी हो।

किञ्च, हेमलम्बे राहुःस्वामी, अतिरौरवं सरोगा लोकाः भूकम्पादय उत्पाताः वणिकूपीड़ा। चैत्रवैशाखयोर्धान्यादि मन्दभावः, परचक्रागमः, ज्येष्ठादि मासत्रये धान्यं महर्घम्, चतुर्गुणो लाभः, भाद्रपदे महामेघः, अन्नसमता, मंजिष्ठा-मरिच-लवंग-दन्तमयवस्तु-महर्घता, कार्तिके छत्रभंगः, लोकपीड़ा, अन्नकलशिकां प्रतिफदिया १०२, सर्व वस्तु समर्घता, चतुष्पद-पीड़ा, मार्गशीर्षादि मास चतुष्ट्येषु राजा सुस्थः, लोकाः सुखिनः।

इस **संवत् का राजा** (ग्रहपरिषद् के प्रधान) **सूर्य, मंत्री मंगल, सस्येश** (चौमासी फसलों के स्वामी) **शुक्र, धान्येश** (शीतकालीन फसलों के स्वामी) **बुध, मेघेश** (मौसम वर्षा-पानी के स्वामी) **चन्द्र, रसेश** (गुड़, खाण्ड, रस-कस आदि के स्वामी) **शनि, नीरसेश** (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **गुरु, फलेश** (फल-फूल आदि के स्वामी) **चन्द्र, धनेश** (धन-दौलत एवं खजाना के स्वामी) **गुरु** एवं **दुर्गेश** (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) **चन्द्र** हैं।

संवत् के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल निम्नांकित है;-

(१) राजा सूर्य का फल-

**" सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीड़ा।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्प-वृक्षाश्चौराग्निबाधा नियनं नृपाणाम्।। "**

अर्थात्- बादल-वर्षा कम हो, दूध की कमी, पशुधन एवं जनता में रोगभय हो। अनाज एवं फल-फूल की कमी रहे। चोर-अग्निजन्य हानि किंवा किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

(२) मंत्री मंगल का फल-

**" अवनिजो ननु मन्त्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना।
जनपदेषु जयःसुख संचयो न बहु गोषु पयो द्विजकर्म च।।"**

अर्थात्- चोर-उचक्कों से परेशानी, रोगजन्य कष्ट से जनता परेशान हो। बड़े नगरों (प्रान्तों) में जनता सुख-सुविधा सम्पन्न एवं कर्मक्षेत्र में प्रगति (विजय) की भावना लेकर अग्रेसर हो। दूध की कमी अनुभव हो। द्विजकर्म (पौरुहुत्य कर्म) का ह्रास हो।

(३) सस्येश शुक्र का फल-

**" शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं मुञ्चति शोभनं प्रियम्।
गोधूम-शालीक्षुधनं प्रियंगु-वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि।।"**

अर्थात्- शुक्र सस्येश हो तो वर्षा पर्याप्त एवं समयानुसार हो। गेहूं, चावल, ईख रूपी धन अच्छा हो। प्रियंगु वृक्षों पर फूल खूब आएं। जनता सुखी रहे।

(४) धान्येश बुध का फल-

**" बुधे धान्याधिपे मेघा जलं मुञ्चन्ति वै भृशम्।
सैन्धवे लाटदेशे च माधवोऽल्पं च दर्षति।।"**

अर्थात्- बुध धान्येश हो तो वर्षा खूब हो। सिन्धु एवं लाट देश में वर्षा की कमी रहेगी।

(५) मेघेश चन्द्र का फल-

**"शशिनि तोयदपे यदि गोमहिष्यज-खरादिषु दुग्ध-रसं तदा।
फलवती धनधान्यवती मही विविध भोगवती ननु भामिनी।।"**

अर्थात्- चन्द्र के मेघेश होने पर गौ, भैंस, बकरी, गधी आदि में दूध की मात्रा अधिक हो। पृथ्वी पर धन-धान्य समृद्धि रहे। वृक्षों पर फल अधिक हों। स्त्रीवर्ग को अधिक प्रातिनिध्य किंवा ऐश्वर्य-उपभोग का अवसर मिले।

(६) **रसेश शनि का फल-**

" रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अजगवां गजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः।।"

अर्थात्- रसों (गुड़, खाण्ड, चीनी, घी एवं दूध आदि) की भारी कमी से मंहगाई हो। वर्षा न हो, नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। बकरी, गाय, हाथी, घोड़े, गधे एवं ऊंट आदि चौपायों में रोग से हानि हो। नागरिक जनों में स्नेहभाव न रहे।

(७) **नीरसेश गुरु का फल-**

" हरिद्रा पीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।।"

अर्थात्- हल्दी, पीलेवस्त्र, पीले रंग की चीजें सबको भाएं। ये सब चीजें सस्ती हों।

(८) **फलेश चन्द्र का फल-**

"यदि विधु फलपो द्रुमराशयः फलयुता वलिभिः कुसुमैर्युता।
द्विजमुखावर भोगसमन्विता नृपतयो नयनाटनतत्पराः।।"

अर्थात्- वृक्षों में फल तथा बेलों में फूल बहुत लगें। द्विजवर्ग नानाविध ऐश्वर्य से युक्त हों। राजा किंवा शासकवर्ग अनेकविध नीतियों किंवा योजनाओं का प्रदर्शन करने में तत्पर रहें।

(९) **धनेश गुरु का फल-**

" सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिज-वृत्तिपरा सुखभाजनाः।
फलित-पुष्पित भूमिरुहाः सदा विविध द्रव्ययुता भुविमानवाः।।"

अर्थात्- व्यापारीवर्ग नानाविध व्यापार में लाभान्वित होकर सुख के भागी रहें। वृक्ष फल-फूलों से लदे रहें। मनुष्य नानाविध धन-धान्य से युक्त रहें।

(१०) **दुर्गेश चन्द्र का फल-**

" गढ़पति शशलांछनको यदा नृपसुराज्य विलासित पौरजाः।
बहु धनेक्षुज गोरसभोगिनो नरवरा वरवर्णित- विग्रहाः।।"

अर्थात्- शासकवर्ग सुचारुरूप से शासन करें, प्रजा में आनन्द मंगल रहे, गुड़, चीनी, दूध एवं घी आदि के व्यापारी लाभान्वित हों, श्रेष्ठ किंवा गण्यमान्य व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व, शोभन शरीर सौष्ठव से प्रभावशाली किंवा सुन्दर दिखाई दें।

सूचना- यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः **राजा** का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; **मन्त्री** का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में, **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में, **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में, **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में, **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में ; **फलेश-दुर्गेश** एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ११, धान्य १३, तृण ६, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ५, क्षुधा ११, तृषा ११, निद्रा १५, आलस्य ११, उद्यम ११, शांति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १, पाप १५, पुण्य १, व्याधि १५, व्याधिनाश ११, आचार ६, अनाचार १३, मृत्यु ६, जन्म १७, देशोपद्रव ५, देशस्वास्थ्य ६, चौर १५, चौरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशांति ५, उद्भिज्ज १३, जरायुज ३, अण्डज ७, स्वेदज ११, टिड्डी ३, तोता ५, मूषक ५, सोना १५, तांबा१३, स्वचक्र ११, परचक्र १३, वृष्टि १५, वृष्टिनाश ५ एवं संवत् विश्वा १८ हैं।

अधिकमास फल- इस वर्ष **श्रावण** अधिकमास है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;-

" दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः।"

अर्थात्- श्रावण अधिकमास होने पर कहीं भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि हो। किसी प्रान्त विशेष में दुर्भिक्ष से जनता भारी कष्ट में रहे।

आवर्तकादि चतुर्मेघ विचार- चतुर्मेघों में 'आवर्तक ' संज्ञक मेघ है। **फल - " आवर्ते विनिवृष्टिः स्यात्।"** कहीं वर्षा आवश्यकता से कम और कहीं आवश्यकता से अधिक हो। दालवाना, धान एवं तिलहन की खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। दक्षिण में बाढ़, चक्रवात व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो।

नवमेघ विचार- नौ मेघों में इस वर्ष ' तम' नामक मेघ है। **फल- " तमो वर्षा विनाशकम्"**

अर्थात् - वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव होगी; कृषकवर्ग चिन्तित रहे। जीरी की फसल का नाश हो। रोगों से जनता परेशान रहे। अनैतिकता की वृद्धि हो। जनता अनेक प्रकार से दुखी रहे;-

"रोगाधिक्यं जायते नीरसेशः चौराधिक्यं नैव धान्यस्य पोषः।
यस्मिन् वर्षे स्यात्तमो नाम मेघः तस्मिन् दुःखं प्राप्नुयाल्लोकसंघः।।"

अनन्तादि अष्टनाग- इस वर्ष अनन्तादि अष्टनागों में **'वासुकी'** नाग है। **फल- 'वासुकी सस्यकर्ता च बहु वृष्टिकरः शुभः।'** अनाजों की फसल अच्छी, वर्षा बहुत हो।

सुबुध्नादि द्वादशनाग- इस वर्ष बारह नागों में **'अश्वतर'** नाम का नाग है। **फल-**अनेकत्र वर्षा की कमी से भयंकर अकाल की स्थिति बने; खड़ी खेतियां सूख जाएं:-

" यस्मिन्नब्देभुजङ्गेन्द्रो जायतेश्वतराभिधः। न वर्षति जलं वज्री तदा सस्यं विनश्यति।।"

सप्तवायु- इस वर्ष आवह आदि वायुसप्तक में **'प्रवह'** नामक वायु है। **फल-** कहीं आंधी-तूफान से वृक्षों को हानि पहुंचे। खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। उत्तर-पश्चिम में विशेष हानि हो।

संवत् २०६१ वि. का वाहन- इस संवत् का राजा सूर्य होने से संवत् का वाहन **'अश्व'** (घोड़ा) है। **फल-** देश में प्रगतिप्रद योजनाएं तीव्रगति से कार्यान्वित होंगी। शासनसत्ता में विशेष परिवर्तन, संवर्धन होंगे। प्रतिष्ठित नेताओं को सम्मान प्राप्त हो। देश के दक्षिणभाग में भूकम्प व प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) **जलस्तम्भ-** (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) २४ प्रतिशत है।
(२) **वायुस्तम्भ-** (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र) ० प्रतिशत है।
(३) **तृणस्तम्भ-** (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ४३ प्रतिशत है।
(४) **अन्नस्तम्भ-**(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ० प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है। जनमानस एवं देश-विशेष की खुशहाली के मूलभूत इन चार स्तम्भों का प्रतिशतता के आधार पर सामूहिक फल इस वर्ष निम्नांकित है;-

गतवर्ष जल एवं तृणस्तम्भ बहुत प्रबल थे, अतः वर्षा काफी, कुछ प्रान्तों में बाढ़ की सम्भावना व्यक्त की गई थी। तेकिन इसवर्ष स्तम्भों में प्रमुख **जल स्तम्भ केवल २४ प्रतिशत है।** स्पष्ट है कि वर्षा की अनेक प्रान्तों में भारी कमी रहेगी, कुछ प्रान्तों में वर्षा का अत्यन्ताभाव किसानों को डोब देगा; शासन कुछ प्रान्तीय भूभाग को अकाल ग्रस्त क्षेत्र घोषित करने के लिए विवश हो जाएगा। **वायुस्तम्भ एवं अन्नस्तम्भ इसवर्ष शून्य प्रतिशत हैं।** कहीं वायु प्रकोप से हानि किंवा खड़ी फसलों का नाश हो। प्रान्तीय समस्याएं उभरकर सामने आएंगी। कहीं जल वितरण, कहीं अन्न-भण्डारण किंवा वितरण की समस्या सिरदर्द बनेंगी। उड़ीसा, बिहार, राजस्थान आदि में स्तम्भ चतुष्टय की कमजोरी का प्रभाव विशेष अनुभव होगा। जलस्तम्भ कमजोर होने से तृणस्तम्भ भी बहुत समर्थ स्तम्भ नहीं रहा। अतः जंगली जड़ीबूटियों एवं पशुओं के घासफूस की भी भारी कमी अनुभव होगी। इसवर्ष चार स्तम्भों के क्षीण होने से व्यापारीवर्ग अनाजों व अन्य व्यापारिक-वस्तुओं के स्टॉक से भारी (अनुचित) लाभ लेने की चेष्टा में रहेंगे, लेकिन सरकार इन पर अंकुश लगाने के लिए विवश हो जाएगी।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष-**(अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ३६ प्रतिशत है।
(२) **द्वितीय आर्ष-**(सं. २०६० वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ५६ प्रतिशत है।
(३) **तृतीय आर्ष-**(श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ० प्रतिशत है।
(४) **चतुर्थ आर्ष -**(कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ६२ प्रतिशत है।

फलः- इसवर्ष **'वर्ष की रक्षा के संकेतक'** चार दुर्गों में से **तृतीय आर्ष शून्य** प्रतिशत है। सीमाप्रान्तों पर वातावरण अशान्त, कहीं भूकम्प, अग्निकाण्ड एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का संकेत मिलता है। प्रथम आर्ष भी ३६ प्रतिशत होने से काफी क्षीण है। द्वितीय आर्ष ५६ प्रतिशत होने से मध्यम है, चतुर्थ आर्ष परम श्रेष्ठ है। निष्कर्ष यह निकलता है, कि यह वर्ष आर्षमान विचार से अच्छा नहीं है। देश में जल-थल-वायु सेनाओं में विशेष संशोधन की आवश्यक्ता है, विशेष आधुनिकतम प्रक्षेपणास्त्रों की कमी अनुभव होगी। प्राकृतिक आपदाओं से भी देश की आर्थिक-सामाजिक स्थिति चिन्तनीय हो सकती है। आर्षमान विचार से इस वर्ष मंहगाई जोर पकड़ेगी। वर्षा पानी की कमी एवं कहीं अकाल की स्थिति रहेगी। जनता परेशान रहेगी।

दोहा : " अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै,कहै भड्डली साख विनाशै।। "

रोहिणी का वासः- इस वर्ष रोहिणी का वास **'तट'** पर है। **फल- " तटे वृष्टिः सुशोभना"।** अच्छी वर्षा के योग बनते हैं। बहुजलीय-अन्न चावलादि की फसल उत्तम होगी; न्यून वर्षा वाले बागड़ादि (राजस्थान) प्रान्तों में भी आगे-पीछे वर्षा से किसानों को सहारा मिलेगा।

समय का वास- इस वर्ष समय का वास **'धोबी'** के घर है। बावड़ियां, नदी-नाले, वन सभी जगह जल से परिपूर्ण रहें।

शनि की दृष्टि- गत संवत् २०६० वि. में ७ अप्रैल सन् २००३ ई. को २० घं. ७ मि. पर शनि मिथुन राशि में प्रविष्ट होकर वर्तमान संवत् २०६१ वि. में ६ सितम्बर सन् २००४ ई. तक शनि मिथुन राशि में ही रहेगा। तत्पश्चात् ६ सितम्बर सन् २००४ ई. को ४ घं. २६ मि. पर शनि कर्क राशि में दाखिल होकर १३ जनवरी सन् २००५ ई. को १५ घं ७ मि. तक कर्क राशि में ही रहेगा। उसके बाद १३ जनवरी सन् २००५ ई. को १५ घं. ८ मि. पर शनि **वक्री** पोजीशन में **पुनः मिथुन** राशि में दाखिल होकर संवत् २०६१ वि. के अन्त तक मिथुन राशि में ही रहेगा। इस प्रकार शनि की दृष्टि इस संवत् (२०६१ वि.) में ६ सितम्बर सन् २००४ ई. तक पूर्व में रहेगी। तत्पश्वात् १३ जनवरी सन् २००५ ई. तक शनि दक्षिण दिशा की तरफ क्रूरदृष्टि से देखेगा। तत्पश्चात् संवत् २०६१ वि. के अन्त तक शनि पुनः पूर्व दिशा की तरफ देखने लगेगा।

फल - **" शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।**
दुर्भिक्ष-देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०६१ वि. के प्रारम्भ से ६ सितम्बर तक शनि की दृष्टि पूर्वी प्रान्तों एवं पूर्वी गोलार्ध पर रहेगी। तत्पश्चात् १३ जनवरी सन् २००५ ई. तक शनि दक्षिणी प्रान्तों एवं दक्षिणी गोलार्ध के देशों पर क्रूर दृष्टि रखेगा। फलस्वरूप उपरोक्त समयावधियों में कहीं राजनैतिक अस्थिरता, समुद्री तूफान, सत्ता परिवर्तन हो। कहीं दो देशों में युद्ध-ज्वाला से बड़े देश चिन्तित हों। आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भयंकर रोग से मृत्युदर बढ़े। कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जन-धनहानि हो। पूर्व में शनिदृष्टि होने से मेष, मिथुन, वृष, मकर, कन्या, तुला नामराशि वाले देशों में विशेषतः मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा।

शरत् सस्यजातक

संवत् २०६१ वि. में १४ मई सन् २००४ ई. गुरुवार को १४ घं. ५६ मि. (२३ घ. २७ पल) पर सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल- शरत् सस्य जातक कुण्डली में मिथुन राशि में स्थित शनि-मंगल-शुक्र की दृष्टि कुण्डली के चतुर्थ भाव पर है। यद्यपि चतुर्थेश-गुरु भी विशेष दृष्टि से चतुर्थ भाव को देख रहा है। परिणामस्वरूप शीतकालीन अनाजों की फसलें अच्छी होने पर भी खड़ी फसलों को प्राकृतिक-प्रकोप (बाढ़, सूखा या टिड्डी आदि) से हानि पहुंचने के योग हैं। सरकार को कृषकवर्ग की असुविधा को दृष्टि में रखते हुए सहायतार्थ आगे आना होगा। द्वितीयेश शुक्र खलयुत होने से मूंग-मोठ-बाजरा-चावल के भाव आश्चर्यजनक रूप से बढ़ेंगे एवं व्यापारीवर्ग (स्टाकिस्ट) भारी तेजी से काफी लाभ उठा सकेंगे। कई स्थानों पर वर्षा की भारी कमी से खड़ी फसलें सूखेंगी; परिणामस्वरूप जनजीवनोपयोगी खाद्य पदार्थों में तेजी से जनता में असन्तोष व्याप्त होगा।

ग्रीष्म सस्यजातक

संवत् २०६१ वि. में १६ नवम्बर, सन् २००४ ई. चन्द्रवार को प्रातः ४ घं. १६ मि. (५३ घ. ३७ प.) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल- लग्न में शुक्र नवमेश एवं द्वितीयेश होकर अपने शत्रुग्रह गुरु के साथ शनि से दृष्ट है। शुक्र सम्पूर्ण सस्यमात्र का प्रतिनिधिग्रह है। ग्रीष्मसस्येश-मंगल मारकस्थान में अपनी राशि से द्वादशभाव में केतु की सन्निधि में है। संकेत मिलता है, कि- इस वर्ष जौ, चना, गेहूं, दालवाना एवं ग्वार आदि की फसल आशानुरूप लाभप्रद नहीं रहेगी। मौसम व जलवायु के अनुरूप न रहने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। उत्तरी भारत में ग्रीष्म सस्य से किसान लाभ अवश्य ले सकेंगे। राजस्थान किंवा महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखण्ड, बिहार में ग्रीष्मकालीन अनाजों में अप्रत्याशित हानि होने से जनता में परेशानी रहेगी। खाद्य पदार्थ मंहगे होंगे।

वि. संवत् २०६१ का शुभारम्भ

वि. संवत् २०६० में चैत्र कृष्ण अमावस, शनिवार, तदनुसार २०/२१ मार्च, सन् २००४ ई. को मध्यरात्रि के बाद २८ घं. ११ मि. (५४ घटी १३ पल) पर उ.भा. नक्षत्र, शुक्ल योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय संवत् २०६१ वि. का शुभारम्भ होगा।

फल- नववर्ष (संवत्) का आरम्भ मकर लग्न में हो रहा है। उत्तर में प्राकृतिक-प्रकोप, उत्पात किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन व सत्तापरिवर्तन के योग हैं। पैदावार अच्छी हो। मध्यप्रदेश में फसल को कुछ हानि, अनाज मंहगे, असामयिक वर्षा-पानी से किसानों को परेशानी हो। व्यापारी धान्य विक्रय से लाभ लें।

"मकरे च महोत्पातः उत्तरस्यां नृपक्षयः। वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम्।।"

"मध्यदेशेऽर्ध निष्पत्तिः किञ्चिद्धान्य-महर्घता। अकाले मेघवृष्टिः स्याल्लाभो धान्यस्य विक्रयात्।।"

नववर्ष प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश-शनि छठे भाव में राजनैतिक-दृष्टि से विरोधी पक्ष किंवा शत्रु देशों की कुचाल को निष्क्रिय करता है। नवमेश-बुध नवमस्थान को देखता है, लेकिन नीच प्रकृति में होने से प्रबल राजनैतिक दलों में विभाजन किंवा नए ध्रुवीकरण बनेंगे। देश की राजनैतिक-पार्टियों में सत्ता-संघर्ष किंवा आगे शक्तिपरीक्षण के लिए मुद्दे सामने आएंगे एवं सत्ता हथियाने का कार्य जोर पकड़ने लगेगा। देश में नई प्रगतिप्रद योजनाएं कार्यान्वित होंगी। आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास विशेष घटनाप्रद होंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न

वि. संवत् २०६१ में वैशाख कृष्ण नवमी, मंगलवार, तदनुसार १३ अप्रैल, सन् २००४ ई. को श्रवण नक्षत्र, साध्य योग एवं मकर राशिस्थ चन्द्र के समय १८ घं ०२ मि. (३० घ. ०० पल) पर सूर्यदेव मेषराशि में दाखिल होंगे।

फल- मेष संक्रमण कुण्डली में धनस्थान में केतु है, व्ययस्थान में गुरु, शनि एवं मंगल से दृष्ट है, केंद्र में कोई भी शुभ ग्रह नहीं है। अतः यह संवत् विशेषतः सुभिक्ष का संकेत नहीं देता। लग्नेश बुध उच्चस्थ किंवा व्ययभावेश- सूर्य के साथ अष्टमस्थ है; जोकि विश्व के प्रतिष्ठित देशों के शासकों एवं कार्यप्रणाली के सामने कई प्रश्नचिह्न लगाएगा। कहीं प्रतिष्ठित नेतृत्व खतरे में पड़ेगा; कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड से अराजकता व्याप्त होगी। कहीं भयंकर दुर्भिक्ष से शासकवर्ग चिन्तित रहेगा।

"धने व्यये च सौम्यश्चेत् केन्द्रे वा मेषसं[illegible]। स्वर्क्षे शुभे सुहृद्दृष्टे सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा"

जगत् लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्‌लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो, तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो, तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

ज्येष्ठ, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं माघ मास विश्व के प्रधान नेताओं एवं देशों के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

आर्द्रा प्रवेश लग्न

वि. संवत् २०६१ में आषाढ़ शुक्ल तृतीया, चन्द्रवार, तदनुसार २१ जून, सन् २००४ ई. को आश्लेषा नक्षत्र, हर्षण योग एवं कर्क राशिस्थ चन्द्र के समय २१ घं. ६ मि. (३६ घ. १५ पल) पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

फल- तृतीया तिथि में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश टिड्डीदल एवं पक्षियों द्वारा फसल की हानि का संकेत देता है। लेकिन सोमवार को आर्द्रा प्रवेश वर्षा-पानी से सुभिक्ष का भी सूचक है। आश्लेषा नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश शासकों की मनमानी एवं प्रजा में शासकों के क्रूर व्यवहार से असन्तोष वनाता है।

"सार्पमं दिमं चेत्स्यात् अर्कस्यार्द्रा प्रवेशने। दारुणं कर्मलोकानां भवेत् सौख्य विनाशनम्।"

हर्षण योग में आर्द्रा प्रवेश होने से खाद्य वस्तुओं के सहज सुलभ होने से जनता में सन्तोष रहे- **" सर्वधान्यादि संवृद्ध्या प्राणिनां हर्ष-संभवः।"** आर्द्रा प्रवेश रात्रि में होंने से जनता सर्वविध सुखों से युक्त रहे;- **" रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके।"** आर्द्रा प्रवेश मकर लग्न में होने से उत्तरी भाग व उत्तरी प्रान्त विशेष में विशेष उत्पात किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि व अराजकता का वातावरण बने। शासनसत्ता में परिवर्तन हो किंवा किसी व्यक्ति विशेष के निधन से शोक व्याप्त हो; फसल अच्छी हो। पश्चिम में सुख-समृद्धि रहे।

"मकरे च महोत्पातः उत्तरस्यां नृपक्षयः। वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम्।।"

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली के अनुसार चन्द्रमा कर्क राशि में नीच मंगल के साथ सम्बन्ध बना रहा है। आर्द्रा प्रवेश के समय सूर्य-शनि की सन्निधि में बुध के साथ है। शुक्र अपनी राशि वृष में है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में कालसर्प योग अनेकत्र बाढ़-वर्षा-तूफान से हानि का संकेत देता है।

गुर्रा विचार (सन् २००४-२००५ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा " **गुर्रा** " होता है।

गत संवत् २०६० वि. में फाल्गुनशुक्ल द्वितीया, रविवार, तदनुसार २२ फरवरी सन् २००४ ई. को मुहर्रम एक (यकम मुहर्रम) से हिंजरी सन् १४२५ प्रारम्भ हुआ है, अतः इस्लामी मतानुसार इस **हिजरी सन् का बादशाह 'सूर्य' ही माना जाएगा।**

फल - वर्षा पर्याप्त हो, खाद्य अनाज काफी हों, अनाज सस्ते, फल-फूल काफी हों। जनता सुखी रहे, पशुधन स्वस्थ, दूध-दही (गोरस) खूब हो। कई स्थानों पर वायु का जोर रहे। नाना प्रकार के यौनरोग बढ़ें। स्त्रियों में कुचरोग (Breast Cancer) से परेशानी अधिक रहे। कहीं आगजनी की घटनाओं से हानि हो । कपास की फसल कमजोर रहे। कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो।

वर्तमान संवत् २०६१ वि. में माघ शुक्ल तृतीया, शुक्रवार, तदनुसार ११ फरवरी, सन् २००५ ई. को मुहर्रम एक (यकम मुहर्रम) से हिजरी सन् १४२६ प्रारम्भ होगा। अतः इस्लामी मतानुसार इस **हिजरी सन् का बादशाह शुक्र ही माना जाएगा।**

फल- राजा प्रजा में परस्पर विरोध, प्रजा में आपसी लड़ाई-झगड़े की घटनाएं अधिक हों। पशुओं में रोग से मृत्यु की दर बढ़े। चोरी, डाके एवं सीमाप्रन्तों पर उग्रवाद व हिंसक घटनाओं से जनता त्रस्त रहे। व्यापार में लाभ कम हो, गेहूं के अतिरिक्त सब वस्तुओं के भाव तेज रहें। तूफान-आंधी से कुछ स्थानों पर हानि हो। किसी मुस्लिम राष्ट्र में भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो एवं कहीं आन्तरिक खून-खराबा अथवा सत्ता हस्तान्तरण के आसार भी बनते हैं।

आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

लाभ-व्यय देखने की रीति- अपनी राशि के लाभ-व्यय अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर , यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

" इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।। "

******

सन्दिग्ध व्रत–पर्व व्यवस्था (सं. 2061 वि.) सन् 2004–05 ई.

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला–134 109

स्कन्द षष्ठी

स्कन्द षष्ठी व्रत पूर्व (पञ्चमी) विद्धा चैत्र शुक्ल षष्ठी के दिन किया जाता है– "षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा ग्राह्या"– (*धर्मसिन्धु*) । विशेष नियमानुसार पंचमी द्वारा षष्ठी का वेध तीन मुहूर्तों से नहीं, अपितु छः मुहूर्तों से होता है [(नागो द्वादशनाडीभिः दिक् पञ्चदशभिस्तथा भूतोऽष्टादशनाडीभिर्दूषयत्युत्तरां तिथिम् ।)"– (*स्कन्दपुराण*)] । इस वर्ष २६ मार्च, २००४ ई. को पंचमी छः मुहूर्त से कम है, अतः इस दिन षष्ठी पंचमीविद्धा नहीं हो सकी। इसलिए स्कन्द षष्ठी २७ मार्च को ही लगाई गई है, क्योंकि इस दिन षष्ठी तीन मुहूर्तों से कहीं अधिक हमें प्राप्त है।

श्री गंगाजन्म

मध्याह्न-व्यापिनी वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन श्रीगंगा का जन्म माना गया है –[**"वैशाखशुक्ल-सप्तम्यां गंगोत्पत्तिः तस्यां मध्याह्न-व्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्।"** –(*धर्मसिन्धु*)] इस वर्ष यह सप्तमी केवल २६ अप्रैल, २००४ ई. को ही मध्याह्न–व्यापिनी है, अतः यह पर्व निर्विवाद रूप से २६ अप्रैल, २००४ ई.को ही मनाया जाएगा।

जानकी जयन्ती

मध्याह्नव्यापिनी वैशाख शुक्ल नवमी के दिन जानकी जयन्ती या सीता–नवमी मनाई जाती है और धर्मशास्त्रानुसार नवमी सर्वत्र अष्टमी विद्धा ली जाती है। **"न कुर्यान्नवमीं तात दशम्यां तु कदाचन। "**– (*स्कन्दपुराण*)। इस वर्ष नवमी २८ और २६ अप्रैल, '०४ ई.–दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी है (इन दिनों मध्याह्नकाल भा. स्टैं. टा. के अनुसार ११ घं. २ मि. से १३ घं. ४० मि. तक है)। इस स्थिति में यह पर्व पूर्वविद्धा नवमी के दिन २८ अप्रैल को होगा।

सोमप्रदोष व्रत (आषा. कृ. १३ चं.)

त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोष–व्यापिनी त्रयोदशी के दिन प्रदोषव्रत होता है। यदि दो दिन त्रयोदशी प्रदोष–व्यापिनी हो तो जिस दिन वह प्रदोष के अधिक काल को व्याप्त करती है, उसी दिन प्रदोषव्रत किया जाता है– "दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेकस्पर्शे वा उत्तरा, वैषम्येण एकदेश–स्पर्शे तदाधिक्यवती पूर्वापि ग्राह्या।" –(*धर्मसिन्धु*)। इस वर्ष १४ और १५ जून, २००४ ई.– दोनों दिन त्रयोदशी प्रदोष को व्याप्त कर रही है (इन दिनों प्रदोषकाल भा. स्टैं. टा. के अनुसार १६ घं. २३ मि. से २१ घं. २३ मि. तक है)। यहां त्रयोदशी १४ जून को १५ जून की अपेक्षा प्रदोषकाल के अधिक याम को व्याप्त कर रही है, अतः उक्त नियमानुसार १४ जून को सोमप्रदोष व्रत होगा।

नागपञ्चमी (द्वि.श्राव. शु. ५)

पर (षष्ठी) विद्धा पञ्चमी के दिन नाग पञ्चमी मनाई जाती है। यदि दूसरे दिन पञ्चमी तीन मुहूर्त्त से कम हो और पहिले दिन वह तीन मुहूर्त्त से कम चतुर्थी से विद्ध हो रही हो तब पहिले दिन ही नागपंचमी मनाने का नियम है। 'धर्मसिन्धु' का यह वाक्य है– **"श्रावणशुक्लपञ्चमी नागपञ्चमी । इयमुदये त्रिमुहूर्तव्यापिनी परविद्धा ग्राह्या। परेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यूना पञ्चमी पूर्वेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यून –चतुर्थ्या विद्धा पूर्वैव।"**– (*धर्मसिन्धु*)। इस वर्ष श्रावणशुक्ल पञ्चमी २० अगस्त, २००४ ई. को त्रिमुहूर्त्तन्यून चतुर्थी से विद्ध हो कर २१ अग. को वह स्वयं भी त्रिमुहूर्त्तन्यून है, अतः उपरोक्त वचनानुसार नाग पञ्चमी २० अगस्त को ही होगी।

दूर्वाष्टमी

दूर्वाष्टमीव्रत सामान्य नियमानुसार भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन होता है। अगस्त्य तारा के उदयकाल तथा कन्यार्क काल में यह निषिद्ध है। सिंहार्क काल में इस व्रत का अनुष्ठान श्रेष्ठ माना गया है। यदि अगस्त्य तारा भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पूर्व ही उदित हो जाए तब इस व्रत को भाद्र. कृष्ण अष्टमी के दिन करने की शास्त्रानुमति है। यदि भाद्र. कृष्ण अष्टमी से भी पहिले यह तारा उदित हो जाए तब इस व्रत को श्रावण शुक्ल अष्टमी के दिन करने की शास्त्र अनुमति देते हैं (एतद्विषयक शास्त्रवाक्य विगत वर्षीय अनेक पंचांगों में **'सन्दिग्ध व्रत–पर्व व्यवस्था'** वाले स्तम्भ में हम उद्धृत कर चुके हैं)। इस वर्ष (सं. २०६१ वि. में) पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू–काश्मीर, दिल्ली आदि प्रदेशों में अगस्त्य तारा भाद्र. कृ. ५ शु. (३ सितं.'०४) को ही उदित हो जाएगा; इसी लिए इन प्रदेशों में यह व्रत इस वर्ष द्वि. (शुद्ध) श्रावण शुक्ल अष्टमी चन्द्रवार (२३ अग. '०४) को ही किया जाएगा।

शारद नवरात्रारम्भ

सामान्यतः आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ का विधान है। यह सूर्योदयोत्तर मुहूर्त्त त्रय–व्यापिनी प्रतिपदा में किया जाए, ऐसा शास्त्राग्रह है। यदि प्रतिपदा मुहूर्त्त त्रयव्यापिनी न हो तो मुहूर्त्त द्वय–व्यापिनी में, यदि वह मुहूर्त्त द्वय–व्यापिनी भी न हो तो एक मुहूर्त्त–व्यापिनी में भी नवरात्रारम्भ शास्त्रों द्वारा अनुमत है। यदि प्रतिपदा एकमुहूर्त्त से कम हो या वह सूर्योदय को स्पर्श न कर रही हो तो नवरात्रारम्भ पहिले दिन (दर्शयुता प्रतिपदा वाले दिन) करना चाहिए, ऐसी शास्त्रानुमति है। 'धर्मसिन्धुकार' का वचन है–

"स च नवरात्रारम्भः सूर्योदयोत्तरं त्रिमुहूर्त्तव्यापिन्यां प्रतिपदिकार्यः। तदभावे द्विमुहूर्त्तव्यापिन्यामपि, क्वचिन्मुहूर्त्तमात्र–व्यापिन्यामपि उक्तः। सर्वथा दर्शयुक्तप्रतिपदि न कार्यः इति बहुग्रन्थ–सम्मतम्। मुहूर्त–न्यून–व्याप्ती सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुताऽपि ग्राह्या।" – (*धर्मसिन्धु*)।

इस वर्ष (सं.२०६१ वि. में) आश्विन शुक्ल प्रतिपदा शुकवार १५ अक्तू. '०४ ई. को सूर्योदयानन्तर केवल १२ पल तक ही विद्यमान है, अतः ऊपर उद्धृत वाक्यानुसार इस वर्ष शारद नवरात्रारम्भ आश्वि. कृ. ३० गुरुवार (१४ अक्तू.) को ही होगा। यहां प्रतिपदा की आदिम १६ घड़ियों तथा चित्रा और वैधृति का सम्पर्क उपेक्षणीय है, क्योंकि शास्त्रों का परामर्श है, कि– नवरात्रारम्भ में इन का योग यथाशक्य वर्जनीय है, इनके कारण नवरात्रारम्भ के विहितकाल (प्रतिपदा तिथि, अभिजित् मुहूर्त्त तथा मध्याह्न) को नहीं छोड़ा जा सकता। इस बारे में धर्मसिन्धु का ही यह वाक्य है–

"प्रतिपद आद्य–षोडश–नाडी–निषेधः चित्रा–वैधृतियोग– निषेधश्च उत्कालानुरोधेन सति सम्भवे पालनीयः, न तु निषेधानुरोधेन पूर्वाह्ण : प्रारम्भकालः प्रतिपत्तिथिर्वा अतिक्रमणीयः।" (*धर्मसिन्धु*)।

इसके अनुसार इस वर्ष आश्विन कृ. ३० गुरुवार को नवरात्रारम्भ के समय इनका दोष नहीं माना जाएगा।

श्री सत्यनारायण व्रत और पूर्णिमा व्रत में अन्तर

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोष–व्यापिनी पूर्णिमा के दिन श्रीसत्यनारायण भगवान् के प्रीत्यर्थ किया जाता है। जबकि, पूर्णिमा का व्रत उदय–व्यापिनी पूर्णिमा के दिन होता है। उषः कालिक या प्रातःकालिक स्नानानन्तर दान, जप आदि का इस व्रत में माहात्म्य माना गया है।

श्रीसत्यनारायण व्रत की तिथि का शास्त्रीय निर्णय

यह व्रत प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है। कोई भी व्यक्ति स्वेच्छया, इसे अन्य किसी भी दिन, किसी भी अन्य प्रदोष–व्यापिनी तिथि में कर सकता है, ऐसा भी पुराणवाक्य है– (**सत्यनारायणं देवं यजच्चैव निशामुखे**)। लेकिन अधिकतर लोग इस व्रत को परम्परया पूर्णिमा वाले दिन ही करते हैं।

पूर्णिमा की अलग–अलग स्थितियों में इस व्रत का निर्णय इसप्रकार है:–

(१) दोनों दिन पूर्णिमा पूर्णरूप से प्रदोष को व्याप्त करे अथवा वह तिथि दोनों दिन समानरूप से प्रदोष के एकदेश को स्पर्श करे तो यह व्रत दूसरे दिन करना चाहिए।

(२) पूर्णिमा दोनों दिन असमान रूप से प्रदोष को व्याप्त करे तो यह व्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन तिथि प्रदोष को अधिक व्याप्त करती है, बशर्ते, कि– देवपूजा, भोजन आदि के लिए वहां समय पर्याप्त हो। यदि वहां इसके लिए समय पर्याप्त न हो तो दूसरे दिन ही व्रत किया जाए।

(३) यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोष को सर्वथा स्पर्श न करे तब भी व्रत दूसरे दिन ही होगा।

ज्ञातव्य है कि – श्रीसत्यनारायण व्रत की चर्चा **'निर्णयसिन्धु', 'कालमाधव'** आदि किसी भी व्रत–पर्व निर्णायक निबन्धग्रन्थ में नहीं है।

ध्यान दें – जब कभी पूर्णिमा सूर्यास्त के बाद प्रारम्भ होकर केवल पहिले ही दिन यदि वह प्रदोष को व्याप्त कर रही हो तब विगत वर्षों में लगभग सभी पञ्चांगकार परम्परया दूसरे दिन ही (जहां, तिथि प्रदोष को स्पर्श भी नहीं कर रही होती वहां) सत्यनारायण व्रत लिखते रहे हैं। इसी प्रकार दोनों दिन प्रदोष–व्यापिनी पूर्णिमा होने पर वे प्रत्येक स्थिति में दूसरे ही दिन सत्यनारायण व्रत लिखते रहे हैं। लेकिन यह परम्परा धर्मशास्त्र–विरुद्ध है। इसे मान्यता नहीं देनी चाहिए। शास्त्र–विरुद्ध परम्परा को छोड़ हमें शास्त्र–समर्थित दिन में ही यह व्रत करना चाहिए। हमने इस वर्ष से उपरोक्त शास्त्र–प्रतिपादित मतानुसार ही इस व्रत की तिथि का निर्णय करना प्रारम्भ किया है। यहां विद्वानों को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अन्य पञ्चांगकारों को भी इस व्रत की तिथि के निर्णयार्थ शास्त्र का अनुसरण करना चाहिए।

******

(२१ मार्च से ५ अप्रैल तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, उत्तरायण, वसन्त ऋतु।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ — चैत्र शुक्ल पक्ष १

ग्रह दर्शन : सायं मं. बु. शु. पश्चिम में, श. याम्योत्तरवृत्तासन्न और गु. पूर्व में दिखाई देगा ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'हेमलम्बी' नामक संवत्सर है।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. (चैत्र)	अं. (मार्च)	श. (चैत्र)	मु. (मुहं.)	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	०४	१	र.	५४	५६	उ.भा.	४०	२५	शु.	२२	१९	किं.	२४	२५	८	२१	चै.१	२९	मीन			६	२९	१८	३१	११	०६	५०	२१	शक चैत्र प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, चान्द्र, (A)
३०	०७	२	चं.	५७	०५	रेव.	४३	४०	ब्र.	२०	३४	बा.	२५	४७	९	२२	२	३०	मेष	४३	४०	६	२८	१८	३१	११	०७	४९	५४	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, पंचक समाप्त ४३/४०
३०	१४	३	मं.	६०	००	अश्वि.	४८	२७	ऐं.	२०	०१	तै.	२८	४१	१०	२३	३	स १	मेष			६	२६	१८	३२	११	०८	४९	२५	गौरी तृतीया (गणगौर), श्रीमत्स्य जयन्ती, आन्दोलन तृतीया, सफर, (B)
३०	१७	३	बु.	०	४१	भर.	५४	२८	वै.	२०	३२	ग.	०	४१	११	२४	४	२	मेष			६	२५	१८	३२	११	०९	४८	५१	भ. ३२/५९ बाद, शुक्र कृत्ति. में ५९/४४, प्लूटो वक्री ३३/१९
३०	२२	४	गु.	५	३७	कृत्ति.	६०	००	वि.	२२	००	वि.	५	३७	१२	२५	५	३	वृष	११	०८	६	२४	१८	३३	११	१०	४८	१७	भ. ५/३७ तक
३०	२७	५	शु.	११	३३	कृत्ति.	१	३१	प्री	२४	०९	बा.	११	३३	१३	२६	६	४	वृष			६	२३	१८	३४	११	११	४७	४१	बुध अश्वि. मेष में २/९, नाग पंचमी, श्री (लक्ष्मी) पंचमी
३०	३२	६	श.	१८	०४	रोहि.	९	११	आ.	२६	४०	तै.	१८	०४	१४	२७	७	५	मिथुन	४३	०२	६	२१	१८	३४	११	१२	४७	०३	मंगल रोहि. में २३/३६, स्कन्द षष्ठी (देखें पृष्ठ 149)
३०	३७	७	र.	२४	२८	मृग.	१६	५१	सौ.	२९	०३	व.	२४	२८	१५	२८	८	६	मिथुन			६	२०	१८	३५	११	१३	४६	२०	भ. २४/२८ से ५७/२९ तक, शुक्र वृष में १८/४८
३०	४२	८	चं.	३०	१३	आर्द्रा	२३	५६	शो.	३०	५४	ब.	३०	१३	१६	२९	९	७	मिथुन			६	१९	१८	३६	११	१४	४५	३८	श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी
३०	४५	९	मं.	३४	४३	पुन.	२९	५४	अ.	३१	५०	बा.	२	४०	१७	३०	१०	८	कर्क	१३	३३	६	१८	१८	३६	११	१५	४४	५३	सूर्य रेव. में ५५/५५, श्रीरामनवमी (पुन. योग), नवरात्र समाप्त
३०	५२	१०	बु.	३७	४०	पुष्य	३४	२३	सु.	३१	३५	तै.	६	२७	१८	३१	११	९	कर्क			६	१६	१८	३७	११	१६	४४	०५	
३०	५७	११	गु.	३८	४३	आश्ले.	३७	०४	धृ.	२९	५४	व.	८	२७	१९	अ.१	१२	१०	सिंह	३७	०४	६	१५	१८	३८	११	१७	४३	१३	भ. ८/२७ से ३८/४३ तक, व. गुरु पू. फा. १ में ४१/१५, (C)
३१	००	१२	शु.	३७	५४	मघा	३७	५५	शू.	२६	४५	ब.	८	३३	२०	२	१३	११	सिंह			६	१४	१८	३८	११	१८	४२	२२	
३१	०४	१३	श.	३५	२०	पू.फा.	३७	०४	गं.	२२	१२	कौ.	६	५१	२१	३	१४	१२	कन्या	५१	३९	६	१३	१८	३९	११	१९	४१	२७	शनि प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
३१	०७	१४	र.	३१	१५	उ.फा.	३४	४३	वृ.	१६	२३	ग.	३	२९	२२	४	१५	१३	कन्या			६	१२	१८	३९	११	२०	४०	३१	भ. ३१/१५ से ५८/४८ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 150)
३१	१५	१५	चं.	२५	५९	हस्त	३१	१४	ध्रु.	९	३४	ब.	२५	५९	२३	५	१६	१४	तुला	५९	०८	६	१०	१८	४०	११	२१	३९	३३	चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारम्भ

(A) संवत्सर प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैल्याभ्यङ्ग, प्रपादान, (B) मु. प्रारम्भ, (C) कामदा एकादशी व्रत (स.), अप्रैल प्रारम्भ

चैत्र शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ५७/५७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१	०	४	१	२	०	६
१५	२६	११	०४	१६	०१	१२	१९	१९
४२	५१	३८	२४	५६	३७	५०	०४	०४
५५	१५	४५	५३	०४	५८	००	३१	३१
५९	७३५	३८	५१	६	५८	२	३	३
१५	४०	२४	३०	२	४१	३०	१०	१०
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	पुन. ३	रोहि. १	अश्वि. २	पू.फा. १	कृत्ति. २	आर्द्रा २	भर. २	स्वा. ४

कुण्डली सूर्योदये

बु. १ रा. — सू. १२ — ११ — मं. — २ शु. — १० — चं. ३ श. — ९ — ४ — ६ — ८ — गु. ५ — ७ के.

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'हेमलम्बी' नामक संवत्सर है। अतः वर्षान्त तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

लोक भविष्य:— चैत्र शु. प्रतिपदा को रविवार है, सूर्य पर शनि की दृष्टि है। विरोधी देशों में परस्पर संघर्ष की स्थिति बनेगी। मुस्लिमराष्ट्रों में शासक परेशानी में पड़ें, अराजकता रहे। मंहगाई बढ़ेगी। उग्रवादियों द्वारा सीमाप्रान्तों पर अशान्ति बढ़े। इस वर्ष किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन व अपदस्थ होने का समाचार मिले।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, अनाज, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, जौ, चावल, हींग, सूत एवम् वस्त्र में मन्दा हो। सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख रहे। २७ मार्च से सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च एवं शेयर बाजार तेज रहें। २८ मार्च को रुई, कपास में अच्छी मन्दी, सोना-चांदी में घटाबढ़ी एवं अनाज मन्दे रहें। ३० मार्च को तेल-तिलहन एवं अनाजों में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

बु. १ रा. — सू. १२ — ११ — मं. — २ शु. — १० — ३ श. — ९ — ४ — ६ — ८ — गु. ५ — चं. — ७ के.

चैत्र शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ५८/१९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१	०	४	१	२	०	६
२२	२९	१६	०७	१६	०८	१३	१८	१८
३६	४९	०७	५८	१६	१८	०९	४२	४२
५५	३९	१५	१३	४७	१७	३५	१६	१६
५९	८६८	३८	२	५	५५	३	३	३
०	५८	१९	२४	२	३	१२	११	११
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. २	चित्रा २	रोहि. २	अश्वि. ३	पू.फा. १	कृत्ति. ४	आर्द्रा २	भर. २	स्वा. ४

आकाश लक्षण:— मार्च २५, २७, २८, ३० को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम, बंगाल, पूर्वी बिहार में बादल-वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में तापमान में कुछ वृद्धि होने लगेगी।

शकुन विचार:— यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को वर्षा सहित दक्षिण-पूर्व की वायु चले, तो उस वर्ष अनाजों में तेजी बनती है -

" चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः। वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत्।।"

नोट करें—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल- ये सब खाण्ड या शक्कर में इच्छानुसार मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्त विकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ वैशाख कृष्ण पक्ष २

(६ से १९ अप्रैल तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, उत्तरायण, वसन्त – ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन : ८ अप्रै. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । शु. मं. को सायं पश्चिम में और गु. को पूर्व में देखा जा सकेगा । इस समय श. याम्योत्तरवृत्त में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	अप्रैल	चैत्र	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	१९	१	मं.	१९	४६	चित्रा	२६	४९	व्या. ह.	१ ५३	५३ ३९	कौ.	१९	४६	२४	६	१७	१५	तुला			६	०९	१८	४१	११	२२	३८	३०	बुध वक्री ४९/३०
३१	२२	२	बु.	१२	५९	स्वा.	२१	५४	व.	४५	०८	ग.	१२	५९	२५	७	१८	१६	तुला			६	०८	१८	४१	११	२३	३७	२७	भ. ३९/२८ बाद, शुक्र रोहि. में ४९/५४
३१	२७	३	गु.	५	५७	विशा.	१६	४६	सि.	३६	३०	वि.	५	५७	२६	८	१९	१७	वृश्चिक	३	०४	६	०७	१८	४२	११	२४	३६	२३	भ. ५/५७ तक, व. बुध पश्चिम में अस्त १७/२९, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
अवम		४	गु	५८	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय
३१	३२	५	शु.	५२	१५	अनु.	११	४४	व्य.	२८	०४	कौ.	२५	३२	२७	९	२०	१८	वृश्चिक			६	०६	१८	४३	११	२५	३५	१६	शनि आर्द्रा ३ में ८/१
३१	३४	६	श.	४६	०६	ज्ये.	७	०३	व.	२०	००	ग.	१९	०४	२८	१०	२१	१९	धनु	७	०३	६	०५	१८	४३	११	२६	३४	०८	भ. ४६/६ बाद
३१	४२	७	र.	४०	३३	मूल पू.षा.	२ ५९	५८ ३५	प.	१२	२७	वि.	१३	१४	२९	११	२२	२०	धनु			६	०३	१८	४४	११	२७	३२	५९	भ. १३/१४ तक
३१	४७	८	च.	३५	५२	उ.षा.	५७	०४	शि. सि.	५ ५९	३० १५	बा.	८	०७	३०	१२	२३	२१	मकर	१३	५२	६	०२	१८	४५	११	२८	३१	४५	
३१	५०	९	मं.	३२	०७	श्रव.	५५	२९	सा.	५३	४७	तै.	३	५३	वै.१	१३	२४	२२	मकर			६	०१	१८	४५	११	२९	३०	३१	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ३०/६, मु. ३०, पुण्यकाल १४/४ के बाद, (A)
३१	५४	१०	बु.	२९	२२	धनि.	५४	५६	शु.	४९	०८	व.	०	३८	२	१४	२५	२३	कुम्भ	२५	०३	६	००	१८	४६	०	००	२९	१७	भ. ०/३८ से २९/२२ तक, पंचक प्रारम्भ २५/३
३१	५७	११	गु.	२७	४१	शत.	५५	२७	शु.	४५	२२	बा.	२७	४१	३	१५	२६	२४	कुम्भ			५	५९	१८	४६	०	०१	२८	००	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
३२	०२	१२	शु.	२७	०७	पू.भा.	५७	०४	ब्र.	४२	२६	तै.	२७	०७	४	१६	२७	२५	मीन	४१	३२	५	५८	१८	४७	०	०२	२६	४२	**प्रदोष व्रत**
३२	०७	१३	श.	२७	४२	उ.भा.	५९	५०	ऐं.	४०	२८	व.	२७	४२	५	१७	२८	२६	मीन			५	५७	१८	४८	०	०३	२५	२२	भ. २७/४२ से ५८/२७ तक, मंगल मृग. में १७/१७
३२	०९	१४	र.	२९	२७	रेव.	६०	००	वै.	३९	२५	श.	२९	२७	६	१८	२९	२७	मीन			५	५६	१८	४८	०	०४	२४	००	
३२	१५	३०	चं.	३२	२३	रेव.	३	४४	वि.	३९	१६	च.	०	४७	७	१९	३०	२८	मेष	३	४४	५	५५	१८	४९	०	०५	२२	३६	पंचक समाप्त ३/४४, सूर्य सायन वृष में ४३/३७, ग्रीष्म ऋतु , (B)

(A) अर्ध कुम्भ हरिद्वार, (B) प्रारम्भ, सोमवती अमावस

अर्धकुम्भ हरिद्वार
१३ अप्रैल(देखें पृ. 11)

वैशा. कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ५८/३९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	१	०	४	१	२	०	६
२९	१०	२०	०६	१५	१४	१३	१८	१८
२९	२३	३५	०७	४४	३०	३३	२०	२०
१६	१९	१७	०७	५२	२५	५७	०१	०१
५८	८२१	३८	३५	३	५०	३	३	३
४८	३३	१६	४५	५५	२८	५१	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

बु. १ रा. सू. ११
म. २ शु. १२ १०
चं. ९
३ श.
४ ६ ८
गु. ५ ७ के.

लोक भविष्य:— इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं। संक्रान्ति भी मंगलवारी है। किसी तीर्थ स्थान पर जनसम्मर्द के कारण जनहानि के योग हैं। किसी राष्ट्रविशेष में विशिष्ट नेता को भारी समस्याओं का सामना करना पड़े, किंवा अपदस्थता व विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शासनसत्ता में परिवर्तन हो-

" यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासरा:।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।"

उत्तरी एवं दक्षिणी सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि चिन्तनीय स्थिति बनाए।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:- ७ अप्रैल को रुई में झटके के साथ तेजी आकर बाद में मन्दा बने। घी, गुड़ खाण्ड, शक्कर में तेजी एवं तेल-तिलहन, अनाजों में मन्दा रहे।९ अप्रैल को रुई में अचानक मन्दा; पाट-हैसियन एवं शेयरों में भी मन्दा रहे। १३ अप्रैल को यदि अनाजों व दालवाना में मन्दा हो तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा। आर्द्रा के शनि में प्राय:अनाजों, अलसी, सरसों, तिल, तेल व रुई में मन्दा आता है। १७ अप्रैल को तिल, चांदी में तेजी, अन्य वस्तुओं में मन्दा रहे।

आकाश लक्षण:— अप्रैल ७, ९, १३ एवं १७ को भूटान, सिक्किम, आसाम, बंगलादेश एवं हि.प्र. में खण्डवृष्टि के योग बनते हैं।

शकुन विचार:— वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों के व्यापारी स्टॉक तुरन्त निकाल दें, अन्यथा हानि में रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदये

म. २ शु. बु. १२चं.
३ श. सू. १ रा. ११
४ १०
५ गु. ७ के. ९
६ ८

वैशा. कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५८/५७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१	०	४	१	२	०	६
०६	११	२५	०१	१५	२०	१४	१७	१७
२०	२१	०२	२०	२१	०७	०२	५७	५७
१३	०८	५९	०९	०७	०३	४९	४५	४५
५८	७२९	३८	४०	२	४४	४	३	३
३५	१३	१२	३६	४१	३८	२८	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६१ शाक १९२६ वैशाख शुक्ल पक्ष ३ तारीखें चन्द्रराशि चण्डीगढ़ उदय–कालिक (२० अप्रैल से ४ मई तक सन् २००४ ई.) उत्तरगोल, उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु।

शकुन विचार:— वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों के व्यापारी स्टॉक तुरन्त निकाल दें, अन्यथा हानि में रहेंगे।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(२० अप्रैल से ४ मई तक सन् २००४ ई.) उत्तरगोल, उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शनः २५ अप्रै. से बु. प्रातः पूर्व में दिखने लगेगा । सायं शु. पूर्व में और श. मं. उससे ऊपर दीखेंगे । इसी समय गु. पूर्व में काफी ऊपर चमकता नजर आएगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. सफर	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	२०	१	मं.	३६	२६	अश्वि.	८	४६	प्री.	३९	५९	किं.	४	१७	८	२०	३१	२९	मेष			५	५४	१८	५०	०	०६	२१	११	
३२	२२	२	बु.	४१	२९	भर.	१४	४९	आ.	४१	२८	बा.	८	५२	९	२१	वै. १	३०	वृष	३१	२८	५	५३	१८	५०	०	०७	१९	४३	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, **शक वैशाख प्रारम्भ**, श्रीशिवाजी जयन्ती
३२	२७	३	गु.	४७	२३	कृत्ति.	२१	४४	सौ.	४३	३३	तै.	१४	२१	१०	२२	२	र. १	वृष			५	५२	१८	५१	०	०८	१८	१३	व. बुध रेव. ४ मीन में १/१२, **श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया**, (A)
३२	३२	४	शु.	५३	४४	रोहि.	२९	१४	शो.	४६	०४	व.	२०	३०	११	२३	३	२	वृष			५	५१	१८	५२	०	०९	१६	४२	भ. २०/३० से ५३/४४ तक
३२	३४	५	श.	६०	००	मृग.	३६	५८	अ.	४८	३८	ब.	२६	५६	१२	२४	४	३	मिथुन	३	०८	५	५०	१८	५२	०	१०	१५	०८	शुक्र मृग. में २९/१४, आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती
३२	४०	५	र.	०	०८	आर्द्रा	४४	२८	सु.	५०	५८	बा.	०	०८	१३	२५	५	४	मिथुन			५	४९	१८	५३	०	११	१३	३२	व. बुध पूर्व में उदित ८/३२, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ. भा.)
३२	४५	६	च.	६	०७	पुन.	५१	१६	धृ.	५२	४०	तै.	६	०७	१४	२६	६	५	कर्क	३४	३९	५	४८	१८	५४	०	१२	११	५५	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (पू. भा.), **श्रीगंगा जन्म** (देखें पृष्ठ **149**)
३२	४७	७	मं.	११	१०	पुष्य	५६	५०	शू.	५३	२६	व.	११	१०	१५	२७	७	६	कर्क			५	४७	१८	५४	०	१३	१०	१५	भ. ११/१० से ४३/११ तक, सूर्य भर. में १०/३, मंगल मिथुन में ४६/७
३२	५२	८	बु.	१४	५०	आश्ले.	६०	००	ग.	५२	५६	ब.	१४	५०	१६	२८	८	७	कर्क			५	४६	१८	५५	०	१४	०८	३३	**श्रीजानकी जयन्ती** (देखें पृष्ठ **149**)
३२	५७	९	गु.	१६	४६	आश्ले	०	४९	वृ.	५१	००	कौ.	१६	४६	१७	२९	९	८	सिंह	०	४९	५	४५	१८	५६	०	१५	०६	४९	
३२	५९	१०	शु.	१६	४७	मघा	२	५९	ध्रु.	४७	३१	ग.	१६	४७	१८	३०	१०	९	सिंह			५	४४	१८	५६	०	१६	०५	०३	भ. ४६/५ बाद, बुध मार्गी ३२/७
३३	०५	११	श.	१४	५१	पू. फा.	३	१३	व्या.	४२	२८	वि.	१४	५१	१९	म. १	११	१०	कन्या	१७	५८	५	४३	१८	५७	०	१७	०३	१४	भ. १४/५१ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत** (स.), **मई प्रारम्भ**
३३	१०	१२	र.	११	०३	उ. फा.	१	३५	ह.	३६	०२	बा.	११	०३	२०	२	१२	११	कन्या			५	४२	१८	५८	०	१८	०१	२४	**प्रदोष व्रत**
						हस्त	५८	१७																						
३३	१२	१३	च.	५	३७	चित्रा	५३	३६	व.	२८	२२	तै.	५	३७	२१	३	१३	१२	तुला	२६	०५	५	४१	१८	५८	०	१८	५९	३२	भ. ५८/५० बाद, श्रीनृसिंह जयन्ती, **ग्रहण शूल**
अवम		१४	च.	५८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय
३३	१७	१५	मं.	५१	०३	स्वा.	४७	५३	सि.	१९	४२	वि.	२५	०१	२२	४	१४	१३	तुला			५	४०	१८	५९	०	१९	५७	३८	भ. २५/१ तक, श्रीकूर्म जयन्ती, **श्रीबुद्ध जयन्ती, कुम्भ (सिंहस्थ)**, (B)

कुम्भ महापर्व (उज्जैन)
४ मई (देखें पृ. 11)

खग्रास चन्द्रग्रहण
४ मई (देखें पृ.14)

(A) रवी-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ, (B) **महापर्व उज्जैन, खग्रास चन्द्र ग्रहण, वैशाखी पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त**, श्रीसत्यनारायण व्रत

वैशा. शुक्ल ८ बुध, इष्ट ५९/२०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	११	४	१	२	०	६
१५	२९	००	२७	१५	२६	१४	१७	१७
०६	४२	४६	१७	०३	१०	४६	२९	२९
१३	०७	३४	५५	३०	१९	०१	०८	०८
५८	७७१	३८	५	१	३४	५	३	३
१६	५१	७	५	२	२१	११	११	११
—	—	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. १	आश्ले. ४	मृग. ३	रेव. ४	पू. फा. १	मृग. १	आर्द्रा ३	भर. २	स्वा. ४

कुण्डली सूर्योदये

२ शु.
१२ बु.
मं. ३ श.
सू. १ रा.
११
४
१०
चं.
५ गु.
७ के.
९
६
८

लोक भविष्य:— इस पक्ष में बुध वक्री स्थिति में मीनराशि में प्रवेश करेगा, मीनस्थ नीच बुध शनि की विशेष-दृष्टि में आ जाएगा। पक्षमध्य में मंगल मिथुनराशि में आकर शनि के साथ राशि-सम्बन्ध बना लेगा। ग्रहस्थिति दो देशों के मध्य तनावपूर्ण स्थिति का संकेत देती है। सत्तारूढ़ दल के लिए अग्निपरीक्षा का समय शुरु हो रहा है। काश्मीर-दिल्ली एवं भारत के महानगरों में एवं सीमाप्रान्तों पर मुस्लिम-उग्र-संगठनों द्वारा विस्फोट किंवा यान-दुर्घटनाओं में जनधनहानि का संकेत मिलता है। मिथुन का शनि कहीं दुर्भिक्ष एवं पश्चिमस्थ विरोधी राष्ट्र से युद्ध का वातावरण बनाता है;-

" मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में सरसों, गुड़, खण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल एवं दालवाना में तेजी रहे। २२ अप्रैल के लगभग केसर, कुसुम्भ, मजीठ, लालचंदन एवं लालमिर्च में तेजी बनेगी; तिल, तेल, सरसों, घी में मन्दा बने। २३ से २७ अप्रैल तक अनाज, दालवाना, तेल, घी, रुई, गुड़, खण्ड, मिर्च में तेजी ही रहे। ३० अप्रैल से पक्षान्त तक बाजारों में अस्थिरता के साथ मन्दा बने।

आकाश लक्षण:— अप्रैल २२, २३, २६, २७, ३० एवं २ मई के लगभग राजस्थान, उ. प्र., हि. प्र., आसाम, महाराष्ट्र विशेषतः मुम्बई में बादलचाल व वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:— वैशाख शुक्ल तृतीया किंवा पंचमी के दिन यदि दिनभर बादल रहें एवं मेघ गरजें तो भाद्रपद में अनाज मंहगे होंगे, भाद्रपद में ही सटॉक निकालें; लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

२ शु.
१२ बु.
मं. ३ श.
सू. १ रा.
११
४
१०
चं.
५
७ के.
९
गु. ६
८

वैशा. शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ५९/३४,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	२	११	४	१	२	०	६
२०	२२	०४	२७	१५	२९	१५	१७	१७
५५	५५	३५	५९	००	१४	१८	१०	१०
२२	०९	०८	२२	०२	४१	१४	०४	०४
५८	८९७	३८	२३	०	२५	५	३	३
५	३२	४	६	४	१६	३७	११	११
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	विशा. १	मृग. ४	रेव. ४	पू. फा. १	मृग. २	आर्द्रा ३	भर. २	स्वा. ४

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ — ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(५ से १९ मई तक सन् २००४ ई.) उत्तरगोल, उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन: सायं शु. श. मं. पश्चिम कपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। प्रातः बु. को पूर्व में देखें।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र. (वैशाख)	अं. (मई)	श. (वैशाख)	मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	२२	१	बु.	४२	३६	विशा.	४१	२९	व्य.	१०	२०	बा.	१६	५३	२३	५	१५	१४	वृश्चिक	२८	०७	५	३९	१९	००	०	२०	५५	४२	गुरु मार्गी ८/३०, ग्रहण शूल
३३	२२	२	गु.	३३	५५	अनु.	३४	४९	व. प.	० ५०	३२ ४१	तै.	८	१६	२४	६	१६	१५	वृश्चिक			५	३९	१९	००	०	२१	५३	४५	भ. ५९/३८ बाद, शुक्र मिथुन में ५०/३०, ग्रहण शूल
३३	२७	३	शु.	२५	२४	ज्ये.	२८	२०	शि.	४१	००	वि.	२५	२४	२५	७	१७	१६	धनु	२८	२०	५	३८	१९	०१	०	२२	५१	४९	भ. २५/२४ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, ग्रहण शूल
३३	३२	४	श.	१७	२३	मूल	२२	२२	सि.	३१	५२	बा.	१७	२३	२६	८	१८	१७	धनु'			५	३७	१९	०२	०	२३	४९	४८	मंगल आर्द्रा में १६/३९
३३	३४	५	र.	१०	१२	पू. षा.	१७	१७	सा.	२३	२९	तै.	१०	१२	२७	९	१९	१८	मकर	३१	१०	५	३६	१९	०२	०	२४	४७	४६	बुध अश्वि. मेष में ४/२९
३३	३७	६	च.	४	०५	उ. षा.	१३	१७	शु.	१६	०२	व.	४	०५	२८	१०	२०	१९	मकर			५	३६	१९	०३	०	२५	४५	४३	भ. ४/५ से ३१/३० तक, सूर्य कृत्ति. में ५६/१३
अवम		७	च.	५९	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय
३३	४२	८	मं.	५६	०५	श्रव.	१०	४३	शु.	९	४६	बा.	२७	३०	२९	११	२१	२०	कुम्भ	३९	५७	५	३५	१९	०४	०	२६	४३	४१	पंचक प्रारम्भ ३९/५७
३३	४५	९	बु.	५४	२४	धनि.	९	३८	ब्र.	४	४२	तै.	२५	०१	३०	१२	२२	२१	कुम्भ			५	३४	१९	०४	०	२७	४१	३५	
३३	५०	१०	गु.	५४	१३	शत.	१०	०६	ऐं. वै.	० ५८	५५ १९	व.	२४	०७	३१	१३	२३	२२	मीन	५६	२५	५	३३	१९	०५	०	२८	३९	२८	भ. २४/७ से ५४/१३ तक
३३	५२	११	शु.	५५	३४	पू. भा.	१२	०३	वि.	५६	५४	ब.	२४	४२	ज्ये. १	१४	२४	२३	मीन			५	३३	१९	०६	०	२९	३७	२०	सं. सूर्य वृष में २३/२९, मु. ४५, पुण्यकाल ७/२७ के बाद, राहु, (A)
३३	५५	१२	श.	५८	११	उ. भा.	१५	२५	प्री.	५६	२९	कौ.	२६	४३	२	१५	२५	२४	मीन			५	३२	१९	०६	१	००	३५	१३	
३३	५७	१३	र.	६०	००	रेव.	२०	००	आ.	५७	००	ग.	२९	५६	३	१६	२६	२५	मेष	२०	००	५	३२	१९	०७	१	०१	३३	०२	पंचक समाप्त २०/०, प्रदोष व्रत
३४	०२	१३	च.	१	५९	अश्वि.	२५	३९	सौ.	५८	१३	व.	१	५९	४	१७	२७	२६	मेष			५	३१	१९	०८	१	०२	३०	५२	भ. १/५९ से ३४/१४ तक, शुक्र वक्री ५६/४, नेपच्यून वक्री २७/२७
३४	०४	१४	म.	६	४२	भर.	३२	०७	शो.	६०	००	श.	६	४२	५	१८	२८	२७	वृष	४८	५०	५	३०	१९	०८	१	०३	२८	३९	शनि आर्द्रा ४ में ३५/१२
३४	०७	३०	बु.	१२	०९	कृत्ति.	३९	१३	शो.	०	०१	ना.	१२	०९	६	१९	२९	२८	वृष			५	३०	१९	०९	१	०४	२६	२६	भावुका अमावस, वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष)

(A) भर. १ में २७/११, केतु स्वा. ३ मे २७/१०, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.)

ज्येष्ठ कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५९/४७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	२	०	४	२	२	०	६
२७	०४	०९	०२	१५	०१	१५	१६	१६
४१	२८	०१	०६	०४	३३	५८	४७	४७
२६	५०	२२	३४	१८	३५	५६	४८	४८
५७	७१७	३८	५०	१	१२	६	३	३
५६	४१	०	१७	२०	४	४	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	[illegible] ४	आर्द्रा १	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ३	आर्द्रा ३	[illegible] २	[illegible] ४

कुण्डली सूर्योदये

१ — बु., सू., रा.
२
३ — शु., मं., श.
४
५ — गु.
६
७ — के.
८
९
१० — चं.
११
१२

लोक भविष्य:— पक्षारम्भ में पू.फा. नक्षत्र का गुरु मार्गी हो रहा है। उच्च सूर्य पर गुरु की विशेष दृष्टि है। शु. मं. एवं शनि तीनों एक राशि में हैं। देश में सुभिक्ष रहे, नई योजना एवं शासनपद्धति से जनमानस आश्वस्त रहे, लेकिन कहीं विस्फोटादि किंवा यानदुर्घटना आदि से अकस्मात् जनधनहानि के योग हैं। इस चान्द्रमास में पांच बुधवार सुभिक्ष एवं सुख-समृद्धिप्रद हैं। पांच गुरुवार भी होने से पश्चिमी देशों एवं प्रान्तों में युद्ध एवं राजनीतिक हत्याकाण्ड हो,-

"यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतः।
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते॥"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ से ८ मई तक रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, अनाज, दालवाना, ग्वार, सोना, चांदी एवं घी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा रहे। इस समय चांदी में विशेष मन्दा आने का योग है। १० मई से १८ मई तक घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, सरसों, तिल, एरण्ड आदि तिलहन, तेल, सुपारी, नारियल में जोरदार तेजी के रिऐक्शन आएंगे। १८ मई के लगभग यदि अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें तीन मास के अन्दर अच्छा लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदये

१ — बु., रा.
२ — सू., चं.
३ — मं., शु., श.
४
५ — गु.
६
७ — के.
८
९
१०
११
१२

ज्येष्ठ कृष्ण ३० बुध, इष्ट ०/०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	२	०	४	२	२	०	६
०४	०२	१३	०९	१५	०२	१६	१६	१६
२६	१३	२७	०४	१७	१२	४२	२५	२५
२७	१२	१५	५७	२२	०२	४०	३३	३३
५७	७१३	३७	७१	२	३	६	३	३
४६	३०	५७	३२	३४	४३	२८	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण:— मई ६, ८, १०, १४ एवं १८ को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि. प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम, आसाम में वर्षा के योग हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में गर्मी का प्रकोप बढ़े।

शकुन विचार:— यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण [illegible]

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२० मई से ३ जून तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, उत्तरायण , ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन: सायं शु. पूर्व में और उससे ऊपर मं. श. परस्पर आसन्न दिखाई देंगे । इसी समय गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा । प्रात: बु. पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. (ज्येष्ठ)	अं. (मई)	श. (वैशाख)	मु. (र. उ.)
३४	१२	१	गु.	१८	१३	रोहि.	४६	४८	अ.	२	२१	ब.	१८	१३	७	२०	३०	२९
३४	१२	२	शु.	२४	२९	मृग.	५४	३१	सु.	४	५१	कौ.	२४	२९	८	२१	३१	र. १
३४	१७	३	श.	३०	४८	आर्द्रा	६०	००	धृ.	७	२८	ग.	३०	४८	९	२२	ज्ये. १	२
३४	१७	४	र.	३६	४५	आर्द्रा	२	०४	शू.	९	५५	व.	३	५०	१०	२३	२	३
३४	२२	५	चं.	४२	०५	पुन.	९	१२	ग.	१२	००	ब.	९	३३	११	२४	३	४
३४	२५	६	मं.	४६	२१	पुष्य	१५	२९	वृ.	१३	२४	कौ.	१४	२२	१२	२५	४	५
३४	२५	७	बु.	४९	१५	आश्ले.	२०	३६	ध्रु.	१३	५२	ग.	१७	५८	१३	२६	५	६
३४	३०	८	गु.	५०	२७	मघा	२४	१४	व्या.	१३	१२	वि.	२०	०४	१४	२७	६	७
३४	३०	९	शु.	४९	४७	पू. फा.	२६	०५	ह.	११	०६	बा.	२०	२१	१५	२८	७	८
३४	३२	१०	श.	४७	१३	उ. फा.	२६	०३	व.	७	३०	तै.	१८	४३	१६	२९	८	९
३४	३७	११	र.	४२	४६	हस्त	२४	१०	सि. व्य.	२ ५५	२५ ४७	व.	१५	१३	१७	३०	९	१०
३४	३७	१२	चं.	३६	३७	चित्रा	२०	३०	व.	४७	५०	ब.	९	५३	१८	३१	१०	११
३४	४०	१३	मं.	२९	०३	स्वा.	१५	१९	प.	३८	४५	कौ.	२	५९	१९	जू. १	११	१२
३४	४०	१४	बु.	२०	२४	विशा.	८	५७	शि.	२८	४९	व.	२०	२४	२०	२	१२	१३
३४	४५	१५	गु.	११	०६	अनु. ज्ये.	१ ५४	५१ २०	सि.	१८	२४	ब.	११	०६	२१	३	१३	१४

तिथि	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
१	वृष			५	२९	१९	१०	१	०५	२४	१२	चन्द्र दर्शन, मु. ४५, सूर्य सायन मिथुन में ४२/३४
२	मिथुन	२०	३८	५	२९	१९	१०	१	०६	२१	५३	रम्भा तृतीया, रबी–उस्सानी मु. प्रारम्भ
३	मिथुन			५	२८	१९	११	१	०७	१९	३६	बुध भर. में २४/५०, **शक ज्येष्ठ प्रारम्भ**, श्रीप्रताप जयन्ती
४	कर्क	५२	३०	५	२८	१९	११	१	०८	१७	१६	भ. ३/५० से ३६/४५ तक
५	कर्क			५	२७	१९	१२	१	०९	१४	५६	सूर्य रोहि. में ४६/५५
६	कर्क			५	२७	१९	१३	१	१०	१२	३३	
७	सिंह	२०	३६	५	२७	१९	१३	१	११	१०	१०	भ. ४९/१५ बाद
८	सिंह			५	२६	१९	१४	१	१२	०७	४६	भ. २०/४ तक
९	कन्या	४१	१५	५	२६	१९	१४	१	१३	०५	१९	व. शुक्र वृष में ३०/३
१०	कन्या			५	२६	१९	१५	१	१४	०२	५२	मंगल पुन. में २१/३४, **श्रीगंगा दशहरा**
११	तुला	५२	३३	५	२५	१९	१६	१	१५	००	२४	भ. १५/१३ से ४२/४६ तक, **निर्जला एकादशी व्रत (स.)**
१२	तुला			५	२५	१९	१६	१	१५	५७	५२	बुध कृत्ति. में १६/३३, चम्पक द्वादशी, **सोम प्रदोष व्रत**
१३	वृश्चिक	५५	३८	५	२५	१९	१७	१	१६	५५	२१	**जून प्रारम्भ, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ११ / ४०**
१४	वृश्चिक			५	२५	१९	१७	१	१७	५२	४९	भ. २०/२४ से ४५/४७ तक, बुध वृष में १२/३४, वट सावित्री , (A)
१५	धनु	५४	२०	५	२४	१९	१८	१	१८	५०	१६	

(A) व्रत (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल ८ गुरु, इष्ट ०/९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	०	४	२	२	०	६
१२	०८	१८	१९	१५	००	१७	१६	१६
०७	१५	३०	५०	४२	३४	३५	००	००
५७	१६	४३	११	४३	५१	५०	०७	०७
५७	७६७	३७	९१	३	२२	६	३	३
३४	६	५४	५७	५५	४४	५२	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. १	मघा ३	आर्द्रा ४	पुन. ३	पू. फा. १	मृग. ३	आर्द्रा ४	पुन. १	स्वा. ३

कुण्डली सूर्योदये

म. ३ श. | शु. | १ बु. रा. | ४ | सू. २ | १२ | चं. ५ गु. | ११ | ६ | ८ | १० | ७ के. | ९

लोक भविष्य:— शुक्र वक्री है एवं पक्षमध्य तक शनि-मंगल के साथ एकराशि में है। ज्येष्ठ-शुक्ल-दशमी के दिन शनिवार होने से आगे वर्षा की कुछ प्रान्तों में भारी कमी अनुभव होगी, पशुधन में बीमारी से हानि एवं प्राकृतिक-आपदा किंवा दुर्घटना-विशेष में जन-धनहानि होने से जनता में कहीं शोकमय वातावरण बने; -

> ''ज्येष्ठे शुक्ले दशम्यां चशनिवारो भवेद्यदि।
> वृष्टिरोधो गवां नाशो महाशोकाकुला: प्रजा:।।''

सीमाप्रान्तों पर पाकिस्तान की गतिविधि पर विशेष ध्यान देना चाहिए, स्थिति चिन्ताजनक रहेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— २० से २४ मई तक रुई, सूत, रेशमी व ऊनी वस्त्र, सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, सण, सुपारी, मिर्च, घी, तेल, चावल, गेहूं आदि अनाज तेज रहें। २४, २८ मई को रुई, कपास एवं चांदी में मन्दा बने। २६ मई से पक्षान्त तक रुई, चांदी, अफीम, अनाज, एवं दालों में घटाबढ़ी के बाद मन्दा एवं २ जून को अनाज, कपास, तेल, तिलहन में तेजी बने।

आकाश लक्षण:— मई २०, २२, २४, २८, २६, ३१ एवं २ जून को मुम्बई, भूटान, उड़ीसा, आसाम, बिहार में वर्षा के योग हैं। जून के प्रथम सप्ताह में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा।

शकुन विचार:— ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को यदि बादल गरजें, दक्षिण की हवा चले, तो तिलहन के स्टॉक से कार्तिक में लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

म. ३ श. | १ रा. | ४ | सू. २ बु. शु. | १२ | ५ गु. | ११ | चं. | ६ | ८ | १० | ७ के. | ९

ज्येष्ठ शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ०/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	२	१	४	१	२	०	६
१८	१६	२२	०१	१६	२७	१८	१५	१५
५०	१६	५५	२४	१३	१४	२४	३७	३७
३१	२०	५१	४८	३०	४३	४४	५१	५१
५७	९१४	३७	१०८	५	३४	७	३	३
२६	२७	५१	५१	१	५८	९	१०	१०
—	—	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ३	अनु. ४	मृग. २	कृत्ति. १	पू. फा. २	मृग. १	आर्द्रा ४	पुन. २	स्वा. ३

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(४ से १७ जून तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन: ७ जून को बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा । शु. ४ जून को पश्चिम में लुप्त होकर १३ जून से प्रातः पूर्व में दिखाई देने लगेगा । सायं मं. श. पश्चिम कपाल में और उनसे काफी ऊपर गु. दिखाई देगा । ८ जून को शु. द्वारा सूर्यातिक्रमण एक भव्य दृश्य होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४५	१	शु.	१	२९	मूल	४६	५६	सा. शु.	७ ५७	४७ २०	कौ.	१	२९	२२	४	१४	१५	धनु			५	२४	१९	१८	१	१९	४७	३९	शुक्र पश्चिम में अस्त ११ / ४२
अवम		२	शु.	५२	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय
३४	४७	३	श.	४३	११	पू. षा.	४०	०४	शु.	४७	२५	व.	१७	३१	२३	५	१५	१६	मकर	५३	३०	५	२४	१९	१९	१	२०	४५	०४	भ. १७/३१ से ४३/११ तक
३४	४७	४	र.	३५	१९	उ. षा.	३४	१३	ब्र.	३८	२३	ब.	९	०६	२४	६	१६	१७	मकर			५	२४	१९	१९	१	२१	४२	२८	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३४	५०	५	च.	२८	५०	श्रव.	२९	४३	ऐ.	३०	३०	कौ.	१	५३	२५	७	१७	१८	कुम्भ	५८	०६	५	२४	१९	२०	१	२२	३९	५२	पंचक प्रारम्भ ५८/६, सूर्य मृग. में ४१/५७, बुध रोहि. में, (A)
३४	५०	६	मं.	२४	०२	धनि.	२६	५५	वै.	२४	००	व.	२४	०२	२६	८	१८	१९	कुम्भ			५	२४	१९	२०	१	२३	३७	१५	भ. २४/२ से ५२/१९ तक, **शुक्र का सूर्यातिक्रमण**
३४	५२	७	बु.	२१	०६	शत.	२६	००	वि.	१९	०२	ब.	२१	०६	२७	९	१९	२०	कुम्भ			५	२४	१९	२१	१	२४	३४	३७	व. शुक्र रोहि. ४ में २३/१०
३४	५२	८	गु.	२०	०९	पू. भा.	२७	०१	प्री.	१५	३९	कौ.	२०	०९	२८	१०	२०	२१	मीन	११	३५	५	२४	१९	२१	१	२५	३१	५९	यूरेनस वक्री ३८/१९
३४	५२	९	शु.	२१	०६	उ. भा.	२९	५३	आ.	१३	४८	ग.	२१	०६	२९	११	२१	२२	मीन			५	२४	१९	२१	१	२६	२९	२०	भ. ५२/१४ बाद
३४	५५	१०	श.	२३	४७	रेव.	३४	२५	सौ.	१३	१९	वि.	२३	४७	३०	१२	२२	२३	मेष	३४	२५	५	२४	१९	२२	१	२७	२६	४१	भ. २३/४७ तक, पंचक समाप्त ३४/२५
३४	५५	११	र.	२७	५३	अश्वि.	४०	१५	शो.	१४	००	बा.	२७	५३	३१	१३	२३	२४	मेष			५	२४	१९	२२	१	२८	२४	०२	योगिनी एकादशी व्रत (स.), **शुक्र पूर्व में उदित ७ / ४५**
३४	५५	१२	च.	३३	०३	भर.	४७	०४	अ.	१५	३३	कौ.	०	२१	आ. १	१४	२४	२५	मेष			५	२४	१९	२२	१	२९	२१	२२	सं. सूर्य मिथुन में ४०/२६, मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद, (B)
३४	५७	१३	मं.	३८	५५	कृत्ति.	५४	२७	सु.	१७	४२	ग.	५	५५	२	१५	२५	२६	वृष	३	५२	५	२४	१९	२३	२	००	१८	४१	भ. ३८/५५ बाद, शनि पुन. १ में ५९/२१
३४	५७	१४	बु.	४५	०७	रोहि.	६०	००	धृ.	२०	१३	वि.	१२	००	३	१६	२६	२७	वृष			५	२४	१९	२३	२	०१	१६	००	भ. १२/० तक, **शुक्र बाल्य समाप्त ७ / ४५**
३४	५७	३०	गु.	५१	२४	रोहि.	२	०७	शू.	२२	५१	च.	१८	१६	४	१७	२७	२८	मिथुन	३५	५८	५	२४	१९	२३	२	०२	१३	१८	बुध मिथुन में ३/३८

शुक्रास्त ४ जून

शुक्र उदित १३ जून

शुक्र का सूर्यातिक्रमण ८ जून (देखें पृष्ठ 16)

(A) ३३/५४, बुध पूर्व में अस्त ४६/०, गुरु पू. फा. २ में ५९/२५, (B) मंगल कर्क में १३/६, बुध मृग. में ०/२, **सोम प्रदोष व्रत** (देखें पृष्ठ 149)

आषा. कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ०/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	१	४	१	२	०	६
२५	२७	२७	१४	१६	२२	१९	१५	१५
३२	३२	२०	५४	५१	५६	१५	१५	१५
१७	४६	४०	२९	४५	४९	२७	३६	३६
५७	७७३	३७	१२४	६	३७	७	३	३
२१	२६	४९	५	३	५	२३	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मृग. १	पू. भा. ३	पुन. ३	रोहि. २	पू. फा. २	रोहि. ४	आर्द्रा ४	भर. २	स्वा. ३

कुण्डली सूर्योदये

मं. ३ श. | १ रा. | ४ | सू. २ बु. शु. | १२ | ५ गु. | ११ चं. | ६ | ८ | १० | ७ के. | ९

लोक भविष्य:— पक्षारम्भ में ही शुक्रवार को वक्री पोजीशन में शुक्रास्त हो रहा है-

"आषाढ़े जलशोषः स्यात्"।

वर्षा की कमी अनुभव होगी। शुक्र का उदय एवं अस्त एक ही पक्ष में होने से पशुओं को पीड़ा, धान्यादि की उत्पत्ति भी कम होने से किसान चिन्तित रहें। पक्षमध्य के बाद सूर्य मिथुन राशि में आकर शनि के साथ राशि-सम्बन्ध बनाता है एवं मंगल नीचराशि (कर्क) में दाखल होकर जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी से जनता में अशान्ति करे। इस पक्ष में शुक्र सूर्य का अतिक्रमण करेगा, कहीं मन्त्रिमंडल में अप्रत्याशित परिवर्त्तन एवं राजनीतिज्ञों में भारी मतभेद उभर कर सामने आएंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— ५ जून को सोना, चांदी, गुड़, सूत, घी, तेल, तिलहन एवं दालों में मन्दा आकर ७ जून को अचानक तेजी बनेगी। वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। हरड़, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दा रहे। रुई में तेजी के बाद मन्दा रहे। ६ से १३ जून तक सोना, चांदी, गुड़, सुपारी, नारियल, लौंग, ऊन, उड़द, तिल व सरसों में मन्दा रहे। १४ जून को सभी बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी। पक्षान्त में रुई, सोना, चांदी मन्दे, तारामीरा में घटाबढ़ी चले।

आकाश लक्षण:— जून ५, ७, ६, १४, १५, १७, को भूटान, शिलांग, काठमाण्डु में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा एवं उ. प्र., म. प्र., आसाम, पंजाब, हरियाणा एवं हि. प्र. में कहीं आंधी से हानि हो एवं गर्म हवाएं चलें; गर्मी का प्रकोप बढ़े।

शकुन विचार:— यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके, वर्षा भी हो तो आगे अनाज में तेजी से लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

मं. ४ | सू. ३ श. | बु. २ शु. चं. | ५ गु. | १ रा. | ६ | १२ | ७ के. | ९ | ११ | ८ | १०

आषा. कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ०/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	३	१	४	१	२	०	६
०२	२२	०१	२९	१७	१८	२०	१४	१४
१३	५८	४५	५२	३६	५८	०७	५३	५३
३६	१९	२१	४०	५९	२२	३९	२०	२०
५७	७०९	३७	१३१	७	२८	७	३	३
१८	१५	४९	४६	१	१५	३४	१०	१०
—	—	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] ३	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] ३

(१८ जून से २ जुलाई तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल उत्तर-दक्षिणायन, ग्रीष्म – वर्षा ऋतु।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

ग्रह दर्शनः २० जून को श. पश्चिम में लुप्त होगा । ३० जून से बु. सायं पश्चिम में दिखने लगेगा । सायं पश्चिम में मं. और उससे काफी ऊपर गु. दिखाई पड़ेगा । शु. प्रातः पूर्व में चमक रहा होगा ।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. र.उ.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३५	००	१	शु.	५७	३०	मृग.	९	४७	गं.	२५	२५	किं.	२४	२९	५	१८	२८	२९	मिथुन			५	२४	१९	२४	२	०३	१०	३६	
३५	००	२	श.	६०	००	आर्द्रा	१७	१४	वृ.	२७	४७	बा.	३०	२५	६	१९	२९	३०	मिथुन			५	२४	१९	२४	२	०४	०७	५४	चन्द्र दर्शन, मु. ४५, मंगल पुष्य में ३०/३०, **रथयात्रा (पुरी)**
३४	५७	२	र.	३	१०	पुन.	२४	१२	ध्रु.	२९	४४	कौ.	३	१०	७	२०	३०	ज.१	कर्क	७	३०	५	२५	१९	२४	२	०५	०५	११	बुध आर्द्रा मे ५/४७, शनि अस्त ३०/२२, जमद-उल-अव्वल, (A)
३४	५७	३	च.	८	१७	पुष्य	३०	३४	व्या.	३१	१२	ग.	८	१७	८	२१	३१	२	कर्क			५	२५	१९	२४	२	०६	०२	२९	भ. ४०/३४ बाद, सूर्य आर्द्रा मे ३९/१७, सूर्य सायन कर्क में, (B)
३५	००	४	म.	१२	३६	आश्ले.	३६	०६	ह.	३२	००	वि.	१२	३६	९	२२	आ.१	३	सिंह	३६	०६	५	२५	१९	२५	२	०६	५९	४५	भ. १२/३६ तक, **शक आषाढ़ प्रारम्भ**
३५	००	५	बु.	१५	५३	मघा	४०	३३	व.	३१	५७	बा.	१५	५३	१०	२३	२	४	सिंह			५	२५	१९	२५	२	०७	५७	००	प्लूटो ज्ये. ३ में ४४/१०, कुमारषष्ठी
३४	५७	६	गु.	१७	५२	पू. फा.	४३	३७	सि.	३०	४९	तै.	१७	५२	११	२४	३	५	कन्या	५९	१०	५	२६	१९	२५	२	०८	५४	१५	विवस्वत् सप्तमी
३४	५७	७	शु.	१८	२३	उ. फा.	४५	१२	व्य.	२८	३१	व.	१८	२३	१२	२५	४	६	कन्या			५	२६	१९	२५	२	०९	५१	३१	भ. १८/२३ से ४८/२ तक
३४	५७	८	श.	१७	१५	हस्त	४५	०५	व.	२४	५३	ब.	१७	१५	१३	२६	५	७	कन्या			५	२६	१९	२५	२	१०	४८	४४	बुध पुन. मे १९/४०
३४	५७	९	र.	१४	२१	चित्रा	४३	१४	प.	१९	५०	कौ.	१४	२१	१४	२७	६	८	तुला	१४	२३	५	२६	१९	२५	२	११	४५	५७	
३४	५४	१०	च.	९	४१	स्वा.	३९	४०	शि.	१३	२०	ग.	९	४१	१५	२८	७	९	तुला			५	२७	१९	२५	२	१२	४३	०९	भ. ३६/४६ बाद, हरिशयनी एकादशी व्रत (स्मा.)
३४	५४	११	म.	३	२७	विशा.	३४	३८	सि. सा.	५ ५६	३३ ३६	वि.	३	२७	१६	२९	८	१०	वृश्चिक	२१	०१	५	२७	१९	२५	२	१३	४०	२३	भ. ३/२७ तक, शुक्र मार्गी ५८/२२, हरिशयनी एकादशी व्रत (वै.), (C)
अवम		१२	म.	५५	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय
३४	५२	१३	बु.	४७	०५	अनु.	२८	२०	शु.	४६	४६	कौ.	२१	३३	१७	३०	९	११	वृश्चिक			५	२८	१९	२५	२	१४	३७	३४	बुध पश्चिम में उदित १३/४४, **प्रदोष व्रत**
३४	५२	१४	गु.	३७	४१	ज्ये.	२१	१३	शु.	३६	२१	ग.	१२	२६	१८	जु.१	१०	१२	धनु	२१	१३	५	२८	१९	२५	२	१५	३४	४८	भ. ३७/४१ बाद, बुध कर्क में २०/४२, श्री सत्य. व्र. (देखें पृ 150), जुला. प्रा.
३४	५२	१५	शु.	२७	५९	मूल	१३	४०	ब्र.	२५	४१	वि.	२	५०	१९	२	११	१३	धनु			५	२८	१९	२५	२	१६	३१	५८	भ. २/५० तक, **गुरुपूर्णिमा**, व्यासपूजा, शिवशयनोत्सव, (D)

(A) मु. प्रारम्भ, (B) २/३८, दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, (C) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (D) आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रा., कोकिला व्रत

आषा. शुक्ल ८ शनि, इष्ट ०/९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	२	४	१	२	०	६
१०	१३	०७	१९	१८	१६	२१	१४	१४
४८	१८	२५	१९	४४	०१	१६	२४	२४
५७	१८	३३	४०	३६	०२	२१	४४	४४
५७	८०७	३७	१२३	८	८	७	३	३
१३	२२	४७	४९	७	११	४३	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
आर्द्रा २	हस्त १	पुष्य २	आर्द्रा ४	पू.फा. २	रोहि. २	मृग. १	मू. १	स्वा. ३

कुण्डली सूर्योदये

म. ४; सू.; २ शु.; ५ गु.; बु. ३ श.; १ रा.; ६ चं.; १२; ७ के.; ९; ११; ८; १०

लोक भविष्यः– आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को शनिवार होने से नानाविध रोगों से प्रजा को पीड़ा हो। देश के दक्षिणी एवं पश्चिमी भाग में कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बने -

" शनिवारे प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं रौरवं तथा।"

लेकिन सूर्य रात्रि में ६ बजे के लगभग आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश करेगा, अतः उ. भा. में वर्षा पर्याप्त होगी, प्रजा में आनन्द-मंगल रहे। धनधान्य-समृद्धि रहे। इस मास में ५ शुक्रवार होने से भी सुभिक्ष एवं सुख-समृद्धि का संकेत मिलता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः– १६ जून को अनाजों में मन्दा, तिलहन, तेल एवं अन्य व्यापारिक चीजों में अच्छी तेजी बने। रुई, चांदी में घटाबढ़ी एवं सोने में खासी तेजी बने। २०/२१ जून को शेयर बाजार एवं रुई में मन्दी एवं अनाज तेज रहें। २६ जून को चांदी, रुई, कपास सूत, सण में खास मन्दा बने। २६ जून को चांदी, सोना तेज; रुई मन्दी, धान, घी, गुड़ के सटॉक से आगे लाभ रहे। पक्षान्त में शेयर मन्दे, रुई में जोरदार मन्दा, चांदी में घटाबढ़ी से अच्छी तेजी, रसपदार्थ तेल एवं तिलहन में कुछ तेजी के बाद मन्दा रहे।

आकाश लक्षणः– जून १६ से २१, २६, २६, ३० एवं १ जुलाई को पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, उ. प्र., भूटान, शिलांग और आसाम में बादलचाल व जोरदार वर्षा के योग हैं जून २०, २६ और ३० को जोरदार आंधी के योग भी हैं।

शकुन विचारः– आषाढ़ शुक्ल पंचमी को यदि पश्चिम की हवा चले, बादल-वर्षा हो और इन्द्रधनुष दीखे, तो अनाज का स्टॉक करने से कार्तिक में लाभ होगा।

कुण्डली सूर्योदये

म. ४ बु.; सू.; २ शु.; ५ गु.; ३ श.; १ रा.; ६; १२; चं. ९; ७ के.; ११; ८; १०

आषा. शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ०/४,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	३	३	४	१	२	०	६
१६	०९	११	०१	१९	१५	२२	१४	१४
३२	५३	१२	१४	३५	४७	०२	०५	०५
०६	१२	१४	५५	००	१४	४७	३९	३९
५७	९१५	३७	११२	८	५	७	३	३
११	३	४६	२३	४७	४४	४६	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	मृग. ३	पुष्य ३	पुन. ४	पू.फा. २	रोहि. २	मृग. १	मू. १	स्वा. ३

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६   प्र. श्राव. कृ. पक्ष ८

(३ से १७ जुलाई तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन: श. अदृश्य है । सायं मं. बु. पश्चिम में और उनसे ऊपर गु. होगा । प्रात: शु. को पूर्व में देखें ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज. उ. क्र.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४९	१	श.	१८	२६	पू. षा. उ. षा.	६ ५९	०७ ०८	ऐं.	१५	०६	कौ.	१८	२६	२०	३	१२	१४	मकर	१९	१८	५	२९	१९	२५	२	१७	२९	०९	बुध पुष्य में ६/५६
३४	४९	२	र.	९	३३	श्रव.	५३	०५	वै. वि.	५ ५५	०५ ५०	ग.	९	३३	२१	४	१३	१५	मकर			५	२९	१९	२५	२	१८	२६	२२	भ. ३५/२९ बाद, गुरु पू. फा. ३ में ४८/५८, अशून्य शयन व्रत
३४	४७	३	चं.	१	३९	धनि.	४८	३३	प्री.	४७	५४	वि.	१	३९	२२	५	१४	१६	कुम्भ	२०	३७	५	३०	१९	२५	२	१९	२३	३३	भ. १/३९ तक, पंचक प्रारम्भ २०/३७, सूर्य पुन. में ३८/९, श्री, (A)
अवम		४	चं	५५	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय
३४	४७	५	मं.	५०	५२	शत.	४५	४९	आ.	४१	२६	कौ.	२२	५२	२३	६	१५	१७	कुम्भ			५	३०	१९	२५	२	२०	२०	४८	
३४	४७	६	बु.	४८	२८	पू. भा.	४५	०८	सौ.	३६	३८	ग.	१९	२४	२४	७	१६	१८	मीन	३०	०६	५	३०	१९	२५	२	२१	१८	००	भ. ४८/२८ बाद
३४	४५	७	गु.	४८	१३	उ. भा.	४६	३४	शो.	३३	३३	वि.	१८	०५	२५	८	१७	१९	मीन			५	३१	१९	२५	२	२२	१५	११	भ. १८/५ तक
३४	४२	८	शु.	५०	०१	रेव.	५०	००	अ.	३२	०९	बा.	१८	५३	२६	९	१८	२०	मेष	५०	००	५	३१	१९	२४	२	२३	१२	२३	पंचक समाप्त ५०/०
३४	४०	९	श.	५३	३८	अश्वि.	५५	१३	सु.	३२	११	तै.	२१	३७	२७	१०	१९	२१	मेष			५	३२	१९	२४	२	२४	०९	३५	मंगल आश्ले. में ४०/२७, बुध आश्ले. में ५१/५६
३४	४०	१०	र.	५८	३७	भर.	६०	००	धृ.	३३	२८	व.	२६	००	२८	११	२०	२२	मेष			५	३२	१९	२४	२	२५	०६	५१	भ. २६/० से ५८/३७ तक, शनि पुन. २ में ५५/२१
३४	३७	११	चं.	६०	००	भर.	१	४४	शू.	३५	३२	ब.	३१	३०	२९	१२	२१	२३	वृष	१८	३२	५	३३	१९	२४	२	२६	०४	०४	
३४	३२	११	मं.	४	३०	कृत्ति.	९	०५	गं.	३८	०३	बा.	४	३०	३०	१३	२२	२४	वृष			५	३४	१९	२३	२	२७	०१	२०	कामिका एकादशी व्रत (स.)
३४	३२	१२	बु.	१०	४९	रोहि.	१६	५०	वृ.	४०	४५	तै.	१०	४९	३१	१४	२३	२५	मिथुन	५०	४०	५	३४	१९	२३	२	२७	५८	३६	**प्रदोष व्रत**
३४	३०	१३	गु.	१७	०३	मृग.	२४	२८	ध्रु.	४३	१६	व.	१७	०३	३२	१५	२४	२६	मिथुन			५	३५	१९	२३	२	२८	५५	५१	भ. १७/३ से ५०/५ तक
३४	२७	१४	शु.	२२	५९	आर्द्रा	३१	४६	व्या.	४५	२८	श.	२२	५९	श्रा. १	१६	२५	२७	मिथुन			५	३५	१९	२२	२	२९	५३	०९	सं. सूर्य कर्क में ७/१०, मु. १५, पुण्यकाल २३/९ तक, राहु, (B)
३४	२४	३०	श.	२८	१६	पुन.	३८	२७	ह.	४७	०७	ना.	२८	१६	२	१७	२६	२८	कर्क	२१	५०	५	३६	१९	२२	३	००	५०	२४	**शनैश्चरी अमावस, हरियाली अमावस**

(A) गणेश चतुर्थी व्रत, (B) अश्वि. ४ में २१/१५, केतु स्वा. २ में २१/१५

प्र. श्राव. कृ. ८ शु., इष्ट ५९/५७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	३	३	४	१	२	०	६
२४	०२	१६	१५	२०	१७	२३	१३	१३
०९	०३	१४	१६	४८	३१	०५	४०	४०
३६	२५	२९	४३	०८	२८	०१	१३	१३
५७	७३३	३७	९६	९	२१	७	३	३
१३	५७	४८	०	३५	४२	४७	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पुन. २	अश्वि. १	पुष्य ४	पुष्य ४	पू. फा. ३	रोहि. ३	पुन. १	भर. १	स्वा. ३

कुण्डली सूर्योदये

म. ४ बु.
सू. ३ श.
२ शु.
५ गु.
१ रा.
६
चं. १२
७ के.
९
११
८
१०

लोक भविष्य:— इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। कहीं चीन, जापान, अमेरिका, अफगानिस्तान एवं भारत के पर्वतीय भूभाग में भूकम्प से भारी जनधनहानि के योग हैं। कहीं अग्निकाण्ड से किंवा बम-विस्फोट आदि से हानि हो, जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में अप्रत्याशित तेजी से सर्वसाधारण में असन्तोष रहे;-

"शनिवारा: यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशानदेशभंगश्च वह्नि दाहो महर्घता।"

श्रावण कृष्ण नवमी को शनिवार होने से कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। कार्तिक मास में सत्ता हस्तान्तरणकिंवा ऐतिहासिक घटना घटित हो;-

" श्रावणे नवमीयुक्ता: शनि: सन्तापकारक:। छत्रभंगं विजानीयादाश्विनान्ते न संशय:।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— ३ जुलाई के लगभग सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अनाजों में मन्दा बनेगा। रुई में झटके की मन्दी के योग हैं। ५ से १० जुलाई तक तेल, तिलहन ज्वार, मोठ, बाजरा, दालवाना, सुपारी, लौंग, माजू, सोंठ, गुग्गुल, करयाणा में तेजी रहे। चांदी में मन्दा रहे। पक्षान्त में बाजार अस्थिर किंवा मन्दे की तरफ रहें। गुड़, लाख, कांसी, तिलहन, रुई, अनाज तेज रहें।

आकाश लक्षण:— जुलाई ३ से ५, १०, ११, १६ को पंजाब, हि. प्र. हरियाणा, उ. प्र., भूटान, शिलांग और आसाम में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कहीं आसमानी बिजली गिरने से हानि भी हो।

शकुन विचार:— श्रावण में यदि बिजली चमके, बादल गरजें, तो आगे सुभिक्ष की सूचना मिलती है; यदि श्रावण में कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदये

५ गु.
सू. ४ बु. म.
३ चं. श.
२ शु.
६
१
रा.
७ के.
८
१०
१२
९
११

प्र. श्राव. कृ. ३० श., इष्ट ५९/४५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	३	४	१	२	०	६
०१	०७	२१	२७	२२	२१	२४	१३	१३
४७	३७	१७	०६	०७	०९	०७	१४	१४
३१	३७	००	०१	२५	४६	१२	४७	४७
५७	७२९	३७	७८	१०	३३	७	३	३
१७	३६	५०	५८	१९	४७	४५	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पुन. ४	पुष्य २	आश्ले. २	आश्ले. ४	पू. फा. ३	रोहि. ४	पुन. २	अश्वि. ४	स्वा. २

(१८ जुलाई से ३१ जुलाई तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ प्र. (अधि.) श्राव. शु. पक्ष ९

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज. अ.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन
३४	२४	१	र.	३२	५३	पुष्य	४४	२७	व.	४८	१२	किं.	०	४१	३	१८	२७	२९	कर्क			५	३६	१९	२२	३	०१	४७	४३	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, मलमास प्रारम्भ
३४	२०	२	चं.	३६	३९	आश्ले.	४९	३७	सि.	४८	४१	बा.	४	५१	४	१९	२८	ज. १	सिंह	४९	३७	५	३७	१९	२१	३	०२	४४	५९	सूर्य पुष्य में ३६/३७, जमद-उस्मानी मु. प्रारम्भ
३४	२०	३	मं.	३९	३३	मघा	५३	५४	व्य.	४८	२५	तै.	८	१३	५	२०	२९	२	सिंह			५	३७	१९	२१	३	०३	४२	१८	बुध मघा सिंह में १४/२२
३४	१५	४	बु.	४१	२६	पू. फा.	५७	१२	व.	४७	२३	व.	१०	३६	६	२१	३०	३	सिंह			५	३८	१९	२०	३	०४	३९	३५	भ. १०/३६ से ४१/२६ तक, शुक्र मृग. में ४०/७
३४	१२	५	गु.	४२	१४	उ. फा.	५९	२६	प.	४५	३०	ब.	११	५८	७	२२	३१	४	कन्या	१२	५२	५	३९	१९	२०	३	०५	३६	५५	सूर्य सायन सिंह में २९/१६
३४	१०	६	शु.	४१	५०	हस्त	६०	००	शि.	४२	३९	कौ.	१२	१२	८	२३	श्रा. १	५	कन्या			५	३९	१९	१९	३	०६	३४	१५	**शक श्रावण प्रारम्भ**
३४	०४	७	श.	४०	०४	हस्त	०	२४	सि.	३८	४२	ग.	११	०६	९	२४	२	६	तुला	३०	२४	५	४०	१९	१८	३	०७	३१	३४	भ. ४०/४ बाद, गुरु पू. फा. ४ मे ५२/४२
३४	०४	८	र.	३६	५५	चित्रा स्वा.	० ५८	०३ १४	सा.	३३	३८	वि.	८	४०	१०	२५	३	७	तुला			५	४०	१९	१८	३	०८	२८	५५	भ. ८/४० तक, मंगल अस्त ४०/५५
३४	००	९	चं.	३२	१६	विशा.	५५	००	शु.	२७	२१	बा.	४	४५	११	२६	४	८	वृश्चिक	४०	५८	५	४१	१९	१७	३	०९	२६	१३	शनि उदित ५१/२२
३३	५७	१०	मं.	२६	१६	अनु.	५०	३०	शु.	१९	५६	ग.	२६	१६	१२	२७	५	९	वृश्चिक			५	४२	१९	१७	३	१०	२३	३५	भ. ५२/५० बाद
३३	५५	११	बु.	१९	०७	ज्ये.	४४	५४	ब्र.	११	३३	वि.	१९	०७	१३	२८	६	१०	धनु	४४	५४	५	४२	१९	१६	३	११	२०	५७	भ. १९/७ तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.)
३३	४९	१२	गु.	११	००	मूल	३८	२८	ऐं. वै.	२ ५२	१९ ३३	बा.	११	००	१४	२९	७	११	धनु			५	४३	१९	१५	३	१२	१८	१७	**प्रदोष व्रत**
३३	४९	१३	शु.	२	१८	पू. षा.	३१	४१	वि.	४२	३३	तै.	२	१८	१५	३०	८	१२	मकर	४४	५८	५	४३	१९	१५	३	१३	१५	४०	भ. ५३/२१ बाद
अवम		१४	शु.	५३	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय
३३	४५	१५	श.	४४	४०	उ. षा.	२४	५३	प्री.	३२	३७	वि.	१८	५८	१६	३१	९	१३	मकर			५	४४	१९	१४	३	१४	१३	०२	भ. १८/५८ तक, मंगल मघा सिंह में ४८/७, शुक्र मिथुन मे ५/२, (A)

ग्रह दर्शन: २६ जुलाई से श. पूर्व में उदित और २५ जुलाई से मं. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । सायं बु. पश्चिम में और उससे ऊपर गु. होगा । प्रातः शु. पूर्व में दिखाई देगा ।

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत

प्र.(अधि.) श्राव. शु. ८ र., इष्ट ५९/३४,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	४	४	१	२	०	६
०९	२०	२६	०६	२३	२६	२५	१२	१२
२५	१८	१९	३०	३२	१३	०८	४९	४९
५३	४९	४९	१८	०६	०३	४६	२०	२०
५७	८४६	३७	५८	१०	४२	७	३	३
१९	२	५३	४५	५६	४२	३७	१०	१०
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पुष्य २	विशा. १	आर्द्रा ३	मघा २	पू. फा. ४	मृग. १	पुन. २	अश्वि. ४	स्वा. २

कुण्डली सूर्योदये

बु. ५ गु. | सू. ४ मं. | ३ श. | २ शु. | ६ | चं. ७ के. | १ रा. | ८ | १० | १२ | ९ | ११

लोक भविष्य:— नीच मंगल सूर्य के साथ है। मंगल अस्त है, पश्चात् में मंगल सिंहराशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है;- अतः कहीं प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प-जलप्लाव(बाढ़) आदि से हानि हो। सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत गतिविधि चिन्तनीय हो। राजनीतिज्ञों के लिए नई उलझनें खड़ी हों। श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का क्षय होने से कहीं सत्तापरिवर्तन के आसार बनें, आगे कार्तिक मास में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त हो-

" श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत्।
तदावै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— १८ से २१ जुलाई तक गुड़, तेल, सोना, चांदी, तिलहन, रुई, सूत, अनाज, हल्दी, मोठ, बाजरा, चना में तेजी रहे। २४ जुलाई को अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे, रुई में घटाबढ़ी चले। २६ जुलाई को रुई, तिलहन में मन्दा, धातुएं तेज रहें। ३१ जुलाई को हर एक वायदा व्यापार में जोरदार मन्दे एवम् तेजी के रिऐक्शन आएंगे।

आकाश लक्षण:— जुलाई १८ से २१ और २४ से ३१ तक हि. प्र. हरियाणा, उ. प्र., पंजाब, दिल्ली, चण्डीगढ़ एवम् उत्तरी भारत में बादल-वर्षा के योग हैं। राजस्थान, उड़ीसा एवम् आसाम में कहीं सूखा व बाढ़ से हानि के समाचार मिलें।

शकुन विचार:— यदि टटीहरी पक्षी सुखे गोबर, घास या हड्डियों के ढेर में अण्डे दे, तो पशुओं का नाश हो, अकाल, महामारी से जनता कष्ट पाए।

कुण्डली सूर्योदये

बु. ५ गु. | सू. मं. ४ | श. ३ | २ शु. | ६ | ७ के. | १ रा. | चं. १० | ८ | १२ | ९ | ११

प्र.(अधि.) श्राव. शु. १५ श., इष्ट ५९/२४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	४	४	२	२	०	६
१५	१८	००	११	२४	००	२५	१२	१२
०९	३५	०७	३५	३८	४२	५४	३०	३०
५६	५९	०८	४९	४१	४५	११	१६	१६
५७	८८३	३७	३८	११	४७	७	३	३
२३	०	५५	५६	१९	५३	२९	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	श्रव. ३	मघा ३	मघा ४	पू. फा. ४	मृग. ३	पुन. २	अश्वि. ४	स्वा. २

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ द्वि. (अधि.) श्राव. कृ. पक्ष १०

(१ से १६ अगस्त तक सन् २००४ ई.)
उत्तरगोल, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन: मं. अदृश्य है । १६ अगस्त को बु. पश्चिम में लुप्त होगा । सायं गु. पश्चिम कपाल में और प्रात: शु. श. पूर्व में होंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	अगस्त	श्रावण	ज. उ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४०	१	र.	३६	३६	श्रव.	१८	३५	आ.	२३	०८	बा.	१०	३०	१७	अ. १	१०	१४	कुम्भ	४५	४७	५	४५	१९	१३	३	१५	१०	२६	पंचक प्रारम्भ ४५/४७, **अगस्त प्रारम्भ**
३३	३७	२	चं.	२९	४०	धनि.	१३	१६	सौ.	१४	३२	तै.	२	५८	१८	२	११	१५	कुम्भ			५	४५	१९	१२	३	१६	०७	५२	भ. ५६/४३ बाद, सूर्य आश्ले. में ३३/३५
३३	३५	३	मं.	२४	१३	शत.	९	१९	शो.	७	०३	वि.	२४	१३	१९	३	१२	१६	मीन	५२	३२	५	४६	१९	१२	३	१७	०५	१६	भ. २४/१३ तक, बुध पू. फा. में ५७/३७, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३३	३२	४	बु.	२०	३९	पू. भा.	७	११	अ. सु.	१ ५६	०२ ३६	बा.	२०	३९	२०	४	१३	१७	मीन			५	४६	१९	११	३	१८	०२	४३	
३३	२७	५	गु.	१९	०७	उ. भा.	७	००	धृ.	५३	५२	तै.	१९	०७	२१	५	१४	१८	मीन			५	४७	१९	१०	३	१९	००	०९	
३३	२२	६	शु.	१९	४२	रेव.	८	५५	शू.	५२	५०	व.	१९	४२	२२	६	१५	१९	मेष	८	५५	५	४८	१९	०९	३	१९	५७	३९	भ. १९/४२ से ५०/४७ तक, पंचक समाप्त ८/५५
३३	१९	७	श.	२२	२१	अश्वि.	१२	५३	गं.	५३	११	ब.	२२	२१	२३	७	१६	२०	मेष			५	४८	१९	०८	३	२०	५५	११	शनि पुन. ३ में ९/३९
३३	१५	८	र.	२६	३९	भर.	१८	२९	वृ.	५४	४३	कौ.	२६	३९	२४	८	१७	२१	वृष	३५	०७	५	४९	१९	०७	३	२१	५२	४१	शुक्र आर्द्रा में ७/१०
३३	१२	९	चं.	३२	१२	कृति.	२५	२२	ध्रु.	५६	५६	ग.	३२	१२	२५	९	१८	२२	वृष			५	४९	१९	०६	३	२२	५०	१४	नेपच्यून श्रव. ३ में २/३१
३३	०७	१०	मं.	३८	२०	रोहि.	३२	५२	व्या.	५९	२९	व.	५	१२	२६	१०	१९	२३	वृष			५	५०	१९	०५	३	२३	४७	४७	भ. ५/१२ से ३८/२० तक, बुध वक्री ०/३५
३३	०५	११	बु.	४४	३२	मृग.	४०	२८	ह.	६०	००	ब.	११	२६	२७	११	२०	२४	मिथुन	६	४०	५	५१	१९	०५	३	२४	४५	२४	गुरु उ. फा. १ में २६/१०, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.)
३३	०२	१२	गु.	५०	१९	आर्द्रा	४७	४२	ह.	१	५८	कौ.	१७	३२	२८	१२	२१	२५	मिथुन			५	५१	१९	०४	३	२५	४३	०२	
३२	५७	१३	शु.	५५	२४	पुन.	५४	१५	व.	४	०२	ग.	२२	५८	२९	१३	२२	२६	कर्क	३७	४२	५	५२	१९	०३	३	२६	४०	३८	भ. ५५/२४ बाद, **प्रदोष व्रत**
३२	५४	१४	श.	५९	२९	पुष्य	५९	५१	सि.	५	३१	वि.	२७	३५	३०	१४	२३	२७	कर्क			५	५२	१९	०२	३	२७	३८	१९	भ. २७/३५ तक
३२	४९	३०	र.	६०	००	आश्ले.	६०	००	व्य.	६	१२	च.	३१	०९	३१	१५	२४	२८	कर्क			५	५३	१९	०१	३	२८	३५	५८	व. बुध मघा ४ में ४८/११
३२	४५	३०	चं.	२	३२	आश्ले.	४	२६	व.	६	०४	ना.	२	३२	भा. १	१६	२५	२९	सिंह	४	२६	५	५४	१९	००	३	२९	३३	४२	सं. सूर्य मघा सिंह में २७/१८, मु. ३०, पुण्यकाल ११/१७ के बाद, (A)

(A) व. बुध पश्चिम मे अस्त २६/२२, मलमास समाप्त, सोमवती अमा

द्वि.(अधि.) श्राव. कृ. ८ र., इष्ट ५९/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	४	४	४	२	२	०	६
२२	०४	०५	१४	२६	०७	२६	१२	१२
४९	४८	१०	४८	११	२५	५३	०४	०४
३२	५५	४०	३५	००	४७	२१	५०	५०
५७	७९२	३७	२	११	५३	७	३	३
३३	५९	५९	४५	४८	१८	१६	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	कृति. ३	मघा २	पू. फा. १	पू. फा. ४	आर्द्रा १	पुन. ३	अश्वि. ४	स्वा. २

कुण्डली सूर्योदये

बु. गु. म. ५ | सू. ४ | श. शु. ३ | २ | ६ | ७ के. | चं. रा. १ | ८ | १० | १२ | ९ | ११

लोक भविष्य:— मंगल सिंह राशि में है, शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है, इन दोनों के मध्य सूर्य वर्षा में अवरोधक है, कहीं यानदुर्घटना में हानि, कहीं राजनैतिक उथल-पुथल एवं कही प्राकृतिक-प्रकोप से जनधनहानि होगी। इस पक्ष में कालसर्प योग राजनीतिज्ञों के लिए उलझनपूर्ण है। अमेरिका-बर्तानिया आदि समृद्ध देशों में कहीं कष्टप्रद घटना घटे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी एवम् तिलहन में तेजी बने। ८ अगस्त को घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी और अनाज मन्दे। १६ अगस्त को सोना, चांदी, तिलहन, गुड़, शक्कर तेल एवम् शेयर बाजारों में मन्दा। रुई में झटके के साथ तेजी बने।

आकाश लक्षण:— अगस्त २, ४, ६, ८, ११, १६ को हि. प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा एवम् उत्तर-पश्चिमी भागों में पर्याप्त वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:— टटीहरी पक्षी यदि अपने अण्डे ऊंची भूमि पर धरे, तो वर्षा बहुत हो; नीचे धरे, तो कम हो और यदि अण्डे तालाब या जल के किनारे धरे तो वर्षा बिलकुल न हो।

कुण्डली सूर्योदये

बु. गु. म. ५ | सू. चं. ४ | श. शु. ३ | २ | ६ | ७ के. | रा. १ | ८ | १० | १२ | ९ | ११

द्वि.(अधि.) श्राव. कृ. ३० चं., इष्ट ५९/०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	४	४	२	२	०	६
००	११	१०	१२	२७	१४	२७	११	११
३०	२५	१४	३९	४६	४७	५०	३९	३९
३२	४१	५६	३१	४९	०८	२७	२३	२३
५७	७६४	३८	३९	१२	५७	६	३	३
४३	४	५	२६	१२	२२	५७	१०	१०
–	–	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा १	मघा ४	मघा ४	मघा ४	उ. फा. १	आर्द्रा ३	पुन. ३	अश्वि. ४	स्वा. २

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ द्वि. (शुद्ध) श्राव. शु. पक्ष ११

(१७ से ३० अगस्त तक सन् २००४ ई.) उत्तरगोल, दक्षिणायन, वर्षा – शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन: मं. और बु. अदृश्य ही हैं । गु. को सायं पश्चिम में और शु. श. को प्रात: पूर्व में देखिए ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	४२	१	म.	४	३५	मघा	८	०४	प.	५	१२	ब.	४	३५	२	१७	२६	३०	सिंह			५	५४	१८	५९	४	००	३१	२६	चन्द्र दर्शन, मु. ३०
३२	३५	२	बु.	५	३६	पू. फा.	१०	४२	शि.	३	२९	कौ.	५	३६	३	१८	२७	र. १	कन्या	२६	१३	५	५५	१८	५७	४	०१	२९	१०	रजब मु. प्रारम्भ
३२	३२	३	गु.	५	४३	उ. फा.	१२	२६	सि. सा.	१ ५७	०५ ५३	ग.	५	४३	४	१९	२८	२	कन्या			५	५५	१८	५६	४	०२	२६	५७	भ. ३५/२५ बाद, **मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज**
३२	२७	४	शु.	४	५१	हस्त	१३	१२	शु.	५३	५६	वि.	४	५१	५	२०	२९	३	तुला	४३	१६	५	५६	१८	५५	४	०३	२४	४२	भ. ४/५१ तक, **नाग पंचमी** (देखें पृष्ठ **149**)
३२	२२	५	श.	३	०३	चित्रा	१३	०३	शु.	४९	१६	बा.	३	०३	६	२१	३०	४	तुला			५	५७	१८	५४	४	०४	२२	३२	मंगल पू. फा. में ५०/१८, श्रीकल्कि जयन्ती
३२	१९	६	र.	०	२०	स्वा.	११	५९	ब्र.	४३	४८	तै.	०	२०	७	२२	३१	५	वृश्चिक	५५	३०	५	५७	१८	५३	४	०५	२०	२२	भ. ५६/३५ बाद, सूर्य सायन कन्या मे ४६/६, शरद् ऋतु प्रारम्भ, (A)
अवम		७	र.	५६	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय
३२	१५	८	च.	५१	५४	विशा.	९	५४	ऐं.	३७	२९	वि.	२४	२२	८	२३	भा. १	६	वृश्चिक			५	५८	१८	५२	४	०६	१८	१२	भ. २४/२२ तक, **शक भाद्रपद प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी** , (B)
३२	१२	९	म.	४६	१५	अनु.	६	५३	वै.	३०	२७	बा.	१९	१२	९	२४	२	७	वृश्चिक			५	५८	१८	५१	४	०७	१६	०४	
३२	०७	१०	बु.	३९	५१	ज्ये. मूल	२ ५८	५७ १८	वि.	२२	४१	तै.	१३	०९	१०	२५	३	८	धनु	२	५७	५	५९	१८	५०	४	०८	१३	५६	
३२	०५	११	गु.	३२	५१	पू. षा.	५३	०४	प्री.	१४	२३	व.	६	२४	११	२६	४	९	धनु			५	५९	१८	४९	४	०९	११	५१	भ. ६/२४ से ३२/५१ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.)
३१	५७	१२	शु.	२५	२७	उ. षा.	४७	३७	आ. सौ.	५ ५६	४१ ५१	बा.	२५	२७	१२	२७	५	१०	मकर	६	४४	६	००	१८	४७	४	१०	०९	४५	गुरु उ. फा. २ कन्या में ४४/७, **प्रदोष व्रत**
३१	५२	१३	श.	१८	०२	श्रव.	४२	२०	शो.	४८	१३	तै.	१८	०२	१३	२८	६	११	मकर			६	०१	१८	४६	४	११	०७	४३	**ऋक् उपाकर्म**
३१	५०	१४	र.	११	००	धनि.	३७	३४	अ.	४०	०३	व.	११	००	१४	२९	७	१२	कुम्भ	९	५२	६	०१	१८	४५	४	१२	०५	४२	भ. ११/० से ३७/४३ तक, पंचक प्रारम्भ ९/५२, श्रीसत्यनारायण , (C)
३१	४५	१५	चं.	४	३८	शत.	३३	४०	सु.	३२	३५	ब.	४	३८	१५	३०	८	१३	कुम्भ			६	०२	१८	४४	४	१३	०३	४०	सूर्य पू. फा. में १६/५०, प्लूटो मार्गी ४७/५५, **रक्षा बन्धन (राखी)**, (D)

(A) शुक्र पुन. में २०/५८, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (B) (देखें पृष्ठ **149**),(C) व्रत, शुक्ल–कृष्ण–यजु–उपाकर्म, (D) अथर्व उपाकर्म

द्वि.(शुद्ध) श्राव. शु. ८ चं., इष्ट ५८/५०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	४	४	२	२	०	६
०७	१४	१४	०७	२९	२१	२८	११	११
१५	४६	४९	००	१३	३७	३८	१७	१७
००	३८	४७	२४	०१	२५	१३	०८	०८
५७	८५४	३८	५२	१२	६०	६	३	३
५२	१७	१०	१५	२८	१०	३८	११	११
—	—	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	अनु. ४	पू. फा. १	मघा ३	उ. फा. १	पुन. १	पुन. ३	अश्वि. ४	स्वा. २

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य:– भारत के सीमाप्रान्तों पर अशान्ति रहे। मंगल-सूर्य एकत्र हैं; इन पर शनि की दृष्टि है। अत: पक्षान्त में कहीं बादल फटने, भूकम्प, बाढ़ आदि की घटनाओं से जनधन-हानि के समाचार मिलेंगे। २७ अगस्त को गुरु कन्याराशि में आएगा; खाद्य वस्तुओं में तेजी बनेगी। राजस्थान, उ.प्र. एवं बिहार में सत्ता परिवर्तन के योग हैं। सर्पदंशादि की घटनाएं अधिक होंगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:– १७ अगस्त को अनाज, दलहन का वायदा बाजार; चांदी, सोना, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवम् तिलहन में तेजी बने। २७ अगस्त को रुई में बहुत जोरदार मन्दा आने का योग है। चांदी में भी मन्दा रहे। ज्वार, चावल, गेहूं, चना, तिल, तेल, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में जोरदार तेजी या जोरदार मन्दा आ सकता है, सावधानी से काम करें।

आकाश लक्षण:– अगस्त १७, २१, २२, २७ और ३० के लगभग हि. प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, दिल्ली आदि के अधिकांश भागों में वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से हानि का समाचार मिले।

शकुन विचार:– यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो, तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

कुण्डली सूर्योदये

द्वि.(शुद्ध) श्राव. शु. १५ चं., इष्ट ५८/३९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	४	४	५	२	२	०	६
१४	२५	१९	०२	००	२८	२९	१०	१०
००	५१	०९	१५	४०	४५	२३	५४	५४
२८	१९	१२	४७	५६	४८	३४	५३	५३
५८	८२५	३८	१६	१२	६२	६	३	३
२	५०	१६	४६	४०	३०	१६	११	११
—	—	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. १	पू. भा. २	पू. फा. २	मघा १	उ. फा. २	पुन. ३	पुन. ३	अश्वि. ४	स्वा. २

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२

(३१ अगस्त से १४ सितम्बर तक सन् २००४ ई.) उत्तरगोल, दक्षिणायन, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन: गु. ६ सितं. को पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । मं. पूर्ववत् अस्त ही है । बु. १ सितं से प्रात: पूर्व में दिखने लगेगा । शु. और श. पूर्व में दीखेंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. रजब	चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५९	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय
३१	४२	२	मं.	५५	३६	पू. भा.	३१	०६	धृ.	२६	१३	तै.	२७	१९	१६	३१	९	१४	मीन	१६	३६	६	०२	१८	४३	४	१४	०१	४२	व. बुध पूर्व में उदित ५९/७
३१	३४	३	बु.	५३	३४	उ. भा.	३०	०५	शू.	२१	०६	व.	२४	२१	१७	सि. १	१०	१५	मीन			६	०३	१८	४१	४	१४	५९	४४	भ. २४/२१ से ५३/३४ तक, शुक्र कर्क में ९/५१, सितम्बर प्रारम्भ
३१	३२	४	गु.	५३	२३	रेव.	३०	५६	गं.	१७	२९	ब.	२३	१५	१८	२	११	१६	मेष	३०	५६	६	०३	१८	४०	४	१५	५७	५०	पंचक समाप्त ३०/५६, बुध मार्गी ३१/३२, श्री गणेश (संकष्ट), (A)
३१	२७	५	शु.	५५	११	अश्वि.	३३	३८	वृ.	१५	२०	कौ.	२४	०३	१९	३	१२	१७	मेष			६	०४	१८	३९	४	१६	५५	५५	गुरु वार्धक्य प्रारम्भ ३० / ५२, अगस्त्य उदित
३१	२४	६	श.	५८	४१	भर.	३८	१०	ध्रु.	१४	४३	ग.	२६	४५	२०	४	१३	१८	वृष	५४	३०	६	०४	१८	३८	४	१७	५४	०४	भ. ५८/४१ बाद, शुक्र पुष्य में १९/४४
३१	१९	७	र.	६०	००	कृत्ति.	४४	०८	व्या.	१५	२०	वि.	३१	०२	२१	५	१४	१९	वृष			६	०५	१८	३७	४	१८	५२	१४	भ. ३१/२ तक, शनि पुन. ४ कर्क में ५५/५९
३१	१२	७	चं.	३	३७	रोहि.	५१	०७	ह.	१६	५६	ब.	३	३७	२२	६	१५	२०	वृष			६	०६	१८	३५	४	१९	५०	२७	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (रोहिणी योग) (स्मार्त्तों, गृहस्थियों के लिए), (B)
३१	१०	८	मं.	९	२९	मृग.	५८	३४	व.	१९	१०	कौ.	९	२९	२३	७	१६	२१	मिथुन	२४	५१	६	०६	१८	३४	४	२०	४८	४२	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णवों, सन्यासियों के लिए)
३१	०४	९	बु.	१५	३७	आर्द्रा	६०	००	सि.	२१	३१	ग.	१५	३७	२४	८	१७	२२	मिथुन			६	०७	१८	३३	४	२१	४६	५७	भ. ४८/३८ बाद, श्रीगुग्गा नवमी
३१	०२	१०	गु.	२१	३०	आर्द्रा	५	५४	व्य.	२३	३८	वि.	२१	३०	२५	९	१८	२३	कर्क	५५	५८	६	०७	१८	३२	४	२२	४५	१७	भ. २१/३० तक
३०	५५	११	शु.	२६	३४	पुन.	१२	३४	व.	२५	०७	बा.	२६	३४	२६	१०	१९	२४	कर्क			६	०८	१८	३०	४	२३	४३	३६	अजा एकादशी व्रत (स.)
३०	५२	१२	श.	३०	३४	पुष्य	१८	१५	प.	२५	४८	तै.	३०	३४	२७	११	२०	२५	कर्क			६	०८	१८	२९	४	२४	४१	५९	मंगल उ. फा. में ४३/३८, शनि प्रदोष व्रत
३०	४७	१३	र.	३३	१३	आश्ले.	२२	३८	शि.	२५	२५	ग.	२	०२	२८	१२	२१	२६	सिंह	२२	३८	६	०९	१८	२८	४	२५	४०	२२	भ. ३३/१३ बाद, गुरु उ. फा. ३ में २३/५५
३०	४२	१४	चं.	३४	३३	मघा	२५	४७	सि.	२४	०२	वि.	४	०३	२९	१३	२२	२७	सिंह			६	०९	१८	२६	४	२६	३८	५०	भ. ४/३ तक, सूर्य उ. फा. में १/११
३०	३७	३०	मं.	३४	३५	पू. फा.	२७	३७	सा.	२१	३६	च.	४	४२	३०	१४	२३	२८	कन्या	४२	५४	६	१०	१८	२५	४	२७	३७	१७	भौमवती अमावस, पिठोरी अमावस, कुशोत्पाटिनी अमावस

गुरु अस्त ६ सितं.

(A) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय घं. २० मि. ४७), बहुला चतुर्थी, (B) (चन्द्रोदय घं. २३ मि. ०६), **गुरु अस्त ३० / ४८**

भाद्र. कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५८/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	४	४	५	३	३	०	६
२१	०६	२४	०३	०२	०७	००	१०	१०
४५	३९	१५	५६	२३	१३	११	२९	२९
३३	१४	४७	४१	००	५७	५९	२६	२६
५८	७९२	३८	५०	१२	६४	५	३	३
१७	२८	२४	१७	५१	४४	४६	१०	१०
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. ३	मृग. ४	पू. फा. ४	मघा २	उ. फा. २	पुष्य २	पुन. ४	अश्वि. ४	स्वा. २

कुण्डली सूर्योदये

६ गु. | सू. | शु. ४ श. | ७ के. | मं. ५ बु. | ३ | ८ | २ चं. | ९ | ११ | १ रा. | १० | १२

लोक भविष्य:— भाद्रपद कृष्ण पक्ष की ग्रहस्थिति भी कालसर्पयोग बना रही है। अमावस भी मंगलवारी है। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। राजनैतिक-पार्टियों में परस्पर वैमत्य बढ़ेगा। २ सितम्बर को गुरु के अस्त होने पर सरकार मंहगाई के विरुद्ध व्यापारियों पर अंकुश लगाएगी। इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने से किसी देश विशेष में आन्तरिक शासन व्यवस्था चरमराए , सत्ता परिवर्तन भी संभव है-

"यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासरा:।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में रुई में मन्दे के बाद तेजी; अनाजों, तिल, घी, पाट, लाल मिर्च में तेजी बने। सितम्बर १ को रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी; तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेजी का रुख बने। चांदी, जौ, चना, मटर, अरहर में मन्दा हो। २ सितम्बर को बाजार का रुख बदल सकता है। ५ सितम्बर को वायदा बाजारों में जोरदार तेजी बने, रुई और कपास में विशेष तेजी की उम्मीद है। ८ सितम्बर से रुई और शेयरों में तेजी, सोना, चांदी, अनाज मन्दे; पक्षान्त में बाजार तेज रहें।

आकाश लक्षण:— अगस्त ३१, सितम्बर १, २, ४, ५, ६, ८, १२, १४ के लगभग नेपाल, सूरत, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश एवम् उत्तरप्रदेश के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व बा-वृष्टि हो। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहेगा।

शकुन विचार:— यदि भाद्र. कृष्ण तृतीया को बादल हों, तो अनाज के स्टॉक से आगे छठे मास में लाभ हो।

कुण्डली सूर्योदये

६ गु. | सू. | शु. ४ श. | ७ के. | मं. ५ चं. बु. | ३ | ८ | २ | ९ | ११ | १ रा. | १० | १२

भाद्र. कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५८/१९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	४	५	३	३	०	६
२८	०३	२८	१२	०३	१४	००	१०	१०
३४	२३	४४	११	५३	५२	५०	०७	०७
१४	२४	५९	०६	१७	०४	५६	११	११
५८	७९७	३८	९२	१२	६६	५	३	३
३१	६	३२	४३	५७	२०	१७	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ. फा. १	उ. फा. ३	उ. फा. १	मघा ४	उ. फा. ३	पुष्य ४	पुन. ४	अश्वि. ४	स्वा. २

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३

(१५ से २८ सितम्बर तक सन् २००४ ई.)
उत्तर – दक्षिण गोल, दक्षिणायन, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन: मं. गु. अदृश्य हैं । बु. १९ सितं को पूर्व में लुप्त होगा । प्रात: पूर्व में शु. और उससे ऊपर श. दिखाई पड़ेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	तारीखें अं. सितम्बर	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	३२	१	बु.	३३	२७	उ. फा.	२८	१८	शु.	१८	१४	कि.	४	०८	३१	१५	२४	२९	कन्या			६	११	१८	२४	४	२८	३५	४८	बुध पू. फा. में ४३/१०
३०	३०	२	गु.	३१	२३	हस्त	२८	०३	शु.	१४	०५	बा.	२	३२	आ. १	१६	२५	३०	तुला	५७	३३	६	११	१८	२३	४	२९	३४	२२	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, सं. सूर्य कन्या मे २६/१६, मु. ३०, पुण्यकाल , (A)
३०	२२	३	शु.	२८	२६	चित्रा	२६	५५	ब्र.	९	११	ग.	२८	२६	२	१७	२६	शा. १	तुला			६	१२	१८	२१	५	००	३२	५४	भ. ५६/४२ बाद, राहु अश्वि. ३ मे १३/५२, केतु स्वा. १ में , (B)
३०	२०	४	श.	२४	४८	स्वा	२५	०७	ऐ. वै	३ ५७	४३ ४१	वि.	२४	४८	३	१८	२७	२	तुला			६	१२	१८	२०	५	०१	३१	३१	भ. २४/४८ तक, सिद्धि विनायक व्रत, **हरितालिका चतुर्थी**, (C)
३०	१५	५	र.	२०	३३	विशा.	२२	४१	वि.	५१	१६	बा.	२०	३३	४	१९	२८	३	वृश्चिक	८	२०	६	१३	१८	१९	५	०२	३०	०७	बुध पूर्व मे अस्त ५८/४, यूरेनस शत. १ मे ५७/५४, **ऋषि पंचमी**
३०	१२	६	च.	१५	४९	अनु	१९	४७	प्री.	४४	२६	तै.	१५	४९	५	२०	२९	४	वृश्चिक			६	१३	१८	१८	५	०३	२८	४७	**सूर्य षष्ठी**
३०	०४	७	मं.	१०	३८	ज्ये.	१६	२६	आ.	३७	२०	व.	१०	३८	६	२१	३०	५	धनु	१६	२६	६	१४	१८	१६	५	०४	२७	२७	भ. १०/३८ से ३७/५६ तक, **राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ**
३०	००	८	बु.	५	०७	मूल	१२	४६	सौ.	२९	५७	ब.	५	०७	७	२२	३१	६	धनु			६	१५	१८	१५	५	०५	२६	१०	सूर्य सायन तुला मे ३९/२५, दक्षिण गोल प्रारम्भ, श्रीचन्द नवमी , (D)
अवम		९	बु.	५९	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय
२९	५७	१०	गु.	५३	३७	पू. षा.	८	५७	शो.	२२	२९	तै.	२६	३३	८	२३	आ. १	७	मकर	२२	५८	६	१५	१८	१४	५	०६	२४	५५	बुध उ. फा. में २५/२३, **शक आश्विन प्रारम्भ**
२९	५२	११	शु.	४७	५७	उ. षा.	५	०२	अ.	१४	५८	व.	२०	४६	९	२४	२	८	मकर			६	१६	१८	१३	५	०७	२३	३९	भ. २०/४६ से ४७/५७ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.)
२९	४७	१२	श.	४२	३६	श्रव. धनि	१ ५७	१८ ५३	सु.	७	३९	ब.	१५	१३	१०	२५	३	९	कुम्भ	२९	३३	६	१६	१८	११	५	०८	२२	२८	पंचक प्रारम्भ २९/३३, बुध कन्या मे १४/३५, **वामन द्वादशी**, (E)
२९	४२	१३	र.	३७	४७	शत.	५५	१०	धृ. शू.	० ५४	३६ ०७	कौ.	१०	०५	११	२६	४	१०	कुम्भ			६	१७	१८	१०	५	०९	२१	१६	सूर्य हस्त मे ३९/२७, **प्रदोष व्रत**
२९	४०	१४	चं.	३३	४९	पू. भा.	५३	१७	गं.	४८	२०	ग.	५	४१	१२	२७	५	११	मीन	३८	४१	६	१७	१८	०९	५	१०	२०	०८	भ. ३३/४९ बाद, गुरु उ. फा. ४ मे ४९/३४, **अनन्त चतुर्दशी व्रत**, (F)
२९	३४	१५	मं.	३०	५५	उ. भा.	५२	३५	वृ.	४३	३१	वि.	२	१२	१३	२८	६	१२	मीन			६	१८	१८	०८	५	११	१८	५९	भ. २/१२ तक, शुक्र मघा सिंह में २४/५०, **प्रोष्ठपदी श्राद्ध**, (G)

(A) १०/१४ के बाद, मंगल कन्या में ५५/४, शुक्र आश्ले. में ३५/५१, मेला बाबा गोसाई आणां, कुराली (पं), साम उपाकर्म, (B) १३/५२, श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, कलंक चतुर्थी (चन्द्र दर्शन निषिद्ध) , (चन्द्रास्त घं. २० मि. ०५), शाबान मु. प्रारम्भ, (C) संवत्सरी पर्व जैन, (D) (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (E) श्रवण द्वादशी व्रत, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 150 ,)(G) पूर्णिमा श्राद्ध

भाद्र. शुक्ल ८ बुध, इष्ट ५८/७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	४	५	३	३	०	६
०६	२४	०३	२५	०५	२३	०१	०९	०९
२३	०६	५३	५०	३७	४८	३०	४१	४१
०८	२०	४५	२२	००	१६	५९	४५	४५
५८	८५५	३८	१०९	१२	६७	४	३	३
४५	१८	४१	३१	५९	५२	३९	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ. फा. ३	हस्त ४	उ. फा. २	उ. फा. ४	उ. फा. ३	आश्ले. ३	पू. फा. ४	अश्वि. ३	स्वा. १

कुण्डली सूर्योदये

७ के., सू., ५ बु., शु., ८, गु., ६ मं., ४ श., ९ चं., ३, १०, १२, २, ११, १ रा.

लोक भविष्य:— भाद्र. शुक्ल चतुर्थी को शनिवार होने से कहीं वरिष्ठव्यक्ति के निधन का समाचार मिले, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, अराजकता का वातावरण बने;-

"शनौ भाद्रपदे कृष्णा चतुर्थी यदि जायते। देशभंगश्च दुर्भिक्षं स्वस्थस्योदरपूरणम्।।"

मंगल-सूर्य पर शत्रुग्रह शनि की विशेष दृष्टि होने से बमविस्फोट किंवा यानदुर्घटना में जनधनहानिका संकेत मिलता है। नोट:– १७ सितंबर को कलंक चतुर्थी होने से चन्द्र-दर्शन निषिद्ध है; यदिगलती से चांद दिखाई दे जाए,तो नीचे लिखे मन्त्र का जाप पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह करके करें; दोष शान्त हो जाएगा;- मन्त्र:-

"सिंह: प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हत:। सुकुमारक मा रादीस्तव ह्येष स्यमन्तक:।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में १६ सितम्बर के लगभग नारियल, सुपारी, तिल, तेल में तेजी बने। चांदी, रुई और शेयर बाजारों में जोरदार तेजी आने की सम्भावना है। सोना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चीनी, घी, अलसी, गेहूं में अच्छी तेजी का वातावरण बने। २० सितम्बर को बाजार अस्थिर रहें। २५ सितम्बर के लगभग रुई और चांदी में मन्दा; गेहूं, जौ, चना, गुड़., शक्कर, खाण्ड व हल्दी में तेजी बने। पक्षान्त में लाल मिर्च, सोना, तांबा, अनाज, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी आए। रुई और चांदी में पहले मन्दा, बाद में तेजी बने।

आकाश लक्षण:— सितम्बर १६, २०, २३, २५, २६ और २८ को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान व काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा सम्भव है। उ. भारत में गर्मी का प्रभाव क्षीण होगा एवं मौसम में बदलाव अनुभव होगा।

शकुन विचार:— भाद्र. शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे तो, गेहूं, जौ, चना, चावल के स्टॉक से आगे लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदये

७ के., सू., ५, शु., ८, गु., ६ मं., बु., ४ श., ९, ३, चं., १०, १२, २, ११, १ रा.

भाद्र. शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ५८/०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	५	५	५	४	३	०	६
१२	१७	०७	०६	०६	००	०१	०९	०९
१६	५२	४६	४९	५४	३८	५७	२२	२२
०१	०७	०६	२३	४७	०३	३७	४०	४०
५८	७८८	३८	१०९	१२	६८	४	३	३
५५	५७	४८	६	५६	५४	८	१०	१०
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त १	रेव. १	उ. फा. ४	उ. फा. ४	उ. फा. ४	मघा १	पू. फा. ४	अश्वि. ३	स्वा. १

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ — आश्विन कृष्ण पक्ष १४

(२९ सितम्बर से १४ अक्तूबर तक सन् २००४ ई.)
दक्षिणगोल, दक्षिणायन, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन: मं. व बु. अस्त हैं । २ अक्तू. से गु. पूर्व में दीखने लगेगा । प्रातः शु. पूर्व में और उससे काफी ऊपर श. होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	तारीखें अं. सितम्बर	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. शाबा.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	२७	१	बु.	२९	२१	रेव.	५३	१८	ध्रु.	३९	४४	कौ.	२९	२१	१४	२९	७	१३	मेष	५३	१८	६	१९	१८	०६	५	१२	१७	५५	पंचक समाप्त ५३/१८, श्राद्धपक्ष (महालय) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध
२९	२५	२	गु.	२९	२१	अश्वि.	५५	३०	व्या.	३७	१३	ग.	२९	२१	१५	३०	८	१४	मेष			६	१९	१८	०५	५	१३	१६	५३	भ. ५९/५४ बाद, बुध हस्त में ४३/१, द्वितीया का श्राद्ध
२९	२०	३	शु.	३०	५४	भर.	५९	१८	ह.	३५	५४	वि.	३०	५४	१६	अ.१	९	१५	मेष			६	२०	१८	०४	५	१४	१५	५१	भ. ३०/५४ तक, अक्तूबर प्रारम्भ, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया श्राद्ध
२९	१७	४	श.	३४	०५	कृत्ति.	६०	००	व.	३५	५०	ब.	२	१८	१७	२	१०	१६	वृष	१५	२९	६	२०	१८	०३	५	१५	१४	५३	मंगल हस्त में २४/५३, चतुर्थी श्राद्ध, गुरु उदित ३२ / ३०
२९	०९	५	र.	३८	३६	कृत्ति.	४	३१	सि.	३६	४६	कौ.	६	१०	१८	३	११	१७	वृष			६	२१	१८	०१	५	१६	१३	५५	पंचमी श्राद्ध
२९	०४	६	चं.	४४	०९	रोहि.	१०	५४	व्य.	३८	२९	ग.	११	१५	१९	४	१२	१८	मिथुन	४४	२६	६	२२	१८	००	५	१७	१३	०२	भ. ४४/९ बाद, षष्ठी श्राद्ध
२९	०२	७	मं.	५०	१४	मृग.	१८	०६	व.	४०	४०	वि.	१७	११	२०	५	१३	१९	मिथुन			६	२२	१७	५९	५	१८	१२	११	भ. १७/११ तक, सप्तमी श्राद्ध, गुरु बाल्य समाप्त ३२ / २५
२८	५७	८	बु.	५६	१९	आर्द्रा	२५	२९	प.	४२	५०	बा	२३	१९	२१	६	१४	२०	मिथुन			६	२३	१७	५८	५	१९	११	२०	अष्टमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समाप्त
२८	५५	९	गु.	६०	००	पुन.	३२	३३	शि.	४४	३७	तै.	२९	१०	२२	७	१५	२१	कर्क	१५	५१	६	२३	१७	५७	५	२०	१०	३४	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
२८	४७	९	शु.	१	४५	पुष्य	३८	४४	सि.	४५	३९	ग.	१	४५	२३	८	१६	२२	कर्क			६	२४	१७	५५	५	२१	०९	४७	भ. ३४/६ बाद, बुध चित्रा में १६/३९, दशमी श्राद्ध
२८	४२	१०	श.	६	०४	आश्ले.	४३	३८	सा.	४५	४२	वि.	६	०४	२४	९	१७	२३	सिंह	४३	३८	६	२५	१७	५४	५	२२	०९	०६	भ. ६/४ तक, शुक्र पू. फा. में ५४/९, एकादशी श्राद्ध
२८	४०	११	र.	८	५९	मघा	४७	०१	शु.	४४	२९	बा.	८	५९	२५	१०	१८	२४	सिंह			६	२५	१७	५३	५	२३	०८	२६	सूर्य चित्रा में ११/४१, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), द्वादशी श्राद्ध
२८	३५	१२	चं.	१०	१४	पू. फा.	४८	४८	शु.	४२	०१	तै.	१०	१४	२६	११	१९	२५	सिंह			६	२६	१७	५२	५	२४	०७	४६	सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध
२८	३०	१३	मं.	९	५०	उ. फा.	४९	०४	ब्र.	३८	१४	व.	९	५०	२७	१२	२०	२६	कन्या	४	००	६	२७	१७	५१	५	२५	०७	११	भ. ९/५० से ३९/४ तक, बुध तुला में १३/९, शस्त्र विषादि से , (A)
२८	२७	१४	बु.	७	५६	हस्त	४७	५३	ऐं.	३३	२१	श.	७	५६	२८	१३	२१	२७	कन्या			६	२७	१७	५०	५	२६	०६	३९	गुरु हस्त १ में २२/३६, अमावस श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, गजच्छाया पर्व
२८	२२	३०	गु.	४	३८	चित्रा	४५	३२	वै.	२७	२५	ना.	४	३८	२९	१४	२२	२८	तुला	१६	५१	६	२८	१७	४९	५	२७	०६	०५	मातामह (नाना का) श्राद्ध, श्राद्ध (महालय पक्ष) समाप्त, शारद , (B)

गुरु उदित २ अक्तूबर

(A) मृतों का श्राद्ध चतुर्दशी श्राद्ध, (B) नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 150) घट स्थापन

आश्वि.कृष्ण ८ बुध, इष्ट ५७/४७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	५	५	४	३	०	६
२०	२६	१२	२१	०८	०९	०२	०८	०८
०८	२४	५७	०४	३८	५३	२८	५७	५७
२६	५७	०७	०४	००	३२	१०	१४	१४
५९	७९८	३८	१०३	१२	७०	३	३	३
१४	५३	५९	३३	५०	६	२४	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ४	पू.फा. २	हस्त २	हस्त ४	उ.फा. ४	मघा ३	पू.फा. ४	अश्वि. ३	[illegible] २

कुण्डली सूर्योदये

७ के. | सू. गु. ६ मं. बु. | ५ शु. | ८ | ४ श. | ९ | ३ चं. | १० | १२ | २ | ११ | १ रा.

लोक भविष्य:— आश्वि. कृ. पंचमी को रविवार हो तो, आगे माघ मास की अमावस के दिन खाद्य पदार्थ, विशेषतः घी मंहगे होंगे-

"आश्विन कृष्ण पंचम्यां रविवार: प्रवर्तते।
माघ मासस्यामावास्यायां महर्घ निश्चयाद्घृतम्।।"

इस पक्ष में गुरु-मंगल-सूर्य-बुध- ये चारों कन्याराशि में हैं;- कहीं आकालिक प्राकृतिक आपदा, अग्निकाण्ड, किंवा उग्रवादजन्य अपराध के कारण अशान्ति हो;-

"एकराशौ यदा यान्ति चत्वार: पंच खेचरा:।
प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में अनाजों में तेजी-मन्दी रहे। ४ अक्तूबर को चांदी एवं अनाजों में तेजी; सोना मन्दा रहे। ८ से १० अक्तूबर तक गुड़, खाण्ड, चना, रुई, चांदी में तेजी बने। १२ अक्तूबर को रुई, गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी एवं तिलहन में मन्दा बने। पक्षान्त में बाजार अचानक मन्दे हों।

आकाश लक्षण:— अक्तूबर १, ४, ५, ८, ६, १०, १२, १३ को उ. प्र. के कुछ भाग, लंका, आसाम एवम् बंगाल में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल एवम् कहीं खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचार:— यदि आश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक बादल गरजें, बिजली चमके, तो गेहूं आदि अनाजों के स्टॉक से आगे लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदये

बु. ७ के. | सू. गु. ६ मं. चं. | ५ शु. | ८ | ४ श. | ९ | ३ | १० | १२ | २ | ११ | १ रा.

आश्वि.कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५७/३५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	६	५	४	३	०	६
२८	०९	१८	०४	१०	१९	०२	०८	०८
०३	२८	०९	३१	२०	१७	५२	३१	३१
१६	४८	४९	२१	०६	५८	३६	४८	४८
५९	८४७	३९	९७	१२	७१	२	३	३
३१	५३	१०	४०	३९	६	३६	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा २	[illegible] २	हस्त ३	चित्रा ४	हस्त २	[illegible]	[illegible]	अश्वि. ३	पू.भा. २

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ आश्विन शुक्ल पक्ष १५

(१५ से २८ अक्तूबर तक सन् २००४ ई.)
दक्षिणगोल, दक्षिणायन, शरद् — हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन: मं. अस्त है। २६ अक्तू. को बु. पश्चिम में दृश्य होगा। प्रात: पूर्व में गु. और उससे ऊपर शु. होगा। इस समय श. याम्योत्तरवृत्तासन्न दीखेगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आश्विन	अ. अक्तूबर	श. आश्विन	मु. शाबा.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	१४	१	शु	०	१३	स्वा.	४२	१९	वि.	२०	४०	ब.	०	१३	३०	१५	२३	२९	तुला			६	२९	१७	४७	५	२८	०५	३७	चन्द्र दर्शन, मु.१५
अवम		२	शु.	५५	०१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय
२८	१२	३	श.	४९	१२	विशा.	३८	२९	प्री.	१३	२२	तै.	२२	११	का.१	१६	२४	रम.१	वृश्चिक	२४	२९	६	२९	१७	४६	५	२९	०५	१०	सं. सूर्य तुला में ५५/१२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न, (A)
२८	०७	४	र.	४३	०७	अनु.	३४	१४	आ. सौ	५ ५७	३८ ४२	व.	१६	११	२	१७	२५	२	वृश्चिक			६	३०	१७	४५	६	००	०४	४३	भ. १६/११ से ४३/७ तक
२८	०२	५	च.	३६	५४	ज्ये.	२९	५२	शो	४९	४८	ब.	९	५९	३	१८	२६	३	धनु	२९	५२	६	३१	१७	४४	६	०१	०४	२०	उपङ्गललिता व्रत
२८	००	६	म.	३०	५२	मूल	२५	३९	अ.	४२	०२	कौ.	३	५१	४	१९	२७	४	धनु			६	३१	१७	४३	६	०२	०३	५९	सरस्वती आवाहन
२७	५५	७	बु.	२५	०६	पू. षा	२१	४१	सु.	३४	३०	व.	२५	०६	५	२०	२८	५	मकर	३५	४६	६	३२	१७	४२	६	०३	०३	३७	भ. २५/६ से ५२/२१ तक, सरस्वती पूजन–बलिदान, ओली प्रा. (जैन)
२७	४९	८	गु.	१९	४७	उ. षा.	१८	०९	धृ.	२७	२१	ब.	१९	४७	६	२१	२९	६	मकर			६	३३	१७	४१	६	०४	०३	१९	शुक्र उ. फा. में ८/५९, **श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (पूजा**, (B)
२७	४४	९	शु.	१५	०४	श्रव.	१५	१२	शू.	२०	४२	कौ.	१५	०४	७	२२	३०	७	कुम्भ	४४	००	६	३४	१७	४०	६	०५	०३	०३	पंचक प्रारम्भ ४४/०, मंगल चित्रा में ५१/४१, महानवमी (बलिदान, (C)
२७	४२	१०	श.	११	०५	धनि.	१२	५९	ग.	१४	३८	ग.	११	०५	८	२३	का.१	८	कुम्भ			६	३४	१७	३९	६	०६	०२	४८	भ. ३९/२३ बाद, सूर्य स्वा. में ३७/२०, सूर्य सायन वृश्चिक में, (D)
२७	३७	११	र.	७	५२	शत.	११	३१	वृ.	९	११	वि.	७	५२	९	२४	२	९	मीन	५५	५९	६	३५	१७	३८	६	०७	०२	३३	भ. ७/५२ तक, बुध विशा. में ४४/२५, नेपच्यून मार्गी २७/४२, (E)
२७	३२	१२	च.	५	३३	पू. भा.	१०	५६	ध्रु.	४	२६	बा.	५	३३	१०	२५	३	१०	मीन			६	३६	१७	३७	६	०८	०२	२२	**सोम प्रदोष व्रत**
२७	२७	१३	मं.	४	१४	उ. भा.	११	२१	व्या. ह	० ५७	२९ २५	तै.	४	१४	११	२६	४	११	मीन			६	३७	१७	३६	६	०९	०२	१३	बुध पश्चिम में उदित १२/४७
२७	२५	१४	बु.	४	०३	रेव.	१२	५३	व.	५५	१४	व.	४	०३	१२	२७	५	१२	मेष	१२	५३	६	३७	१७	३५	६	१०	०२	०६	भ. ४/३ से ३४/२४ तक, पंचक समाप्त १२/५३, श्रीसत्यनारायण, (F)
२७	२०	१५	गु.	५	०१	अश्वि.	१५	३१	सि.	५३	५८	व.	५	०१	१३	२८	६	१३	मेष			६	३८	१७	३४	६	११	०१	५८	**महर्षि वाल्मिकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ**

(A) तक, बुध स्वा. में १६/४२, रमजान मु. प्रारम्भ, (B) के लिए), सरस्वती विसर्जन, (C) के लिए), **नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा)**, अपराजिता पूजन, आयुधपूजा, सीमोल्लंघन, (D) १/५५, हेमन्त ऋतु प्रा., शुक्र कन्या में ५५/५६, **शक कार्तिक प्रारम्भ**, (E) पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (F) व्रत, शरत् पूर्णिमा, कोजागर व्रत

आश्वि. शुक्ल ८ गुरु, इष्ट ५७/२२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	५	६	५	४	३	०	६
०५	११	२२	१५	११	२७	०३	०८	०८
००	११	४४	४१	४७	३७	०८	०९	०९
२९	०८	२४	३०	५७	५५	३६	३३	३३
५९	८३३	३९	९३	१२	७१	१	३	३
४४	४५	२०	१९	२५	५०	५१	११	११
—	—	मा.	श्रा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ४	श्रव. ३	हस्त ४	स्वा. ३	हस्त १	उ.फा. १	पुन. ४	अश्वि. ३	स्वा. १

कुण्डली सूर्योदये

८ | सू. | गु. ६ मं.
९ | बु. ७ के. | ५ शु.
चं. १० | श. ४
रा. १
११ | ३
१२ | २

लोक भविष्य:— आश्विन शुक्ल तृतीया को शनिवार होने से अनेकत्र अग्निकाण्ड से हानि के समाचार मिलेंगे, खाद्य वस्तुओं में भारी मंहगाई होने से जनता में अशान्ति फैले;–

" आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम: शनैश्चर:।
तदाग्नि: प्रबलो भूम्यामन्नादीनां महर्घता॥"

चतुर्थी को रविवार भी मंहगाई का सूचक है। शनि-मंगल की स्थिति, सू. रा. का समसप्तकयोग देश के कुछ प्रान्तों में राजनीतिक अस्थिरता का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— १६ अक्तूबर के लगभग रुई व चांदी में मन्दी; जौ, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, मजीठ और सुपारी में तेजी बने। २३ अक्तूबर के करीब चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी। गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड में भी तेजी रहे। चावलों में विशेष तेजी के आसार हैं। २६ अक्तूबर के करीब रुई और शेयरों में मन्दा बने।

कुण्डली सूर्योदये

८ | सू. | गु. ६ मं. शु.
९ | बु. ७ के. | ५
१० | श. ४
रा. १ चं.
११ | ३
१२ | २

आश्वि. शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ५७/१०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	५	६	५	५	३	०	६
११	२२	२७	२६	१३	०६	०३	०७	०७
५९	०४	२०	२३	१३	०२	१९	४७	४७
०८	००	१६	०७	५५	४५	२०	१७	१७
५९	७४३	३९	८९	१२	७२	१	३	३
५६	९	३०	३१	६	३०	६	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. २	भर. ३	चित्रा २	विशा. १	हस्त १	उ.फा. ३	पुन. ४	अश्वि. ३	स्वा. १

आकाश लक्षण:— अक्तूबर १५, १६, २२, २३, २५, २६ को हि. प्र., जम्मू-काश्मीर एवम् पंजाब के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं। इस पक्ष में हि. प्र., उत्तरपूर्वी लंका एवम् चिरापूंजी में अच्छी वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:— यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाच्छन्न हो, तो धान्य के स्टॉक से आगामी चैत्रमास में लाभ मिले।

" आश्विनी निर्मलापूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभप्रदो मत:।"

(२९ अक्तूबर से १२ नवम्बर तक सन् २००४ ई.)
दक्षिणगोल, दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ कार्तिक कृष्ण पक्ष १६

ग्रह दर्शनः ४ नवं. से मं. पूर्व में दीखने लगेगा । सायं बु. पश्चिम में और प्रातः गु. शु. काफी पास पास दिखाई देंगे । एवं इसी समय श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तूबर	श. कार्तिक	मु. रमज़ा	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	१५	१	शु.	७	१२	भर.	१९	२०	व्य.	५३	३९	कौ.	७	१२	१४	२९	७	१४	वृष	३५	२९	६	३९	१७	३३	६	१२	०१	५४	गुरु हस्त २ मे २७/१८, शनि पुष्य १ में ३२/४४
२७	१०	२	श	१०	३७	कृत्ति.	२४	१९	व.	५४	१२	ग.	१०	३७	१५	३०	८	१५	वृष			६	४०	१७	३२	६	१३	०१	५३	भ. ४२/४६ बाद
२७	०७	३	र.	१५	१०	रोहि.	३०	२१	प.	५५	३४	वि.	१५	१०	१६	३१	९	१६	वृष			६	४१	१७	३२	६	१४	०१	५३	भ. १५/१० तक, बुध वृश्चिक मे २३/५, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (A)
२७	०४	४	चं.	२०	४१	मृग.	३७	१५	शि.	५७	२७	बा.	२०	४१	१७	न.१	१०	१७	मिथुन	३	४३	६	४१	१७	३१	६	१५	०१	५५	मंगल तुला में ५९/२१, शुक्र हस्त में १३/१०, **नवम्बर प्रारम्भ**
२७	००	५	मं.	२६	४७	आर्द्रा	४४	३३	सि.	५९	३६	तै.	२६	४७	१८	२	११	१८	मिथुन			६	४२	१७	३०	६	१६	०१	५७	बुध अनु. में ३९/३८, प्लूटो ज्ये. ४ में २९/४३
२६	५४	६	बु.	३३	०४	पुन.	५१	५६	सा.	६०	००	व.	३३	०४	१९	३	१२	१९	कर्क	३५	०९	६	४३	१७	२९	६	१७	०२	०४	भ. ३३/४ बाद
२६	५०	७	गु.	३८	५९	पुष्य	५८	५०	सा.	१	४१	वि.	६	०५	२०	४	१३	२०	कर्क			६	४४	१७	२८	६	१८	०२	१३	भ. ६/५ तक, मंगल उदित ५१/२०
२६	४५	८	शु.	४४	०२	आश्ले.	६०	००	शु.	३	२१	बा.	११	३८	२१	५	१४	२१	कर्क			६	४५	१७	२७	६	१९	०२	२४	सूर्य विशा. में ५७/२३, **अहोई अष्टमी (पंजाब)**
२६	४५	९	श.	४७	४४	आश्ले.	४	४८	शु.	४	१४	तै.	१६	०६	२२	६	१५	२२	सिंह	४	४८	६	४५	१७	२७	६	२०	०२	३६	
२६	३९	१०	र.	४९	४४	मघा	९	१७	ब्र.	३	५८	व.	१८	५९	२३	७	१६	२३	सिंह			६	४६	१७	२६	६	२१	०२	४९	भ. १८/५९ से ४९/४४ तक
२६	३४	११	चं.	४९	४९	पू. फा.	१२	०४	ऐं.	२	२०	ब.	२०	०२	२४	८	१७	२४	कन्या	२७	२९	६	४७	१७	२५	६	२२	०३	०६	शनि वक्री १३/३७, रमा एकादशी व्रत (स.)
									वै.	५९	१३																			
२६	३२	१२	मं.	४८	००	उ. फा.	१२	५८	वि.	५४	३७	कौ.	१९	१०	२५	९	१८	२५	कन्या			६	४८	१७	२५	६	२३	०३	२५	**गोवत्स द्वादशी**
२६	२७	१३	बु.	४४	२३	हस्त	१२	०२	प्री.	४८	३५	ग.	१६	२५	२६	१०	१९	२६	तुला	४०	५७	६	४९	१७	२४	६	२४	०३	४६	भ. ४४/२३ बाद, **प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी**
२६	२२	१४	गु.	३९	१४	चित्रा	९	२५	आ.	४१	२२	वि.	११	५९	२७	११	२०	२७	तुला			६	५०	१७	२३	६	२५	०४	०८	भ. ११/५९ तक, यूरेनस मार्गी ४६/५२, **नरक चतुर्दशी (पूर्व**, (B)
२६	२२	३०	शु.	३२	५०	स्वा.	५	२५	सौ.	३३	०८	च.	६	१०	२८	१२	२१	२८	वृश्चिक	४६	३९	६	५०	१७	२३	६	२६	०४	३३	मंगल स्वा. मे २/४६, बुध ज्ये. में ११/५८, शुक्र चित्रा मे ८/५६, (C)

(A) करक चतुर्थी व्रत, करवा चौथ, (चन्द्रोदय घं. १९ मि. ३८), **(B) अरुणोदय वाली)**, श्रीहनुमान जयन्ती, **(C) दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन**, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन)

कार्त्ति. कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५६/५२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	७	५	५	३	०	६
१९	२८	०२	०८	१४	१५	०३	०७	०७
५९	२३	३७	०३	४९	४५	२५	२१	२१
३२	३५	०८	३५	१६	०४	००	५१	५१
६०	७४०	३९	८४	११	७३	०	३	३
१२	५४	४४	४७	४०	९	१२	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

८ बु. | सू. म. ७ के. | गु. ६ शु. | ९ | ५ | १० | श. ४ चं. | रा. १ | ११ | ३ | १२ | २

लोक भविष्यः— सूर्य-मंगल का राहु के साथ समसप्तक एवं शनि के साथ राहु का दशम-चतुर्थ सम्बन्ध विशेष प्रतिकूल राजनैतिक-सामाजिक घटनाओं को जन्म देगा। वायुवेग, अग्निकाण्ड आदि से हानि हो। कहीं धार्मिक एवं सामाजिक विषयों को लेकर उपद्रव से अशान्ति व्याप्त हो। इस पक्ष में पंचमी मंगलवारी होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, मंहगाई बढ़ेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः— पक्षारम्भ में रुई, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों, तेल, घी, सोना, चांदी, गेहूं, चना, हल्दी में मन्दा रहे। १ नवम्बर को रुई, कपास,बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड एवम् अनाजों में तेजी बने। ४ नवम्बर को रुई, उड़द, तिल, तेल, अलसी तेज हों। ८ नवम्बर को चावल, घी, अलसी, सरसों, सिक्का, कली, ज्वार, बाजरा में तेजी रहे। १२ नवम्बर को घी, गुड़, खाण्ड और चावल में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

८ बु. | सू. म. ७ के. चं. | गु. ६ शु. | ९ | ५ | १० | श. ४ | रा. १ | ११ | ३ | १२ | २

कार्त्ति. कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५६/४०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	७	५	५	३	०	६
२७	०२	०७	१७	१६	२४	०३	०६	०६
०१	२६	१५	३८	०९	१८	२४	५९	५९
३९	३४	५२	५५	३७	३४	०१	३६	३६
६०	८८५	३९	७७	११	७३	०	३	३
२५	५	५६	५१	१२	३६	३५	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षणः— अक्तूबर ३१, नवम्बर १, २, ४, ५, ८, ९ एवम् १२ को जम्मू-काश्मीर, हि. प्र. एवम् उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि हो। हि. प्र. एवम् काश्मीर के उन्नतशिखरों पर कहीं हिमपात हो, उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगे।

शकुन विचारः— कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो सरसों, तिल, तेल तेज होंगे; शीघ्र ही स्टॉक से निःसंदेह लाभ होगा। दीपावली की सायं को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें खराब होने से तेजी और पकड़ेगी।

(१३ से २६ नवम्बर तक सन् २००४ ई.)

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ कार्तिक शुक्ल पक्ष १७

(१३ से २६ नवम्बर तक सन् २००४ ई.)
दक्षिणगोल, दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शनः सायं बु. पश्चिम में और प्रातः मं. शु. पूर्व में दीखेंगे और उस समय उनसे ऊपर गु. पश्चिम कपाल में होगा ।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवम्बर	श. कार्तिक	मु. रमजा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१७	१	श.	२५	३०	विशा. अनु.	० ५४	१८ २९	शो.	२४	०८	ब.	२५	३०	२९	१३	२२	२९	वृश्चिक			६	५१	१७	२२	६	२७	०४	५७	गोक्रीड़ा, बलिपूजा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
२६	१५	२	र.	१७	३८	ज्ये.	४८	२२	अ.	१४	४२	कौ.	१७	३८	३०	१४	२३	३०	धनु	४८	२२	६	५२	१७	२२	६	२८	०५	२५	चन्द्र दर्शन, मु. १५, **भाई दूज, यमद्वितीया, विश्वकर्मा पूजा**
२६	१०	३	चं.	९	३८	मूल	४२	२२	सु. धृ.	५ ५५	०८ ४४	ग.	९	३८	मा. १	१५	२४	श. १	धनु			६	५३	१७	२१	६	२९	०५	५४	भ. ३५/४४ बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में ५३/३४, मु. ३०, (A)
२६	०७	४	मं.	१	५३	पू. षा.	३६	४६	शू.	४६	४६	वि.	१	५३	२	१६	२५	२	मकर	५०	२७	६	५४	१७	२१	७	००	०६	२५	भ. १/५३ तक
अवम		५	मं.	५४	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय
२६	०२	६	बु.	४८	२२	उ. षा.	३१	५७	गं.	३८	३०	कौ.	२१	२५	३	१७	२६	३	मकर			६	५५	१७	२०	७	०१	०६	५७	शुक्र तुला मे ३४/२६, व. शनि पुन. ४ में ५३/२८, **सूर्यषष्ठी**
२६	००	७	गु.	४३	०८	श्रव.	२८	०९	वृ.	३१	०४	ग.	१५	३७	४	१८	२७	४	कुम्भ	५६	४०	६	५६	१७	२०	७	०२	०७	३१	भ. ४३/८ बाद, पंचक प्रारम्भ ५६/४०
२५	५५	८	शु.	३९	१३	धनि.	२५	३३	धृ.	२४	३६	वि.	११	०१	५	१९	२८	५	कुम्भ			६	५७	१७	१९	७	०३	०८	०६	भ. ११/१ तक, सूर्य अनु. में ११/४४, राहु अश्वि. २ में ६/९, (B)
२५	५५	९	श.	३६	३७	शत.	२४	१७	व्या.	११	१४	बा.	७	४५	६	२०	२९	६	कुम्भ			६	५७	१७	१९	७	०४	०८	४२	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी
२५	५२	१०	र.	३५	२०	पू. भा.	२४	१९	ह.	१४	५३	तै.	५	४७	७	२१	३०	७	मीन	९	१०	६	५८	१७	१९	७	०५	०९	१६	सूर्य सायन धनु में ५४/४४
२५	४७	११	चं.	३५	२१	उ. भा.	२५	३६	व.	११	३४	व.	५	१०	८	२२	मा. १	८	मीन			६	५९	१७	१८	७	०६	०९	५५	भ. ५/१० से ३५/२१ तक, शुक्र स्वा. में ५८/४३, (C)
२५	४४	१२	मं.	३६	३४	रेव.	२८	०५	सि.	९	१३	ब.	५	४८	९	२३	२	९	मेष	२८	०५	७	००	१७	१८	७	०७	१०	३४	पचक समाप्त २८/५, **तुलसी विवाह**
२५	४२	१३	बु.	३८	५४	अश्वि.	३१	३८	व्य.	७	४४	कौ.	७	३५	१०	२४	३	१०	मेष			७	०१	१७	१८	७	०८	११	१५	बुध मूल धनु में ३/५४, **प्रदोष व्रत**
२५	३७	१४	गु.	४२	१४	भर.	३६	१०	व.	७	०४	ग.	१०	२६	११	२५	४	११	वृष	५२	२४	७	०२	१७	१७	७	०९	११	५७	भ. ४२/१४ बाद, वैकुण्ठ चतुर्दशी
२५	३४	१५	शु.	४६	२८	कृत्ति.	४१	३३	प.	७	०६	वि.	१४	१३	१२	२६	५	१२	वृष			७	०३	१७	१७	७	१०	१२	४०	भ. १४/१३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, **श्रीगुरु नानक जयन्ती**, (D)

(A) शव्वाल मु. प्रारम्भ, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु हस्त ३ में ४०/१४, (B) केतु चित्रा ४ में ६/१०, **गोपाष्टमी**, (C) देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), **शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, भीष्म पंचक प्रारम्भ**, (D) **कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिक स्नान समाप्त, चातुर्मास्य व्रत नियम समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त**

कार्ति. शुक्ल ८ शुक्र, इष्ट ५६/२२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	६	७	५	६	३	०	६
०४	१३	११	२६	१७	०२	०३	०६	०६
०५	४२	५५	०५	२६	५४	१७	३७	३७
०६	३९	५६	५०	२७	५७	३२	२०	२०
६०	८०७	४०	६२	१०	७३	१	३	३
३४	२५	६	४१	३९	५८	२२	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. १	शत. ३	स्वा. २	ज्ये. ३	हस्त ३	चित्रा ३	पुन. ४	अश्वि. २	चित्रा ४

कुण्डली सूर्योदये

९, के. ७ शु., सू. ८ बु., म., १०, ६ गु., चं. ११, ५, १२, २, श. ४, १ रा., ३

लोक भविष्यः— इसमास में पांच शुक्रवार हैं। प्रजा में सुख-समृद्धि रहे; सर्वत्र सुभिक्ष रहे;-

"शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्।
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते।।"

धनुराशि का बुध खाद्य वस्तुओं में महंगाई का सूचक है। तुलाराशि का शुक्र किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को कोई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान कराए।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः— १५ नवम्बर को रुई, ताम्बा, चांदी, सोना और ऊनी कपड़ों में तेजी बने। १६ नवम्बर को रुई, चांदी में पहले तेजी, बाद में मन्दा; गुड़, खाण्ड में कुछ तेजी का वातावरण बने। पक्षान्त में रुई, कपास, सूत और चांदी में मन्दा रहे।

कुण्डली सूर्योदये

बु. ९, के. ७ शु., सू. ८ म., १०, ६ गु., ११, ५, चं. २, श. ४, १२, १ रा., ३

कार्ति. शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५६/७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	६	८	५	६	३	०	६
११	१२	१६	०१	१८	११	०३	०६	०६
०९	५७	३७	५३	३९	३३	०५	१५	१५
३३	२५	१७	२१	१३	४१	४३	०५	०५
६०	७२३	४०	२६	१०	७४	२	३	३
४३	५०	१८	२८	२	१७	७	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	रोहि. १	स्वा. ३	मूल १	हस्त ३	स्वा. २	पुन. ४	अश्वि. २	चित्रा ४

आकाश लक्षणः— नवम्बर १४ से २० और २३ नवम्बर को जम्मू-काश्मीर, हि. प्र. में जोरदार हिमपात के समाचार मिलेंगे। उत्तरी भारत में भी कहीं बादलचाल, बूंदाबांदी व खण्डवृष्टि के योग हैं।

शकुन विचारः— कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेष (घेरा) दिखाई दे, तो तेल के स्टॉक से आगे लाभ मिलता है।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८

(२७ नवम्बर से ११ दिसम्बर तक सन् २००४ ई.)
दक्षिणगोल, दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन: बु. ४ दिसं को पश्चिम में अस्त होगा । प्रात: पूर्व में मं. शु. परस्पर आसन्न और उनसे ऊपर गु. दिखाई पड़ेगा । इसी समय श. पश्चिम कपाल में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	तारीखें अं. नवम्बर	तारीखें श. मार्गशीर्ष	तारीखें मु. ज़ुल्हिज्जा	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३४	१	श.	५१	२९	रोहि.	४७	४२	शि.	७	५०	बा.	१८	५४	१३	२७	६	१३	वृष			७	०३	१७	१७	७	११	१३	२५	
२५	३२	२	र.	५७	११	मृग.	५४	२९	सि.	९	०४	तै.	२४	१७	१४	२८	७	१४	मिथुन	२१	०२	७	०४	१७	१७	७	१२	१४	०८	
२५	२९	३	चं.	६०	००	आर्द्रा	६०	००	सा.	१०	४६	व.	३०	१४	१५	२९	८	१५	मिथुन			७	०५	१७	१७	७	१३	१४	५५	भ. ३०/१४ बाद
२५	२७	३	मं.	३	२१	आर्द्रा	१	४४	शु.	१२	४८	वि.	३	२१	१६	३०	९	१६	कर्क	५२	१८	७	०६	१७	१७	७	१४	१५	४४	भ. ३/२१ तक, बुध वक्री २६/४७, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२५	२४	४	बु.	९	४४	पुन.	९	११	शु.	१४	५६	बा.	९	४४	१७	दि. १	१०	१७	कर्क			७	०७	१७	१७	७	१५	१६	३४	मंगल विशा. में ५७/१७, **दिसम्बर प्रारम्भ**
२५	२२	५	गु.	१५	५८	पुष्य	१६	३०	ब्र.	१६	५७	तै.	१५	५८	१८	२	११	१८	कर्क			७	०८	१७	१७	७	१६	१७	२५	सूर्य ज्ये. में २२/१३
२५	२२	६	शु.	२१	४१	आश्ले.	२३	१९	ऐं.	१८	३४	व.	२१	४१	१९	३	१२	१९	सिंह	२३	१९	७	०८	१७	१७	७	१७	१८	१८	भ. २१/४१ से ५४/८ तक, शुक्र विशा. में ४४/१४
२५	१९	७	श.	२६	१८	मघा	२९	०५	वै.	१९	२३	ब.	२६	१८	२०	४	१३	२०	सिंह			७	०९	१७	१७	७	१८	१९	०९	व. बुध पश्चिम में अस्त १३/३४
२५	१७	८	र.	२९	२७	पू. फा.	३३	२५	वि.	१९	०७	कौ.	२९	२७	२१	५	१४	२१	कन्या	४९	१२	७	१०	१७	१७	७	१९	२०	०५	गुरु हस्त ४ में १७/१, श्रीकालाष्टमी, **श्रीभैरवाष्टमी**
२५	१४	९	चं.	३०	४५	उ. फा.	३५	५९	प्री.	१७	२९	तै.	०	२०	२२	६	१५	२२	कन्या			७	११	१७	१७	७	२०	२१	०१	व. बुध ज्ये. ४ वृश्चिक में २/५५
२५	१२	१०	मं.	३०	०२	हस्त	३६	३३	आ.	१४	१९	व.	०	३८	२३	७	१६	२३	कन्या			७	१२	१७	१७	७	२१	२१	५९	भ. ०/३८ से ३०/२ तक
२५	१२	११	बु.	२७	१६	चित्रा	३५	०९	सौ.	९	३४	बा.	२७	१६	२४	८	१७	२४	तुला	६	०६	७	१२	१७	१७	७	२२	२२	५९	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)
२५	०९	१२	गु.	२२	२९	स्वा.	३१	४८	शो. अ.	३ ५५	१० १९	तै.	२२	२९	२५	९	१८	२५	तुला			७	१३	१७	१७	७	२३	२३	५६	**प्रदोष व्रत**
२५	०७	१३	शु.	१६	००	विशा.	२६	४८	सु.	४६	१७	व.	१६	००	२६	१०	१९	२६	वृश्चिक	१३	११	७	१४	१७	१७	७	२४	२४	५८	भ. १६/० से ४२/१४ तक
२५	०९	१४	श.	८	११	अनु.	२०	३४	धृ.	३६	१९	श.	८	११	२७	११	२०	२७	वृश्चिक			७	१४	१७	१८	७	२५	२६	०१	शुक्र वृश्चिक में ४६/१२, **शनैश्चरी अमावस**
अवम		३०	श.	५९	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस्या तिथिक्षय

मार्ग. कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५५/४९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	६	८	५	६	३	०	६
२०	०१	२२	००	२०	२२	०२	०५	०५
१६	२४	४१	०७	०५	४३	४३	४६	४६
५१	०८	०७	०४	५८	३९	०६	२८	२८
६०	७७४	४०	६३	९	७४	२	३	३
५५	५५	३५	५०	६	३७	५९	११	११
—	—	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

१० ; ९ बु. ; सू. ८ ; के. ७ शु. मं. ; ६ गु. ; ११ ; चं. ५ ; १२ ; २ ; श. ४ ; १ रा. ; ३

लोक भविष्य:— इस मास में पांच शनिवार हैं। शनि वक्री है, बुध भी वक्री हो रहा है, पक्षान्त में चतुर्ग्रही योग बन रहा है। अमेरिका, चीन, जापान एवं किसी मुस्लिमदेश में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। कहीं बम-विस्फोट, यानदुर्घटना एवं अग्निकाण्ड से भी हानि हो। शीतजन्य रोगों से भी जनता परेशान रहे -

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महघर्ता।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— ३० नवम्बर के लगभग घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी एवम् अनाजों में कुछ मन्दे का रुख बने। १ से ४ दिसम्बर तक गेहूं, सोना, चांदी, अलसी, सरसों, अरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़ एवम् खाण्ड में तेजी रहे। रुई, कपास में पहले मन्दा, बाद में तेजी बने। ५ दिसम्बर को रुई में अचानक झटके का मन्दा, चांदी तेज; पाट, हैसियन और शेयरों में भी मन्दा रहे। ७ दिसम्बर को रुई, घी, तेल, सरसों और चांदी में तेजी बने। ११ दिसम्बर के करीब बाजार अस्थिर होंगे। अनाज, अलसी में तेजी बने।

आकाश लक्षण:— नवम्बर ३०, दिसम्बर १, २, ३, ५, ७, ११ को उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि व धुन्ध का वातावरण बने।

कुण्डली सूर्योदये

१० ; ९ ; सू. ८ बु. ; के. ७ शु. मं. ; चं. ; ६ गु. ; ११ ; ५ ; १२ ; २ ; श. ४ ; १ रा. ; ३

मार्ग. कृष्ण १४ शनि, इष्ट ५५/३९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	७	५	७	३	०	६
२६	२५	२६	२२	२०	००	०२	०५	०५
२२	३०	४५	२६	५८	११	२३	२७	२७
४१	१६	०३	३९	५६	४८	४७	२३	२३
६१	९१२	४०	७६	८	७४	३	३	३
१	४४	४६	४०	२४	४७	३२	११	११
—	—	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

169 (१२ से २६ दिसम्बर तक सन् २००४ ई.)

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ (१२ से २६ दिसम्बर तक सन् २००४ ई.)

दक्षिणगोल, दक्षिण–उत्तरायण, हेमन्त – शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शनः १६ दिसं से बु. प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा । प्रातः मं., शु. पूर्व में, गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न और श. पश्चिम में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	०७	१	र.	५०	०३	ज्ये.	१३	२६	शू.	२५	४३	किं.	२४	४६	२८	१२	२१	२८	धनु	१३	२६	७	१५	१७	१८	७	२६	२७	०२	
२५	०४	२	चं.	४०	४४	मूल पू.षा	५ ५८	५५ ३१	गं.	१४	५४	बा.	१५	२२	२९	१३	२२	२९	धनु			७	१६	१७	१८	७	२७	२८	०६	चन्द्र दर्शन, मु. ३०
२५	०२	३	मं.	३१	४७	उ.षा.	५१	४४	वृ. धु	४ ५४	१४ ०८	तै.	६	०९	३०	१४	२३	जि.१	मकर	११	४५	७	१७	१७	१८	७	२८	२९	११	भ. ५७/३८ बाद, शुक्र अनु. में २६/३३, जिल्काद मु. प्रारम्भ
२५	०५	४	बु.	२३	४५	श्रव.	४५	५५	व्या.	४४	४९	वि.	२३	४५	पौ.१	१५	२४	२	मकर			७	१७	१७	१९	७	२९	३०	१७	भ. २३/४५ तक, सं. सूर्य मूल धनु में २९/११, मु. ३०, पुण्यकाल, (A)
२५	०२	५	गु.	१६	५५	धनि.	४१	३१	ह.	३६	४१	बा.	१६	५५	२	१६	२५	३	कुम्भ	१३	३२	७	१८	१७	१९	८	००	३१	२१	पंचक प्रारम्भ १३/३२, मंगल वृश्चिक में ४२/१०, व. बुध पूर्व में, (B)
२५	०२	६	शु.	११	४१	शत.	३८	४७	व.	२९	५२	तै.	११	४१	३	१७	२६	४	कुम्भ			७	१८	१७	१९	८	०१	३२	२७	चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र), मित्र सप्तमी
२५	०२	७	श.	८	११	पू.भा.	३७	४७	सि.	२४	२७	व.	८	११	४	१८	२७	५	मीन	२२	५१	७	१९	१७	२०	८	०२	३३	३१	भ. ८/११ से ३७/९ तक, व. बुध अनु. ४ में ५४/३३
२५	००	८	र.	६	३२	उ.भा.	३८	३६	व्य.	२०	३०	व.	६	३२	५	१९	२८	६	मीन			७	२०	१७	२०	८	०३	३४	३९	
२५	०२	९	चं.	६	४५	रेव.	४१	०८	व.	१७	५८	कौ.	६	४५	६	२०	२९	७	मेष	४१	०८	७	२०	१७	२१	८	०४	३५	४६	पंचक समाप्त ४१/८, बुध मार्गी ११/४०
२५	००	१०	मं.	८	३५	अश्वि.	४५	०५	प.	१६	३७	ग.	८	३५	७	२१	३०	८	मेष			७	२१	१७	२१	८	०५	३६	५१	भ. ४०/३ बाद, सूर्य सायन मकर में २७/९, उत्तरायण प्रारम्भ, (C)
२५	०२	११	बु.	११	५०	भर.	५०	११	शि.	१६	२०	वि.	११	५०	८	२२	पौ.१	९	मेष			७	२१	१७	२२	८	०६	३७	५९	भ. ११/५० तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), **शक पौष प्रारम्भ**, (D)
२५	००	१२	गु.	१६	०९	कृत्ति.	५६	१३	सि.	१६	४९	बा.	१६	०९	९	२३	२	१०	वृष	६	३७	७	२२	१७	२२	८	०७	३९	०५	**प्रदोष व्रत**
२५	०२	१३	शु.	२१	१९	रोहि.	६०	००	सा.	१७	५७	तै.	२१	१९	१०	२४	३	११	वृष			७	२२	१७	२३	८	०८	४०	१४	
२५	०२	१४	श.	२७	०२	रोहि.	२	५२	शु.	१९	३०	व.	२७	०२	११	२५	४	१२	मिथुन	३६	२१	७	२२	१७	२३	८	०९	४१	२०	भ. २७/२ बाद, शुक्र ज्ये. में ७/७
२५	०२	१५	र.	३३	०५	मृग.	९	५३	शु.	२१	१७	वि.	०	०१	१२	२६	५	१३	मिथुन			७	२३	१७	२४	८	१०	४२	२६	भ. ०/१ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती

(A) मध्याह्न के बाद, (B) उदित १९/२, स्कन्द (गुह) षष्ठी, (C) शिशिर ऋतु प्रारम्भ, मंगल अनु. मे ३५/१०, बुध ज्ये. मे ३१/१२, (D) श्रीगीता जयन्ती

मार्ग. शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५५/२५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	७	५	७	३	०	६
०४	२०	०२	१६	२२	१०	०१	०५	०५
३१	१७	११	३२	०२	१०	५३	०१	०१
१०	३८	५२	०२	४०	३४	२५	५७	५७
६१	७६२	४०	२	७	७४	४	३	३
५	५३	५८	१२	२३	५५	६	११	११
—	—	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल २	रेव. २	विशा. ४	अनु. ४	हस्त ४	अनु. ३	पुन. ४	अश्वि. २	चित्रा ४

कुण्डली सूर्योदये

१० | सू. ९ | मं. ८ बु. शु. | ७ के. | ११ | १२ चं. | ६ गु. | १ रा. | ३ | ५ | २ | ४ श.

लोक भविष्यः— वृश्चिक राशिस्थ मंगल, वक्री बुध के साथ राशि सम्बन्ध बना रहा है, बुध १६ दिसम्बर को वक्रस्थिति में उदित हो रहा है-

" नोत्पात परित्यक्तो चन्द्रजो व्रजत्युदयम् "।

कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। प्राकृतिक उत्पात, दुर्भिक्ष आदि से कुछ प्रान्तों में जनता परेशान रहे। २० दिसम्बर को बुध के मार्गी होने पर भारी शीतप्रकोप (शीतलहर) से जनहानि के भी समाचार मिलेंगे। मार्गशीर्ष में धनुसंक्रान्ति कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की सूचक है।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः— पक्षारम्भ मे बाजार अस्थिर रहें। १५ दिसम्बर से रुई, कपास, तिल, तेल, सोना, चांदी, गुड़, सूत, अनाज और दालवाना में भी तेजी का रुख रहे। २० दिसम्बर के लगभग चांदी और रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने; गेहूं, जौ, चना तेज; अलसी, अरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली में मन्दा आए। सोना तेज रहे। २१ दिसम्बर को रुई, कपास, गेहूं, लाल मिर्च तेज। २५ दिसम्बर के लगभग सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल व हींग में मन्दे के योग हैं।

आकाश लक्षणः— दिसम्बर १४ से १६, २०, २१ और २५ को भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं शीतलहर से जनहानि के भी समाचार मिलेंगे। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि और धुन्ध का वातावरण बना रहे।

शकुन विचारः— यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र के समय मेघ गरजे, तो जनता में संक्रामक रोग हों। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुष दीखे, तो आगे वर्षा अच्छी हो।

कुण्डली सूर्योदये

१० | सू. ९ | मं. ८ बु. शु. | ७ के. | ११ | १२ | ६ गु. | १ रा. | ३ चं. | ५ | २ | ४ श.

मार्ग. शुक्ल १५ रवि, इष्ट ५५/१७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	७	५	७	३	०	६
११	१५	०६	१९	२२	१८	०१	०४	०४
३८	४०	५९	३४	५१	५५	२३	३९	३९
५१	३३	१७	३८	२२	१९	२२	४२	४२
६१	७१२	४१	५१	६	७५	४	३	३
७	२८	११	५	२३	१	३१	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ४	आर्द्रा ३	अनु. १	ज्ये. १	हस्त ४	ज्ये. १	पुन. ४	अश्वि. २	चित्रा ४

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ पौष कृष्ण पक्ष २०

(२७ दिसम्बर सन् २००४ से १० जनवरी तक सन् २००५ ई.)
दक्षिणगोल, उत्तरायण, शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन: प्रातः बु. शु. पूर्व में, मं. उनसे ऊपर, गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न और श. पश्चिम में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. पौष	तारीखें अं. दिसम्बर	तारीखें श. पौष	तारीखें मु. जिल्हिज्जा	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	०४	१	चं.	३९	२३	आर्द्रा	१७	१०	ब्र.	२३	१८	बा.	६	१३	१३	२७	६	१४	मिथुन			७	२३	१७	२५	८	११	४३	३६	
२५	०२	२	मं.	४५	४१	पुन.	२४	३१	ऐं.	२५	१९	तै.	१२	३१	१४	२८	७	१५	कर्क	७	४०	७	२४	१७	२५	८	१२	४४	४३	सूर्य पू. षा. में ३४/३५
२५	०४	३	बु.	५१	५१	पुष्य	३१	४९	वै.	२७	१८	व.	१८	४८	१५	२९	८	१६	कर्क			७	२४	१७	२६	८	१३	४५	५२	भ. १८/४८ से ५१/५१ तक
२५	०७	४	गु.	५७	३५	आश्ले.	३८	४९	वि.	२९	०५	ब.	२४	४९	१६	३०	९	१७	सिंह	३८	४९	७	२४	१७	२७	८	१४	४७	००	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२५	०५	५	शु.	६०	००	मघा	४५	११	प्री.	३०	२३	कौ.	३०	१३	१७	३१	१०	१८	सिंह			७	२५	१७	२७	८	१५	४८	०८	गुरु चित्रा १ में ३६/४०
२५	०७	५	श.	२	३८	पू. फा.	५०	३८	आ.	३१	०२	तै.	२	३८	१८	ज. १	११	१९	सिंह			७	२५	१७	२८	८	१६	४९	१९	यूरेनस शत. २ मे १७/१, जनवरी सन् २००५ प्रारम्भ,
२५	१०	६	र.	६	३५	उ. फा.	५४	४७	सौ.	३०	४५	व.	६	३५	१९	२	१२	२०	कन्या	६	४९	७	२५	१७	२९	८	१७	५०	२८	भ. ६/३५ से ३८/२ तक
२५	१२	७	चं.	९	०४	हस्त	५७	१६	शो.	२९	१५	ब.	९	०४	२०	३	१३	२१	कन्या			७	२५	१७	३०	८	१८	५१	३७	नेपच्यून श्रव. ४ मे ८/२६
२५	१२	८	मं.	९	४५	चित्रा	५७	५२	अ.	२६	२०	कौ.	९	४५	२१	४	१४	२२	तुला	२७	४९	७	२५	१७	३०	८	१९	५२	४६	शुक्र मूल धनु में ४६/३१
२५	१५	९	बु.	८	२८	स्वा.	५६	२६	सु.	२१	५०	ग.	८	२८	२२	५	१५	२३	तुला			७	२५	१७	३१	८	२०	५३	५५	भ. ३७/३ बाद, बुध मूल धनु में ३०/४९
२५	१४	१०	गु.	५	०५	विशा.	५३	०७	धृ.	१५	४२	वि.	५	०५	२३	६	१६	२४	वृश्चिक	३९	०७	७	२६	१७	३२	८	२१	५५	०५	भ. ५/५ तक, सफला एकादशी व्रत (स.)
अवम		११	गु.	५९	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय
२५	१७	१२	शु.	५२	४८	अनु.	४८	०३	शू. गं.	८ ५९	०४ ०६	कौ.	२६	३०	२४	७	१७	२५	वृश्चिक			७	२६	१७	३३	८	२२	५६	१७	
२५	१७	१३	श.	४४	२६	ज्ये.	४१	३६	वृ.	४९	०३	ग.	१८	४६	२५	८	१८	२६	धनु	४१	३६	७	२६	१७	३३	८	२३	५७	२७	भ. ४४/२६ बाद, **शनि प्रदोष व्रत**
२५	२०	१४	र.	३५	०७	मूल	३४	१०	ध्रु.	३८	१५	वि.	९	५२	२६	९	१९	२७	धनु			७	२६	१७	३४	८	२४	५८	३७	भ. ९/५२ तक, मंगल ज्ये. में ५७/११
२५	२२	३०	चं.	२५	१९	पू. षा.	२६	१५	व्या.	२७	०४	च.	०	१५	२७	१०	२०	२८	मकर	३९	१५	७	२६	१७	३५	८	२५	५९	४७	सूर्य उ. षा. में ३९/२६, सोमवती अमावस

पौष कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५५/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	७	७	५	८	३	०	६
२०	०६	१३	२९	२३	००	००	०४	०४
४९	०४	११	१४	४३	१०	४१	११	११
०६	४७	०२	५७	१८	५६	१५	०५	०५
६१	८१८	४१	७६	४	७५	४	३	३
९	३	२७	१९	५९	८	५०	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य:— इस मास में पांच सोमवार एवं पांच मंगलवार होने से उत्तरी भारत की जनता में धनधान्य-समृद्धि रहे। सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों में कहीं सैनिक गतिविधि बढ़ेगी; कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन के भी संकेत मिलते हैं। अमेरिका-इंग्लैण्ड आदि देशों में भी कुछ विशेष ऐतिहासिक घटनाएं घटेंगी-

"सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्यसमृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा।।"
यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— २८ दिसम्बर को तिल, तेल, सरसों, बिनोला और चांदी में कुछ तेजी का रुख रहे। ३१ दिसम्बर के करीब चांदी में मन्दा आए। ४ जनवरी (२००५ ई.) को गेहूं, जौ, चना, चांदी, सोना में तेजी बने। रुई, कपास, सूत में अचानक मन्दा बने। १० जनवरी के लगभग अनाज, गुड़, खाण्ड, कपास, सरसों में तेजी हो।

कुण्डली सूर्योदये

पौष कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५५/९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	७	८	५	८	३	०	६
२६	०४	१७	०७	२४	०७	००	०३	०३
५६	०५	२०	१२	१०	४१	११	५२	५२
०४	०३	१४	५४	४१	४८	५३	००	००
६१	११६	४१	८३	३	७५	४	३	३
१०	४	३८	३३	५८	९	५७	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण:— दिसम्बर २८, ३१, जनवरी ४, ५, ६, १० के लगभग कहीं वायुवेग के साथ वर्षा व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में शीत लहर बनी रहे। कुछ भागों में धुन्ध से दुर्घटनाएं हों।

शकुन विचार:— यदि पौष कृष्ण पंचमी को वर्षा हो, तो आगे अच्छी वर्षा होगी; यदि इस पक्ष में अष्टमी के दिन बादलचाल एवम् वर्षा हो, तो आगे फरवरी में अनाज तेज हो।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ पौष शुक्ल पक्ष २१

(११ से २५ जनवरी तक सन् २००५ ई.)
दक्षिणगोल, उतरायण, शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन: २५ जन. को बु. पूर्व मे लुप्त हो जाएगा । प्रात: शु. पूर्व में, उससे ऊपर मं. और इसी समय गु. पश्चिम कपाल में होगा, और इस समय श. पश्चिम क्षितिज में डूबने को होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. जिल्का.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टें. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२५	१	म.	१५	३२	उ.षा	१८	२२	ह.	१५	५६	ब.	१५	३२	२८	११	२१	२९	मकर			७	२६	१७	३६	८	२७	००	५७	चन्द्र दर्शन, मु. ३०
२५	२७	२	बु.	६	१७	श्रव.	११	०१	व. सि.	५ ५५	१३ १९	कौ.	६	१७	२९	१२	२२	जि. १	कुम्भ	३७	४२	७	२६	१७	३७	८	२८	०२	०६	पंचक प्रारम्भ ३७/४२, **लोहड़ी (पं.)**, जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ
अवम		३	बु.	५८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय
२५	३०	४	गु.	५१	१३	धनि शत	४ ५९	४२ ५५	व्य.	४६	३६	व.	२४	२३	मा. १	१३	२३	२	कुम्भ			७	२६	१७	३८	८	२९	०३	१५	भ. २४/२३ से ५१/१३ तक, सं. सूर्य मकर में ५५/४३, मु. १५, (A)
२५	३५	५	शु.	४६	१०	पू.भा.	५६	५४	व.	३९	१७	ब.	१८	२७	२	१४	२४	३	मीन	४२	२८	७	२५	१७	३९	९	००	०४	२३	
२५	३५	६	श.	४३	०९	उ.भा	५५	५५	प.	३३	३४	कौ.	१४	२४	३	१५	२५	४	मीन			७	२५	१७	३९	९	०१	०५	२८	बुध पू.षा. में १४/३२, शुक्र पू.षा. में २५/१३
२५	३७	७	र.	४२	१७	रेव.	५७	००	शि.	२९	३१	ग.	१२	२७	४	१६	२६	५	मेष	५७	००	७	२५	१७	४०	९	०२	०६	३५	भ. ४२/१७ बाद, पंचक समाप्त ५७/०
२५	३९	८	चं.	४३	२९	अश्वि.	६०	००	सि.	२७	०६	वि.	१२	३८	५	१७	२७	६	मेष			७	२५	१७	४१	९	०३	०७	४१	भ. १२/३८ तक
२५	४२	९	मं.	४६	३४	अश्वि.	०	०३	सा.	२६	०८	बा.	१४	४८	६	१८	२८	७	मेष			७	२५	१७	४२	९	०४	०८	४६	
२५	४७	१०	बु.	५१	०४	भर.	४	५०	शु.	२६	२६	तै.	१८	४०	७	१९	२९	८	वृष	२१	१३	७	२४	१७	४३	९	०५	०९	५१	सूर्य सायन कुम्भ में ५३/४२
२५	५०	११	गु.	५६	३७	कृत्ति.	१०	५०	शु.	२७	३५	व.	२३	४५	८	२०	३०	९	वृष			७	२४	१७	४४	९	०६	१०	५२	भ. २३/४५ से ५६/३७ तक, राहु अश्वि. १ में ५९/११, केतु, (B)
२५	५२	१२	शु.	६०	००	रोहि.	१७	४३	ब्र.	२९	१९	ब.	२९	३९	९	२१	मा. १	१०	मिथुन	५१	२३	७	२४	१७	४५	९	०७	११	५४	वंजुली महाद्वादशी, **शक माघ प्रारम्भ**
२५	५७	१२	श.	२	४९	मृग.	२५	०५	ऐं.	३१	२५	बा.	२	४९	१०	२२	२	११	मिथुन			७	२३	१७	४६	९	०८	१२	५६	**शनि प्रदोष व्रत**
२५	५७	१३	र.	९	१२	आर्द्रा	३२	३२	वै.	३३	३३	तै.	९	१२	११	२३	३	१२	मिथुन			७	२३	१७	४६	९	०९	१३	५५	सूर्य श्रव. में ४५/१९
२६	००	१४	चं.	१५	३३	पुन.	३९	५३	वि.	३५	३५	व.	१५	३३	१२	२४	४	१३	कर्क	२३	०४	७	२३	१७	४७	९	१०	१४	५५	भ. १५/३३ से ४८/४२ तक, बुध उ.षा. मे १०/१७, (C)
२६	०४	१५	मं.	२१	४३	पुष्य	४७	००	प्री.	३७	२८	ब.	२१	४३	१३	२५	५	१४	कर्क			७	२२	१७	४८	९	११	१५	५४	बुध पूर्व में अस्त ३५/४२, **माघ स्नान प्रारम्भ**, पौषी पूर्णिमा

(A) पुण्यकाल अगला सारा दिन, व. शनि पुन. ३ मिथुन में १९/२०, **मकर संक्रान्ति**, (B) चित्रा ३ में ५९/११, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीसत्यनारायण व्रत

पौष शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ५५/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	७	८	५	८	२	०	६
०४	१२	२२	१७	२४	१६	२९	०३	०३
०३	१९	१२	१४	३४	२७	३७	२९	२९
५७	४५	१३	३६	४४	५६	१६	४५	४५
६१	७४३	४१	८८	२	७५	४	३	३
५	३०	४९	४९	४४	९	५५	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	अश्वि. ४	ज्ये. २	पू.षा. २	चित्रा १	पू.षा. १	पुन. ३	अश्वि. २	चित्रा ४

कुण्डली सूर्योदये

११ बु. ९ शु.
सू. १०
१२ ८ मं.
रा. १ चं. ७ के.
२ ४ ६ गु.
श. ३ ५

लोक भविष्य:— मकर संक्रान्तिवाले दिन (१३ जनवरी २००५ ई. को) शनि वक्री पोजीशन से चलता हुआ, पुनः मिथुनराशि में प्रवेश करेगा। इस प्रकार शनि-मंगल का षडष्टक भी बन गया है। यह ग्रहस्थिति मुस्लिमराष्ट्रों एवं अमेरिका, चीन, रूस आदि देशों के लिए कहीं भयावह-स्थिति को जन्म देगी। कुछ देश आपस में उलझकर शान्तिभंग का कारण बनेंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— १३ जनवरी के करीब घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, अनाज और बारदाना में मन्दे का रुख रहे। १४ जनवरी को रुई में तेजी बने; नमक, तिलहन, तेल, लोहे में भी तेजी का ही वातावरण बने। सोने में कुछ मन्दा आ सकता है। २० जनवरी के करीब गुड़, लाख और कांसी में तेजी बने। २४ जनवरी के करीब अनाजों के भाव ऊपर-नीचे चलें।

कुण्डली सूर्योदये

११ बु. ९ शु.
सू. १०
१२ ८ मं.
रा. १ ७ के.
चं. ४
२ ६ गु.
श. ३ ५

पौष शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ५५/१९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	७	८	५	८	२	०	६
१२	१८	२७	२९	२४	२६	२८	०३	०३
१२	२०	४७	२२	५१	२९	५८	०४	०४
०९	१०	३३	४५	२४	११	३०	१९	१९
६०	७२०	४२	९३	१	७५	४	३	३
५८	२१	३	५०	१५	९	४३	११	११
—	—	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	आश्ले. १	ज्ये. ४	उ.षा. १	चित्रा १	पू.षा. ४	पुन. ३	अश्वि. १	चित्रा ३

आकाश लक्षण:— जनवरी १२, १३, १४, १५, २०, २३, २४, २५ को उत्तरी भारत शीतग्रस्त रहेगा। कुछ स्थानों पर वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि भी होगी। काश्मीर व हि.प्र. में कहीं हिमपात होने के समाचार भी मिलेंगे।

शकुन विचार:— पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाछन्न रहे, तो फसल अच्छी हो। यदि पौषशुक्ल पंचमी को वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ माघ कृष्ण पक्ष २२

(२६ जनवरी से ८ फरवरी तक सन् २००५ ई.)
दक्षिणगोल, उत्तरायण, शिशिर ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. माघ	तारीखें अं. जनवरी	तारीखें श. माघ	तारीखें मु. ज़िल्हिज	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय–कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शनः बु. अस्त है । प्रातः शु. पूर्व में, उससे ऊपर मं., और गु. पश्चिम कपाल में. होगा । सायं श. पूर्व क्षितिज से उठता दीखेगा।
२६	०७	१	बु.	२७	२७	आश्ले.	५३	४३	आ.	३९	००	कौ.	२७	२७	१४	२६	६	१५	सिंह	५३	४३	७	२२	१७	४९	९	१२	१६	५०	बुध मकर मे १९/१४, शुक्र उ. षा. मे ४/१ ,गणतन्त्र दिवस,
२६	१२	२	गु.	३२	४३	मघा	५९	५१	सौ.	४०	११	तै.	०	११	१५	२७	७	१६	सिंह			७	२१	१७	५०	९	१३	१७	४८	
२६	१५	३	शु.	३७	१८	पू. फा.	६०	००	शो.	४०	५०	व.	५	०६	१६	२८	८	१७	सिंह			७	२१	१७	५१	९	१४	१८	४२	भ. ५/६ से ३७/१८ तक, शुक्र मकर में ४३/४६
२६	१९	४	श.	४१	०४	पू. फा.	५	२०	अ.	४०	५२	ब.	९	१९	१७	२९	९	१८	कन्या	२१	३४	७	२०	१७	५२	९	१५	१९	३८	मंगल मूल धनु में ४/१९, श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत , (A)
२६	२२	५	र.	४३	४६	उ. फा.	९	५३	सु.	४०	०४	कौ.	१२	३३	१८	३०	१०	१९	कन्या			७	२०	१७	५३	९	१६	२०	३१	
२६	२७	६	च.	४५	०५	हस्त	१३	२०	धृ.	३८	१८	ग.	१४	३६	१९	३१	११	२०	तुला	४४	३२	७	१९	१७	५४	९	१७	२१	२६	भ. ४५/५ बाद
२६	२७	७	मं.	४४	५४	चित्रा	१५	२१	शू.	३५	१९	वि.	१५	११	२०	फ. १	१२	२१	तुला			७	१९	१७	५४	९	१८	२२	१७	भ. १५/११ तक, बुध श्रव. मे ३५/६, **फरवरी प्रारम्भ**
२६	३२	८	बु.	४३	०१	स्वा.	१५	५०	गं.	३१	०४	बा.	१४	०९	२१	२	१३	२२	तुला			७	१८	१७	५५	९	१९	२३	१०	गुरु वक्री ०/५७
२६	३७	९	गु.	३९	१९	विशा.	१४	३६	वृ.	२५	२६	तै.	११	२३	२२	३	१४	२३	वृश्चिक	०	०५	७	१७	१७	५६	९	२०	२४	००	
२६	४०	१०	शु.	३३	५७	अनु.	११	३८	ध्रु.	१८	२४	व.	६	५०	२३	४	१५	२४	वृश्चिक			७	१७	१७	५७	९	२१	२४	४९	भ. ६/५० से ३३/५७ तक
२६	४५	११	श.	२७	०७	ज्ये.	७	०९	व्या.	१०	०९	ब.	०	४३	२४	५	१६	२५	धनु	७	०९	७	१६	१७	५८	९	२२	२५	३९	सूर्य धनि. में ५३/४०, शुक्र श्रव. में ४३/१, षट्तिला एकादशी व्रत (स.)
२६	५०	१२	र.	१९	०६	मूल	१	२१	ह.	०	५१	तै.	१९	०६	२५	६	१७	२६	धनु			७	१५	१७	५९	९	२३	२६	२७	**प्रदोष व्रत**
						पू. षा.	५४	३६	व.	५०	४६																			
२६	५४	१३	च.	१०	१७	उ. षा.	४७	१७	सि.	४०	१२	व.	१०	१७	२६	७	१८	२७	मकर	७	४८	७	१४	१८	००	९	२४	२७	१३	भ. १०/१७ से ३५/४० तक
२६	५४	१४	मं.	१	०२	श्रव.	३९	५७	व्य.	२९	३२	श.	१	०२	२७	८	१९	२८	मकर			७	१४	१८	००	९	२५	२७	५८	प्लूटो मूल १ धनु में २७/२, **भौमवती अमावस, मौनी अमावस — , (B)**
अवम		३०	मं.	५१	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस्या तिथिक्षय

(A) (चन्द्रोदय घं. २१ मि. ३१), (B) महोदय योग (१ / ० से २८ / ३० तक)

माघ कृष्ण ८ बुध, इष्ट ५५/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	५	९	२	०	६
२०	२८	०३	१२	२४	०६	२८	०२	०२
१९	५८	२४	११	५६	३०	२१	३८	३८
२९	१८	४६	५३	०६	२४	५३	५२	५२
६०	८३४	४२	९९	०	७५	४	३	३
५२	९	१७	१७	१७	९	२२	१०	१०
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ४	विशा. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

११ | ९ म. | सू. बु. १० शु. | १२ | ८ | चं. ७ के. | रा. १ | २ | ४ | ६ गु. | श. ३ | ५

लोक भविष्य:— माघ कृ. प्रतिपदा बुधवारी है। प्रतिपदा को ही बुध मकरराशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ मेल करेगा। २६ जन. को मंगल धनुराशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा एवं माघ कृष्ण चतुर्थी को शनिवार होने से राजनैतिक विषमताएं बढ़ेंगी। राजनीतिज्ञों में आपसी उलझनें विकटरूप धारण करेंगी। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। कहीं युद्धाग्नि से अशान्ति हो। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि, कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे -

"चतुर्थी माघ मासस्य शनिवारेण संयुता।
दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्निभयं धान्य–विनाशनम् ।।"

कहीं अग्निकाण्ड, अकाल से परेशानी हो। किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— २६ जनवरी से २८ जनवरी के लगभग रुई, सोना, चांदी में तेजी बने; गुड़, खाण्ड, घी, चना आदि अनाज भी तेज रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी; चांदी, सोना, सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी में तेजी बने। ४ फरवरी को गेहूं, चावल, जौ आदि अनाज व अलसी, घी में मन्दे का रुख रहे। सोना, चांदी आदि धातु व ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे।

आकाश लक्षण:— जनवरी २६, २८, फरवरी ४, ५, को उत्तरी भारत में कहीं खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में ऋतुपरिवर्तन के योग नजर आते हैं।

शकुन विचार:— माघकृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें, लेकिन वर्षा न हो, तो गेहूं और जौ के स्टाक से आगे लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

११ | ९ म. | सू. बु. १० शु. चं. | १२ | ८ | रा. १ | ७ के. | २ | ४ | ६ गु. | श. ३ | ५

माघ कृष्ण १४ मंगल, इष्ट ५५/३९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	९	५	९	२	०	६
२६	२७	०७	२२	२४	१४	२७	०२	०२
२४	१८	३८	१८	५१	०१	५६	१९	१९
२४	३०	५३	५६	३६	१६	३७	४८	४८
६०	८९९	४२	१०३	१	७५	३	३	३
४६	२	२७	५६	२५	७	५९	११	११
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ माघ शुक्ल पक्ष २३

(९ से २४ फरवरी तक सन् २००५ ई.)
दक्षिणगोल, उत्तरायण, शिशिर — वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन: बु. अस्त है । १२ फर. को शु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा । प्रात: मं. पूर्व कपाल में और गु. पश्चिम में होगा । सायं श. को पूर्व में देखिए ।।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. फरवरी	श. माघ	मु. ज़िल्हिज	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५९	१	बु.	४३	२१	धनि.	३३	०५	व.	१९	१२	किं.	१७	३१	२८	९	२०	२९	कुम्भ	६	२७	७	१३	१८	०१	९	२६	२८	४४	पंचक प्रारम्भ ६/२७, बुध धनि. में ३१/३, **शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ**, (A)
२७	०४	२	गु.	३५	४६	शत.	२७	१०	प.	९	३२	बा.	९	२४	२९	१०	२१	३०	कुम्भ			७	१२	१८	०२	९	२७	२९	२७	चन्द्र दर्शन, मु.१५
२७	०९	३	शु.	२९	४१	पू.भा.	२२	३७	शि.	०	५३	तै.	२	३२	३०	११	२२	मु.१	मीन	८	३७	७	११	१८	०३	९	२८	३०	०८	भ. ५७/१८ बाद, **गौरी तृतीया (गोंतरी)**, तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी, (B)
									सि.	५३	३४																			
२७	१५	४	श.	२५	२३	उ.भा.	१९	४९	सा.	४७	४६	वि.	२५	२३	फा.१	१२	२३	२	मीन			७	१०	१८	०४	९	२९	३०	४८	भ. २५/२३ तक, सं. सूर्य कुम्भ में २८/५४, मु. ३०, पुण्यकाल, (C)
२७	२०	५	र.	२३	०८	रेव.	१९	०१	शु.	४३	३८	बा.	२३	०८	२	१३	२४	३	मेष	१९	०१	७	०९	१८	०५	१०	००	३१	२६	पंचक समाप्त १९/१, बुध कुम्भ में १८/३८, **श्रीवसन्त पंचमी**, श्रीपंचमी
२७	२२	६	चं.	२३	०२	अश्वि.	२०	१७	शु.	४१	०८	तै.	२३	०२	३	१४	२५	४	मेष			७	०८	१८	०५	१०	०१	३२	०३	
२७	२५	७	मं.	२४	५७	भर.	२३	३१	ब्र.	४०	१०	व.	२४	५७	४	१५	२६	५	वृष	३९	३७	७	०८	१८	०६	१०	०२	३२	३७	भ. २४/५७ से ५६/४० तक, रथ सप्तमी (पूर्व अरुणोदय वाली), (D)
२७	३०	८	बु.	२८	४४	कृत्ति.	२८	३३	ऐं.	४०	३३	ब.	२८	४४	५	१६	२७	६	वृष			७	०७	१८	०७	१०	०३	३३	१३	मंगल पू.षा. मे ५७/१८, बुध शत. मे ५९/५४, शुक्र धनि. में, (E)
२७	३४	९	गु.	३३	५४	रोहि.	३४	५४	वै.	४१	५६	बा.	१	११	६	१७	२८	७	वृष			७	०६	१८	०८	१०	०४	३३	४५	
२७	३९	१०	शु.	३९	५८	मृग.	४२	०६	वि.	४३	५८	तै.	६	५२	७	१८	२९	८	मिथुन	८	२७	७	०५	१८	०९	१०	०५	३४	१४	सूर्य सायन मीन में २९/५५, वसन्त ऋतु प्रारम्भ
२७	४२	११	श.	४६	२७	आर्द्रा	४९	४२	प्री.	४६	१३	व.	१३	११	८	१९	३०	९	मिथुन			७	०४	१८	०९	१०	०६	३४	४२	भ.१३/११ से ४६/२७ तक, सूर्य शत. में ५/१७, जया एकादशी, (F)
२७	४७	१२	र.	५२	४९	पुन.	५७	१०	आ.	४८	२६	ब.	१९	३८	९	२०	फा.१	१०	कर्क	४०	१८	७	०३	१८	१०	१०	०७	३५	०८	भीष्म द्वादशी, **शक फाल्गुन प्रारम्भ**
२७	५२	१३	चं.	५८	४६	पुष्य	६०	००	सौ.	५०	२१	कौ.	२५	५०	१०	२१	२	११	कर्क			७	०२	१८	११	१०	०८	३५	३२	शुक्र कुम्भ मे ४२/३०, **सोम प्रदोष व्रत**
२७	५७	१४	म.	६०	००	पुष्य	४	१३	शो.	५१	४८	ग.	३१	२९	११	२२	३	१२	कर्क			७	०१	१८	१२	१०	०९	३५	५५	
२८	००	१४	बु.	४	०३	आश्ले.	१०	३८	अ.	५२	४०	व.	४	०३	१२	२३	४	१३	सिंह	१०	३८	७	००	१८	१२	१०	१०	३६	१५	भ. ४/३ से ३६/२४ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत
२८	०५	१५	गु.	८	३४	मघा	१६	१८	सु.	५२	५५	ब.	८	३४	१३	२४	५	१४	सिंह			६	५९	१८	१३	१०	११	३६	३४	बुध पू.भा. में ९/११, माघी पूर्णिमा, **माघ स्नान समाप्त**, जन्म दिन, (G)

शुक्र अस्त
१२ फरवरी

(A) १५/०२ (B) मुहर्रम मु. (हिजरी सन् १४२६) प्रा., (C) १२/५२ के बाद, **शुक्र पूर्व में अस्त १५/१०**, (D) आरोग्य सप्तमी, (E) २२/२४, भीष्माष्टमी, (F) व्रत (स.), (G) श्रीगुरु रविदास जी.

माघ शुक्ल ८ बुध, इष्ट ५५/५७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	८	१०	५	९	२	०	६
०४	१५	१३	०६	२४	२४	२७	०१	०१
२९	३२	१९	३२	३५	०२	२६	५४	५४
४३	४५	०६	५५	०१	०२	५१	२२	२२
६०	७१९	४२	११०	२	७५	३	३	३
३२	४६	३९	१४	५४	३	२१	११	११
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	रोहि. २	मृग. ४	धनि. ४	चित्रा १	धनि. १	पू.भा. ३	अश्वि. १	चित्रा ३

कुण्डली सूर्योदये

१२; सू. बु. ११; १० शु.; १ रा.; ९ मं.; २ चं.; ८; श. ३; ५; के. ७; ४; गु. ६

लोक भविष्य:— १२ फरवरी को शुक्र अस्त होगा एवं सूर्य कुम्भ में शनिवार को प्रवेश करेगा। यह योग राजनीतिज्ञों के लिए भयावह स्थितियों को जन्म देगा-

> "शुक्ल पक्षे यदाशुक्रः समुदेत्यस्तामेति वा।
> राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम्।"

सीमाप्रान्तों पर या किसी देश विशेष में कहीं सैन्यसंघर्ष से भारी जनधनहानि होगी। माघशुक्ल तृतीया को शुक्रवार भी पृथ्वी पर कहीं युद्धविभीषिका को जन्म देगा। शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध मुस्लिमदेश में कहीं आन्तरिक अशान्ति किंवा कहीं यानदुर्घटना में जनधन हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में मन्दा; चावल, सींका, सरसों, तेल, घी एवम् दालवाना में तेजी। १२ फरवरी को तिलहन,गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अचानक मन्दे और तेजी के रिऐक्शन बनें। १७ फरवरी को बाजार का रुख अचानक बदल सकता है। २१ फरवरी को रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, चना, ज्वार, बाजरा, जौ एवम् गेहूं में मन्दे की सम्भावना है।

कुण्डली सूर्योदये

१२; सू. बु. ११ शु.; १०; १ रा.; ९ मं.; २; ८; श. ३; ५ चं.; के. ७; ४; गु. ६

माघ शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ५६/१७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	८	१०	५	१०	२	०	६
१२	२१	१९	२१	२४	०४	२७	०१	०१
३३	३२	००	२८	०६	०२	०२	२८	२८
११	५९	५३	४३	५५	१०	२९	५५	५५
६०	७४६	४२	११२	४	७४	२	३	३
१९	४३	५०	४९	१७	५९	३८	१०	१०
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	पू.फा. ३	पू.षा. २	पू.भा. १	चित्रा १	धनि. ४	पू.भा. ३	अश्वि. १	चित्रा ३

आकाश लक्षण:— फरवरी १२, १३, १६, १७, १८, २१ और २४ को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में कुछ हवा का ज़ोर रहे एवम् मौसम में तबदीली आएगी।

शकुन विचार:— माघी पूर्णिमा के दिन यदि बादल हों, तो अन्नसंग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ मिले। यदि इस दिन आकाश साफ रहे, तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहेगा।

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

(२५ फरवरी से १० मार्च तक सन् २००५ ई.)
दक्षिणगोल, उत्तरायण, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन: शु. अस्त है । बु. १ मार्च से सायं पश्चिम में दीखने लगेगा । प्रातः मं. पूर्व कपाल में और गु. पश्चिम में होगा । श. सायं पूर्व कपाल में दिखाई पड़ेगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	०९	१	शु.	१२	१२	पू. फा.	२१	०८	धृ.	५२	३१	कौ.	१२	१२	१४	२५	६	१५	कन्या	३७	१२	६	५८	१८	१४	१०	१२	३६	५२	
२८	१७	२	श.	१४	५८	उ. फा.	२५	०८	शू.	५१	२२	ग.	१४	५८	१५	२६	७	१६	कन्या			६	५६	१८	१५	१०	१३	३७	०७	भ. ४५/५९ बाद
२८	२०	३	र.	१६	४३	हस्त	२८	०८	ग.	४९	२७	वि.	१६	४३	१६	२७	८	१७	तुला	५९	१७	६	५५	१८	१५	१०	१४	३७	१९	भ. १६/४३ तक, शुक्र शत. में २/४९, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२८	२५	४	चं.	१७	२६	चित्रा	३०	०८	वृ.	४६	४१	बा.	१७	२६	१७	२८	९	१८	तुला			६	५४	१८	१६	१०	१५	३७	३१	
२८	३०	५	मं.	१७	०२	स्वा.	३१	०१	ध्रु.	४३	०२	तै.	१७	०२	१८	मा. १	१०	१९	तुला			६	५३	१८	१७	१०	१६	३७	४२	बुध मीन में ३२/५, बुध पश्चिम में उदित ४४/१७, **मार्च प्रारम्भ**
२८	३४	६	बु.	१५	२६	विशा.	३०	४४	व्या.	३८	२३	व.	१५	२६	१९	२	११	२०	वृश्चिक	१५	५६	६	५२	१८	१८	१०	१७	३७	५२	भ. १५/२६ से ४४/१२ तक
२८	३७	७	गु.	१२	३६	अनु.	२९	१४	ह.	३२	४७	ब.	१२	३६	२०	३	१२	२१	वृश्चिक			६	५१	१८	१८	१०	१८	३८	००	बुध उ.भा. में २४/२५
२८	४२	८	शु.	८	३०	ज्ये.	२६	३०	व.	२६	१२	कौ.	८	३०	२१	४	१३	२२	धनु	२६	३०	६	५०	१८	१९	१०	१९	३८	०७	सूर्य पू.भा. में २१/५२
२८	४७	९	श.	३	१४	मूल	२२	३९	सि.	१८	४२	ग.	३	१४	२२	५	१४	२३	धनु			६	४९	१८	२०	१०	२०	३८	११	भ. ३०/११ से ५६/५८ तक
अवम		१०	श	५६	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय
२८	५२	११	र.	४९	५३	पू. षा.	१७	५४	व्य.	१०	२७	ब.	२३	२९	२३	६	१५	२४	मकर	३१	३४	६	४७	१८	२०	१०	२१	३८	१५	व. गुरु हस्त ४ में २६/७, यूरेनस शत. ३ में ४/२१, (A)
२८	५७	१२	चं.	४२	१४	उ. षा.	१२	२५	व. प.	१ ५२	३४ २०	कौ.	१६	०६	२४	७	१६	२५	मकर			६	४६	१८	२१	१०	२२	३८	१४	मंगल उ.षा. में ३८/७, व. शनि पुन. २ में २१/३१, (B)
२९	०२	१३	मं.	३४	२७	श्रव.	६	३४	शि.	४२	५९	ग.	८	२२	२५	८	१७	२६	कुम्भ	३३	३६	६	४५	१८	२२	१०	२३	३८	१५	भ. ३४/२७ बाद, पंचक प्रारम्भ ३३/३६, **भौम प्रदोष व्रत**, (C)
२९	०४	१४	बु.	२६	५३	धनि. शत.	० ५५	४३ १७	सि.	३३	५४	वि.	०	३८	२६	९	१८	२७	कुम्भ			६	४४	१८	२२	१०	२४	३८	१३	भ. ०/३८ तक, शुक्र पू.भा. में ४४/४
२९	०९	३०	गु.	१९	५५	पू. भा.	५०	४२	सा.	२५	२१	ना.	१९	५५	२७	१०	१९	२८	मीन	३६	४१	६	४३	१८	२३	१०	२५	३८	१०	

(A) विजया एकादशी व्रत (स्मा.), (B) विजया एकादशी व्रत (वै.), (C) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत

फाल्गु. कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५६/४०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	८	११	५	१०	२	०	६
२०	०७	२४	०५	२३	१४	२६	०१	०१
३४	०८	४४	५७	२८	०१	४४	०३	०३
५४	४८	१८	४९	१५	४३	१३	२९	२९
६०	८६४	४३	९८	५	७४	१	३	३
६	१५	२	३३	३१	५५	४९	११	११
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	मूल ३	पू.षा. ४	उ.षा. १	चित्रा १	श्रव. ३	पुन. ३	आश्ले. १	चित्रा ३

कुण्डली सूर्योदये

बु. १२ | सू. ११ शु. | १० | १ रा. | ९ मं. | २ | चं. ८ | श. ३ | ५ | के. ७ | ४ | गु. ६

लोक भविष्य:— प्रतिपदा को पू.फा. नक्षत्र होने से सर्वत्र सुभिक्ष रहे, कृषकवर्ग प्रसन्न रहे,-

" फाल्गुने प्रथमे पक्षे पूर्वाफाल्गुनियोगतः।
सर्वान् दोषान् निहन्त्येव सुभिक्षं भुवि जायते।।"

नवमी शनिवार को मूल नक्षत्र होने से अच्छी वर्षा एवं फसलों के लिए पोषक वायु का संचार हो। लेकिन राजनैतिक दृष्टि से विरोधी देशों में अशान्ति का वातावरण रहे, राजनीतिज्ञों के समक्ष सीमा-सुरक्षा की चिन्ता एवं देश की आन्तरिक स्थिति को सुदृढ़ करने की समस्या बनी रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— पक्षारम्भ में अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ व सोना मन्दे रहें। १ मार्च को गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना,चांदी में मन्दा बने; बिनौला कुछ तेज रहे रुई व शेयर बाजार भी मन्दे रहेंगे। ४ मार्च के लगभग सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई में तेजी का वातावरण रहे। ६ मार्च से मासान्त तक बाजार ऊपर-नीचे चलेंगे।

आकाश लक्षण:— फरवरी २७, मार्च १ से ४, ६, ७, ६, १२ को मध्यप्रदेश एवं बंगाल आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहे, तापमान बढ़ने लगेगा।

शकुन विचार:— यदि फाल्गुन में बादल हों, परन्तु वर्षा न हो, तो आगे वर्षाऋतु में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदये

बु. १२ | सू. चं. ११ शु. | १० | १ रा. | ९ मं. | २ | ८ | श. ३ | ५ | के. ७ | ४ | गु. ६

फाल्गु. कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५६/५७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	८	११	५	१०	२	०	६
२६	०४	२९	१४	२२	२१	२६	००	००
३५	५१	०२	४०	५३	३०	३४	४४	४४
०६	१५	५०	२६	०९	५९	५२	२५	२५
५९	८४६	४३	६७	६	७४	१	३	३
५५	८	९	२०	१८	५०	१०	११	११
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	उ.भा. १	उ.भा. १	उ.भा. ४	धनि. ४	उ.भा. १	चित्रा २	आश्ले. १	चित्रा ३

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५

(११ से २५ मार्च तक सन् २००५ ई.)
दक्षिण – उत्तर गोल, उत्तरायण, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन: शु. पूर्ववत् अस्त है । बु. २१ मार्च को पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा । प्रातः मं. पूर्व में और गु. पश्चिम-क्षितिज-लग्न होगा । सायं श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	१७	१	शु.	१४	००	उ.भा.	४७	१६	शु.	१७	४१	ब.	१४	००	२८	११	२०	२९	मीन			६	४१	१८	२४	१०	२६	३८	०५	चन्द्र दर्शन, मु. ४५
२९	२२	२	श.	९	२२	रेव.	४५	२२	शु.	११	०५	कौ.	९	२२	२९	१२	२१	स.१	मेष	४५	२२	६	४०	१८	२५	१०	२७	३७	५५	पंचक समाप्त ४५/२२, मंगल मकर में १६/३७, बुध रेव. में, (A)
२९	२४	३	र.	६	२४	अश्वि.	४५	१३	ब्र.	५	४९	ग.	६	२४	३०	१३	२२	२	मेष			६	३९	१८	२५	१०	२८	३७	४६	भ. ३५/३४ बाद
२९	२९	४	चं.	५	१६	भर.	४६	५७	ऐं. / वै.	२ / ५९	०१ / ४५	वि.	५	१६	चै.१	१४	२३	३	मेष			६	३८	१८	२६	१०	२९	३७	३५	भ. ५/१६ तक, सं. सूर्य मीन में २२/३१, मु. १५, पुण्यकाल, (B)
२९	३२	५	म.	६	०५	कृत्ति.	५०	३४	वि.	५८	५७	बा.	६	०५	२	१५	२४	४	वृष	२	४०	६	३७	१८	२६	११	००	३७	२१	
२९	४०	६	बु.	८	४८	रोहि.	५५	४६	प्री.	५९	२३	तै.	८	४८	३	१६	२५	५	वृष			६	३५	१८	२७	११	०१	३७	०५	
२९	४५	७	गु.	१३	०४	मृग.	६०	००	आ.	६०	००	व.	१३	०४	४	१७	२६	६	मिथुन	२८	५१	६	३४	१८	२८	११	०२	३६	४५	भ. १३/४ से ४५/४२ तक, सूर्य उ.भा. में ४३/२९, शुक्र मीन, (C)
२९	४७	८	शु.	१८	३२	मृग.	२	१३	आ.	०	४७	ब.	१८	३२	५	१८	२७	७	मिथुन			६	३३	१८	२८	११	०३	३६	२५	**होलाष्टक प्रारम्भ**
२९	५२	९	श.	२४	३९	आर्द्रा	९	२६	सौ.	२	४८	कौ.	२४	३९	६	१९	२८	८	मिथुन			६	३२	१८	२९	११	०४	३६	०३	बुध वक्री ५८/२
३०	००	१०	र.	३०	५५	पुन.	१६	५६	शो.	५	०५	ग.	३०	५५	७	२०	२९	९	कर्क	०	०५	६	३०	१८	३०	११	०५	३५	३८	सूर्य सायन मेष में २८/५७, उत्तर गोल प्रारम्भ, शुक्र उ.भा. में, (D)
३०	०२	११	चं.	३६	४६	पुष्य	२४	०६	अ.	७	११	व.	३	५६	८	२१	३०	१०	कर्क			६	२९	१८	३०	११	०६	३५	०९	भ. ३/५६ से ३६/४६ तक, व. बुध पश्चिम में अस्त २६/३९, (E)
३०	०७	१२	म.	४१	४९	आश्ले.	३०	३६	सु.	८	४९	ब.	९	२६	९	२२	चै.१	११	सिंह	३०	३६	६	२८	१८	३१	११	०७	३४	४०	शनि मार्गी ५/४२, **गोविन्द द्वादशी, शक चैत्र प्रारम्भ**
३०	१२	१३	बु.	४५	५४	मघा	३६	०७	धृ.	९	४५	कौ.	१३	५९	१०	२३	२	१२	सिंह			६	२७	१८	३२	११	०८	३४	०८	**प्रदोष व्रत**
३०	१७	१४	गु.	४८	४२	पू.फा.	४०	३३	शू.	९	५२	ग.	१७	२६	११	२४	३	१३	कन्या	५६	३०	६	२५	१८	३२	११	०९	३३	३५	भ. ४८/४२ बाद, राहु रेव. ४ मीन में ५५/५०, केतु चित्रा २ कन्या, (F)
३०	२२	१५	शु.	५०	१६	उ.फा.	४३	४६	गं.	९	०१	वि.	१९	३७	१२	२५	४	१४	कन्या			६	२४	१८	३३	११	१०	३२	५७	भ. १९/३७ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, **होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त**

(A) ४८/३८, सफर मु. प्रारम्भ, (B) ६/३० के बाद, (C) में ४५/४७, (D) २६/३२, **महा विषुव दिन**, (E) आमला एकादशी व्रत (स.), (F) में ५५/५०

फाल्गु. शुक्ल ८ शुक्र, इष्ट ५७/२२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	९	११	५	११	२	०	६
०४	१७	०४	२०	२१	०१	२६	००	००
३३	३७	४८	०६	५९	२९	२८	१८	१८
२९	४३	३१	१०	४८	१२	३२	५८	५८
५९	७१२	४३	४	७	७४	०	३	३
३८	६	१७	१०	५	४२	१८	१०	१०
—	—	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. १	आर्द्रा ४	उ.षा. ३	रेव. २	हस्त ४	पू.भा. ४	पुन. २	अश्वि. १	चित्रा ३

कुण्डली सूर्योदये

१ रा. | ११ | सू. शु. १२ बु. | म. १० | २ | श. ३ चं. | ९ | ४ | ६ गु. | ८ | के. ७ | ५

लोक भविष्य:— इस पक्ष में मंगल मकर में आकर राहु के साथ दशम-चतुर्थ एवं शनि के साथ षडष्टक सम्बन्ध बनाएगा। यानदुर्घटना, भूकम्प, दुर्भिक्ष, बम-विस्फोट आदि से कहीं जनधनहानि के संकेत मिलते हैं। पश्चात् में राहु मीनराशि में आकर प्राकृतिक आपदा से परेशानी पैदा करेगा। धनिकों द्वारा अन्न के संग्रह से साधारण जन परेशान रहे। कहीं भयंकर दुर्भिक्ष पड़े,

"यस्मिन् संवत्सरे राहुर्मीनराशौ प्रजायते।
संग्रहः सर्वधान्यानां लाभो द्वि–त्रि–चतुर्गुणः।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख:— १२ मार्च को केसर, मजीठ, लाल मिर्च, लाल चन्दन, गेरु, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी में तेजी या मन्दे का अच्छा रिऐक्शन आ सकता है। १४ मार्च को तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना में तेजी; अनाजों में तेजी के बाद मन्दा बने। १७ मार्च के लगभग चांदी में मन्दे के बाद तेजी, अनाज, तिलहन एवम् गुड़, खाण्ड में मन्दा बने, रुई तेज रहे। १९ मार्च को घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी के बाद मन्दा आए। २१ मार्च को रुई में जोरदार मन्दा हो; चांदी में तेजी, शेयर बाजार मन्दे रहें। २४ मार्च से आगे तिलहन और दालवाना में जोरदार तेजी आ सकती है।

आकाश लक्षण:— मार्च १२, १४, १७, २१, २२, २४ को हवा का जोर रहे। म. प्र., बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में आसमान साफ रहे और गर्मी अनुभव होने लगे।

शकुन विचार:—यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन वर्षा हो, तो फसल को रोली (काल अंगारी) नामक रोग से हानि पहुंचे। इस समय अन्न-संग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

कुण्डली सूर्योदये

१ | ११ | सू. शु. १२ रा. बु. | म. १० | २ | श. ३ | ९ | ४ | च. ६ गु. के. | ८ | ५ | ७

फाल्गु. शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५७/४५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	९	११	५	११	२	११	५
११	१२	०९	१७	२१	१०	२६	२९	२९
३०	५९	५१	५९	०८	११	२८	५६	५६
०९	४०	५२	१०	४२	४५	४९	४३	४३
५९	७७७	४३	४२	७	७४	०	३	३
२३	३	२४	२५	३२	३५	२९	११	११
—	—	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	हस्त १	उ.षा. ४	रेव. १	हस्त ४	उ.भा. ३	पुन. २	रेव. ४	चित्रा २

श्री वि. सं. २०६१, शाक १९२६ चैत्र कृष्ण पक्ष २६

(२६ मार्च से ८ अप्रैल तक सन् २००५ ई.)
उत्तरगोल, उत्तरायण, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन: शु. पूर्ववत् अस्त है । बु. ६ अप्रै. से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा । सायं श. याम्योत्तरवृत्तासन्न और गु. पूर्व क्षितिज से उभरता दीखेगा । मं. प्रातः पूर्वकपाल में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखे प्र. (चैत्र)	अं. (मार्च)	श. (चैत्र)	मु. (सफ़.)	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	२७	१	श.	५०	३९	हस्त	४५	५१	वृ.	७	१४	बा.	२०	३५	१३	२६	५	१५	कन्या			६	२३	१८	३४	११	११	३२	१९	मंगल श्रव. में ९/५, **वसन्त उत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब**
३०	३०	२	र.	४९	५७	चित्रा	४६	५१	ध्रु.	४	३२	तै.	२०	२३	१४	२७	६	१६	तुला	१६	२७	६	२२	१८	३४	११	१२	३१	३९	व. बुध उ. भा. ४ में ४६/७, प्लूटो वक्री ४/५
३०	३७	३	चं.	४८	११	स्वा.	४६	४९	व्या. ह.	१ ५६	०२ ४२	व.	१९	१०	१५	२८	७	१७	तुला			६	२०	१८	३५	११	१३	३०	५८	भ. १९/१० से ४८/११ तक
३०	४०	४	मं.	४५	३१	विशा.	४५	५२	व.	५१	३९	ब.	१६	५६	१६	२९	८	१८	वृश्चिक	३१	०९	६	१९	१८	३५	११	१४	३०	१२	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३०	४५	५	बु.	४१	५८	अनु.	४४	०५	सि.	४५	५७	कौ.	१३	५०	१७	३०	९	१९	वृश्चिक			६	१८	१८	३६	११	१५	२९	२६	
३०	५०	६	गु.	३७	४४	ज्ये.	४१	३६	व्य.	३९	३७	ग.	९	५८	१८	३१	१०	२०	धनु	४१	३६	६	१७	१८	३७	११	१६	२८	३९	भ. ३७/४४ बाद, सूर्य रेव. में ११/३१, शुक्र रेव. में १०/३३, (A)
३०	५२	७	शु.	३२	५२	मूल	३८	३१	व.	३२	५१	वि.	५	२४	१९	अ. १	११	२१	धनु			६	१६	१८	३७	११	१७	२७	५०	भ. ५/२४ तक, **अप्रैल प्रारम्भ**
३१	००	८	श.	२७	३२	पू. षा.	३४	५८	प.	२५	४१	बा.	०	१८	२०	२	१२	२२	मकर	४९	०२	६	१४	१८	३८	११	१८	२६	५९	
३१	०४	९	र.	२१	४५	उ. षा.	३१	०१	शि.	१८	१०	ग.	२१	४५	२१	३	१३	२३	मकर			६	१३	१८	३९	११	१९	२६	०५	भ. ४८/४७ बाद, व. गुरु हस्त ३ में ५६/४९
३१	०७	१०	चं.	१५	४५	श्रव.	२६	५१	सि.	१०	२७	वि.	१५	४५	२२	४	१४	२४	कुम्भ	५४	४७	६	१२	१८	३९	११	२०	२५	१०	भ. १५/४५ तक, पंचक प्रारम्भ ५४/४७
३१	१२	११	मं.	९	४२	धनि.	२२	४२	सा. शु.	२ ५५	४१ ०३	बा.	९	४२	२३	५	१५	२५	कुम्भ			६	११	१८	४०	११	२१	२४	१५	शनि पुन. ३ में ५२/४३, **पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.)**
३१	१७	१२	बु.	३	५०	शत.	१८	४८	शु.	४७	४६	तै.	३	५०	२४	६	१६	२६	कुम्भ			६	१०	१८	४१	११	२२	२३	१७	भ. ५८/२६ बाद, व. बुध पूर्व में उदित ७/३४, **प्रदोष व्रत, (B)**
अवम		१३	बु.	५८	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय
३१	२२	१४	गु.	५३	४१	पू. भा.	१५	२५	ब्र.	४०	५५	वि.	२५	५६	२५	७	१७	२७	मीन	१	१३	६	०८	१८	४१	११	२३	२२	१७	भ. २५/५६ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)
३१	२७	३०	शु.	४९	५२	उ. भा.	१२	४६	ऐं.	३४	५०	च.	२१	३७	२६	८	१८	२८	मीन			६	०७	१८	४२	११	२४	२१	१३	**चान्द्र संवत्सर २०६१ वि. पूर्ण**

(A) मेला श्री शीतला माता कुराली (पं.), (B) वारुणी पर्व (३/५० से १८/४८ तक)

चैत्र कृष्ण ८ शनि, इष्ट ५८/९,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	९	११	५	११	२	११	५
१९	०२	१५	११	२०	२०	२६	२९	२९
२४	११	३९	३४	०७	०८	३५	३१	३१
१९	२६	३१	४७	३२	००	४५	१७	१७
५९	८५८	४३	४३	७	७४	१	३	३
९	४९	३१	३४	४३	२८	२२	११	११
—	—	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	उ. षा. २	श्रव. २	उ. भा. ३	हस्त ४	रेव. २	पुन. २	रेव. ४	चित्रा २

कुण्डली सूर्योदये

१ | सू. | ११ | मं. १० | २ | शु. १२ रा. बु. | चं. ९ | श. ३ | ४ | के. ६ गु. | ८ | ५ | ७

लोक भविष्य:– इस पक्ष में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग किसी यावनदेश विशेष में आन्तरिक घोर अशान्ति का संकेत देता है। कहीं सुरक्षा व्यवस्था किंवा शासनचक्र में अन्यवस्था से असुरक्षा की भावना प्रबल हो। कहीं किसी मुस्लिमदेश के शासनतन्त्र में रक्तक्रान्ति से परिवर्तन हों-

" एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा।।"

६ अप्रैल को बुधोदय कहीं समुद्री तूफान किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख:– ३१ मार्च को अलसी, अरण्ड, सरसों, मूंगफली, लहसुन, गेहूं, जौ, चना, चावल तेज रहें। रुई, कपास, चांदी, चन्दन, गुड़, खाण्ड, शक्कर कुछ मन्दे रहें। ६ अप्रैल के करीब रुई में मन्दे के बाद कुछ दिनों में अच्छी तेजी आने की उम्मीद है। तिल, घी, लाल मिर्च, गेहूं, चना आदि में भी तेजी का ही विचार है।

कुण्डली सूर्योदये

१ | सू. चं. | ११ | मं. १० | २ | शु. १२ रा. बु. | श. ३ | ९ | ४ | के. ६ गु. | ८ | ५ | ७

चैत्र कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५८/२७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	९	११	५	११	२	११	५
२५	२७	२०	०८	१९	२७	२६	२९	२९
१८	०८	००	१८	२१	३४	४५	१२	१२
४२	३६	४४	३८	१६	३४	३१	१२	१२
५८	८०९	४३	१५	७	७४	२	३	३
५७	९	३३	११	३८	२२	०	११	११
—	—	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	—	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	रेव. ४	श्रव. ४	उ. भा. २	हस्त ३	रेव. ४	पुन. ३	रेव. ४	चित्रा २

आकाश लक्षण:– मार्च २७, ३१, अप्रैल २, ४, ६ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल, बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल और खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहे और तापमान बढ़ने लगेगा।

शकुन विचार:– यदि चैत्र कृष्ण अष्टमी को आकाश बादलों से ढका रहे, तो गुड़, खांड, गेहूं एवं सोना तेज रहें।

" चन्द्रमौलि–शंकरचरण बार–बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा–गणेश मनाय।"

श्री वि. सं. 2060 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** जनवरी, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शुक्ल	1	10	गु.	--	--	अश्वि.	25	09	शि.	18	40	मेष			7	25	17	28	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	व. बुध पूर्व में उदित 30/15, जनवरी सन् 2004 प्रारम्भ
	2	10	शु.	8	53	भर.	28	16	सि.	19	35	मेष			7	25	17	28	7	19	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 22/15 बाद
	3	11	श.	11	38	कृत्ति.	--	--	सा.	20	36	वृष	11	04	7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	भ. 11/38 तक, मंगल रेव. में 13/7, गुरु वक्री 29/0, प्लूटो ज्ये. 4 में (A)
	4	12	र.	14	24	कृत्ति.	7	27	शु.	21	34	वृष			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	42	6	48	17	17	4	शुक्र धनि. में 12/14, **प्रदोष व्रत**
	5	13	च.	16	59	रोहि.	10	30	शु.	22	23	मिथुन	23	57	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	
	6	14	म.	19	17	मृग	13	18	ब्र.	22	58	मिथुन			7	26	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 19/17 बाद, बुध मार्गी 19/15
	7	15	बु.	21	11	आर्द्रा	15	45	ऐ.	23	15	मिथुन			7	26	17	32	7	20	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	भ. 8/17 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, पौषी पूर्णिमा, **माघ स्नान प्रारम्भ**
माघ कृष्ण	8	1	गु.	22	40	पुन.	17	48	वै.	23	14	कर्क	11	20	7	26	17	33	7	20	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	**माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**
	9	2	शु.	23	44	पुष्य	19	28	वि.	22	53	कर्क			7	26	17	34	7	20	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	शुक्र कुम्भ में 22/56, राहु भर. 3 में 21/6, केतु विशा. 1 में 21/6
	10	3	श.	24	24	आश्ले.	20	43	प्री.	22	14	सिंह	20	43	7	26	17	34	7	20	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 12/7 से 24/24 तक
	11	4	र.	24	39	मघा	21	36	आ.	21	17	सिंह			7	26	17	35	7	20	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	सूर्य उ. षा. में 17/11, श्री गणेश **(संकष्ट)** चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय घं. 21 मि. 11)
	12	5	चं.	24	30	पू. फा.	22	05	सौ.	20	00	कन्या	28	08	7	26	17	36	7	20	17	39	7	22	17	48	6	49	17	23	12	यूरेनस शत. 1 में 16/18
	13	6	मं.	23	56	उ. फा.	22	10	शो.	18	25	कन्या			7	26	17	37	7	20	17	40	7	22	17	49	6	49	17	24	13	भ. 23/56 बाद, **लोहड़ी (पं.)**
	14	7	बु.	22	56	हस्त	21	49	अ.	16	29	कन्या			7	26	17	38	7	20	17	41	7	22	17	50	6	49	17	24	14	भ. 11/29 तक, सं. सूर्य मकर में 23/43, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन , (B)
	15	8	गु.	21	30	चित्रा	21	03	सु.	14	13	तुला	9	29	7	25	17	39	7	20	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	शुक्र शत. में 10/9
	16	9	शु.	19	36	स्वा.	19	50	धृ.	11	35	तुला			7	25	17	40	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 30/30 बाद
	17	10	श.	17	18	विशा.	18	13	शू.	8	37	वृश्चिक	12	40	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 17/18 तक
									ग.	29	21																					
	18	11	र.	14	39	अनु.	16	15	वृ.	25	49	वृश्चिक			7	25	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	षट्तिला एकादशी व्रत (स.)
	19	12	चं.	11	43	ज्ये.	14	01	ध्रु.	22	06	धनु	14	01	7	25	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	**सोम प्रदोष व्रत**
	20	13	मं.	8	38	मूल	11	39	व्या.	18	20	धनु			7	24	17	43	7	19	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	भ. 8/38 से 19/5 तक, सूर्य सायन कुम्भ में 23/13
		/14		29	32																											चतुर्दशी तिथिक्षय
	21	30	बु.	26	35	पू. षा.	9	18	ह.	14	36	मकर	14	44	7	24	17	44	7	19	17	47	7	21	17	55	6	49	17	30	21	बुध पू. षा. में 17/40, **मौनी अमावस**
						उ. षा.	31	07																								
माघ शुक्ल	22	1	गु.	23	58	श्रव.	29	17	व.	11	03	मकर			7	24	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	31	22	**माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**
	23	2	शु.	21	49	धनि.	27	59	सि.	7	50	कुम्भ	16	33	7	23	17	46	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	चन्द्र दर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ 16/33
									व्य.	29	02																					
	24	3	श.	20	20	शत.	27	21	व.	26	48	कुम्भ			7	23	17	47	7	18	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 19/26, मंगल अश्वि. मेष में 24/37, गौरी तृतीया (गोतरी)
	25	4	र.	19	37	पू. भा.	27	30	प.	25	11	मीन	21	24	7	23	17	48	7	17	17	50	7	20	17	58	6	48	17	33	25	भ. 7/52 से 19/37 तक, वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी
	26	5	चं.	19	45	उ. भा.	28	29	शि.	24	14	मीन			7	22	17	48	7	17	17	51	7	19	17	59	6	48	17	34	26	शुक्र पू. भा. में 10/23, **श्री (वसन्त) पंचमी**
	27	6	मं.	20	43	रेव.	30	16	सि.	23	56	मेष	30	16	7	22	17	49	7	16	17	52	7	19	18	00	6	47	17	34	27	पंचक समाप्त 30/16
	28	7	बु.	22	28	अश्वि.	--	--	सा.	24	11	मेष			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	01	6	47	17	35	28	भ. 22/28 बाद, रथ सप्तमी (पूर्व अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी
	29	8	गु.	24	47	अश्वि.	8	43	शु.	24	52	मेष			7	21	17	51	7	16	17	53	7	18	18	02	6	47	17	36	29	भ. 11/34 तक, **भीष्माष्टमी**
	30	9	शु.	27	27	भर.	11	38	शु.	25	48	वृष	18	25	7	20	17	52	7	15	17	54	7	18	18	02	6	46	17	37	30	
	31	10	श.	30	11	कृत्ति.	14	47	ब्र.	26	48	वृष			7	20	17	53	7	15	17	55	7	17	18	03	6	46	17	37	31	बुध उ. षा. में 22/38

(A) 10/59, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), (B) 15/43 तक, **मकर संक्रान्ति**

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
माघ शुक्ल	1	11	र.	--	--	रोहि.	17	53	ऐं.	27	41	वृष			7	19	17	54	7	14	17	56	7	17	18	04	6	45	17	38	1	भ. 19/30 बाद, **फरवरी प्रारम्भ**
	2	11	चं.	8	44	मृग.	20	43	वै.	28	19	मिथुन	7	21	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	05	6	45	17	39	2	भ. 8/44 तक, बुध मकर में 30/43, जया एकादशी व्रत (स.), (A)
	3	12	मं.	10	54	आर्द्रा	23	08	वि.	28	36	मिथुन			7	18	17	56	7	13	17	57	7	16	18	05	6	44	17	40	3	शुक्र मीन में 18/42, **भौम प्रदोष व्रत**
	4	13	बु.	12	35	पुन.	25	03	प्री.	28	28	कर्क	18	37	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	06	6	44	17	40	4	व. शनि आर्द्रा 2 में 7/47
	5	14	गु.	13	42	पुष्य	26	26	आ.	27	56	कर्क			7	16	17	57	7	12	17	59	7	14	18	07	6	43	17	41	5	भ. 13/42 से 26/4 तक, व. गुरु पू. फा. 3 में 21/44, श्रीसत्यनारायण व्रत
	6	15	शु.	14	17	आश्ले.	27	20	सौ.	27	00	सिंह	27	20	7	16	17	58	7	11	18	00	7	14	18	08	6	43	17	42	6	सूर्य धनि. में 22/36, शुक्र उ. भा. में 14/0, माघी पूर्णिमा, **माघ**, (B)
फाल्गुन कृष्ण	7	1	श.	14	23	मघा	27	48	शो.	25	43	सिंह			7	15	17	59	7	10	18	01	7	13	18	08	6	42	17	42	7	**फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**
	8	2	र.	14	04	पू. फा.	27	53	अ.	24	08	सिंह			7	14	18	00	7	10	18	01	7	13	18	09	6	42	17	43	8	भ. 25/47 बाद
	9	3	चं.	13	24	उ. फा.	27	40	सु.	22	18	कन्या	9	51	7	13	18	01	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 13/24 तक, बुध श्रव. में 23/33, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
	10	4	मं.	12	26	हस्त	27	11	धृ.	20	15	कन्या			7	13	18	01	7	08	18	03	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
	11	5	बु.	11	13	चित्रा	26	28	शू.	18	00	तुला	14	51	7	12	18	02	7	07	18	04	7	11	18	11	6	40	17	45	11	
	12	6	गु.	9	46	स्वा.	25	32	गं.	15	34	तुला			7	11	18	03	7	07	18	04	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 9/46 से 20/57 तक
	13	7	शु.	8	05	विशा.	24	24	वृ.	12	58	वृश्चिक	18	42	7	10	18	04	7	06	18	05	7	09	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 12/42, मु. 45, पुण्यकाल सारा दिन
		/8		30	12																											अष्टमी तिथिक्षय
	14	9	श.	28	06	अनु.	23	03	ध्रु.	10	12	वृश्चिक			7	09	18	05	7	05	18	06	7	08	18	13	6	38	17	47	14	मंगल भर. में 24/37
	15	10	र.	25	51	ज्ये.	21	31	व्या.	7	17	धनु	21	31	7	08	18	06	7	04	18	07	7	08	18	14	6	37	17	48	15	भ. 15/0 से 25/51 तक, बुध पूर्व में अस्त 23/25
									ह.	28	13																					
	16	11	चं.	23	28	मूल	19	52	व.	25	05	धनु			7	07	18	06	7	03	18	07	7	07	18	15	6	36	17	48	16	विजया एकादशी व्रत (स.)
	17	12	मं.	21	04	पू. षा.	18	10	सि.	21	55	मकर	23	45	7	06	18	07	7	03	18	08	7	06	18	15	6	36	17	49	17	शुक्र रेव. में 22/24
	18	13	बु.	18	44	उ. षा.	16	32	व्य.	18	49	मकर			7	05	18	08	7	02	18	09	7	05	18	16	6	35	17	50	18	भ. 18/44 से 29/38 तक, बुध धनि. में 7/55, **प्रदोष व्रत**, (C)
	19	14	गु.	16	36	श्रव.	15	05	व.	15	53	कुम्भ	26	28	7	04	18	09	7	01	18	10	7	04	18	17	6	34	17	50	19	पंचक प्रारम्भ 26/28, सूर्य शत. में 27/6, सूर्य सायन मीन में, (D)
	20	30	शु.	14	48	धनि.	13	57	प.	13	13	कुम्भ			7	04	18	10	7	00	18	10	7	04	18	17	6	33	17	51	20	
फाल्गुन शुक्ल	21	1	श.	13	29	शत.	13	18	शि.	10	56	कुम्भ			7	03	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	32	17	51	21	**फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, चन्द्र दर्शन, मु. 30, बुध कुम्भ में 30/46
	22	2	र.	12	47	पू. भा.	13	14	सि.	9	07	मीन	7	11	7	01	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	32	17	52	22	
	23	3	चं.	12	47	उ. भा.	13	51	सा.	7	50	मीन			7	00	18	12	6	57	18	12	7	01	18	19	6	31	17	53	23	भ. 25/4 बाद
	24	4	मं.	13	32	रेव.	15	12	शु.	7	08	मेष	15	12	6	59	18	13	6	56	18	13	7	00	18	20	6	30	17	53	24	भ. 13/32 तक, पंचक समाप्त 15/12
	25	5	बु.	15	01	अश्वि.	17	14	शु.	7	00	मेष			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	बुध शत. में 26/18
	26	6	गु.	17	05	भर.	19	51	ब्र.	7	22	वृष	26	34	6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	26	
	27	7	शु.	19	35	कृत्ति.	22	49	ऐं.	8	06	वृष			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 19/35 बाद
	28	8	श.	22	14	रोहि.	25	55	वै.	9	03	वृष			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	22	6	26	17	55	28	भ. 8/55 तक, **होलाष्टक प्रारम्भ**
	29	9	र.	24	47	मृग.	28	52	वि.	10	00	मिथुन	15	26	6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	25	17	56	29	शुक्र अश्वि. मेष में 13/20

(A) भीष्म द्वादशी, (B) स्नान समाप्त, जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी, (C) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (D) 13/21, वसन्त ऋतु प्रारम्भ

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
फाल्गुन शुक्ल	1	10	च	26 58	आर्द्रा	-- --	प्री	10 47	मिथुन		6 53	18 17	6 50	18 17	6 54	18 24	6 24	17 56	1	नेपच्यून श्रव. 4 में 20/16, मार्च प्रारम्भ
	2	11	म	28 36	आर्द्रा	7 27	आ.	11 15	कर्क	27 03	6 52	18 18	6 49	18 18	6 53	18 24	6 24	17 57	2	भ. 15/51 से 28/36 तक, आमला एकादशी व्रत (स.)
	3	12	बु.	29 35	पुन.	9 30	सौ.	11 17	कर्क		6 51	18 18	6 48	18 18	6 52	18 25	6 23	17 57	3	गोविन्द द्वादशी
	4	13	गु.	29 55	पुष्य	10 55	शो.	10 48	कर्क		6 49	18 19	6 47	18 19	6 51	18 25	6 22	17 58	4	सूर्य पू. भा. में 9/23, बुध पू. भा. में 8/22, व. गुरु पू. फा. 2 में 20/1, **प्रदोष व्रत**
	5	14	शु.	29 36	आश्ले	11 42	अ.	9 49	सिंह	11 42	6 48	18 20	6 46	18 20	6 50	18 26	6 21	17 58	5	भ. 29/36 बाद
	6	15	श	28 45	मघा	11 53	सु.	8 21	सिंह		6 47	18 21	6 45	18 20	6 49	18 26	6 20	17 59	6	भ. 17/14 तक, मंगल कृति. में 20/21, श्रीसत्यनारायण व्रत, **होलिका दहन**, (A)
							धृ	30 28												
चैत्र कृष्ण	7	1	र	27 27	पू. फा	11 33	शू	28 14	कन्या	17 24	6 46	18 21	6 43	18 21	6 48	18 27	6 19	17 59	7	**चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**, शनि मार्गी 22/22, वसन्तोत्सव, होला मेला श्री , (B)
	8	2	च	25 48	उ. फा	10 49	गं.	25 44	कन्या		6 45	18 22	6 42	18 21	6 47	18 28	6 18	18 00	8	
	9	3	म	23 55	हस्त	9 47	वृ.	23 03	तुला	21 11	6 44	18 23	6 41	18 22	6 46	18 28	6 17	18 00	9	भ. 12/53 से 23/55 तक, बुध मीन में 12/45
	10	4	बु.	21 54	चित्रा	8 33	ध्रु.	20 14	तुला		6 42	18 23	6 40	18 23	6 45	18 29	6 16	18 01	10	बुध उ. भा. में 29/34, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
	11	5	गु.	19 48	स्वा.	7 12	व्या.	17 22	वृश्चिक	24 09	6 41	18 24	6 39	18 23	6 44	18 29	6 15	18 01	11	मंगल वृष में 25/10, **मेला श्री शीतला माता कुराली (पं.)**
					विशा	29 48														
	12	6	शु.	17 40	अनु.	28 23	ह.	14 28	वृश्चिक		6 40	18 25	6 38	18 24	6 43	18 30	6 14	18 02	12	भ. 17/40 से 28/37 तक, शुक्र भर. मे 14/10, राहु भर. 2 में 18/45, (C)
	13	7	श	15 34	ज्ये.	27 01	व	11 35	धनु	27 01	6 39	18 25	6 37	18 24	6 42	18 30	6 13	18 02	13	
	14	8	र.	13 30	मूल	25 43	सि.	8 44	धनु		6 37	18 26	6 36	18 25	6 41	18 31	6 12	18 03	14	सं. सूर्य मीन मे 9/33, मु. 30, पुण्यकाल 15/56 तक
							व्य.	29 57												
	15	9	चं.	11 31	पू. षा.	24 30	व	27 15	मकर	30 13	6 36	18 27	6 34	18 26	6 40	18 31	6 11	18 03	15	भ. 22/34 बाद
	16	10	म.	9 39	उ. षा.	23 26	प.	24 40	मकर		6 35	18 27	6 33	18 26	6 38	18 32	6 10	18 04	16	भ. 9/39 तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.)
	17	11	बु.	7 56	श्रव	22 34	शि.	22 15	मकर		6 34	18 28	6 32	18 27	6 37	18 32	6 09	18 04	17	सूर्य उ. भा. मे 17/52, बुध रेव. में 27/6, बुध पश्चिम में उदित 28/29, (D) द्वादशी तिथिक्षय
		/12		30 28																
	18	13	गु.	29 17	धनि.	21 58	सि.	20 03	कुम्भ	10 13	6 33	18 29	6 31	18 27	6 36	18 33	6 08	18 05	18	भ. 29/17 बाद, पंचक प्रारम्भ 10/13, **प्रदोष व्रत**
	19	14	शु.	28 30	शत	21 43	सा.	18 08	कुम्भ		6 31	18 29	6 30	18 28	6 35	18 33	6 07	18 05	19	भ. 16/51 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)
	20	30	श	28 12	पू. भा.	21 56	शु.	16 34	मीन	15 50	6 30	18 30	6 29	18 28	6 34	18 34	6 06	18 05	20	सूर्य सायन मेष मे 12/20, उत्तर गोल प्रारम्भ, **चान्द्र संवत्सर 2060 वि. पूर्ण**, (E)
चैत्र शुक्ल	21	1	र	28 26	उ. भा	22 39	शु.	15 24	मीन		6 29	18 31	6 27	18 29	6 33	18 34	6 05	18 06	21	**चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, वि. सं. 2061 प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ**, (F)
	22	2	च.	29 16	रेव.	23 56	ब्र.	14 41	मेष	23 56	6 28	18 31	6 26	18 30	6 32	18 35	6 04	18 06	22	चन्द्र दर्शन, मु. 30, पंचक समाप्त 23/56
	23	3	म.	-- --	अश्वि	25 48	ऐ.	14 26	मेष		6 26	18 32	6 25	18 30	6 31	18 35	6 03	18 07	23	गौरी तृतीया (गणगौर), श्रीमत्स्य जयन्ती, आन्दोलन तृतीया
	24	3	बु.	6 41	भर.	28 11	वै.	14 37	मेष		6 25	18 32	6 24	18 31	6 30	18 36	6 02	18 07	24	भ. 19/36 बाद, शुक्र कृति. मे 30/17, प्लूटो वक्री 19/45
	25	4	गु.	8 38	कृति	-- --	वि.	15 12	वृष	10 51	6 24	18 33	6 23	18 31	6 29	18 36	6 00	18 08	25	भ. 8/38 तक
	26	5	शु.	11 00	कृति	6 59	प्री.	16 02	वृष		6 23	18 34	6 22	18 32	6 27	18 37	5 59	18 08	26	बुध अश्वि. मेष में 7/14, **नाग पंचमी**, श्री (लक्ष्मी) पंचमी
	27	6	श	13 34	रोहि	10 01	आ.	17 01	मिथुन	23 33	6 21	18 34	6 20	18 32	6 26	18 37	5 58	18 09	27	मंगल रोहि. मे 15/47, **स्कन्द षष्ठी** (देखे पृष्ठ **149**
	28	7	र.	16 07	मृग.	13 04	सौ.	17 57	मिथुन		6 20	18 35	6 19	18 33	6 25	18 38	5 57	18 09	28	भ. 16/7 से 29/18 तक, शुक्र वृष मे 13/51
	29	8	चं.	18 24	आर्द्रा	15 53	शो.	18 40	मिथुन		6 19	18 36	6 18	18 34	6 24	18 38	5 56	18 09	29	**श्रीदुर्गाष्टमी**, अशोकाष्टमी
	30	9	म.	20 11	पुन	18 15	अ.	19 02	कर्क	11 43	6 18	18 36	6 17	18 34	6 23	18 39	5 55	18 10	30	सूर्य रेव. में 28/38, **श्रीरामनवमी (पुन. योग)**, **नवरात्र समाप्त**
	31	10	बु	21 20	पुष्य	20 01	सु.	18 54	कर्क		6 16	18 37	6 16	18 35	6 22	18 39	5 54	18 10	31	

(A) **होलाष्टक समाप्त**, (B) आनन्दपुर साहिब, (C) केतु स्वा. 4 में 18/45, यूरेनस शत. 2 में 28/22, (D) पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.), (E) शनैश्चरी अमावस, महा विषुव दिन, (F) **कलश स्थापन, चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण,** तैलाभ्यंग, प्रपादान,

श्री वि. सं. 2061

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	अंग्रेजी तारीख	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
चैत्र शुक्ल	1	11	गु.	21	44	आश्ले.	21	04	धृ.	18	12	सिंह	21	04	6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	भ. 9/37 से 21/44 तक, व. गुरु पू. फा. 1 में 22/45, (A)
	2	12	शु.	21	23	मघा	21	24	शू.	16	56	सिंह			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	40	5	52	18	11	2	
	3	13	श.	20	21	पू. फा.	21	02	गं.	15	05	कन्या	26	51	6	13	18	39	6	12	18	36	6	19	18	41	5	51	18	12	3	शनि प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
	4	14	र.	18	42	उ. फा.	20	05	वृ.	12	45	कन्या			6	12	18	39	6	11	18	37	6	18	18	41	5	50	18	12	4	भ. 18/42 से 29/41 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 150
	5	15	च.	16	33	हस्त	18	39	ध्रु.	9	59	तुला	29	48	6	10	18	40	6	10	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारम्भ
वैशाख कृष्ण	6	1	मं.	14	03	चित्रा	16	52	व्या.	6	54	तुला			6	09	18	41	6	09	18	38	6	15	18	42	5	48	18	13	6	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध वक्री 25/58
									ह.	27	35																					
	7	2	बु.	11	19	स्वा.	14	53	व.	24	10	तुला			6	08	18	41	6	08	18	39	6	14	18	43	5	47	18	13	7	भ. 21/55 बाद, शुक्र रोहि. में 26/4
	8	3	गु.	8	30	विशा.	12	49	सि.	20	43	वृश्चिक	7	20	6	07	18	42	6	07	18	39	6	13	18	43	5	46	18	14	8	भ. 8/30 तक, व. बुध पश्चिम में अस्त 13/7, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
		/4		29	41																											चतुर्थी तिथिक्षय
	9	5	शु.	26	59	अनु.	10	47	व्य.	17	19	वृश्चिक			6	06	18	43	6	06	18	40	6	12	18	44	5	45	18	14	9	शनि आर्द्रा 3 में 9/18
	10	6	श.	24	29	ज्ये.	8	54	व.	14	05	धनु	8	54	6	05	18	43	6	05	18	40	6	11	18	44	5	44	18	15	10	भ. 24/29 बाद
	11	7	र.	22	16	मूल	7	14	प.	11	02	धनु			6	03	18	44	6	04	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	11	भ. 11/20 तक
						पू. षा.	29	52																								
	12	8	च.	20	23	उ. षा.	28	50	शि.	8	14	मकर	11	34	6	02	18	45	6	03	18	41	6	09	18	45	5	42	18	16	12	
									सि.	29	43																					
	13	9	मं.	18	51	श्रव.	28	11	सा.	27	30	मकर			6	01	18	45	6	02	18	42	6	08	18	46	5	41	18	16	13	सं. सूर्य अश्वि. मेष में 18/3, मु. 30, पुण्यकाल 11/38 के बाद, (B)
	14	10	बु.	17	44	धनि.	27	57	शु.	25	38	कुम्भ	16	01	6	00	18	46	6	01	18	42	6	07	18	46	5	41	18	16	14	भ. 6/15 से 17/44 तक, पंचक प्रारम्भ 16/1
	15	11	गु.	17	03	शत.	28	08	शु.	24	06	कुम्भ			5	59	18	46	6	00	18	43	6	06	18	47	5	40	18	17	15	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
	16	12	शु.	16	48	पू. भा.	28	46	ब्र.	22	56	मीन	22	34	5	58	18	47	5	59	18	44	6	05	18	47	5	39	18	17	16	प्रदोष व्रत
	17	13	श.	17	01	उ. भा.	29	52	ऐं.	22	08	मीन			5	57	18	48	5	57	18	44	6	04	18	48	5	38	18	18	17	भ. 17/1 से 29/18 तक, मंगल मृग. में 12/51
	18	14	र.	17	42	रेव.	--	--	वै.	21	42	मीन			5	56	18	48	5	56	18	45	6	03	18	48	5	37	18	18	18	
	19	30	च.	18	52	रेव.	7	24	वि.	21	37	मेष	7	24	5	55	18	49	5	55	18	45	6	03	18	49	5	36	18	19	19	पंचक समाप्त 7/24, सूर्य सायन वृष में 23/22, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (C)
वैशाख शुक्ल	20	1	मं.	20	28	अश्वि.	9	24	प्री.	21	53	मेष			5	54	18	50	5	55	18	46	6	02	18	50	5	35	18	19	20	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ
	21	2	बु.	22	28	भर.	11	48	आ.	22	28	वृष	18	28	5	53	18	50	5	54	18	47	6	01	18	50	5	34	18	20	21	चन्द्र दर्शन, मु. 30, श्रीशिवाजी जयन्ती
	22	3	गु.	24	48	कृत्ति.	14	33	सौ.	23	17	वृष			5	52	18	51	5	53	18	47	6	00	18	51	5	33	18	20	22	व. बुध रेव. ४ मीन में 6/20, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया
	23	4	शु.	27	19	रोहि.	17	32	शो.	24	15	वृष			5	51	18	52	5	52	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	भ. 14/3 से 27/19 तक
	24	5	श.	--	--	मृग.	20	37	अ.	25	16	मिथुन	7	05	5	50	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	32	18	21	24	शुक्र मृग. में 17/31, आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती
	25	5	र.	5	52	आर्द्रा	23	36	सु.	26	11	मिथुन			5	49	18	53	5	50	18	49	5	57	18	52	5	31	18	22	25	व. बुध पूर्व में उदित 9/14, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.)
	26	6	च.	8	15	पुन.	26	17	धृ.	26	51	कर्क	19	39	5	48	18	54	5	49	18	49	5	56	18	53	5	30	18	22	26	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (पू. भा.), श्रीगंगा जन्म (देखें पृष्ठ 149)
	27	7	मं.	10	15	पुष्य	28	30	शू.	27	08	कर्क			5	47	18	54	5	48	18	50	5	55	18	53	5	29	18	23	27	भ. 10/15 से 23/3 तक, सूर्य भर. में 9/48, मंगल मिथुन में 24/13
	28	8	बु.	11	42	आश्ले.	--	--	गं.	26	55	कर्क			5	46	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	श्रीजानकी जयन्ती (देखें पृष्ठ 149
	29	9	गु.	12	27	आश्ले.	6	04	वृ.	26	08	सिंह	6	04	5	45	18	56	5	46	18	51	5	54	18	54	5	28	18	24	29	
	30	10	शु.	12	27	मघा	6	55	ध्रु.	24	43	सिंह			5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	27	18	24	30	भ. 24/9 बाद, बुध मार्गी 18/36

अर्ध कुम्भ (हरिद्वार)
13 अप्रैल (देखें पृष्ठ 11)

(A) कामदा एकादशी व्रत (स.), अप्रैल प्रारम्भ, (B) अर्ध कुम्भ हरिद्वार, (C) सोमवती अमावस

श्री वि. सं. 2061 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** मई, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
वैशाख शुक्ल	1	11	श.	11	39	पू.फा.	7	00	व्या.	22	42	कन्या	12	54	5	43	18	57	5	45	18	52	5	52	18	55	5	26	18	25	1	भ. 11/39 तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), मई प्रारम्भ
	2	12	र.	10	07	उ.फा.	6	20	ह.	20	06	कन्या			5	42	18	58	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	प्रदोष व्रत
						हस्त	29	00																								
	3	13	चं.	7	55	चित्रा	27	06	व.	17	01	तुला	16	07	5	41	18	58	5	43	18	54	5	51	18	57	5	25	18	26	3	भ. 29/12 बाद, श्रीनृसिंह जयन्ती, ग्रहण शूल
		/14		29	12																											चतुर्दशी तिथिक्षय
	4	15	मं.	26	04	स्वा.	24	48	सि.	13	33	तुला			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	भ. 15/40 तक, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध जयन्ती, कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व , (A)
ज्येष्ठ कृष्ण	5	1	बु.	22	41	विशा.	22	14	व्य.	9	47	वृश्चिक	16	54	5	39	19	00	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु मार्गी 9/4, ग्रहण शूल
	6	2	गु.	19	13	अनु.	19	34	व.	5	51	वृश्चिक			5	39	19	00	5	41	18	56	5	49	18	58	5	22	18	27	6	भ. 29/29 बाद, शुक्र मिथुन में 25/50, ग्रहण शूल
									प.	25	54																					
	7	3	शु.	15	47	ज्ये.	16	58	शि.	22	02	धनु	16	58	5	38	19	01	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	28	7	भ. 15/47 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, ग्रहण शूल
	8	4	श.	12	34	मूल	14	34	सि.	18	21	धनु			5	37	19	02	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	मंगल आर्द्रा में 12/16
	9	5	र.	9	40	पू.षा.	12	30	सा.	14	59	मकर	18	04	5	36	19	02	5	38	18	57	5	47	19	00	5	21	18	29	9	बुध अश्वि. मेष में 7/23
	10	6	चं.	7	14	उ.षा.	10	55	शु.	12	01	मकर			5	36	19	03	5	38	18	58	5	46	19	00	5	20	18	29	10	भ. 7/14 से 18/12 तक, सूर्य कृति. में 28/4
		/7		29	19																											सप्तमी तिथिक्षय
	11	8	मं.	28	00	श्रव.	9	52	शु.	9	29	कुम्भ	21	34	5	35	19	04	5	37	18	59	5	45	19	01	5	19	18	30	11	पंचक प्रारम्भ 21/34
	12	9	बु.	27	18	धनि.	9	25	ब्र.	7	27	कुम्भ			5	34	19	04	5	36	18	59	5	45	19	02	5	19	18	30	12	
	13	10	गु.	27	14	शत.	9	35	ऐं.	5	55	मीन	28	07	5	33	19	05	5	36	19	00	5	44	19	02	5	18	18	31	13	भ. 15/12 से 27/14 तक
									वै.	28	52																					
	14	11	शु.	27	45	पू.भा.	10	22	वि.	28	17	मीन			5	33	19	06	5	35	19	00	5	44	19	03	5	18	18	31	14	सं. सूर्य वृष में 14/56, मु. 45, पुण्यकाल 8/32 के बाद, राहु भर. 1 में , (B)
	15	12	श.	28	48	उ.भा.	11	42	प्री.	28	07	मीन			5	32	19	06	5	35	19	01	5	43	19	03	5	17	18	32	15	
	16	13	र.	--	--	रेव.	13	32	आ.	28	19	मेष	13	32	5	32	19	07	5	34	19	02	5	43	19	04	5	17	18	32	16	पंचक समाप्त 13/32, प्रदोष व्रत
	17	13	चं.	6	18	अश्वि.	15	46	सौ.	28	48	मेष			5	31	19	08	5	34	19	02	5	42	19	04	5	16	18	33	17	भ. 6/18 से 19/12 तक, शुक्र वक्री 27/58, नेपच्यून वक्री 16/31
	18	14	मं.	8	12	भर.	18	21	शो.	--	--	वृष	25	03	5	30	19	08	5	33	19	03	5	42	19	05	5	16	18	33	18	शनि आर्द्रा 4 में 19/35
	19	30	बु.	10	22	कृत्ति.	21	12	शो.	5	31	वृष			5	30	19	09	5	32	19	03	5	41	19	05	5	15	18	34	19	भावुका अमावस, वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष)
ज्येष्ठ शुक्ल	20	1	गु.	12	46	रोहि.	24	12	अ.	6	25	वृष			5	29	19	10	5	32	19	04	5	41	19	06	5	15	18	34	20	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 45, सूर्य सायन मिथुन में 22/30
	21	2	शु.	15	16	मृग.	27	16	सु.	7	25	मिथुन	13	44	5	29	19	10	5	32	19	05	5	40	19	07	5	15	18	35	21	रम्भा तृतीया
	22	3	श.	17	47	आर्द्रा	--	--	धृ.	8	27	मिथुन			5	28	19	11	5	31	19	05	5	40	19	07	5	14	18	35	22	बुध भर. में 15/24, श्रीप्रताप जयन्ती
	23	4	र.	20	10	आर्द्रा	6	17	शू.	9	26	कर्क	26	27	5	28	19	11	5	31	19	06	5	40	19	08	5	14	18	36	23	भ. 7/0 से 20/10 तक
	24	5	चं.	22	17	पुन.	9	08	गं.	10	15	कर्क			5	27	19	12	5	30	19	06	5	39	19	08	5	14	18	36	24	सूर्य रोहि. में 24/13
	25	6	मं.	23	59	पुष्य	11	38	वृ.	10	48	कर्क			5	27	19	13	5	30	19	07	5	39	19	09	5	13	18	37	25	
	26	7	बु.	25	08	आश्ले.	13	41	ध्रु.	10	59	सिंह	13	41	5	27	19	13	5	30	19	07	5	39	19	09	5	13	18	37	26	भ. 25/8 बाद
	27	8	गु.	25	36	मघा	15	07	व्या.	10	42	सिंह			5	26	19	14	5	29	19	08	5	38	19	10	5	13	18	38	27	भ. 13/27 तक
	28	9	शु.	25	20	पू.फा.	15	52	ह.	9	52	कन्या	21	56	5	26	19	14	5	29	19	08	5	38	19	10	5	12	18	38	28	व. शुक्र मृग. २ वृष में 17/27
	29	10	श.	24	18	उ.फा.	15	51	व.	8	26	कन्या			5	26	19	15	5	29	19	09	5	38	19	11	5	12	18	39	29	मंगल पुन. में 14/3, श्रीगंगा दशहरा
	30	11	र.	22	31	हस्त	15	05	सि.	6	23	तुला	26	26	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 11/30 से 22/31 तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.)
									व्य.	27	44																					
	31	12	चं.	20	03	चित्रा	13	37	व.	24	33	तुला			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	बुध कृति. में 12/2, चम्पक द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत

(A) उज्जैन, खग्रास चन्द्रग्रहण, वैशाखी पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) 16/25, केतु स्वा. 3 में 16/25, अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.)

कुम्भ महापर्व उज्जैन 4 मई (देखें पृष्ठ 11)

खग्रास चन्द्रग्रहण 4 मई (देखें पृष्ठ 14)

श्री वि. सं. 2061 | **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** | **जून, सन् 2004 ई.**

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
ज्येष्ठ शुक्ल	1	13	मं.	17	02	स्वा.	11	32	प.	20	55	वृश्चिक	27	40	5	25	19	17	5	28	19	11	5	37	19	12	5	12	18	40	1	जून प्रारम्भ, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 10/05
	2	14	बु.	13	34	विशा.	9	00	शि.	16	56	वृश्चिक			5	25	19	17	5	28	19	11	5	37	19	13	5	12	18	41	2	भ. 13/34 से 23/44 तक, बुध वृष में 10/26, वट सावित्री व्रत , (A)
	3	15	गु.	9	50	अनु.	6	08	सि.	12	45	धनु	27	08	5	24	19	18	5	28	19	12	5	37	19	13	5	11	18	41	3	
						ज्ये.	27	08																								
आषाढ़ कृष्ण	4	1	शु.	5	59	मूल	24	10	सा.	8	30	धनु			5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	41	4	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पश्चिम में अस्त 10/05
		/2		26	13				शु.	28	20																					द्वितीया तिथिक्षय
	5	3	श.	22	40	पू. षा.	21	25	शु.	24	22	मकर	26	48	5	24	19	19	5	27	19	13	5	37	19	14	5	11	18	42	5	भ. 12/24 से 22/40 तक
	6	4	र.	19	31	उ. षा.	19	05	ब्र.	20	45	मकर			5	24	19	19	5	27	19	13	5	37	19	15	5	11	18	42	6	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
	7	5	चं.	16	56	श्रव.	17	17	ऐ.	17	36	कुम्भ	28	38	5	24	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	पंचक प्रारम्भ 28/38, सूर्य मृग. में 22/10, बुध रोहि. में 18/57, (B)
	8	6	मं.	15	00	धनि.	16	10	वै.	15	00	कुम्भ			5	24	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 15/0 से 26/19 तक, शुक्र का सूर्यातिक्रमण
	9	7	बु.	13	50	शत.	15	48	वि.	13	01	कुम्भ			5	24	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	व. शुक्र रोहि. ४ में 14/40
	10	8	गु.	13	27	पू. भा.	16	12	प्री.	11	39	मीन	10	02	5	24	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	10	यूरेनस वक्री 20/44
	11	9	शु.	13	50	उ. भा	17	21	आ.	10	55	मीन			5	24	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	11	भ. 26/17 बाद
	12	10	श.	14	54	रेव.	19	10	सौ.	10	43	मेष	19	10	5	24	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	12	भ. 14/54 तक, पंचक समाप्त 19/10
	13	11	र.	16	33	अश्वि.	21	30	शो.	11	00	मेष			5	24	19	22	5	27	19	16	5	37	19	17	5	11	18	45	13	योगिनी एकादशी व्रत (स.), शुक्र पूर्व में उदित 8/30
	14	12	चं.	18	37	भर.	24	13	अ.	11	37	मेष			5	24	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	14	सं. सूर्य मिथुन में 21/34, मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद, मंगल , (C)
	15	13	मं.	20	58	कृत्ति.	27	11	सु.	12	29	वृष	6	57	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	12	18	46	15	भ. 20/58 बाद, शनि पुन. 1 में 29/8
	16	14	बु.	23	27	रोहि.	--	--	धृ.	13	29	वृष			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	16	भ. 10/12 तक, शुक्र बाल्य समाप्त 8/30
	17	30	गु.	25	57	रोहि.	6	15	शू.	14	32	मिथुन	19	47	5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	17	बुध मिथुन में 6/51, अमावस
आषाढ़ शुक्ल	18	1	शु.	28	24	मृग.	9	19	गं.	15	34	मिथुन			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ
	19	2	श.	--	--	आर्द्रा	12	17	वृ.	16	30	मिथुन			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	19	चन्द्र दर्शन, मु. 45, मंगल पुष्य में 17/36, रथयात्रा (पुरी)
	20	2	र.	6	41	पुन.	15	05	ध्रु.	17	18	कर्क	8	25	5	25	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	20	बुध आर्द्रा में 7/43, शनि अस्त 17/33
	21	3	चं.	8	44	पुष्य	17	38	व्या.	17	54	कर्क			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	13	18	47	21	भ. 21/38 बाद, सूर्य आर्द्रा में 21/8, सूर्य सायन कर्क में 6/28, (D)
	22	4	मं.	10	27	आश्ले.	19	51	ह.	18	13	सिंह	19	51	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	22	भ. 10/27 तक
	23	5	बु.	11	46	मघा	21	38	व.	18	12	सिंह			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	23	प्लूटो ज्ये. 3 में 23/5, कुमार षष्ठी
	24	6	गु.	12	34	पू. फा.	22	53	सि.	17	45	कन्या	29	06	5	26	19	25	5	29	19	19	5	38	19	20	5	13	18	48	24	विवस्वत् सप्तमी
	25	7	शु.	12	47	उ. फा.	23	30	व्य.	16	50	कन्या			5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	25	भ. 12/47 से 24/38 तक
	26	8	श.	12	20	हस्त	23	28	व.	15	23	कन्या			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	26	बुध पुन. में 13/18
	27	9	र.	11	10	चित्रा	22	43	प.	13	22	तुला	11	11	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	
	28	10	चं.	9	19	स्वा.	21	19	शि.	10	47	तुला			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	28	भ. 20/9 बाद, हरिशयनी एकादशी व्रत (स्मा.)
	29	11	मं.	6	50	विशा.	19	18	सि.	7	40	वृश्चिक	13	51	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	29	भ. 6/50 तक, शुक्र मार्गी 28/48, हरिशयनी एकादशी व्रत (वै.), (E)
		/12		27	47				सा.	28	06																					द्वादशी तिथिक्षय
	30	13	बु.	24	18	अनु.	16	48	शु.	24	10	वृश्चिक			5	28	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	30	बुध पश्चिम में उदित 10/56, प्रदोष व्रत

शुक्र पश्चिम में अस्त
4 जून

शुक्र का सूर्यातिक्रमण
8 जून (देखें पृष्ठ 16)

शुक्र पूर्व में उदित
13 जून

(A) (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) बुध पूर्व में अस्त 23/48, गुरु पू. फा. 2 में 29/10, (C) कर्क में 10/38, बुध मृग. में 5/24, सोम प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 149) (D) दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, (E) त्रिस्पृशा महाद्वादशी

श्री वि. सं. 2061 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जुलाई, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रह — राशि — नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आ. शु	1	14	गु.	20	32	ज्ये	13	57	शु.	20	00	धनु	13	57	5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	1	भ. 20/32 बाद, बुध कर्क में 13/45, श्री सत्य. व्र. (देखें पृ. 150, जुला. प्रा ,
	2	15	शु.	16	39	मूल	10	56	ब्र.	15	44	धनु			5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	2	भ. 6/36 तक, , गुरु पूर्णिमा, व्यास , (A)
प्रथम श्रावण कृष्ण	3	1	श.	12	51	पू. षा.	7	56	ऐं.	11	31	मकर	13	12	5	29	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	प्रथम श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध पुष्य में 8/15
						उ. षा.	29	08																								
	4	2	र.	9	18	श्रव.	26	45	वै.	7	31	मकर			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	21	5	17	18	48	4	भ. 19/40 बाद, गुरु पू. फा. 3 में 25/6, अशून्यशयन व्रत
									वि.	27	51																					
	5	3	चं.	6	10	धनि	24	56	प्री.	24	40	कुम्भ	13	45	5	30	19	25	5	33	19	19	5	42	19	21	5	17	18	48	5	भ. 6/10 तक, पंचक प्रारम्भ 13/45, सूर्य पुन. में 20/46, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
		/4		27	39																											चतुर्थी तिथिक्षय
	6	5	मं.	25	52	शत.	23	50	आ.	22	05	कुम्भ			5	30	19	25	5	33	19	19	5	43	19	20	5	17	18	48	6	
	7	6	बु.	24	54	पू. भा.	23	34	सौ.	20	10	मीन	17	33	5	30	19	25	5	34	19	19	5	43	19	20	5	18	18	48	7	भ. 24/54 बाद
	8	7	गु.	24	48	उ. भा.	24	08	शो.	18	56	मीन			5	31	19	25	5	34	19	19	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 12/45 तक
	9	8	शु.	25	32	रेव.	25	32	अ.	18	22	मेष	25	32	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	9	पंचक समाप्त 25/32
	10	9	श.	26	59	अश्वि	27	37	सु.	18	24	मेष			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	मंगल आश्ले. में 21/43, बुध आश्ले. में 26/18
	11	10	र.	29	00	भर.	--	--	धृ.	18	55	मेष			5	32	19	24	5	36	19	18	5	45	19	20	5	19	18	48	11	भ. 15/56 से 29/0 तक, शनि पुन. 2 में 27/41
	12	11	चं.	--	--	भर.	6	14	शू.	19	45	वृष	12	57	5	33	19	24	5	36	19	18	5	45	19	19	5	20	18	47	12	
	13	11	मं.	7	22	कृत्ति.	9	12	ग.	20	47	वृष			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	13	कामिका एकादशी व्रत (स.)
	14	12	बु.	9	53	रोहि.	12	18	वृ.	21	52	मिथुन	25	51	5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	14	प्रदोष व्रत
	15	13	गु.	12	24	मृग.	15	22	ध्रु.	22	53	मिथुन			5	35	19	23	5	38	19	17	5	47	19	19	5	21	18	47	15	भ. 12/24 से 25/37 तक
	16	14	शु.	14	46	आर्द्रा	18	17	व्या.	23	46	मिथुन			5	35	19	22	5	38	19	17	5	47	19	18	5	22	18	46	16	सं. सूर्य कर्क में 8/27, मु. 15, पुण्यकाल 14/50 तक, राहु अश्वि. 4 में , (B)
	17	30	श.	16	54	पुन.	20	59	ह.	24	27	कर्क	14	20	5	36	19	22	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	17	शनैश्चरी अमावस, **हरियाली अमावस**
प्र. (अधिक) श्रावण शुक्ल	18	1	र.	18	45	पुष्य	23	23	व.	24	54	कर्क			5	36	19	22	5	39	19	16	5	48	19	18	5	23	18	46	18	**प्र. (अधिक) श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, चन्द्र दर्शन, मु. 30, मलमास प्रारम्भ
	19	2	चं.	20	16	आश्ले.	25	27	सि.	25	05	सिंह	25	27	5	37	19	21	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	19	सूर्य पुष्य में 20/16
	20	3	मं.	21	26	मघा	27	11	व्य.	25	00	सिंह			5	37	19	21	5	40	19	15	5	49	19	17	5	24	18	45	20	बुध मघा सिंह में 11/22
	21	4	बु.	22	12	पू. फा.	28	31	व.	24	36	सिंह			5	38	19	20	5	41	19	14	5	50	19	17	5	24	18	45	21	भ. 9/52 से 22/12 तक, शुक्र मृग. में 21/41
	22	5	गु.	22	32	उ. फा.	29	25	प.	23	51	कन्या	10	47	5	39	19	20	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	सूर्य सायन सिंह में 17/21
	23	6	शु.	22	23	हस्त	--	--	शि.	22	42	कन्या			5	39	19	19	5	42	19	14	5	51	19	16	5	25	18	44	23	
	24	7	श.	21	41	हस्त	5	49	सि.	21	08	तुला	17	49	5	40	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	24	भ. 21/41 बाद, गुरु पू. फा. 4 में 26/45
	25	8	र.	20	26	चित्रा	5	41	सा.	19	07	तुला			5	40	19	18	5	43	19	12	5	52	19	15	5	26	18	43	25	भ. 9/8 तक, मंगल अस्त 22/2
						स्वा.	28	58																								
	26	9	चं.	18	35	विशा.	27	42	शु.	16	37	वृश्चिक	22	04	5	41	19	17	5	44	19	12	5	52	19	14	5	26	18	42	26	शनि उदित 26/13
	27	10	मं.	16	12	अनु.	25	54	शु.	13	40	वृश्चिक			5	42	19	17	5	44	19	11	5	53	19	14	5	27	18	42	27	भ. 26/50 बाद
	28	11	बु.	13	21	ज्ये.	23	39	ब्र.	10	19	धनु	23	39	5	42	19	16	5	45	19	11	5	53	19	13	5	27	18	41	28	भ. 13/21 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.)
	29	12	गु.	10	07	मूल	21	06	ऐं.	6	38	धनु			5	43	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	28	18	41	29	प्रदोष व्रत
									वै.	26	44																					
	30	13	शु.	6	38	पू. षा.	18	23	वि.	22	44	मकर	23	42	5	43	19	15	5	46	19	09	5	54	19	12	5	28	18	40	30	भ. 27/4 बाद
		/14		27	04																											चतुर्दशी तिथिक्षय
	31	15	श.	23	36	उ. षा.	15	41	प्री.	18	46	मकर			5	44	19	14	5	46	19	09	5	55	19	11	5	29	18	40	31	भ. 13/19 तक, मंगल मघा सिंह में 25/0, शुक्र मिथुन में 7/45, (C)

(A) पूजा, शिवशयनोत्सव, आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रा., कोकिला व्रत, (B) 14/5, केतु स्वा. 2 में 14/5, (C) श्रीसत्यनारायण व्रत

श्री वि.सं. 2061

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.
द्वि. (अधिक) श्रावण कृष्ण	1	1	र	20	23	श्रव	13	11	आ.	15	00	कुम्भ	24	03
	2	2	च.	17	37	धनि.	11	03	सौ.	11	33	कुम्भ		
	3	3	म.	15	27	शत.	9	29	शो.	8	35	मीन	26	46
	4	4	बु.	14	01	पू. भा.	8	38	अ.	6	10	मीन		
									सु.	28	25			
	5	5	गु	13	25	उ. भा.	8	35	धृ.	27	21	मीन		
	6	6	शु	13	41	रेव.	9	22	शू.	26	56	मेष	9	22
	7	7	श	14	44	अश्वि.	10	57	गं.	27	05	मेष		
	8	8	र	16	28	भर.	13	12	वृ.	27	42	वृष	19	51
	9	9	च	18	41	कृत्ति.	15	57	ध्रु.	28	36	वृष		
	10	10	म	21	10	रोहि.	18	58	व्या.	29	38	वृष		
	11	11	बु	23	40	मृग.	22	02	ह.	--	--	मिथुन	8	31
	12	12	गु	25	59	आर्द्रा	24	56	ह.	6	38	मिथुन		
	13	13	शु.	28	01	पुन.	27	34	व.	7	28	कर्क	20	56
	14	14	श	29	40	पुष्य	29	49	सि.	8	04	कर्क		
	15	30	र	--	--	आश्ले.	--	--	व्य.	8	21	कर्क		
	16	30	च	6	54	आश्ले	7	40	व.	8	19	सिंह	7	40
द्वि. (शुद्ध) श्रावण शुक्ल	17	1	म.	7	44	मघा	9	07	प.	7	58	सिंह		
	18	2	बु	8	09	पू. फा.	10	11	शि.	7	18	कन्या	16	24
	19	3	गु	8	12	उ. फा.	10	53	सि.	6	21	कन्या		
									सा.	29	05			
	20	4	शु	7	52	हस्त	11	13	शु.	27	31	तुला	23	14
	21	5	श	7	10	चित्रा	11	10	शु.	25	39	तुला		
	22	6	र	6	05	स्वा.	10	44	ब्र.	23	28	वृश्चिक	28	10
		/7		28	36									
	23	8	च.	26	43	विशा.	9	55	ऐं.	20	57	वृश्चिक		
	24	9	म	24	29	अनु.	8	43	वै.	18	09	वृश्चिक		
	25	10	बु.	21	55	ज्ये.	7	09	वि.	15	03	धनु	7	09
						मूल	29	18						
	26	11	गु	19	07	पू. षा.	27	13	प्री.	11	44	धनु		
	27	12	शु	16	10	उ. षा.	25	04	आ.	8	16	मकर	8	41
									सौ.	28	45			
	28	13	श	13	13	श्रव.	22	57	शो.	25	18	मकर		
	29	14	र	10	25	धनि	21	02	अ.	22	02	कुम्भ	9	57
	30	15	च	7	53	शत.	19	30	सु.	19	04	कुम्भ		
भा. कृ.		/1		29	48									
	31	2	म	28	17	पू. भा.	18	28	धृ.	16	31	मीन	12	40

तारीख	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
1	5	45	19	13	5	47	19	08	5	55	19	11	5	29	18	39	द्वि. (अधिक) श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 24/3, अगस्त प्रारम्भ
2	5	45	19	12	5	47	19	07	5	56	19	10	5	30	18	39	भ. 28/27 बाद, सूर्य आश्ले. में 19/11
3	5	46	19	12	5	48	19	07	5	56	19	09	5	30	18	38	भ. 15/27 तक, बुध पू. फा. में 28/48, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
4	5	46	19	11	5	48	19	06	5	57	19	09	5	31	18	37	
5	5	47	19	10	5	49	19	05	5	57	19	08	5	31	18	37	
6	5	48	19	09	5	50	19	04	5	58	19	07	5	32	18	36	भ. 13/41 से 26/7 तक, पंचक समाप्त 9/22
7	5	48	19	08	5	50	19	04	5	58	19	06	5	32	18	35	शनि पुन. 3 में 9/39
8	5	49	19	07	5	51	19	03	5	59	19	06	5	33	18	34	शुक्र आर्द्रा में 8/41
9	5	49	19	06	5	51	19	02	5	59	19	05	5	33	18	34	नेपच्यून श्रव. 3 में 6/49
10	5	50	19	05	5	52	19	01	6	00	19	04	5	33	18	33	भ. 7/54 से 21/10 तक, बुध वक्री 6/3
11	5	51	19	05	5	52	19	00	6	00	19	03	5	34	18	32	गुरु उ. फा. 1 में 16/19, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.)
12	5	51	19	04	5	53	18	59	6	01	19	02	5	34	18	31	
13	5	52	19	03	5	53	18	58	6	01	19	01	5	35	18	31	भ. 28/1 बाद, प्रदोष व्रत
14	5	52	19	02	5	54	18	57	6	01	19	01	5	35	18	30	भ. 16/54 तक
15	5	53	19	01	5	54	18	56	6	02	19	00	5	36	18	29	व. बुध मघा ४ में 25/10
16	5	54	19	00	5	55	18	55	6	02	18	59	5	36	18	28	सं. सूर्य मघा सिंह में 16/49, मु. 30, पुण्यकाल 10/25 के बाद, व. बुध, (A)
17	5	54	18	59	5	55	18	55	6	03	18	58	5	37	18	27	द्वि. (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30
18	5	55	18	57	5	56	18	54	6	03	18	57	5	37	18	26	
19	5	55	18	56	5	57	18	53	6	04	18	56	5	37	18	25	भ. 20/5 बाद, मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज
20	5	56	18	55	5	57	18	52	6	04	18	55	5	38	18	25	भ. 7/52 तक, नाग पंचमी (देखें पृष्ठ 149
21	5	57	18	54	5	58	18	50	6	05	18	54	5	38	18	24	मंगल पू. फा. में 26/4, श्रीकल्कि जयन्ती
22	5	57	18	53	5	58	18	49	6	05	18	53	5	39	18	23	भ. 28/36 बाद, सूर्य सायन कन्या में 24/24, शरद् ऋतु प्रारम्भ, शुक्र पुन., (B) सप्तमी तिथिक्षय
23	5	58	18	52	5	59	18	48	6	06	18	52	5	39	18	22	भ. 15/42 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी (देखें पृष्ठ 149
24	5	58	18	51	5	59	18	47	6	06	18	51	5	39	18	21	
25	5	59	18	50	6	00	18	46	6	07	18	50	5	40	18	20	
26	5	59	18	49	6	00	18	45	6	07	18	49	5	40	18	19	भ. 8/32 से 19/7 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.)
27	6	00	18	47	6	01	18	44	6	07	18	48	5	41	18	18	गुरु उ. फा. 2 कन्या में 23/39, प्रदोष व्रत
28	6	01	18	46	6	01	18	43	6	08	18	47	5	41	18	17	ऋक् उपाकर्म
29	6	01	18	45	6	02	18	42	6	08	18	46	5	41	18	16	भ. 10/25 से 21/6 तक, पंचक प्रारम्भ 9/57, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C)
30	6	02	18	44	6	02	18	41	6	09	18	45	5	42	18	15	सूर्य पू. फा. में 12/46, प्लूटो मार्गी 25/11, रक्षा बन्धन (राखी), अथर्व उपाकर्म
31	6	02	18	43	6	03	18	40	6	09	18	44	5	42	18	14	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय; व. बुध पूर्व में उदित 29/40

(A) पश्चिम में अस्त 16/25, मलमास समाप्त, सोमवती अमा, (B) में 14/20, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (C) शुक्ल–कृष्ण–यजु–उपाकर्म

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
भाद्रपद कृष्ण	1	3	बु.	27	28	उ. भा	18	05	शू.	14	29	मीन			6	03	18	41	6	03	18	38	6	10	18	43	5	43	18	13	1	भ. 15/47 से 27/28 तक, शुक्र कर्क में 9/59, सितम्बर प्रारम्भ
	2	4	गु.	27	25	रेव.	18	25	गं.	13	02	मेष	18	25	6	03	18	40	6	03	18	37	6	10	18	42	5	43	18	12	2	पंचक समाप्त 18/25, बुध मार्गी 18/39, श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी , (A)
	3	5	शु.	28	08	अश्वि	19	31	वृ.	12	12	मेष			6	04	18	39	6	04	18	36	6	10	18	40	5	43	18	11	3	गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 18/25, अगस्त्य उदित
	4	6	श.	29	33	भर.	21	20	ध्रु.	11	57	वृष	27	53	6	04	18	38	6	04	18	35	6	11	18	39	5	44	18	10	4	भ. 29/33 बाद, शुक्र पुष्य में 13/57
	5	7	र.	--	--	कृति.	23	44	व्या.	12	13	वृष			6	05	18	37	6	05	18	34	6	11	18	38	5	44	18	09	5	भ. 18/29 तक, शनि पुन. 4 कर्क में 28/29
	6	7	च.	7	32	रोहि.	26	33	ह.	12	52	वृष			6	06	18	35	6	05	18	33	6	12	18	37	5	45	18	08	6	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (रोहिणी योग) (स्मार्त्तों गृहस्थियों के लिए), (B)
	7	8	मं.	9	53	मृग.	29	32	व.	13	46	मिथुन	16	02	6	06	18	34	6	06	18	32	6	12	18	36	5	45	18	07	7	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णवों सन्यासियों के लिए)
	8	9	बु.	12	21	आर्द्रा	--	--	सि.	14	43	मिथुन			6	07	18	33	6	06	18	30	6	13	18	35	5	45	18	06	8	भ. 25/34 बाद, श्रीगुग्गा नवमी
	9	10	गु.	14	43	आर्द्रा	8	28	व्य.	15	34	कर्क	28	31	6	07	18	32	6	07	18	29	6	13	18	34	5	46	18	05	9	भ. 14/43 तक
	10	11	शु.	16	45	पुन.	11	09	व.	16	11	कर्क			6	08	18	30	6	07	18	28	6	13	18	33	5	46	18	04	10	अजा एकादशी व्रत (स.)
	11	12	श.	18	21	पुष्य	13	26	प.	16	27	कर्क			6	08	18	29	6	08	18	27	6	14	18	32	5	46	18	03	11	[illegible] उ. फा. में 23/35, शनि प्रदोष व्रत
	12	13	र.	19	26	आश्ले	15	12	शि.	16	19	सिंह	15	12	6	09	18	28	6	08	18	26	6	14	18	30	5	47	18	02	12	भ. 19/26 बाद, गुरु उ. फा. 3 में 15/43
	13	14	चं.	19	58	मघा	16	27	सि.	15	46	सिंह			6	09	18	26	6	09	18	24	6	15	18	29	5	47	18	00	13	भ. 7/46 तक, सूर्य उ. फा. में 6/37
	14	30	मं.	20	00	पू. फा	17	12	सा.	14	48	कन्या	23	19	6	10	18	25	6	09	18	23	6	15	18	28	5	47	17	59	14	भौमवती अमावस, पिठोरी अमावस, कुशोत्पाटिनी अमावस
भाद्रपद शुक्ल	15	1	बु.	19	34	उ. फा.	17	30	शु.	13	28	कन्या			6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	48	17	58	15	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध पू. फा. में 23/27.
	16	2	गु.	18	44	हस्त	17	24	शु.	11	49	तुला	29	13	6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	16	चन्द्र दर्शन, मु. 30, सं. सूर्य कन्या में 16/41, मु. 30, पुण्यकाल , (C)
	17	3	शु.	17	34	चित्रा	16	58	ब्र.	9	52	तुला			6	12	18	21	6	11	18	20	6	16	18	25	5	49	17	56	17	भ. 28/52 बाद, राहु अश्वि. 3 में 11/45, केतु स्वा. 1 में 11/45, (D)
	18	4	श.	16	07	स्वा.	16	14	ऐं.	7	41	तुला			6	12	18	20	6	11	18	18	6	17	18	24	5	49	17	55	18	भ. 16/7 तक, सिद्धि विनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, संवत्सरी , (E)
									वै.	29	17																					
	19	5	र.	14	26	विशा.	15	17	वि.	26	43	वृश्चिक	9	33	6	13	18	19	6	12	18	17	6	17	18	22	5	49	17	54	19	बुध पूर्व में अस्त 29/26, यूरेनस शत. 1 में 29/22, ऋषि पंचमी
	20	6	चं.	12	32	अनु.	14	08	प्री.	24	00	वृश्चिक			6	13	18	18	6	12	18	16	6	18	18	21	5	50	17	53	20	सूर्य षष्ठी
	21	7	मं.	10	29	ज्ये.	12	48	आ.	21	10	धनु	12	48	6	14	18	16	6	13	18	15	6	18	18	20	5	50	17	52	21	भ. 10/29 से 21/24 तक, राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ
	22	8	बु.	8	18	मूल	11	21	सौ.	18	14	धनु			6	15	18	15	6	13	18	14	6	19	18	19	5	50	17	51	22	सूर्य सायन तुला में 22/1, दक्षिण गोल प्रारम्भ, श्रीचन्द नवमी , (F) नवमी तिथिक्षय
		/9		30	01																											
	23	10	गु.	27	43	पू. षा.	9	49	शो.	15	14	मकर	15	26	6	15	18	14	6	14	18	12	6	19	18	18	5	51	17	50	23	बुध उ. फा. में 16/24
	24	11	शु.	25	27	उ. षा.	8	16	अ.	12	15	मकर			6	16	18	13	6	14	18	11	6	19	18	17	5	51	17	49	24	भ. 14/34 से 25/27 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.)
	25	12	श.	23	18	श्रव.	6	47	सु.	9	19	कुम्भ	18	05	6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	52	17	48	25	पंचक प्रारम्भ 18/5, बुध कन्या में 12/6, वामन द्वादशी, श्रवण , (G)
						धनि.	29	26																								
	26	13	र.	21	23	शत.	28	21	धृ.	6	31	कुम्भ			6	17	18	10	6	15	18	09	6	20	18	14	5	52	17	47	26	सूर्य हस्त में 22/4, प्रदोष व्रत
									शू.	27	56																					
	27	14	चं.	19	48	पू. भा.	27	37	गं.	25	38	मीन	21	45	6	17	18	09	6	16	18	08	6	21	18	13	5	52	17	46	27	भ. 19/48 बाद, गुरु उ. फा. 4 में 26/7, अनन्त चतुर्दशी व्रत, (H)
	28	15	मं.	18	40	उ. भा.	27	21	वृ.	23	42	मीन			6	18	18	08	6	16	18	07	6	21	18	12	5	53	17	44	28	भ. 7/10 तक, शुक्र मघा सिंह में 16/14, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध
आ. कृ.	29	1	बु.	18	03	रेव.	27	38	ध्रु.	22	12	मेष	27	38	6	19	18	06	6	17	18	05	6	22	18	11	5	53	17	43	29	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 27/38, श्राद्धपक्ष , (I)
	30	2	गु.	18	03	अश्वि	28	32	व्या.	21	12	मेष			6	19	18	05	6	17	18	04	6	22	18	10	5	54	17	42	30	भ. 30/17 बाद, बुध हस्त में 23/31, द्वितीया का श्राद्ध

गुरु अस्त 6 सितं.

(A) व्रत (चन्द्रोदय घं. 20 मि. 47), बहुला चतुर्थी, (B) (चन्द्रोदय घं. 23 मि. 06), गुरु अस्त 18/25, (C) 10/18 के बाद, मंगल कन्या में 28/13, शुक्र आश्ले. में 20/31, साम उपाकर्म, मेला बाबा गोसाई आणां,कुराली पं(D) श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, कलंक चतुर्थी (चन्द्र दर्शन निषिद्ध), (चन्द्रास्त घं. 20 मि. 05), (E) पर्व (जैन), (F) (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (G) द्वादशी व्रत, (H) श्रीसत्यनारायण व्रत (देखे पृष्ठ150), (I) (महालय) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध

श्री वि. सं. 2061 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **अक्तूबर, सन् 2004 ई.**

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
आश्विन कृष्ण	1	3	शु.	18	41	भर.	30	03	ह.	20	41	मेष			6	20	18	04	6	18	18	03	6	23	18	09	5	54	17	41	1	भ. 18/41 तक, अक्तूबर प्रारम्भ, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया श्राद्ध
	2	4	श.	19	58	कृति.	--	--	व.	20	40	वृष	12	31	6	20	18	03	6	18	18	02	6	23	18	08	5	54	17	40	2	मंगल हस्त में 16/17, चतुर्थी श्राद्ध, गुरु उदित 19/20
	3	5	र.	21	47	कृति.	8	09	सि.	21	03	वृष			6	21	18	01	6	19	18	01	6	24	18	07	5	55	17	39	3	पंचमी श्राद्ध
	4	6	च.	24	01	रोहि.	10	43	व्य.	21	45	मिथुन	24	08	6	22	18	00	6	19	18	00	6	24	18	06	5	55	17	38	4	भ. 24/1 बाद, षष्ठी श्राद्ध
	5	7	मं.	26	28	मृग.	13	36	व.	22	38	मिथुन			6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	05	5	56	17	37	5	भ. 13/14 तक, सप्तमी श्राद्ध, गुरु बाल्य समाप्त 19/20
	6	8	बु.	28	54	आर्द्रा	16	34	प.	23	31	मिथुन			6	23	17	58	6	20	17	57	6	25	18	04	5	56	17	36	6	अष्टमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समाप्त
	7	9	गु.	--	--	पुन.	19	24	शि.	24	15	कर्क	12	43	6	23	17	57	6	21	17	56	6	26	18	02	5	57	17	35	7	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
	8	9	शु.	7	06	पुष्य	21	53	सि.	24	40	कर्क			6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	01	5	57	17	34	8	भ. 20/2 बाद, बुध चित्रा में 13/3, दशमी श्राद्ध
	9	10	श.	8	50	आश्ले.	23	52	सा.	24	41	सिंह	23	52	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	00	5	57	17	33	9	भ. 8/50 तक, शुक्र पू. फा. में 28/4, एकादशी श्राद्ध
	10	11	र.	10	00	मघा	25	14	शु.	24	13	सिंह			6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	17	59	5	58	17	32	10	सूर्य चित्रा में 11/5, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), द्वादशी श्राद्ध
	11	12	चं.	10	31	पू. फा.	25	58	शु.	23	14	सिंह.			6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	58	5	58	17	31	11	सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध
	12	13	मं.	10	23	उ. फा.	26	04	ब्र.	21	44	कन्या	8	03	6	27	17	51	6	24	17	51	6	28	17	57	5	59	17	30	12	भ. 10/23 से 22/4 तक, बुध तुला में 11/42, शस्त्र विषादि से , (A)
	13	14	बु.	9	37	हस्त	25	37	ऐं.	19	47	कन्या			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	56	5	59	17	29	13	गुरु हस्त 1 में 15/29, अमावस श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, गजच्छाया पर्व
	14	30	गु.	8	19	चित्रा	24	41	वै.	17	26	तुला	13	12	6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	55	6	00	17	28	14	मातामह (नाना का) श्राद्ध, श्राद्ध (महालय पक्ष) समाप्त, शारद , (B)
आश्विन शुक्ल	15	1	शु.	6	34	स्वा.	23	24	वि.	14	45	तुला			6	29	17	47	6	26	17	48	6	30	17	54	6	00	17	27	15	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 15
		/2		28	29																											द्वितीया तिथिक्षय
	16	3	श.	26	10	विशा.	21	52	प्री.	11	50	वृश्चिक	16	16	6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	53	6	01	17	26	16	सं. सूर्य तुला में 28/34, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (C)
	17	4	र.	23	44	अनु.	20	11	आ.	8	45	वृश्चिक			6	30	17	45	6	27	17	46	6	31	17	52	6	01	17	25	17	भ. 12/58 से 23/44 तक
									सौ.	29	36																					
	18	5	चं.	21	16	ज्ये.	18	28	शो.	26	26	धनु	18	28	6	31	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	02	17	24	18	उपाङ्गललिता व्रत
	19	6	मं.	18	52	मूल	16	46	अ.	23	19	धनु			6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	02	17	24	19	सरस्वती आवाहन
	20	7	बु.	16	34	पू. षा.	15	12	सु.	20	20	मकर	20	50	6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	03	17	23	20	भ. 16/34 से 27/29 तक, सरस्वती पूजन–बलिदान, ओली प्रा. (जैन)
	21	8	गु.	14	28	उ. षा.	13	48	धृ.	17	29	मकर			6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	03	17	22	21	शुक्र उ. फा. में 10/8, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (पूजा के , (D)
	22	9	शु.	12	35	श्रव.	12	39	शू.	14	50	कुम्भ	24	10	6	34	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	04	17	21	22	पंचक प्रारम्भ 24/10, मंगल चित्रा में 27/14, महानवमी बलिदान के , (E)
	23	10	श.	11	00	धनि.	11	45	गं.	12	25	कुम्भ			6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	04	17	20	23	भ. 22/19 बाद, सूर्य स्वा. में 21/30, सूर्य सायन वृश्चिक में 7/20, (F)
	24	11	र.	9	43	शत.	11	11	वृ.	10	15	मीन	28	59	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	05	17	19	24	भ. 9/43 तक, बुध विशा. में 24/22, नेपच्यून मार्गी 17/38, (G)
	25	12	चं.	8	49	पू. भा.	10	58	ध्रु.	8	22	मीन			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	45	6	05	17	19	25	सोम प्रदोष व्रत
	26	13	मं.	8	18	उ. भा.	11	09	व्या.	6	48	मीन			6	37	17	36	6	33	17	37	6	36	17	45	6	06	17	18	26	बुध पश्चिम में उदित 11/42
									ह.	29	35																					
	27	14	बु.	8	14	रेव.	11	46	व.	28	43	मेष	11	46	6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	07	17	17	27	भ. 8/14 से 20/22 तक, पंचक समाप्त 11/46, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H)
	28	15	गु.	8	38	अश्वि.	12	50	सि.	28	14	मेष			6	38	17	34	6	34	17	35	6	37	17	43	6	07	17	16	28	महर्षि वाल्मिकि जयन्ती, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ
का. कृ.	29	1	शु.	9	31	भर.	14	23	व्य.	28	07	वृष	20	50	6	39	17	33	6	35	17	35	6	38	17	42	6	08	17	15	29	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु हस्त 2 में 17/34, शनि पुष्य 1 में 19/44
	30	2	श.	10	54	कृति.	16	23	व.	28	22	वृष			6	40	17	32	6	36	17	34	6	39	17	41	6	08	17	15	30	भ. 23/46 बाद
	31	3	र.	12	45	रोहि.	18	49	प.	28	54	वृष			6	41	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	09	17	14	31	भ. 12/45 तक, बुध वृश्चिक में 15/55, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (I)

गुरु उदित
2 अक्तू.

(A) मृतों का श्राद्ध, चतुर्दशी श्राद्ध, (B) नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 150, घट स्थापन, (C) बुध स्वा. में 13/10, (D) लिए), सरस्वती विसर्जन, (E) लिए, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (F) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शुक्र कन्या में 28/57, (G) पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (H) शरद पूर्णिमा, कोजागर व्रत, (I) करक चतुर्थी व्रत, करवा चौथ, (चन्द्रोदय घं. 19 मि. 38)

...श्राद्ध, चतुर्दशी श्राद्ध, (B) नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 150, घट स्थापन, (C) बुध स्वा. मे 13/10, (D) लिए), सरस्वती विसर्जन, (E) लिए, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (F) हेमन्त
ऋतु प्रारम्भ, शुक्र कन्या मे 28/57, (G) पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (H) ...

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
कार्तिक कृष्ण	1	4	च.	14	57	मृग.	21	35	शि.	29	40	मिथुन	8	10	6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	10	17	13	1	मंगल तुला में 30/26, शुक्र हस्त में 11/57, नवम्बर प्रारम्भ
	2	5	मं.	17	25	आर्द्रा	24	32	सि.	30	33	मिथुन			6	42	17	30	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	बुध अनु. में 22/33, प्लूटो ज्ये. 4 में 18/35
	3	6	बु.	19	56	पुन.	27	30	सा.	--	--	कर्क	20	46	6	43	17	29	6	39	17	31	6	41	17	39	6	11	17	12	3	भ. 19/56 बाद
	4	7	गु.	22	19	पुष्य	30	17	सा.	7	24	कर्क			6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	भ. 9/10 तक, मंगल उदित 27/15
	5	8	शु.	24	22	आश्ले.	--	--	शु.	8	05	कर्क			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	सूर्य विशा. में 29/42, **अहोई अष्टमी (पंजाब)**
	6	9	श.	25	51	आश्ले.	8	40	शु.	8	26	सिंह	8	40	6	45	17	27	6	41	17	29	6	44	17	37	6	13	17	10	6	
	7	10	र.	26	40	मघा	10	29	ब्र.	8	21	सिंह			6	46	17	26	6	42	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 14/21 से 26/40 तक
	8	11	च.	26	43	पू. फा.	11	36	ऐं.	7	43	कन्या	17	46	6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	09	8	शनि वक्री 12/13, रमा एकादशी व्रत (स.)
									वै.	30	29																					
	9	12	मं.	26	01	उ. फा.	11	59	वि.	28	39	कन्या			6	48	17	25	6	43	17	27	6	46	17	35	6	15	17	09	9	**गोवत्स द्वादशी**
	10	13	बु.	24	35	हस्त	11	38	प्री.	26	16	तुला	23	11	6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	08	10	भ. 24/35 बाद, **प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी**
	11	14	गु.	22	31	चित्रा	10	36	आ.	23	23	तुला			6	50	17	23	6	45	17	26	6	47	17	34	6	16	17	08	11	भ. 11/37 तक, यूरेनस मार्गी 25/34, **नरक चतुर्दशी (पूर्व**, (A)
	12	30	शु.	19	58	स्वा.	9	00	सौ.	20	05	वृश्चिक	25	30	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	07	12	मंगल स्वा. में 7/56, बुध ज्ये. में 11/37, शुक्र चित्रा मे 10/24, (B)
कार्तिक शुक्ल	13	1	श.	17	03	विशा.	6	58	शो.	16	30	वृश्चिक			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	07	13	**कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा**
						अनु.	28	39																								
	14	2	र.	13	55	ज्ये.	26	13	अ.	12	44	धनु	26	13	6	52	17	22	6	47	17	24	6	49	17	32	6	18	17	06	14	चन्द्र दर्शन, मु. 15, **यमद्वितीया, भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा**
	15	3	चं.	10	44	मूल	23	49	सु.	8	56	धनु			6	53	17	21	6	48	17	24	6	50	17	32	6	19	17	06	15	भ. 21/10 बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में 28/19, मु. 30, पुण्यकाल, (C)
									धृ.	29	11																					
	16	4	मं.	7	39	पू. षा.	21	36	शू.	25	37	मकर	27	05	6	54	17	21	6	49	17	23	6	51	17	32	6	20	17	06	16	भ. 7/39 तक
		/5		28	47																											पंचमी तिथिक्षय
	17	6	बु.	26	16	उ. षा.	19	41	गं.	22	19	मकर			6	55	17	20	6	49	17	23	6	52	17	31	6	20	17	05	17	शुक्र तुला में 20/41, व. शनि पुन. 4 में 28/19, **सूर्यषष्ठी**
	18	7	गु.	24	12	श्रव.	18	11	वृ.	19	21	कुम्भ	29	37	6	56	17	20	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	05	18	भ. 24/12 बाद, पंचक प्रारम्भ 29/37
	19	8	शु.	22	38	धनि.	17	10	ध्रु.	16	47	कुम्भ			6	57	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	22	17	05	19	भ. 11/21 तक, सूर्य अनु. में 11/38, राहु अश्वि. 2 में 9/24, केतु, (D)
	20	9	श.	21	36	शत.	16	40	व्या.	14	38	कुम्भ			6	57	17	19	6	52	17	22	6	54	17	30	6	22	17	04	20	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी
	21	10	र.	21	06	पू. भा.	16	41	ह.	12	55	मीन	10	38	6	58	17	19	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	04	21	सूर्य सायन धनु में 28/52
	22	11	चं.	21	07	उ. भा.	17	13	व.	11	36	मीन			6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	04	22	भ. 9/3 से 21/7 तक, शुक्र स्वा. में 30/29, देवप्रबोधिनी एकादशी, (E)
	23	12	मं.	21	37	रेव.	18	14	सि.	10	41	मेष	18	14	7	00	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	25	17	04	23	पंचक समाप्त 18/14, **तुलसी विवाह**
	24	13	बु.	22	34	अश्वि.	19	40	व्य.	10	06	मेष			7	01	17	18	6	55	17	21	6	57	17	29	6	25	17	04	24	बुध मूल धनु में 8/34, **प्रदोष व्रत**
	25	14	गु.	23	55	भर.	21	30	व.	9	51	वृष	28	00	7	02	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	04	25	भ. 23/55 बाद, वैकुण्ठ चतुर्दशी
	26	15	श.	25	38	कृत्ति.	23	40	प.	9	53	वृष			7	03	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	03	26	भ. 12/44 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, **श्रीगुरु नानक जयन्ती**, (F)
मार्ग. कृष्ण	27	1	श.	27	39	रोहि.	26	08	शि.	10	11	वृष			7	03	17	17	6	58	17	20	7	00	17	29	6	28	17	03	27	**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**
	28	2	र.	29	57	मृग.	28	52	सि.	10	41	मिथुन	15	29	7	04	17	17	6	58	17	20	7	00	17	29	6	28	17	03	28	
	29	3	चं.	--	--	आर्द्रा	--	--	सा.	11	23	मिथुन			7	05	17	17	6	59	17	20	7	01	17	29	6	29	17	03	29	भ. 19/10 बाद
	30	3	मं.	8	26	आर्द्रा	7	47	शु.	12	13	कर्क	28	02	7	06	17	17	7	00	17	20	7	02	17	29	6	30	17	03	30	भ. 8/26 तक, बुध वक्री 17/47, श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(A) **अरुणोदय वाली), श्रीहनुमान् जयन्ती, (B) दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन)**, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु हस्त 3 में 22/58, (D) चित्रा 4 में 9/25, **गोपाष्टमी**, (E) व्रत (स.), **भीष्म पंचक प्रारम्भ**, (F)

(F) **कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिक स्नान समाप्त, चातुर्मास्य व्रत नियमादि समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त**

श्री वि. सं. 2061 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** दिसम्बर, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	4	बु.	11	00	पुन.	10	47	शु.	13	05	कर्क			7	07	17	17	7	01	17	20	7	03	17	29	6	31	17	03	1	मंगल विशा. में 30/2, दिसम्बर प्रारम्भ
	2	5	गु.	13	31	पुष्य	13	44	ब्र.	13	54	कर्क			7	08	17	17	7	02	17	20	7	03	17	29	6	31	17	03	2	सूर्य ज्ये. में 16/1
	3	6	शु.	15	48	आश्ले.	16	27	ऐ.	14	33	सिंह	16	27	7	08	17	17	7	02	17	20	7	04	17	29	6	32	17	03	3	भ. 15/48 से 28/48 तक, शुक्र विशा. में 24/50
	4	7	श.	17	40	मघा	18	47	वै.	14	54	सिंह			7	09	17	17	7	03	17	20	7	05	17	29	6	33	17	04	4	व. बुध पश्चिम में अस्त 12/33
	5	8	र.	18	56	पू. फा.	20	32	वि.	14	49	कन्या	26	52	7	10	17	17	7	04	17	20	7	06	17	29	6	33	17	04	5	गुरु हस्त 4 में 13/58, श्रीकालाष्टमी, श्रीभैरवाष्टमी
	6	9	च.	19	29	उ. फा.	21	34	प्री.	14	10	कन्या			7	11	17	17	7	05	17	20	7	06	17	29	6	34	17	04	6	व. बुध ज्ये. ४ वृश्चिक में 8/21
	7	10	मं.	19	12	हस्त	21	49	आ.	12	55	कन्या			7	12	17	17	7	05	17	20	7	07	17	29	6	35	17	04	7	भ. 7/27 से 19/12 तक
	8	11	बु.	18	06	चित्रा	21	15	सौ.	11	01	तुला	9	38	7	12	17	17	7	06	17	20	7	08	17	30	6	35	17	04	8	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)
	9	12	गु.	16	12	स्वा.	19	56	शो.	8	29	तुला			7	13	17	17	7	07	17	21	7	08	17	30	6	36	17	04	9	**प्रदोष व्रत**
									अ.	29	21																					
	10	13	शु.	13	38	विशा.	17	57	सु.	25	44	वृश्चिक	12	30	7	14	17	17	7	08	17	21	7	09	17	30	6	37	17	05	10	भ. 13/38 से 24/7 तक
	11	14	श.	10	30	अनु.	15	27	धृ.	21	45	वृश्चिक			7	14	17	18	7	08	17	21	7	10	17	30	6	37	17	05	11	**शुक्र वृश्चिक में 25/43, शनैश्चरी अमावस**
		/30		31	00																											अमावस्या तिथिक्षय
मार्गशीर्ष शुक्ल	12	1	र.	27	17	ज्ये.	12	37	शू.	17	32	धनु	12	37	7	15	17	18	7	09	17	21	7	10	17	31	6	38	17	05	12	**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**
	13	2	च.	23	33	मूल	9	38	गं.	13	13	धनु			7	16	17	18	7	10	17	22	7	11	17	31	6	39	17	06	13	चन्द्र दर्शन, मु. 30
						पू. षा.	30	41																								
	14	3	मं.	20	00	उ. षा.	27	58	वृ.	8	58	मकर	11	59	7	17	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	39	17	06	14	भ. 30/20 बाद, शुक्र अनु. में 17/54
									ध्रु.	28	56																					
	15	4	बु.	16	47	श्रव.	25	40	व्या.	25	13	मकर			7	17	17	19	7	11	17	22	7	12	17	32	6	40	17	06	15	भ. 16/47 तक, सं. सूर्य मूल धनु मे 18/57, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद
	16	5	गु.	14	04	धनि.	23	54	ह.	21	58	कुम्भ	12	42	7	18	17	19	7	11	17	23	7	13	17	32	6	41	17	07	16	पंचक प्रारम्भ 12/42, मंगल वृश्चिक मे 24/10, व. बुध पूर्व में उदित 14/53, (A)
	17	6	शु.	11	58	शत.	22	48	व.	19	15	कुम्भ			7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	07	17	चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र), मित्र सप्तमी
	18	7	श.	10	35	पू. भा.	22	26	सि.	17	06	मीन	16	27	7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	08	18	भ. 10/35 से 22/10 तक, व. बुध अनु. ४ में 29/9
	19	8	र.	9	57	उ. भा.	22	46	व्य.	15	32	मीन			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	08	19	
	20	9	चं.	10	02	रेव.	23	47	व.	14	31	मेष	23	47	7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	09	20	पंचक समाप्त 23/47, बुध मार्गी 12/0
	21	10	मं.	10	47	अश्वि.	25	23	प.	14	00	मेष			7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	09	21	भ. 23/22 बाद, सूर्य सायन मकर में 18/12, उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु , (B)
	22	11	बु.	12	05	भर.	27	26	शि.	13	53	मेष			7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	22	भ. 12/5 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती
	23	12	गु.	13	49	कृत्ति.	29	51	सि.	14	05	वृष	10	01	7	22	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	23	प्रदोष व्रत
	24	13	शु.	15	53	रोहि.	--	--	सा.	14	32	वृष			7	22	17	23	7	16	17	26	7	17	17	36	6	45	17	11	24	
	25	14	श.	18	11	रोहि.	8	30	शु.	15	10	मिथुन	21	54	7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	36	6	45	17	11	25	भ. 18/11 बाद, शुक्र ज्ये. में 10/13
	26	15	र.	20	37	मृग.	11	20	शु.	15	54	मिथुन			7	23	17	24	7	17	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	26	भ. 7/23 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती
पौष कृष्ण	27	1	च.	23	08	आर्द्रा	14	15	ब्र.	16	42	मिथुन			7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	27	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ
	28	2	मं.	25	40	पुन.	17	12	ऐ.	17	31	कर्क	10	28	7	24	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	28	सूर्य पू. षा. में 21/14
	29	3	बु.	28	08	पुष्य	20	07	वै.	18	19	कर्क			7	24	17	26	7	18	17	29	7	19	17	39	6	47	17	14	29	भ. 14/55 से 28/8 तक
	30	4	गु.	30	27	आश्ले.	22	55	वि.	19	02	सिंह	22	55	7	24	17	27	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
	31	5	शु.	--	--	मघा	25	29	प्री.	19	34	सिंह			7	25	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	31	गुरु चित्रा 1 में 22/5

(A) स्कन्द (गुह) षष्ठी, (B) प्रारम्भ, मंगल अनु. मे 21/25, बुध ज्ये. मे 19/50

श्री वि. सं. 2061

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी, सन् 2005 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	नक्षत्र समाप्ति काल घं.	मि.	योग	योग समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह — राशि — नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
पौष कृष्ण	1	5	श.	8	28	पू.फा.	27	40	आ.	19	50	सिंह			7	25	17	28	7	19	17	31	7	20	17	41	6	48	17	16	1	यूरेनस शत. 2 में 14/13, जनवरी सन् 2005 प्रारम्भ
	2	6	र.	10	03	उ.फा.	29	19	सौ.	19	43	कन्या	10	08	7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 10/3 से 22/37 तक
	3	7	चं.	11	02	हस्त	30	19	शो.	19	07	कन्या			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	42	6	48	17	17	3	नेपच्यून श्रव. 4 में 10/47
	4	8	मं.	11	19	चित्रा	30	34	अ.	17	57	तुला	18	32	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	4	शुक्र मूल धनु में 26/1
	5	9	बु.	10	48	स्वा.	30	00	सु.	16	09	तुला			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	5	भ. 22/14 बाद, बुध मूल धनु में 19/44
	6	10	गु.	9	28	विशा.	28	40	धृ.	13	42	वृश्चिक	23	05	7	26	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 9/28 तक
		/11		31	21																											एकादशी तिथिक्षय
	7	12	शु.	28	33	अनु.	26	39	शू.	10	39	वृश्चिक			7	26	17	33	7	20	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	7	सफला एकादशी व्रत (स.)
									ग	31	04																					
	8	13	श.	25	12	ज्ये.	24	04	वृ.	27	03	धनु	24	04	7	26	17	33	7	20	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	8	भ. 25/12 बाद, शनि प्रदोष व्रत
	9	14	र.	21	28	मूल	21	06	ध्रु.	22	44	धनु			7	26	17	34	7	20	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	9	भ. 11/22 तक, मंगल ज्ये. में 30/18
	10	30	चं.	17	33	पू.षा.	17	56	व्या.	18	15	मकर	23	08	7	26	17	35	7	20	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	सूर्य उ.षा. में 23/12, सोमवती अमावस
पौष शुक्ल	11	1	मं.	13	39	उ.षा.	14	46	ह.	13	48	मकर			7	26	17	36	7	20	17	39	7	22	17	48	6	49	17	23	11	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30
	12	2	बु.	9	56	श्रव.	11	50	व.	9	31	कुम्भ	22	31	7	26	17	37	7	20	17	40	7	22	17	49	6	49	17	23	12	पंचक प्रारम्भ 22/31, लोहड़ी (पं.)
		/3		30	38				सि.	29	33																					तृतीया तिथिक्षय
	13	4	गु.	27	54	धनि.	9	19	व्य.	26	03	कुम्भ			7	26	17	38	7	20	17	41	7	22	17	50	6	49	17	24	13	भ. 17/11 से 27/54 तक, सं. सूर्य मकर में 29/42, मु. 15, पुण्यकाल, (A)
						शत.	31	23																								
	14	5	शु.	25	53	पू.भा.	30	10	व.	23	07	मीन	24	24	7	25	17	39	7	20	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	
	15	6	श.	24	40	उ.भा.	29	47	प.	20	50	मीन			7	25	17	39	7	20	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	15	बुध पू.षा. में 13/14, शुक्र पू.षा. में 17/30
	16	7	र.	24	20	रेव.	30	13	शि.	19	13	मेष	30	13	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	16	भ. 24/20 बाद, पंचक समाप्त 30/13
	17	8	चं.	24	48	अश्वि.	--	--	सि.	18	15	मेष			7	25	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	भ. 12/28 तक
	18	9	मं.	26	01	अश्वि.	7	26	सा.	17	52	मेष			7	25	17	42	7	19	17	45	7	21	17	53	6	49	17	28	18	
	19	10	बु.	27	49	भर.	9	20	शु.	17	58	वृष	15	53	7	24	17	43	7	19	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	19	सूर्य सायन कुम्भ में 28/52
	20	11	गु.	30	03	कृत्ति.	11	44	शु.	18	26	वृष			7	24	17	44	7	19	17	46	7	21	17	55	6	49	17	30	20	भ. 16/54 से 30/3 तक, राहु अश्वि. 1 में 31/4, केतु चित्रा 3 में 31/4, (B)
	21	12	शु.	--	--	रोहि.	14	29	ब्र.	19	07	मिथुन	27	56	7	24	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	वंजुली महाद्वादशी
	22	12	श.	8	30	मृग.	17	25	ऐं.	19	57	मिथुन			7	23	17	46	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	शनि प्रदोष व्रत
	23	13	र.	11	04	आर्द्रा	20	24	वै.	20	48	मिथुन			7	23	17	46	7	18	17	49	7	20	17	57	6	48	17	32	23	सूर्य श्रव. में 25/30
	24	14	चं.	13	36	पुन.	23	20	वि.	21	37	कर्क	16	36	7	23	17	47	7	17	17	50	7	20	17	58	6	48	17	33	24	भ. 13/36 से 26/50 तक, बुध उ.षा. में 11/30, श्रीसत्यनारायण व्रत
	25	15	मं.	16	03	पुष्य	26	10	प्री.	22	21	कर्क			7	22	17	48	7	17	17	51	7	19	17	59	6	48	17	33	25	बुध पूर्व में अस्त 21/40, माघ स्नान प्रारम्भ, पौषी पूर्णिमा
माघ कृष्ण	26	1	बु.	18	21	आश्ले.	28	50	आ.	22	58	सिंह	28	50	7	22	17	49	7	17	17	51	7	19	18	00	6	47	17	34	26	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध मकर में 15/3, शुक्र उ.षा. में 8/58
	27	2	गु.	20	26	मघा	31	17	सौ.	23	25	सिंह			7	21	17	50	7	16	17	52	7	19	18	01	6	47	17	35	27	
	28	3	शु.	22	16	पू.फा.	--	--	शो.	23	41	सिंह			7	21	17	51	7	16	17	53	7	18	18	01	6	47	17	36	28	भ. 9/23 से 22/16 तक, शुक्र मकर में 24/50
	29	4	श.	23	45	पू.फा.	9	28	अ.	23	41	कन्या	15	57	7	20	17	52	7	15	17	54	7	18	18	02	6	46	17	36	29	मंगल मूल धनु में 9/3, श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय घ. २१ मि. ३१)
	30	5	र.	24	49	उ.फा.	11	17	सु.	23	21	कन्या			7	20	17	53	7	15	17	55	7	17	18	03	6	46	17	37	30	
	31	6	चं.	25	21	हस्त	12	39	धृ.	22	38	तुला	25	07	7	19	17	54	7	14	17	56	7	17	18	04	6	45	17	38	31	भ. 25/21 बाद

(A) अगला सारा दिन, ब. शनि पुन. 3 मिथुन में 15/10, मकर संक्रान्ति, (B) पुत्रदा एकादशी व्रत (स.)

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह -- राशि -- नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
माघ कृष्ण	1	7	मं.	25	15	चित्रा	13	27	शू.	21	26	तुला			7	19	17	54	7	14	17	56	7	16	18	04	6	45	17	39	1	भ. 13/23 तक, बुध श्रव. में 21/21, फरवरी प्रारम्भ
	2	8	बु.	24	29	स्वा.	13	38	गं.	19	43	तुला			7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	05	6	44	17	39	2	गुरु वक्री 7/42
	3	9	गु.	23	00	विशा.	13	07	वृ.	17	27	वृश्चिक	7	19	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	06	6	44	17	40	3	
	4	10	शु.	20	51	अनु.	11	56	ध्रु.	14	38	वृश्चिक			7	17	17	57	7	12	17	59	7	15	18	07	6	43	17	41	4	भ. 10/1 से 20/51 तक
	5	11	श.	18	07	ज्ये.	10	07	व्या.	11	19	धनु	10	07	7	16	17	58	7	11	18	00	7	14	18	07	6	43	17	41	5	सूर्य धनि. में 28/43, शुक्र श्रव. में 24/27, षट्तिला एकादशी व्रत (स.)
	6	12	र.	14	53	मूल	7	47	ह.	7	35	धनु			7	15	17	59	7	11	18	00	7	13	18	08	6	42	17	42	6	**प्रदोष व्रत**
						पू. षा.	29	04	व.	27	32																					
	7	13	चं.	11	20	उ. षा.	26	09	सि.	23	18	मकर	10	21	7	14	18	00	7	10	18	01	7	13	18	09	6	42	17	43	7	भ. 11/20 से 21/30 तक
	8	14	मं.	7	38	श्रव.	23	12	व्य.	19	02	मकर			7	14	18	00	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	44	8	प्लूटो मूल 1 धनु में 18/2, **भौमवती अमावस, मौनी अमावस** — , (A) अमावस्या तिथिक्षय
		/30		27	59																											
माघ शुक्ल	9	1	बु.	24	32	धनि.	20	27	व.	14	54	कुम्भ	9	47	7	13	18	01	7	08	18	03	7	11	18	10	6	41	17	44	9	**माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, पंचक प्रारम्भ 9/47, बुध धनि. में 19/38, (B)
	10	2	गु.	21	30	शत.	18	04	प.	11	01	कुम्भ			7	12	18	02	7	08	18	03	7	11	18	11	6	40	17	45	10	चन्द्र दर्शन, मु. 15
	11	3	शु.	19	03	पू. भा.	16	14	शि.	7	32	मीन	10	38	7	11	18	03	7	07	18	04	7	10	18	12	6	39	17	46	11	भ. 30/5 बाद, **गौरी तृतीया (गोतरी)**, तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी
									सि.	28	35																					
	12	4	श.	17	19	उ. भा.	15	05	सा.	26	15	मीन			7	10	18	04	7	06	18	05	7	09	18	12	6	39	17	46	12	भ. 17/19 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 18/43, मु. 30, पुण्यकाल , (C)
	13	5	र.	16	24	रेव.	14	45	शु.	24	35	मेष	14	45	7	09	18	05	7	05	18	06	7	09	18	13	6	38	17	47	13	पंचक समाप्त 14/45, बुध कुम्भ में 14/36, **वसन्त पंचमी**, श्रीपंचमी
	14	6	चं.	16	21	अश्वि.	15	15	शु.	23	35	मेष			7	08	18	05	7	04	18	06	7	08	18	14	6	37	17	48	14	
	15	7	मं.	17	07	भर.	16	32	ब्र.	23	12	वृष	22	59	7	08	18	06	7	04	18	07	7	07	18	15	6	36	17	48	15	भ. 17/7 से 29/47 तक, रथ सप्तमी (पूर्व अरुणोदय वाली), (D)
	16	8	बु.	18	36	कृत्ति.	18	32	ऐं.	23	20	वृष			7	07	18	07	7	03	18	08	7	06	18	15	6	36	17	49	16	मंगल पू. षा. में 30/1, बुध शत. में 31/3, शुक्र धनि. में 16/4, (E)
	17	9	गु.	20	39	रोहि.	21	03	वै.	23	52	वृष			7	06	18	08	7	02	18	09	7	05	18	16	6	35	17	49	17	
	18	10	शु.	23	04	मृग.	23	55	वि.	24	39	मिथुन	10	28	7	05	18	09	7	01	18	09	7	05	18	17	6	34	17	50	18	सूर्य सायन मीन में 19/3, वसन्त ऋतु प्रारम्भ
	19	11	श.	25	37	आर्द्रा	26	55	प्री.	25	32	मिथुन			7	04	18	09	7	00	18	10	7	04	18	17	6	33	17	51	19	भ. 12/20 से 25/37 तक, सूर्य शत. में 9/11, जया एकादशी व्रत (स.)
	20	12	र.	28	09	पुन.	29	54	आ.	26	24	कर्क	23	10	7	03	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	33	17	51	20	भीष्म द्वादशी
	21	13	चं.	30	31	पुष्य	--	--	सौ.	27	09	कर्क			7	02	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	32	17	52	21	शुक्र कुम्भ में 24/1, सोम प्रदोष व्रत
	22	14	मं.	--	--	पुष्य	8	42	शो.	27	43	कर्क			7	01	18	12	6	57	18	12	7	01	18	19	6	31	17	52	22	
	23	14	बु.	8	37	आश्ले.	11	15	अ.	28	03	सिंह	11	15	7	00	18	12	6	56	18	13	7	00	18	20	6	30	17	53	23	भ. 8/37 से 21/33 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत
	24	15	गु.	10	24	मघा	13	30	सु.	28	08	सिंह			6	59	18	13	6	55	18	14	6	59	18	20	6	29	17	54	24	बुध पू. भा. में 10/39, माघी पूर्णिमा, **माघ स्नान समाप्त**, जन्म दिन , (F)
फाल्गुन कृष्ण	25	1	शु.	11	51	पू. फा.	15	25	धृ.	27	56	कन्या	21	50	6	58	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	**फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**
	26	2	श.	12	55	उ. फा.	16	59	शू.	27	28	कन्या			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	26	भ. 25/18 बाद
	27	3	र.	13	36	हस्त	18	10	गं.	26	40	तुला	30	37	6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	22	6	27	17	55	27	भ. 13/36 तक, शुक्र शत. में 8/2, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
	28	4	चं.	13	52	चित्रा	18	57	वृ.	25	33	तुला			6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	56	28	

शुक्र पूर्व में अस्त 12 फर.

(A) महोदय योग 7/38 से 19/02 तक, (B) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 13/14, (C) 12/19 के बाद, **शुक्र पूर्व में अस्त 13/14**, (D) आरोग्य सप्तमी, (E) भीष्माष्टमी, (F) श्री गुरु रविदास जी

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
फाल्गुन कृष्ण	1	5	म.	13	42	स्वा.	19	17	धु.	24	05	तुला			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	23	6	25	17	56	1	बुध मीन मे 19/43, बुध पश्चिम में उदित 24/37, मार्च प्रारम्भ
	2	6	बु.	13	02	विशा.	19	09	व्या.	22	13	वृश्चिक	13	14	6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	24	6	24	17	57	2	भ. 13/2 से 24/31 तक
	3	7	गु.	11	53	अनु.	18	32	ह.	19	57	वृश्चिक			6	51	18	18	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	बुध उ. भा. में 16/37
	4	8	शु	10	14	ज्ये.	17	26	व.	17	18	धनु	17	26	6	50	18	19	6	47	18	19	6	51	18	25	6	22	17	58	4	सूर्य पू. भा. में 15/35
	5	9	श.	8	06	मूल	15	52	सि.	14	17	धनु			6	49	18	20	6	46	18	19	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 18/53 से 29/34 तक
		/10		29	34																											दशमी तिथिक्षय
	6	11	र.	26	43	पू. षा.	13	56	व्य.	10	58	मकर	19	24	6	47	18	20	6	45	18	20	6	49	18	26	6	20	17	59	6	व. गुरु हस्त 4 मे 17/14, यूरेनस शत. 3 में 8/31, विजया एकादशी व्रत (स्मा.)
	7	12	चं.	23	39	उ. षा.	11	44	व.	7	23	मकर			6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	मंगल उ. षा. में 22/0, व. शनि पुन. 2 में 15/22, विजया एकादशी व्रत (वै.)
									प.	27	41																					
	8	13	मं.	20	32	श्रव	9	22	शि.	23	56	कुम्भ	20	11	6	45	18	22	6	43	18	21	6	47	18	27	6	18	18	00	8	भ. 20/32 बाद, पंचक प्रारम्भ 20/11, **भौम प्रदोष व्रत, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**
	9	14	बु.	17	29	धनि.	7	01	सि.	20	17	कुम्भ			6	44	18	22	6	42	18	22	6	46	18	28	6	17	18	00	9	भ. 6/59 तक, शुक्र पू. भा. में 24/20
						शत	28	49																								
	10	30	गु.	14	41	पू. भा.	26	58	सा.	16	51	मीन	21	23	6	43	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	01	10	
फाल्गुन शुक्ल	11	1	शु.	12	17	उ. भा.	25	34	शु.	13	45	मीन			6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	01	11	**फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, चन्द्र दर्शन, मु. 45
	12	2	श.	10	25	रेव.	24	47	शु.	11	06	मेष	24	47	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	02	12	पंचक समाप्त 24/47, मंगल मकर में 13/18, बुध रेव. में 26/6
	13	3	र.	9	12	अश्वि.	24	43	ब्र.	8	58	मेष			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	02	13	भ. 20/52 बाद
	14	4	चं.	8	44	भर.	25	23	ऐ.	7	26	मेष			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	03	14	भ. 8/44 तक, सं. सूर्य मीन मे 15/38, मु. 15, पुण्यकाल 9/14 के बाद
									वै.	30	31																					
	15	5	मं.	9	03	कृत्ति.	26	48	वि.	30	10	वृष	7	41	6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	03	15	
	16	6	बु.	10	06	रोहि.	28	52	प्री.	30	19	वृष			6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	04	16	
	17	7	गु.	11	47	मृग.	--	--	आ.	--	--	मिथुन	18	06	6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	32	6	09	18	04	17	भ. 11/47 से 24/50 तक, सूर्य उ. भा. में 23/57, शुक्र मीन मे 24/52
	18	8	शु.	13	57	मृग.	7	26	आ.	6	51	मिथुन			6	33	18	28	6	31	18	27	6	36	18	33	6	08	18	04	18	**होलाष्टक प्रारम्भ**
	19	9	श	16	23	आर्द्रा	10	18	सौ.	7	39	मिथुन			6	32	18	29	6	30	18	28	6	35	18	33	6	07	18	05	19	बुध वक्री 29/45
	20	10	र	18	52	पुन.	13	16	शो.	8	32	कर्क	6	32	6	30	18	30	6	29	18	28	6	34	18	34	6	06	18	05	20	सूर्य सायन मेष मे 18/4, उत्तर गोल प्रारम्भ, शुक्र उ भा. मे 17/7, **महा~(A)**
	21	11	चं	21	11	पुष्य	16	07	अ.	9	21	कर्क			6	29	18	30	6	28	18	29	6	33	18	34	6	05	18	06	21	भ. 8/3 से 21/11 तक, व. बुध पश्चिम मे अस्त 17/9, आमला एकादशी , (B)
	22	12	मं.	23	11	आश्ले.	18	42	सु.	9	59	सिंह	18	42	6	28	18	31	6	27	18	29	6	32	18	35	6	04	18	06	22	शनि मार्गी 8/46, **गोविन्द द्वादशी**
	23	13	बु	24	46	मघा	20	54	धृ.	10	21	सिंह			6	27	18	32	6	25	18	30	6	31	18	35	6	03	18	07	23	**प्रदोष व्रत**
	24	14	गु	25	52	पू. फा.	22	38	शू.	10	22	कन्या	29	00	6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	02	18	07	24	भ. 25/52 बाद, राहु रेव. 4 मीन में 28/44, केतु चित्रा 2 कन्या में 28/44
	25	15	शु.	26	29	उ. फा.	23	54	ग.	10	00	कन्या			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	01	18	08	25	भ. 14/14 तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त**
चैत्र कृष्ण	26	1	श.	26	37	हस्त	24	42	वृ.	9	16	कन्या			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	00	18	08	26	**चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**, मंगल श्रव. में 10/1, **वसन्त उत्सव, होला मेला श्री** , (C)
	27	2	र.	26	18	चित्रा	25	04	धु.	8	11	तुला	12	56	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	08	27	व. बुध उ. भा. 4 में 24/47, प्लूटो वक्री 8/1
	28	3	चं.	25	35	स्वा.	25	02	व्या.	6	44	तुला			6	20	18	35	6	20	18	33	6	25	18	38	5	58	18	09	28	भ. 14/0 से 25/35 तक
									ह.	28	59																					
	29	4	मं.	24	30	विशा.	24	39	व.	26	57	वृश्चिक	18	46	6	19	18	35	6	18	18	33	6	24	18	38	5	57	18	09	29	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
	30	5	बु.	23	05	अनु.	23	56	सि.	24	39	वृश्चिक			6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	56	18	10	30	
	31	6	गु.	21	22	ज्ये.	22	55	व्य.	22	08	धनु	22	55	6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	39	5	55	18	10	31	भ. 21/22 बाद, सूर्य रेव. मे 10/53, शुक्र रेव. मे 10/30, **मेला श्री** , (D)

(A) विषुव दिन, (B) व्रत (स.), (C) आनन्दपुर साहिब, (D) शीतला माता कुराली (पं.)

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रह – राशि – नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
चैत्र कृष्ण	1	7	शु.	19	25	मूल	21	40	व.	19	24	धनु			6	16	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	54	18	11	1	भ. 8/25 तक, अप्रैल प्रारम्भ
	2	8	श.	17	14	पू. षा.	20	13	प.	16	30	मकर	25	50	6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	40	5	53	18	11	2	
	3	9	र.	14	55	उ. षा.	18	37	शि.	13	29	मकर			6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	52	18	11	3	भ. 25/43 बाद, व. गुरु हस्त 3 में 28/55
	4	10	च.	12	30	श्रव.	16	56	सि.	10	22	कुम्भ	28	06	6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	41	5	51	18	12	4	भ. 12/30 तक, पंचक प्रारम्भ 28/6
	5	11	म.	10	04	धनि.	15	16	सा.	7	15	कुम्भ			6	11	18	40	6	11	18	37	6	17	18	42	5	50	18	12	5	शनि पुन. 3 में 27/15, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.)
									शु.	28	11																					
	6	12	बु.	7	42	शत.	13	41	शु.	25	14	कुम्भ			6	10	18	41	6	09	18	38	6	16	18	42	5	49	18	13	6	भ. 29/30 बाद, व. बुध पूर्व में उदित 9/12, प्रदोष व्रत, वारुणी (A) त्रयोदशी तिथिक्षय
		/13		29	30																											
	7	14	गु.	27	35	पू. भा.	12	18	ब्र.	22	30	मीन	6	37	6	08	18	41	6	08	18	38	6	15	18	43	5	48	18	13	7	भ. 16/30 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)
	8	30	शु.	26	03	उ. भा.	11	13	ऐ.	20	03	मीन			6	07	18	42	6	07	18	39	6	14	18	43	5	47	18	14	8	चान्द्र संवत्सर 2061 वि. पूर्ण

(A) पर्व (7/42 से 13/41 तक)

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जनवरी 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	अश्वि.	22 20	05 00	11 42	18 25
2	भर.	01 09	07 55	14 41	21 28
3/4	कृत्ति.	04 16	11 04	17 52	00 39
4/5	रोहि.	07 27	14 14	21 00	03 46
5/6	मृग.	10 30	17 14	23 57	06 38
6/7	आर्द्रा	13 18	19 57	02 34	09 10
7/8	पुन.	15 45	22 18	04 50	11 20
8/9	पुष्य	17 48	00 15	06 41	13 05
9/10	आश्ले.	19 28	01 49	08 09	14 27
10/11	मघा	20 43	02 59	09 13	15 25
11/12	पू. फा.	21 36	03 45	09 53	16 00
12/13	उ. फा.	22 05	04 08	10 10	16 11
13/14	हस्त	22 10	04 07	10 03	15 57
14/15	चित्रा	21 49	03 40	09 29	15 17
15/16	स्वा.	21 03	02 47	08 30	14 11
16/17	विशा.	19 50	01 28	07 05	12 40
17/18	अनु.	18 13	23 46	05 17	10 47
18/19	ज्ये.	16 15	21 43	03 10	08 36
19/20	मूल	14 01	19 26	00 51	06 15
20/21	पू. षा.	11 39	17 03	22 28	03 52
21/22	उ. षा.	09 18	14 44	20 10	01 38
22	श्रव.	07 07	12 37	18 09	23 42
23	धनि.	05 17	10 54	16 33	22 15
24	शत.	03 59	09 45	15 35	21 26
25	पू. भा.	03 21	09 19	15 20	21 24
26	उ. भा.	03 30	09 41	15 54	22 10
27	रेव.	04 29	10 52	17 17	23 45
28/29	अश्वि.	06 16	12 50	19 25	02 03
29/30	भर.	08 43	15 25	22 08	04 53
30/31	कृत्ति.	11 38	18 25	01 12	07 59

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
फरवरी 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	रोहि.	14 47	21 34	04 21	11 07
1/2	मृग.	17 53	00 37	07 21	14 03
2/3	आर्द्रा	20 43	03 22	09 59	16 35
3/4	पुन.	23 08	05 40	12 10	18 37
5	पुष्य	01 03	07 27	13 49	20 08
6	आश्ले.	02 26	08 42	14 57	21 09
7	मघा	03 20	09 29	15 37	21 43
8	पू. फा.	03 48	09 51	15 53	21 53
9	उ. फा.	03 53	09 51	15 49	21 45
10	हस्त	03 40	09 34	15 27	21 20
11	चित्रा	03 11	09 02	14 51	20 40
12	स्वा.	02 28	08 16	14 02	19 48
13	विशा.	01 32	07 16	13 00	18 42
14	अनु.	00 24	06 05	11 45	17 24
14/15	ज्ये.	23 03	04 41	10 18	15 55
15/16	मूल	21 31	03 07	08 43	14 18
16/17	पू. षा.	19 52	01 27	07 01	12 36
17/18	उ. षा.	18 10	23 45	05 20	10 56
18/19	श्रव.	16 32	22 09	03 46	09 25
19/20	धनि.	15 05	20 46	02 28	08 12
20/21	शत.	13 57	19 44	01 33	07 24
21/22	पू. भा.	13 18	19 13	01 11	07 11
22/23	उ. भा.	13 14	19 19	01 27	07 38
23/24	रेव.	13 51	20 07	02 26	08 48
24/25	अश्वि.	15 12	21 39	04 08	10 40
25/26	भर.	17 14	23 51	06 29	13 09
26/27	कृत्ति.	19 51	02 34	09 18	16 03
27/28	रोहि.	22 49	05 36	12 22	19 09
29	मृग.	01 55	08 41	15 26	22 10

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
मार्च 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1/2	आर्द्रा	04 52	11 34	18 13	00 51
2/3	पुन.	07 27	14 01	20 33	03 03
3/4	पुष्य	09 30	15 55	22 17	04 38
4/5	आश्ले.	10 55	17 10	23 23	05 34
5/6	मघा	11 42	17 48	23 51	05 53
6/7	पू. फा.	11 53	17 50	23 46	05 40
7/8	उ. फा.	11 33	17 24	23 13	05 02
8/9	हस्त	10 49	16 35	22 19	04 03
9/10	चित्रा	09 47	15 29	21 11	02 52
10/11	स्वा.	08 33	14 13	19 53	01 32
11/12	विशा.	07 12	12 51	18 30	00 09
12	अनु.	05 48	11 26	17 05	22 44
13	ज्ये.	04 23	10 03	15 42	21 21
14	मूल	03 01	08 41	14 21	20 02
15	पू. षा.	01 43	07 24	13 05	18 47
16	उ. षा.	00 30	06 13	11 56	17 41
16/17	श्रव.	23 26	05 11	10 58	16 45
17/18	धनि.	22 34	04 23	10 13	16 05
18/19	शत.	21 58	03 52	09 48	15 45
19/20	पू. भा.	21 43	03 44	09 46	15 50
20/21	उ. भा.	21 55	04 03	10 13	16 25
21/22	रेव.	22 39	04 55	11 13	17 33
22/23	अश्वि.	23 56	06 21	12 47	19 16
24	भर.	01 48	08 21	14 56	21 32
25/26	कृत्ति.	04 11	10 51	17 32	00 15
26/27	रोहि.	06 59	13 44	20 29	03 15
27/28	मृग.	10 01	16 47	23 33	06 19
28/29	आर्द्रा	13 04	19 48	02 31	09 13
29/30	पुन.	15 53	22 32	05 08	11 43
30/31	पुष्य	18 15	00 46	07 13	13 38

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अप्रैल 2004 ई.	नक्षत्र	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
31/1	आश्ले.	20 01	02 21	08 38	14 53
1/2	मघा	21 04	03 13	09 19	15 23
2/3	पू. फा.	21 24	03 22	09 18	15 11
3/4	उ. फा.	21 02	02 51	08 38	14 22
4/5	हस्त	20 05	01 46	07 25	13 03
5/6	चित्रा	18 39	00 14	05 48	11 21
6/7	स्वा.	16 52	22 23	03 54	09 24
7/8	विशा.	14 53	20 22	01 51	07 20
8/9	अनु.	12 49	18 18	23 47	05 17
9/10	ज्ये.	10 47	16 18	21 49	03 21
10/11	मूल	08 54	14 27	20 02	01 37
11/12	पू. षा.	07 14	12 52	18 30	00 10
12	उ. षा.	05 52	11 34	17 18	23 03
13	श्रव.	04 50	10 38	16 28	22 19
14	धनि.	04 11	10 05	16 01	21 58
15	शत.	03 57	09 57	15 59	22 03
16	पू. भा.	04 08	10 15	16 24	22 34
17	उ. भा.	04 46	11 00	17 16	23 33
18/19	रेव.	05 52	12 12	18 35	00 59
19/20	अश्वि.	07 24	13 52	20 21	02 52
20/21	भर.	09 24	15 58	22 33	05 10
21/22	कृत्ति.	11 48	18 28	01 08	07 50
22/23	रोहि.	14 33	21 17	04 02	10 47
23/24	मृग.	17 32	00 19	07 05	13 51
24/25	आर्द्रा	20 37	03 23	10 08	16 52
25/26	पुन.	23 36	06 18	13 00	19 39
27	पुष्य	02 17	08 54	15 28	22 00
28	आश्ले.	04 30	10 57	17 22	23 45
29/30	मघा	06 04	12 21	18 36	00 47

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
मई 2004 ई.	नक्षत्र	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
30/1	पू. फा.	06 55	13 01	19 03	01 03
1/2	उ. फा.	07 00	12 54	18 45	00 34
2	हस्त	06 20	12 03	17 44	23 23
3	चित्रा	05 00	10 34	16 07	21 37
4	स्वा.	03 06	08 34	14 00	19 24
5	विशा.	00 48	06 11	11 32	16 54
5/6	अनु.	22 14	03 34	08 54	14 14
6/7	ज्ये.	19 34	00 54	06 15	11 36
7/8	मूल	16 58	22 20	03 44	09 08
8/9	पू. षा.	14 34	20 01	01 29	06 59
9/10	उ. षा.	12 30	18 04	23 39	05 16
10/11	श्रव.	10 55	16 36	22 19	04 04
11/12	धनि.	09 52	15 42	21 34	03 28
12/13	शत.	09 25	15 24	21 25	03 29
13/14	पू. भा.	09 35	15 44	21 54	04 07
14/15	उ. भा.	10 22	16 39	22 58	05 19
15/16	रेव.	11 42	18 07	00 33	07 02
16/17	अश्वि.	13 32	20 03	02 36	09 11
17/18	भर.	15 46	22 23	05 02	11 41
18/19	कृत्ति.	18 22	01 03	07 45	14 28
19/20	रोहि.	21 12	03 56	10 41	17 26
21	मृग.	00 12	06 58	13 44	20 30
22	आर्द्रा	03 16	10 02	16 48	23 33
23/24	पुन.	06 17	13 01	19 44	02 27
24/25	पुष्य	09 08	15 48	22 26	05 03
25/26	आश्ले.	11 38	18 12	00 44	07 13
26/27	मघा	13 41	20 06	02 29	08 49
27/28	पू. फा.	15 07	21 23	03 35	09 45
28/29	उ. फा.	15 52	21 56	03 57	09 55
29/30	हस्त	15 51	21 43	03 33	09 20
30/31	चित्रा	15 05	20 47	02 26	08 02

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जून 2004 ई.	नक्षत्र	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
31/1	स्वा.	13 37	19 09	00 39	06 07
1/2	विशा.	11 32	16 57	22 19	03 40
2/3	अनु.	09 00	14 18	19 36	00 52
3	ज्ये.	06 08	11 23	16 38	21 53
4	मूल	03 08	08 23	13 38	18 54
5	पू. षा.	00 10	05 27	10 45	16 05
5/6	उ. षा.	21 25	02 48	08 11	13 37
6/7	श्रव.	19 05	00 34	06 06	11 40
7/8	धनि.	17 17	22 56	04 38	10 22
8/9	शत.	16 10	22 00	03 53	09 49
9/10	पू. भा.	15 48	21 49	03 54	10 02
10/11	उ. भा.	16 12	22 25	04 41	11 00
11/12	रेव.	17 21	23 45	06 11	12 39
12/13	अश्वि.	19 10	01 42	08 16	14 52
13/14	भर.	21 30	04 09	10 49	17 31
15	कृत्ति.	00 13	06 56	13 41	20 25
16	रोहि.	03 11	09 56	16 42	23 28
17/18	मृग.	06 15	13 01	19 47	02 33
18/19	आर्द्रा	09 19	16 04	22 49	05 33
19/20	पुन.	12 17	19 00	01 43	08 25
20/21	पुष्य	15 05	21 45	04 24	11 02
21/22	आश्ले.	17 38	00 14	06 48	13 20
22/23	मघा	19 51	02 20	08 48	15 14
23/24	पू. फा.	21 38	04 00	10 19	16 37
24/25	उ. फा.	22 53	05 06	11 16	17 25
25/26	हस्त	23 30	05 34	11 34	17 32
26/27	चित्रा	23 28	05 21	11 11	16 58
27/28	स्वा.	22 43	04 26	10 06	15 44
28/29	विशा.	21 19	02 52	08 22	13 51
29/30	अनु.	19 18	00 43	06 06	11 27

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
जुलाई 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/1	ज्ये.	16 48	22 06	03 24	08 41
1/2	मूल	13 57	19 12	00 27	05 41
2/3	पू. षा.	10 56	16 10	21 25	02 40
3	उ. षा.	07 56	13 12	18 29	23 48
4	श्रव.	05 08	10 29	15 53	21 18
5	धनि.	02 45	08 14	13 45	19 19
6	शत.	00 56	06 35	12 17	18 02
6/7	पू. भा.	23 50	05 41	11 36	17 33
7/8	उ. भा.	23 34	05 38	11 45	17 55
9	रेव.	00 08	06 25	12 44	19 07
10	अश्वि.	01 32	07 59	14 30	21 02
11	भर.	03 37	10 14	16 52	23 33
12/13	कृत्ति.	06 14	12 57	19 41	02 26
13/14	रोहि.	09 12	15 58	22 44	05 31
14/15	मृग.	12 18	19 04	01 51	08 37
15/16	आर्द्रा	15 22	22 07	04 51	11 35
16/17	पुन.	18 17	00 59	07 40	14 20
17/18	पुष्य	20 59	03 36	10 13	16 48
18/19	आश्ले.	23 23	05 56	12 28	18 58
20	मघा	01 27	07 55	14 22	20 47
21	पू. फा.	03 11	09 34	15 54	22 14
22	उ. फा.	04 31	10 47	17 02	23 14
23	हस्त	05 25	11 34	17 41	23 46
24	चित्रा	05 49	11 50	17 49	23 46
25	स्वा.	05 41	11 33	17 24	23 12
26	विशा.	04 58	10 42	16 24	22 04
27	अनु.	03 42	09 17	14 51	20 23
28	ज्ये.	01 53	07 22	12 49	18 15
28/29	मूल	23 39	05 02	10 24	15 46
29/30	पू. षा.	21 06	02 26	07 45	13 04
30/31	उ. षा.	18 23	23 42	05 01	10 21

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अगस्त 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	श्रव.	15 41	21 02	02 24	07 46
1/2	धनि.	13 11	18 36	00 03	05 32
2/3	शत.	11 03	16 36	22 12	03 49
3/4	पू. भा.	09 29	15 12	20 58	02 46
4/5	उ. भा.	08 38	14 32	20 30	02 31
5/6	रेव.	08 35	14 42	20 52	03 05
6/7	अश्वि.	09 22	15 41	22 04	04 29
7/8	भर.	10 57	17 27	00 00	06 35
8/9	कृत्ति.	13 12	19 51	02 32	09 14
9/10	रोहि.	15 57	22 42	05 27	12 12
10/11	मृग.	18 58	01 45	08 31	15 16
11/12	आर्द्रा	22 02	04 47	11 31	18 14
13	पुन.	00 56	07 38	14 18	20 56
14	पुष्य	03 34	10 10	16 44	23 17
15/16	आश्ले.	05 49	12 19	18 48	01 15
16/17	मघा	07 40	14 04	20 27	02 48
17/18	पू. फा.	09 07	15 26	21 42	03 57
18/19	उ. फा.	10 11	16 24	22 35	04 45
19/20	हस्त	10 53	17 00	23 06	05 10
20/21	चित्रा	11 13	17 14	23 14	05 13
21/22	स्वा.	11 10	17 06	23 00	04 53
22/23	विशा.	10 44	16 34	22 23	04 10
23/24	अनु.	09 55	15 39	21 22	03 03
24/25	ज्ये.	08 43	14 22	19 59	01 35
25	मूल	07 09	12 43	18 15	23 47
26	पू. षा.	05 18	10 48	16 17	21 45
27	उ. षा.	03 13	08 41	14 09	19 36
28	श्रव.	01 04	06 31	11 59	17 28
28/29	धनि.	22 57	04 27	09 57	15 29
29/30	शत.	21 02	02 37	08 13	13 50
30/31	पू. भा.	19 30	01 11	06 54	12 40

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
सितम्बर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	उ. भा.	18 28	00 18	06 11	12 07
1/2	रेव.	18 05	00 06	06 09	12 16
2/3	अश्वि.	18 25	00 37	06 52	13 10
3/4	भर.	19 31	01 54	08 20	14 49
4/5	कृत्ति.	21 20	03 53	10 28	17 05
5/6	रोहि.	23 44	06 24	13 06	19 49
7	मृग.	02 33	09 17	16 02	22 47
8/9	आर्द्रा	05 32	12 17	19 02	01 45
9/10	पुन.	08 28	15 11	21 51	04 31
10/11	पुष्य	11 09	17 46	00 21	06 54
11/12	आश्ले.	13 26	19 55	02 23	08 48
12/13	मघा	15 12	21 34	03 54	10 11
13/14	पू. फा.	16 27	22 41	04 53	11 04
14/15	उ. फा.	17 12	23 19	05 24	11 28
15/16	हस्त	17 30	23 31	05 30	11 27
16/17	चित्रा	17 24	23 19	05 13	11 06
17/18	स्वा.	16 58	22 48	04 38	10 27
18/19	विशा.	16 14	22 01	03 47	09 33
19/20	अनु.	15 17	21 01	02 44	08 26
20/21	ज्ये.	14 08	19 49	01 29	07 09
21/22	मूल	12 48	18 27	00 05	05 44
22/23	पू. षा.	11 21	16 59	22 36	04 13
23/24	उ. षा.	09 49	15 26	21 03	02 39
24/25	श्रव.	08 16	13 53	19 31	01 09
25	धनि.	06 47	12 25	18 05	23 45
26	शत.	05 26	11 08	16 51	22 35
27	पू. भा.	04 21	10 07	15 55	21 45
28	उ. भा.	03 37	09 30	15 25	21 22
29	रेव.	03 21	09 22	15 25	21 30
30	अश्वि.	03 38	09 48	16 00	22 15

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अक्तूबर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	भर.	04 32	10 51	17 13	23 37
2/3	कृत्ति.	06 03	12 31	19 02	01 35
3/4	रोहि.	08 09	14 45	21 23	04 03
4/5	मृग.	10 43	17 25	00 08	06 52
5/6	आर्द्रा	13 36	20 21	03 05	09 50
6/7	पुन.	16 34	23 18	06 01	12 43
7/8	पुष्य	19 24	02 04	08 42	15 18
8/9	आश्ले.	21 53	04 26	10 57	17 26
9/10	मघा	23 52	06 16	12 38	18 57
11	पू. फा.	01 14	07 29	13 41	19 51
12	उ. फा.	01 58	08 03	14 05	20 06
13	हस्त	02 04	08 00	13 54	19 47
14	चित्रा	01 37	07 25	13 12	18 58
15	स्वा.	00 41	06 24	12 05	17 45
15/16	विशा.	23 24	05 02	10 40	16 16
16/17	अनु.	21 52	03 27	09 02	14 37
17/18	ज्ये.	20 11	01 45	07 19	12 53
18/19	मूल	18 28	00 02	05 36	11 11
19/20	पू. षा.	16 46	22 22	03 58	09 35
20/21	उ. षा.	15 12	20 50	02 29	08 08
21/22	श्रव.	13 48	19 29	01 12	06 55
22/23	धनि.	12 39	18 24	00 10	05 57
23/24	शत.	11 45	17 35	23 26	05 18
24/25	पू. भा.	11 11	17 06	23 02	04 59
25/26	उ. भा.	10 58	16 59	23 01	05 04
26/27	रेव.	11 09	17 16	23 24	05 34
27/28	अश्वि.	11 46	17 59	00 14	06 31
28/29	भर.	12 50	19 10	01 33	07 57
29/30	कृत्ति.	14 23	20 50	03 20	09 51
30/31	रोहि.	16 23	22 57	05 33	12 10

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
नवम्बर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	मृग.	18 49	01 29	08 10	14 52
1/2	आर्द्रा	21 35	04 18	11 03	17 47
3	पुन.	00 32	07 17	14 02	20 46
4	पुष्य	03 30	10 13	16 56	23 37
5/6	आश्ले.	06 17	12 55	19 32	02 07
6/7	मघा	08 40	15 11	21 39	04 05
7/8	पू. फा.	10 29	16 50	23 08	05 23
8/9	उ. फा.	11 36	17 46	23 53	05 58
9/10	हस्त	11 59	17 58	23 54	05 47
10/11	चित्रा	11 38	17 26	23 11	04 55
11/12	स्वा.	10 36	16 15	21 52	03 27
12/13	विशा.	09 00	14 32	20 02	01 30
13	अनु.	06 58	12 25	17 50	23 15
14	ज्ये.	04 39	10 03	15 27	20 50
15	मूल	02 13	07 37	13 01	18 25
15/16	पू. षा.	23 49	05 15	10 41	16 08
16/17	उ. षा.	21 36	03 05	08 36	14 08
17/18	श्रव.	19 41	01 16	06 53	12 31
18/19	धनि.	18 11	23 53	05 37	11 22
19/20	शत.	17 10	22 59	04 51	10 44
20/21	पू. भा.	16 40	22 37	04 36	10 38
21/22	उ. भा.	16 41	22 46	04 53	11 02
22/23	रेव.	17 13	23 26	05 40	11 56
23/24	अश्वि.	18 14	00 33	06 54	13 16
24/25	भर.	19 40	02 05	08 32	15 00
25/26	कृत्ति.	21 30	04 00	10 32	17 05
26/27	रोहि.	23 40	06 15	12 52	19 30
28	मृग.	02 08	08 48	15 29	22 10
29/30	आर्द्रा	04 52	11 35	18 19	01 03

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
दिसम्बर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/1	पुन.	07 47	14 32	21 17	04 02
1/2	पुष्य	10 47	17 32	00 16	07 00
2/3	आश्ले.	13 44	20 26	03 08	09 48
3/4	मघा	16 27	23 05	05 41	12 15
4/5	पू. फा.	18 47	01 17	07 44	14 09
5/6	उ. फा.	20 32	02 52	09 09	15 23
6/7	हस्त	21 34	03 42	09 48	15 50
7/8	चित्रा	21 49	03 45	09 38	15 28
8/9	स्वा.	21 15	03 00	08 41	14 20
9/10	विशा.	19 56	01 30	07 01	12 30
10/11	अनु.	17 57	23 22	04 45	10 07
11/12	ज्ये.	15 27	20 46	02 04	07 21
12/13	मूल	12 37	17 53	23 08	04 23
13/14	पू. षा.	09 38	14 53	20 08	01 24
14	उ. षा.	06 41	11 59	17 17	22 37
15	श्रव.	03 58	09 21	14 45	20 12
16	धनि.	01 40	07 10	12 42	18 17
16/17	शत.	23 54	05 34	11 16	17 01
17/18	पू. भा.	22 48	04 39	10 32	16 27
18/19	उ. भा.	22 26	04 27	10 31	16 37
19/20	रेव.	22 46	04 58	11 12	17 28
20/21	अश्वि.	23 47	06 08	12 31	18 56
22	भर.	01 23	07 51	14 21	20 53
23	कृत्ति.	03 26	10 01	16 36	23 13
24/25	रोहि.	05 51	12 30	19 09	01 49
25/26	मृग.	08 30	15 12	21 54	04 37
26/27	आर्द्रा	11 20	18 03	00 47	07 31
27/28	पुन.	14 15	20 59	03 43	10 28
28/29	पुष्य	17 12	23 56	06 40	13 24
29/30	आश्ले.	20 07	02 50	09 33	16 14
30/31	म.	22 55	5 36	12 14	18 53

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी 2005 ई.	नक्षत्र	1 घं. मि.	2 घं. मि.	3 घं. मि.	4 घं. मि.
1	पू. फा.	01 29	08 04	14 38	21 10
2	उ. फा.	03 40	10 08	16 34	22 58
3/4	हस्त	05 19	11 38	17 55	00 08
4/5	चित्रा	06 19	12 27	18 32	00 34
5/6	स्वा.	06 34	12 30	18 23	00 13
6	विशा.	06 00	11 45	17 26	23 05
7	अनु.	04 40	10 14	15 45	21 13
8	ज्ये.	02 39	08 03	13 25	18 45
9	मूल	00 04	05 21	10 37	15 52
9/10	पू. षा.	21 06	02 19	07 31	12 44
10/11	उ. षा.	17 56	23 08	04 20	09 33
11/12	श्रव.	14 46	20 01	01 16	06 32
12/13	धनि.	11 50	17 09	22 31	03 54
13/14	शत.	09 19	14 46	20 16	01 48
14/15	पू. भा.	07 23	13 00	18 41	00 24
15	उ. भा.	06 10	12 00	17 52	23 48
16/17	रेव.	05 47	11 49	17 54	00 02
17/18	अश्वि.	06 13	12 27	18 44	01 04
18/19	भर.	07 26	13 51	20 18	02 48
19/20	कृत्ति.	09 19	15 53	22 28	05 05
20/21	रोहि.	11 44	18 23	01 04	07 46
21/22	मृग.	14 29	21 12	03 56	10 40
22/23	आर्द्रा	17 25	00 09	06 54	13 39
23/24	पुन.	20 24	03 08	09 52	16 36
24/25	पुष्य	23 20	06 03	12 46	19 28
26	आश्ले.	02 10	08 51	15 31	22 11
27/28	मघा	04 50	11 28	18 05	00 42
28/29	पू. फा.	07 17	13 51	20 25	02 57
29/30	उ. फा.	09 28	15 57	22 25	04 52
30/31	हस्त	11 17	17 40	00 02	06 21

फरवरी 2005 ई.	नक्षत्र	1 घं. मि.	2 घं. मि.	3 घं. मि.	4 घं. मि.
31/1	चित्रा	12 39	18 54	01 07	07 18
1/2	स्वा.	13 27	19 34	01 37	07 39
2/3	विशा.	13 38	19 34	01 28	07 19
3/4	अनु.	13 07	18 53	00 37	06 17
4/5	ज्ये.	11 56	17 32	23 06	04 38
5/6	मूल	10 07	15 35	21 00	02 24
6	पू. षा.	07 47	13 08	18 28	23 46
7	उ. षा.	05 04	10 21	15 37	20 53
8	श्रव.	02 09	07 24	12 40	17 56
8/9	धनि.	23 12	04 29	09 47	15 07
9/10	शत.	20 27	01 49	07 12	12 37
10/11	पू. भा.	18 04	23 33	05 04	10 38
11/12	उ. भा.	16 14	21 52	03 34	09 18
12/13	रेव.	15 05	20 56	02 49	08 45
13/14	अश्वि.	14 45	20 48	02 53	09 02
14/15	भर.	15 15	21 30	03 48	10 09
15/16	कृत्ति.	16 32	22 59	05 27	11 59
16/17	रोहि.	18 32	01 07	07 44	14 23
17/18	मृग.	21 03	03 45	10 28	17 11
18/19	आर्द्रा	23 55	06 40	13 25	20 10
20	पुन.	02 55	09 41	16 25	23 10
21/22	पुष्य	05 54	12 37	19 19	02 01
22/23	आश्ले.	08 42	15 22	22 01	04 38
23/24	मघा	11 15	17 51	00 25	06 58
24/25	पू. फा.	13 30	20 01	02 30	08 58
25/26	उ. फा.	15 25	21 50	04 15	10 37
26/27	हस्त	16 59	23 19	05 37	11 54
27/28	चित्रा	18 10	00 24	06 37	12 47

मार्च 2005 ई.	नक्षत्र	1 घं. मि.	2 घं. मि.	3 घं. मि.	4 घं. मि.
28/1	स्वा.	18 57	01 04	07 10	13 15
1/2	विशा.	19 17	01 18	07 17	13 14
2/3	अनु.	19 09	01 03	06 54	12 44
3/4	ज्ये.	18 32	00 18	06 02	11 45
4/5	मूल	17 26	23 05	04 42	10 18
5/6	पू. षा.	15 52	21 25	02 57	08 27
6/7	उ. षा.	13 56	19 24	00 52	06 18
7/8	श्रव.	11 44	17 09	22 33	03 58
8/9	धनि.	09 22	14 47	20 11	01 36
9	शत.	07 01	12 27	17 53	23 21
10	पू. भा.	04 50	10 19	15 50	21 23
11	उ. भा.	02 58	08 34	14 12	19 52
12	रेव.	01 34	07 19	13 06	18 55
13	अश्वि.	00 47	06 42	12 40	18 40
14	भर.	00 43	06 49	12 58	19 09
15	कृत्ति.	01 23	07 41	14 01	20 23
16	रोहि.	02 48	09 16	15 46	22 18
17/18	मृग.	04 52	11 28	18 06	00 45
18/19	आर्द्रा	07 26	14 08	20 51	03 34
19/20	पुन.	10 18	17 03	23 47	06 32
20/21	पुष्य	13 16	20 00	02 43	09 26
21/22	आश्ले.	16 07	22 48	05 27	12 05
22/23	मघा	18 42	01 17	07 51	14 23
23/24	पू. फा.	20 54	03 22	09 49	16 15
24/25	उ. फा.	22 38	05 00	11 20	17 38
25/26	हस्त	23 54	06 09	12 22	18 33
27	चित्रा	00 42	06 50	12 56	19 01
28	स्वा.	01 04	07 06	13 06	19 05
29	विशा.	01 02	06 58	12 53	18 46
30	अनु.	00 39	06 30	12 19	18 08
30/31	ज्ये.	23 56	05 42	11 27	17 12

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेशकाल (I.S.T)

चंद्र नक्षत्र चरण :		1	2	3	4
अप्रैल 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	मूल	22 55	04 38	10 19	16 00
1/2	पू. षा.	21 40	03 19	08 58	14 36
2/3	उ. षा.	20 13	01 50	07 26	13 02
3/4	श्रव.	18 37	00 12	05 47	11 22
4/5	धनि.	16 56	22 31	04 06	09 41
5/6	शत.	15 16	20 51	02 27	08 04
6/7	पू. भा.	13 41	19 19	00 57	06 37
7/8	उ. भा.	12 18	18 00	23 43	05 27
8/9	रेव.	11 13	17 00	22 49	04 40
9/10	अश्वि.	10 33	16 28	22 24	04 23

अन्तर्मन से आशीर्वाद

जटिल संस्कृत शब्दों से ओत– प्रोत इस मुहूर्त्तनिर्णय महानिबन्ध की दोषमुक्त पाण्डुलिपि हिमाचल, सुन्हाड़, सौर (सोलन) निवासी **आचार्य श्रीकृष्णशर्मा,** वेदाचार्य, साहित्याचार्य, एम. ए. (संस्कृत) ने बहुत ही दक्षता और तत्परता से प्रस्तुत की है। विषयजाल के उलझे पौर्वापर्य को सुव्यवस्थित करने में इनसे प्राप्त परामर्श एवं विगत वर्षों की भान्ति पंचांग से सम्बद्ध प्रूफ-संशोधन आदि कार्य में पर्याप्त सहयोग से भी मैं लाभान्वित हुआ हूँ। इस स्वार्थमुक्त आत्मीय सहयोग के लिए मेरा इन्हें अन्तर्मन से आशीर्वाद है। विश्वास करता हूँ , मेरे भावी सम्पादनों में भी इनकी इस दुर्लभ गाणपत्य प्रतिभा के प्रयोग का मुझे अवसर मिलता रहेगा–

–प्रियव्रत शर्मा

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के नवयुवा विद्वान् सम्पादकों को सस्नेह आशीर्वाद

दृक्तुल्य सर्वाङ्गशुद्ध ग्रहभोगांश, क्रान्ति–शर, तिथ्यादिकाल एवं ग्रहराशि–नक्षत्र–नवांश प्रवेशकालादि की दृष्टि से **'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'** अन्तर्राष्ट्रीय–ख्यातिप्राप्त Ephemerides की सम्मान्य श्रेणी में खड़ा है, जिसका पर्याप्त श्रेय **डॉ. शक्तिधर शर्मा** के आत्मज, मेरे भ्रातृज, **चि. सुबोध शर्मा,** M. E. Electronics & Tele-communications और **चि. संजय शर्मा,** M. Tech. Computer Science को जाता है, जिन्होंने ग्रहचारसिद्धान्तों को आत्मसात् कर भारी भगीरथ प्रयत्न से पंचांग के इन जटिल पदार्थों को आधुनिकतम Computer Programming द्वारा वस्तुतःप्रशस्त कर डाला है। पंचांग के अवशिष्ट विवाह आदि मुहूर्त्त जैसे अन्य उलझे पदार्थों को भी सुगमता से तत्काल उपलब्ध कराने के इनके प्रवर्तमान सतत प्रयास को देखकर इस पंचांग के उज्ज्वल भविष्य का मुझे स्पष्ट अनुमान है।

चि. इन्दुशेखर शर्मा, ज्योतिषाचार्य के सुपुत्र, मेरे भ्रातृज, **डॉ. आशुतोष शर्मा M.D.** और **चि. संयमी शर्मा M.A. (Sanskrit)** भी परम्पराप्राप्त इस कुलविद्या में प्रशंसनीय दक्षता रखते हैं। बुरी तरह व्यस्त रखने वाले चिकित्सा–व्यवसाय में संलग्न होते हुए भी गणित–फलित ज्योतिष के साहित्य का परिशीलन चि. आशुतोष का एक भव्य व्यसन और पंचांगसम्पादन पार्श्व व्यवसाय है। चि. संयमी शर्मा, जो इस वंशश्रेणी (Generation) के कनिष्ठ सदस्य हैं, इस मृदु अवस्था में ही खगोलशास्त्र का श्लाघनीय ज्ञान रखते हैं। फलित एवं सिद्धान्त– ज्योतिष के अवगाहन की इनकी रुचिभरी प्रवृत्ति को देखते हुए इस शास्त्र में इनका भावी गम्भीर प्रवेश स्पष्ट लक्षित हो रहा है। इस वर्ष के ग्रहण एवं मुहूर्तसाधन में भी इनका मुझे सहयोग मिला; यह प्रसन्नता की बात है।

मुझे विश्वास है– इस पंचांगकुल की नई पीढ़ी के इन नवयुवाओं का अनवरत स्वाध्याय, योग्यता, पारस्परिक सद्भावनापूर्वक समन्वयसम्पन्न अहर्निश परिश्रम इस पैतामहिक–पैतृक उपहाररूप में प्राप्त ज्ञानमयी पंचांगसम्पदा को उत्तरोत्तर वर्धमान स्थिति में बनाए रखेगा।

इनके शतोत्तर, सुस्वस्थ, सर्वथा बाधामुक्त एवं समृद्ध, यशस्वी जीवन के लिए प्रभु से प्रार्थनापुरस्सर इन्हें मेरा अन्तरात्मना आशीर्वाद है।

–प्रियव्रत शर्मा

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय 'कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प **चि. प्रेमचन्द शर्मा;** चि. दिलबाग शर्मा, सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा , ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि.) तथा नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी चि. सुरेशानन्द शर्मा, बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा भी **'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'** (हिन्दी) की पाण्डुलिपिलेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से गत अनेक वर्षों से करते चले आ रहे हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

–सम्पादक

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.) 1 जनवरी 2004 ई. को अयनांश 23° 54' 34"

—सम्पादक

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टे. टा.) 1 जनवरी 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 34″

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चन्द्रोदय (चण्डीगढ़ (भा. स्टे. टा.))	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	6 40 00	8 15 58 56	0 03 35 17	11 15 15 26	8 04 54 04	4 24 58 47	9 19 18 25	2 15 50 33	0 23 47 30	0 25 22 34	-23 04	8 47	-1 54	13 16	1 40
2	6 43 56	8 17 00 05	0 15 28 56	11 15 51 53	8 04 03 28	4 24 59 16	9 20 32 07	2 15 45 35	0 23 44 19	0 25 23 49	-22 59	13 46	-0 53	13 45	2 34
3	6 47 53	8 18 01 13	0 27 16 37	11 16 28 24	8 03 23 01	4 24 59 33	9 21 45 47	2 15 40 38	0 23 41 08	0 25 24 17	-22 54	18 13	0 10	14 17	3 30
4	6 51 49	8 19 02 21	1 09 02 56	11 17 05 00	8 02 52 56	4 24 59 38	9 22 59 24	2 15 35 41	0 23 37 58	0 25 23 3	-22 48	21 56	1 12	14 53	4 25
5	6 55 46	8 20 03 30	1 20 51 49	11 17 41 40	8 02 33 04	4 24 59 32	9 24 12 58	2 15 30 45	0 23 34 47	0 25 19 35	-22 42	24 45	2 12	15 34	5 22
6	6 59 42	8 21 04 38	2 02 46 22	11 18 18 24	8 02 23 04	4 24 59 15	9 25 26 29	2 15 25 50	0 23 31 36	0 25 13 33	-22 35	26 30	3 06	16 21	6 18
7	7 03 39	8 22 05 46	2 14 48 54	11 18 55 13	8 02 22 24	4 24 58 45	9 26 39 58	2 15 20 55	0 23 28 25	0 25 5 9	-22 28	27 01	3 52	17 14	7 11
8	7 07 36	8 23 06 53	2 27 00 57	11 19 32 06	8 02 30 23	4 24 58 05	9 27 53 23	2 15 16 02	0 23 25 15	0 24 54 50	-22 21	26 14	4 29	18 10	8 01
9	7 11 32	8 24 08 01	3 09 23 24	11 20 09 02	8 02 46 23	4 24 57 12	9 29 06 46	2 15 11 09	0 23 22 04	0 24 43 19	-22 13	24 09	4 53	19 10	8 45
10	7 15 29	8 25 09 08	3 21 56 42	11 20 46 02	8 03 09 40	4 24 56 08	10 00 20 05	2 15 06 18	0 23 18 53	0 24 31 31	-22 05	20 54	5 03	20 10	9 25
11	7 19 25	8 26 10 16	4 04 41 09	11 21 23 06	8 03 39 33	4 24 54 53	10 01 33 21	2 15 01 29	0 23 15 42	0 24 20 42	-21 56	16 37	4 58	21 11	10 00
12	7 23 22	8 27 11 23	4 17 37 08	11 22 00 14	8 04 15 25	4 24 53 26	10 02 46 35	2 14 56 41	0 23 12 32	0 24 11 59	-21 47	11 32	4 39	22 11	10 32
13	7 27 18	8 28 12 30	5 00 45 22	11 22 37 24	8 04 56 40	4 24 51 47	10 03 59 44	2 14 51 55	0 23 09 21	0 24 6 1	-21 37	5 51	4 04	23 12	11 02
14	7 31 15	8 29 13 37	5 14 06 56	11 23 14 39	8 05 42 43	4 24 49 57	10 05 12 51	2 14 47 12	0 23 06 10	0 24 2 46	-21 27	-0 11	3 15	-- --	11 32
15	7 35 11	9 00 14 45	5 27 43 10	11 23 51 56	8 06 33 07	4 24 47 56	10 06 25 54	2 14 42 30	0 23 02 59	0 24 1 41	-21 16	-6 20	2 15	0 13	12 03
16	7 39 08	9 01 15 52	6 11 35 17	11 24 29 17	8 07 27 23	4 24 45 43	10 07 38 54	2 14 37 51	0 22 59 48	0 24 1 54	-21 06	-12 19	1 05	1 17	12 37
17	7 43 05	9 02 16 58	6 25 43 56	11 25 06 41	8 08 25 08	4 24 43 19	10 08 51 50	2 14 33 14	0 22 56 38	0 24 2 11	-20 54	-17 47	-0 09	2 24	13 16
18	7 47 01	9 03 18 05	7 10 08 27	11 25 44 08	8 09 26 01	4 24 40 43	10 10 04 43	2 14 28 40	0 22 53 27	0 24 1 11	-20 43	-22 20	-1 24	3 35	14 02
19	7 50 58	9 04 19 12	7 24 46 16	11 26 21 39	8 10 29 43	4 24 37 56	10 11 17 32	2 14 24 09	0 22 50 16	0 23 57 55	-20 31	-25 32	-2 35	4 46	14 56
20	7 54 54	9 05 20 18	8 09 32 35	11 26 59 12	8 11 35 57	4 24 34 58	10 12 30 17	2 14 19 40	0 22 47 05	0 23 51 47	-20 18	-27 00	-3 36	5 56	15 59
21	7 58 51	9 06 21 23	8 24 20 25	11 27 36 49	8 12 44 28	4 24 31 49	10 13 42 59	2 14 15 15	0 22 43 55	0 23 42 49	-20 05	-26 32	-4 23	6 59	17 08
22	8 02 47	9 07 22 28	9 09 01 36	11 28 14 28	8 13 55 05	4 24 28 29	10 14 55 36	2 14 10 54	0 22 40 44	0 23 31 53	-19 52	-24 13	-4 51	7 53	18 19
23	8 06 44	9 08 23 33	9 23 28 02	11 28 52 10	8 15 07 35	4 24 24 57	10 16 08 09	2 14 06 35	0 22 37 33	0 23 20 11	-19 38	-20 24	-5 01	8 39	19 28
24	8 10 40	9 09 24 36	10 07 33 04	11 29 29 55	8 16 21 49	4 24 21 16	10 17 20 38	2 14 02 21	0 22 34 22	0 23 8 43	-19 24	-15 29	-4 52	9 17	20 33
25	8 14 37	9 10 25 39	10 21 12 33	0 00 07 42	8 17 37 38	4 24 17 23	10 18 33 02	2 13 58 10	0 22 31 12	0 22 58 30	-19 10	-9 56	-4 26	9 50	21 35
26	8 18 34	9 11 26 40	11 04 25 07	0 00 45 32	8 18 54 55	4 24 13 20	10 19 45 21	2 13 54 03	0 22 28 01	0 22 50 38	-18 55	-4 07	-3 46	10 20	22 33
27	8 22 30	9 12 27 41	11 17 12 05	0 01 23 24	8 20 13 33	4 24 09 07	10 20 57 35	2 13 50 00	0 22 24 50	0 22 45 43	-18 40	1 41	-2 56	10 48	23 30
28	8 26 27	9 13 28 41	11 29 36 45	0 02 01 18	8 21 33 28	4 24 04 44	10 22 09 44	2 13 46 02	0 22 21 39	0 22 43 25	-18 25	7 17	-1 59	11 16	-- --
29	8 30 23	9 14 29 39	0 11 43 49	0 02 39 14	8 22 54 33	4 24 00 11	10 23 21 48	2 13 42 07	0 22 18 28	0 22 42 47	-18 09	12 29	-0 57	11 45	0 25
30	8 34 20	9 15 30 36	0 23 38 42	0 03 17 13	8 24 16 45	4 23 55 28	10 24 33 47	2 13 38 18	0 22 15 18	0 22 42 48	-17 53	17 08	0 05	12 15	1 21
31	8 38 16	9 16 31 32	1 05 27 02	0 03 55 12	8 25 40 00	4 23 50 35	10 25 45 40	2 13 34 32	0 22 12 07	0 22 42 20	-17 37	21 06	1 07	12 50	2 17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 फरवरी 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 39″

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	8 42 13	9 17 32 27	1 17 14 17	0 04 33 14	8 27 04 16	4 23 45 33	10 26 57 27	2 13 30 52	0 22 08 56	0 22 40 14	-17 20	24 11	2 06	13 29	3 13
2	8 46 09	9 18 33 21	1 29 05 25	0 05 11 17	8 28 29 30	4 23 40 21	10 28 09 08	2 13 27 16	0 22 05 45	0 22 35 47	-17 03	26 14	2 59	14 14	4 09
3	8 50 06	9 19 34 13	2 11 04 40	0 05 49 22	8 29 55 39	4 23 35 01	10 29 20 43	2 13 23 45	0 22 02 35	0 22 28 28	-16 46	27 06	3 46	15 05	5 04
4	8 54 03	9 20 35 04	2 23 15 16	0 06 27 28	9 01 22 42	4 23 29 31	11 00 32 12	2 13 20 19	0 21 59 24	0 22 18 15	-16 29	26 40	4 22	16 01	5 55
5	8 57 59	9 21 35 54	3 05 39 21	0 07 05 35	9 02 50 38	4 23 23 53	11 01 43 34	2 13 16 58	0 21 56 13	0 22 5 38	-16 11	24 55	4 47	17 00	6 41
6	9 01 56	9 22 36 42	3 18 17 51	0 07 43 43	9 04 19 25	4 23 18 07	11 02 54 50	2 13 13 43	0 21 53 02	0 21 51 40	-15 53	21 55	4 59	18 01	7 23
7	9 05 52	9 23 37 30	4 01 10 37	0 08 21 53	9 05 49 03	4 23 12 12	11 04 05 59	2 13 10 32	0 21 49 51	0 21 37 40	-15 34	17 47	4 55	19 03	8 00
8	9 09 49	9 24 38 16	4 14 16 39	0 09 00 04	9 07 19 31	4 23 06 09	11 05 17 01	2 13 07 28	0 21 46 41	0 21 24 48	-15 16	12 46	4 36	20 04	8 33
9	9 13 45	9 25 39 01	4 27 34 26	0 09 38 16	9 08 50 49	4 22 59 59	11 06 27 56	2 13 04 28	0 21 43 30	0 21 14 6	-14 57	7 05	4 02	21 06	9 05
10	9 17 42	9 26 39 45	5 11 02 27	0 10 16 29	9 10 22 56	4 22 53 41	11 07 38 44	2 13 01 34	0 21 40 19	0 21 6 20	-14 38	1 00	3 14	22 07	9 35
11	9 21 38	9 27 40 28	5 24 39 30	0 10 54 43	9 11 55 53	4 22 47 15	11 08 49 25	2 12 58 46	0 21 37 08	0 21 1 42	-14 18	-5 12	2 14	23 11	10 06
12	9 25 35	9 28 41 10	6 08 24 53	0 11 32 58	9 13 29 39	4 22 40 43	11 09 59 59	2 12 56 03	0 21 33 58	0 20 59 42	-13 58	-11 14	1 05	-- --	10 38
13	9 29 32	9 29 41 50	6 22 18 25	0 12 11 14	9 15 04 15	4 22 34 03	11 11 10 25	2 12 53 27	0 21 30 47	0 20 59 20	-13 39	-16 48	-0 07	0 16	11 15
14	9 33 28	10 00 42 30	7 06 20 03	0 12 49 31	9 16 39 42	4 22 27 17	11 12 20 44	2 12 50 56	0 21 27 36	0 20 59 18	-13 18	-21 30	-1 20	1 24	11 57
15	9 37 25	10 01 43 09	7 20 29 29	0 13 27 49	9 18 15 59	4 22 20 25	11 13 30 55	2 12 48 31	0 21 24 25	0 20 58 13	-12 58	-24 59	-2 29	2 33	12 46
16	9 41 21	10 02 43 46	8 04 45 32	0 14 06 08	9 19 53 08	4 22 13 27	11 14 40 58	2 12 46 12	0 21 21 15	0 20 54 57	-12 38	-26 55	-3 29	3 42	13 44
17	9 45 18	10 03 44 23	8 19 05 44	0 14 44 28	9 21 31 08	4 22 06 23	11 15 50 53	2 12 43 59	0 21 18 04	0 20 48 50	-12 17	-27 03	-4 16	4 45	14 49
18	9 49 14	10 04 44 58	9 03 26 08	0 15 22 49	9 23 10 01	4 21 59 13	11 17 00 40	2 12 41 53	0 21 14 53	0 20 40 2	-11 56	-25 23	-4 47	5 42	15 58
19	9 53 11	10 05 45 31	9 17 41 34	0 16 01 11	9 24 49 48	4 21 51 58	11 18 10 18	2 12 39 52	0 21 11 42	0 20 29 12	-11 35	-22 06	-5 00	6 30	17 07
20	9 57 07	10 06 46 04	10 01 46 23	0 16 39 34	9 26 30 29	4 21 44 39	11 19 19 48	2 12 37 58	0 21 08 31	0 20 17 22	-11 13	-17 35	-4 55	7 11	18 13
21	10 01 04	10 07 46 34	10 15 35 19	0 17 17 58	9 28 12 05	4 21 37 15	11 20 29 08	2 12 36 11	0 21 05 21	0 20 5 36	-10 52	-12 12	-4 32	7 46	19 17
22	10 05 01	10 08 47 03	10 29 04 23	0 17 56 22	9 29 54 37	4 21 29 47	11 21 38 19	2 12 34 30	0 21 02 10	0 19 55 3	-10 30	-6 22	-3 54	8 17	20 17
23	10 08 57	10 09 47 31	11 12 11 33	0 18 34 47	10 01 38 05	4 21 22 15	11 22 47 21	2 12 32 55	0 20 58 59	0 19 46 49	-10 09	-0 24	-3 04	8 46	21 16
24	10 12 54	10 10 47 56	11 24 56 48	0 19 13 13	10 03 22 31	4 21 14 40	11 23 56 13	2 12 31 27	0 20 55 48	0 19 41 27	-9 47	5 25	-2 07	9 15	22 13
25	10 16 50	10 11 48 20	0 07 22 04	0 19 51 39	10 05 07 55	4 21 07 02	11 25 04 55	2 12 30 05	0 20 52 38	0 19 38 43	-9 24	10 54	-1 04	9 43	23 09
26	10 20 47	10 12 48 42	0 19 30 49	0 20 30 05	10 06 54 17	4 20 59 21	11 26 13 26	2 12 28 50	0 20 49 27	0 19 37 58	-9 02	15 51	-0 00	10 13	-- --
27	10 24 43	10 13 49 02	1 01 27 34	0 21 08 32	10 08 41 39	4 20 51 37	11 27 21 46	2 12 27 42	0 20 46 16	0 19 38 21	-8 40	20 07	1 02	10 46	0 06
28	10 28 40	10 14 49 20	1 13 17 34	0 21 47 00	10 10 30 01	4 20 43 52	11 28 29 55	2 12 26 40	0 20 43 05	0 19 38 48	-8 17	23 11	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मार्च 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 43″

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घ. 30 मि., भा. स्टे. टा.) 1 मार्च 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 43″

मार्च	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चन्द्रोदय (चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा.)	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	10 36 33	10 16 49 49	2 06 59 02	0 23 03 55	10 14 09 42	4 20 28 16	0 00 45 39	2 12 24 57	0 20 36 44	0 19 35 54	-7 32	27 11	3 44	12 54	2 55
2	10 40 30	10 17 50 01	2 19 00 54	0 23 42 22	10 16 01 01	4 20 20 26	0 01 53 13	2 12 24 15	0 20 33 33	0 19 31 28	-7 09	27 10	4 22	13 48	3 47
3	10 44 26	10 18 50 11	3 01 16 10	0 24 20 50	10 17 53 17	4 20 12 36	0 03 00 34	2 12 23 40	0 20 30 22	0 19 24 33	-6 46	25 50	4 49	14 46	4 35
4	10 48 23	10 19 50 19	3 13 48 01	0 24 59 18	10 19 46 30	4 20 04 45	0 04 07 43	2 12 23 12	0 20 27 11	0 19 15 17	-6 23	23 13	5 03	15 47	5 18
5	10 52 19	10 20 50 25	3 26 38 23	0 25 37 46	10 21 40 35	4 19 56 54	0 05 14 38	2 12 22 51	0 20 24 01	0 19 4 37	-6 00	19 24	5 01	16 49	5 57
6	10 56 16	10 21 50 29	4 09 47 37	0 26 16 13	10 23 35 32	4 19 49 03	0 06 21 20	2 12 22 36	0 20 20 50	0 18 54 3	-5 37	14 34	4 44	17 52	6 32
7	11 00 12	10 22 50 31	4 23 14 32	0 26 54 41	10 25 31 14	4 19 41 13	0 07 27 49	2 12 22 28	0 20 17 39	0 18 44 37	-5 13	8 56	4 11	18 54	7 05
8	11 04 09	10 23 50 31	5 06 56 42	0 27 33 09	10 27 27 38	4 19 33 24	0 08 34 03	2 12 22 26	0 20 14 28	0 18 36 53	-4 50	2 46	3 23	19 57	7 36
9	11 08 05	10 24 50 29	5 20 50 47	0 28 11 36	10 29 24 35	4 19 25 36	0 09 40 03	2 12 22 32	0 20 11 18	0 18 31 19	-4 26	-3 37	2 22	21 02	8 06
10	11 12 02	10 25 50 26	6 04 53 09	0 28 50 03	11 01 22 00	4 19 17 50	0 10 45 48	2 12 22 44	0 20 08 07	0 18 28 15	-4 03	-9 55	1 12	22 08	8 39
11	11 15 59	10 26 50 20	6 19 00 29	0 29 28 30	11 03 19 42	4 19 10 06	0 11 51 17	2 12 23 03	0 20 04 56	0 18 27 26	-3 39	-15 45	-0 03	23 16	9 15
12	11 19 55	10 27 50 14	7 03, 10 00	1 00 06 57	11 05 17 29	4 19 02 24	0 12 56 32	2 12 23 28	0 20 01 45	0 18 28 4	-3 16	-20 46	-1 18	-- --	9 55
13	11 23 52	10 28 50 05	7 17 19 41	1 00 45 24	11 07 15 08	4 18 54 44	0 14 01 31	2 12 24 00	0 19 58 35	0 18 29 9	-2 52	-24 35	-2 29	0 26	10 42
14	11 27 48	10 29 49 55	8 01 28 02	1 01 23 51	11 09 12 24	4 18 47 07	0 15 06 13	2 12 24 39	0 19 55 24	0 18 29 41	-2 29	-26 52	-3 30	1 35	11 37
15	11 31 45	11 00 49 43	8 15 33 45	1 02 02 18	11 11 08 59	4 18 39 34	0 16 10 39	2 12 25 25	0 19 52 13	0 18 28 46	-2 05	-27 24	-4 19	2 39	12 39
16	11 35 41	11 01 49 30	8 29 35 24	1 02 40 45	11 13 04 33	4 18 32 03	0 17 14 48	2 12 26 17	0 19 49 02	0 18 25 46	-1 41	-26 11	-4 51	3 37	13 45
17	11 39 38	11 02 49 14	9 13 31 09	1 03 19 12	11 14 58 45	4 18 24 37	0 18 18 40	2 12 27 16	0 19 45 51	0 18 20 37	-1 17	-23 21	-5 07	4 26	14 53
18	11 43 34	11 03 48 57	9 27 18 44	1 03 57 38	11 16 51 11	4 18 17 15	0 19 22 14	2 12 28 22	0 19 42 41	0 18 13 52	-0 54	-19 13	-5 04	5 08	15 59
19	11 47 31	11 04 48 39	10 10 55 35	1 04 36 05	11 18 41 26	4 18 09 57	0 20 25 29	2 12 29 34	0 19 39 30	0 18 6 20	-0 30	-14 08	-4 44	5 44	17 03
20	11 51 28	11 05 48 18	10 24 19 09	1 05 14 32	11 20 29 02	4 18 02 44	0 21 28 26	2 12 30 53	0 19 36 19	0 17 58 57	-0 06	-8 28	-4 08	6 16	18 04
21	11 55 24	11 06 47 55	11 07 27 22	1 05 52 58	11 22 13 34	4 17 55 37	0 22 31 03	2 12 32 18	0 19 33 08	0 17 52 30	0 16	-2 31	-3 20	6 45	19 03
22	11 59 21	11 07 47 31	11 20 19 03	1 06 31 25	11 23 54 33	4 17 48 34	0 23 33 19	2 12 33 50	0 19 29 58	0 17 47 34	0 40	3 24	-2 23	7 14	20 00
23	12 03 17	11 08 47 04	0 02 54 06	1 07 09 51	11 25 31 33	4 17 41 38	0 24 35 15	2 12 35 29	0 19 26 47	0 17 44 32	1 04	9 05	-1 19	7 42	20 57
24	12 07 14	11 09 46 35	0 15 13 38	1 07 48 17	11 27 04 06	4 17 34 47	0 25 36 49	2 12 37 14	0 19 23 36	0 17 43 22	1 28	14 19	-0 13	8 11	21 55
25	12 11 10	11 10 46 04	0 27 19 55	1 08 26 43	11 28 31 49	4 17 28 03	0 26 38 01	2 12 39 06	0 19 20 25	0 17 43 46	1 51	18 54	0 52	8 43	22 52
26	12 15 07	11 11 45 31	1 09 16 16	1 09 05 08	11 29 54 16	4 17 21 25	0 27 38 50	2 12 41 04	0 19 17 14	0 17 45 16	2 15	22 40	1 54	9 19	23 49
27	12 19 03	11 12 44 55	1 21 06 46	1 09 43 33	0 01 11 07	4 17 14 54	0 28 39 15	2 12 43 09	0 19 14 04	0 17 47 7	2 38	25 27	2 52	10 00	-- --
28	12 23 00	11 13 44 18	2 02 56 05	1 10 21 58	0 02 22 01	4 17 08 30	0 29 39 15	2 12 45 19	0 19 10 53	0 17 48 26	3 02	27 06	3 42	10 45	0 45
29	12 26 57	11 14 43 37	2 14 49 14	1 11 00 22	0 03 26 42	4 17 02 13	1 00 38 50	2 12 47 37	0 19 07 42	0 17 48 52	3 25	27 31	4 22	11 37	1 39
30	12 30 53	11 15 42 55	2 26 51 15	1 11 38 45	0 04 24 53	4 16 56 04	1 01 37 58	2 12 50 00	0 19 04 31	0 17 48 20	3 48	26 39	4 52	12 32	2 28
31	12 34 50	11 16 42 10	3 09 06 55	1 12 17 09	0 05 16 23	4 16 50 02	1 02 36 39	2 12 52 30	0 19 01 21	0 17 46 31	4 12	24 29	5 09	13 31	3 13

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 अप्रैल 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 47″

तारीख	साम्पातिक काल 0.0h GMT घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	चन्द्रोदय (चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.) घं. मि.	चन्द्रास्त (चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.) घं. मि.
1	12 38 46	11 17 41 23	3 21 40 24	1 12 55 31	0 06 01 01	4 16 44 09	1 03 34 52	2 12 55 06	0 18 58 10	0 17 43 7	4 35	21 07	5 12	14 32	3 53
2	12 42 43	11 18 40 34	4 04 34 53	1 13 33 53	0 06 38 39	4 16 38 23	1 04 32 36	2 12 57 47	0 18 54 59	0 17 38 25	4 58	16 40	4 59	15 34	4 28
3	12 46 39	11 19 39 42	4 17 52 04	1 14 12 15	0 07 09 12	4 16 32 46	1 05 29 49	2 13 00 35	0 18 51 48	0 17 33 35	5 21	11 18	4 30	16 36	5 02
4	12 50 36	11 20 38 48	5 01 31 53	1 14 50 36	0 07 32 37	4 16 27 18	1 06 26 31	2 13 03 29	0 18 48 38	0 17 29 31	5 44	5 15	3 45	17 40	5 33
5	12 54 32	11 21 37 53	5 15 32 20	1 15 28 56	0 07 48 56	4 16 21 58	1 07 22 41	2 13 06 29	0 18 45 27	0 17 26 24	6 07	-1 11	2 46	18 45	6 04
6	12 58 29	11 22 36 55	5 29 49 39	1 16 07 15	0 07 58 13	4 16 16 47	1 08 18 17	2 13 09 35	0 18 42 16	0 17 24 20	6 29	-7 44	1 35	19 52	6 36
7	13 02 26	11 23 35 55	6 14 18 37	1 16 45 34	0 08 00 37	4 16 11 45	1 09 13 20	2 13 12 47	0 18 39 05	0 17 23 28	6 52	-13 58	0 16	21 02	7 12
8	13 06 22	11 24 34 53	6 28 53 23	1 17 23 53	0 07 56 19	4 16 06 53	1 10 07 46	2 13 16 04	0 18 35 54	0 17 23 46	7 14	-19 29	-1 03	22 14	7 52
9	13 10 19	11 25 33 49	7 13 28 09	1 18 02 11	0 07 45 36	4 16 02 09	1 11 01 36	2 13 19 27	0 18 32 44	0 17 24 49	7 37	-23 49	-2 18	23 25	8 37
10	13 14 15	11 26 32 43	7 27 57 52	1 18 40 28	0 07 28 51	4 15 57 35	1 11 54 48	2 13 22 56	0 18 29 33	0 17 26 8	7 59	-26 36	-3 25	-- --	9 31
11	13 18 12	11 27 31 36	8 12 18 36	1 19 18 45	0 07 06 29	4 15 53 11	1 12 47 21	2 13 26 31	0 18 26 22	0 17 27 20	8 21	-27 35	-4 18	0 33	10 32
12	13 22 08	11 28 30 27	8 26 27 38	1 19 57 01	0 06 39 03	4 15 48 56	1 13 39 14	2 13 30 11	0 18 23 11	0 17 28 6	8 43	-26 45	-4 54	1 34	11 38
13	13 26 05	11 29 29 16	9 10 23 19	1 20 35 17	0 06 07 07	4 15 44 52	1 14 30 25	2 13 33 57	0 18 20 01	0 17 28 3	9 05	-24 15	-5 13	2 25	12 45
14	13 30 01	0 00 28 04	9 24 04 52	1 21 13 33	0 05 31 22	4 15 40 57	1 15 20 53	2 13 37 48	0 18 16 50	0 17 27 1	9 27	-20 24	-5 13	3 09	13 51
15	13 33 58	0 01 26 50	10 07 32 02	1 21 51 48	0 04 52 33	4 15 37 13	1 16 10 37	2 13 41 45	0 18 13 39	0 17 25 5	9 48	-15 34	-4 56	3 46	14 54
16	13 37 55	0 02 25 34	10 20 44 54	1 22 30 03	0 04 11 26	4 15 33 38	1 16 59 34	2 13 45 47	0 18 10 28	0 17 22 44	10 09	-10 05	-4 23	4 18	15 55
17	13 41 51	0 03 24 17	11 03 43 44	1 23 08 18	0 03 28 49	4 15 30 15	1 17 47 43	2 13 49 55	0 18 07 18	0 17 20 33	10 31	-4 16	-3 38	4 48	16 53
18	13 45 48	0 04 22 57	11 16 28 56	1 23 46 32	0 02 45 32	4 15 27 01	1 18 35 02	2 13 54 07	0 18 04 07	0 17 18 51	10 52	1 37	-2 42	5 16	17 51
19	13 49 44	0 05 21 36	11 29 01 06	1 24 24 45	0 02 02 23	4 15 23 59	1 19 21 30	2 13 58 26	0 18 00 56	0 17 17 45	11 12	7 22	-1 39	5 44	18 47
20	13 53 41	0 06 20 13	0 11 21 08	1 25 02 59	0 01 20 09	4 15 21 07	1 20 07 03	2 14 02 49	0 17 57 45	0 17 17 10	11 33	12 45	-0 32	6 12	19 45
21	13 57 37	0 07 18 48	0 23 30 21	1 25 41 11	0 00 39 33	4 15 18 26	1 20 51 41	2 14 07 17	0 17 54 34	0 17 17 11	11 54	17 34	0 34	6 43	20 42
22	14 01 34	0 08 17 21	1 05 30 31	1 26 19 24	0 00 01 17	4 15 15 55	1 21 35 20	2 14 11 51	0 17 51 24	0 17 17 39	12 14	21 38	1 39	7 17	21 40
23	14 05 30	0 09 15 51	1 17 23 59	1 26 57 35	11 29 25 54	4 15 13 36	1 22 17 59	2 14 16 29	0 17 48 13	0 17 18 27	12 34	24 46	2 39	7 55	22 36
24	14 09 27	0 10 14 20	1 29 13 40	1 27 35 47	11 28 53 58	4 15 11 27	1 22 59 35	2 14 21 12	0 17 45 02	0 17 19 17	12 54	26 47	3 32	8 39	23 31
25	14 13 24	0 11 12 47	2 11 03 06	1 28 13 57	11 28 25 53	4 15 09 30	1 23 40 06	2 14 26 01	0 17 41 51	0 17 19 51	13 13	27 36	4 16	9 28	-- --
26	14 17 20	0 12 11 12	2 22 56 15	1 28 52 07	11 28 02 00	4 15 07 43	1 24 19 28	2 14 30 54	0 17 38 41	0 17 20 7	13 33	27 09	4 49	10 21	0 21
27	14 21 17	0 13 09 34	3 04 57 28	1 29 30 17	11 27 42 36	4 15 06 08	1 24 57 40	2 14 35 51	0 17 35 30	0 17 20 26	13 52	25 26	5 10	11 19	1 07
28	14 25 13	0 14 07 55	3 17 11 16	2 00 08 26	11 27 27 52	4 15 04 43	1 25 34 38	2 14 40 54	0 17 32 19	0 17 20 51	14 11	22 31	5 17	12 17	1 49
29	14 29 10	0 15 06 13	3 29 42 07	2 00 46 34	11 27 17 55	4 15 03 30	1 26 10 19	2 14 46 01	0 17 29 08	0 17 20 59	14 30	18 31	5 10	13 18	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मई 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 50″

दि.	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशार	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	14 37 03	0 17 02 44	4 25 49 54	2 02 02 48	11 27 12 37	4 15 01 36	1 27 17 39	2 14 56 28	0 17 22 47	0 17 20 13	15 06	7 52	4 08	15 21	3 30
2	14 40 59	0 18 00 56	5 09 31 32	2 02 40 54	11 27 17 14	4 15 00 56	1 27 49 12	2 15 01 48	0 17 19 36	0 17 20 7	15 24	1 36	3 14	16 24	4 01
3	14 44 56	0 18 59 06	5 23 38 28	2 03 19 00	11 27 26 38	4 15 00 27	1 28 19 15	2 15 07 13	0 17 16 25	0 17 20 21	15 42	-4 55	2 07	17 30	4 32
4	14 48 53	0 19 57 15	6 08 08 03	2 03 57 04	11 27 40 43	4 15 00 09	1 28 47 46	2 15 12 41	0 17 13 14	0 17 20 32	16 00	-11 23	0 50	18 39	5 06
5	14 52 49	0 20 55 22	6 22 55 09	2 04 35 08	11 27 59 22	4 15 00 02	1 29 14 41	2 15 18 14	0 17 10 04	0 17 20 32	16 17	-17 21	-0 31	19 52	5 44
6	14 56 46	0 21 53 27	7 07 52 41	2 05 13 12	11 28 22 28	4 15 00 06	1 29 39 57	2 15 23 51	0 17 06 53	0 17 20 20	16 34	-22 20	-1 51	21 06	6 27
7	15 00 42	0 22 51 30	7 22 52 24	2 05 51 15	11 28 49 52	4 15 00 21	2 00 03 30	2 15 29 32	0 17 03 42	0 17 19 52	16 50	-25 50	-3 04	22 18	7 20
8	15 04 39	0 23 49 32	8 07 46 05	2 06 29 17	11 29 21 27	4 15 00 46	2 00 25 17	2 15 35 17	0 17 00 31	0 17 19 12	17 07	-27 30	-4 04	23 25	8 19
9	15 08 35	0 24 47 32	8 22 26 37	2 07 07 19	11 29 57 03	4 15 01 23	2 00 45 14	2 15 41 06	0 16 57 21	0 17 18 34	17 23	-27 11	-4 47	-- --	9 26
10	15 12 32	0 25 45 32	9 06 48 52	2 07 45 20	0 00 36 32	4 15 02 10	2 01 03 19	2 15 46 59	0 16 54 10	0 17 18 9	17 39	-25 03	-5 11	0 21	10 35
11	15 16 28	0 26 43 30	9 20 49 53	2 08 23 21	0 01 19 45	4 15 03 09	2 01 19 26	2 15 52 56	0 16 50 59	0 17 17 57	17 54	-21 26	-5 16	1 09	11 43
12	15 20 25	0 27 41 26	10 04 28 50	2 09 01 22	0 02 06 34	4 15 04 18	2 01 33 35	2 15 58 56	0 16 47 48	0 17 17 58	18 09	-16 45	-5 03	1 48	12 48
13	15 24 22	0 28 39 22	10 17 46 31	2 09 39 22	0 02 56 51	4 15 05 38	2 01 45 39	2 16 05 00	0 16 44 37	0 17 18 17	18 24	-11 23	-4 33	2 22	13 50
14	15 28 18	0 29 37 16	11 00 44 48	2 10 17 21	0 03 50 28	4 15 07 08	2 01 55 38	2 16 11 08	0 16 41 27	0 17 18 59	18 39	-5 38	-3 50	2 52	14 48
15	15 32 15	1 00 35 09	11 13 26 10	2 10 55 21	0 04 47 19	4 15 08 50	2 02 03 26	2 16 17 20	0 16 38 16	0 17 20 0	18 53	0 12	-2 57	3 20	15 45
16	15 36 11	1 01 33 00	11 25 53 14	2 11 33 20	0 05 47 18	4 15 10 42	2 02 09 02	2 16 23 34	0 16 35 05	0 17 21 7	19 07	5 57	-1 56	3 47	16 41
17	15 40 08	1 02 30 50	0 08 08 33	2 12 11 18	0 06 50 17	4 15 12 45	2 02 12 21	2 16 29 53	0 16 31 54	0 17 21 58	19 21	11 23	-0 50	4 15	17 38
18	15 44 04	1 03 28 39	0 20 14 29	2 12 49 17	0 07 56 12	4 15 14 58	2 02 13 22	2 16 36 15	0 16 28 44	0 17 22 9	19 34	16 20	0 15	4 44	18 34
19	15 48 01	1 04 26 27	1 02 13 12	2 13 27 15	0 09 04 57	4 15 17 22	2 02 12 02	2 16 42 40	0 16 25 33	0 17 21 31	19 47	20 36	1 21	5 17	19 32
20	15 51 57	1 05 24 13	1 14 06 42	2 14 05 12	0 10 16 29	4 15 19 56	2 02 08 19	2 16 49 08	0 16 22 22	0 17 20 1	20 00	23 59	2 22	5 54	20 28
21	15 55 54	1 06 21 58	1 25 57 01	2 14 43 09	0 11 30 42	4 15 22 41	2 02 02 12	2 16 55 39	0 16 19 11	0 17 17 38	20 12	26 19	3 17	6 35	21 24
22	15 59 51	1 07 19 42	2 07 46 16	2 15 21 06	0 12 47 35	4 15 25 36	2 01 53 39	2 17 02 14	0 16 16 01	0 17 14 31	20 24	27 28	4 03	7 23	22 16
23	16 03 47	1 08 17 24	2 19 36 54	2 15 59 02	0 14 07 03	4 15 28 41	2 01 42 41	2 17 08 51	0 16 12 50	0 17 11 0	20 36	27 22	4 39	8 14	23 04
24	16 07 44	1 09 15 04	3 01 31 43	2 16 36 58	0 15 29 05	4 15 31 56	2 01 29 17	2 17 15 32	0 16 09 39	0 17 7 32	20 47	26 00	5 02	9 10	23 46
25	16 11 40	1 10 12 43	3 13 33 55	2 17 14 54	0 16 53 38	4 15 35 22	2 01 13 30	2 17 22 15	0 16 06 28	0 17 4 43	20 58	23 27	5 13	10 08	-- --
26	16 15 37	1 11 10 21	3 25 47 07	2 17 52 49	0 18 20 40	4 15 38 57	2 00 55 20	2 17 29 01	0 16 03 17	0 17 2 58	21 08	19 49	5 10	11 07	0 24
27	16 19 33	1 12 07 57	4 08 15 16	2 18 30 43	0 19 50 11	4 15 42 43	2 00 34 51	2 17 35 50	0 16 00 07	0 17 2 20	21 19	15 15	4 53	12 06	0 58
28	16 23 30	1 13 05 31	4 21 02 22	2 19 08 37	0 21 22 08	4 15 46 38	2 00 12 07	2 17 42 42	0 15 56 56	0 17 2 34	21 28	9 56	4 20	13 05	1 29
29	16 27 26	1 14 03 05	5 04 12 07	2 19 46 31	0 22 56 32	4 15 50 43	1 29 47 14	2 17 49 36	0 15 53 45	0 17 3 27	21 38	4 01	3 34	14 06	1 59
30	16 31 23	1 15 00 36	5 17 47 24	2 20 24 24	0 24 33 22	4 15 54 57	1 29 20 17	2 17 56 33	0 15 50 34	0 17 4 51	21 47	-2 15	2 33	15 09	2 28
31	16 35 20	1 15 58 07	6 01 49 37	2 21 02 16	0 26 12 37	4 15 59 21	1 28 51 24	2 18 03 32	0 15 47 24	0 17 6 12	21 56	-8 39	1 22	16 15	3 00

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जून 2004 ई. को अयनांश 23° 54′ 55″

ता.	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	16 39 16	1 16 55 36	6 16 18 01	2 21 40 08	0 27 54 16	4 16 03 55	1 28 20 44	2 18 10 34	0 15 44 13	0 17 6 50	22 04	-14 48	0 04	17 26	3 35
2	16 43 13	1 17 53 04	7 01 09 06	2 22 18 00	0 29 38 20	4 16 08 38	1 27 48 26	2 18 17 38	0 15 41 02	0 17 6 15	22 12	-20 15	-1 16	18 39	4 15
3	16 47 09	1 18 50 31	7 16 16 20	2 22 55 51	1 01 24 48	4 16 13 30	1 27 14 43	2 18 24 44	0 15 37 51	0 17 4 10	22 19	-24 29	-2 32	19 54	5 04
4	16 51 06	1 19 47 57	8 01 30 47	2 23 33 42	1 03 13 39	4 16 18 31	1 26 39 45	2 18 31 53	0 15 34 41	0 17 0 32	22 26	-27 00	-3 39	21 06	6 01
5	16 55 02	1 20 45 22	8 16 42 12	2 24 11 32	1 05 04 50	4 16 23 41	1 26 03 46	2 18 39 03	0 15 31 30	0 16 55 53	22 33	-27 29	-4 29	22 09	7 07
6	16 58 59	1 21 42 46	9 01 40 47	2 24 49 22	1 06 58 22	4 16 29 00	1 25 27 00	2 18 46 16	0 15 28 19	0 16 51 8	22 39	-25 56	-5 00	23 02	8 17
7	17 02 55	1 22 40 10	9 16 18 37	2 25 27 12	1 08 54 10	4 16 34 28	1 24 49 41	2 18 53 31	0 15 25 08	0 16 47 4	22 45	-22 40	-5 11	23 46	9 29
8	17 06 52	1 23 37 32	10 00 30 42	2 26 05 01	1 10 52 10	4 16 40 05	1 24 12 02	2 19 00 48	0 15 21 57	0 16 43 52	22 51	-18 07	-5 02	-- --	10 37
9	17 10 49	1 24 34 55	10 14 15 09	2 26 42 51	1 12 52 19	4 16 45 51	1 23 34 20	2 19 08 06	0 15 18 47	0 16 41 47	22 56	-12 46	-4 36	0 22	11 42
10	17 14 45	1 25 32 17	10 27 32 46	2 27 20 40	1 14 54 29	4 16 51 45	1 22 56 49	2 19 15 27	0 15 15 36	0 16 41 5	23 01	-6 59	-3 55	0 54	12 42
11	17 18 42	1 26 29 38	11 10 26 12	2 27 58 29	1 16 58 34	4 16 57 48	1 22 19 44	2 19 22 50	0 15 12 25	0 16 41 43	23 05	-1 05	-3 04	1 23	13 40
12	17 22 38	1 27 26 59	11 22 59 15	2 28 36 18	1 19 04 24	4 17 03 59	1 21 43 17	2 19 30 14	0 15 09 14	0 16 43 6	23 09	4 42	-2 05	1 51	14 36
13	17 26 35	1 28 24 19	0 05 16 06	2 29 14 07	1 21 11 48	4 17 10 18	1 21 07 44	2 19 37 40	0 15 06 04	0 16 44 29	23 13	10 13	-1 01	2 18	15 33
14	17 30 31	1 29 21 39	0 17 20 55	2 29 51 55	1 23 20 34	4 17 16 46	1 20 33 16	2 19 45 07	0 15 02 53	0 16 45 2	23 16	15 15	0 03	2 47	16 29
15	17 34 28	2 00 18 58	0 29 17 28	3 00 29 44	1 25 30 28	4 17 23 23	1 20 00 06	2 19 52 36	0 14 59 42	0 16 44 7	23 18	19 39	1 07	3 19	17 26
16	17 38 24	2 01 16 17	1 11 09 01	3 01 07 33	1 27 41 15	4 17 30 07	1 19 28 25	2 20 00 07	0 14 56 31	0 16 41 19	23 21	23 14	2 08	3 54	18 22
17	17 42 21	2 02 13 36	1 22 58 19	3 01 45 21	1 29 52 40	4 17 36 59	1 18 58 22	2 20 07 39	0 14 53 20	0 16 36 26	23 23	25 49	3 03	4 34	19 19
18	17 46 18	2 03 10 54	2 04 47 34	3 02 23 10	2 02 04 26	4 17 44 00	1 18 30 07	2 20 15 13	0 14 50 10	0 16 29 30	23 24	27 15	3 49	5 19	20 12
19	17 50 14	2 04 08 11	2 16 38 40	3 03 00 58	2 04 16 16	4 17 51 08	1 18 03 48	2 20 22 47	0 14 46 59	0 16 21 0	23 25	27 27	4 26	6 10	21 01
20	17 54 11	2 05 05 28	2 28 33 21	3 03 38 46	2 06 27 53	4 17 58 24	1 17 39 32	2 20 30 23	0 14 43 48	0 16 11 49	23 26	26 22	4 52	7 05	21 45
21	17 58 07	2 06 02 44	3 10 33 25	3 04 16 34	2 08 39 02	4 18 05 47	1 17 17 24	2 20 38 01	0 14 40 37	0 16 2 48	23 26	24 04	5 05	8 02	22 24
22	18 02 04	2 07 00 00	3 22 40 51	3 04 54 22	2 10 49 28	4 18 13 18	1 16 57 30	2 20 45 39	0 14 37 27	0 15 54 45	23 26	20 41	5 04	9 00	22 59
23	18 06 00	2 07 57 15	4 04 58 02	3 05 32 10	2 12 58 56	4 18 20 57	1 16 39 52	2 20 53 18	0 14 34 16	0 15 48 26	23 25	16 22	4 49	9 58	23 30
24	18 09 57	2 08 54 30	4 17 27 48	3 06 09 58	2 15 07 15	4 18 28 43	1 16 24 33	2 21 00 58	0 14 31 05	0 15 44 9	23 24	11 19	4 21	10 56	23 59
25	18 13 53	2 09 51 44	5 00 13 25	3 06 47 45	2 17 14 12	4 18 36 36	1 16 11 36	2 21 08 39	0 14 27 54	0 15 41 57	23 23	5 40	3 39	11 55	-- --
26	18 17 50	2 10 48 57	5 13 18 18	3 07 25 33	2 19 19 40	4 18 44 36	1 16 01 02	2 21 16 21	0 14 24 44	0 15 41 32	23 21	-0 20	2 44	12 55	0 28
27	18 21 47	2 11 46 10	5 26 45 40	3 08 03 20	2 21 23 29	4 18 52 43	1 15 52 51	2 21 24 04	0 14 21 33	0 15 42 10	23 19	-6 31	1 39	13 57	0 58
28	18 25 43	2 12 43 22	6 10 37 56	3 08 41 07	2 23 25 34	4 19 00 57	1 15 47 02	2 21 31 47	0 14 18 22	0 15 42 54	23 16	-12 36	0 27	15 04	1 30
29	18 29 40	2 13 40 33	6 24 55 56	3 09 18 54	2 25 25 48	4 19 09 18	1 15 43 36	2 21 39 31	0 14 15 11	0 15 42 40	23 13	-18 13	-0 49	16 14	2 06
30	18 33 36	2 14 37 45	7 09 38 06	3 09 56 40	2 27 24 08	4 19 17 45	1 15 42 30	2 21 47 16	0 14 12 00	0 15 40 41	23 09	-22 53	-2 04	17 28	2 49

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)   1 जुलाई 2004 ई. को अयनांश 23° 55' 1"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	18 37 33	2 15 34 56	7 24 39 47	3 10 34 27	2 29 20 32	4 19 26 19	1 15 43 44	2 21 55 01	0 14 08 50	0 15 36 26	23 06	-26 08	-3 12	18 41	3 42
2	18 41 29	2 16 32 06	8 09 53 12	3 11 12 14	3 01 14 55	4 19 35 00	1 15 47 14	2 22 02 47	0 14 05 39	0 15 29 42	23 01	-27 30	-4 07	19 49	4 43
3	18 45 26	2 17 29 17	8 25 08 15	3 11 50 00	3 03 07 18	4 19 43 47	1 15 52 58	2 22 10 33	0 14 02 28	0 15 20 59	22 57	-26 47	-4 45	20 48	5 53
4	18 49 22	2 18 26 28	9 10 14 05	3 12 27 47	3 04 57 39	4 19 52 40	1 16 00 55	2 22 18 19	0 13 59 17	0 15 11 36	22 51	-24 06	-5 02	21 38	7 06
5	18 53 19	2 19 23 38	9 25 01 02	3 13 05 34	3 06 45 57	4 20 01 40	1 16 10 59	2 22 26 06	0 13 56 07	0 15 3 1	22 46	-19 52	-4 59	22 18	8 18
6	18 57 16	2 20 20 49	10 09 22 08	3 13 43 20	3 08 32 13	4 20 10 45	1 16 23 09	2 22 33 52	0 13 52 56	0 14 55 50	22 40	-14 35	-4 36	22 53	9 27
7	19 01 12	2 21 18 00	10 23 13 54	3 14 21 07	3 10 16 25	4 20 19 57	1 16 37 20	2 22 41 39	0 13 49 45	0 14 50 28	22 34	-8 44	-3 58	23 24	10 31
8	19 05 09	2 22 15 12	11 06 36 10	3 14 58 54	3 11 58 34	4 20 29 15	1 16 53 30	2 22 49 27	0 13 46 34	0 14 47 20	22 27	-2 40	-3 08	23 53	11 32
9	19 09 05	2 23 12 24	11 19 31 19	3 15 36 42	3 13 38 40	4 20 38 39	1 17 11 34	2 22 57 14	0 13 43 24	0 14 46 15	22 20	3 18	-2 10	-- --	12 29
10	19 13 02	2 24 09 36	0 02 03 25	3 16 14 29	3 15 16 43	4 20 48 08	1 17 31 28	2 23 05 01	0 13 40 13	0 14 46 24	22 13	8 59	-1 07	0 20	13 27
11	19 16 58	2 25 06 49	0 14 17 22	3 16 52 17	3 16 52 43	4 20 57 43	1 17 53 10	2 23 12 48	0 13 37 02	0 14 46 41	22 05	14 12	-0 02	0 49	14 23
12	19 20 55	2 26 04 02	0 26 18 16	3 17 30 05	3 18 26 38	4 21 07 24	1 18 16 34	2 23 20 36	0 13 33 51	0 14 46 9	21 57	18 46	1 00	1 20	15 20
13	19 24 51	2 27 01 16	1 08 10 58	3 18 07 54	3 19 58 29	4 21 17 11	1 18 41 38	2 23 28 22	0 13 30 40	0 14 43 48	21 48	22 33	2 01	1 54	16 17
14	19 28 48	2 27 58 30	1 19 59 49	3 18 45 42	3 21 28 15	4 21 27 03	1 19 08 18	2 23 36 09	0 13 27 30	0 14 38 57	21 39	25 22	2 55	2 32	17 14
15	19 32 45	2 28 55 45	2 01 48 24	3 19 23 31	3 22 55 55	4 21 37 01	1 19 36 30	2 23 43 56	0 13 24 19	0 14 31 22	21 30	27 04	3 41	3 16	18 08
16	19 36 41	2 29 53 00	2 13 39 34	3 20 01 21	3 24 21 27	4 21 47 04	1 20 06 11	2 23 51 42	0 13 21 08	0 14 21 12	21 20	27 31	4 19	4 05	18 58
17	19 40 38	3 00 50 15	2 25 35 27	3 20 39 10	3 25 44 50	4 21 57 12	1 20 37 17	2 23 59 27	0 13 17 57	0 14 9 4	21 10	26 43	4 45	4 59	19 44
18	19 44 34	3 01 47 31	3 07 37 37	3 21 17 00	3 27 06 01	4 22 07 25	1 21 09 46	2 24 07 12	0 13 14 47	0 13 55 54	21 00	24 39	4 58	5 56	20 24
19	19 48 31	3 02 44 48	3 19 47 13	3 21 54 50	3 28 24 59	4 22 17 44	1 21 43 33	2 24 14 57	0 13 11 36	0 13 42 52	20 49	21 28	4 58	6 55	21 00
20	19 52 27	3 03 42 05	4 02 05 15	3 22 32 41	3 29 41 40	4 22 28 07	1 22 18 37	2 24 22 40	0 13 08 25	0 13 30 56	20 38	17 18	4 44	7 53	21 33
21	19 56 24	3 04 39 22	4 14 32 50	3 23 10 32	4 00 56 01	4 22 38 35	1 22 54 54	2 24 30 23	0 13 05 14	0 13 21 0	20 26	12 22	4 17	8 51	22 02
22	20 00 20	3 05 36 39	4 27 11 25	3 23 48 23	4 02 07 58	4 22 49 08	1 23 32 21	2 24 38 06	0 13 02 03	0 13 13 41	20 15	6 51	3 37	9 50	22 30
23	20 04 17	3 06 33 57	5 10 02 55	3 24 26 14	4 03 17 27	4 22 59 46	1 24 10 56	2 24 45 47	0 12 58 53	0 13 9 14	20 02	0 56	2 45	10 48	22 59
24	20 08 14	3 07 31 15	5 23 09 40	3 25 04 05	4 04 24 24	4 23 10 28	1 24 50 37	2 24 53 28	0 12 55 42	0 13 7 13	19 50	-5 07	1 43	11 48	23 30
25	20 12 10	3 08 28 34	6 06 34 12	3 25 41 57	4 05 28 43	4 23 21 15	1 25 31 20	2 25 01 07	0 12 52 31	0 13 6 48	19 37	-11 06	0 34	12 51	-- --
26	20 16 07	3 09 25 53	6 20 18 49	3 26 19 49	4 06 30 18	4 23 32 06	1 26 13 03	2 25 08 46	0 12 49 20	0 13 6 45	19 24	-16 42	-0 38	13 57	0 03
27	20 20 03	3 10 23 12	7 04 24 51	3 26 57 42	4 07 29 03	4 23 43 02	1 26 55 45	2 25 16 23	0 12 46 10	0 13 5 49	19 11	-21 34	-1 50	15 07	0 42
28	20 24 00	3 11 20 31	7 18 52 01	3 27 35 34	4 08 24 51	4 23 54 01	1 27 39 24	2 25 23 59	0 12 42 59	0 13 3 2	18 57	-25 15	-2 56	16 19	1 28
29	20 27 56	3 12 17 52	8 03 37 31	3 28 13 27	4 09 17 34	4 24 05 05	1 28 23 57	2 25 31 34	0 12 39 48	0 12 57 46	18 43	-27 18	-3 53	17 29	2 24
30	20 31 53	3 13 15 12	8 18 35 43	3 28 51 20	4 10 07 04	4 24 16 13	1 29 09 23	2 25 39 08	0 12 36 37	0 12 49 48	18 28	-27 24	-4 34	18 31	3 29
31	20 35 49	3 14 12 34	9 03 38 25	3 29 29 14	4 10 53 12	4 24 27 2[illegible]	1 29 55 39	2 25 46 40	0 12 33 27	0 12 39 33	18 14	-25 29	-4 56	19 25	4 40

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 अगस्त 2004 ई. को अयनांश 23° 55′ 7″

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	20 39 46	3 15 09 56	9 18 35 59	4 00 07 08	4 11 35 49	4 24 38 41	2 00 42 45	2 25 54 11	0 12 30 16	0 12 28 22	17 59	-21 49	-4 58	20 10	5 54
2	20 43 43	3 16 07 19	10 03 18 59	4 00 45 03	4 12 14 45	4 24 50 00	2 01 30 38	2 26 01 40	0 12 27 05	0 12 17 39	17 43	-16 49	-4 40	20 48	7 06
3	20 47 39	3 17 04 43	10 17 39 46	4 01 22 57	4 12 49 50	4 25 01 24	2 02 19 17	2 26 09 08	0 12 23 54	0 12 8 21	17 28	-10 59	-4 05	21 21	8 13
4	20 51 36	3 18 02 08	11 01 33 38	4 02 00 53	4 13 20 51	4 25 12 51	2 03 08 40	2 26 16 35	0 12 20 43	0 12 1 11	17 12	-4 47	-3 15	21 52	9 17
5	20 55 32	3 18 59 34	11 14 59 05	4 02 38 49	4 13 47 39	4 25 24 22	2 03 58 46	2 26 23 59	0 12 17 33	0 11 56 41	16 56	1 25	-2 17	22 20	10 17
6	20 59 29	3 19 57 02	11 27 57 24	4 03 16 46	4 14 10 00	4 25 35 56	2 04 49 33	2 26 31 23	0 12 14 22	0 11 54 37	16 39	7 23	-1 13	22 49	11 16
7	21 03 25	3 20 54 31	0 10 31 57	4 03 54 43	4 14 27 44	4 25 47 34	2 05 41 00	2 26 38 44	0 12 11 11	0 11 54 7	16 23	12 53	-0 07	23 20	12 14
8	21 07 22	3 21 52 01	0 22 47 23	4 04 32 41	4 14 40 39	4 25 59 15	2 06 33 05	2 26 46 03	0 12 08 00	0 11 54 10	16 06	17 44	0 57	23 53	13 12
9	21 11 18	3 22 49 32	1 04 48 55	4 05 10 40	4 14 48 35	4 26 11 00	2 07 25 47	2 26 53 21	0 12 04 50	0 11 53 45	15 49	21 47	1 58	-- --	14 09
10	21 15 15	3 23 47 05	1 16 41 54	4 05 48 39	4 14 51 20	4 26 22 48	2 08 19 05	2 27 00 37	0 12 01 39	0 11 51 42	15 31	24 53	2 53	0 30	15 07
11	21 19 12	3 24 44 39	1 28 31 21	4 06 26 39	4 14 48 46	4 26 34 39	2 09 12 57	2 27 07 51	0 11 58 28	0 11 47 11	15 13	26 53	3 40	1 12	16 02
12	21 23 08	3 25 42 14	2 10 21 42	4 07 04 40	4 14 40 47	4 26 46 33	2 10 07 22	2 27 15 02	0 11 55 17	0 11 40 3	14 56	27 40	4 17	2 00	16 54
13	21 27 05	3 26 39 51	2 22 16 38	4 07 42 42	4 14 27 19	4 26 58 31	2 11 02 20	2 27 22 12	0 11 52 07	0 11 30 40	14 37	27 09	4 44	2 52	17 41
14	21 31 01	3 27 37 29	3 04 18 57	4 08 20 44	4 14 08 21	4 27 10 31	2 11 57 48	2 27 29 19	0 11 48 56	0 11 19 29	14 19	25 23	4 58	3 49	18 23
15	21 34 58	3 28 35 09	3 16 30 36	4 08 58 47	4 13 43 57	4 27 22 34	2 12 53 46	2 27 36 24	0 11 45 45	0 11 7 8	14 00	22 25	4 59	4 47	19 01
16	21 38 54	3 29 32 50	3 28 52 40	4 09 36 51	4 13 14 15	4 27 34 41	2 13 50 13	2 27 43 26	0 11 42 34	0 10 54 40	13 41	18 25	4 46	5 47	19 35
17	21 42 51	4 00 30 32	4 11 25 41	4 10 14 56	4 12 39 31	4 27 46 49	2 14 47 08	2 27 50 27	0 11 39 23	0 10 43 12	13 22	13 34	4 19	6 45	20 05
18	21 46 47	4 01 28 15	4 24 09 45	4 10 53 01	4 12 00 05	4 27 59 01	2 15 44 30	2 27 57 24	0 11 36 13	0 10 33 37	13 03	8 04	3 39	7 44	20 34
19	21 50 44	4 02 26 00	5 07 04 56	4 11 31 07	4 11 16 27	4 28 11 15	2 16 42 19	2 28 04 19	0 11 33 02	0 10 26 35	12 44	2 09	2 46	8 43	21 03
20	21 54 41	4 03 23 45	5 20 11 29	4 12 09 13	4 10 29 13	4 28 23 32	2 17 40 32	2 28 11 12	0 11 29 51	0 10 22 23	12 24	-3 57	1 44	9 43	21 32
21	21 58 37	4 04 21 32	6 03 30 00	4 12 47 21	4 09 39 06	4 28 35 51	2 18 39 10	2 28 18 01	0 11 26 40	0 10 20 42	12 04	-9 59	0 36	10 44	22 04
22	22 02 34	4 05 19 21	6 17 01 24	4 13 25 29	4 08 46 56	4 28 48 12	2 19 38 12	2 28 24 48	0 11 23 30	0 10 20 37	11 44	-15 40	-0 35	11 49	22 40
23	22 06 30	4 06 17 10	7 00 46 42	4 14 03 37	4 07 53 42	4 29 00 36	2 20 37 37	2 28 31 32	0 11 20 19	0 10 21 6	11 24	-20 40	-1 46	12 56	23 23
24	22 10 27	4 07 15 00	7 14 46 38	4 14 41 47	4 07 00 24	4 29 13 01	2 21 37 25	2 28 38 13	0 11 17 08	0 10 20 56	11 03	-24 35	-2 52	14 06	-- --
25	22 14 23	4 08 12 52	7 29 00 55	4 15 19 57	4 06 08 09	4 29 25 29	2 22 37 35	2 28 44 51	0 11 13 57	0 10 19 14	10 42	-27 03	-3 49	15 14	0 13
26	22 18 20	4 09 10 44	8 13 27 49	4 15 58 07	4 05 18 02	4 29 37 59	2 23 38 06	2 28 51 26	0 11 10 47	0 10 15 16	10 22	-27 45	-4 32	16 18	1 13
27	22 22 16	4 10 08 38	8 28 03 42	4 16 36 19	4 04 31 09	4 29 50 31	2 24 38 58	2 28 57 58	0 11 07 36	0 10 8 56	10 01	-26 32	-4 57	17 14	2 20
28	22 26 13	4 11 06 34	9 12 42 58	4 17 14 31	4 03 48 34	5 00 03 04	2 25 40 11	2 29 04 27	0 11 04 25	0 10 0 43	9 40	-23 30	-5 04	18 02	3 32
29	22 30 10	4 12 04 30	9 27 18 42	4 17 52 44	4 03 11 14	5 00 15 40	2 26 41 44	2 29 10 53	0 11 01 14	0 9 51 49	9 18	-19 00	-4 50	18 42	4 43
30	22 34 06	4 13 02 29	10 11 43 38	4 18 30 58	4 02 40 04	5 00 28 17	2 27 43 36	2 29 17 15	0 10 58 03	0 9 43 16	8 57	-13 26	-4 18	19 17	5 52
31	22 38 03	4 14 00 28	10 25 51 19	4 19 09 12	4 02 15 47	5 00 40 56	2 28 45 48	2 29 23 34	0 10 54 53	0 9 35 43	8 35	-7 17	-3 31	19 49	6 58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 सितम्बर 2004 ई. को अयनांश 23° 55' 10"

सितम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चन्द्रोदय (चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.))	चन्द्रास्त (चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.))
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	22 41 59	4 14 58 30	11 09 37 09	4 19 47 28	4 01 59 01	5 00 53 36	2 29 48 18	2 29 29 50	0 10 51 42	0 9 29 49	8 14	-0 55	-2 32	20 18	8 01
2	22 45 56	4 15 56 33	11 22 58 52	4 20 25 45	4 01 50 15	5 01 06 18	3 00 51 07	2 29 36 02	0 10 48 31	0 9 26 15	7 52	5 17	-1 27	20 47	9 02
3	22 49 52	4 16 54 38	0 05 56 33	4 21 04 02	4 01 49 51	5 01 19 02	3 01 54 13	2 29 42 11	0 10 45 20	0 9 24 52	7 30	11 07	-0 18	21 18	10 01
4	22 53 49	4 17 52 45	0 18 32 17	4 21 42 21	4 01 58 02	5 01 31 47	3 02 57 37	2 29 48 16	0 10 42 10	0 9 25 8	7 08	16 21	0 49	21 50	11 00
5	22 57 45	4 18 50 54	1 00 49 41	4 22 20 41	4 02 14 53	5 01 44 33	3 04 01 18	2 29 54 17	0 10 38 59	0 9 26 13	6 46	20 46	1 52	22 26	11 59
6	23 01 42	4 19 49 05	1 12 53 15	4 22 59 02	4 02 40 22	5 01 57 21	3 05 05 15	3 00 00 15	0 10 35 48	0 9 27 24	6 23	24 14	2 50	23 06	12 57
7	23 05 39	4 20 47 18	1 24 48 04	4 23 37 24	4 03 14 23	5 02 10 10	3 06 09 28	3 00 06 09	0 10 32 37	0 9 27 40	6 01	26 36	3 39	23 52	13 54
8	23 09 35	4 21 45 33	2 06 39 14	4 24 15 47	4 03 56 41	5 02 23 00	3 07 13 57	3 00 11 59	0 10 29 26	0 9 26 2	5 38	27 45	4 19	-- --	14 47
9	23 13 32	4 22 43 50	2 18 31 42	4 24 54 11	4 04 46 58	5 02 35 51	3 08 18 41	3 00 17 45	0 10 26 16	0 9 22 23	5 16	27 38	4 48	0 43	15 37
10	23 17 28	4 23 42 09	3 00 29 52	4 25 32 36	4 05 44 52	5 02 48 44	3 09 23 40	3 00 23 28	0 10 23 05	0 9 17 13	4 53	26 13	5 04	1 38	16 20
11	23 21 25	4 24 40 30	3 12 37 28	4 26 11 02	4 06 49 54	5 03 01 37	3 10 28 54	3 00 29 06	0 10 19 54	0 9 10 54	4 30	23 35	5 07	2 36	17 00
12	23 25 21	4 25 38 53	3 24 57 20	4 26 49 30	4 08 01 36	5 03 14 31	3 11 34 21	3 00 34 40	0 10 16 43	0 9 3 36	4 07	19 51	4 56	3 36	17 35
13	23 29 18	4 26 37 18	4 07 31 15	4 27 27 59	4 09 19 25	5 03 27 26	3 12 40 02	3 00 40 09	0 10 13 33	0 8 55 53	3 44	15 10	4 31	4 35	18 06
14	23 33 14	4 27 35 45	4 20 20 00	4 28 06 28	4 10 42 47	5 03 40 21	3 13 45 57	3 00 45 35	0 10 10 22	0 8 48 42	3 21	9 45	3 51	5 35	18 36
15	23 37 11	4 28 34 14	5 03 23 24	4 28 44 59	4 12 11 06	5 03 53 17	3 14 52 04	3 00 50 56	0 10 07 11	0 8 42 52	2 58	3 48	2 59	6 34	19 05
16	23 41 08	4 29 32 45	5 16 40 30	4 29 23 31	4 13 43 49	5 04 06 14	3 15 58 24	3 00 56 13	0 10 04 00	0 8 38 52	2 35	-2 24	1 56	7 35	19 34
17	23 45 04	5 00 31 17	6 00 09 56	5 00 02 04	4 15 20 19	5 04 19 12	3 17 04 57	3 01 01 25	0 10 00 50	0 8 36 52	2 12	-8 38	0 45	8 37	20 05
18	23 49 01	5 01 29 52	6 13 50 12	5 00 40 39	4 17 00 04	5 04 32 09	3 18 11 41	3 01 06 32	0 09 57 39	0 8 36 41	1 49	-14 32	-0 28	9 42	20 40
19	23 52 57	5 02 28 28	6 27 39 49	5 01 19 14	4 18 42 32	5 04 45 07	3 19 18 38	3 01 11 35	0 09 54 28	0 8 37 38	1 26	-19 48	-1 42	10 49	21 21
20	23 56 54	5 03 27 05	7 11 37 32	5 01 57 50	4 20 27 14	5 04 58 05	3 20 25 46	3 01 16 34	0 09 51 17	0 8 39 3	1 02	-24 01	-2 50	11 58	22 09
21	0 00 50	5 04 25 45	7 25 42 10	5 02 36 27	4 22 13 42	5 05 11 04	3 21 33 05	3 01 21 27	0 09 48 06	0 8 40 9	0 39	-26 50	-3 48	13 07	23 05
22	0 04 47	5 05 24 26	8 09 52 22	5 03 15 06	4 24 01 32	5 05 24 02	3 22 40 35	3 01 26 16	0 09 44 56	0 8 40 22	0 16	-27 56	-4 33	14 11	-- --
23	0 08 43	5 06 23 08	8 24 06 20	5 03 53 45	4 25 50 22	5 05 37 00	3 23 48 16	3 01 30 59	0 09 41 45	0 8 39 10	-0 07	-27 13	-5 02	15 08	0 08
24	0 12 40	5 07 21 53	9 08 21 38	5 04 32 26	4 27 39 53	5 05 49 59	3 24 56 08	3 01 35 38	0 09 38 34	0 8 36 27	-0 30	-24 42	-5 12	15 57	1 17
25	0 16 37	5 08 20 39	9 22 35 02	5 05 11 08	4 29 29 49	5 06 02 57	3 26 04 10	3 01 40 12	0 09 35 23	0 8 32 36	-0 54	-20 42	-5 03	16 39	2 27
26	0 20 33	5 09 19 26	10 06 42 41	5 05 49 50	5 01 19 55	5 06 15 55	3 27 12 23	3 01 44 41	0 09 32 13	0 8 28 16	-1 17	-15 32	-4 35	17 15	3 36
27	0 24 30	5 10 18 16	10 20 40 30	5 06 28 34	5 03 09 59	5 06 28 52	3 28 20 46	3 01 49 05	0 09 29 02	0 8 24 9	-1 40	-9 37	-3 51	17 47	4 41
28	0 28 26	5 11 17 07	11 04 24 39	5 07 07 20	5 04 59 51	5 06 41 50	3 29 29 20	3 01 53 24	0 09 25 51	0 8 20 36	-2 04	-3 20	-2 55	18 16	5 45
29	0 32 23	5 12 16 01	11 17 52 07	5 07 46 06	5 06 49 23	5 06 54 47	4 00 38 03	3 01 57 37	0 09 22 40	0 8 18 0	-2 27	2 58	-1 49	18 46	6 46
30	0 36 19	5 13 14 56	0 01 01 04	5 08 24 54	5 08 38 29	5 07 07 43	4 01 46 57	3 02 01 45	0 09 19 30	0 8 16 37	-2 50	9 02	-0 39	19 16	7 46

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 अक्तूबर 2004 ई. को अयनांश 23° 55′ 13″

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	0 40 16	5 14 13 54	0 13 51 08	5 09 03 43	5 10 27 02	5 07 20 39	4 02 56 00	3 02 05 48	0 09 16 19	0 8 16 31	-3 14	14 35	0 30	19 47	8 46
2	0 44 12	5 15 12 54	0 26 23 17	5 09 42 34	5 12 14 59	5 07 33 34	4 04 05 12	3 02 09 46	0 09 13 08	0 8 17 22	-3 37	19 23	1 38	20 21	9 46
3	0 48 09	5 16 11 56	1 08 39 47	5 10 21 25	5 14 02 15	5 07 46 29	4 05 14 34	3 02 13 38	0 09 09 57	0 8 18 49	-4 00	23 17	2 39	21 00	10 45
4	0 52 06	5 17 11 00	1 20 43 56	5 11 00 19	5 15 48 50	5 07 59 23	4 06 24 05	3 02 17 24	0 09 06 46	0 8 20 32	-4 23	26 04	3 33	21 44	11 43
5	0 56 02	5 18 10 06	2 02 39 46	5 11 39 13	5 17 34 40	5 08 12 16	4 07 33 45	3 02 21 05	0 09 03 36	0 8 22 6	-4 46	27 40	4 16	22 33	12 38
6	0 59 59	5 19 09 15	2 14 31 51	5 12 18 10	5 19 19 45	5 08 25 08	4 08 43 34	3 02 24 41	0 09 00 25	0 8 22 50	-5 09	27 58	4 48	23 27	13 30
7	1 03 55	5 20 08 26	2 26 24 57	5 12 57 07	5 21 04 04	5 08 38 00	4 09 53 32	3 02 28 10	0 08 57 14	0 8 22 33	-5 32	26 59	5 08	-- --	14 15
8	1 07 52	5 21 07 40	3 08 23 50	5 13 36 06	5 22 47 37	5 08 50 50	4 11 03 38	3 02 31 34	0 08 54 03	0 8 21 33	-5 55	24 45	5 15	0 23	14 56
9	1 11 48	5 22 06 55	3 20 32 57	5 14 15 07	5 24 30 24	5 09 03 39	4 12 13 52	3 02 34 53	0 08 50 53	0 8 20 11	-6 18	21 24	5 08	1 22	15 33
10	1 15 45	5 23 06 13	4 02 56 15	5 14 54 09	5 26 12 24	5 09 16 27	4 13 24 14	3 02 38 05	0 08 47 42	0 8 18 23	-6 41	17 03	4 47	2 21	16 05
11	1 19 41	5 24 05 34	4 15 36 46	5 15 33 12	5 27 53 40	5 09 29 14	4 14 34 44	3 02 41 11	0 08 44 31	0 8 16 13	-7 03	11 52	4 11	3 21	16 35
12	1 23 38	5 25 04 56	4 28 36 26	5 16 12 17	5 29 34 10	5 09 41 59	4 15 45 21	3 02 44 12	0 08 41 20	0 8 14 8	-7 26	6 03	3 21	4 20	17 04
13	1 27 34	5 26 04 21	5 11 55 49	5 16 51 24	6 01 13 57	5 09 54 43	4 16 56 06	3 02 47 06	0 08 38 09	0 8 12 34	-7 49	-0 10	2 20	5 21	17 34
14	1 31 31	5 27 03 47	5 25 34 02	5 17 30 31	6 02 53 00	5 10 07 25	4 18 06 58	3 02 49 54	0 08 34 59	0 8 11 42	-8 11	-6 33	1 09	6 23	18 04
15	1 35 28	5 28 03 16	6 09 28 48	5 18 09 41	6 04 31 21	5 10 20 06	4 19 17 58	3 02 52 36	0 08 31 48	0 8 11 28	-8 33	-12 45	-0 07	7 29	18 39
16	1 39 24	5 29 02 47	6 23 36 41	5 18 48 51	6 06 09 01	5 10 32 45	4 20 29 04	3 02 55 12	0 08 28 37	0 8 11 44	-8 55	-18 24	-1 24	8 37	19 18
17	1 43 21	6 00 02 20	7 07 53 30	5 19 28 03	6 07 46 01	5 10 45 22	4 21 40 16	3 02 57 42	0 08 25 26	0 8 12 20	-9 17	-23 05	-2 37	9 48	20 05
18	1 47 17	6 01 01 54	7 22 14 52	5 20 07 17	6 09 22 21	5 10 57 57	4 22 51 35	3 03 00 05	0 08 22 16	0 8 12 57	-9 39	-26 22	-3 40	10 58	20 59
19	1 51 14	6 02 01 30	8 06 36 36	5 20 46 31	6 10 58 04	5 11 10 31	4 24 03 01	3 03 02 23	0 08 19 05	0 8 13 26	-10 01	-27 56	-4 30	12 05	22 01
20	1 55 10	6 03 01 08	8 20 55 03	5 21 25 48	6 12 33 08	5 11 23 02	4 25 14 33	3 03 04 33	0 08 15 54	0 8 13 40	-10 22	-27 37	-5 02	13 05	23 09
21	1 59 07	6 04 00 48	9 05 07 19	5 22 05 05	6 14 07 37	5 11 35 31	4 26 26 11	3 03 06 38	0 08 12 43	0 8 13 41	-10 44	-25 30	-5 16	13 56	-- --
22	2 03 03	6 05 00 29	9 19 11 08	5 22 44 24	6 15 41 30	5 11 47 57	4 27 37 55	3 03 08 36	0 08 09 33	0 8 13 41	-11 05	-21 51	-5 11	14 39	0 18
23	2 07 00	6 06 00 13	10 03 04 53	5 23 23 44	6 17 14 49	5 12 00 22	4 28 49 45	3 03 10 27	0 08 06 22	0 8 13 41	-11 26	-17 00	-4 47	15 16	1 26
24	2 10 57	6 06 59 57	10 16 47 18	5 24 03 06	6 18 47 33	5 12 12 44	5 00 01 40	3 03 12 12	0 08 03 11	0 8 13 37	-11 47	-11 22	-4 08	15 48	2 31
25	2 14 53	6 07 59 44	11 00 17 28	5 24 42 29	6 20 19 44	5 12 25 03	5 01 13 42	3 03 13 51	0 08 00 00	0 8 13 33	-12 08	-5 17	-3 15	16 17	3 34
26	2 18 50	6 08 59 32	11 13 34 36	5 25 21 53	6 21 51 23	5 12 37 20	5 02 25 49	3 03 15 23	0 07 56 49	0 8 13 36	-12 29	0 56	-2 12	16 46	4 34
27	2 22 46	6 09 59 22	11 26 38 10	5 26 01 19	6 23 22 30	5 12 49 34	5 03 38 02	3 03 16 49	0 07 53 39	0 8 13 40	-12 49	7 02	-1 03	17 15	5 34
28	2 26 43	6 10 59 14	0 09 27 55	5 26 40 47	6 24 53 04	5 13 01 46	5 04 50 21	3 03 18 08	0 07 50 28	0 8 13 42	-13 09	12 45	0 06	17 46	6 33
29	2 30 39	6 11 59 08	0 22 04 00	5 27 20 16	6 26 23 07	5 13 13 55	5 06 02 45	3 03 19 20	0 07 47 17	0 8 13 37	-13 29	17 50	1 16	18 18	7 33
30	2 34 36	6 12 59 04	1 04 27 09	5 27 59 46	6 27 52 38	5 13 26 01	5 07 15 15	3 03 20 26	0 07 44 06	0 8 13 18	-13 49	22 04	2 20	18 56	8 32
31	2 38 32	6 13 59 01	1 16 38 40	5 28 39 19	6 29 21 37	5 13 38 04	5 08 27 50	3 03 21 25	0 07 40 56	0 8 12 37	-14 08	25 17	3 17	19 38	9 32

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 नवम्बर 2004 ई. को अयनांश 23° 55′ 17″

नवम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	2 42 29	6 14 59 01	1 28 40 38	5 29 18 53	7 00 50 03	5 13 50 04	5 09 40 30	3 03 22 18	0 07 37 45	0 8 11 42	-14 28	27 18	4 04	20 25	10 28
2	2 46 26	6 15 59 03	2 10 35 45	5 29 58 28	7 02 17 57	5 14 02 01	5 10 53 15	3 03 23 04	0 07 34 34	0 8 10 42	-14 47	28 02	4 40	21 17	11 22
3	2 50 22	6 16 59 07	2 22 27 27	6 00 38 06	7 03 45 16	5 14 13 55	5 12 06 05	3 03 23 43	0 07 31 23	0 8 9 50	-15 05	27 28	5 04	22 12	12 09
4	2 54 19	6 17 59 13	3 04 19 42	6 01 17 45	7 05 12 00	5 14 25 46	5 13 19 00	3 03 24 15	0 07 28 13	0 8 9 4	-15 24	25 39	5 15	23 09	12 52
5	2 58 15	6 18 59 21	3 16 16 52	6 01 57 26	7 06 38 07	5 14 37 33	5 14 32 00	3 03 24 41	0 07 25 02	0 8 8 37	-15 42	22 42	5 13	-- --	13 30
6	3 02 12	6 19 59 32	3 28 23 35	6 02 37 08	7 08 03 35	5 14 49 16	5 15 45 04	3 03 25 00	0 07 21 51	0 8 8 48	-16 00	18 45	4 57	0 07	14 03
7	3 06 08	6 20 59 44	4 10 44 29	6 03 16 52	7 09 28 22	5 15 00 56	5 16 58 13	3 03 25 12	0 07 18 40	0 8 9 27	-16 18	13 56	4 26	1 06	14 33
8	3 10 05	6 21 59 58	4 23 23 50	6 03 56 38	7 10 52 24	5 15 12 33	5 18 11 26	3 03 25 17	0 07 15 29	0 8 10 27	-16 36	8 25	3 43	2 04	15 02
9	3 14 01	6 23 00 15	5 06 25 10	6 04 36 26	7 12 15 38	5 15 24 06	5 19 24 44	3 03 25 15	0 07 12 19	0 8 11 36	-16 53	2 24	2 46	3 03	15 31
10	3 17 58	6 24 00 33	5 19 50 44	6 05 16 15	7 13 37 59	5 15 35 34	5 20 38 06	3 03 25 07	0 07 09 08	0 8 12 41	-17 10	-3 53	1 39	4 04	16 01
11	3 21 55	6 25 00 53	6 03 41 00	6 05 56 06	7 14 59 24	5 15 46 59	5 21 51 31	3 03 24 52	0 07 05 57	0 8 13 21	-17 27	-10 13	0 24	5 08	16 33
12	3 25 51	6 26 01 15	6 17 54 18	6 06 35 58	7 16 19 44	5 15 58 20	5 23 05 01	3 03 24 30	0 07 02 46	0 8 13 10	-17 43	-16 13	-0 53	6 15	17 11
13	3 29 48	6 27 01 39	7 02 26 34	6 07 15 52	7 17 38 55	5 16 09 37	5 24 18 34	3 03 24 01	0 06 59 36	0 8 11 59	-17 59	-21 26	-2 09	7 27	17 55
14	3 33 44	6 28 02 04	7 17 11 39	6 07 55 48	7 18 56 46	5 16 20 49	5 25 32 10	3 03 23 26	0 06 56 25	0 8 9 53	-18 15	-25 23	-3 18	8 40	18 48
15	3 37 41	6 29 02 31	8 02 02 00	6 08 35 46	7 20 13 11	5 16 31 57	5 26 45 50	3 03 22 44	0 06 53 14	0 8 7 8	-18 30	-27 36	-4 14	9 52	19 50
16	3 41 37	7 00 02 59	8 16 49 45	6 09 15 45	7 21 27 56	5 16 43 00	5 27 59 33	3 03 21 55	0 06 50 03	0 8 4 13	-18 46	-27 52	-4 53	10 57	20 58
17	3 45 34	7 01 03 29	9 01 27 55	6 09 55 45	7 22 40 50	5 16 53 59	5 29 13 20	3 03 20 59	0 06 46 53	0 8 1 34	-19 00	-26 10	-5 12	11 53	22 09
18	3 49 30	7 02 04 00	9 15 51 14	6 10 35 47	7 23 51 39	5 17 04 53	6 00 27 09	3 03 19 57	0 06 43 42	0 7 59 33	-19 15	-22 47	-5 11	12 39	23 18
19	3 53 27	7 03 04 32	9 29 56 31	6 11 15 50	7 25 00 05	5 17 15 42	6 01 41 01	3 03 18 48	0 06 40 31	0 7 58 34	-19 29	-18 08	-4 51	13 18	-- --
20	3 57 24	7 04 05 06	10 13 42 39	6 11 55 56	7 26 05 50	5 17 26 27	6 02 54 57	3 03 17 32	0 06 37 20	0 7 58 53	-19 43	-12 39	-4 15	13 51	0 24
21	4 01 20	7 05 05 40	10 27 10 04	6 12 36 02	7 27 08 31	5 17 37 06	6 04 08 55	3 03 16 10	0 06 34 09	0 8 0 17	-19 56	-6 40	-3 25	14 21	1 28
22	4 05 17	7 06 06 16	11 10 20 12	6 13 16 10	7 28 07 45	5 17 47 41	6 05 22 56	3 03 14 42	0 06 30 59	0 8 2 4	-20 09	-0 32	-2 26	14 49	2 27
23	4 09 13	7 07 06 53	11 23 14 59	6 13 56 20	7 29 03 02	5 17 58 10	6 06 37 00	3 03 13 07	0 06 27 48	0 8 3 36	-20 22	5 30	-1 20	15 18	3 27
24	4 13 10	7 08 07 31	0 05 56 25	6 14 36 32	7 29 53 52	5 18 08 34	6 07 51 06	3 03 11 25	0 06 24 37	0 8 4 21	-20 34	11 14	-0 11	15 47	4 24
25	4 17 06	7 09 08 10	0 18 26 18	6 15 16 45	8 00 39 38	5 18 18 52	6 09 05 15	3 03 09 37	0 06 21 26	0 8 3 53	-20 46	16 26	0 56	16 18	5 23
26	4 21 03	7 10 08 51	1 00 46 11	6 15 57 00	8 01 19 42	5 18 29 06	6 10 19 27	3 03 07 43	0 06 18 16	0 8 1 45	-20 57	20 53	2 00	16 54	6 22
27	4 24 59	7 11 09 33	1 12 57 25	6 16 37 17	8 01 53 21	5 18 39 13	6 11 33 41	3 03 05 43	0 06 15 05	0 7 57 52	-21 08	24 23	2 58	17 34	7 22
28	4 28 56	7 12 10 16	1 25 01 15	6 17 17 35	8 02 19 49	5 18 49 15	6 12 47 58	3 03 03 36	0 06 11 54	0 7 52 27	-21 19	26 46	3 48	18 19	8 19
29	4 32 53	7 13 11 01	2 06 59 04	6 17 57 55	8 02 38 18	5 18 59 12	6 14 02 18	3 03 01 23	0 06 08 43	0 7 45 54	-21 29	27 52	4 26	19 09	9 14
30	4 36 49	7 14 11 47	2 18 52 31	6 18 38 17	8 02 47 58	5 19 09 02	6 15 16 40	3 02 59 04	0 06 05 32	0 7 38 51	-21 39	27 41	4 53	20 03	10 04

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 दिसम्बर 2004 ई. को अयनांश 23° 55′ 23″

दिनांक	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	4 40 46	7 15 12 34	3 00 43 46	6 19 18 41	8 02 48 03	5 19 18 47	6 16 31 04	3 02 56 40	0 06 02 22	0 7 31 57	-21 49	26 14	5 07	21 00	10 49
2	4 44 42	7 16 13 23	3 12 35 34	6 19 59 07	8 02 37 51	5 19 28 26	6 17 45 30	3 02 54 09	0 05 59 11	0 7 26 0	-21 58	23 37	5 08	21 57	11 28
3	4 48 39	7 17 14 13	3 24 31 17	6 20 39 34	8 02 16 47	5 19 37 58	6 18 59 59	3 02 51 32	0 05 56 00	0 7 21 30	-22 06	19 59	4 56	22 54	12 02
4	4 52 35	7 18 15 04	4 06 34 55	6 21 20 03	8 01 44 33	5 19 47 24	6 20 14 30	3 02 48 49	0 05 52 49	0 7 18 50	-22 15	15 30	4 30	23 51	12 33
5	4 56 32	7 19 15 57	4 18 50 57	6 22 00 34	8 01 01 10	5 19 56 44	6 21 29 03	3 02 46 01	0 05 49 39	0 7 17 55	-22 22	10 20	3 52	-- --	13 01
6	5 00 28	7 20 16 51	5 01 24 08	6 22 41 07	8 00 07 04	5 20 05 58	6 22 43 39	3 02 43 06	0 05 46 28	0 7 18 21	-22 30	4 38	3 02	0 48	13 29
7	5 04 25	7 21 17 46	5 14 19 03	6 23 21 42	7 29 03 14	5 20 15 04	6 23 58 16	3 02 40 07	0 05 43 17	0 7 19 39	-22 37	-1 24	2 01	1 47	13 58
8	5 08 22	7 22 18 43	5 27 39 36	6 24 02 19	7 27 51 09	5 20 24 05	6 25 12 55	3 02 37 01	0 05 40 06	0 7 20 56	-22 43	-7 36	0 52	2 47	14 28
9	5 12 18	7 23 19 41	6 11 28 16	6 24 42 57	7 26 32 51	5 20 32 58	6 26 27 36	3 02 33 51	0 05 36 56	0 7 21 13	-22 49	-13 40	-0 22	3 52	15 02
10	5 16 15	7 24 20 40	6 25 45 20	6 25 23 38	7 25 10 50	5 20 41 44	6 27 42 18	3 02 30 35	0 05 33 45	0 7 19 41	-22 55	-19 13	-1 37	5 01	15 43
11	5 20 11	7 25 21 40	7 10 28 02	6 26 04 20	7 23 47 49	5 20 50 24	6 28 57 02	3 02 27 13	0 05 30 34	0 7 16 0	-23 00	-23 46	-2 48	6 13	16 31
12	5 24 08	7 26 22 41	7 25 30 16	6 26 45 03	7 22 26 39	5 20 58 56	7 00 11 48	3 02 23 47	0 05 27 23	0 7 10 1	-23 05	-26 49	-3 49	7 28	17 30
13	5 28 04	7 27 23 42	8 10 43 00	6 27 25 49	7 21 09 59	5 21 07 20	7 01 26 35	3 02 20 15	0 05 24 12	0 7 2 14	-23 09	-27 56	-4 34	8 38	18 37
14	5 32 01	7 28 24 45	8 25 55 31	6 28 06 36	7 20 00 09	5 21 15 38	7 02 41 23	3 02 16 39	0 05 21 02	0 6 53 52	-23 13	-26 55	-5 00	9 40	19 50
15	5 35 57	7 29 25 48	9 10 57 20	6 28 47 24	7 18 59 00	5 21 23 48	7 03 56 12	3 02 12 58	0 05 17 51	0 6 46 24	-23 16	-23 58	-5 05	10 32	21 04
16	5 39 54	8 00 26 52	9 25 39 59	6 29 28 15	7 18 07 51	5 21 31 50	7 05 11 03	3 02 09 12	0 05 14 40	0 6 40 26	-23 19	-19 31	-4 49	11 16	22 14
17	5 43 51	8 01 27 56	10 09 58 05	7 00 09 07	7 17 27 28	5 21 39 44	7 06 25 54	3 02 05 22	0 05 11 29	0 6 36 4	-23 21	-14 03	-4 16	11 52	23 20
18	5 47 47	8 02 29 00	10 23 49 34	7 00 50 00	7 16 58 09	5 21 47 31	7 07 40 46	3 02 01 27	0 05 08 19	0 6 33 38	-23 23	-8 02	-3 28	12 23	-- --
19	5 51 44	8 03 30 05	11 07 15 12	7 01 30 55	7 16 39 48	5 21 55 10	7 08 55 40	3 01 57 28	0 05 05 08	0 6 33 11	-23 24	-1 49	-2 30	12 53	0 22
20	5 55 40	8 04 31 10	11 20 17 38	7 02 11 52	7 16 32 02	5 22 02 40	7 10 10 34	3 01 53 25	0 05 01 57	0 6 33 57	-23 25	4 17	-1 26	13 21	1 22
21	5 59 37	8 05 32 15	0 03 00 31	7 02 52 50	7 16 34 14	5 22 10 03	7 11 25 29	3 01 49 19	0 04 58 46	0 6 34 43	-23 26	10 05	-0 19	13 50	2 19
22	6 03 33	8 06 33 20	0 15 27 47	7 03 33 51	7 16 45 41	5 22 17 17	7 12 40 25	3 01 45 08	0 04 55 36	0 6 34 21	-23 26	15 22	0 47	14 20	3 18
23	6 07 30	8 07 34 26	0 27 43 08	7 04 14 52	7 17 05 37	5 22 24 23	7 13 55 22	3 01 40 53	0 04 52 25	0 6 31 59	-23 25	19 57	1 50	14 54	4 16
24	6 11 26	8 08 35 32	1 09 49 48	7 04 55 56	7 17 33 14	5 22 31 21	7 15 10 20	3 01 36 35	0 04 49 14	0 6 26 58	-23 25	23 38	2 47	15 32	5 15
25	6 15 23	8 09 36 38	1 21 50 21	7 05 37 01	7 18 07 45	5 22 38 10	7 16 25 19	3 01 32 14	0 04 46 03	0 6 19 0	-23 23	26 15	3 36	16 15	6 12
26	6 19 20	8 10 37 44	2 03 46 46	7 06 18 09	7 18 48 27	5 22 44 50	7 17 40 18	3 01 27 49	0 04 42 52	0 6 8 24	-23 21	27 40	4 15	17 04	7 08
27	6 23 16	8 11 38 51	2 15 40 33	7 06 59 17	7 19 34 38	5 22 51 22	7 18 55 19	3 01 23 22	0 04 39 42	0 5 55 58	-23 19	27 47	4 43	17 57	8 00
28	6 27 13	8 12 39 58	2 27 33 01	7 07 40 28	7 20 25 43	5 22 57 45	7 20 10 20	3 01 18 51	0 04 36 31	0 5 42 34	-23 16	26 38	4 58	18 53	8 46
29	6 31 09	8 13 41 06	3 09 25 31	7 08 21 41	7 21 21 07	5 23 03 59	7 21 25 22	3 01 14 17	0 04 33 20	0 5 29 13	-23 13	24 16	5 00	19 51	9 27
30	6 35 06	8 14 42 13	3 21 19 40	7 09 02 55	7 22 20 21	5 23 10 04	7 22 40 24	3 01 09 41	0 04 30 09	0 5 17 1	-23 09	20 52	4 49	20 48	10 02
31	6 39 02	8 15 43 21	4 03 17 38	7 09 44 12	7 23 22 59	5 23 16 00	7 23 55 28	3 01 05 02	0 04 26 59	0 5 6 58	-23 05	16 36	4 26	21 44	10 34

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जनवरी 2005 ई. को अयनांश 23° 55' 29"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चन्द्रोदय चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.)	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	6 42 59	8 16 44 29	4 15 22 12	7 10 25 30	7 24 28 36	5 23 21 46	7 25 10 32	3 01 00 21	0 04 23 48	0 4 59 51	-23 00	11 38	3 50	22 40	11 03
2	6 46 55	8 17 45 38	4 27 36 55	7 11 06 50	7 25 36 54	5 23 27 24	7 26 25 37	3 00 55 38	0 04 20 37	0 4 55 39	-22 55	6 10	3 03	23 36	11 30
3	6 50 52	8 18 46 47	5 10 05 55	7 11 48 12	7 26 47 33	5 23 32 51	7 27 40 43	3 00 50 52	0 04 17 26	0 4 53 45	-22 50	0 20	2 07	-- --	11 57
4	6 54 49	8 19 47 56	5 22 53 43	7 12 29 36	7 28 00 18	5 23 38 10	7 28 55 49	3 00 46 05	0 04 14 15	0 4 53 26	-22 44	-5 38	1 03	0 33	12 25
5	6 58 45	8 20 49 06	6 06 04 47	7 13 11 02	7 29 14 57	5 23 43 18	8 00 10 56	3 00 41 15	0 04 11 05	0 4 53 36	-22 37	-11 34	-0 06	1 34	12 56
6	7 02 42	8 21 50 15	6 19 42 50	7 13 52 29	8 00 31 16	5 23 48 17	8 01 26 04	3 00 36 25	0 04 07 54	0 4 52 50	-22 30	-17 10	-1 17	2 38	13 33
7	7 06 38	8 22 51 25	7 03 50 00	7 14 33 59	8 01 49 06	5 23 53 06	8 02 41 12	3 00 31 32	0 04 04 43	0 4 50 2	-22 23	-22 02	-2 26	3 47	14 15
8	7 10 35	8 23 52 35	7 18 25 43	7 15 15 30	8 03 08 18	5 23 57 45	8 03 56 20	3 00 26 39	0 04 01 32	0 4 44 49	-22 15	-25 43	-3 28	4 59	15 08
9	7 14 31	8 24 53 45	8 03 25 54	7 15 57 03	8 04 28 44	5 24 02 14	8 05 11 29	3 00 21 44	0 03 58 22	0 4 36 56	-22 07	-27 42	-4 17	6 12	16 11
10	7 18 28	8 25 54 55	8 18 42 38	7 16 38 38	8 05 50 18	5 24 06 32	8 06 26 38	3 00 16 49	0 03 55 11	0 4 26 21	-21 58	-27 38	-4 49	7 19	17 22
11	7 22 24	8 26 56 04	9 04 05 03	7 17 20 14	8 07 12 54	5 24 10 41	8 07 41 48	3 00 11 53	0 03 52 00	0 4 14 10	-21 49	-25 27	-5 00	8 17	18 37
12	7 26 21	8 27 57 14	9 19 21 07	7 18 01 52	8 08 36 27	5 24 14 39	8 08 56 57	3 00 06 56	0 03 48 49	0 4 2 35	-21 39	-21 27	-4 49	9 06	19 52
13	7 30 18	8 28 58 23	10 04 19 52	7 18 43 31	8 10 00 53	5 24 18 26	8 10 12 07	3 00 01 59	0 03 45 39	0 3 53 7	-21 29	-16 07	-4 19	9 47	21 03
14	7 34 14	8 29 59 31	10 18 53 18	7 19 25 12	8 11 26 09	5 24 22 03	8 11 27 17	2 29 57 02	0 03 42 28	0 3 46 5	-21 19	-10 01	-3 32	10 21	22 09
15	7 38 11	9 01 00 39	11 02 57 13	7 20 06 55	8 12 52 11	5 24 25 30	8 12 42 27	2 29 52 05	0 03 39 17	0 3 41 27	-21 08	-3 36	-2 34	10 53	23 12
16	7 42 07	9 02 01 46	11 16 31 08	7 20 48 39	8 14 18 58	5 24 28 45	8 13 57 37	2 29 47 09	0 03 36 06	0 3 39 13	-20 57	2 46	-1 29	11 22	-- --
17	7 46 04	9 03 02 52	11 29 37 19	7 21 30 25	8 15 46 26	5 24 31 50	8 15 12 46	2 29 42 12	0 03 32 55	0 3 38 41	-20 45	8 48	-0 21	11 51	0 12
18	7 50 00	9 04 03 57	0 12 19 45	7 22 12 13	8 17 14 36	5 24 34 44	8 16 27 56	2 29 37 16	0 03 29 45	0 3 38 36	-20 33	14 19	0 45	12 21	1 12
19	7 53 57	9 05 05 02	0 24 43 15	7 22 54 02	8 18 43 25	5 24 37 28	8 17 43 05	2 29 32 21	0 03 26 34	0 3 37 36	-20 21	19 07	1 48	12 55	2 10
20	7 57 53	9 06 06 05	1 06 52 41	7 23 35 52	8 20 12 53	5 24 40 00	8 18 58 15	2 29 27 27	0 03 23 23	0 3 34 40	-20 08	23 01	2 45	13 32	3 09
21	8 01 50	9 07 07 08	1 18 52 37	7 24 17 45	8 21 42 59	5 24 42 22	8 20 13 24	2 29 22 34	0 03 20 12	0 3 29 0	-19 55	25 52	3 34	14 13	4 07
22	8 05 47	9 08 08 10	2 00 46 56	7 24 59 39	8 23 13 41	5 24 44 32	8 21 28 34	2 29 17 42	0 03 17 02	0 3 20 10	-19 42	27 32	4 13	15 00	5 03
23	8 09 43	9 09 09 11	2 12 38 46	7 25 41 35	8 24 45 02	5 24 46 32	8 22 43 43	2 29 12 51	0 03 13 51	0 3 8 28	-19 28	27 56	4 40	15 52	5 56
24	8 13 40	9 10 10 11	2 24 30 31	7 26 23 32	8 26 16 59	5 24 48 20	8 23 58 52	2 29 08 02	0 03 10 40	0 2 54 40	-19 14	27 03	4 56	16 47	6 44
25	8 17 36	9 11 11 11	3 06 23 52	7 27 05 32	8 27 49 33	5 24 49 58	8 25 14 02	2 29 03 15	0 03 07 29	0 2 39 48	-18 59	24 56	4 58	17 45	7 27
26	8 21 33	9 12 12 09	3 18 20 10	7 27 47 33	8 29 22 45	5 24 51 24	8 26 29 11	2 28 58 30	0 03 04 19	0 2 24 57	-18 44	21 43	4 48	18 42	8 03
27	8 25 29	9 13 13 07	4 00 20 31	7 28 29 36	9 00 56 35	5 24 52 39	8 27 44 20	2 28 53 47	0 03 01 08	0 2 11 16	-18 29	17 35	4 24	19 39	8 36
28	8 29 26	9 14 14 04	4 12 26 08	7 29 11 40	9 02 31 03	5 24 53 42	8 28 59 29	2 28 49 05	0 02 57 57	0 1 59 53	-18 13	12 43	3 49	20 35	9 06
29	8 33 22	9 15 15 00	4 24 38 36	7 29 53 47	9 04 06 10	5 24 54 35	9 00 14 38	2 28 44 27	0 02 54 46	0 1 51 33	-17 57	7 19	3 02	21 31	9 34
30	8 37 19	9 16 15 55	5 07 00 05	8 00 35 55	9 05 41 56	5 24 55 16	9 01 29 48	2 28 39 50	0 02 51 35	0 1 46 24	-17 41	1 34	2 06	22 27	10 00
31	8 41 16	9 17 16 50	5 19 33 21	8 01 18 05	9 07 18 23	5 24 55 45	9 02 44 57	2 28 35 17	0 02 48 25	0 1 43 59	-17 24	-4 20	1 03	23 25	10 27

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 फरवरी 2005 ई. को अयनांश 23° 55′ 34″

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	8 45 12	9 18 17 44	6 02 21 45	8 02 00 17	9 08 55 31	5 24 56 04	9 04 00 06	2 28 30 46	0 02 45 14	0 1 43 23	-17 07	-10 11	-0 03	-- --	10 56
2	8 49 09	9 19 18 37	6 15 28 55	8 02 42 31	9 10 33 21	5 24 56 10	9 05 15 15	2 28 26 18	0 02 42 03	0 1 43 38	-16 50	-15 46	-1 12	0 26	11 29
3	8 53 05	9 20 19 29	6 28 58 18	8 03 24 46	9 12 11 53	5 24 56 06	9 06 30 24	2 28 21 53	0 02 38 52	0 1 43 21	-16 33	-20 44	-2 19	1 31	12 07
4	8 57 02	9 21 20 21	7 12 52 27	8 04 07 03	9 13 51 10	5 24 55 49	9 07 45 33	2 28 17 31	0 02 35 42	0 1 41 17	-16 15	-24 43	-3 19	2 39	12 53
5	9 00 58	9 22 21 12	7 27 12 07	8 04 49 22	9 15 31 11	5 24 55 22	9 09 00 42	2 28 13 13	0 02 32 31	0 1 37 2	-15 57	-27 17	-4 10	3 50	13 50
6	9 04 55	9 23 22 01	8 11 55 20	8 05 31 42	9 17 11 57	5 24 54 43	9 10 15 51	2 28 08 58	0 02 29 20	0 1 30 39	-15 39	-28 03	-4 45	4 57	14 55
7	9 08 51	9 24 22 50	8 26 56 47	8 06 14 05	9 18 53 29	5 24 53 52	9 11 30 59	2 28 04 47	0 02 26 09	0 1 22 7	-15 20	-26 46	-5 01	5 59	16 08
8	9 12 48	9 25 23 38	9 12 08 01	8 06 56 28	9 20 35 49	5 24 52 50	9 12 46 08	2 28 00 40	0 02 22 58	0 1 11 52	-15 01	-23 32	-4 56	6 52	17 24
9	9 16 45	9 26 24 24	9 27 18 30	8 07 38 53	9 22 18 56	5 24 51 36	9 14 01 16	2 27 56 37	0 02 19 48	0 1 1 25	-14 42	-18 42	-4 31	7 37	18 37
10	9 20 41	9 27 25 10	10 12 17 32	8 08 21 20	9 24 02 52	5 24 50 11	9 15 16 23	2 27 52 38	0 02 16 37	0 0 52 21	-14 23	-12 45	-3 47	8 15	19 47
11	9 24 38	9 28 25 54	10 26 56 03	8 09 03 48	9 25 47 36	5 24 48 35	9 16 31 30	2 27 48 43	0 02 13 26	0 0 45 36	-14 03	-6 13	-2 49	8 48	20 53
12	9 28 34	9 29 26 36	11 11 08 02	8 09 46 18	9 27 33 09	5 24 46 47	9 17 46 37	2 27 44 53	0 02 10 15	0 0 41 24	-13 43	0 26	-1 42	9 20	21 57
13	9 32 31	10 00 27 17	11 24 50 57	8 10 28 49	9 29 19 30	5 24 44 48	9 19 01 43	2 27 41 07	0 02 07 05	0 0 39 38	-13 23	6 52	-0 30	9 50	22 59
14	9 36 27	10 01 27 56	0 08 05 23	8 11 11 21	10 01 06 41	5 24 42 38	9 20 16 49	2 27 37 26	0 02 03 54	0 0 39 40	-13 03	12 47	0 39	10 20	24 00
15	9 40 24	10 02 28 33	0 20 54 12	8 11 53 55	10 02 54 39	5 24 40 17	9 21 31 54	2 27 33 49	0 02 00 43	0 0 40 27	-12 42	17 58	1 46	10 53	-- --
16	9 44 20	10 03 29 09	1 03 21 40	8 12 36 30	10 04 43 24	5 24 37 44	9 22 46 58	2 27 30 18	0 01 57 32	0 0 40 53	-12 22	22 14	2 45	11 29	1 00
17	9 48 17	10 04 29 43	1 15 32 45	8 13 19 06	10 06 32 55	5 24 35 01	9 24 02 02	2 27 26 51	0 01 54 22	0 0 40 3	-12 01	25 26	3 36	12 09	2 00
18	9 52 14	10 05 30 15	1 27 32 31	8 14 01 45	10 08 23 09	5 24 32 07	9 25 17 05	2 27 23 30	0 01 51 11	0 0 37 13	-11 40	27 25	4 16	12 55	2 57
19	9 56 10	10 06 30 46	2 09 25 44	8 14 44 24	10 10 14 03	5 24 29 02	9 26 32 08	2 27 20 13	0 01 48 00	0 0 32 7	-11 19	28 09	4 45	13 45	3 52
20	10 00 07	10 07 31 14	2 21 16 36	8 15 27 05	10 12 05 34	5 24 25 47	9 27 47 09	2 27 17 02	0 01 44 49	0 0 24 49	-10 57	27 34	5 01	14 39	4 41
21	10 04 03	10 08 31 41	3 03 08 37	8 16 09 48	10 13 57 37	5 24 22 21	9 29 02 11	2 27 13 57	0 01 41 38	0 0 15 50	-10 36	25 43	5 05	15 37	5 25
22	10 08 00	10 09 32 06	3 15 04 31	8 16 52 32	10 15 50 05	5 24 18 45	10 00 17 12	2 27 10 56	0 01 38 28	0 0 5 48	-10 14	22 44	4 55	16 34	6 04
23	10 11 56	10 10 32 30	3 27 06 20	8 17 35 17	10 17 42 52	5 24 14 58	10 01 32 12	2 27 08 02	0 01 35 17	11 29 55 37	-9 52	18 46	4 32	17 32	6 38
24	10 15 53	10 11 32 51	4 09 15 29	8 18 18 04	10 19 35 48	5 24 11 02	10 02 47 11	2 27 05 12	0 01 32 06	11 29 46 23	-9 30	14 00	3 56	18 29	7 09
25	10 19 49	10 12 33 11	4 21 32 59	8 19 00 53	10 21 28 43	5 24 06 55	10 04 02 10	2 27 02 29	0 01 28 55	11 29 38 50	-9 08	8 38	3 09	19 26	7 37
26	10 23 46	10 13 33 30	5 03 59 42	8 19 43 43	10 23 21 24	5 24 02 38	10 05 17 09	2 26 59 51	0 01 25 45	11 29 33 31	-8 45	2 51	2 13	20 22	8 04
27	10 27 43	10 14 33 46	5 16 36 30	8 20 26 35	10 25 13 36	5 23 58 11	10 06 32 07	2 26 57 19	0 01 22 34	11 29 30 34	-8 23	-3 06	1 09	21 20	8 30
28	10 31 39	10 15 34 01	5 29 24 33	8 21 09 28	10 27 05 01	5 23 53 35	10 07 47 04	2 26 54 53	0 01 19 23	11 29 29 40	-8 00	-9 03	0 00	22 20	8 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मार्च 2005 ई. को अयनांश 23° 55′ 38″

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मार्च 2005 ई. को अयनांश 23° 55' 38"

ता.	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चन्द्रोदय (चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.))	चन्द्रास्त (चण्डीगढ़ (भा. स्टै. टा.))
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	10 35 36	10 16 34 15	6 12 25 20	8 21 52 23	10 28 55 22	5 23 48 50	10 09 02 01	2 26 52 33	0 01 16 12	11 29 30 19	-7 37	-14 43	-1 09	23 23	9 30
2	10 39 32	10 17 34 27	6 25 40 37	8 22 35 20	11 00 44 14	5 23 43 55	10 10 16 57	2 26 50 19	0 01 13 02	11 29 31 47	-7 15	-19 49	-2 17	-- --	10 06
3	10 43 29	10 18 34 38	7 09 12 12	8 23 18 18	11 02 31 15	5 23 38 50	10 11 31 53	2 26 48 11	0 01 09 51	11 29 33 12	-6 52	-24 01	-3 18	0 29	10 48
4	10 47 25	10 19 34 47	7 23 01 27	8 24 01 17	11 04 15 56	5 23 33 37	10 12 46 49	2 26 46 09	0 01 06 40	11 29 33 34	-6 29	-26 56	-4 09	1 37	11 39
5	10 51 22	10 20 34 54	8 07 08 48	8 24 44 18	11 05 57 49	5 23 28 15	10 14 01 43	2 26 44 13	0 01 03 29	11 29 32 15	-6 05	-28 13	-4 47	2 44	12 39
6	10 55 18	10 21 35 00	8 21 33 03	8 25 27 20	11 07 36 22	5 23 22 44	10 15 16 38	2 26 42 24	0 01 00 18	11 29 29 13	-5 42	-27 37	-5 07	3 46	13 47
7	10 59 15	10 22 35 05	9 06 10 59	8 26 10 24	11 09 11 05	5 23 17 05	10 16 31 31	2 26 40 41	0 00 57 08	11 29 24 53	-5 19	-25 08	-5 08	4 41	14 59
8	11 03 12	10 23 35 08	9 20 57 10	8 26 53 28	11 10 41 23	5 23 11 18	10 17 46 24	2 26 39 04	0 00 53 57	11 29 19 41	-4 56	-20 58	-4 48	5 28	16 12
9	11 07 08	10 24 35 09	10 05 44 28	8 27 36 34	11 12 06 44	5 23 05 23	10 19 01 17	2 26 37 33	0 00 50 46	11 29 14 18	-4 32	-15 29	-4 [illegible]	[illegible]	17 23
10	11 11 05	10 25 35 08	10 20 24 59	8 28 19 41	11 13 26 35	5 22 59 20	10 20 16 08	2 26 36 10	0 00 47 35	11 29 9 27	-4 09	-9 09	-3 15	6 [illegible]	[illegible]
11	11 15 01	10 26 35 06	11 04 51 15	8 29 02 50	11 14 40 26	5 22 53 09	10 21 30 59	2 26 34 52	0 00 44 25	11 29 5 53	-3 45	-2 26	-2 08	7 15	19 37
12	11 18 58	10 27 35 01	11 18 57 23	8 29 45 59	11 15 47 46	5 22 46 51	10 22 45 49	2 26 33 42	0 00 41 14	11 29 3 53	-3 21	4 14	-0 54	7 46	20 40
13	11 22 54	10 28 34 55	0 02 39 50	9 00 29 09	11 16 48 08	5 22 40 27	10 24 00 38	2 26 32 37	0 00 38 03	11 29 3 33	-2 58	10 33	0 19	8 16	21 44
14	11 26 51	10 29 34 46	0 15 57 25	9 01 12 20	11 17 41 09	5 22 33 55	10 25 15 26	2 26 31 40	0 00 34 52	11 29 4 25	-2 34	16 13	1 31	8 49	22 46
15	11 30 47	11 00 34 35	0 28 51 12	9 01 55 33	11 18 26 27	5 22 27 18	10 26 30 14	2 26 30 49	0 00 31 42	11 29 5 57	-2 11	20 58	2 36	9 24	23 47
16	11 34 44	11 01 34 22	1 11 23 56	9 02 38 46	11 19 03 46	5 22 20 34	10 27 45 00	2 26 30 05	0 00 28 31	11 29 7 34	-1 47	24 39	3 31	10 03	-- --
17	11 38 41	11 02 34 07	1 23 39 31	9 03 22 00	11 19 32 54	5 22 13 44	10 28 59 45	2 26 29 27	0 00 25 20	11 29 8 50	-1 23	27 06	4 15	10 48	0 47
18	11 42 37	11 03 33 49	2 05 42 31	9 04 05 15	11 19 53 42	5 22 06 49	11 00 14 29	2 26 28 56	0 00 22 09	11 29 9 5	-0 59	28 14	4 48	11 37	1 44
19	11 46 34	11 04 33 29	2 17 37 43	9 04 48 31	11 20 06 10	5 21 59 48	11 01 29 12	2 26 28 32	0 00 18 58	11 29 8 8	-0 36	28 02	5 07	12 30	2 35
20	11 50 30	11 05 33 07	2 29 29 49	9 05 31 48	11 20 10 20	5 21 52 43	11 02 43 54	2 26 28 14	0 00 15 48	11 29 6 9	-0 12	26 33	5 13	13 27	3 22
21	11 54 27	11 06 32 43	3 11 23 13	9 06 15 06	11 20 06 24	5 21 45 33	11 03 58 35	2 26 28 04	0 00 12 37	11 29 3 28	0 11	23 53	5 06	14 24	4 02
22	11 58 23	11 07 32 17	3 23 21 44	9 06 58 25	11 19 54 37	5 21 38 18	11 05 13 15	2 26 27 59	0 00 09 26	11 29 0 14	0 34	20 11	4 46	15 22	4 38
23	12 02 20	11 08 31 48	4 05 28 35	9 07 41 45	11 19 35 25	5 21 30 59	11 06 27 54	2 26 28 02	0 00 06 15	11 28 56 40	0 58	15 37	4 12	16 19	5 10
24	12 06 16	11 09 31 17	4 17 46 13	9 08 25 07	11 19 09 20	5 21 23 37	11 07 42 32	2 26 28 11	0 00 03 05	11 28 53 25	1 22	10 21	3 27	17 17	5 39
25	12 10 13	11 10 30 44	5 00 16 16	9 09 08 29	11 18 36 59	5 21 16 11	11 08 57 09	2 26 28 27	11 29 59 54	11 28 50 57	1 45	4 36	2 30	18 14	6 06
26	12 14 10	11 11 30 09	5 12 59 40	9 09 51 52	11 17 59 10	5 21 08 42	11 10 11 45	2 26 28 49	11 29 56 43	11 28 49 25	2 09	-1 25	1 26	19 12	6 33
27	12 18 06	11 12 29 32	5 25 56 43	9 10 35 16	11 17 16 45	5 21 01 10	11 11 26 20	2 26 29 18	11 29 53 32	11 28 48 49	2 32	-7 31	0 15	20 12	7 01
28	12 22 03	11 13 28 53	6 09 07 14	9 11 18 41	11 16 30 40	5 20 53 36	11 12 40 54	2 26 29 53	11 29 50 21	11 28 49 1	2 56	-13 24	-0 56	21 16	7 32
29	12 25 59	11 14 28 11	6 22 30 40	9 12 02 07	11 15 41 57	5 20 45 59	11 13 55 27	2 26 30 36	11 29 47 11	11 28 49 50	3 19	-18 47	-2 07	22 22	8 06
30	12 29 56	11 15 27 29	7 06 06 21	9 12 45 34	11 14 51 38	5 20 38 20	11 15 10 00	2 26 31 24	11 29 44 00	11 28 50 59	3 43	-23 16	-3 11	23 30	8 47
31	12 33 52	11 16 26 44	7 19 53 25	9 13 29 02	11 14 00 47	5 20 30 40	11 16 24 31	2 26 32 20	11 29 40 49	11 28 52 10	4 06	-26 31	-4 06	-- --	9 35

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 अप्रैल 2005 ई. को अयनांश 23° 55′ 42″

तारीख	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	12 37 49	11 17 25 57	8 03 50 54	9 14 12 31	11 13 10 24	5 20 22 58	11 17 39 01	2 26 33 22	11 29 37 38	11 28 53 7	4 29	-28 12	-4 46	0 37	10 31
2	12 41 45	11 18 25 09	8 17 57 30	9 14 56 00	11 12 21 26	5 20 15 16	11 18 53 31	2 26 34 30	11 29 34 28	11 28 53 32	4 52	-28 03	-5 10	1 40	11 36
3	12 45 42	11 19 24 19	9 02 11 26	9 15 39 31	11 11 34 47	5 20 07 32	11 20 08 00	2 26 35 45	11 29 31 17	11 28 53 17	5 15	-26 05	-5 15	2 36	12 45
4	12 49 39	11 20 23 28	9 16 30 15	9 16 23 02	11 10 51 13	5 19 59 49	11 21 22 28	2 26 37 07	11 29 28 06	11 28 52 31	5 38	-22 27	-5 01	3 24	13 56
5	12 53 35	11 21 22 34	10 00 50 46	9 17 06 33	11 10 11 23	5 19 52 05	11 22 36 55	2 26 38 35	11 29 24 55	11 28 51 34	6 01	-17 28	-4 28	4 05	15 06
6	12 57 32	11 22 21 39	10 15 09 07	9 17 50 05	11 09 35 50	5 19 44 21	11 23 51 21	2 26 40 09	11 29 21 45	11 28 50 41	6 24	-11 32	-3 38	4 40	16 13
7	13 01 28	11 23 20 42	10 29 20 58	9 18 33 38	11 09 05 00	5 19 36 39	11 25 05 46	2 26 41 50	11 29 18 34	11 28 50 2	6 47	-5 03	-2 36	5 13	17 18
8	13 05 25	11 24 19 43	11 13 22 04	9 19 17 11	11 08 39 12	5 19 28 57	11 26 20 10	2 26 43 38	11 29 15 23	11 28 49 38	7 09	1 36	-1 24	5 43	18 22

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2061 वि.)

मास	चैत्र		वैशा.		ज्ये.		आषा.		प्र. श्राव.		द्वि. श्राव.	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	22 मार्च	द. 17	21 अप्रै.	द. 18	20 मई	द. 16	19 जून	द. 15	18 जुला.	द. 8	17 अग.	उ. 10
+ 15°	22 "	द. 6	21 "	द. 8	20 "	द. 8	19 "	द. 5	18 "	उ. 2	17 "	उ. 20
+ 25°	22 "	उ. 4	21 "	उ. 2	20 "	उ. 4	19 "	उ. 5	18 "	उ. 12	17 "	उ. 31
+ 35°	22 "	उ. 14	21 "	उ. 13	20 "	उ. 14	19 "	उ. 15	18 *	उ. 34	17 "	उ. 41

मास	भाद्र.		आश्वि.		कार्ति.		मार्ग.		पौष		माघ		फाल्गु.	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2005 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2005 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2005 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	16 सितं.	उ. 26	15 अक्तू.	उ. 29	14 नवं.	उ. 30	13 दिसं.	उ. 23	11 जन.	उ. 17	10 फर.	द. 6	11 मार्च	द. 12
+ 15°	16 "	उ. 36	15 "	उ. 40	14 "	उ. 41	13 "	उ. 33	11 "	उ. 27	10 "	उ. 4	11 "	द. 2
+ 25°	16 "	उ. 47	16 "	उ. 54	14 "	उ. 51	13 "	उ. 44	12 "	उ. 30	10 "	उ. 15	11 "	उ. 8
+ 35°	16 "	उ. 56	16 "	उ. 63	14 "	उ. 61	13 ⊕	उ. 52	12 "	उ. 40	10 "	उ. 25	11 "	उ. 19

*उत्तरी काश्मीर में 18 जुलाई को चन्द्रदर्शन संदेहास्पद है। ⊕ उत्तरी काश्मीर में 13 दिसम्बर को चन्द्रदर्शन संदेहास्पद है।

नोट:– यहां दिए गए शृंगोन्नति के अंश लगभग हैं।

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रात: 5 घं.30 मि., भा.स्टैं. टा.)

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति—शर (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टें. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2004 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अ. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	10 06 09	9 17 46	7 26 35	3 41	0 03	-20 17	3 08	5 30	1 12	-18 36	-1 49	22 24	-0 40	-12 08	-0 44	-17 18	-0 01	-14 29	8 37
4	10 06 16	9 17 52	7 26 41	4 28	0 07	-20 14	3 09	5 30	1 13	-17 29	-1 48	22 26	-0 39	-12 05	-0 43	-17 16	-0 01	-14 30	8 37
7	10 06 24	9 17 59	7 26 48	5 14	0 11	-20 26	2 56	5 32	1 14	-16 18	-1 45	22 27	-0 39	-12 02	-0 43	-17 14	-0 01	-14 30	8 37
10	10 06 33	9 18 05	7 26 54	6 01	0 15	-20 49	2 34	5 33	1 15	-15 03	-1 42	22 28	-0 39	-11 59	-0 43	-17 13	-0 01	-14 30	8 37
13	10 06 41	9 18 11	7 27 00	6 47	0 18	-21 17	2 08	5 36	1 15	-13 45	-1 39	22 30	-0 38	-11 56	-0 43	-17 11	-0 01	-14 30	8 37
16	10 06 50	9 18 18	7 27 06	7 33	0 22	-21 46	1 39	5 39	1 16	-12 23	-1 34	22 31	-0 38	-11 53	-0 43	-17 09	-0 01	-14 31	8 38
19	10 06 59	9 18 25	7 27 12	8 18	0 25	-22 10	1 11	5 43	1 17	-10 59	-1 29	22 32	-0 37	-11 50	-0 43	-17 07	-0 01	-14 31	8 38
22	10 07 08	9 18 31	7 27 17	9 04	0 28	-22 29	0 42	5 47	1 18	-9 32	-1 23	22 33	-0 37	-11 46	-0 43	-17 05	-0 01	-14 31	8 38
25	10 07 17	9 18 38	7 27 23	9 48	0 31	-22 40	0 16	5 52	1 19	-8 03	-1 16	22 35	-0 37	-11 43	-0 43	-17 04	-0 01	-14 31	8 38
28	10 07 27	9 18 45	7 27 28	10 33	0 34	-22 41	-0 09	5 58	1 19	-6 32	-1 08	22 36	-0 36	-11 39	-0 43	-17 02	-0 01	-14 31	8 39
30	10 07 34	9 18 49	7 27 31	11 02	0 36	-22 36	-0 24	6 02	1 20	-5 31	-1 03	22 37	-0 36	-11 37	-0 43	-17 00	-0 01	-14 31	8 39
फर 1	10 07 40	9 18 54	7 27 35	11 31	0 37	-22 27	-0 39	6 06	1 20	-4 29	-0 57	22 37	-0 36	-11 35	-0 43	-16 59	-0 01	-14 31	8 39
4	10 07 50	9 19 01	7 27 39	12 13	0 40	-22 03	-1 00	6 13	1 21	-2 56	-0 47	22 38	-0 35	-11 31	-0 43	-16 57	-0 01	-14 31	8 39
7	10 08 00	9 19 08	7 27 44	12 55	0 42	-21 29	-1 18	6 20	1 22	-1 22	-0 37	22 39	-0 35	-11 27	-0 43	-16 55	-0 02	-14 31	8 40
10	10 08 10	9 19 14	7 27 48	13 37	0 44	-20 42	-1 33	6 28	1 22	0 12	-0 27	22 40	-0 34	-11 24	-0 43	-16 53	-0 02	-14 31	8 40
13	10 08 20	9 19 21	7 27 52	14 17	0 46	-19 43	-1 46	6 36	1 23	1 46	-0 16	22 41	-0 34	-11 20	-0 43	-16 52	-0 02	-14 30	8 41
16	10 08 31	9 19 28	7 27 56	14 57	0 48	-18 32	-1 56	6 45	1 23	3 20	-0 04	22 42	-0 33	-11 16	-0 43	-16 50	-0 02	-14 30	8 41
19	10 08 41	9 19 35	7 28 00	15 35	0 50	-17 09	-2 03	6 54	1 24	4 53	0 07	22 43	-0 33	-11 13	-0 43	-16 48	-0 02	-14 30	8 42
22	10 08 52	9 19 41	7 28 03	16 13	0 52	-15 34	-2 07	7 03	1 24	6 26	0 20	22 43	-0 32	-11 09	-0 43	-16 46	-0 02	-14 29	8 42
25	10 09 02	9 19 48	7 28 06	16 50	0 54	-13 47	-2 06	7 12	1 24	7 57	0 33	22 44	-0 32	-11 05	-0 43	-16 44	-0 02	-14 29	8 43
28	10 09 12	9 19 54	7 28 09	17 25	0 55	-11 47	-2 02	7 21	1 25	9 27	0 47	22 45	-0 32	-11 02	-0 43	-16 42	-0 02	-14 29	8 43
मार्च 1	10 09 19	9 19 58	7 28 10	17 48	0 56	-10 20	-1 56	7 27	1 25	10 26	0 56	22 45	-0 31	-10 59	-0 43	-16 41	-0 02	-14 28	8 44
4	10 09 29	9 20 04	7 28 12	18 22	0 58	-8 01	-1 44	7 36	1 25	11 52	1 10	22 46	-0 31	-10 55	-0 43	-16 39	-0 02	-14 28	8 44
7	10 09 40	9 20 10	7 28 14	18 55	0 59	-5 31	-1 27	7 46	1 25	13 16	1 24	22 46	-0 30	-10 52	-0 43	-16 38	-0 02	-14 27	8 45
10	10 09 50	9 20 16	7 28 16	19 26	1 01	-2 52	-1 05	7 55	1 25	14 38	1 39	22 47	-0 30	-10 48	-0 43	-16 36	-0 02	-14 27	8 45
13	10 10 00	9 20 22	7 28 17	19 56	1 02	-0 07	-0 38	8 04	1 25	15 56	1 53	22 47	-0 29	-10 44	-0 43	-16 34	-0 02	-14 26	8 46
16	10 10 10	9 20 28	7 28 18	20 25	1 03	2 40	-0 06	8 12	1 25	17 11	2 07	22 47	-0 29	-10 41	-0 43	-16 33	-0 02	-14 26	8 47
19	10 10 19	9 20 33	7 28 19	20 52	1 04	5 25	0 28	8 21	1 25	18 23	2 21	22 48	-0 28	-10 37	-0 43	-16 31	-0 02	-14 25	8 47
22	10 10 29	9 20 38	7 28 19	21 18	1 05	8 00	1 06	8 29	1 25	19 32	2 36	22 48	-0 28	-10 34	-0 43	-16 30	-0 02	-14 25	8 48
25	10 10 38	9 20 43	7 28 19	21 43	1 06	10 19	1 42	8 36	1 25	20 36	2 49	22 48	-0 28	-10 31	-0 43	-16 28	-0 02	-14 24	8 48
28	10 10 47	9 20 48	7 28 19	22 06	1 07	12 15	2 16	8 44	1 25	21 37	3 03	22 48	-0 27	-10 27	-0 43	-16 27	-0 02	-14 24	8 49
30	10 10 53	9 20 51	7 28 19	22 20	1 07	13 18	2 36	8 48	1 25	22 15	3 12	22 48	-0 27	-10 25	-0 43	-16 26	-0 02	-14 23	8 49

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2004 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रै. 1	10 10 59	9 20 54	7 28 19	22 34	1 08	14 07	2 52	8 53	1 25	22 51	3 20	22 48	-0 27	-10 23	-0 43	-16 25	-0 02	-14 23	8 50
4	10 11 08	9 20 58	7 28 18	22 54	1 09	14 55	3 08	8 59	1 24	23 41	3 32	22 48	-0 26	-10 20	-0 43	-16 24	-0 02	-14 22	8 50
7	10 11 16	9 21 02	7 28 17	23 11	1 09	15 09	3 12	9 04	1 24	24 27	3 44	22 48	-0 26	-10 17	-0 43	-16 23	-0 02	-14 22	8 51
10	10 11 25	9 21 06	7 28 15	23 28	1 10	14 50	3 04	9 09	1 24	25 08	3 55	22 48	-0 25	-10 14	-0 44	-16 22	-0 02	-14 21	8 51
13	10 11 32	9 21 09	7 28 13	23 42	1 11	14 00	2 41	9 14	1 23	25 44	4 05	22 48	-0 25	-10 11	-0 44	-16 21	-0 02	-14 21	8 52
16	10 11 40	9 21 12	7 28 11	23 56	1 11	12 46	2 06	9 18	1 23	26 16	4 13	22 48	-0 24	-10 08	-0 44	-16 20	-0 02	-14 20	8 52
19	10 11 47	9 21 15	7 28 09	24 07	1 12	11 17	1 21	9 21	1 22	26 42	4 21	22 47	-0 24	-10 06	-0 44	-16 19	-0 02	-14 19	8 53
22	10 11 54	9 21 18	7 28 07	24 17	1 12	9 46	0 31	9 23	1 22	27 05	4 27	22 47	-0 24	-10 03	-0 44	-16 19	-0 02	-14 19	8 53
25	10 12 01	9 21 20	7 28 04	24 25	1 13	8 24	-0 18	9 25	1 21	27 22	4 32	22 46	-0 23	-10 01	-0 44	-16 18	-0 02	-14 18	8 53
28	10 12 07	9 21 22	7 28 01	24 31	1 13	7 19	-1 05	9 27	1 21	27 35	4 35	22 46	-0 23	-9 59	-0 44	-16 17	-0 02	-14 18	8 54
30	10 12 11	9 21 24	7 27 59	24 34	1 13	6 47	-1 33	9 27	1 20	27 41	4 36	22 45	-0 23	-9 57	-0 44	-16 17	-0 03	-14 17	8 54
मई 1	10 12 13	9 21 24	7 27 58	24 36	1 13	6 35	-1 46	9 27	1 20	27 44	4 36	22 45	-0 22	-9 57	-0 44	-16 17	-0 03	-14 17	8 54
4	10 12 18	9 21 26	7 27 55	24 39	1 13	6 15	-2 20	9 27	1 20	27 48	4 34	22 44	-0 22	-9 55	-0 44	-16 16	-0 03	-14 17	8 54
7	10 12 23	9 21 27	7 27 51	24 40	1 14	6 16	-2 45	9 27	1 19	27 48	4 30	22 44	-0 22	-9 53	-0 44	-16 16	-0 03	-14 16	8 55
10	10 12 28	9 21 28	7 27 47	24 40	1 14	6 39	-3 03	9 25	1 18	27 43	4 23	22 43	-0 21	-9 51	-0 45	-16 16	-0 03	-14 16	8 55
13	10 12 32	9 21 28	7 27 43	24 38	1 14	7 20	-3 14	9 24	1 18	27 34	4 12	22 42	-0 21	-9 50	-0 45	-16 16	-0 03	-14 16	8 55
16	10 12 36	9 21 28	7 27 39	24 34	1 14	8 16	-3 17	9 21	1 17	27 21	3 58	22 41	-0 21	-9 48	-0 45	-16 16	-0 03	-14 15	8 55
19	10 12 40	9 21 28	7 27 35	24 28	1 14	9 27	-3 14	9 18	1 17	27 03	3 40	22 40	-0 20	-9 47	-0 45	-16 16	-0 03	-14 15	8 55
22	10 12 43	9 21 28	7 27 31	24 21	1 14	10 49	-3 06	9 15	1 16	26 40	3 18	22 38	-0 20	-9 46	-0 45	-16 16	-0 03	-14 15	8 55
25	10 12 46	9 21 28	7 27 26	24 12	1 14	12 20	-2 51	9 10	1 16	26 11	2 50	22 37	-0 20	-9 45	-0 45	-16 16	-0 03	-14 14	8 55
28	10 12 48	9 21 27	7 27 22	24 02	1 14	13 58	-2 32	9 06	1 15	25 37	2 19	22 36	-0 19	-9 45	-0 45	-16 16	-0 03	-14 14	8 55
30	10 12 49	9 21 26	7 27 19	23 54	1 14	15 07	-2 17	9 02	1 15	25 11	1 56	22 35	-0 19	-9 44	-0 45	-16 17	-0 03	-14 14	8 55
जून 1	10 12 50	9 21 25	7 27 15	23 46	1 14	16 16	-2 00	8 58	1 14	24 43	1 31	22 33	-0 19	-9 44	-0 45	-16 17	-0 03	-14 14	8 55
4	10 12 51	9 21 24	7 27 11	23 32	1 14	18 01	-1 31	8 52	1 14	23 57	0 50	22 32	-0 19	-9 44	-0 45	-16 17	-0 03	-14 14	8 55
7	10 12 52	9 21 22	7 27 06	23 16	1 14	19 43	-1 00	8 46	1 13	23 06	0 08	22 30	-0 18	-9 43	-0 46	-16 18	-0 03	-14 14	8 55
10	10 12 52	9 21 20	7 27 01	22 59	1 14	21 18	-0 27	8 39	1 13	22 13	-0 33	22 28	-0 18	-9 43	-0 46	-16 19	-0 03	-14 13	8 54
13	10 12 52	9 21 17	7 26 56	22 40	1 14	22 41	0 04	8 31	1 12	21 21	-1 15	22 26	-0 18	-9 44	-0 46	-16 19	-0 03	-14 13	8 54
16	10 12 52	9 21 15	7 26 52	22 20	1 14	23 46	0 36	8 23	1 12	20 31	-1 54	22 24	-0 17	-9 44	-0 46	-16 20	-0 03	-14 13	8 54
19	10 12 51	9 21 12	7 26 47	21 58	1 14	24 29	1 03	8 15	1 11	19 45	-2 29	22 22	-0 17	-9 44	-0 46	-16 21	-0 03	-14 14	8 53
22	10 12 49	9 21 09	7 26 42	21 36	1 13	24 47	1 25	8 06	1 11	19 05	-3 01	22 20	-0 17	-9 45	-0 46	-16 22	-0 03	-14 14	8 53
25	10 12 47	9 21 06	7 26 38	21 11	1 13	24 39	1 41	7 56	1 10	18 32	-3 28	22 18	-0 17	-9 46	-0 46	-16 23	-0 03	-14 14	8 53
28	10 12 45	9 21 02	7 26 33	20 46	1 13	24 09	1 51	7 47	1 10	18 06	-3 50	22 15	-0 16	-9 47	-0 46	-16 24	-0 03	-14 14	8 52
30	10 12 43	9 21 00	7 26 30	20 28	1 13	23 37	1 53	7 40	1 10	17 53	-4 02	22 14	-0 16	-9 47	-0 46	-16 25	-0 03	-14 14	8 52

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं.30 मि., भा.स्टें.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2004 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुला. 1	10 12 42	9 20 59	7 26 28	20 19	1 13	23 18	1 54	7 37	1 09	17 48	-4 08	22 13	-0 16	-9 48	-0 47	-16 25	-0 03	-14 14	8 51
4	10 12 39	9 20 55	7 26 24	19 51	1 12	22 11	1 50	7 26	1 09	17 37	-4 21	22 11	-0 16	-9 49	-0 47	-16 26	-0 03	-14 15	8 51
7	10 12 36	9 20 51	7 26 20	19 21	1 12	20 51	1 41	7 15	1 09	17 32	-4 31	22 08	-0 16	-9 50	-0 47	-16 27	-0 03	-14 15	8 50
10	10 12 32	9 20 47	7 26 16	18 51	1 11	19 21	1 27	7 04	1 08	17 33	-4 38	22 05	-0 15	-9 52	-0 47	-16 29	-0 03	-14 15	8 49
13	10 12 28	9 20 42	7 26 12	18 19	1 11	17 44	1 08	6 52	1 08	17 38	-4 42	22 03	-0 15	-9 54	-0 47	-16 30	-0 03	-14 16	8 49
16	10 12 23	9 20 38	7 26 08	17 46	1 11	16 03	0 44	6 40	1 07	17 47	-4 43	22 00	-0 15	-9 55	-0 47	-16 31	-0 03	-14 16	8 48
19	10 12 19	9 20 33	7 26 04	17 12	1 10	14 21	0 18	6 28	1 07	17 59	-4 41	21 57	-0 14	-9 57	-0 47	-16 33	-0 04	-14 17	8 47
22	10 12 13	9 20 29	7 26 01	16 38	1 10	12 38	-0 11	6 16	1 07	18 13	-4 38	21 54	-0 14	-9 59	-0 47	-16 34	-0 04	-14 18	8 46
25	10 12 08	9 20 24	7 25 57	16 02	1 09	10 59	-0 44	6 03	1 07	18 28	-4 33	21 51	-0 14	-10 01	-0 47	-16 35	-0 04	-14 18	8 45
28	10 12 02	9 20 19	7 25 54	15 25	1 09	9 24	-1 19	5 50	1 06	18 43	-4 27	21 48	-0 14	-10 03	-0 47	-16 37	-0 04	-14 19	8 44
30	10 11 58	9 20 16	7 25 52	15 00	1 08	8 25	-1 43	5 41	1 06	18 53	-4 21	21 46	-0 14	-10 05	-0 47	-16 38	-0 04	-14 19	8 44
अग. 1	10 11 54	9 20 13	7 25 51	14 35	1 08	7 30	-2 07	5 32	1 06	19 03	-4 16	21 44	-0 13	-10 06	-0 47	-16 39	-0 04	-14 20	8 43
4	10 11 48	9 20 08	7 25 48	13 56	1 07	6 17	-2 44	5 18	1 06	19 17	-4 06	21 41	-0 13	-10 09	-0 47	-16 40	-0 04	-14 21	8 42
7	10 11 41	9 20 03	7 25 46	13 16	1 07	5 19	-3 20	5 05	1 05	19 30	-3 56	21 38	-0 13	-10 11	-0 48	-16 42	-0 04	-14 22	8 41
10	10 11 35	9 19 58	7 25 44	12 36	1 06	4 40	-3 53	4 51	1 05	19 40	-3 44	21 35	-0 13	-10 14	-0 48	-16 43	-0 04	-14 22	8 40
13	10 11 28	9 19 53	7 25 42	11 55	1 06	4 24	-4 20	4 36	1 05	19 47	-3 32	21 32	-0 12	-10 16	-0 48	-16 44	-0 04	-14 23	8 39
16	10 11 21	9 19 48	7 25 40	11 13	1 05	4 33	-4 38	4 22	1 05	19 52	-3 20	21 29	-0 12	-10 19	-0 48	-16 46	-0 04	-14 24	8 38
19	10 11 14	9 19 43	7 25 39	10 31	1 04	5 11	-4 44	4 07	1 05	19 54	-3 07	21 26	-0 12	-10 21	-0 48	-16 47	-0 04	-14 25	8 37
22	10 11 07	9 19 39	7 25 38	9 48	1 04	6 14	-4 34	3 53	1 05	19 52	-2 53	21 23	-0 12	-10 24	-0 48	-16 49	-0 04	-14 26	8 36
25	10 11 00	9 19 34	7 25 37	9 04	1 03	7 35	-4 07	3 38	1 05	19 46	-2 39	21 20	-0 12	-10 27	-0 48	-16 50	-0 04	-14 27	8 35
28	10 10 53	9 19 30	7 25 37	8 20	1 02	9 02	-3 25	3 23	1 04	19 36	-2 25	21 17	-0 11	-10 29	-0 48	-16 51	-0 04	-14 28	8 34
30	10 10 48	9 19 27	7 25 37	7 51	1 02	9 58	-2 51	3 13	1 04	19 27	-2 16	21 15	-0 11	-10 31	-0 48	-16 52	-0 04	-14 29	8 33
सितं. 1	10 10 43	9 19 24	7 25 37	7 21	1 01	10 46	-2 14	3 03	1 04	19 16	-2 06	21 13	-0 11	-10 33	-0 48	-16 53	-0 04	-14 30	8 32
4	10 10 36	9 19 19	7 25 37	6 36	1 00	11 40	-1 17	2 47	1 04	18 56	-1 52	21 10	-0 11	-10 35	-0 48	-16 54	-0 04	-14 31	8 31
7	10 10 29	9 19 15	7 25 38	5 50	1 00	12 04	-0 24	2 32	1 04	18 32	-1 37	21 07	-0 11	-10 38	-0 48	-16 56	-0 04	-14 32	8 30
10	10 10 22	9 19 11	7 25 39	5 04	0 59	11 55	0 21	2 17	1 04	18 03	-1 23	21 04	-0 10	-10 41	-0 48	-16 57	-0 04	-14 33	8 29
13	10 10 15	9 19 08	7 25 40	4 18	0 58	11 13	0 58	2 01	1 04	17 30	-1 09	21 01	-0 10	-10 43	-0 48	-16 58	-0 04	-14 35	8 28
16	10 10 08	9 19 04	7 25 41	3 32	0 57	10 01	1 25	1 46	1 04	16 52	-0 55	20 59	-0 10	-10 45	-0 48	-16 59	-0 04	-14 36	8 27
19	10 10 02	9 19 01	7 25 43	2 45	0 56	8 23	1 42	1 31	1 04	16 10	-0 41	20 56	-0 10	-10 48	-0 48	-17 00	-0 04	-14 37	8 25
22	10 09 55	9 18 58	7 25 45	1 58	0 55	6 27	1 50	1 15	1 04	15 24	-0 28	20 54	-0 09	-10 50	-0 48	-17 01	-0 04	-14 38	8 24
25	10 09 49	9 18 55	7 25 47	1 11	0 54	4 18	1 50	1 00	1 04	14 34	-0 15	20 51	-0 09	-10 52	-0 47	-17 01	-0 04	-14 40	8 23
28	10 09 43	9 18 52	7 25 50	0 24	0 53	2 01	1 44	0 44	1 04	13 40	-0 03	20 49	-0 09	-10 54	-0 47	-17 02	-0 04	-14 41	8 22
30	10 09 39	9 18 51	7 25 52	-0 06	0 53	0 28	1 38	0 34	1 05	13 01	0 05	20 48	-0 09	-10 56	-0 47	-17 03	-0 04	-14 42	8 21

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रात: 5 घं.30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2004 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	10 09 38	9 18 50	7 25 53	-0 22	0 52	-0 17	1 34	0 29	1 05	12 42	0 08	20 47	-0 09	-10 56	-0 47	-17 03	-0 04	-14 42	8 21
4	10 09 32	9 18 48	7 25 56	-1 09	0 51	-2 37	1 20	0 14	1 05	11 40	0 20	20 45	-0 09	-10 58	-0 47	-17 04	-0 04	-14 43	8 20
7	10 09 27	9 18 46	7 25 59	-1 57	0 50	-4 55	1 03	-0 01	1 05	10 35	0 31	20 43	-0 08	-11 00	-0 47	-17 04	-0 04	-14 45	8 19
10	10 09 22	9 18 44	7 26 03	-2 44	0 49	-7 10	0 45	-0 16	1 05	9 27	0 41	20 42	-0 08	-11 02	-0 47	-17 05	-0 04	-14 46	8 18
13	10 09 18	9 18 43	7 26 07	-3 31	0 48	-9 20	0 25	-0 31	1 05	8 17	0 51	20 40	-0 08	-11 03	-0 47	-17 05	-0 04	-14 47	8 17
16	10 09 14	9 18 42	7 26 11	-4 18	0 47	-11 24	0 05	-0 46	1 05	7 03	1 00	20 39	-0 08	-11 04	-0 47	-17 05	-0 04	-14 49	8 16
19	10 09 10	9 18 41	7 26 15	-5 04	0 46	-13 23	-0 15	-1 00	1 06	5 48	1 08	20 38	-0 07	-11 06	-0 47	-17 05	-0 04	-14 50	8 15
22	10 09 07	9 18 41	7 26 20	-5 51	0 45	-15 15	-0 35	-1 15	1 06	4 30	1 15	20 37	-0 07	-11 07	-0 47	-17 06	-0 05	-14 51	8 14
25	10 09 04	9 18 41	7 26 25	-6 37	0 44	-16 59	-0 55	-1 29	1 06	3 11	1 22	20 36	-0 07	-11 08	-0 47	-17 06	-0 05	-14 52	8 13
28	10 09 02	9 18 41	7 26 30	-7 22	0 42	-18 36	-1 14	-1 44	1 06	1 50	1 28	20 35	-0 07	-11 08	-0 47	-17 06	-0 05	-14 53	8 12
30	10 09 01	9 18 41	7 26 33	-7 53	0 42	-19 37	-1 27	-1 53	1 07	0 56	1 31	20 35	-0 06	-11 09	-0 46	-17 06	-0 05	-14 54	8 12
नव. 1	10 08 59	9 18 42	7 26 37	-8 23	0 41	-20 33	-1 38	-2 02	1 07	0 01	1 35	20 35	-0 06	-11 09	-0 46	-17 05	-0 05	-14 55	8 11
4	10 08 58	9 18 43	7 26 42	-9 08	0 39	-21 50	-1 55	-2 16	1 07	-1 21	1 39	20 35	-0 06	-11 10	-0 46	-17 05	-0 05	-14 56	8 10
7	10 08 57	9 18 44	7 26 48	-9 52	0 38	-22 57	-2 09	-2 30	1 07	-2 44	1 42	20 35	-0 06	-11 10	-0 46	-17 05	-0 05	-14 57	8 10
10	10 08 57	9 18 45	7 26 54	-10 36	0 37	-23 53	-2 21	-2 43	1 08	-4 07	1 45	20 35	-0 05	-11 10	-0 46	-17 04	-0 05	-14 58	8 09
13	10 08 56	9 18 47	7 27 00	-11 19	0 36	-24 39	-2 30	-2 56	1 08	-5 30	1 46	20 36	-0 05	-11 10	-0 46	-17 04	-0 05	-15 00	8 08
16	10 08 57	9 18 49	7 27 06	-12 01	0 34	-25 12	-2 35	-3 09	1 09	-6 52	1 47	20 36	-0 05	-11 10	-0 46	-17 03	-0 05	-15 01	8 08
19	10 08 58	9 18 52	7 27 12	-12 43	0 33	-25 33	-2 35	-3 21	1 09	-8 13	1 48	20 37	-0 05	-11 09	-0 46	-17 03	-0 05	-15 02	8 07
22	10 08 59	9 18 55	7 27 18	-13 24	0 31	-25 41	-2 29	-3 33	1 09	-9 33	1 47	20 38	-0 04	-11 09	-0 46	-17 02	-0 05	-15 03	8 06
25	10 09 01	9 18 58	7 27 25	-14 04	0 30	-25 35	-2 15	-3 45	1 10	-10 51	1 46	20 40	-0 04	-11 08	-0 45	-17 01	-0 05	-15 04	8 06
28	10 09 03	9 19 01	7 27 31	-14 44	0 28	-25 15	-1 52	-3 56	1 10	-12 06	1 44	20 41	-0 04	-11 07	-0 45	-17 00	-0 05	-15 04	8 05
30	10 09 05	9 19 03	7 27 36	-15 09	0 27	-24 53	-1 29	-4 04	1 11	-12 56	1 42	20 42	-0 04	-11 06	-0 45	-17 00	-0 05	-15 05	8 05
दिस. 1	10 09 06	9 19 04	7 27 38	-15 22	0 27	-24 40	-1 16	-4 07	1 11	-13 20	1 41	20 43	-0 03	-11 06	-0 45	-16 59	-0 05	-15 05	8 05
4	10 09 09	9 19 08	7 27 45	-16 00	0 25	-23 50	-0 28	-4 18	1 11	-14 31	1 38	20 44	-0 03	-11 05	-0 45	-16 58	-0 05	-15 06	8 04
7	10 09 13	9 19 12	7 27 51	-16 36	0 24	-22 45	0 30	-4 28	1 12	-15 39	1 34	20 46	-0 03	-11 03	-0 45	-16 57	-0 05	-15 07	8 04
10	10 09 17	9 19 17	7 27 58	-17 11	0 22	-21 30	1 29	-4 38	1 12	-16 43	1 30	20 48	-0 03	-11 02	-0 45	-16 56	-0 05	-15 08	8 04
13	10 09 21	9 19 21	7 28 05	-17 45	0 20	-20 18	2 18	-4 47	1 13	-17 43	1 25	20 51	-0 02	-11 00	-0 45	-16 55	-0 05	-15 08	8 03
16	10 09 26	9 19 26	7 28 12	-18 18	0 19	-19 28	2 46	-4 56	1 14	-18 39	1 19	20 53	-0 02	-10 58	-0 45	-16 53	-0 05	-15 09	8 03
19	10 09 31	9 19 31	7 28 19	-18 50	0 17	-19 07	2 55	-5 05	1 14	-19 31	1 13	20 56	-0 02	-10 56	-0 45	-16 52	-0 05	-15 10	8 03
22	10 09 37	9 19 36	7 28 25	-19 20	0 15	-19 14	2 49	-5 12	1 15	-20 18	1 07	20 58	-0 01	-10 54	-0 44	-16 50	-0 05	-15 10	8 03
25	10 09 43	9 19 42	7 28 32	-19 49	0 13	-19 41	2 33	-5 20	1 16	-20 59	1 00	21 01	-0 01	-10 51	-0 44	-16 49	-0 05	-15 11	8 02
28	10 09 49	9 19 47	7 28 39	-20 17	0 11	-20 20	2 11	-5 27	1 16	-21 35	0 53	21 04	-0 01	-10 49	-0 44	-16 47	-0 05	-15 11	8 02
30	10 09 54	9 19 51	7 28 43	-20 34	0 10	-20 48	1 55	-5 31	1 17	-21 56	0 49	21 06	-0 00	-10 47	-0 44	-16 46	-0 05	-15 11	8 02

219
यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रात: 5 घं.30 मि., भा. स्टैं. टा.)

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टें. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2005 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन 1	10 09 59	9 19 55	7 28 47	-20 51	0 09	-21 17	1 38	-5 35	1 17	-22 15	0 44	21 07	-0 00	-10 46	-0 44	-16 45	-0 05	-15 12	8 02
4	10 10 06	9 20 01	7 28 54	-21 15	0 07	-21 58	1 12	-5 41	1 18	-22 38	0 36	21 10	-0 00	-10 43	-0 44	-16 43	-0 05	-15 12	8 02
7	10 10 13	9 20 07	7 29 00	-21 37	0 05	-22 35	0 47	-5 46	1 19	-22 54	0 29	21 13	-0 00	-10 40	-0 44	-16 42	-0 05	-15 12	8 02
10	10 10 21	9 20 14	7 29 07	-21 58	0 03	-23 04	0 22	-5 50	1 19	-23 04	0 21	21 16	0 00	-10 37	-0 44	-16 40	-0 05	-15 13	8 02
13	10 10 30	9 20 20	7 29 13	-22 17	0 01	-23 24	-0 01	-5 54	1 20	-23 08	0 13	21 19	0 00	-10 34	-0 44	-16 38	-0 05	-15 13	8 02
16	10 10 38	9 20 26	7 29 19	-22 34	-0 00	-23 35	-0 24	-5 57	1 21	-23 06	0 05	21 22	0 00	-10 31	-0 44	-16 36	-0 05	-15 13	8 03
19	10 10 47	9 20 33	7 29 25	-22 50	-0 02	-23 35	-0 45	-6 00	1 22	-22 57	-0 01	21 25	0 01	-10 28	-0 44	-16 34	-0 05	-15 13	8 03
22	10 10 56	9 20 40	7 29 30	-23 03	-0 05	-23 23	-1 04	-6 02	1 22	-22 42	-0 09	21 28	0 01	-10 24	-0 44	-16 32	-0 05	-15 13	8 03
25	10 11 05	9 20 46	7 29 36	-23 15	-0 07	-23 00	-1 20	-6 03	1 23	-22 20	-0 16	21 30	0 01	-10 21	-0 44	-16 30	-0 05	-15 13	8 03
28	10 11 14	9 20 53	7 29 41	-23 25	-0 09	-22 25	-1 35	-6 04	1 24	-21 53	-0 24	21 33	0 02	-10 17	-0 44	-16 28	-0 05	-15 13	8 03
30	10 11 21	9 20 58	7 29 44	-23 30	-0 11	-21 55	-1 43	-6 04	1 24	-21 31	-0 28	21 35	0 02	-10 15	-0 44	-16 27	-0 05	-15 13	8 03
फर 1	10 11 27	9 21 02	7 29 48	-23 35	-0 12	-21 19	-1 50	-6 04	1 25	-21 07	-0 33	21 36	0 02	-10 13	-0 44	-16 26	-0 05	-15 13	8 04
4	10 11 37	9 21 09	7 29 53	-23 40	-0 14	-20 14	-1 58	-6 03	1 26	-20 26	-0 40	21 39	0 02	-10 09	-0 43	-16 24	-0 05	-15 13	8 04
7	10 11 47	9 21 16	7 29 57	-23 43	-0 17	-18 56	-2 03	-6 01	1 26	-19 39	-0 46	21 41	0 03	-10 05	-0 43	-16 22	-0 05	-15 13	8 04
10	10 11 57	9 21 23	8 00 02	-23 44	-0 19	-17 25	-2 05	-5 59	1 27	-18 47	-0 52	21 43	0 03	-10 02	-0 43	-16 20	-0 06	-15 13	8 05
13	10 12 07	9 21 30	8 00 06	-23 44	-0 22	-15 42	-2 03	-5 57	1 28	-17 51	-0 58	21 46	0 03	-9 58	-0 43	-16 18	-0 06	-15 13	8 05
16	10 12 17	9 21 36	8 00 10	-23 41	-0 24	-13 45	-1 56	-5 53	1 29	-16 49	-1 03	21 48	0 04	-9 54	-0 43	-16 16	-0 06	-15 12	8 06
19	10 12 27	9 21 43	8 00 13	-23 36	-0 27	-11 36	-1 44	-5 49	1 29	-15 44	-1 07	21 49	0 04	-9 50	-0 43	-16 14	-0 06	-15 12	8 06
22	10 12 38	9 21 50	8 00 17	-23 29	-0 29	-9 16	-1 28	-5 45	1 30	-14 34	-1 12	21 51	0 04	-9 46	-0 43	-16 12	-0 06	-15 12	8 06
25	10 12 48	9 21 56	8 00 20	-23 21	-0 32	-6 46	-1 06	-5 40	1 31	-13 21	-1 15	21 53	0 05	-9 43	-0 43	-16 10	-0 06	-15 11	8 07
28	10 12 58	9 22 03	8 00 23	-23 10	-0 35	-4 09	-0 38	-5 34	1 31	-12 05	-1 18	21 54	0 05	-9 39	-0 43	-16 08	-0 06	-15 11	8 07
मार्च 1	10 13 02	9 22 05	8 00 23	-23 06	-0 36	-3 16	-0 28	-5 32	1 32	-11 39	-1 19	21 55	0 05	-9 37	-0 43	-16 08	-0 06	-15 11	8 07
4	10 13 12	9 22 11	8 00 26	-22 52	-0 38	-0 37	0 06	-5 26	1 32	-10 19	-1 22	21 56	0 05	-9 34	-0 43	-16 06	-0 06	-15 11	8 08
7	10 13 23	9 22 17	8 00 28	-22 37	-0 41	1 55	0 45	-5 19	1 33	-8 56	-1 24	21 57	0 06	-9 30	-0 43	-16 04	-0 06	-15 10	8 08
10	10 13 33	9 22 23	8 00 30	-22 19	-0 44	4 14	1 25	-5 12	1 33	-7 31	-1 25	21 58	0 06	-9 26	-0 43	-16 02	-0 06	-15 10	8 09
13	10 13 43	9 22 29	8 00 31	-22 00	-0 47	6 10	2 05	-5 04	1 34	-6 05	-1 26	21 59	0 06	-9 22	-0 43	-16 00	-0 06	-15 09	8 10
16	10 13 53	9 22 35	8 00 33	-21 39	-0 50	7 36	2 41	-4 56	1 34	-4 37	-1 26	21 59	0 06	-9 19	-0 43	-15 59	-0 06	-15 09	8 10
19	10 14 03	9 22 40	8 00 34	-21 16	-0 53	8 26	3 09	-4 48	1 34	-3 08	-1 25	22 00	0 07	-9 15	-0 44	-15 57	-0 06	-15 08	8 11
22	10 14 13	9 22 46	8 00 34	-20 52	-0 56	8 36	3 25	-4 39	1 35	-1 38	-1 24	22 00	0 07	-9 11	-0 44	-15 56	-0 06	-15 08	8 11
25	10 14 22	9 22 51	8 00 35	-20 25	-0 58	8 08	3 27	-4 31	1 35	-0 07	-1 23	22 00	0 07	-9 08	-0 44	-15 54	-0 06	-15 07	8 12
28	10 14 32	9 22 56	8 00 35	-19 57	-1 01	7 05	3 13	-4 22	1 35	1 22	-1 21	22 00	0 07	-9 04	-0 44	-15 53	-0 06	-15 07	8 12
30	10 14 38	9 22 59	8 00 35	-19 37	-1 03	6 09	2 54	-4 16	1 35	2 23	-1 19	22 00	0 08	-9 02	-0 44	-15 52	-0 06	-15 06	8 12

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रात:5 घं.30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2005 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रै. 1	10 14 44	9 23 02	8 00 34	-19 17	-1 05	5 07	2 31	-4 10	1 35	3 23	-1 17	22 00	0 08	-9 00	-0 44	-15 51	-0 06	-15 06	8 13
4	10 14 53	9 23 06	8 00 34	-18 45	-1 09	3 32	1 47	-4 01	1 35	4 53	-1 14	22 00	0 08	-8 56	-0 44	-15 50	-0 06	-15 06	8 13
7	10 15 02	9 23 10	8 00 33	-18 12	-1 12	2 06	0 59	-3 52	1 35	6 21	-1 10	22 00	0 08	-8 53	-0 44	-15 48	-0 06	-15 05	8 14

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (संवत् 2061 वि.)

सूर्य—चार (सन् 2004-2005 ई.)

[ता]रीख [20]04 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा.स्टैं.टा) घं. मि.
21		उ. भा.	2	02 19
24		उ. भा.	3	10 55
27		उ. भा.	4	19 41
31		रेवती	1	04 38
[अप्रै]ल 3		रेवती	2	13 45
6		रेवती	3	23 02
10		रेवती	4	08 29
13	मेष	अश्विनी	1	18 03
17		अश्विनी	2	03 46
20		अश्विनी	3	13 37
23		अश्विनी	4	23 37
27		भरणी	1	09 48
30		भरणी	2	20 09
[म]ई 4		भरणी	3	06 39
7		भरणी	4	17 18
11		कृत्तिका	1	04 04
14	वृष	कृत्तिका	2	14 56
18		कृत्तिका	3	01 55
21		कृत्तिका	4	13 00
25		रोहिणी	1	00 13
28		रोहिणी	2	11 33
31		रोहिणी	3	23 00
जून 4		रोहिणी	4	10 33
7		मृग.	1	22 10
11		मृग.	2	09 51
14	मिथुन	मृग.	3	21 34
18		मृग.	4	09 19
21		आर्द्रा	1	21 08

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा.स्टैं.टा) घं. मि.
जून 25		आर्द्रा	2	08 59
28		आर्द्रा	3	20 53
जुलाई 2		आर्द्रा	4	08 49
5		पुनर्वसु	1	20 46
9		पुनर्वसु	2	08 42
12		पुनर्वसु	3	20 36
16	कर्क	पुनर्वसु	4	08 27
19		पुष्य	1	20 16
23		पुष्य	2	08 03
26		पुष्य	3	19 48
30		पुष्य	4	07 31
अगस्त 2		आश्ले.	1	19 11
6		आश्ले.	2	06 45
9		आश्ले.	3	18 13
13		आश्ले.	4	05 34
16	सिंह	मघा	1	16 49
20		मघा	2	03 57
23		मघा	3	14 59
27		मघा	4	01 56
30		पू. फा.	1	12 46
सितम्बर 2		पू. फा.	2	23 28
6		पू. फा.	3	10 01
9		पू. फा.	4	20 24
13		उ. फा.	1	06 37
16	कन्या	उ. फा.	2	16 41
20		उ. फा.	3	02 37
23		उ. फा.	4	12 24
26		हस्त	1	22 04

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा)
सितं. 30		हस्त	2	07 34
अक्तूबर 3		हस्त	3	16 55
7		हस्त	4	02 05
10		चित्रा	1	11 05
13		चित्रा	2	19 54
17	तुला	चित्रा	3	04 34
20		चित्रा	4	13 06
23		स्वाती	1	21 30
27		स्वाती	2	05 46
30		स्वाती	3	13 54
नवम्बर 2		स्वाती	4	21 52
6		विशाखा	1	05 42
9		विशाखा	2	13 22
12		विशाखा	3	20 55
16	वृश्चिक	विशाखा	4	04 19
19		अनुराधा	1	11 38
22		अनुराधा	2	18 52
26		अनुराधा	3	02 01
29		अनुराधा	4	09 04
दिसम्बर 2		ज्येष्ठा	1	16 01
5		ज्येष्ठा	2	22 52
9		ज्येष्ठा	3	05 38
12		ज्येष्ठा	4	12 19
15	धनु	मूल	1	18 57
19		मूल	2	01 33
22		मूल	3	08 08
25		मूल	4	14 41
28		पू. षा.	1	21 14

तारीख 2005 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा.स्टैं.टा) घं. मि.
सन् 2005 ई.				
जनवरी 1		पू. षा.	2	03 45
4		पू. षा.	3	10 15
7		पू. षा.	4	16 44
10		उ. षा.	1	23 12
14	मकर	उ. षा.	2	05 42
17		उ. षा.	3	12 15
20		उ. षा.	4	18 51
24		श्रवण	1	01 30
27		श्रवण	2	08 13
30		श्रवण	3	15 00
फरवरी 2		श्रवण	4	21 50
6		धनिष्ठा	1	04 43
9		धनिष्ठा	2	11 40
12	कुम्भ	धनिष्ठा	3	18 43
16		धनिष्ठा	4	01 53
19		शत.	1	09 11
22		शत.	2	16 36
26		शत.	3	00 08
मार्च 1		शत.	4	07 48
4		पू. भा.	1	15 35
7		पू. भा.	2	23 28
11		पू. भा.	3	07 28
14	मीन	पू. भा.	4	15 38
17		उ. भा.	1	23 57
21		उ. भा.	2	08 27
24		उ. भा.	3	17 06
28		उ. भा.	4	01 55

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (संवत् 2061 वि..)

सूर्य—चार (सन् 2005 ई.)

तारीख 2005 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा. स्टैं. टा)	मि.
31		रेवती	1	10	53
अप्रैल 3		रेवती	2	19	59
7		रेवती	3	05	14

मंगल—चार (सन् 2004 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मार्च 22		कृत्तिका	4	10	52
27		रोहिणी	1	15	47
अप्रैल 1		रोहिणी	2	20	49
7		रोहिणी	3	02	01
12		रोहिणी	4	07	23
17		मृग.	1	12	51
22		मृग.	2	18	27
28	मिथुन	मृग.	3	00	13
मई 3		मृग.	4	06	09
8		आर्द्रा	1	12	16
13		आर्द्रा	2	18	33
19		आर्द्रा	3	00	56
24		आर्द्रा	4	07	26
29		पुनर्वसु	1	14	03
जून 3		पुनर्वसु	2	20	49
9		पुनर्वसु	3	03	42
14	कर्क	पुनर्वसु	4	10	38
19		पुष्य	1	17	36
25		पुष्य	2	00	35
30		पुष्य	3	07	37
जुलाई 5		पुष्य	4	14	41
10		आश्ले.	1	21	43
16		आश्ले.	2	04	39

मंगल—चार (सन् 2004-2005 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा. स्टैं. टा)	मि.
जुला. 21		आश्ले.	3	11	31
26		आश्ले.	4	18	18
अगस्त 1	सिंह	मघा	1	01	00
6		मघा	2	07	33
11		मघा	3	13	56
16		मघा	4	20	06
22		पू. फा.	1	02	04
27		पू. फा.	2	07	50
सितम्बर 1		पू. फा.	3	13	22
6		पू. फा.	4	18	38
11		उ. फा.	1	23	35
17	कन्या	उ. फा.	2	04	13
22		उ. फा.	3	08	33
27		उ. फा.	4	12	35
अक्तूबर 2		हस्त	1	16	17
7		हस्त	2	19	36
12		हस्त	3	22	31
18		हस्त	4	01	03
23		चित्रा	1	03	14
28		चित्रा	2	05	02
नवम्बर 2	तुला	चित्रा	3	06	26
7		चित्रा	4	07	24
12		स्वाती	1	07	56
17		स्वाती	2	08	04
22		स्वाती	3	07	48
27		स्वाती	4	07	08
दिसम्बर 2		विशाखा	1	06	02
7		विशाखा	2	04	30

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा. स्टैं. टा)	मि.
दिसं. 12		विशाखा	3	02	32
17	वृश्चिक	विशाखा	4	00	10
21		अनुराधा	1	21	25
26		अनुराधा	2	18	16
31		अनुराधा	3	14	42
सन् 2005 ई.					
जनवरी 5		अनुराधा	4	10	42
10		ज्येष्ठा	1	06	18
15		ज्येष्ठा	2	01	32
19		ज्येष्ठा	3	20	24
24		ज्येष्ठा	4	14	55
29	धनु	मूल	1	09	03
फरवरी 3		मूल	2	02	48
7		मूल	3	20	11
12		मूल	4	13	15
17		पू. षा.	1	06	01
21		पू. षा.	2	22	29
26		पू. षा.	3	14	38
मार्च 3		पू. षा.	4	06	28
7		उ. षा.	1	22	00
12	मकर	उ. षा.	2	13	18
17		उ. षा.	3	04	24
21		उ. षा.	4	19	18
26		श्रवण	1	10	01
31		श्रवण	2	00	32
अप्रैल 4		श्रवण	3	14	52
9		श्रवण	4	05	07

बुध—चार (सन् 2004 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा. स्टैं. टा)	मि.
मार्च 21		रेवती	3	21	12
23		रेवती	4	23	08
26	मेष	अश्विनी	1	07	14
29		अश्विनी	2	02	55
अप्रैल 2		अश्विनी	3	06	28
7	वक्री			01	58
12		अश्विनी	2	04	44
17		अश्विनी	1	10	25
22	मीन	रेवती	4	06	20
30	मार्गी			18	36
मई 9	मेष	अश्विनी	1	07	23
13		अश्विनी	2	16	03
17		अश्विनी	3	01	40
20		अश्विनी	4	00	04
22		भरणी	1	15	24
25		भरणी	2	01	41
27		भरणी	3	08	06
29		भरणी	4	11	23
31		कृत्तिका	1	12	02
जून 2	वृष	कृत्तिका	2	10	26
4		कृत्तिका	3	06	54
6		कृत्तिका	4	01	40
7		रोहिणी	1	18	57
9		रोहिणी	2	10	59
11		रोहिणी	3	01	56
12		रोहिणी	4	16	01
14		मृग.	1	05	24
15		मृग.	2	18	17

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2061 वि.)

बुध–चार (सन् 2004-2005 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टै. टा) घं. मि.
जून 17	मिथुन	मृग.	3	06 51
18		मृग.	4	19 16
20		आर्द्रा	1	07 43
21		आर्द्रा	2	20 23
23		आर्द्रा	3	09 26
24		आर्द्रा	4	23 01
26		पुनर्वसु	1	13 18
28		पुनर्वसु	2	04 25
29		पुनर्वसु	3	20 31
जुलाई 1	कर्क	पुनर्वसु	4	13 45
3		पुष्य	1	08 15
5		पुष्य	2	04 11
7		पुष्य	3	01 42
9		पुष्य	4	01 00
11		आश्ले.	1	02 18
13		आश्ले.	2	05 55
15		आश्ले.	3	12 12
17		आश्ले.	4	21 45
20	सिंह	मघा	1	11 22
23		मघा	2	06 24
26		मघा	3	09 24
30		मघा	4	01 59
अगस्त 4		पू. फा.	1	04 48
10	वक्री			06 03
16		मघा	4	01 10
20		मघा	3	19 39
24		मघा	2	14 48
28		मघा	1	23 32

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टै. टा) घं. मि.
सितम्बर 2	मार्गी			18 39
7		मघा	2	08 59
11		मघा	3	02 01
13		मघा	4	17 23
15		पू. फा.	1	23 27
18		पू. फा.	2	00 44
19		पू. फा.	3	23 19
21		पू. फा.	4	20 18
23		उ. फा.	1	16 24
25	कन्या	उ. फा.	2	12 06
27		उ. फा.	3	07 42
29		उ. फा.	4	03 27
30		हस्त	1	23 31
अक्तूबर 2		हस्त	2	20 02
4		हस्त	3	17 06
6		हस्त	4	14 45
8		चित्रा	1	13 03
10		चित्रा	2	12 02
12	तुला	चित्रा	3	11 42
14		चित्रा	4	12 05
16		स्वाती	1	13 10
18		स्वाती	2	14 56
20		स्वाती	3	17 24
22		स्वाती	4	20 32
25		विशाखा	1	00 22
27		विशाखा	2	04 51
29		विशाखा	3	10 02
31	वृश्चिक	विशाखा	4	15 55

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा. स्टै. टा)
नवम्बर 2		अनुराधा	1	22 33
5		अनुराधा	2	06 02
7		अनुराधा	3	14 31
10		अनुराधा	4	00 15
12		ज्येष्ठा	1	11 37
15		ज्येष्ठा	2	01 20
17		ज्येष्ठा	3	18 41
20		ज्येष्ठा	4	18 26
24	धनु	मूल	1	08 34
30	वक्री			17 47
दिसम्बर 6	वृश्चिक	ज्येष्ठा	4	08 21
9		ज्येष्ठा	3	03 23
11		ज्येष्ठा	2	13 38
14		ज्येष्ठा	1	05 34
19		अनुराधा	4	05 09
20	मार्गी			12 00
21		ज्येष्ठा	1	19 50
27		ज्येष्ठा	2	17 42
31		ज्येष्ठा	3	04 24
सन् 2005 ई.				
जनवरी 3		ज्येष्ठा	4	02 59
5	धनु	मूल	1	19 44
8		मूल	2	09 01
10		मूल	3	19 59
13		मूल	4	05 16
15		पू. षा.	1	13 14
17		पू. षा.	2	20 07

तारीख 2005 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टै. टा) घं. मि.
जन. 20		पू. षा.	3	02 04
22		पू. षा.	4	07 10
24		उ. षा.	1	11 30
26	मकर	उ. षा.	2	15 03
28		उ. षा.	3	17 53
30		उ. षा.	4	19 59
फरवरी 1		श्रवण	1	21 21
3		श्रवण	2	22 00
5		श्रवण	3	21 55
7		श्रवण	4	21 08
9		धनिष्ठा	1	19 38
11		धनिष्ठा	2	17 27
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	14 36
15		धनिष्ठा	4	11 07
17		शत.	1	07 03
19		शत.	2	02 29
20		शत.	3	21 28
22		शत.	4	16 08
24		पू. भा.	1	10 39
26		पू. भा.	2	05 13
28		पू. भा.	3	00 06
मार्च 1	मीन	पू. भा.	4	19 43
3		उ. भा.	1	16 37
5		उ. भा.	2	15 41
7		उ. भा.	3	18 21
10		उ. भा.	4	03 28
13		रेवती	1	02 06
18		रेवती	2	15 41

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (संवत् 2061 वि.)

बुध – चार (सन् 2005 ई.)

तारीख 2005 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टैं. टा) घं. मि.
मार्च 20	वक्री			05 45
21		रेवती	1	20 22
28		उ. भा.	4	00 46
अप्रैल 1		उ. भा.	3	00 54
5		उ. भा.	2	12 52

गुरु – चार सन् 2004 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टैं. टा) घं. मि.
अप्रैल 1		पू. फा.	1	22 45
मई 5	मार्गी			09 04
जून 8		पू. फा.	2	05 10
जुलाई 5		पू. फा.	3	01 06
25		पू. फा.	4	02 45
अगस्त 11		उ. फा.	1	16 19
27	कन्या	उ. फा.	2	23 39
सितम्बर 12		उ. फा.	3	15 43
28		उ. फा.	4	02 07
अक्तूबर 13		हस्त	1	15 29
29		हस्त	2	17 34
नवम्बर 15		हस्त	3	22 58
दिसम्बर 5		हस्त	4	13 58
31		चित्रा	1	22 05
सन् 2005 ई.				
फरवरी 2	वक्री			07 42
मार्च 6		हस्त	4	17 14
अप्रैल 4		हस्त	3	04 55

शुक्र – चार (सन् 2004 - 2005 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टैं. टा) घं. मि.
मार्च 22		भरणी	4	00 22
25		कृत्तिका	1	06 17
28	वृष	कृत्तिका	2	13 51
31		कृत्तिका	3	23 22
अप्रैल 4		कृत्तिका	4	11 15
8		रोहिणी	1	02 04
11		रोहिणी	2	20 34
15		रोहिणी	3	19 52
20		रोहिणी	4	01 46
24		मृग.	1	17 31
30		मृग.	2	02 11
मई 7	मिथुन	मृग.	3	01 50
18	वक्री			03 58
28	वृष	मृग.	2	17 27
जून 4		मृग.	1	05 21
9		रोहिणी	4	14 40
15		रोहिणी	3	05 35
23		रोहिणी	2	05 18
30	मार्गी			04 48
जुलाई 7		रोहिणी	3	09 40
16		रोहिणी	4	00 36
21		मृग.	1	21 40
26		मृग.	2	20 43
31	मिथुन	मृग.	3	07 45
अगस्त 4		मृग.	4	10 58
8		आर्द्रा	1	08 41
12		आर्द्रा	2	02 16
15		आर्द्रा	3	16 41

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा. स्टैं. टा)
अग. 19		आर्द्रा	4	04 33
22		पुनर्वसु	1	14 20
25		पुनर्वसु	2	22 21
29		पुनर्वसु	3	04 50
सितम्बर 1	कर्क	पुनर्वसु	4	09 59
4		पुष्य	1	13 57
7		पुष्य	2	16 53
10		पुष्य	3	18 53
13		पुष्य	4	20 04
16		आश्ले.	1	20 31
19		आश्ले.	2	20 19
22		आश्ले.	3	19 30
25		आश्ले.	4	18 07
28	सिंह	मघा	1	16 14
अक्तूबर 1		मघा	2	13 50
4		मघा	3	11 00
7		मघा	4	07 44
10		पू. फा.	1	04 04
13		पू. फा.	2	00 03
15		पू. फा.	3	19 42
18		पू. फा.	4	15 04
21		उ. फा.	1	10 08
24	कन्या	उ. फा.	2	04 57
26		उ. फा.	3	23 31
29		उ. फा.	4	17 51
नवम्बर 1		हस्त	1	11 57
4		हस्त	2	05 50
6		हस्त	3	23 32

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टैं. टा) घं. मि.
नव. 9		हस्त	4	17 03
12		चित्रा	1	10 24
15		चित्रा	2	03 37
17	तुला	चित्रा	3	20 41
20		चित्रा	4	13 38
23		स्वाती	1	06 29
25		स्वाती	2	23 13
28		स्वाती	3	15 51
दिसम्बर 1		स्वाती	4	08 24
4		विशाखा	1	00 50
6		विशाखा	2	17 12
9		विशाखा	3	09 30
12	वृश्चिक	विशाखा	4	01 43
14		अनुराधा	1	17 54
17		अनुराधा	2	10 02
20		अनुराधा	3	02 07
22		अनुराधा	4	18 11
25		ज्येष्ठा	1	10 13
28		ज्येष्ठा	2	02 12
30		ज्येष्ठा	3	18 10
सन् 2005 ई.				
जनवरी 2		ज्येष्ठा	4	10 06
5	धनु	मूल	1	02 01
7		मूल	2	17 54
10		मूल	3	09 47
13		मूल	4	01 38
15		पू. षा.	1	17 30
18		पू. षा.	2	09 22

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (संवत् 2061 वि.)

शुक्र — चार (सन् 2005 ई.)

तारीख 2005 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टैं. टा) घं.	मि.
जन. 21		पू. षा.	3	01	14
23		पू. षा.	4	17	06
26		उ. षा.	1	08	58
29	मकर	उ. षा.	2	00	50
31		उ. षा.	3	16	42
फरवरी 3		उ. षा.	4	08	35
6		श्रवण	1	00	27
8		श्रवण	2	16	20
11		श्रवण	3	08	13
14		श्रवण	4	00	08
16		धनिष्ठा	1	16	04
19		धनिष्ठा	2	08	02
22	कुम्भ	धनिष्ठा	3	00	01
24		धनिष्ठा	4	16	01
27		शत.	1	08	02
मार्च 2		शत.	2	00	05
4		शत.	3	16	09
7		शत.	4	08	14
10		पू. भा.	1	00	20
12		पू. भा.	2	16	28
15		पू. भा.	3	08	39
18	मीन	पू. भा.	4	00	52
20		उ. भा.	1	17	07
23		उ. भा.	2	09	24
26		उ. भा.	3	01	44
28		उ. भा.	4	18	06
31		रेवती	1	10	30
अप्रैल 3		रेवती	2	02	56
5		रेवती	3	19	24
8		रेवती	4	11	54

शनि — चार (सन् 2004-5 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	(भा. स्टैं. टा) घं.	मि.
अप्रैल 9		आर्द्रा	3	09	18
मई 18		आर्द्रा	4	19	35
जून 16		पुनर्वसु	1	05	08
जुलाई 12		पुनर्वसु	2	03	41
अगस्त 7		पुनर्वसु	3	09	39
सितम्बर 6	कर्क	पुनर्वसु	4	04	29
अक्तूबर 29		पुष्य	1	19	44
नवम्बर 8	वक्री			12	13
18		पुनर्वसु	4	04	19
जनवरी 13	मिथुन	पुनर्वसु	3	15	10
मार्च 7		पुनर्वसु	2	15	22
22	मार्गी			08	46
अप्रैल 6		पुनर्वसु	3	03	15

राहु — चार (सन् 2004-5 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मई 14		भरणी	1	16	25
जुलाई 16		अश्विनी	4	14	05
सितम्बर 17		अश्विनी	3	11	45
नवम्बर 19		अश्विनी	2	09	24
जनवरी 21		अश्विनी	1	07	04
मार्च 25	मीन	रेवती	4	04	44

केतु — चार (सन् 2004 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मई 14		स्वाती	3	16	25
जुलाई 16		स्वाती	2	14	05
सितम्बर 17		स्वाती	1	11	45
नवम्बर 19		चित्रा	4	09	25

केतु — चार (सन् 2005 ई.)

तारीख 2004 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा. स्टैं. टा)	
जनवरी 21		चित्रा	3	07	04
मार्च 25	कन्या	चित्रा	2	04	44

यूरेनस — चार (सन् 2004-5 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जून 10	वक्री			20	44
सितम्बर 20		शत.	1	05	22
नवम्बर 12	मार्गी			01	34
जनवरी 1		शत.	2	14	13
मार्च 6		शत.	3	08	31

नेपच्यून — चार (सन् 2004-5 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मई 17	वक्री			16	31
अगस्त 9		श्रवण	3	06	49
अक्तूबर 24	मार्गी			17	38
जनवरी 3		श्रवण	4	10	47

प्लूटो — चार (सन् 2004-5 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मार्च 24	वक्री			19	45
जून 23		ज्येष्ठा	3	23	05
अगस्त 31	मार्गी			01	11
नवम्बर 2		ज्येष्ठा	4	18	35
फरवरी 8	धनु	मूल	1	18	02
मार्च 27	वक्री			08	01

ग्रहों के वक्र मार्ग (सन् 2004-5 ई.)

ग्रह	वक्री मार्गी	तारीख
मंगल पूरा वर्ष मार्गी ही रहेगा ।		
बुध	वक्री	अप्रै. 7
बुध	मार्गी	अप्रै. 30
बुध	वक्री	अग. 10
बुध	मार्गी	सितं. 2
बुध	वक्री	नवं. 30
बुध	मार्गी	दिसं. 20
बुध	वक्री	मार्च 20
गुरु	मार्गी	मई 5
गुरु	वक्री	फर. 2
शुक्र	वक्री	मई 18
शुक्र	मार्गी	जून 30
शनि	वक्री	नवं. 8
शनि	मार्गी	मार्च 22
यूरेनस	वक्री	जून 10
यूरेनस	मार्गी	नवं. 12
नेपच्यून	वक्री	मई 17
नेपच्यून	मार्गी	अक्तू. 24
प्लूटो	वक्री	मार्च 24
प्लूटो	मार्गी	अग. 31
प्लूटो	वक्री	मार्च 27

ग्रहों के उदय - अस्त। (सन् 2004-5 ई.)

ग्रह	उदय अस्त	तारीख
मंगल	अस्त	जुला. 25
मंगल	उदय	नवं. 5
बुध	प. अ.	अप्रै. 8
बुध	पू. उ.	अप्रै. 25
बुध	पू. अ.	जून 7
बुध	प. उ.	जून 30
बुध	प. अ.	अग. 16
बुध	पू. उ.	सितं. 1
बुध	पू. अ.	सितं. 20
बुध	प. उ.	अक्तू. 26
बुध	प. अ.	दिसं. 4
बुध	पू. उ.	दिसं. 16
बुध	पू. अ.	जन. 25
बुध	प. उ.	मार्च 2
बुध	प. अ.	मार्च 21
बुध	पू. उ	अप्रै. 6
गुरु	अस्त	सितं. 6
गुरु	उदय	अक्तू. 2
शुक्र	प. अ	जून 4
शुक्र	पू. उ.	जून 13
शुक्र	पू. अ.	फर. 12
शनि	अस्त	जून 20
शनि	उदय	जुला. 27

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

अंग्रेज़ी तारीख		वैशाख प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

ज्येष्ठ

अंग्रेज़ी तारीख		ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२.०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	५ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३४	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून १४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई १	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५५
८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई १६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३२
अगस्त १	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त १६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर १	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर १६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५४	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर १	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में इष्टकाल [भा.स्टै.टा.]

कार्तिक

अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर १	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर १५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर १	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
२	१८	८ १०	१० १४	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

माह	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१८ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा १	७ २८											

माह	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा १	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में [illegible] स्पष्टकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	फाल्गुन तिथि	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	४ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

मास	अंग्रेज़ी तारीख	चैत्र तिथि	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३५	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३४	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचाग में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२६	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३२	-३१	-२०	-११	-२
[illegible]	+३	+३	+३	-३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+?	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलोर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
ोला (म.)	२०	४२	७७	२	—२१	५२
रतल्ला (त्रि.)	२३	४९	९१	१८	+३५	१२
लेश्वर (गु.)	२१	३८	७३	३	—३७	४८
नूर (का.)	३२	५४	७४	४५	—३१	०
न्ता (म.)	२०	३३	७५	४८	—२६	४८
मेर (रा.)	२६	२७	७४	४२	—३१	१२
न्तनाग (का.)	३३	४३	७५	१७	—२८	५२
मलै (ता.)	१०	३४	७६	५०	—२२	४०
पशहर (उ.प्र.)	२८	२१	७८	१६	—१६	५६
रावती (म.)	२०	५६	७७	४८	—१८	४८
रेली (ग.)	२१	३६	७१	१५	—४५	०
मरोहा (उ.प्र.)	२८	५४	७८	३१	—१५	५६
मृतसर (पं.)	३१	३७	७४	५५	—३०	२०
मेठी (उ.प्र.)	२६	८	८१	५०	—२	४०
म्बाला (ह.)	३०	२१	७६	५२	—२२	३२
अयोध्या (उ.प्र.)	२६	४८	८२	१४	—१	४
अरकोणम् (ता.)	१३	५	७९	४३	—११	८
अर्की (हि.प्र.)	३१	९	७६	५८	—२२	८
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९	३७	७९	४०	—११	२०
अलवर (रा.)	२७	३४	७६	३८	—२३	२८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७	५४	७८	६	—१७	३६
अहमदनगर (मं.)	१९	५	७४	४८	—३०	४८
अहमदाबाद (गु.)	२३	२	७२	३८	—३९	२८
आगरा (उ.प्र.)	२७	१०	७८	५	—१७	४०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६	५	८३	१२	+२	४८
आनन्द (गु.)	२२	३२	७६	०	—३८	०
आबू (राज.)	२४	४०	७३	४५	—३९	०
आरा (बि.)	२५	३४	८४	३४	+८	१६
आसनसोल (बं.)	२३	४२	८७	१	+१८	४
इटारसी (म.प्र.)	२२	३७	७७	४५	—१९	०
इटावा (उ.प्र.)	२६	४७	७९	२	—१३	५२
इन्दौर (म.प्र.)	२२	४४	७५	५०	—२६	४०
इम्फाल (मणि.)	२४	४४	९३	५८	—४५	५२
उज्जैन (म.प्र.)	२३	९	७४	४३	—२७	८
उदयपुर (रा.)	२४	३५	७३	४२	—३५	१२
उन्नाव (उ.प्र.)	२६	३४	८०	३०	—८	०
ऊधमपुर (का.)	३२	५५	७५	७	—२९	३२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
ऊना (हि.प्र.)	३१	३२	७६	१८	—२४	४८
एकलिंगजी (राज.)	२४	४३	७३	४६	—३४	५६
एटा (उ.प्र.)	२७	३५	७८	४०	—१५	२०
एर्नाकुलम् (के.)	१०	०	७६	१५	—२५	०
एलिचपुर (म.)	२१	१८	७७	३३	—१९	४८
एलेप्पे (के.)	९	३०	७६	२३	—२४	२८
ऐलोरा (म.)	२०	२	७५	१३	—२९	८
औरंगाबाद (आं.)	१९	५३	७५	२३	—२८	२८
कटक (उ.)	२०	२८	८५	५४	+१३	३६
कटनी (म.प्र.)	२३	५०	८०	२३	—८	२८
कटुआ (का.)	३२	१७	७५	३६	—२७	३६
कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०	५७	७७	६	—२१	३६
कन्नौज (उ.प्र.)	२७	३	७९	५८	—१०	८
कपूर्थला (पं.)	३१	२३	७५	२५	—२८	२०
करतारपुर (पं.)	३१	२७	७५	३२	—२७	५२
करनाल (हरि.)	२९	४२	७७	२	—२१	५२
करौली (रा.)	२६	३०	७७	४	—२१	४४
कलकत्ता (बं.)	२२	३४	८८	२४	+२३	३६
कसौली (हि.प्र.)	३०	५३	७७	१	—२१	५६
काँगड़ा (हि.प्र.)	३२	५	७६	१८	—२४	४८
कांचीपुरम् (ता.)	१२	५०	७९	४५	—११	०
काठियावाड़ (गु.)	२२	०	७१	०	—४६	०
कानपुर (उ.प्र.)	२६	२७	८०	२४	—८	२४
कारगिल (का.)	३४	३०	७६	१३	—२५	८
कालका (ह.)	३०	५०	७७	१	—२१	५६
काशी (उ.प्र.)	२५	२०	८३	०	+२	०
किसनगढ़ (राज.)	२७	५३	७०	३७	—४७	३२
कुराली (पं.)	३०	५०	७६	३५	—२३	४०
कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०	०	७६	४८	—२२	४८
कुल्लू (हि.प्र.)	३१	५८	७७	६	—२१	३६
कुमारी (अन्तरीप)	८	५	७७	३४	—१९	४४
कुम्भकोणम् (ता.)	१०	५८	७९	२५	—१२	२०
कैथल (ह.)	२९	४८	७६	२६	—२४	१६
कोचीन (के.)	९	५८	७६	१७	—२४	५२
कोटखाई (हि.प्र.)	३१	८	७७	३६	—१९	३६
कोटा (राज.)	२५	१०	७५	५२	—२६	३२
कोडै कनाल (ता.)	१०	१३	७७	३२	—१९	५२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
कोल्हापुर (म.)	१६	४२	७४	१६	—३२	५६
कोहिमा (ना.)	२५	४१	९४	७	+४६	२८
खन्ना (पं.)	३०	४२	७६	१३	—२५	८
खुर्जा (उ.प्र.)	२८	१५	७७	५०	—१८	४०
गया (बिहार)	२४	४९	८५	१	+१०	४
गंगटोक (सि.)	२७	२०	८८	४०	+२४	४०
गढ़शंकर (पं.)	३१	१३	७६	११	—२५	१६
गाजियाबाद (उ.प्र.)	[illegible]	४०	७७	२८	—२०	८
गाजीपुर (उ.प्र.)	२५	३४	८३	३५	+४	२०
गिलगित (का.)	३५	५५	७४	२२	—३२	३२
गुड़गांव (हरि.)	२८	२७	७७	४	—२१	४४
गुरदासपुर (पं.)	३२	२	७५	२७	—२८	१२
गोंड़ा (उ.प्र.)	२७	१०	८१	५७	—२	१२
गोरखपुर (उ.प्र.)	२६	४५	८३	२४	+३	३६
गोहाटी (आसाम)	२६	११	९१	४५	+३७	०
ग्वालियर (म.प्र.)	२६	१४	७८	१०	—१७	२०
चण्डीगढ़ (पं.)	३०	४४	७६	५२	—२२	३२
चन्दौसी (उ.प्र.)	२८	२७	७८	४९	—१४	४४
चम्बा (हि.प्र.)	३२	२९	७६	१०	—२५	२०
चित्तौडगढ़ (रा.)	२४	५४	७४	४२	—३१	१२
चीरापूंजी (मे.)	२५	१७	९१	४७	+३७	८
चूरू (राज.)	२८	१९	७५	१	—२९	५६
छतरपुर (म. प्र.)	२४	५४	७९	३८	—११	२८
छपरा (बिहार)	२५	४७	८४	४१	+८	४४
जबलपुर (म.प्र.)	२३	१०	७९	५९	—१०	४
जम्मू (का.)	३२	४४	७४	५४	—३०	२४
जयपुर (राज.)	२६	५५	७५	५२	—२६	३४
जलगांव (म.)	२१	५	७५	४०	—२७	२०
जलपाई गुड़ी (बं.)	२६	३२	८८	४६	+२५	४
जामनगर (गुज.)	२२	२७	७०	७	—४९	३२
जालंधर (पं.)	३१	१९	७५	३४	—२७	४०
जालोर (राज.)	२५	२२	७२	३८	—३९	२८
जलोन (उ.प्र.)	२६	८	७९	२३	—१२	२८
जीन्द (हरि.)	२९	१९	७६	२३	—२४	२८
जूनागढ़ (गु.)	२१	३१	७०	३६	—४७	३६
जैसलमेर (राज.)	२६	५५	७०	५७	—४६	१२
जोगिन्दर नगर (हि.प्र)	३१	५०	७६	४५	—२३	०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
जोधपुर (राज.)	२६	१८	७३	४	—३७	४४
जौनपुर (उ. प्र.)	२५	४६	८२	४४	+०	५६
ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१	५६	७६	२२	—२४	३२
जालना (म.)	१९	५१	७५	५६	—२६	१६
झरिया (बि.)	२३	५०	८६	३३	+१६	१२
झांसी (उ.प्र.)	२५	२७	७८	३७	—१५	३२
झालरापाटन (रा.)	२४	३२	७६	१२	—२५	१२
झालाबाड़ (रा.)	२४	३६	७४	९	—३३	२४
झुंझुनू (रा.)	२८	६	७५	२५	—२८	२०
टांडाउरमुर (पं.)	३१	४०	७५	४१	—२७	१६
टिहरी (उ.प्र.)	३०	२०	७८	२०	—१६	०
टोंक (राज.)	२६	११	७५	५०	—२६	४०
टोडारायसिंह (रा.)	२६	०	७५	२९	—२८	४
ट्रावनकोर (के.)	९	०	७७	०	—२२	०
डगशई (हि.प्र.)	३०	५३	७७	६	—२१	३६
डलहोजी (हि.प्र.)	३२	३२	७५	५९	—२६	४
डिबाई (उ.प्र.)	२८	१२	७८	१५	—१७	०
डिब्रूगढ़ (आ.)	२७	२९	९४	५६	+४९	४४
डीडवाना (राज.)	२७	२४	७४	३४	—३१	४४
डीसा (गु.)	२४	१४	७२	१३	—४१	८
डूंगरपुर (राज.)	२३	५०	७६	४६	—३५	८
तिरुपति (आंध्र.)	१३	४०	७९	२०	—१२	५०
त्रिचनापल्ली (ता.)	१०	५०	७८	४६	—१४	५६
त्रिचुर (के.)	१०	३०	७६	१५	—२५	०
त्रिवेन्द्रम् (के.)	८	३०	७६	५७	—२२	१२
थराड (गु.)	२४	२३	७१	३७	—४३	३२
थानेसर (हरि.)	२९	५८	७६	५६	—२२	१६
दतिया (म.प्र.)	२५	३९	७८	२७	—१६	१२
दमोह (म.प्र.)	२३	५०	७९	२९	—१२	४
दरभंगा (बिहार)	२६	१०	८५	५७	+१३	४८
दसूआ (पं.)	३१	४९	७५	४२	—२७	१२
दार्जिलिंग (बं.)	२७	३	८८	१८	+२३	१२
दिल्ली	२८	३८	७७	१२	—२१	१२
दीनानगर (पं.)	३२	८	७५	३१	—२७	५६
देवबन्द (उ.प्र.)	२९	४२	७७	४३	—१९	८
देवरिया (उ.प्र.)	२३	३३	८३	४५	+५	०
देवास (म.प्र.)	२२	५८	७६	६	—२५	३६

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्डअन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. फ.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
डोड़वाना	२७ २४	७४ ३४	३१ ४४	पीपार रोड़	२६ २७	७३ २७	३६ १२	मकराना	२७ ३	७४ ४३	३१ ८	शाहपुरा(भीलवाड़ा)	२५ ४०	७४ ५०	३० ४०
डूंगरपुर	२३ ५०	७३ ४३	३५ ८	पुनासर	२७ २	७३ २	३७ ५२	मण्डलगढ़	२५ १२	७५ ९	२९ २४	ग्रोओं	२६ ११	७१ १५	४५ ००
डेगाना	२६ ५०	७४ १८	३२ ४८	पुष्कर	२८ ३०	७४ ३३	३१ ४८	महला	२६ ५०	७५ ३०	२८ ०	शेरगढ़ (जोधपुर)	२६ २५	७२ २१	४० ३६
तिजारा	२७ ५५	७६ ५०	२२ ४०	पूगल	२८ ३१	७२ ४७	३८ ५२	महाजन	२८ ४८	७३ ५६	३४ १६	सेरगढ़(झालाबाड़)	२४ ४०	७६ ३२	२३ ५२
थाना कस्बा	२५ १३	७७ २०	२० ४०	प्रसाद	२४ ११	७३ ४२	३५ १२	मांगरोल	२५ २०	७६ ३०	२४ ०	श्री गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०
धाना गाजी	२७ २५	७६ १९	२४ ४४	फतेहपुर	२८ ०	७५ ०	३० ०	मारवाड़ जंक्शन	२५ ४३	७३ ४५	३५ ०	श्री डूगरगढ़	२८ ६	७४ १	३३ ५६
दान्ता	२४ १२	७२ ४७	३८ ५२	फलौदी	२७ ९	७२ २२	४० ३२	मालपुरा	२६ १८	७५ २५	२८ २०	श्री माधोपुर	२७ २५	७५ ३२	२७ ५२
देओरा	२६ ३०	७० ४२	४७ १२	फुलेरा	२६ ५२	७५ १६	२८ ५६	मावली	२४ ४७	७३ ५८	३४ ८	श्री मोहनगढ़	२७ १७	७१ १२	४५ १२
देचू	२६ ४७	७२ २०	४० ४०	बड़ी सादड़ी	२४ २५	७४ २८	३२ ८	मेड़ता	२६ ३९	७४ ६	३३ ६	सम	२६ ५०	७० ३१	४७ ५६
देवलिया	२४ ३	७४ ४३	३१ ८	पोखरन	२६ ५५	७१ ५५	४२ २०	मेड़ता रोड़	२६ ४३	७३ ५५	३४ २०	समदरी	२५ ४९	७२ ३५	३९ ४०
देवली	२५ ४६	७५ २५	३८ २०	बनस्थली	२६ २३	७५ ५०	२६ ४०	भियालजर	२६ १८	७० २२	४८ ३२	सरदार शहर	२८ २७	७४ ३०	३२ ००
देवीकोट	२६ ४२	७१ १२	४५ १२	बयाना	२६ ५४	७७ १७	२० ५२	मुकन्दवाड़ा	२४ ४९	७५ ५९	२६ ४	सरवार	२६ २	७४ ५५	३० २०
देशनोक	२७ ४८	७३ २१	३६ ३६	बान्दनवाड़ा	२६ ०	७४ ४२	३१ १२	मुनबाओ	२५ ४३	७० १५	४९ ०	सरूप सर	२९ २२	७३ ३७	३५ ३२
देसुरी	२५ २०	७३ ३७	३५ ३२	बस्वा	२७ ६	७६ ३२	२३ ५२	मोदरी	२४ २५	७३ २५	३६ २०	सवाई माधोपुर	२५ ५८	७६ २५	२४ २०
धौलपुर	२६ ४२	७७ ५३	१८ २८	बान्दी कुई	२७ ३	७६ ३५	२३ ४४	मोहनगढ़	२७ १७	७१ १८	४४ ४८	सहारा	२५ १५	७४ १६	३२ ५६
नरैना	२६ ५०	७४ ११	३३ १६	बाड़मेर	२५ ४५	७१ २५	४४ २०	रतनगढ़	२८ ५	७४ ३९	३१ २४	सागवाड़ा	२३ ४१	७४ १	३३ ५६
नवलगढ़	[illegible] ५१	७५ १८	२८ ४८	बाड़ी	२६ ३९	७७ ३६	१९ ३६	राजगढ़	२८ ३९	७५ २६	२८ १६	सांगानेर	२६ ४९	७५ ४९	२६ ४४
नसीराबाद	२६ १८	७४ ४६	३० ५६	बाप	२७ २२	७२ २२	४० ३२	रानीवाड़ा	२४ ४५	७२ १३	४१ ८	सांगोढ़	२४ ५५	७६ २१	२४ ३६
नागौर	२७ ११	७३ ४४	३५ ४	बारन	२५ ६	७६ ३०	२४ ०	रामगढ़ (जयपुर)	२७ १५	७५ १०	२९ २०	सांचोर	२४ ४०	७१ ५०	४२ ४०
नाचना	२६ २९	७१ ४५	४३ १०	बांसवाड़ा	२३ ३०	७४ २४	३२ २४	रामगढ़(जैसलमेर)	२७ २०	७० ३०	४८ ०	साम्भर	२६ ५४	७५ १०	२९ २०
नाथद्वारा	२४ ५६	७३ ५०	३४ ४०	बाली	२५ ५०	७४ ५	३३ ४०	रामदेवरा	२७ ०	७१ ५२	४२ ३४	सादूलपुर	२८ ३८	७५ २४	२८ २४
निम्बेहड़ा	२४ ३७	७४ ४५	३१ ०	बालोतरा	२५ ४९	७२ १४	४१ ४	रायसिंह नगर	२९ २२	७३ २७	३६ १२	सिन्दरी	२५ ३३	७१ ५५	४२ २०
नीम का थाना	२७ ४४	७५ ४८	२६ ४८	बिरसलपुर	२८ १०	७२ १५	४१ ०	रिखभदेव	२४ ४	७३ ४०	३५ २०	सिरमुटरा	२६ ३१	७७ २२	२० ३२
नोखा	२७ ३५	७३ २९	३६ ४	बिलारा	२६ १०	७३ ४२	३५ १२	रींगस	२७ २१	७५ ३४	२७ ४४	सिरोही	२४ ५३	७२ ५४	३८ २४
नैनवा	२५ ४५	७५ ५७	२६ १२	बीकानेर	२८ १	७३ २०	३६ ४०	रूपनगर	२६ ४८	७४ ५४	३० २४	सिवाना	२५ ३६	७२ २७	४० १२
नोहर	२९ ११	७४ ४६	३० ५६	बून्दी	२५ २७	७५ ४०	२७ २०	रेनी	२८ ४१	७५ ५	२९ ४०	सीकर	२७ ३६	७५ ९	२९ २४
पचपदरा	२५ ५५	७२ २१	४० ३६	ब्यावर	२६ ६	७४ २०	३२ ४०	लछमनगढ़	२७ ४५	७५ ४	२९ ४४	सुजानगढ़	२७ ४२	७४ ३०	३२ ००
परतापगढ़	२४ २	७४ ४७	३० ५२	भरतपुर	२७ १५	७७ ३०	२० ०	लाठी	२७ ३	७१ ३०	४४ ००	सूरतगढ़	२९ १९	७३ ५७	३४ १२
पर्वतसर	२६ ५२	७४ ४७	३० ५२	भवारी	२५ ४३	७२ ५२	३८ ३२	लाडनूं	२७ ३९	७५ २३	३२ २८	सोजत	२५ ५६	७३ ४२	३५ १२
पल्लू	२८ ५६	७४ १३	३३ ८	भंवरगढ़	२५ ६	७६ ५०	२२ ४०	लालसोत	२६ ३४	७६ २३	२४ २८	हनुमानगढ़	२९ ३५	७४ २१	३२ ३६
पाली	२५ ४६	७३ २०	३६ ४०	भाद्रा	२९ १५	७५ २०	२८ ४०	लूनी	२६ ०	७२ ५२	३८ ३२	हिन्दौन	२६ ४३	७७ १	२१ ५६
पिपिलोदा	२३ ३५	७४ ५०	३० ४०	भीनमाल	२५ ०	७२ १९	४० ४४	लोहारिया	२३ ४८	७४ १५	३३ ००				
पिरावा	२४ १३	७६ ३	२५ ४८	भीम	२५ ३९	७४ ९	३३ २४	शाहगढ़	२७ ८	६९ ५७	५० १२				
पिलानी	२८ २३	७५ ३५	२७ ४०	भीलवाड़ा	२५ २१	७४ ४०	३१ २०	शाहपुरा (जयपुर)	२७ २३	७५ ५८	२६ ८				

दुनिया के कुछ देशों के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं.मि. को उस देश या प्रदेश के स्टैं. टा. में धन (+) ऋण (-) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा. स्टैं. टा. ज्ञात हो जाएगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
न	-२।३०
फगानिस्तान	-१।००
र्जेन्टाइना	-८।३०
स्ट्रेलिया	
कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+४।०
प.आस्ट्रेलिया	+२।३०
ऑस्ट्रिया	-४।३०
बेल्जियम	-४।३०
बर्मा	+१।०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	-९।०*
एटलांटिक टाईम(A.T)	-९।३०*
ईस्टर्न टाईम(E.T)	-१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पैसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
सिलोन	०।०
चीन	+२।३०
कोलम्बिया	-१०।३०
क्युबा	-१०।३०*
चेकोस्लावाकिया	-४।३०*
डेन्मार्क	-४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	-३।३०*
इथोपिया	-२।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
फिन्लैण्ड	-३।३०
फ्रांस	-४।३०
जर्मनी	-४।३०
घाना	-५।३०
ग्रीस	-३।३०
हांककांग	+२।३०
हंगरी	-४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा,जावा,बाली, बांगका,बिलीटान	+१।३०
बोर्नियो, सेलीबिस, टिमोर, फ्लोर्स	+२।३०
आरु, केई,टनिमबर, मोलुक्कस,प०इरियन	+३।३०
ईरान(पर्सिया)	-२।०
ईराक	-२।३०
आयरलैण्ड (उ.)	-५।३०*
इजरायल	-३।३०
इटली, सिसली	-४।३०*
जापान	+३।३०
जार्डन	-३।३०
केन्या	-२।३०
कोरिया	+३।३०
कुवैत	-२।३०
मलेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+२।०
सरवक	+२।३०
मारिशस	-१।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
मैक्सिको	
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०
नीदरलैण्ड्स(हालैण्ड)	-४।३०
न्यूजीलैण्ड	+६।३०
पाकिस्तान	-०।३०
बंगला देश	+०।३०
फिलिपाइन गणतन्त्र	+२।३०
पोलैण्ड	-४।३०*
पुर्तगाल	-४।३०
रोडेशिया,न्यासालैण्ड	-३।३०
रोमानिया	-३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	-२।३०
धहरान, कतर	-१।३०
सिंगापुर	+२।०
सोमाली लैण्ड,सोमालिया	-२।३०
साउथ अफ्रीकन गणतन्त्र	-३।३०
स्पेन	-४।३०
सूडान	-३।३०
स्वीडन	-४।३०
स्विट्जरलैण्ड	-४।३०
सीरिया	-३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+१।३०
टर्की	-३।३०*
युगांडा	-२।३०
इंगलैण्ड	-५।३०*
अमेरिका(U.S.A)	
ईस्टर्न टाईम(E.T)	१०।३०*
सैण्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
रूस(U.S.S.R)	
मास्को	-२।३०
'ब्लैक सी, से कैस्पियन सी तक'	-१।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	-०।३०
ओमस्क,पू. कजक	+०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+१।३०
इर्कुत्स्क	+२।३०
याकुत्स्क,चितिन्स्क द. सकलिन	+३।३०
खबरोव्स्क, ब्लादिवोस्तक उ. सखलिन	+४।३०
मगदन	+५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+१।३०
दक्षिणी	+२।३०
वेनेजुएला	-९।३०
युगोस्लाविया	-४।३०
नेपाल	+०।१५
भूटान	०।०

*इन स्थलों पर Summer Time (ग्रीष्मकाल समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है।
जिन देशों में Summer Time प्रचलित है वहाँ गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी एक घण्टा आगे किए टाईम को Summer Time कहा जाता है।

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखाओं की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है,क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ.प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचाग में दी गई ''अक्षांशादि सारणी'' से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे २९,३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी - पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिये। अन्तर के इन पलों को ''सहायक सारणी'' (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहले कालम में देखिये। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों उन्हे लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम ''अभीष्ट घड़ी पल'' कहेंगे ''अभीष्ट घड़ी पल '' यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। ''अभीष्ट घड़ी पलों'' के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूढ़िये, जिन्हे **''सारणीस्थ घड़ी पल''** कहा जाएगा। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अशों को अलग लिख लीजिए। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिये गए घड़ी पलों का ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' से अन्तर कीजिए। इसे ''सारणीस्थ अन्तर'' कहेंगे। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' और ''अभीष्ट घड़ी पलों'' का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल ''सहायक सारणी'' के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहाँ लिखें हैं, उसके नीचे ''सारणीस्थ अन्तर'' के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि अंशों मे जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई ''अयनाँश संस्कार सारणी'' से अपने संवत के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. स. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा., २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अंश ६क. (उत्तर) हैं, अत: ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५ प. हैं, इन्हे अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५ प. के दाई ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २ प. लिखे हैं। इनका २ घ. ५५ पल. से अन्तर ७ पल है। ''सहायक सारणी'' के बाई ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. नहीं मिली। अत: सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ प. लिखें हैं। इन्हे अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्ट काल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४ प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १घ. ४४ प. नहीं हैं, अत: इससे कुछ कम १ घ. ४० पल सारणी में देखें जो ''सारणीस्थ घड़ी पल'' हैं। इनके बाई ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखें है। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' (१ घ. ४० प.) के दाई ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० पल. से अन्तर ६ प. सारणीस्थ अन्तर है। ''अभीष्ट घड़ी पल'' (१ घ. ४४ प.) ओर सारणीस्थ घड़ी पल (१ घ. ४४ प.) का अन्तर ४ पल है। सहायक सारणी की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ प. के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हे ११ रा. २१ अं. में जोड़ने पर ११ रा. और २१ अ. ४०क. ० वि. हुआ। ''अयनांश संस्कार सारणी '' में वि. सं. २०२९ के आगे + १ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि- इष्ट काल के घ .प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	[illegible]	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	[illegible]	[illegible]	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	[illegible]	[illegible]	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकांट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	[illegible]	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	[illegible]	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधन का उदाहरणः-वि.सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं.३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ,जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प.मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क.० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प.में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प.' अभीष्ट घड़ी-पल' हुए। ''दशमलग्न सारणी'' में इन '' अभीष्ट घड़ी पलों '' से कुछ कम घ.प. ४६।४२'सारणीस्थ घ.पल'. धनु (८)राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं ।अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारिणी में ४६।४२ के दाईं ओर(१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का ''सारणीस्थ अन्तर'' हुआ। ''सारणीस्थ घड़ी पल'' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ी पल ४६।४७ का अन्तर ५पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३०क. ० वि. मिली, इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं.में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ०.वि.हुई। इसमें ''अयनांश संस्कार सारणी'' में वि.सं. २०२९ के आगे दिया गया,अयनांश संस्कार+१क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
६	१०।०	२०।०	३०।०	४०।०	५०।०	६०।०							
७	८।३४	१७।९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०।०						
८	७।३०	१५।०	२२।३०	३०।०	३७।३०	४५।०	५२।३०	६०।०					
९	६।४०	१३।२०	२०।०	२६।४०	३३।२०	४०।०	४६।४०	५३।२०	६०।०				
१०	६।०	१२।०	१८।०	२४।०	३०।०	३६।०	४२।०	४८।०	५४।०	६०।०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९।५	५४।३३	६०।०		
१२	५।०	१०।०	१५।०	२०।०	२५।०	३०।०	३५।०	४०।०	४५।०	५०।०	५५।०	६०।०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३।५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०।०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. सवंत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०२२	+ ७	२०२८	+२	२०३४	-३	२०४०	-८	२०४६	-१३	२०५२	-१८
२०२३	+ ७	२०२९	+१	२०३५	- ४	२०४१	-९	२०४७	-१३	२०५३	-१८
२०२४	+ ६	२०३०	+१	२०३६	- ४	२०४२	-९	२०४८	-१४	२०५४	-१९
२०२५	+ ५	२०३१	०	२०३७	- ५	२०४३	-१०	२०४९	-१५	२०५५	-२०
२०२६	+ ४	२०३२	-१	२०३८	- ६	२०४४	-११	२०५०	-१६	२०५६	-२१
२०२७	+ ३	२०३३	-२	२०३९	- ७	२०४५	-१२	२०५१	-१७	२०५७	-२२

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ म]

साम्पतिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पतिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की ''३ अक्षांश की गति'' है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे ''स्थूल लग्न'' में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का ठदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ नि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह ''स्थूल दशमलग्न'' है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा **''गणकमार्तण्ड''** में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग २ ब]

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१.
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३२	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४७	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	१	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	१	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१३	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३३	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	१	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४८	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	१	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	४०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९५०	६ ३९ २७	१९५७	६ ४० ४०	१९६४	६ ३७ ५६	१९७१	६ ३९ ७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६।३९।५९
१९५१	६ ३८ ३०	१९५८	६ ३९ ४३	१९६५	६ ४० ५५	१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६।३९।०२
१९५२	६ ३७ ३३	१९५९	६ ३८ ४५	१९६६	६ ३९ ५७	१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६।४२।०१
१९५३	६ ४० ३३	१९६०	६ ३७ ४७	१९६७	६ ३९ ००	१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६।४१।०४
१९५४	६ ३९ ३५	१९६१	६ ४० ४७	१९६८	६ ३८ ३	१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६।४०।०७
१९५५	६ ३८ ३८	१९६२	६ ३९ ५०	१९६९	६ ४१ २	१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६।३९।१०
१९५६	६ ३७ ४१	१९६३	६ ३८ ५३	१९७०	६ ४० ५	१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६।४२।०९

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

ता.	जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	९	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	१२	४८	४९	१४	५१	३	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१३	१२	२१	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
३२																२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-५७/+१६१	+१५६	+१४३	+१३१	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं. १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५६	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४६	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३६	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २६	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्र दशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौमदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहुदशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनि दशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुध दशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ. फा. उ. षा	रो. ह. श्रवण	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू. भा.	पुष्य अनु. उ. भा	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू. फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.
र ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	च. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	म. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रहा
आर्द्रा चि. श्र.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य. वि.श.	अश्वि. आश्ले. अनु. पू. भा	भ.म.ज्ये.उ.भा	कृ. पू. फा. मू.रे.	रो.उ.फा.पू.षा.	मृ. ह. उ.षा	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन।
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	म. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ ३ १०	उ ६ ०	सि. ९ १०	सं १३ १०	मं. २	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	स. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है । ६०में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें,लब्ध मास, फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धांक घटी, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्ध पल होगें । यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी ।

वर्षकुंडली में तनु आदि भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखम	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ्	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाहन ला.	पुत्रलाभ	कष्टम्	सुखम्	रोग	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	[illegible]खलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुखम	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहु	शिरोर्ति	राजभी	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी:	कष्टम्	हानि	विजय.	सुलाभ.	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम	यश,अर्थ	पुष्टि	दुखम:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम	भाग्योदय	राज्यप्रा.	लाभ	कष्टम्

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना- वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५ पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्ष प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल साधन प्रकारः- (१.)अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष, (गताब्द) जाने। स्मरण रहे, कि-मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्)। इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक है उनमें जन्म का वार, इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घटयादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२.) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्य तुल्य वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहाँ पर वार को ठीक माने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्न सारणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकार-** गताब्द संख्या में जन्म लग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना जो शेष बचे वह मुन्था जानना। यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा- गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनादि- सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१,राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६०,यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल- सूर्य वर्ष लग्न से ९ चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि. १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल- सू. १।५ च. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गुरु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७, इन राशियों में ५ बल देते हैं। **पुरुषस्त्री-ग्रह- बल-**स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल-** दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनलग्नपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नपति

वर्ष में दृष्टि ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से पांचवे ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल - कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ ओर जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। तीसरे, ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। कार्य कठिनता से एंव गुप्त भाव से सफल हो, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है । फल- शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से बैर, धन हानि, बनते काम को बिगाडना आदि फल होते है ।४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते है । फल - कार्य बडी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णय :- जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३ त्रैराशीश ४ समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिसे राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी) इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखेंवह वर्षेश होगा, । यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से अधिक बलवान हो वही वर्षवेश्वर होगा । कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल. दृष्टि. अधिकार यह तीनों समान हो तो मुन्थेश ही वर्षेश हो । यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो ॥ फल - वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा । यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो ।

वर्ष में तबदीली का योग- वर्ष कुण्डली में लग्नेश - तृतीयेश वा चतर्थेश-नवमेश एक घर में हो या एक दुसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी । अगर वर्ष- लग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी ।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेश काल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३१/६ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए ।

इस सारणी में घं.मि. का प्रयोग है, अत: इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं.टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे- मान लीजिए किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा.स्टैं. टा.) ८ घं. २० मि. (प्रात:) है। उसके वारादि जन्मकाल (२ वा.८घं.२० मि.)में सारणी से गताब्द ९ द्वारा प्राप्त वारादि काल ४ वा. ७घं. २२ मि. जोड़ने पर ६ वा. १५ घं. ४२ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को १५ घं. ४२ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

ध्यान रहे- इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के १२ बजे बदलने वाला होगा। अत: यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार का होना चाहिए ।

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/३/०१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

-वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश -रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए । इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश-रेखांशानुसार ही होना चाहिए । क्योंकि प्राचीन काल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अत: ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है ।

इस विषय को स्पष्टता से समझने के लिए 'सं २०५२ वि. के "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. [illegible] पर छपा मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए ?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब-जब जातक के जन्म-कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश,कला, विकलाओं पर आता है तब-तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मास प्रवेश)होता है । उदाहरणार्थ- यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य २ रा. १० अं. २५ क. ४० वि. है, तो जब जब वह (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों मे मेष आदि राशियों के १० अं. २५ क. ४० वि. पर पहुँचेगा, तब -तब जातक के तत्तद् वर्षों के मासों का प्रारम्भ माना जाएगा। सूर्य अमुक राशि के अमुक अं.क. वि. पर कब पहुँचेगा –इसका निर्णय सूर्य की मास-प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास-प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है । (इसके लिए सं. २०५० वि. के "मार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ ४१ पर दिया गया मेरा लेख **"स्पष्टमान से मास प्रवेश काल"** पढें।)

— प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं.मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श.शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं.श. गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. कं.	ध. मी.	वृष, तुला	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु.स्त्री.नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी, स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास-दिन)

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग - वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवे या सातवें पड़ा हो या पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है । मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवे हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है ।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ)का भाग देना । लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यह मुंथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है ।

अरिष्ट योग :

यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न होऔर जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वहीं आ जाये तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है । वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ कष्ट भय होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा ।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य यह शास्त्र- सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गुरु शुक्रास्त में गया- गोदावरी यात्रा में नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु - शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां - १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र - तीनों उत्तरा मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। शुभ लग्न - जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न हो देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा ४,६,८,९,१४,१५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली [illegible] रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४,८,१२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी ५,९,१ लग्नों की आधी घड़ी ५,९,१५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निर्बल तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृतियोग माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भ मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त - यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ, पुन, पु, ह, मूल और श्रवण नक्षत्रों में १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५, तिथियों में जब लग्न से १,४,५,७,९, और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तो तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध, और शुक्रवार भी शुभ है।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त - गर्भाधान के छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमन्त [illegible] प्राशनान्तानि यानि वै । न दोषो मलम...[illegible] गुरुशुक्रयो: ॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा - गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार - बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुव स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त - रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोडकर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हो, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त - रेवती तीनों उत्तरा. रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में. १.२.३.५.७.१०.११.१३.१५. तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य है। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त - मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४.९.१४. तिथियों को छोडकर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त - संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोडकर १.२.३.५.७.१०.११.१२.१३ तिथयों में जन्मकाल से ११ वें या १२ वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा. रो. ह. अश्विनी पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १,४,५,७,१० स्थनों में शुभग्रह तथा ३.६.११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुक्रवार में मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

सूर्य नक्षत्र से चन्दनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

निष्क्रमण मुहूर्त - स्वा. अश्वि. पुन. ह. मृ. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम, शनि को छोडकर अन्य वारों में, रिक्ता अमा. भद्रादि से रहित शुभ दिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त-पांचवे महीने में पृथ्वी वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा.रो.मृ.ज्ये.अनु.अश्वि.ह.पुष्य.अभि.इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न मे शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र- बांध कर पृथ्वी पर बिठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र-''रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!'' इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त-जन्ममास से ६,८,१० या १२ वें मास में पुत्र का और ५,७,९ या ११वें मास में कन्या का भद्रादि- दोष रहित १,३,५,७,१०,१३,१५ तिथियों में सोम,बुध,गुरु ,और शुक्रवार को म.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पु.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष,वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में १,३,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह रहित हो ,१,६,८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है किसी-किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु,शत-तारिका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त-चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक)जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४,९,१४ तिथियां, जन्मतारा क्षय तिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें दिन या १६वें दिन,६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम,बुध,गुरु ,शुक्रवार को श्र.१.पुन.मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो,१,४,५,७,९,१०,स्थानों में शुभ ग्रह हों,३,६,११,स्थानों में पाप ग्रह हों तुला,वृष,धनु,या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त-कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत.स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त-गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे,५ वे,७ वे वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी)चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र,बुध,गुरु,और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २,३,५,७,१०,११,१३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित)हो, ३,६,११,स्थानों में पापग्रह हो ज्ये.मृ.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.शत.ह.अश्वि.पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। **लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।**

मुण्डन कर्म में विशेष-स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने-अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है। सो ''यथाकुलधर्म वः'' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त-मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ है-वर्जित काल शनि.रवि.भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४,८,९,१४,१५,३, तिथियां संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में,यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन् के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल-यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रुपजीवी जैसे नट-भांड आदि किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार--ब्राह्मण को रविवार, क्षत्रिय सोमवार को,वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त-जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु,सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह.अश्वि.पुष्य.अभि.श्र.स्वा.रे.पुन. आर्द्रा.चित्रा.अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष,कर्क तुला,और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त-उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर)रवि,बुध,गुरु और शुक्रवार को २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में म. आर्द्रा पुन., हस्त,चि.,स्वा. श्र.ध. शत., अश्विनी ,म. तीनों पूर्वा , तीनों उत्तरा , रो. पुष्य, आश्ले, अनु. ,रेवती,नक्षत्रों में , जब लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त - सूर्य , भौम , शनिवार हों ,४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा . भ.कृ.वि.आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है।

सीने पिरोने(सूचिकर्म)का मुहूर्त - अश्वि.पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र , सूर्य, बुध,चन्द्र,गु., श.ये वार ,१।२।३।४।५।६ ७।८।९।१०।११ ।१३ ।१५-ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त - यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है देवताओं की पूजा, संगति(सम्मेलन या कान्फ्रेंस)और जिसमें दान हों , उसे यज्ञ कहते है । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देव पूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु- धागा - विशेष)यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से(गर्भाज्जन्मनो वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें. वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाये तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २५ तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते है। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा. श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रीय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किंतु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु.गु.चं. और लग्नेश ६।८ स्थान में, चं., शु. १२वें स्थान में और १।५।८ वें, में, पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पाप ग्रह ३।६।११ स्थानों, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र, के बाल्य वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिये समय शुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है-ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेला[illegible] सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है। इसके बाईं ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं। लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है। वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के २ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापकसारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों, नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है। राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष की परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है। लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है। सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हो तो योनिदोष का परिहार हो जाता है।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हो तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है। दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है। लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता। इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **"पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति"** पढ़ना चाहिए। यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता। नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' -वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है। 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है। एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो। 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **"ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन"** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न- भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध ठीक ठीक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग' , 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दु:खमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) को राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ १/२ ,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाडी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.
चरण	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.
राशीश	मं.	मं.	मं.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.
नाड़ी	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म	आ	आ.

राशि	कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

राशि	मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	न.	वा.	सिं.	सिं.	अ.	सिं.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग १)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२,	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८ त	१८ ब भ त	२१ ब भ त	२२ ब भ त	२६ ब त र	१७ ब न त र	१९ बन त र	२३ न त	३१ त	२८ ग	२१ ब भ ग	२५ ब भ	१५ ब भ न त	११ ब भ न तर	९ तबभ यनर	१३ ब भ त र
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२९ ग	१९ ब ग भ	२१ ब भ त	१४ ब भ तन	१८ न ब त र	२६ ब त र	२७ ब त र	३१ त	२३ न त	२५ ग त	२० ग ब भ	१८ ब भ न	२६ ब भ	२१ ब भ र	२० ब भ त	४ बभग नतर
	कृत्ति. १	२७ ग त	२९ ग	२८ न	१८ ब भ न	१० ग ब न भ	१६ ग ब भ त	२० ग ब त	२० ग ब त	२१ ग ब त र	२५ ग त	२६ ग त	२३ न त	१६ ब भ न त	२० ग ब भ	२० ग ब भ	१५ ग ब भ	१५ ग ब भ र	१८ ब भ त
वृष	कृत्ति. २,३,४	१८ ग भ त	२० ग भ	१९ भ न	२८ न	२० ग न	२६ ग त	१७ ग ब भ त	१७ ब ग भ त	१८ ग ब भ त	२२ ग त र	२३ ग त र	२० न त र	१८ न ब र त	२२ र ब ग	२२ र ब ग	२१ ग भ	२१ ग भ	२३ भ त
	रोहि. १,२,३,४	२३ भ त	२३ भ त	११ ग भ न	२० ग न	२८ न	३६	२७ ब भ	२३ ब भ त	२२ भ ब त य	२६ त र य	२७ त र	१२ ग न तरय	१० रबग नतय	२४ र ब त य	२७ र ब	२६ भ	२६ भ	२० ग भ
	मृग. १,२	२३ भ त	१४ भ न त	१८ भ त ग	२७ त ग	३५	२८ न	१९ ब भ न	२४ ब भ	२२ ब भ त य	२६ त य र	१९ त र न	२१ त र य ग	१९ गरब त य	१५ र ब नतय	२४ र ब त	२३ भ त	२६ भ	१३ भ न ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ त र	१८ न तर	२२ तर ग	१९ भ ग त	२७ भ	२० भ न	२८ न	३३	३१ त य	१९ भ ब तयर	१२ भ न बतर	१४ भबत यरग	२३ ब त य ग	१९ ब न त य	२८ ब त	३१ त	३४	२१ न ग
	आर्द्रा १,२,३,४	१९ त र न	२७ त र	२१ त रग	१८ ग भ त	२४ भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२ भ न तयर	२० भ ब त र	१३ गभर बतय	२३ ग त ब	२९ ब त	२१ न ब त	२४ न त	२४ न त	२७ ग य
	पुन. १,२,३	२० न त र	२७ त र	२३ त र	२० भ त ग	२२ भ त	२३ भ त य	३१ त य	२४ न य	२८ न	१५ न भ ब र	२२ भ ब र	१७ भ ब तरग	२२ य ब त ग	२६ य ब त	२१ न ब त	२४ न त	२५ न त	२७ त ग
कर्क	पुन. ४	२२ ब न त	२९ ब त	२५ ब त ग	२२ ब ग त र	२४ ब त य र	२५ ब त य र	१८ बभब रतय	१० बभब नयर	१४ बभ रनत	२८ न	३५	२९ त ग	१६ बभय गत	२० ब भ त य	१५ ब भ न त	१८ न ब त र	१९ न ब बतर	२१ ब ग बतर
	पुष्य १,२,३,४	३० ब त	२१ ब न त	२६ ब त ग	२३ ब त र ग	२५ ब त र	१८ ब न त र	११ बभन बतर	१८ बभ बतर	२१ ब भ ब र	३५	२८ न	३० ग	१९ ब भ ग त	१५ ब भ न त	२३ ब भ त	२६ ब ब त र	२७ ब ब त र	१२ नबबय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ ब ग	२४ ब ग त	२२ न ब त	१९ न ब त र	११ गनत नयर	१९ गब तयर	१२ गबत भबयर	१२ गबभ बतयर	१५ गबत भबर	२८ ग त	२९ ग	२८ न	१५ य ब भ न	१५ गबय भत	१८ ग ब भ त	२१ ग ब बतर	२१ ग ब बतर	२६ बबत र
सिंह	मघा १,२,३,४	२० ग ब भ	२० ग ब भ	१६ बभ न त	१७ बब रनत	९ बबत गरनय	१७ बबत गरय	२१ बब गतय	२२ ब ब ग त	२० बब गयत	१६ ग भ य त	१९ गभ त	१६ न भ य	२८ न	३० ग	२७ ग त	१६ ब ब गभत	१६ ब ब गभत	२१ ब ब भ त
	पू.फा. १,२,३,४	२६ बभ	१८ ब भ न	२० ग ब भ	२१ ब ब र ग	२३ ब ब रतय	१५ बबन रतय	१९ ब ब नतय	२८ ब ब त	२६ ब ब त य	२२ य भ त	१७ भ न त	१६ ग भ य त	३० ग	२८ न	३५	२४ ब ब भ	२२ ब ब भ त	७ बबत गनभ
	उ.फा. १	१६ ब भ न त	२६ बभ	२० ब ग भ	२१ ब ब ग र	२६ ब ब र	२४ ब [illegible] र त	२८ ब ब त	२० ब ब न त	२१ ब ब न त	१७ भ न त	२५ भ त	१९ गभ त	२७ ग त	३५	२८ न	१७ ब ब भ न	१६ ब ब [illegible] न	१३ बयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भ न त र	२२ भ र	१६ ग भ र	२१ ग भ	२६ भ	२४ भ त	३१ ब त	२३ न ब त	२४ न ब त	२० न ब त र	२८ ब त र	२२ ग ब त र	१७ ग ब भ त	२५ भ ब	१८ ब भ न	२८ न	२७ न	२४ य ग त
	हस्त १,२,३,४	१० य भ नतर	२० भ त र	१७ भ र ग	२२ भ ग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२ न ब त	२४ न ब त	२० न ब त र	२८ ब त र	२३ ब त र ग	१८ ब भ त ग	२२ ब भ त	१६ ब भ न	२६ न	२८ न	२८ य ग
	चित्रा १,२	१३ [illegible]भत य र	५ गभन तयर	१९ भ त य र	२३ भत य	२० ग भ	१२ ग भ न	१९ ग ब न	२६ ग ब य	२५ ग ब त	२१ ग ब त र	१२ गनब तयर	२७ ब त र	२३ ब भ त	८ ग ब भनत	१४ ब य गभत	२४ ग य त	२७ ग य	२८ न

मेलापक सारणी (भाग २)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उ.षा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२२½ बय तग	२६½ बय त	२२½ तब यग	१८½ गभ तय	२५½ भ त	१४ भन ग	१३½ भन ग	२५ भ	२३½ भ त	२५ ब तर	२६ नत र	२० बत यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४½ नभ तय	२४½ भ त	२६ भ
	भर. १,२,३,४	१३½ बगन तय	२९½ ब त	२१½ गब तय	१७½ गभ तय	१७½ नभ त	१९½ गभ त	२० गभ	१८ नभ	२६ भ	२७½ ब र	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बय गनतर	२० गब तर	२४ बय तर	२२½ तभ य	१७½ नभ त	२६½ भ त
	कृत्ति. १	२७½ ब तय	१५½ बग नत	१९½ बन तय	१५½ भन तय	१९½ गभ त	२५½ भ त	२४½ भ त	१८ गभ य	१२ गभ न	१३½ बग नर	११½ बय रगन	२५ बत यर	२५ बत यर	२७ बत र	१९ बग तयर	१७½ गभ तय	१९½ गभ त	११½ गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२½ बभ तय	१०½ गब भनत	१४½ बभ तनय	२०½ न तय	२४½ ग त	३०½ त	२० भ तर	१३½ यग भर	७½ गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३½ भ तय	२९½ ब तय	३१½ ब त	२३½ गब तय	२० गत यर	२२ ग तर	१४ गन तर
	रोहि. १,२,३,४	१९ गब भ	१५½ बभ नत	९½ तबग नभ	१५½ गन त	२९½ त	२३½ ग त	१४ गभ तर	१९ रभ तय	११½ यभन र	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६½ गब	२४½ गब त	३०½ ब त	२७ तर	२७ तर	१९ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ नग	२५ बभ	१८½ बभ तग	२४½ त ग	२१½ न त	२४½ तग	१५ भ तरग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१½ भय त	२५ भ य	१३ नभ ग	१९ ब गन	२७ बग	२१½ ब त	२६ त र	१८ न तर	२७ त र
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०½ भ तग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नतय र	२५ यतर	२० भय वत	२३½ भ यव	११½ नभ वग	१३ नभ ग	२१ भ ग	२३½ भ त	२५½ तव र	१७½ नव तर	२६½ वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३½ रगव भय	१७ तभव यर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भ वत	२३ भ वत	१७½ गभ वय	१९ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१९ नर वय	२६½ वत र	२६½ वत र
	पुन. १,२,३	२०½ भ तग	२८ भ	२२ भ ग	१५½ वभ रग	२१½ वभ र	७ रगवभ नत	१४ यरतन ग	२७ तर	२७ तर	२२ व त भ	२३ वत भ	१७ व त भयग	१८½ भग त य	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन य व	२८ रव	२७½ वत र
कर्क	पुन. ४	२०½ वतर ग	२८ वरव	२२ वरव ग	२० गभ	२६ भ	११½ तग भन	८ वतव भगनय	२१ वभ वत	२१ वभ वत	२६ वत र	२७ वत र	२१ वगत यर	१२½ वभव तयगर	८ वभव नगर	१० वभर नवय	१६ नभ य	२६ भ	२५½ भ त
	पुष्य १,२,३,४	११½ गनबव तयर	२६½ ब वतर	२१ रवग वय	१९ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गवभ वत	११ यवभ तनव	२१ वभ वत	२६ ब तर	२५ बय तर	१३ गवन तयर	४½ भवगय वनतर	१४½ ववत रगभ	१८ वभ वयर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५½ बव तर	१२½ गबव तरन	१७½ नब वतर	१५½ नभ त	२० गभ	२६ भ	२२½ बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ यगत नर	२६ बत यर	१७½ बभव तरय	१९½ बभ वतर	११½ गबभ वतयर	१७½ गभ तय	२१ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा १,२,३,४	२४½ बव तर	११½ बवत रगन	१६½ बवत रन	२२½ नव त	२५½ गव त	३३ व	२५ भव	१९ गवभ	८½ वगभ नतय	३½ बतय गभन	४½ बरत गभन	१८½ बरत भ	२४½ बव तर	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	१८½ गभ त	१९½ गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०½ बवत रगन	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	२४½ गव त	२३½ नव त	२५½ गव त	१९ गव भ	१७ भव न	२४ भव य	१७ बर भव	१८½ बर भत	४½ बरत गभन	१०½ बवत रगन	१९½ बव रगत	२४½ बव रत	२४½ भ त	१७½ नभ त	२५½ भत
	उ.फा. १	१६½ बवत यगर	२५½ बव तर	१६½ बवय गरत	२२½ तव गत	३१½ बत	१७½ गव नत	९½ गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११½ बरत गभय	१७½ बवत गरय	११½ बवत गनर	१५½ बवत नरय	१५½ नभ तय	२६½ भ त	२५½ भ त
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६½ गबय भत	२५½ बभ त	१६½ गबय भत	१८ यवत गर	२७ व तर	१३ गव तनर	१४ गन तर	२९½ र	२९½ र	२४½ भ व	२४½ भ व	१६ गभ वतय	१६½ गव भतय	१०½ गव नभत	१४½ बभ नतय	१७½ तनव यर	२८½ वतर	२७½ वतर
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६½ बभ त	१८½ बभ तयग	२० बग तयर	२६ वतर	१३ नवत रग	१५ नत रग	२७ तर	२८½ र	२३½ भव	२४½ भव	१८½ भग वर	१९ बभ यग	८½ बयभ नतग	१३½ बभ नतय	१६½ वनत यर	२६½ वतर	२७½ वतर
	चित्रा १,२	२० बभ न	१९ गब भय	२६½ बभ त	२८ व तर	११ गवन तयर	२५ वत यर	२७ तयर	१४ गन तर	२२ ग तर	१७ गभ त	१८½ गभ व	१५½ भ वनय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६½ गबत भय	१९½ गव तयर	१०½ गयव नतर	१९½ वगत यर

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष। त=तारादोष। य=योनिदोष। र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ३)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		आश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
	चित्रा ३,४	२२ ग तय	१४ गन तय	२८ तय	२३ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	२१ गभ	१९ गभ त	२० गर वत	११ गनय वरत	२६ वत र	२५ वर त	११ वर गनत	१७ वय गरत	१७ यग भत	२० गभ य	२१ भन
तुला	स्वाती १,२,३,४	२७ यत	२९ त	१७ न त	१२ भन त	१५ भन त	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२९ वर	२७ व तर	१४ नव तर	१३ वन तग	२५ वर त	२५ वर त	२५ भ त	२७ भ त	२? भ यग
	विशा. १,२,३	२२ तय ग	२२ तय ग	२० तय न	१५ तभ नय	१० गभ तन	१८ गभ त	१९ गभ त	२० गभ य	२१ गभ	२२ ग वर	२२ ग तर	१८ नव तर	१७ वर तन	१९ वर तग	१७ वय रगत	१७ यग भत	१८ गभ तय	२? भ त
	विशा. ४	१६ वग भयत	१६ वग भयत	१४ वभ नयत	१९ वन तय	१४ वग नत	२२ वग त	१२ ववर गभत	१२ ववय गभर	१३ वव गभर	१९ गभ	१८ गभ य	१५ भन त	२१ वव नत	२३ वव गत	२१ वव गयत	१७ तवव गयर	१८ ववग तयर	२? वव तर
वृश्चिक	अनु. १,२,३,४	२४ वभ त	१५ वभ नत	१९ वभ तग	२४ वत ग	२७ व त	२० वन त	१० ववत नभर	१५ तवव रभय	२० वव भर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४ वव तग	२० वव तन	२१ वव त	२५ वव तर	२६ वव त	२१ [illegible]
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१२ वग भन	१८ वग तभ	२४ वभ त	२९ व त	२२ वग त	२२ वग त	१२ तवव गभर	२ तववय गभनर	५ तववर गभन	१० त गभन	२० ग भ	२६ भ	३१ वव	२३ वव गत	१६ तवव नन	१२ तवव गनर	१२ तवव गनर	२६ वव [illegible]
	मूल १,२,३,४	१२ गभ न	२० गभ	२४ भ त	१९ वभ तर	१३ वग तभर	१३ रवग तभ	२१ वग तर	१५ वगन तर	१२ रवग तनय	८ यगभ वनत	१७ गभ वत	२३ भ वय	२५ वभ	१९ वग भ	९ तवग भन	१३ तरव गन	१३ वग तनर	२६ [illegible]
धनु	पू.षा. १,२,३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभ य	१२ वय गभर	१८ वभ तयर	१० रवभ तनय	१८ वन तयर	२७ व तर	२७ व तर	२३ भ वत	१३ यभन वत	१७ गभ वत	१९ वग भ	१७ वभ न	२५ वभ	२८ वर	२७ वत र	१? [illegible]
	उ.षा. १	२४ भत	२६ भ	१२ गभ न	६ रगव भन	१० वयर भन	१७ वय तभर	२५ वय तर	२७ वत र	२७ वत र	२३ भ वत	२३ भ वत	९ गभ वनत	८ तगव यभन	२४ वभ य	२५ वभ	२८ व र	२८ व र	२? गव तर
	उ.षा. २,३,४	२७ तर	२८ र	१४ गन र	१२ गभ न	१६ भन य	२२ यभ त	२० वय तभ	२२ वभ त	२२ वभ वत	२८ त र	२८ तर	१४ गन तर	४ तयर गभन	२० रभ य	२१ रभ	२४ भ त	२४ वभ	१७ गभ वत
मकर	श्रव. १,२,३,४	२७ तर	२६ तर	१३ यन र	११ यभ गन	१६ भन य	२५ भ य	२२ वभ वय	२१ वभ वत	२२ वभ वत	२८ त	२६ यत र	१५ नत र	६ तगर भन	१८ रभ त	२० भर	२३ भ व	२४ भ व	१९ भ व
	धनि. १,२	२० गत यर	११ यग नरत	२६ तय र	२३ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	९ ववग भन	१६ वयव गभ	१६ वग वतभ	२२ ग तर	१३ रगन तय	२८ तर	१९ रभ त	५ तगर भन	१२ तयर गभ	१६ गभ वतय	१७ गभ व	१५ भत वय
	धनि. ३,४	२० तग यर	११ यग तनर	२६ तय र	३० तय	२७ ग	११ गन	१२ गभ न	१९ गभ य	१८ गभ त	१३ गभ वतर	४ तयर गभनव	१९ भव तर	२५ वर त	११ वतर गन	१८ वर गतय	१७ गभ तय	१९ गभ य	१७ गभ न
कुम्भ	शत. १,२,३,४	१५ गन तर	२१ ग तर	२८ तर	३२ त	२५ गत	२७ ग	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	८ गभ वनर	१४ गभ वतर	२० वभ तर	२६ वर त	२० वर गत	१२ वरत गन	११ तग नभ	८ तवग भन	२६ भ य
	पू.भा. १,२,३	१८ नत यर	२५ य तर	२० गर तय	२४ ग तय	३१ त	३१ त		१७ भन त	१८ भन	१३ भन न	२० भर वय	१३ गभ वतर	१९ वर तग	२५ वर त	१६ वर यनत	१५ भन त	१५ भन तय	१७ गभ तर
	पू.भा. ४	१४ वभ तनय	२१ वय तभ	१६ गव तभय	१९ गव तयर	२६ व तर	२६ व तर	२५ यव तर	१८ वन वयर	१९ नय वर	१८ नभ	२५ भ य	१८ गभ त	१७ वग तभ	२३ वभ त	१४ वभ तनय	१६ रवन वतय	१६ रवन वतय	१६ रवग वतय
मीन	उ.भा. १,२,३,४	२४ वभ त	१६ वभ तन	१८ गव तभ	२१ गव तर	२६ वत र	१८ नव तर	१७ नव वतर	२५ वर वत	२८ व नर	२७ भ	१९ भन	२१ गभ	१८ गव तभ	१६ नभ न	२५ वभ त	२७ वव तर	२६ वव तर	९ वव तर
	रेव. १,२,३,४	२५ वभ	२६ वभ त	११ तगव भन	१४ गवन तर	१७ वन तर	२६ व तर	२५ वर वत	२४ रव वत	२६ रव वत	२५ भ त	२७ भ	१४ भन ग	१३ वभ गन	२३ वभ त	२३ वभ त	२५ वर वत	२८ वर वत	९ [illegible]

(व=वर्णदोष। व=वश्यदोष। त=तारादोष। [illegible] भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ४)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उषा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२,	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
	चित्रा ३,४	२८ न	२७ ग य	३४½ त	२३½ भव त	६½ य गवत न भ	२०½ भ व त य	२७ तय र	१४ गभ तर	२२ ग त र	२५ ग त व	२६½ ग व	२३½ न व य	१८ नभ य	२६ भ य	१८½ ग भ त य	१२½ गभव तयर	३½ वत वग भनर	१२½ वग गभ वत
तुला	स्वाती १,२,३,४	२८ य ग	२८ न	२० न य ग	९ भवय नग	२१½ भव त	१६½ भव त ग	२३ तर ग	२७ त र ग	१९ तन र	२२ नव त	२३ न व त	२६½ व य ग	२१ य ग भ	२० ग य भ	२५ य भ	१९ व भ य र	१९½ व त भर	१२ व त भनर
	विशा. १,२,३	३४½ त	१९ ग न य	२८ न	१७ भ व न	१६ ग व भय	२०½ भ व त य	२७ त य र	२२ ग त र	१४ ग न त र	१७ ग न व त	१७ ग न व त	३० व त य	२४½ भ त य	२६ भ य	२० ग भ य	१४ ग भ वयर	१३ ग य भतर	४ गभव नतयर
	विशा. ४	२२½ ब व भ त	७ बवग नभय	१६ ब व नभ	२८ न	२७ ग य	३१½ त य	२१½ ब व तयभ	१६½ ब व गभत	८½ बवग नभत	१२ गबन तर	१२ ब न गतर	२५ ब त यर	२४ ब व तयर	२५½ ब व यर	१९½ ब व गयर	१९ ग भ य	१८ ग य भ	९½ ग भ नतय
वृश्चिक	अनु. १,२,३,४	६½ बवत भयगन	२१½ ब व भत	१६ ब व भयग	२८ य ग	२८ न	३१ ग	१५½ बवत गयभ	१३½ तबव नभ	२१½ ब व तभ	२५ ब त र	२६ ब त र	१२ तयब नरग	११ तयब बनरग	२१ बव तरग	२४ बव यर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१९½ बव तभय	१५½ तबव गभ	१९½ बव भतय	३१½ त य	३० ग	२८ न	१४ ब व नभय	१६½ ब व तगभ	१६½ ब व तगभ	२० ग ब तर	२० गब तर	२५ बत यर	२४ बव तयर	१८ बव नरत	१० तबव यगनर	९½ गभ तनय	२१ गभ	२१ गभ
	मूल १,२,३,४	२६ त ब य र	२१ ग ब त र	२६ त ब य र	२२½ भव त य	१५½ ग व भयत	१५ यव नभ	२८ न	२८ ग	२६½ ग त	१५ ग ब भवत	१५ गब भवत	२० बभव तय	२८½ ब व य	२१½ ब न त	१४½ ग न बतय	१६ ग न वतय	२५ ग व त	२६ ग व
धनु	पू.षा. १,२,३,४	१३ ग ब तनर	२७ ब त र	२१ ग ब त र	१७½ ग व भ त	१५½ भव न त	१७½ ग व भ त	२८ ग	२८ न	३४	२२½ बभ व	२३ बभ व त	६ गबव भनतय	१४½ ग ब तनय	२३½ गब त	२८½ ब त य	३० व त य	२३ न व त	३१ व त
	उ.षा. १	२१ गब तर	१९ न ब त र	१३ ग ब नतर	९½ ग व भनत	२३½ भव त	१७½ ग व भ त	२६½ ग त	३४	२८ न	१६½ बभ व न	१४½ ब भ व न	१५ गबव भ त	२३½ गब त	२३½ गब त	२९½ ब त	३१ व त	३१ व त	२३ न व त
	उ.षा. २,३,४	२४ गब त	२२ न ब व त	१६ ग ब न त	१३ ग न त र	२७ त र	२१ ग त र	१६ गभ वत	२३½ भ व	१७½ नभ व	२८ न	२६ न	२६½ ग त	१७ गब भवत	१७ गबव भ त	२३ ब भ व त	३०½ त	३० त	२२½ न त
मकर	श्रव. १,२,३,४	२६½ ब व ग	२२ नब व त	१७ न ब गवत	१४ न त र	२७ त र	२२ त र	१७ भ व त ग	२३ भ व त	१४½ नभ व	२५ न	२८ न	२८ य ग	१८½ ब भ वयग	१८ बभव त ग	२१ बभ वतय	२८½ त य	२९½ त	२२½ न त
	धनि. १,२	२२½ न ब व य	२४½ ग ब व य	२९ ब व त य	२६ त य र	१२ ग न तयर	२६ त य र	२१ भ व त य	७ गभय वनत	१६ गभ वत	२६½ ग त	२७ ग य	२८ न	१८½ बभ न व	२३½ बभ व य	१९ गब वतभ	२६½ ग त	१५½ गन त य	२२½ ग य त
	धनि. ३,४	१८ नभ य	२० गभ य	२४½ भ त य	२५ त व य र	११ गवय तनर	२५ त व य र	२९½ त य	१५½ ग त न य	२४½ त ग	१८ गभ व त	१८½ गभ व य	१९½ भ व न	२८ न	३३ य	२८½ ग त	१८ गभ वत	७ तगभ वनय	१४ गयव भत
कुम्भ	शत. १,२,३,४	२६ भ य	१९ भय ग	२६ भ य	२६ य व र	२१ ग व त र	१९ न व त र	२२½ न त	२४½ ग त	२४½ ग त	१८ गभ व त	१८ गभ व त	२४½ भ व य	३३ य	२८ न	१९ गन य	८½ गभ वनय	१७ गभ व त	१६ गभ व त
	पू.भा. १,२,३	१८½ गभ त य	२६ भ य	२० गभ य	२०½ गव य र	२६½ व य र	११ गवत यनर	१५½ नग तय	२९½ त य	३०½ त	२४ भ व त	२३ भ व त य	२० भग व त	२८½ ग त	१९ नग य	२८ न	१७½ न भ व	२२½ भ व य	२० भय व त
	पू.भा. ४	११½ गबव भतयर	१९ बभ वयर	१३ गबव भयर	१९ गभ य	२५ भ य	९½ गभ नतय	१५ गब तनय	२९ ब व त य	३० ब व त	२९½ ब त	२८½ ब त य	२५½ गब त	१७ ग ब भ त	७½ गबय भतन	१६½ बभ त न	२८ न	३३ य	३०½ य त
मीन	उ.भा. १,२,३,४	२½ यवबर गभनत	१९½ भवब त र	१२ गवर भयब	१८ गय भ	१९ नभ	२१ गभ	२४ गब वत	२२ नब वत	३० ब वत	२९½ ब त	२९½ ब त	१४½ गब तनय	६ गबव नभतय	१६ गबव भत	२१½ बभ त य	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२½ बभव तयर	११½ बभत वनर	४½ बभवन तगयर	१०½ नभ तयग	२७ भ	२२ भ ग	२६ बग व	२९ ब व त	२१ नब वत	२०½ न ब त	२१½ न ब त	२२½ ब य त ग	१४ बवय भतग	१६ बभ वतग	१८ बय भवत	२९½ य त	३४	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष। त=ताराद... । य=योनिदोष। र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

लग्न-गण्डान्त-कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

उग्र विवाहमासा : आचार्य चूड़ामणौ-"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या-संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र-पौष-विवर्जिताः ॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोरीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥ २॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः-सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न का दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः-जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो-एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग-अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः-ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय-दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें अर्थात् पहले कर लें और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करें मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर लें। वहाँ छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच-साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुल वालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा - ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (वृहस्पतिः) ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टम-स्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रद्वन्गो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत् ॥

तुलाराशौ अपूज्यः रविः-धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः।
आवश्यके पूज्य रवि परिहारः-गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतःशुभावह॥ (मु०प्र०सा०)।

विवाहाद त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरु :—९।५।११।२।७
नेष्टगुरु—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—२।५।९
विशेष पूज्य रविः—१।७
नेष्टरविः-४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः-१।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न)

दिन संख्या

राशि १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल्य सं. ७	१०	५	११	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि -रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त- वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३, ६, ९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा-सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वाँ हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जाने।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो. | मृ. | मघा. | उफा. | ह. | स्वा. | अनु. | मू. | उषा. | उभा. | रे | वि. नक्ष | हर्षणवैधति साध्य

(६) बाणज्ञान चक्रम्

बाण | गतांशा:प्रति | कर्मस | वारे

(१०) दग्धातिथि दोषः

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे	वि. नक्ष.	हर्षणवैधति साध्य
आर्द्रा	मृ	अ	कृ.	भ	कृ.	अ.	रो.	भ.	भ.	अ	[illegible]	व्यतिपात, गंड
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र.	आ.	ज्ये.	पुन.	श.	ज्ये		और शूल योगों का
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध.	उषा.	ध	श.	वि.	ध.		अन्त जिस नक्षत्र
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभ.	पुष्य.	पूभा.	श्ले.	वि.	उफा.	म.		में हो वह पात से
चि	म	ह	उ.भा.	स्वा.	ह.	पूषा.	मू.	ऽनु	पूफा.	पूफा		दूषित होता है। इन
मू.	ह	रे	पूभा.	म.	रे.	पूफा.	उभा.	उषा.	मू.	स्वा.		नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३)युति :-जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू.मं.शु.श.रा.के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोष चक्रम्

रो.	मृ.	मघा.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि	उषा	श्रवण	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृग.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ	म.	उ. फा	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. पा.	उ. भा.	रे.	वि. न.
अनु	ज्ये	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	[illegible]

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है। याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय हैं।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिध, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वे, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५ वे नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे.	वृ.	मि	कर्क	कन्या	तुला
सिंह.	म.	ध.	वृश्चि.	मी.	कुं

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(६) बाणज्ञान चक्रम्

बाण नाम	गतांशा:प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्या:	वारे वर्ज्या:	समयपरत्वेन वर्ज्या:
रोग	८।१७।२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृप सेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययो:वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोष:

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशय:
२	४	६	८	१०	१२	तिथय:

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषत:ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।-कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि-लता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बागर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौंडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरा प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथियो मध्यदेशे विवर्जिता: ॥

विशेष परिहार-चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा: पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजात: सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपात: ॥

युति परिहार-स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्यो: श्रेयसे तदा।। अत्यावश्यके वेधपरिहार:-पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैनेव कृत्स्नत: (नारद) ॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरण मात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत: ॥ अस्यापवाद:-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। एकार्गलोपग्रह पात लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषा:। नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा॥ मु.चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु:।
केन्द्रसंस्थ: सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा ॥

विवाहे लग्न -शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावा:
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभा: लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्या:
चं. मं.	कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				गोधूलौ त्याज्या:

लग्न भंग-योगा-व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः । बादरायण-भाराशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ।

कर्तरी दोषः-लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च सत्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः-पापौ कर्तरिकारकः रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न।।

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे-दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह।। **अपवादान्तरम्**-उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्र संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः ॥ स्मरण रहे, कि- पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१।४। १०)ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	भं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११		लग्नं शुभं विवाहे स्याद् दशविंशोपकाधिकंम्
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार-लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग, माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं को धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा.आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः-कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिकं त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के । अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने केपीछे । क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त :- कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र , आयु प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च :- सूर्यभात् ४ । ११ । १८ । २५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथि- मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधू प्रवेश का मूहूर्त- जब वधू विवाह हाने पर पति केघर पहले आती है वह वधू प्रवेश कह ाजाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५,७,९वे दिन,इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एकवर्ष के भीतर वियम मास में एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५वेंवर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है ।५वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचागशुद्धि चन्द्रवल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्राति - तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे, अश्वि रो, मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३ , पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च बु. वृ. शु. श. इन वारों में १ । २ । ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । १० । ११ । १२ । १३ । १५ तिथियों में ५ । ८ । ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेश-समय- वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यान्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू-निवास फलम् - विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को क्षय मास में अपने शरीर को ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त- प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवे वर्ष वृश्चिक कुभ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह., अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रो., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., मृ., रे., चि., अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेषः— द्विरागमं षोडषवासरान्त एकादशाहे समवासरेषु । न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न यो. न वार शुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

रो. एषु नक्षत्रेषुरिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलन का महूर्त — ह. चि. रो. रे.

विशेषः— द्विरागमं षोडषवासरान्त एकादशाहे समवासरेषु । न चात्र कक्षं न तिथिर्न योगः न वार शुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

शुक्र के सम्मुख व दक्षिण में निषेध—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह-राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

विशेषः— सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ **अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः**— राजते वाथ सौवर्णे कांस्ये पात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांवरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्री संगम मुहूर्त्त— रजोदर्शनानंतर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि., अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता - अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें। **मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य**—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें, और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक-दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंस आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नव वधु द्वारा पाक कर्म मुहूर्त्त— द्विरागमनोत्तरं मृ., उत्तरा.३, पुष्य, कृ., ज्ये.,श्रव., ध., श., रो., वि., रे., एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते) , रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८। ११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त — ह., चि., स्वा., अनु., धनि., रे., अश्वि., एषु भेषु, बु., गु., शु. वारेषु रिक्तामावस्या रहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्॥

चूड़ीचक्र में विशेष— सूर्य नक्षत्र से गणना ८ अशुभ। ३ शुभ । ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ । २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्र धारणे विशेषः— विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त—ह., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध.,श.,उत्तरा. ३, रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्ताक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्॥

दुकान खोलने का मुहूर्त्त — ह., चि., रो., रे., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४ । ९ । १४ । ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २ । १० । ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८ । १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृ गृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त— पूर्वा., ३, भ., मू., म., ज्ये., आ., आश्ले., एतद्भिन्नेषु,चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त— भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र — सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक, नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त— अ.,मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र.,बु., बृ., शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १० । ११ सूर्ये -भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनिमैत्रायां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त- अश्वि., रो., मृ., पुन.,पु., उत्तरा. 3, ह., चि., अनु.,श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ. श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्ट रहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त— पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्र., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४ ।७।१० लग्नेषु ९।८।५ शुद्धिरहिते द्रव्य प्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः॥

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल — मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, श्ले., उ. ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त— पुष्य, पू.भा., अनु., श्र., ह., म., स्वा., उत्तरा. ३, आश्ले., रे. एषु भेषु, सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्र., चि., वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है ।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू.फा., पू.षा., पू.भा., वि., कृ., आश्ले., भ. से ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोट — बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त— ४।९।१४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अ., श्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई को परस्पर गुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ ओर २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना । गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही । ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है । अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है ।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें । शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा-एक हाथ लम्बा-एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है ।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन-आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धननाश हो और जो अस्थि, राख,बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि-पीड़ा हो ।

गृहारम्भमुहूर्त्त — वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में ,रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, **पञ्चबाण** और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ **वें स्थान** में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना ।

गृहारम्भे वत्सचक्रम् — सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष— पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ.फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है ।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्— "संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। १०/२१/२४ में षड्दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताघटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः"। **अन्यच्च** - सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग,वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता ।

गृहमध्य में कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र-विचार

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त — अनु., ह., उत्तरा.३, रो., ध.,

अथ चुल्लिचक्र-विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद । ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहू के सुन्दर-सुख-भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक । २ चरण के नाशक । यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभना:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग.) कार्त्तिक मासयो: ॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तारहित तिथियों में । चं., बृ., श. इन वारों में। २।५।८।११ लग्नों में, **अत्यावश्यके** ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा, ८ वाँ स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र- तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण-पुष्पमाला युक्त कलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पत्ति का गृह प्रवेश शुभ है ।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त— पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै., श्रा., का., मार्गशीर्ष और फा. मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है ।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भाग: शुभदो भवेत्

राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य:	मी.,मेष, वृष	मि., क., सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य:	सिं.,क., तु.	वृश्चि.,ध., मकर	कुम्भ,मीन, मेष	वृष,मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्य:	म.,कुं., मी.	मे.,वृष, मिथुन	कर्क,सिंह, कन्या	तुला,वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति:
कोणे	८	उद्धसनं
शाखा.	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश:
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त — अनु., ह., उत्तरा.३, रो., ध., श., म., पू.षा., रे., पुष्य, मृ. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है । यदि २।१०।४।११। १२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नलचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने.३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य २ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रम:- मध्य-पूर्व -आग्नेय -दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्- अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। **तत्फलम्**—**वारिवाहे वारिहानि:** । गणनाक्रम:—पूर्व, आग्नेय ,द.,नै.,प., वा., उ., ई. मध्य वारिवाह: ।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ.,भ., कृ. मध्यजलम्	पूर्व पुन., पु., श्ले. जलाभाव:	आग्नेय म.,पू. फा.,उ. फा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा.,उ.भा.,रे. मिष्ठजलम्	मध्य रो.,मृ.,आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह., चि.,स्वा. जलाभाव:
वायव्य श्र.,ध., श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.,पू.षा.,उ षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि.,अनु.,ज्ये. बहुजलम्

जलाशयरामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्तं

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा: ।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥
अश्वि.,रो.,मृ.,पुष्य, ह., चि.,स्वा., अनु.,श्र., ध., श., उत्तरा. ३, रे. एषु भेषु कुजशनि-वर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३ तिथिषु शुक्ले १।२।३।५तिथिषु कृष्णे,गुरुशुक्रयो:नीचनिर्बलास्तादिरहित-काले, कर्तु: सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०॥९।५।२।११ स्थानेषु शुभै:, ६।११ सेन्दुभि: पापै: पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता-विशेषेण लग्नम्— सिंहे सूर्य: शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्य: स्त्रियां हरि: । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्य: स्थिरेऽखिला: ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तम: ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्त्त— श्र., ध., मृ., मू., अनु., रे., ह., चि., स्वा., उत्तरा. ३., पुन., पु., रो., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है— जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाय, (0 -शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए ।

विशेष:— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रेव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सराल ये अग्निचक्रम-वलोकयेत्सुधीः॥ **दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे।** शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

पापग्रहमुखे-हवने कृते शान्तिः— क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्र मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी -धनी विचार— स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥ (अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर 8 का भाग देना। जिसका - शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है - यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त—मृ., रे., चि., अनु., रो., उत्तरा. ३, ह., अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., म., वि., एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें				
३ अशुभ	८ शुभ	९ अशुभ	८ शुभ	नक्षत्र फल

बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८ अशुभ	३ शुभ	१ अशुभ	३ शुभ	१ अशुभ	३ शुभ	१ अशुभ	३ शुभ	४ अशुभ

बीजवपन मुहूर्त्तः— ह., अश्वि., पुष्य, उत्तरा. ३, चि., अनु., मृ., रे., स्वा., ध., म., मू., एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः— रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न-भक्षण-मुहूर्त्त —मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श. एवं विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा- रिक्ता तिथियों और पौष-चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त्त— अश्वि., पुन., पु., ह., चि., ज्ये., धनि., शत., रे. नक्षत्र में गौ लेना-बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. ३, ह., अनु., ज्ये., मू., धनि., रे. में लेना-बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक। फिर दो-दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ	नक्षत्र संख्या फल

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त—मृ., रे., चि., अनु., उत्तरा. ३, रो., ह., पुष्य, अश्वि., श., मू., वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—** तृण-काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ-मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषध का मुहूर्त्त— ह., अ., पुष्य, अभि., मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., श. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम-शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्त्तः

ह., म., श्र., अश्वि., पुष्य, पु., धनि., अनु., रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३ एषु भेषु मध्या; भ., कृ., आर्द्रा, आश्ले., म., चि., स्वा., वि., ज्ये. एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिका गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।२	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।६।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भवम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म. भ.

यात्रा में शुभाशुभ लग्न — जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है जब १।४।५।७।९ ।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च -यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश-दशेश अस्त हों व मारक दशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरुशक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानायचक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा.	पू.	द.	प.	उ.
चं.,श	चं.,बृ	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	वार	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनवरि शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥ २॥

यात्रा में काल ज्ञान

शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ सम्मुखे
पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे नेष्टः

योगिनीवासचक्रम्

पू.	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चिम	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा
१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रा में बाँये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। **समयशूल**-उषाकाल में पूर्व को,गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। **गर्ग-गुरु-अङ्गिरामत** - गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहें तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाये। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर, यात्रा करने से शुभ होता है। पंच-पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयःअष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयोभवेत्॥

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-
तात्कालिक यात्रायां
घट्यात्मक चद्रवासचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्— सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः । पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति॥ सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा-भगणदोषं, वार-संक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं, राहुकेत्वादिदोषं, हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग— शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़ कर तीन जगह रखें,क्रमशः ७।८।३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी, जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त्त- शकुन से मन की इच्छा प्रबल है ।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक

कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु-घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रक्खें। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु., शुक्र, शनि	घटि.	सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शु., च., का., उ., अ., रो., ला.
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अ., रो., ला., शु., च., का., उ.
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	च., का., उ., अ., रो., ला., शु.
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रो., ला., शु., च., का., उ., अ.
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	का., उ., अ., रो., ला., शु., च.
शुभ, चर, काले, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	ला., शु., च., का., उ., अ., रो.
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उ., अ., रो., ला., शु., च., का.
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काले	३०	शु., च., का., उ., अ., रो., ला.

सूचना— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे ।

यात्रायां शुभशकुनानि— मृग बांये ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मल, वस्त्र, वाद्य , वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्त घट यात्रा के समय देखने में शुभ है । **अशुभ शकुनानि-** वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार, युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है ।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यके यात्रा मुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना । अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है ।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त्तः— चि., ह., पु., मृ., पूर्वा. ३, अनु., श्र., ध. एवु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः— मृ., रे., अनु., रो., उत्तरा.३, ह.,अ., पुष्य, स्वा., श्र., ध. एवु भेषु चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।९। ११।१२ एवु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभ; वि., कृ., पूर्वा. ३, भ., म., मू., ज्ये., आर्द्रा, आश्ले, नक्षत्राणि; ४।९।१४।६ १२।८।३० तिथयः ।सू., मं. वारौ, १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि ।मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :- प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् ।नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावित‍ि ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ	घात चन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	घात वार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्लेषा.	घात नक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्री चन्द्र घात
का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रावण	भाद्र.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्रीः	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है । "घाततिथिर्घा-वारघातनक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम -दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है । जो फल पल्लीपात का कहा है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने । सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है ।

अथाङ्गविभाग में पल्ली- (छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयः	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शनं	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि— यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं., बु., गु., शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु., अश्वि., रो., मू., पुन., उ.फा., ह., चि., स्वा., ध., रे., अनु., श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः ॥

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म विधानम्— पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा-तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है । उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है ।

छिक्का फलम्— छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है । मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठि की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥ २॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी । अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥

॥ कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का :— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने । वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः । एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचारः — मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः, वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला—134 109; संयमी शर्मा, M.A. (संस्कृत),

-: समय शुद्धि :-

शुक्र अस्त :- इस वर्ष शुक्र दो बार अस्त होगा। पहली बार यह आषा. कृ. १ शु. से आषा. कृ. १० श. (४ से १२ जून, २००४ ई.) तक पश्चिम में और दूसरी बार माघ शु. ४ श. से आगामी सं. २०६२ वि. की चैत्र शु. १४ (१२ फर. से २३ अप्रै., २००५ ई.) तक पूर्व में अस्त होगा।

गुरु अस्त :- इस वर्ष गुरु भाद्र.कृ. ७ चं. से आश्वि.कृ. ३ शु. (६ सितं. से १ अक्तू. २००४ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु, शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्त से ३ दिन पूर्व वार्धक्यदोष और उदय होने के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

सिंहस्थ गुरु- सिंहस्थ गुरु का पूराकाल शुभकृत्यों में वर्जित नहीं हैं, अपितु वही काल वर्जित है जिसमें वह सिंहनवांश (अर्थात् पू. फा. के प्रथम चरण) में स्थित हो। इसी शास्त्रनिर्णयानुसार विवाहादि सभी मुहूर्तों में सिंहस्थ गुरु का वही काल गत वर्ष (सं. २०६० वि. में) वर्जित किया गया, जिसमें वह पू. फा. के प्रथम चरण में था। गुरु इस वर्ष भी द्वि. (शुद्ध) श्राव. शु. १२ शु. (२७ अगस्त, २००४ ई.) तक सिंह राशि में ही संचार करेगा। इस वर्ष यह वक्रगति से पुनः चैत्र शु. ११ गु. (१ अप्रै. '०४) को पू.फा. के प्रथम चरण में प्रविष्ट होकर मार्गीगति से आषा. कृ. ५ चं. (७ जून '०४ ई.) को इससे (पू.फा. के प्रथम चरण से) बाहर चला जाएगा। इस प्रकार इस वर्ष गुरु सिंह के सिंहनवांश (पू.फा. के प्रथम चरण) में चैत्र शु. ११ गु.से आषा. कृ. ५ चं. (१ अप्रै. से ७ जून '०४ ई.) तक यद्यपि रहेगा, फिर भी शास्त्रनिर्णयानुसार इसका मध्यवर्ती वैशा. कृ. १० बु. से ज्ये. कृ. ११ शु. (१४ अप्रै. से १४ मई ०४) तक का वह काल जिसमें सूर्य मेषस्थ रहेगा, विवाहादि मंगलकृत्यों के लिए वर्जित नहीं होगा। धर्मशास्त्रकारों ने स्पष्ट कहा है कि मेषस्थ सूर्य के समय सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं रहता *(" सिंहराशिगते जीवे मेषेऽर्के तु न दूषणम् ।")*। इसी निर्णयानुसार हमने सिंह-सिंहांशकस्थ गुरु के काल की उस अवधि में विवाहादि मुहूर्त्त लगाए हैं, जहां सूर्य मेषस्थ है। सिंहस्थ गुरु के काल में शुभकृत्यों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य के बारे में स्पष्टता के लिए मेरा लेख *'सिंहस्थ गुरु के काल में मंगल कृत्य'* सं. २०६० वि. के *'मार्त्तण्ड पंचांग'* में पृष्ठ ५४ पर देखें।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त - सं. २०६१ वि.

अक्षांश →	+१०°	+२०°	+३०°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	४ जून, २००४ ई.	४ जून, २००४ ई.	४ जून, २००४ ई.	४ जून, २००४ ई.
शुक्र पूर्व में उदित	१२ जून, २००४ ई.	१२ जून, २००४ ई.	१३ जून, २००४ ई.	१३ जून, २००४ ई.
शुक्र पूर्व में अस्त ✱	२७ फर. २००५ ई.	२१ फर. २००५ ई.	१२ फर. २००५ ई.	६ फर. २००५ ई.
शुक्र पश्चिम में उदित	२५ अप्रै., २००५ ई.	२५ अप्रै., २००५ ई.	२५ अप्रै., २००५ ई.	२५ अप्रै., २००५ ई.
गुरु अस्त	१० सितं., २००४ ई.	८ सितं., २००४ ई.	६ सितं., २००४ ई.	४ सितं., २००४ ई.
गुरु उदित	३ अक्तू., २००४ ई.	३ अक्तू., २००४ ई.	२ अक्तू., २००४ ई.	२ अक्तू., २००४ ई.

✱**ध्यान दीजिए-** इस वर्ष, जैसा कि इस कोष्ठक से स्पष्ट है, शुक्र की पूर्वास्त की तारीखों में अक्षांशभेद से भारी अन्तर होगा। ज्योतिषियों को स्थानीय मुहूर्त्त के निर्णय के लिए शुक्र के अस्त की स्थानीय तारीख लेनी होगी।

ध्यान दें - मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं। जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.)

मास -	तिथि-	वार	प्रविष्टा	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
वैशा. शु.	३	गु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	रोहि.	वृष	मेष	सिंह	।।ऽशु। ।।।। ।।	ल. ११ (गु.दा.),
वैशा. शु.	४	शु.	वैशा. ११	अप्रै. २३	रोहि.	वृष	मेष	सिंह	।।ऽशु। ।।।। ।।	दि. ल. ४ (श. दा.),
वैशा. शु.	६	गु.	वैशा. १७	अप्रै. २८	मघा	सिंह	मेष	सिंह	ऽरा ।।।। ऽचौ ।।।।	दि. ल. २ (६/५२ बाद), ४ (श. दा.), गोधू., ११ (चं. दा.)(२६/२७ बाद) (२६/२७ तक क्रान्तिसाम्य),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.)

मास -	तिथि	-वार	प्रविष्टा	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
वैशा. शु.	११	श.	वैशा. १९	मई १	उ.फा.	कन्या	मेष	सिंह	।।।ऽबु ।ऽरो ऽ।।।	ल. गोधू., (१२/५४ तक बुध पादवेध),
वैशा. शु.	१२	र.	वैशा. २०	मई २	हस्त	कन्या	मेष	सिंह	ऽरश। ।।।। ऽ।।।	दि. ल. २ (६/२० बाद), ४ (श.दा.), गोधू.,
ज्ये. कृ.	५	र.	वैशा. २७	मई ९	उ.षा.	मकर	मेष	सिंह	।ऽर ।ऽशु ।। ।।।ऽ	ल. ११ (गु.दा.), (शुक्र पादवेधाभाव),
ज्ये. कृ.	६	चं.	वैशा. २८	मई १०	उ.षा.	मकर	मेष	सिंह	।ऽर ।ऽशु ।। ।।।ऽ	दि. ल. २ (७/१४ तक),
ज्ये. कृ.	६	चं.	वैशा. २८	मई १०	श्रव.	मकर	मेष	सिंह	ऽचंबु ।।।। ऽरो ।ऽ।।	ल. गोधू., ११ (गु.दा.),
ज्ये. कृ.	८	मं.	वैशा. २९	मई ११	श्रव.	मकर	मेष	सिंह	ऽचंबु ।।।। ऽरो ऽ।।।	दि. ल. २,
ज्ये. कृ.	८	मं.	वैशा. २९	मई ११	धनि.	मकर	मेष	सिंह	।।।। ।। ।ऽ।।	दि. ल. ४ (६/५२ बाद) (चं. श. दा.), गोधू.,
ज्ये. कृ.	९	बु.	वैशा. ३०	मई १२	धनि.	कुम्भ	मेष	सिंह	।।।। ।। ।ऽ।।	दि.ल. २,
आषा. शु.	४	मं.	आषा. ९	जून २२	मघा	सिंह	मिथुन	सिंह	ऽमंरा। ।।।। ।ऽ।।	ल. ११ (चं.रा.गु.दा.), २,
आषा. शु.	५	बु.	आषा. १०	जून २३	मघा	सिंह	मिथुन	सिंह	ऽमंरा ।।।। ऽरो ।ऽ।।	दि. ल. ६, गोधू.,
आषा. शु.	८	श.	आषा. १३	जून २६	हस्त	कन्या	मिथुन	सिंह	।।।। ।ऽअ ।ऽ।ऽ	दि. ल. ५ (१०/०७ बाद) (१०/०७ तक मृत्युबाण),
आषा. शु.	८	श.	आषा. १३	जून २६	चित्रा	कन्या	मिथुन	सिंह	ऽश ।।।। ऽअ ऽ।।।	ल. २,
आषा. शु.	९	र.	आषा. १४	जून २७	चित्रा	कन्या/तुला	मिथुन	सिंह	ऽश ।।।। ऽअ ऽ।।।	दि. ल. ५, गोधू.,
प्र.श्राव.कृ.	१	श.	आषा. २०	जुला. ३	उ.षा.	धनु	मिथुन	सिंह	।।।। ऽश ऽरो ।।।।	दि. ल. ५, ६ (११/३१ तक),
प्र.श्राव.कृ.	२	र.	आषा. २१	जुला. ४	श्रव.	मकर	मिथुन	सिंह	।ऽ।। ऽमंबु। ।।।।	दि. ल. ६, गोधू. (१९/३३ तक) (१९/३३ बाद मृत्युबाण),
प्र.श्राव.कृ.	७	गु.	आषा. २५	जुला. ८	उ.भा.	मीन	मिथुन	सिंह	ऽचं ।।।। ऽनृ ऽ।।।	दि. ल. ६ (१२/४५ बाद) (चं.दा.), ११ (२२/५६ तक) (रा.दा.),
प्र.श्राव.कृ.	७	गु.	आषा. २५	जुला. ८	रेव.	मीन	मिथुन	सिंह	ऽशु। ।।।। ।ऽ।ऽ	ल. २,
प्र.श्राव.कृ.	८	शु.	आषा. २६	जुला. ९	रेव.	मीन	मिथुन	सिंह	ऽशु। ।।।। ।ऽ।ऽ	दि. ल. ६ (चं. दा.), गोधू., ११ (रा.दा.),
प्र.श्राव.कृ.	८	शु.	आषा. २६	जुला. ९	अश्वि.	मेष	मिथुन	सिंह	।।।ऽगु ।ऽचौ ।ऽ।।	ल. २ (२६/२० बाद) (गुरु पादवेधाभाव),
प्र.श्राव.कृ.	९	श.	आषा. २७	जुला. १०	अश्वि.	मेष	मिथुन	सिंह	।।।ऽगु ।ऽचौ ।ऽ।।	ल.गोधू., ११ (रा.दा.), २ (२६/२५ तक), (गुरु पादवेधाभाव),
प्र.श्राव.कृ.	११	मं.	आषा. ३०	जुला. १३	रोहि.	वृष	मिथुन	सिंह	।।ऽशु ।।। ।ऽ।।	दि. ल. ५ (६/१२ बाद), ६, ११ (रा.दा.),
द्वि.(शु.) श्रा.शु.	२	बु.	भाद्र. ३	अग. १८	उ.फा.	कन्या	सिंह	सिंह	ऽमं ।ऽगु ।।ऽअ ।।।।	ल. २, (कर्क लग्न निर्बल है।), (१८/४२ तक मृत्युबाण),
द्वि.(शु.) श्रा.शु.	४	शु.	भाद्र. ५	अग. २०	चित्रा	कन्या	सिंह	सिंह	ऽश ।।।। ऽनृ ।ऽ।।	ल. २ (२३/२४ तक),
द्वि.(शु.) श्रा.शु	५	श.	भाद्र. ६	अग. २१	चित्रा	तुला	सिंह	सिंह	ऽश ।।।। ऽनृ ।ऽ।।	दि. ल. ६ (९/५८ तक) (अत्यावश्यकता में),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.)

मास -	तिथि-	वार	प्रविष्टा	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
द्वि.(शु.) श्रा.शु.	८	चं.	भाद्र. ८	अग. २३	अनु.	वृश्चि.	सिंह	सिंह	ऽगु।।।। ऽचौ ।ऽ।।	ल. गोधू.,
द्वि.(शु.) श्रा.शु.	१३	श.	भाद्र. १३	अग. २८	धनि.	मकर	सिंह	कन्या	।।।। ।ऽअ ।ऽ।।	ल. २ (२२/५७ बाद), (कर्क लग्न निर्बल है।),
द्वि.(शु.) श्रा.शु	१४	र.	भाद्र. १४	अग. २९	धनि.	मकर	सिंह	कन्या	।।।। ।। ।ऽ।।	दि. ल. ६,
भाद्र. कृ.	३	बु.	भाद्र. १७	सितं. १	रेव.	मीन	सिंह	कन्या	।ऽ।ऽगु ।ऽचौ ।।।।	ल. ४ (२७/२८ बाद) (श.दा.) (गुरु पादवेधाभाव),
आश्वि. शु.	४	र.	कार्त्ति. २	अक्तू. १७	अनु.	वृश्चि.	तुला	कन्या	।।।। ।। ।।।।	दि. ल. ९ (१२/५८ तक) (मं.दा.),
आश्वि. शु.	८	गु.	कार्त्ति. ६	अक्तू. २१	उ.षा.	मकर	तुला	कन्या	।।।। ऽश ऽनृ ।ऽ।।	दि. ल. ८, ९ (मं.दा.),
आश्वि. शु.	८	गु.	कार्त्ति. ६	अक्तू. २१	श्रव.	मकर	तुला	कन्या	।।।। ।ऽ नृ ।।।।	ल. २,
आश्वि. शु.	९	शु.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २२	श्रव.	मकर	तुला	कन्या	।।।। ।। ।।।।	दि. ल. ८, ९ (११/२७ तक) (मं.दा.),
आश्वि. शु.	१२	चं.	कार्त्ति.१०	अक्तू. २५	उ.भा.	मीन	तुला	कन्या	ऽसू।। ऽगु ऽशु ऽरो ऽ।।।	दि. ल. ९ (११/५८ बाद) (मं.दा.), गोधू., २, ३, (गुरु पादवेधाभाव),
आश्वि. शु.	१३	मं.	कार्त्ति.११	अक्तू. २६	रेव.	मीन	तुला	कन्या	।ऽ।ऽशु ऽगु। ।।।।	दि. ल. ९ (११/०६ बाद) (मं.दा.), गोधू., (२३/२४ से २३/३२ तक शुक्रपादवेध),
कार्त्ति. कृ.	२	श.	कार्त्ति.१५	अक्तू. ३०	रोहि.	वृष	तुला	कन्या	।।।। ।ऽनृ ।।।।	ल. गोधू., ३,
कार्त्ति. कृ.	३	र.	कार्त्ति.१६	अक्तू. ३१	रोहि.	वृष	तुला	कन्या	।।।। ।। ।।।।	ल. गोधू. (१७/३७ तक),
कार्त्ति. कृ.	३	र.	कार्त्ति.१६	अक्तू. ३१	मृग.	वृष	तुला	कन्या	।।।। ।। ऽऽ।।	ल. ५ (श.दा.),
कार्त्ति. कृ.	४	चं.	कार्त्ति.१७	नवं. १	मृग.	वृष/मिथुन	तुला	कन्या	।।।। ।ऽचौ ऽऽ।।	दि. ल. ८ (८/१० तक)(चं. दा.), ९ (चं. मं. दा.), गोधू.,
कार्त्ति. कृ.	९	श.	कार्त्ति.२२	नवं. ६	मघा	सिंह	तुला	कन्या	।।।। ।ऽअ ।ऽ।।	दि. ल. ८ (९/२८ बाद), ९, ६, (गोधू. में क्रान्तिसाम्य),
कार्त्ति. कृ.	१०	र.	कार्त्ति.२३	नवं. ७	मघा	सिंह	तुला	कन्या	।।।। ।। ।ऽ।।	दि. ल. ८ (९/१७ तक),
कार्त्ति. कृ.	१२	मं.	कार्त्ति.२५	नवं. ९	उ.फा.	कन्या	तुला	कन्या	।ऽ।। ।। ऽऽ।ऽ	दि. ल. ८ (७/४१ बाद), ९ (१०/४७ तक),
कार्त्ति. कृ.	१२	मं.	कार्त्ति.२५	नवं. ९	हस्त	कन्या	तुला	कन्या	।।ऽगुशु ।।। ।ऽ।ऽ	ल. ५ (२६/०१ तक) (श. दा.) (अत्यावश्यकता में),
कार्त्ति. शु.	१	श.	कार्त्ति.२९	नवं. १३	अनु.	वृश्चि.	तुला	कन्या	ऽमं ।ऽबु। ।। ।।।।	ल. ६ (२७/२७ तक),
कार्त्ति. शु.	६	बु.	मार्ग. ३	नवं. १७	श्रव.	मकर	वृश्चि.	कन्या	।ऽ।। ऽऽअ ।ऽ।।	ल. ६ (२७/५५ बाद), (२७/५५ तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु.	७	गु.	मार्ग. ४	नवं. १८	श्रव.	मकर	वृश्चि.	कन्या	।ऽ।। ।ऽअ ।ऽ।।	दि. ल. ६,
कार्त्ति. शु.	१०	र.	मार्ग. ७	नवं. २१	उ.भा.	मीन	वृश्चि.	कन्या	।।।ऽगु ।। ऽऽ।।	ल. गोधू., (गुरु पादवेधाभाव),
कार्त्ति. शु.	११	चं.	मार्ग. ८	नवं. २२	रेव.	मीन	वृश्चि.	कन्या	।।।। ऽगु ऽचौ ।।।।	ल. ६ (चं.दा.),
कार्त्ति. शु.	१२	मं.	मार्ग. ९	नवं. २३	रेव.	मीन	वृश्चि.	कन्या	।।।। ऽगु। ।।।।	दि. ल. ६ (१०/४१ तक),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.)

मास - तिथि - वार			प्रविष्टा	तारीख २००४-०५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			तत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
कार्ति. शु.	१५	शु.	मार्ग. १२	नवं. २६	रोहि.	वृष	वृश्चि.	कन्या	।।।। ऽसू ऽअ ।ऽ।।	ल. ६ (२५/४३ बाद) (२५/४३ तक मृत्युबाण),
मार्ग. कृ.	१	श.	मार्ग. १३	नवं. २७	रोहि.	वृष	वृश्चि.	कन्या	।।।। ऽसू ऽअ ।ऽ।।	ल. ५ (२४/५६ तक) (श. शु. दा.),
मार्ग. कृ.	१	श.	मार्ग. १३	नवं. २७	मृग.	वृष	वृश्चि.	कन्या	।।।। ।। ।।।।	ल. ६ (२६/०८ बाद),
मार्ग. कृ.	२	र.	मार्ग. १४	नवं. २८	मृग.	मिथुन	वृश्चि.	कन्या	।।।। ।ऽ नृ ।।।।	ल. गोधू., ५ (श. शु. दा.), ६ (२७/४० तक),
मार्ग. कृ.	७	श.	मार्ग. २०	दिसं. ४	मघा	सिंह	वृश्चि.	कन्या	ऽचं ऽ।। ।। ऽ।।।	ल. गोधू.,
मार्ग. कृ.	८	र.	मार्ग. २१	दिसं. ५	उ.फा.	सिंह	वृश्चि.	कन्या	ऽबुशु ।।। ।ऽअ ।।।।	ल. ६ (२६/५२ तक), (२२/५० तक मृत्युबाण),
मार्ग. कृ.	९	चं.	मार्ग. २२	दिसं. ६	उ.फा.	कन्या	वृश्चि.	कन्या	ऽबुशु ।।। ।ऽअ ।।।।	दि. ल. ६, गोधू.,
मार्ग. कृ.	९	चं.	मार्ग. २२	दिसं. ६	हस्त	कन्या	वृश्चि.	कन्या	।।ऽगु। ।। ।ऽ।ऽ	ल. ५ (श. शु. दा.),
मार्ग. कृ.	११	बु.	मार्ग. २४	दिसं. ८	स्वा.	तुला	वृश्चि.	कन्या	।।।। ऽरा। ।ऽ।।	ल. ५ (श. शु. दा.), ६,
मार्ग. कृ.	१२	गु.	मार्ग. २५	दिसं. ९	स्वा.	तुला	वृश्चि.	कन्या	।।।। ऽरा। ।ऽ।।	दि. ल. ६ (८/२६ तक),
पौष शु.	७	र.	माघ ४	जन. १६	रेव.	मीन	मकर	कन्या	।।।। ।ऽअ ।ऽ।।	ल. गोधू., ६ (२४/२० तक) (चं. दा.),
पौष शु.	१२	शु.	माघ ९	जन. २१	रोहि.	वृष	मकर	कन्या	।।।। ।। ।।।ऽ	दि. ल. १२ (गु. दा.),
माघ कृ.	४	श.	माघ १७	जन. २९	उ.फा.	कन्या	मकर	कन्या	।।।। ।ऽचौ ।ऽ।।	ल. गोधू.,
माघ कृ.	५	र.	माघ १८	जन. ३०	उ.फा.	कन्या	मकर	कन्या	।।।। ।। ।ऽ।।	दि. ल. १२ (१०/०५ तक) (गु. चं. दा.) (अत्यावश्यकता में),
माघ कृ.	५	र.	माघ १८	जन. ३०	हस्त	कन्या	मकर	कन्या	।।।। ।। ।ऽ।।	ल. गोधू.,
माघ कृ.	६	चं.	माघ १९	जन. ३१	हस्त	कन्या	मकर	कन्या	।।।। ।ऽ रो ।ऽ।।	दि. ल. १२ (चं. गु. दा.) (अत्यावश्यकता में),
माघ कृ.	९	गु.	माघ २२	फर. ३	अनु.	वृश्चि.	मकर	कन्या	ऽशु।।। ।ऽअ ।ऽ।।	ल. गोधू., ६,

आगामी वर्ष (सं. २०६२ वि.) में गुरु-शुक्रास्तः- संवत् २०६१ वि. में माघ शुक्ल ४ शनिवार (१२ फर. सन् '०५ ई.) को अस्त होकर संवत् २०६२ वि. के प्रारम्भ में लगभग वैशा. कृष्ण १ चन्द्रवार (२५ अप्रैल, सन् २००५ ई.) तक शुक्र अस्त रहेगा। शुक्र पुनः २०६२ वि. में ही लगभग पौष शुक्ल १२ बुधवार (११ जन. सन् २००६ ई.) से माघ कृष्ण २ चन्द्रवार (१६ जन. सन् २००६ ई.) तक अस्त रहेगा। इस वर्ष (सं. २०६२ वि. में) लगभग आश्वि. शुक्ल. ३ गुरुवार (६ अक्तू., '०५ ई.) से कार्त्तिक शुक्ल २ गुरुवार (३ नवं. '०५ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा।

सं. २०६१ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६१ वि. में कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०६१ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ.**272** पर दिए गए हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं-यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाह मुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों (कोष्ठकों) में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेष राशि वाले लड़के और मिथुन राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६१ वि. में नवं. (२००४ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है-यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कालम में मेष के आगे नवं. की केवल १, ६, ७, ९ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में मिथुन के आगे नवं. की १, ६, ७, १३, २१, २२, २३, २६, २७, २८ तारीखें है। इसलिए यह समझना चाहिए कि नवं. (२००४ ई.) में मेष राशि वाले लड़के और मिथुन राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबल शुद्धि के अनुसार केवल १, ६, ७ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि नवं. की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-मिथुन) वाले कालमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्र निर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है। **ध्यान दें-लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ४, ६, ८, १०, १२ वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना गया है।**

ध्यान रहे- इस वर्ष गुरु वर्षारम्भ से २९ अगस्त (श्राव. शु. ११ गु.) तक मित्र राशि (सिंह) में रहेगा। अतः यह कन्या के लिए कहीं भी पूज्य नहीं होगा। इसके बाद यह वर्षान्त तक कन्या राशि में रहेगा। जो जन्म/नाम राशि से चौथे, आठवें, बारहवें गोचरस्थ होने पर कन्याओं के लिए पूज्य रहेगा।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६१ वि.) (२१ मार्च सन् २००४ ई. से ८ अप्रैल सन् २००५ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)			जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	
मेष	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ८, ९, १०, १३; अग. १८, २०, २१, २८, २९; सितं. १; अक्तू. २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१;	ज्येष्ठ , कार्त्तिक ,	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ८, ९, १०, १३; अग. १८, २०, २१, २८, २९; सितं. १; अक्तू. २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१;	- -
वृष	जून २६, २७; जुला. ४, ५, ८, ९, १०, १३; अक्तू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रै. २२, २३; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २६, २७; जुला. ४, ५, ८, ९, १०, १३; अग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; सितं. १; अक्तू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -
मिथुन	अप्रै. २२, २३, २९; मई १२; जून २२, २३, २७ (११/११ बाद); जुला. ३, ५, ८, ९, १०, १३; अग. २१, २३; सितं. १; अक्तू. १७, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, १३, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ८, ९;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन ,	अप्रै. २२, २३, २९; मई १२; जून २२, २३, २७ (११/११ बाद); जुला. ३, ५, ८, ९, १०, १३; अग. २१, २३; सितं. १; अक्तू. १७, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, १३, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ८, ९; जन. १६, २१; फर. ३;	कन्या
कर्क	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११; अग. १८, २०, २३, २८, २९; सितं. १; नवं. १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	माघ	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११; जून २२, २३, २६, २७ (११/११ तक); जुला. ३, ४, ८, ९, १०, १३; अग. १८, २०, २३, २८, २९; सितं. १; अक्तू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -

नाम/ जन्म- त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६१ वि.) (२१ मार्च सन् २००४ ई. से ८ अप्रैल सन् २००५ ई. तक) 277 जिस राशि में
(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६१ वि.) (२१ मार्च सन् २००४ ई. से ८ अप्रैल सन् २००५ ई. तक)
(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
सिंह	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ९ (२५/३२ बाद), १०, १३; अग. १८, २०, २१, २८, २९; अक्टू. २१, २२, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९; जन. २१, २९, ३०, ३१;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ९ (२५/३२ बाद), १०, १३; अग. १८, २०, २१, २८, २९; अक्टू. २१, २२, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १७, १८, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. २१, २९, ३०, ३१;	- -
कन्या	जून २२, २३, २६, २७; जुला. ४, ५, ८, ९ (२५/३२ तक), १३; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	ज्येष्ठ , आश्विन कार्त्तिक , माघ,	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ४, ५, ८, ९ (२५/३२ तक), १३; अग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; सितं. १; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -
तुला	अप्रै. २९; मई १, २, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ५, ८, ९, १०; अग. १८, २०, २१, २३; सितं. १; अक्टू. १७, २५, २६; नवं. १ (८/१० बाद), ६, ७, ९, १३, २१, २२, २३, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. २९; मई १, २ १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ५, ८, ९ १०; अग. १८, २०, २१, २३; सितं. १; अक्टू. १७, २५, २६; नवं. १ (८/१० बाद), ६, ७, ९, १३, २१, २२, २३, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. १६, २९, ३०, ३१; फर. ३;	कन्या
वृश्चिक	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११; अग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; सितं. १; नवं. १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७ ; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	ज्येष्ठ	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११; जून २२,२३, २६, २७; जुला. ३, ४, ८, ९, १०, १३; अग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; सितं. १; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १ (८/१० तक), ६, ७, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७ ; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -
धनु	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ९ (२५/३२ बाद), १०, १३; अ ग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; अक्टू. १७, २१, २२, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १३; जन. २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	आषाढ़ , माघ,	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ९ (२५/३२ बाद), १०, १३; अग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; अक्टू. १७, २१, २२, ३०, ३१; नवं. १, ६, ७, ९, १३, १७, १८, २६, २७, २८; दिसं. ४, ५, ६, ८, ९; जन. २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -
मकर	जून २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ८, ९ (२५/३२ तक), १३; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८; दिसं. ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रै. २२, २३; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २६, २७; जुला. ३, ४, ५, ८, ९ (२५/३२ तक), १३; अग. १८, २०, २१, २३, २८, २९; सितं. १; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, ९, १३, १७, १८, २१, २२. २३, २६, २७, २८; दिसं. ६, ८, ९; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -
कुम्भ	अप्रै. २९; मई ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २७ (११/११ बाद); जुला. ३, ४, ५, ८, ९, १०; अग. २१, २३, २८, २९; सितं. १; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६; नवं. १ (८/१० बाद), ६, ७, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २८; दिसं. ४, ५, ८, ९;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. २९; मई ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २७ (११/११ बाद); जुला. ३, ४, ५, ८, ९, १०; अग. २१, २३, २८, २९; सितं. १; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६; नवं. १ (८/१० बाद), ६, ७, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २८; दिसं. ४, ५, ८, ९; जन. १६; फर. ३;	कन्या
मीन	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; अग. १८, २०, २३, २८, २९; सितं. १; नवं. १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७; दिसं. ४, ५, ६; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	आश्विन	अप्रै. २२, २३, २९; मई १, २, ९, १०, ११, १२; जून २२, २३, २६, २७ (११/११ तक); जुला. ३, ४, ५, ८, ९, १०, १३; अग. १८, २०, २३, २८, २९; सितं. १; अक्टू. १७, २१, २२, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १ (८/१० तक), ६, ७, ९, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७; दिसं. ४, ५, ६; जन. १६, २१, २९, ३०, ३१; फर. ३;	- -

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्धविवाह मुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तसम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां लग्नाभावदोष लिखा गया है। *ध्यान रहे-* यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६१ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं,- प्रियव्रत शर्मा।

ध्यान दें- इस वर्ष (सं. २०६१ में) वैशा. कृ. ६ मं. (१३ अप्रै.) तक सूर्य मीनस्थ है। इसी अवधि में वक्री गुरु चैत्र शु. ११, गु. (१ अप्रै., २००४ ई.) को वक्रगति से पुनः पू.फा. के प्रथम चरण (सिंह-सिंहांशक) में प्रविष्ट होकर मार्गगति से आषा.कृ. ५ चं.(७ जून, '०४) को इससे (सिंह-सिंहांशक से) बाहर हो जाएगा। इस अन्तराल में (गुरु की सिंह-सिंहांशक में स्थिति के काल में) शास्त्रनिर्णयानुसार मेषस्थ सूर्य (१४ अप्रैल से १४ मई तक के समय) में विवाहादि मंगलकृत्यों के मुहूर्त्त लगाए गए हैं, क्योंकि मुहूर्त्तशास्त्रकारों का निर्णय है कि मेषस्थ सूर्य के काल में सिंहस्थ गुरु का दोष निवृत्त हो जाता है। इस विषय का विस्तृत विवेचन गतवर्ष (सं.२०६० वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ५४ पर *"सिंहस्थ गुरु के काल में मङ्गल कृत्य"*- लेख में किया गया है- वहां देखें।

तिथि-वार	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वैशा.कृ. १० बु.	अप्रै. १४	धनि.	लग्नाभाव (१८/३१ बाद मृत्युबाण),
वैशा.शु. १ मं.	अप्रै. २०	अश्वि.	क्षीणचन्द्र,
वैशा.शु. ४ शु.	अप्रै. २३	मृग.	मृत्युबाण,
वैशा.शु. ५ श.	अप्रै. २४	मृग.	मृत्युबाण,
वैशा.शु. १० शु.	अप्रै. ३०	मघा	नक्षत्रान्त,
वैशा.शु. १२ र.	मई २	उ.फा.	नक्षत्रान्त,
वैशा.शु. १२ र.	मई २	चित्रा	लग्नाभाव,
वैशा.शु. १३ चं.	मई ३	चित्रा	ग्रहणशूल,
वैशा.शु. १३ चं.	मई ३	स्वा.	ग्रहणशूल, केतुयुति,
वैशा.शु. १५ मं.	मई ४	स्वा.	ग्रहणदिन, केतुयुति,
ज्ये. कृ. १ बु.	मई ५	अनु.	ग्रहणशूल, राहुवेध,
ज्ये. कृ. २ गु.	मई ६	अनु.	ग्रहणशूल, राहुवेध,
ज्ये. कृ. ३ शु.	मई ७	मूल	ग्रहणशूल,
ज्ये. कृ. ४ श.	मई ८	मूल	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. ११ शु.	मई १४	उ.भा.	संक्रान्तिदिन,
ज्ये.कृ. ११ शु. से आषा. कृ. ५ चं. (१४ मई से ७ जून २००४ ई.) तक सिंह-सिंहांशकस्थ गुरु का अपरिहार्य दोष है।			

तिथि-वार	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा. कृ.१ शु. से आषा. कृ.१० श. (४ से १२ जून, २००४ ई.) तक शुक्र पश्चिम में अस्त है।			
आषा. शु. १ शु.	जून १८	मृग.	क्षीणचन्द्र, भुजंगपात,
आषा. शु. ६ गु.	जून २४	उ.फा.	व्यतीपात,
आषा. शु. ७ शु.	जून २५	उ.फा.	व्यतीपात, भद्रा,
आषा. शु. ७ शु.	जून २५	हस्त	व्यतीपात,
आषा. शु. ९ र.	जून २७	स्वा.	केतुयुति, ग्रहणनक्षत्र,
आषा. शु. १० चं.	जून २८	स्वा.	केतुयुति, ग्रहणनक्षत्र,
आषा. शु. ११ मं.	जून २९	अनु.	राहुवेध,
आषा. शु. १३ बु.	जून ३०	अनु.	राहुवेध,
आषा. शु. १४ गु.	जुला. १	मूल	शनिवेध,
आषा. शु. १५ शु.	जुला. २	मूल	शनिवेध,
प्र.श्राव.कृ. १ श.	जुला. ३	श्रव.	वैधृति,
प्र.श्राव.कृ. २ र.	जुला. ४	धनि.	भद्रा,
प्र.श्राव.कृ. ३ चं.	जुला. ५	धनि.	लग्नाभाव, (२०/४६ तक मृत्युबाण),
प्र.श्राव.कृ. ६ बु.	जुला. ७	उ.भा.	लग्नाभाव,
प्र.श्राव.कृ. १२ बु.	जुला. १४	रोहि.	लग्नाभाव, (६/०७ बाद मृत्युबाण),

तिथि-वार	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
श्रावण अधिक मास (१८ जुलाई से १६ अगस्त, २००४ ई. तक)			
द्वि. श्राव. शु. १ मं.	अग. १७	मघा	लग्नाभाव,
द्वि. श्राव. शु. ३ गु.	अग. १९	उ.फा.	लग्नाभाव,
द्वि. श्राव. शु. ३ गु.	अग. १९	हस्त	लग्नाभाव,
द्वि. श्राव. शु. ४ शु.	अग. २०	हस्त	लग्नाभाव,
द्वि. श्राव. शु. ५ श.	अग. २१	स्वा.	केतुयुति, ग्रहणनक्षत्र,
द्वि. श्राव. शु. ६ र.	अग. २२	स्वा.	केतुयुति, ग्रहणनक्षत्र,
द्वि. श्राव. शु. ९ मं.	अग. २४	अनु.	वैधृति,
द्वि. श्राव. शु.१० बु.	अग. २५	मूल	शनिवेध,
द्वि. श्राव. शु.११ गु.	अग. २६	उ.षा.	२६/०० बाद मृत्युबाण,
द्वि. श्राव. शु.१२ शु.	अग. २७	उ.षा.	मृत्युबाण,
द्वि. श्राव. शु.१२ शु.	अग. २७	श्रव.	सूर्यवेध,
द्वि. श्राव. शु.१३ श.	अग. २८	श्रव.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. २ मं.	अग. ३१	उ.भा.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ३ बु.	सितं. १	उ.भा.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ४ गु.	सितं. २	रेव.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ. ४ गु.	सितं. २	अश्वि.	भौम-सूर्यवेध, राहुयुति,
भाद्र. कृ. ५ शु.	सितं. ३	अश्वि.	भौम- सूर्यवेध, राहुयुति,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६१ वि.) 279

तिथि-वार तारीख विवाह

तिथि-वार	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
गुरु अस्त- भाद्र. कृ. ७ चं. से आश्वि. कृ. ३ शु. (६ सितं. से १ अक्तू.) तक, श्राद्धपक्ष- २९ सितं. से १४ अक्तू. तक।			
आश्वि. शु. १ शु.	अक्तू. १५	स्वा.	मासान्त, केतुयुति, ग्रहणनक्षत्र,
आश्वि. शु. ३ श.	अक्तू. १६	अनु.	संक्रान्तिदिन,
आश्वि. शु. ५ चं.	अक्तू. १८	मूल	शनिवेध,
आश्वि. शु. ६ मं.	अक्तू. १९	मूल	शनिवेध,
आश्वि. शु. ७ बु.	अक्तू. २०	उ.षा.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. ९ शु.	अक्तू. २२	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.१० श.	अक्तू. २३	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.१३ मं.	अक्तू. २६	उ.भा.	गुरु पादवेध है,
आश्वि. शु.१४ बु.	अक्तू. २७	रेव.	मृत्युबाण,
आश्वि. शु.१४ बु.	अक्तू. २७	अश्वि.	राहुयुति,
आश्वि. शु.१५ गु.	अक्तू. २८	अश्वि.	राहुयुति,
कार्ति. कृ. ११ चं.	नवं. ८	उ.फा.	वैधृति,
कार्ति. शु. २ र.	नवं. १४	मूल	मासान्त,
कार्ति. शु. ३ चं.	नवं. १५	मूल	संक्रान्तिदिन,
कार्ति. शु. ४ मं.	नवं. १६	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्ति. शु. ६ बु.	नवं. १७	उ.षा.	भुजंगपात,

तिथि-वार	तारीख २००४-०५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्ति. शु. ७ गु.	नवं. १८	धनि.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. ८ शु.	नवं. १९	धनि.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. ११ चं.	नवं. २२	उ.भा.	कालाल्पता, लग्नाभाव,
कार्ति. शु. १२ मं.	नवं. २३	अश्वि.	व्यतीपात, राहुयुति,
कार्ति. शु. १३ बु.	नवं. २४	अश्वि.	राहुयुति,
मार्ग. कृ. ६ शु.	दिसं. ३	मघा	भद्रा, वैधृति,
मार्ग. कृ. १० मं.	दिसं. ७	हस्त	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. १० मं.	दिसं. ७	चित्रा	केतुयुति,
मार्ग. कृ. ११ बु.	दिसं. ८	चित्रा	केतुयुति,
मार्ग. शु. १ र.	दिसं. १२	मूल	भुजंगपात, शनिवेध,
मार्ग. शु. २ चं.	दिसं. १३	मूल	भुजंगपात, शनिवेध,
मार्ग. शु. २ चं.	दिसं. १३	उ.षा.	मृत्युबाण,
मार्ग. शु. ३ मं.	दिसं. १४	उ.षा.	मासान्त,
मार्ग. शु. ३ मं.	दिसं. १४	श्रव.	मासान्त,
धनुःस्थ रवि- मार्ग. शु. ४ बु. से पौष शु. ४ गु. तक,			
पौष शु. ५ शु.	जन. १४	उ.भा.	परिघार्ध,
पौष शु. ६ श.	जन. १५	उ.भा.	मृत्युबाण,
पौष शु. ६ श.	जन. १५	रेव.	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २००५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
पौष शु. ७ र.	जन. १६	अश्वि.	भद्रा, राहुयुति,
पौष शु. ८ चं.	जन. १७	अश्वि.	राहुयुति,
पौष शु. ९ मं.	जन. १८	अश्वि.	नक्षत्रान्त, राहुयुति,
पौष शु. ११ गु.	जन. २०	रोहि.	लग्नाभाव,
पौष शु. १२ शु.	जन. २१	मृग.	सूर्यवेध,
पौष शु. १२ श.	जन. २२	मृग.	सूर्यवेध,
माघ कृ. १ बु.	जन. २६	मघा	सूर्यवेध,
माघ कृ. २ गु.	जन. २७	मघा	सूर्यवेध,
माघ कृ. ६ चं.	जन. ३१	चित्रा	केतुयुति,
माघ कृ. ७ मं.	फर. १	चित्रा	भद्रा, केतुयुति,
माघ कृ. ७ मं.	फर. १	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ८ बु.	फर. २	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ११ श.	फर. ५	मूल	भौमयुति, शनिवेध,
माघ कृ. १२ र.	फर. ६	मूल	नक्षत्रान्त, भौमयुति, शनिवेध,
माघ शु. १ बु.	फर. ९	धनि.	क्षीणचन्द्र, सूर्ययुति, शुक्र वार्धक्य,
शुक्र अस्त- माघ शु. ४ श. (१२ फर. '०५ ई.) से शुक्र वर्षान्त तक पूर्व में अस्त रहेगा।			

विवाह-मुहूर्तों के शोधन में वेध, युति आदि दोषों के शास्त्रीय-परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाह मुहूर्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ-चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्तों को शुद्ध मान लिया जाता है और वहां विवाह लग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- ***वेध परिहार-*** सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेध पद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेध पद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में है तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। ***युति दोष का परिहार-*** नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्र राशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो, तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार-*** मुहूर्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी कर्त्तरीदोष नहीं रहता, यदि मुहूर्त लग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाह मुहूर्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार-*** मुहूर्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाह लग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-*** नीच राशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार-*** मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-*** शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रु राशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है- मार्त्तण्ड पंचांग में दिए जाने वाले मुहूर्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

विवाहादि मुहूर्तों की शुद्धि-अशुद्धि के बारे में उत्पन्न शंका के समाधान के लिए मुझे जवाबी पत्र दीजिए- प्रियव्रत शर्मा , ५९/६,(अधिशासी), पंचकूला - १३४ १०९

मुण्डनादि मुहूर्त्त (सं.२०६१ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)

मेषस्थ सूर्य के समय सिंह-सिंहांशकस्थ गुरु की स्थिति में भी शास्त्र-निर्णयानुसार मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २६	पुन.	८/५५ बाद,

मुण्डन में विशेषः-किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २६	पुन.	८/१५ तक,
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. २०	मई २	हस्त	६/२० से १०/०७ तक,
आषा. शु. २ र.	आषा. ७	जून २०	पुन.	८/२५ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १८	जन. ३०	उ.फा.	१०/०५ तक,
माघ शु. ५ र.	फाल्गु. २	फर. १३	रेव.	

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २६	पुन.	८/१५ तक,
आषा. शु. ३ चं.	आषा. ८	जून २१	पुष्य	६/२५ तक,
माघ कृ. ६ चं.	माघ १९	जन. ३१	हस्त	११/२७ तक,
माघ कृ. ६ चं.	माघ १९	जन. ३१	चित्रा	१२/३६ बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ २३	फर. ४	अनु.	१०/०१ तक,

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ५ र.	वैशा. १३	अप्रै. २५	आर्द्रा	
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. २०	मई २	हस्त	६/२० बाद,
आषा. शु. २ र.	आषा. ७	जून २०	पुन.	१३/५३ तक,
पौष शु. १३ र.	माघ ११	जन. २३	आर्द्रा	११/०४ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १८	जन. ३०	हस्त	११/१७ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत,अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १० बु.	वैशा. २	अप्रै. १४	धनि.	६/१५ तक,
वैशा. कृ. ११ गु.	वैशा. ३	अप्रै. १५	शत.	१७/०३ बाद,
वैशा. शु. ३ गु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	रोहि.	१४/३३ बाद,
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २६	पुन.	८/१५ बाद,

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ११ श.	वैशा. १९	मई १	उ.फा.	११/३६ बाद,
पौष शु. ११ गु.	माघ ८	जन. २०	रोहि.	११/४४ से १६/५४ तक,

नूतन-गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ११ श.	वैशा. १९	मई १	उ.फा.	११/३६ बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ २३	फर. ४	अनु.	१०/०१ तक,
माघ कृ. १३ चं.	माघ २६	फर. ७	उ.षा.	११/२० तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. २ बु.	चैत्र २५	अप्रै. ७	स्वा.	१३/४१ तक,
वैशा. कृ. ३ गु.	चैत्र २६	अप्रै. ८	अनु.	१२/४६ से २०/४३ तक,
वैशा. कृ. १० बु.	वैशा. २	अप्रै. १४	धनि.	१७/४४ से २६/४५ तक,
वैशा. कृ. ११ गु.	वैशा. ३	अप्रै. १५	शत.	२६/५६ तक,
वैशा. कृ. १३ श.	वैशा. ५	अप्रै. १७	उ.भा.	१७/०१ तक,
वैशा. शु. ३ गु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	रोहि.	१४/३३ से २४/४८ तक,
वैशा. शु. ५ श.	वैशा. १२	अप्रै. २४	मृग.	१९/२५ तक,
ज्ये. कृ. ६ चं.	वैशा. २८	मई १०	उ.षा.	७/१४ तक,
ज्ये. कृ. १२ श.	ज्ये. २	मई १५	उ.भा.	१०/३० तक,
ज्ये. कृ. १२ श.	ज्ये. २	मई १५	रेव.	११/४२ बाद,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. ७	मई २०	रोहि.	२३/०० तक,
ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. ७	मई २०	मृग.	२४/१२ बाद,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. ८	मई २१	मृग.	२६/०४ तक,
ज्ये. शु. ५ चं.	ज्ये. ११	मई २४	पुष्य	६/०८ बाद,
ज्ये. शु. १० श.	ज्ये. १६	मई २९	उ.फा.	१४/३६ तक,
ज्ये. शु. १२ चं.	ज्ये. १८	मई ३१	चित्रा	१२/२५ तक,
ज्ये. शु. १२ चं.	ज्ये. १८	मई ३१	स्वा.	१३/३० बाद,
प्र. श्राव.कृ. १ श.	आषा.२०	जुला. ३	उ.षा.	७/५६ से ११/३१ तक,
प्र. श्राव.कृ. ७ गु.	आषा.२५	जुला. ८	उ.भा.	१२/४५ बाद,
प्र. श्राव.कृ. ८ शु.	आषा.२६	जुला. ९	रेव.	२४/२० तक,
प्र. श्राव.कृ.१२ बु.	आषा.३१	जुला.१४	रोहि.	११/०६ तक,
प्र. श्राव.कृ.१२ बु.	आषा.३१	जुला.१४	मृग.	१२/१८ बाद,
प्र.(अधि) श्राव.शु.५ गु.	श्राव. ७	जुला.२२	उ.फा.	१२/१३ से २८/१३ तक,
प्र.(अधि) श्राव.शु.७ श.	श्राव. ९	जुला.२४	चित्रा	५/४६ से २१/४१ तक,
प्र.(अधि) श्राव .शु.९चं.	श्राव. ११	जुला.२६	अनु.	२७/४२ बाद,
प्र.(अधि) श्राव.शु.१५श.	श्राव. १६	जुला.३१	श्रव.	१५/४१ बाद,
द्वि.(अधि) श्राव.कृ.२चं.	श्राव. १८	अग. २	धनि.	६/५१ तक,
द्वि.(अधि) श्राव.कृ.२चं.	श्राव. १८	अग. २	शत.	११/०३ बाद,
द्वि.(अधि) श्राव.कृ.५गु.	श्राव. २१	अग. ५	रेव.	८/३५ बाद,
द्वि.(अधि) श्राव.कृ.६शु.	श्राव. २२	अग. ६	रेव.	८/१० तक,
द्वि.(अधि) श्राव.कृ.९चं.	श्राव. २५	अग. ९	रोहि.	१८/४१ बाद,
द्वि.(अधि) श्राव.कृ.११ बु.	श्राव. २७	अग.११	मृग.	२०/५० तक,
द्वि. (शु.)श्राव.शु. २ बु.	भाद्र. ३	अग.१८	उ.फा.	१०/११ बाद,
द्वि. (शु.)श्राव.शु. ३ गु.	भाद्र. ४	अग.१९	उ.फा.	६/४१ तक,
द्वि. (शु.)श्राव.शु. ४ शु.	भाद्र. ५	अग.२०	चित्रा	११/१३ बाद,
द्वि. (शु.)श्राव.शु. ५ श.	भाद्र. ६	अग.२१	चित्रा	९/५८ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
द्वि. (शु.)श्राव.शु. ५ श.	भाद्र. ६	अग. २१	स्वा.	११/१० बाद,
द्वि. (शु.)श्राव.शु. ८ चं.	भाद्र. ८	अग. २३	अनु.	१५/४२ बाद,
द्वि. (शु.)श्राव.शु.१२शु.	भाद्र. १२	अग. २७	उ.षा.	२३/५२ तक,
द्वि. (शु.)श्राव.शु.१३श.	भाद्र. १३	अग. २८	श्रव.	१३/१३ तक,
द्वि. (शु.)श्राव.शु.१५चं.	भाद्र. १५	अग. ३०	शत.	१८/१८ तक,
कार्त्ति. कृ. २ श.	कार्त्ति. १५	अक्तू.३०	रोहि.	१६/२३ से २३/४६ तक,
कार्त्ति. कृ. ४ चं.	कार्त्ति. १७	नवं. १	मृग.	१४/५७ से २०/२३ तक,
कार्त्ति. कृ. ७ गु.	कार्त्ति. २०	नवं. ४	पुष्य	९/१० से २९/०५ तक,
कार्त्ति. कृ. १३ बु.	कार्त्ति. २६	नवं. १०	चित्रा	११/३८ से २४/३५ तक,
कार्त्ति. शु. १ श.	कार्त्ति. २९	नवं. १३	अनु.	६/५८ से १६/३० तक,
कार्त्ति. शु. ६ बु.	मार्ग. ३	नवं. १७	उ.षा.	१८/२९ तक,
कार्त्ति. शु. ७ गु.	मार्ग. ४	नवं. १८	श्रव.	१६/५९ तक,
कार्त्ति. शु. ८ शु.	मार्ग. ५	नवं. १९	धनि.	११/२१ से १५/५८ तक,
मार्ग. कृ. १ श.	मार्ग. १३	नवं. २७	रोहि.	२४/५६ तक,
मार्ग. कृ. ४ बु.	मार्ग. १७	दिसं. १	पुष्य	११/०० बाद,
मार्ग. कृ. ५ गु.	मार्ग. १८	दिसं. २	पुष्य	१२/३२ तक,
मार्ग. कृ. ९ चं.	मार्ग. २२	दिसं ६	उ.फा.	१९/२९ से २०/२२ तक,
मार्ग. कृ. ११ बु.	मार्ग. २४	दिसं. ८	चित्रा	२०/०३ तक,
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. २५	दिसं. ९	स्वा.	१८/४४ तक,
मार्ग. शु. ६ शु.	पौष ३	दिसं. १७	शत.	२१/३६ तक,
मार्ग. शु. ९ चं.	पौष ६	दिसं. २०	रेव.	२२/३५ तक,
मार्ग. शु. १३ शु.	पौष १०	दिसं. २४	रोहि.	७/५६ से १५/५३ तक,
माघ कृ. ६ चं.	माघ १९	जन. ३१	चित्रा	१२/३९ से २२/१८ तक,
माघ कृ. १० शु.	माघ २३	फर. ४	अनु.	१०/०१ तक,
माघ कृ. १३ चं.	माघ २६	फर. ७	उ.षा.	११/२० तक,
माघ शु. १ बु.	माघ २८	फर. ९	धनि.	१४/५३ तक,
माघ शु. २ गु.	माघ २९	फर. १०	शत.	१६/५२ तक,
माघ शु. १० शु.	फाल्गु. ७	फर. १८	मृग.	२२/४३ तक,
माघ शु. १३ चं.	फाल्गु.१०	फर. २१	पुष्य	३०/३१ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ. २ श.	फाल्गु. १५	फर. २६	उ.फा.	१५/४७ तक,
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. १७	फर. २८	चित्रा	१३/५२ से १७/४५ तक,
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु. २०	मार्च ३	अनु.	१७/२० तक,
फाल्गु. कृ. १२ चं.	फाल्गु. २४	मार्च ७	उ.षा.	७/२३ तक,
फाल्गु. शु. १ शु.	फाल्गु. २८	मार्च ११	उ.भा.	२४/२२ तक,
फाल्गु. शु. २ श.	फाल्गु. २९	मार्च १२	रेव.	२३/३५ तक,
फाल्गु. शु. ६ बु.	चैत्र ३	मार्च १६	रोहि.	२७/४० तक,
फाल्गु. शु. ७ गु.	चैत्र ४	मार्च १७	मृग.	२२/४८ तक,
फाल्गु. शु. १५ शु.	चैत्र १२	मार्च २५	उ.फा.	१८/१० से २२/४२ तक,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश-चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (२००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २६	पुन.	
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. २०	मई २	हस्त	६/२० बाद,
पौष शु. ७ र.	माघ ४	जन. १६	रेव.	
माघ कृ. ५ र.	माघ १८	जन. ३०	उ.फा.	१०/०५ तक,
माघ कृ. ६ चं.	माघ १९	जन. ३१	हस्त	११/२७ तक,
माघ कृ. १० शु.	माघ २३	फर. ४	अनु.	१०/०१ तक,
माघ कृ. १३ चं.	माघ २६	फर. ७	उ.षा.	११/२० तक,
माघ शु. १ बु.	माघ २८	फर. ९	धनि.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
मार्ग. कृ. २ र.	मार्ग. १४	नवं. २८	मृग.	
मार्ग. कृ. ५ गु.	मार्ग. १८	दिसं. २	पुष्य	
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. २५	दिसं. ९	स्वा.	

...प्रतिशठा के विषेश मुहूर्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां नीचे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी- देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है।

ध्यान दें- गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्तके लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तद्नुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिव प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु-शुक्रास्त काल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु को वर्जित किया जाता है।

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी -अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्नकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े ,तब तो उस दिन मूर्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ४ श.	माघ १७	जन. २९	उ.फा.	९/२८ बाद,

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ९ गु.	वैशा. १७	अप्रै.२९		
ज्ये. कृ. ४ श.	वैशा. २६	मई ८	मूल	

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ गु.	वैशा. १०	अप्रै. २२		
माघ शु. ३ शु.	माघ ३०	फर. ११		

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १४ र.	वैशा. ६	अप्रै. १८	रेव.	
वैशा. शु. ५ र.	वैशा. १३	अप्रै. २५	आर्द्रा	
आषा. शु. २ श.	आषा. ६	जून १६	आर्द्रा	११/०५ तक,

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १३ श.	वैशा. ५	अप्रै. १७	उ.भा.	१७/०१ तक,
वैशा. शु. ३ गु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	रोहि.	१४/३३ बाद,
वैशा. शु. ५ श.	वैशा. १२	अप्रै. २४	मृग.	
वैशा. शु. ११ श.	वैशा. १६	मई १	उ.फा.	११/३६ बाद,
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. २०	मई २	हस्त	६/२० बाद,
आषा. शु. २ र.	आषा. ७	जून २०	पुष्य	१५/०५ से १७/१८ तक,
आषा. शु. ३ चं.	आषा. ८	जून २१	पुष्य	८/४४ तक,
आषा. शु. ६ र.	आषा. १४	जून २७	चित्रा	११/१० बाद,
आषा. शु. १३ बु.	आषा. १७	जून ३०	अनु.	१०/२५ से १५/३६ तक,

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
प्र.श्रा.कृ. ७ गु.	आषा. २५	जुला. ८	उ.भा.	१२/४५ बाद,
प्र.श्रा.कृ. [illegible] बु.	आषा. ३१	जुला.१४	रोहि.	११/०६ तक,
प्र.श्रा.कृ. १२ बु.	आषा. ३१	जुला.१४	मृग.	१२/१८ बाद,
द्वि.श्रा.शु. २ बु.	भाद्र. ३	अग.१८	उ.फा.	१०/११ बाद,
द्वि.श्रा.शु. ३ गु.	भाद्र. ४	अग.१६	उ.फा.	८/१२ तक,
द्वि.श्रा.शु. ४ शु.	भाद्र. ५	अग.२०	हस्त	७/५२ से १०/०१ तक,
द्वि.श्रा.शु. ४ शु.	भाद्र. ५	अग.२०	चित्रा	११/१३ बाद,
द्वि.श्रा.शु. ५ श.	भाद्र. ६	अग.२१	चित्रा	७/ १० तक,
द्वि.श्रा.शु.१२ शु.	भाद्र. १२	अग.२७	उ.षा.	
भाद्र. कृ. ३ बु.	भाद्र. १७	सितं. १	उ.भा.	१४/२६ तक,
आश्वि.शु.१२ चं.	कार्त्ति. १०	अक्तू.२५	उ.भा.	११/५८ बाद,
आश्वि.शु.१५ गु.	कार्त्ति. १३	अक्तू.२८	अश्वि.	८/१८ तक,
कार्त्ति. कृ. २ श.	कार्त्ति. १५	अक्तू.३०	रोहि.	१६/२३ बाद,
कार्त्ति. कृ. ७ गु.	कार्त्ति. २०	नवं. ४	पुष्य	६/१० बाद,

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००४-०५ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. कृ.१३ बु.	कार्त्ति. २६	नवं. १०	चित्रा	१५/२७ बाद,
कार्त्ति. शु. १३ बु.	मार्ग. १०	नवं. २४	अश्वि.	१०/०६ बाद,
मार्ग. कृ. २ र.	मार्ग. १४	नवं. २८	मृग.	
मार्ग. कृ. ४ बु.	मार्ग. १७	दिसं. १	पुष्य	११/०० बाद,
मार्ग. कृ. ५ गु.	मार्ग. १८	दिसं. २	पुष्य	१२/३२ तक,
पौष शु. ७ र.	माघ ४	जन. १६	रेव.	
पौष शु. १२ शु.	माघ ६	जन. २१	रोहि.	१३/१७ तक,
पौष शु. १२ शु.	माघ ६	जन. २१	मृग.	१४/२६ बाद,
पौष शु. १२ श.	माघ १०	जन. २२	मृग.	१६/१३ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १८	जन. ३०	उ.फा.	१०/०५ तक,
माघ कृ. ५ र.	माघ १८	जन. ३०	हस्त	११/१७ बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ २३	फर. ४	अनु.	१०/०१ तक,
माघ कृ. १३ चं.	माघ २६	फर. ७	उ.षा.	११/२० तक,

283
सर्वार्थसिद्धि योग

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६१ वि.) (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.	घं.	मि.
मार्च २१	६	३०	मार्च २१	२२	३९
मार्च २३	६	२७	मार्च २४	१	४८
मार्च २५	४	१२	मार्च २५	सू.	उ.
मार्च २७	६	२२	मार्च २७	१०	१
अप्रै. २	२१	२५	अप्रै. ३	सू.	उ.
अप्रै. ४	६	१३	अप्रै. ५	सू.	उ.
अप्रै. ८	१२	५०	अप्रै. ९	सू.	उ.
अप्रै. ११	६	४	अप्रै. ११	७	१४
अप्रै. १२	५	५३	अप्रै. १२	सू.	उ.
अप्रै. १३	४	५१	अप्रै. १३	सू.	उ.
अप्रै. २०	५	५५	अप्रै. २०	९	२४
अप्रै. २१	११	४९	अप्रै. २२	सू.	उ.
अप्रै. २७	२	१८	अप्रै. २७	सू.	उ.
अप्रै. २८	४	३१	अप्रै. २८	सू.	उ.
अप्रै. ३०	६	५६	मई १	सू.	उ.
मई २	५	४३	मई ३	५	०
मई ५	२२	१५	मई ६	१९	३४
मई ९	१२	३१	मई १०	सू.	उ.
मई १०	१०	५६	मई ११	सू.	उ.
मई १६	१३	३३	मई १७	सू.	उ.
मई १८	१८	२२	मई २०	सू.	उ.
मई २४	९	९	मई २५	सू.	उ.
मई २५	११	३९	मई २६	सू.	उ.
मई २८	५	२७	मई २८	१५	५२
मई ३०	५	२६	मई ३०	१५	५
जून २	९	१	जून ३	६	८
जून ६	५	२५	जून ६	१९	५
जून ७	५	२५	जून ७	१७	१७
जून ११	१७	२२	जून १२	सू.	उ.

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.	घं.	मि.
जून १३	५	२५	जून १३	२१	३०
जून १५	५	२५	जून १६	३	११
जून १६	५	२५	जून १७	सू.	उ.
जून २०	१५	६	जून २१	१७	३८
जून २२	५	२६	जून २२	१९	५१
जून ३०	५	२९	जून ३०	१६	४८
जुला. ४	५	९	जुला. ४	सू.	उ.
जुला. ९	०	९	जुला. १०	सू.	उ.
जुला. १३	५	३५	जुला. १३	९	१२
जुला. १४	५	३५	जुला. १५	सू.	उ.
जुला. १६	१८	१८	जुला. १७	सू.	उ.
जुला. १८	५	३७	जुला. १८	२३	२३
जुला. २७	३	४३	जुला. २७	सू.	उ.
जुला. ३१	१५	४२	अग. १	सू.	उ.
अग. ५	८	३६	अग. ७	सू.	उ.
अग. ९	१५	५८	अग. १०	सू.	उ.
अग. ११	५	५२	अग. ११	२२	२
अग. १३	०	५७	अग. १४	३	३४
अग. २१	११	११	अग. २२	सू.	उ.
अग. २३	९	५६	अग. २४	सू.	उ.
अग. २८	१	५	अग. २८	२२	५७
अग. ३१	१८	२९	सितं. १	सू.	उ.
सितं. २	६	४	सितं. ३	१९	३१
सितं. ६	६	७	सितं. ७	सू.	उ.
सितं. ९	८	२९	सितं. १०	११	९
सितं. १५	१७	३१	सितं. १६	सू.	उ.
सितं. १८	६	१३	सितं. १८	१६	१४
सितं. २०	६	१४	सितं. २०	१४	८
सितं. २४	८	१७	सितं. २५	६	४७

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.	घं.	मि.
सितं. २८	६	१९	सितं. २९	३	२१
सितं. ३०	६	२०	अक्तू. १	४	३२
अक्तू. ४	६	२३	अक्तू. ५	सू.	उ.
अक्तू. ७	६	२४	अक्तू. ८	सू.	उ.
अक्तू. १३	६	२८	अक्तू. १४	१	३७
अक्तू. २२	६	३५	अक्तू. २२	१२	३९
अक्तू. २६	६	३८	अक्तू. २६	११	९
अक्तू. २८	६	३९	अक्तू. २८	१२	५०
अक्तू. ३०	१६	२४	अक्तू. ३१	सू.	उ.
नवं. १	६	४२	नवं. १	२१	३५
नवं. ४	६	४५	नवं. ५	६	१७
नवं. १०	६	५०	नवं. १०	११	३८
नवं. १५	२	१४	नवं. १५	सू.	उ.
नवं. २१	१६	४२	नवं. २२	सू.	उ.
नवं. २३	१८	१५	नवं. २४	सू.	उ.
नवं. २७	७	४	नवं. २८	२	८
दिसं. २	७	९	दिसं. २	१३	४४
दिसं. ५	२०	३३	दिसं. ६	सू.	उ.
दिसं. १२	१२	३८	दिसं. १३	सू.	उ.
दिसं. १९	७	२१	दिसं. १९	२२	४६
दिसं. २१	७	२२	दिसं. २२	१	२३
दिसं. २३	३	२७	दिसं. २३	सू.	उ.
दिसं. २५	७	२३	दिसं. २५	८	३०
सन् २००५ ई.					
जन. १	१	३०	जन. १	सू.	उ.
जन. २	७	२६	जन. ३	सू.	उ.
जन. ७	४	४१	जन. ७	सू.	उ.
जन. ९	७	२७	जन. ९	२१	६

प्रारम्भ 2005 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2005 ई.	घं.	मि.
जन. १७	६	१४	जन. १७	सू.	उ.
जन. १८	७	२५	जन. १८	७	२६
जन. १९	९	२०	जन. २०	सू.	उ.
जन. २४	२३	२१	जन. २५	सू.	उ.
जन. २६	२	११	जन. २६	सू.	उ.
जन. २८	७	२२	जन. २९	सू.	उ.
जन. ३०	७	२१	जन. ३१	सू.	उ.
फर. ३	१३	८	फर. ४	सू.	उ.
फर. ६	७	१६	फर. ६	७	४७
फर. ७	५	५	फर. ७	सू.	उ.
फर. ८	२	१०	फर. ८	सू.	उ.
फर. १३	१४	४६	फर. १४	सू.	उ.
फर. १५	१६	३३	फर. १७	सू.	उ.
फर. २१	५	५५	फर. २२	सू.	उ.
फर. २२	८	४३	फर. २३	सू.	उ.
फर. २५	६	५९	फर. २५	१५	२५
फर. २७	६	५६	फर. २७	१८	१०
मार्च २	१९	१०	मार्च ३	१८	३२
मार्च ६	१३	५७	मार्च ७	सू.	उ.
मार्च ७	११	४५	मार्च ८	सू.	उ.
मार्च १२	१	३५	मार्च १२	सू.	उ.
मार्च १३	६	४०	मार्च १४	०	४३
मार्च १५	६	३८	मार्च १६	२	४८
मार्च १६	६	३६	मार्च १७	सू.	उ.
मार्च २०	१३	१७	मार्च २१	१६	७
मार्च २२	६	२९	मार्च २२	१८	४२
मार्च ३०	६	१९	मार्च ३०	२३	५६
अप्रै. ३	६	१४	अप्रै. ३	१८	३७
अप्रै. ४	६	१३	अप्रै. ४	१६	५६

रवियोग (सं. २०६१ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.	घं.	मि.
मार्च २४	१	४९	मार्च २५	४	११
मार्च २६	७	०	मार्च २७	१०	१
मार्च २९	१५	५४	अप्रै. १	२१	४
अप्रै. ३	२१	३	अप्रै. ४	२०	५
अप्रै. १०	८	५५	अप्रै. ११	७	१४
अप्रै. २२	१४	३४	अप्रै. २३	१७	३२
अप्रै. २४	२०	३८	अप्रै. २५	२३	३६
अप्रै. २९	६	५	मई १	७	०
मई ३	५	१	मई ४	३	६
मई ९	१२	३१	मई १०	१०	५५
मई ११	४	५	मई ११	९	५२
मई २२	३	१७	मई २३	६	१७
मई २४	९	९	मई २५	०	१३
मई २५	११	३९	मई २६	१३	४१
मई २८	१५	५३	मई ३०	१५	५
जून १	११	३३	जून २	९	०
जून ७	१७	१८	जून ७	२२	१०
जून ८	१६	११	जून ९	१५	४८
जून २०	१५	६	जून २१	१७	३८
जून २१	२१	९	जून २२	१९	५१
जून २३	२१	३९	जून २४	२२	५३
जून २६	२३	२९	जून २८	२१	१९
जून ३०	१६	४९	जुला. १	१३	५७
जुला. ७	२३	३५	जुला. ९	०	८
जुला. २१	३	१२	जुला. २२	४	३१
जुला. २३	५	२६	जुला. २४	५	४९

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त २००५ ई.	घं.	मि.
जुला. २६	४	५९	जुला. २८	१	५३
जुला. २९	२१	७	जुला. ३०	१८	२३
अग. ६	९	२३	अग. ७	१०	५७
अग. १९	१०	५४	अग. २०	११	१३
अग. २१	११	११	अग. २२	१०	४४
अग. २४	८	४४	अग. २६	५	१८
अग. २८	१	५	अग. २८	२२	५७
सितं. ४	२१	२१	सितं. ५	२३	४४
सितं. १७	१६	५९	सितं. १८	१६	१४
सितं. १९	१५	१८	सितं. २०	१४	८
सितं. २२	११	२२	सितं. २४	८	१६
सितं २६	५	२७	सितं. २६	२२	४
सितं. २७	४	२२	सितं. २८	३	३७
अक्तू. ४	१०	४४	अक्तू. ५	१३	३६
अक्तू. १६	२१	५३	अक्तू. १७	२०	११
अक्तू. १८	१८	२९	अक्तू. १९	१६	४६
अक्तू. २१	१३	४९	अक्तू. २३	११	४५
अक्तू. २३	२१	३१	अक्तू. २४	११	११
अक्तू. २६	११	१०	अक्तू. २७	११	४६
नवं. ३	०	३३	नवं. ४	३	३०
नवं. १५	२	१४	नवं. १५	२३	४९
नवं. १६	२१	३७	नवं. १७	१९	४१
नवं. २०	१६	४१	नवं. २२	१७	१३
नवं. २४	१९	४१	नवं. २५	२१	२९
दिसं. २	१३	४५	दिसं. २	१६	१
दिसं. ३	१६	२८	दिसं. ४	१८	४७

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.	घं.	मि.
दिसं. १४	६	४२	दिसं. १५	३	५८
दिसं. १५	१८	५८	दिसं. १६	१	४०
दिसं. १६	२३	५५	दिसं. १७	२२	४८
दिसं. १९	२२	४७	दिसं. २२	१	२३
दिसं. २४	५	५२	दिसं. २५	८	३०
सन् २००५ ई.					
जन. २	३	४१	जन. ३	५	१९
जन. १३	९	२०	जन. १४	७	२३
जन. १५	६	११	जन. १६	५	४७
जन. १८	७	२७	जन. २०	११	४४
जन. २२	१७	२६	जन. २३	२०	२४
जन. २४	१	३१	जन. २४	२३	२०
जन. ३१	१२	४०	फर. १	१३	२७
फर. ११	१६	१५	फर. १२	१५	५
फर. १३	१४	४६	फर. १४	१५	१५
फर. १६	१८	३३	फर. १८	२३	५५
फर. १९	९	१२	फर. २०	२	५५
फर. २२	८	४३	फर. २३	११	१५
मार्च १	१९	१८	मार्च २	१९	९
मार्च १३	०	४८	मार्च १४	०	४३
मार्च १५	१	२४	मार्च १६	२	४८
मार्च १९	१०	१९	मार्च २१	१६	७
मार्च २३	२०	५५	मार्च २४	२२	३८
मार्च ३०	२३	५७	मार्च ३१	१०	५३
मार्च ३१	२२	५६	अप्रै. १	२१	४०

सिद्धि योग (सं. २०६१ वि.)

प्रारम्भ 2004 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.	घं.	मि.
मार्च २५	४	१२	मार्च २५	सू.	उ.
अप्रै. २	२१	२५	अप्रै. ३	सू.	उ.
अप्रै. ११	६	४	अप्रै. ११	७	१४
अप्रै. १३	४	५१	अप्रै. १३	सू.	उ.
अप्रै. २१	११	४९	अप्रै. २२	सू.	उ.
अप्रै. ३०	६	५६	मई १	सू.	उ.
मई १०	१०	५६	मई ११	सू.	उ.
मई १९	५	३१	मई १९	२१	१२
मई २८	५	२७	मई २८	१५	५२
जून ७	५	२५	जून ७	१७	१७
अग. १३	०	५७	अग. १३	सू.	उ.
अग. २१	११	११	अग. २२	सू.	उ.
अग. ३१	१८	२९	सितं. १	सू.	उ.
सितं. ९	८	२९	सितं. १०	सू.	उ.
सितं. १८	६	१३	सितं. १८	१६	१४
सितं. २८	६	१९	सितं. २९	३	२१
अक्तू. ७	६	२४	अक्तू. ७	१९	२४
अक्तू. २६	६	३८	अक्तू. २६	११	९
नवं. १५	२	१४	नवं. १५	सू.	उ.
दिसं. १२	१२	३८	दिसं. १३	सू.	उ.
दिसं. २३	३	२७	दिसं. २३	सू.	उ.
सन् २००५ ई.					
जन. १	१	३०	जन. १	सू.	उ.
जन. ९	७	२७	जन. ९	२१	६
जन. १९	९	२०	जन. २०	सू.	उ.
जन. २८	७	२२	जन. २९	सू.	उ.
फर. ६	७	१६	फर. ६	७	४७
फर. ८	२	१०	फर. ८	सू.	उ.
फर. १६	७	८	फर. १६	१८	३२
फर. २५	६	५९	फर. २५	१५	२५
मार्च ७	११	४५	मार्च ८	सू.	उ.
अप्रै. ४	६	१३	अप्रै. ४	१६	५६

अमृतसिद्धि योग (सं. २०६१ वि.)

प्रारम्भ 2004 ई.		घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.		घं.	मि.	
मार्च	२३	६	२७	मार्च	२४	१	४८	मं.
मार्च	२७	६	२२	मार्च	२७	१०	०१	श.
अप्रै.	४	२०	६	अप्रै.	५	सू.	उ.	च.
अप्रै.	२०	५	५५	अप्रै.	२०	९	२४	मं.
मई	२	६	२१	मई	३	५	००	र.
मई	५	२२	१५	मई	६	सू.	उ.	गु.
मई	३०	५	२६	मई	३०	१५	५	र.
जून	२	९	१	जून	३	सू.	उ.	गु.
जून	११	१७	२२	जून	१२	सू.	उ.	श.
जून	३०	५	२९	जून	३०	१६	४८	बु.
जुला.	९	५	३२	जुला.	१०	१	०१	शु.
अग.	६	५	४९	अग.	६	९	२२	शु.
सितं.	७	२	३४	सितं.	७	सू.	उ.	मं.
अक्तू.	४	१०	४४	अक्तू.	५	सू.	उ.	मं.
अक्तू.	७	१९	२५	अक्तू.	८	सू.	उ.	शु.
अक्तू.	३०	१६	२४	अक्तू.	३१	सू.	उ.	र.
नवं.	१	६	४२	नवं.	१	२१	३५	च.
नवं.	४	६	४५	नवं.	५	६	१७	गु.
नवं.	२३	१८	१५	नवं.	२४	सू.	उ.	बु.
नवं.	२७	७	४	नवं.	२८	२	८	श.
दिसं.	२	७	९	दिसं.	२	१३	४४	गु.
दिसं.	२१	७	२२	दिसं.	२२	१	०१	मं.
दिसं.	२५	७	२३	दिसं.	२५	८	३०	श.
सन् २००५ ई.								
जन.	३	५	२०	जन.	३	सू.	उ.	च.
जन.	१८	७	२[illegible]	जन.	१८	७	२६	मं.
जन.	३०	११	१८	जन.	३१	सू.	उ.	च.
फर.	२७	६	५६	फर.	२७	१८	१०	र.
मार्च	२	१९	१०	मार्च	३	सू.	उ.	गु.
मार्च	१२	१	३५	मार्च	१२	सू.	उ.	श.
मार्च	३०	६	१९	मार्च	३०	२३	५६	बु.

त्रिपुष्करयोग (सं. २०६१ वि.)

प्रारम्भ 2004 ई.		घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.		घं.	मि.
मई	१	११	४०	मई	२	६	२०
मई	१५	५	३३	मई	१५	११	४२
जून	१९	१२	१८	जून	२०	६	४१
जून	२९	६	५१	जून	२९	१९	१८
जुला.	१३	७	२३	जुला.	१३	९	१२
अग.	२२	१०	४५	अग.	२३	४	३६
अग.	३१	६	३	सितं.	१	18	28
सितं.	५	५	३४	सितं.	५	२३	४४
अक्तू.	२४	११	१२	अक्तू.	२५	सू.	उ.
अक्तू.	३०	६	४१	अक्तू.	३०	१०	५४
नवं.	९	६	४९	नवं.	९	११	५९
दिसं.	१८	७	२०	दिसं.	१८	[illegible]	३५
दिसं.	२८	७	२५	दिसं.	२८	१७	[illegible]
सन् २००५ ई.							
जन.	२	१०	४	जन.	३	५	१९
जन.	१६	०	४१	जन.	१६	५	४७
फर.	१५	१६	३३	फर.	१५	१७	७
फर.	२०	२	५६	फर.	२१	४	९
फर.	२६	६	५७	फर.	२६	१२	५५

द्विपुष्करयोग (सं. २०६१ वि.)

प्रारम्भ 2004 ई.		घं.	मि.	समाप्त 2004 ई.		घं.	मि.
मार्च	२७	१३	३५	मार्च	२८	१३	४
अप्रै.	६	१४	४	अप्रै.	६	१६	५२
मई	३०	२२	३२	मई	३१	सू.	उ.
जून	८	१५	१	जून	८	१६	१०
जुला.	२४	५	५०	जुला.	२४	२१	४१
अग.	१	२०	२४	अग.	२	सू.	उ.
सितं.	२५	६	४८	सितं.	२५	२३	१८
अक्तू.	५	६	२३	अक्तू.	५	१३	३६
नवं.	२८	३	४०	नवं.	२९	४	५२
सन् २००५ ई.							
जन.	२२	७	२४	जन.	२२	८	३०
फर.	१	७	२०	फर.	१	१३	२७
मार्च	२७	२	३८	मार्च	२८	१	४
अप्रै.	५	१०	५	अप्रै.	५	१५	१६

अमृतसिद्धि योग

ध्यान रहे – गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हे गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर मे प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। अमृतसिद्धि योग के समय जो वार है, उसे दाईं ओर लिखा गया है।

यद्यपि मुहूर्त्त–ग्रन्थों में गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग को छोड़ कर शेष सभी सर्वार्थसिद्धि योगो में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता में ही इस योग में प्रणय विवाह आदि ही करना चाहिए – ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्न शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है। दिनमान का ३०वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। अभिजित् के काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

(विश्व के किसी भी नगर में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।)

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 A.D. से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. मे तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश-कला के अन्तर पर मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 70 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान आप सकते हैं।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नबोधक जन्मस्थलीय सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगतलग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। इतनी (सेकण्ड तक) सूक्ष्मता से विश्व की एक–एक अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर लग्नराशि का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल सरलता से बतलाने वाली ऐसी अदभुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में कहीं भी नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 A.D. से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

समस्त भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं.अं. तथा G.M.T. एवं भा. स्टैं. टा. से उनका अन्तर दिया गया है। यह पुस्तक फरवरी 2004 ई. तक अवश्य प्रकाशित हो जाएगी। नीचे लिखे पते पर एतदर्थ सम्पर्क कीजिए–

यह पुस्तक केवल हमसे ही मिल सकेगी, अन्य किसी भी बुकसेलर से यह उपलब्ध नहीं होगी।

मूल्य– Rs. 320 + 40 (डाक खर्च)
पृष्ठ संख्या–192
(24×18½ C.M.)

साईज– मार्त्तण्ड पंचांग के बराबर

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS
(1951 To 2050 A.D.)
शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिकग्रह)

बड़े साईज़ के 680 पृष्ठों की इस पुस्तक में सन् 1951 से 2050 ई तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा. स्टैं. टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यमराहु, स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो और चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि नक्षत्र प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्ग काल भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों Computer द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

पुस्तक English एवं हिन्दी– दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इससे समानरूप में लाभान्वित होंगे।

इस विषय पर यह अपनी ही तरह का सर्वप्रथम भारतीय प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक फरवरी 2004 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी। आप अपना Order भेज सकते हैं। पुस्तक प्रकाशित होते ही आपको सूचित कर दिया जाएगा। तदनन्तर इसका डाकव्यय सहित मूल्य Rs. 800/- हमें आप नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा भेज सकते हैं। 'अभिजित् प्रकाशन' के नाम D.D. (D.D. drawn in favour of "ABHIJIT PARKASHAN") भी भेजा जा सकता है। पुस्तक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजी जाएगी। V.P.P. भेजने का नियम नहीं है।

ध्यान दें– यह पुस्तक केवल हमारे यहां से ही प्राप्त हो सकेगी। अन्य किसी पुस्तक विक्रेता से यह नहीं मिलेगी।

पुस्तक का साईज़ 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़)
मूल्य Rs. 750/- + डाक व्यय Rs. 50/- (बिना जिल्द)
मूल्य Rs. 750/- + डाक व्यय Rs. 50/- (सजिल्द)
चिरस्थायी Imported पेपर पर मुद्रित,

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, 'अभिजित् प्रकाशन,' 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला– 134 109 Phone: 0172-2565303

दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं प्राचीन अप्राप्य ग्रन्थ

असली प्राचीन हस्तलिखित रावण संहिता	मूल्य- 2500/- रुपये
हस्तलिखित भृगु संहिता कुंडली रहस्य	मूल्य- 2500/- रुपये
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	मूल्य- 2500/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र-तंत्र-मंत्र महार्णव (यंत्र-तंत्र-मंत्र संबंधी जानकारी पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ)	मूल्य- 1600/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र महार्णव *यंत्रशास्त्र के आधार स्तंभ यंत्रों के प्रयोग और निर्माण का सचित्र विवेचन।*	मूल्य- 551/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित तंत्र महार्णव	मूल्य- 551/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव *प्राचीन शास्त्रों के सारभूत इस संकलन-ग्रन्थ में लौकिक कामनाओं की पूर्ति तथा पारलौकिक सुख प्रदान करने वाले चमत्कारिक मंत्रों का अद्भुत संग्रह है।*	मूल्य- 551/- रुपये
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र शिरोमणि *(दो खण्डों में)*	मूल्य- 650/- रुपये
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र महाशास्त्र	मूल्य- 400/- रुपये
लाल किताब *(दो खण्डों में)*	मूल्य- 1700/- रुपये

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की आधी कीमत पहले भेजें।

प्रसन्न मन व स्वस्थ शरीर का रहस्य

इस पुस्तक में कार्मिक ज्ञान, मन्त्र अराधना, दैनिक दिनचर्या में व्यवहार, ध्यान व योग (मुद्रा सहित), भारतीय आयुर्वेदिक मालिश (मुद्रा सहित), मुद्रा चिकित्सा, रेकी, क्रिस्टल हिलिंग, डाउसिंग एवं फूलो के द्वारा चिकित्सा सभी पूर्ण रुप से रंगीन चित्रों सहित दी गई है।

मूल्य 80/- रुपये (डाक खर्च सहित) —*ले.: पण्डित रविन्द्र लाखोटिया*

"सम्पूर्ण हिन्दू चिन्तन" (हिन्दी) एवं
Complete Hindu Thought (English)

इस किताब में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हर पक्ष और कोण का समावेश हैं। यह पुस्तक न केवल हिन्दू धर्म के प्रत्येक जिज्ञासु के लिए बल्कि सर्वसाधारण के लिए भी बहुत उपयोगी है। विशिष्ट विषयों पर चर्चा छोटे-छोटे निबन्धों के रूप में की गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही सरस व सरल है।

मूल्य- 50/-(हिन्दी) एवं 60/- (English) (डाक खर्च सहित)

ज्योतिष की पुस्तकें

षड्वर्ग फलम्	180/-
Professions	150/-
Dasha Nirnay Vimshottary Dasha	150/-
Gochar Phaladeepika	250/-
Astrological Horoscope Note Book (North Indian Style)	50/-
Astrological Horoscope Note Book (South Indian Style)	50/-
शनि की साढ़ेसाती से छुटकारा	40/-
आपका भाग्यरत्न	50/-
Ashtakvarga, Concept and Application	100/-
अष्टकवर्ग, सिद्धांत एवं प्रयोग	100/-

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की आधी कीमत पहले भेजें।

★ इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।

मनीऑर्डर इस पते पर भेजें- अग्रवाल बुक डिपो 460, खारी बावली, दिल्ली-6 फोनः (011) 23943254, 23936116

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्धगणित से बनाये जाते है, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है।

जन्मपत्र की फीस:- साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 451 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 551 रु. है। डाकव्यय अलग होगा। **विदेशी जन्मपत्र** कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अत: जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 651 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिख कर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म, तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्म स्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु. है।

वर्षफल की फीस:- साधारणतया 151 रु. है। **विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 201 रु. हैं।** जिनकी जन्मकुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाह-मुहूर्त जानने की फीस 101रु. है,और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 151रु. है। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी और पंजाबी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते है। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेंजें। **विशेष प्रश्न की फीस 201 रु. है। सर्वसाधारण प्रश्न फीस 100 रु. है।**

नोट:- प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेंजें । वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा।

घर बैठे प्रश्न पूछने की रीति:- यद्यपि सामने आकर प्रश्न पूछने से सब शंकाएं निवृत्त हो जाती हैं, फिर भी यदि कोई सज्जन किसी विशेष कारण से प्रत्यक्ष न मिल सके, तो वह अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति, प्रश्न लिखने की तारीख एवं टाईम लिख दें। जो प्रश्न पूछना हो, उसे स्पष्ट शब्दों में खुलासा तौर पर लिखें।

व्यापारियों के लिए चांस:- हम समय-समय पर रूई, बिनौला, सरसौं, गुड़, खांड़ एंव शेयर मार्कीट आदि के चांस देते है। वर्षो से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहें है।

यदि आप भी लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप एक जिंस के लिए आज ही 500 रु. का मनी-आर्डर भेजकर एक मास की रिपोर्ट प्राप्त करें। एक जिंस के लिए वर्ष भर की फीस 5000 रु. है। जो व्यापारी साल में प्रमुख-प्रमुख एक-दो चांस ही चाहते हैं, 500 रु. [illegible]

-: पण्डित जी से प्रत्यक्ष मिलने का समय:-

सर्दियों में - प्रात: 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में - प्रात: 8 से 1 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र द्वारा या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (पुत्रदाता दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है। इस अद्‌भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। **मूल्य 500 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय सहित 550 रु. भेंजे। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।**

सिद्ध शनियन्त्र - विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजनय अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट - 251रु. है।

श्री लक्ष्मी यन्त्र - अष्टगंधादि से विधिपूर्वक सिद्धमुहूर्त में बनाऐ गए इसयंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजुर्बा लें। भेंट 501 रु. डाक व्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र - जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते है, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। इस विधिपूर्वक निर्मित यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैकड़ों माता-पिता को सुखी कर रहे है। तजुर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र यन्त्र के साथ भेजा जाता है। भेंट 251 रु. डाक व्यय पृथक्।

सिद्ध गोपाल यन्त्र - इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। भेंट 251 रु. डाकखर्च पृथक्।

गुरूवार को कार्यालय बन्द रहता है।

पत्र व्यवहार के लिए पता-
पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, एम.ए.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय
म. पो. कराली (रोपड) पंजाब

दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं प्राचीन अप्राप्य ग्रन्थ

असली प्राचीन हस्तलिखित रावण संहिता	मूल्य- 2500/- रुपये
हस्तलिखित भृगु संहिता कुंडली रहस्य	मूल्य- 2500/- रुपये
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	मूल्य- 2500/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र-तंत्र-मंत्र महार्णव (यंत्र-तंत्र-मंत्र संबंधी जानकारी पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ)	मूल्य- 1600/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र महार्णव *यंत्रशास्त्र के आधार स्तंभ यंत्रों के प्रयोग और निर्माण का सचित्र विवेचन।*	मूल्य- 551/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित तंत्र महार्णव	मूल्य- 551/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव *प्राचीन शास्त्रों के सारभूत इस संकलन-ग्रन्थ में लौकिक कामनाओं की पूर्ति तथा पारलौकिक सुख प्रदान करने वाले चमत्कारिक मंत्रों का अद्भुत संग्रह है।*	मूल्य- 551/- रुपये
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र शिरोमणि *(दो खण्डों में)*	मूल्य- 650/- रुपये
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र महाशास्त्र	मूल्य- 400/- रुपये
लाल किताब *(दो खण्डों में)*	मूल्य- 1700/- रुपये

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की आधी कीमत पहले भेजें।

प्रसन्न मन व स्वस्थ शरीर का रहस्य

इस पुस्तक में कार्मिक ज्ञान, मन्त्र अराधना, दैनिक दिनचर्या में व्यवहार, ध्यान व योग (मुद्रा सहित), भारतीय आयुर्वेदिक मालिश (मुद्रा सहित), मुद्रा चिकित्सा, रेकी, क्रिस्टल हिलिंग, डाउसिंग एवं फूलो के द्वारा चिकित्सा सभी पूर्ण रुप से रंगीन चित्रों सहित दी गई है।

मूल्य 80/- रुपये (डाक खर्च सहित) — *ले.: पण्डित रविन्द्र लाखोटिया*

"सम्पूर्ण हिन्दू चिन्तन" (हिन्दी) एवं
Complete Hindu Thought (English)

इस किताब में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हर पक्ष और कोण का समावेश हैं। यह पुस्तक न केवल हिन्दू धर्म के प्रत्येक जिज्ञासु के लिए बल्कि सर्वसाधारण के लिए भी बहुत उपयोगी है। विशिष्ट विषयों पर चर्चा छोटे-छोटे निबन्धों के रूप में की गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही सरस व सरल है।

मूल्य- 50/-(हिन्दी) एवं 60/- (English) (डाक खर्च सहित)

राशि-रत्न + उपरत्न

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक	मुंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें

ज्योतिषाचार्यो के लिये विशेष

हमारे यहां हर प्रकार के राशि रत्न + उपरत्न, शुद्ध चांदी में बनी नवरत्न अंगूठियां, पेन्डन, स्फटिक माला, रुद्राक्ष माला इत्यादि 100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलते हैं।

माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता हैं।

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र – व्यवहार करें।

श्री पूरणमल कमलकिशोर ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, कानोता हाऊस, हल्दियों का रास्ता, मनीराम जी की कोठी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन : (दु.) 2568446 (नि.) 2634889 फैक्स : 91-141-2568446 मोबाईल : 3280509
E-mail : pmkkgems@yahoo.com Website : www.astralgems.com

ज्योतिष की पुस्तकें

षड्वर्ग फलम्	180/-
Professions	150/-
Dasha Nirnay Vimshottary Dasha	150/-
Gochar Phaladeepika	250/-
Astrological Horoscope Note Book (North Indian Style)	50/-
Astrological Horoscope Note Book (South Indian Style)	50/-
शनि की साढ़ेसाती से छुटकारा	40/-
आपका भाग्यरत्न	50/-
Ashtakvarga, Concept and Application	100/-
अष्टकवर्ग, सिद्धांत एवं प्रयोग	100/-

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की आधी कीमत पहले भेजें।

★ इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।

मनीऑर्डर इस पते पर भेजें- अग्रवाल बुक डिपो 460, खारी बावली, दिल्ली-6 फोनः (011) 23943254, 23936116